प्रकाशक :

राय सिंह एण्ड को० की तरफ से

आर० सिन्हा राय

११०, आचार्य जगदीश बोस रोड

कलकत्ता-१४



एकमात्र परिवेशक :

नेशनल होमियो लेबोरेटरी

११०, आचार्य जगदीश बोस रोड

कलकत्ता-१४

मुद्रक :

सुराना प्रिन्टिग वर्क्स

२०५, रवीन्द्र सरणी

कलकत्ता-७

# प्रकाशकीय निवेदन

शुसलरकी जैव रसायन विज्ञान सम्बन्धी चिकित्सा-पद्धति, हालाकि आरोग्य सम्बन्धी स्वतन्त्र मौलिक प्रणाली स्वीकारकी गयी है, पर कालान्तर में होमियोपैथिक क्षेत्रमें यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वीकार करके इसका ग्रहण सर्वतोभावेन होमियोपैथीके पूरक रूपमें ही किया गया है।

शुसलरके नव अन्वेषणोंपर अनेकानेक जगत विख्यात होमियोपैथीके विशेषज्ञ जीवन पर्यन्त अथक परिश्रम करनेके पश्चात् अन्ततोगत्वा जैव रसायन विज्ञानके अवदानको होमियोपैथीके महान् आरोग्यकारी सिद्धान्तोंमें आत्मसात कर होमियोपैथीको एक नवीन पूर्णता प्रदानकी है।

पर डा० विलियम वोरिक, तथा डा० विलिस ए० डिवीके सैद्धान्तिक चिकित्सा विषयक, मेटिरिया मेडिका और रिपोर्टरीकी दृष्टिसे द्वादश-तन्तु औषधियोंमें प्रारम्भिक प्रयासोंके होते हुए भी एक नया जीवन, एक नव संस्थापन, सभी विचारणीय दृष्टियोंमे अधिगत रूपमे इनकी महान् कृति— "शुसलरकी वारह टिशू रेमिडीज" में समाहित हुआ है।

यह कोई आश्चर्य नहीं था, इसीलिए इनका यह अद्वितीय कृतित्त्व अविलम्ब विश्वका मापदण्ड वन गया। आज सारे ससारमें अच्छा होमियोपैथीका चिकित्सक अपने दैनिक व्यवहारमें इस महाग्रथको अपने उपयोगमें लाता है।

सत्य यह है कि आज सारा भारतवर्ष दिन-प्रतिदिन होमियोपैथीकी ओर झुकता चला जा रहा है, इस महादेशमें स्वतः ही इस महाग्रन्थकी मांग साधारणरूपसे सहज ही में वढ गयी है। पर वर्तमान आयात साधनोंकी कठिनताके कारण सभी भारतीय होमियो-चिकित्सकोंके लिये विदेशी सस्करण सुलभ नही पर सभी कठिनाइयोंके होते हुए भी हमने इसे विदेशी सस्करणके तुल्य ही साज-सज्जाके साथ प्रकाशित करनेका प्रयत्न किया है।

उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान विशेषज्ञोंके हाथोसे पाडित्यपूर्ण सरल, सरस भाषामें इस महान् ग्रथ रत्नको हिन्दी जगतको भेंट करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

छपाई, सफाई, कागज, जिल्द गेरप आदि सभी वस्तुओंपर वढते हुए मूल्योंके मध्य अत्यन्त व्ययसाध्य होनेपर भी विशेष ध्यान दिया गया है, ताकि हमारे होमियोपैथ प्रिय पाठकोको विदेशी सस्करणका अभाव न खटके।

सम्पूर्ण सहयोग और सहानुभूतिके साथ आपका आशीर्वाद हमारे सेवा प्रतिष्ठानको वरावर इसी प्रकार प्राप्त होता रहा तो हमारे लिए यह एक वहुत वडा सन्तोष-संवल होगा।

कलकत्ता, अक्टूवर, १९६४

आर० सिन्हा राय

# तृतीय संस्करणकी भूमिका

इस ग्रन्थके पूर्व सस्करणोंके मन्य स्वागत और उनके निर्देशानुसार चिकित्सा क्षेत्रमें उनके उपयोगसे इस नवीन संस्करणका निर्माण एक सुखद कार्य हो गया है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ पुन. नये ढगसे लिखा गया है—आवश्यकतानुसार बढा भी दिया गया है। शुसलरने जो कुछ भी अपने Abgel-Wrstc Therapic के नवीनतम अठारहवें सस्करण तक लिखा था उसे इसके साथ जोड दिया गया है, साथ ही चिकित्सा सम्बन्धी उन अनुभवोंको भी दे दिया गया है जो होमियोपैथिक चिकित्सासे सम्बद्ध यत्र-तत्र जर्नल्स एव सोसाइटीजमें बिखरे पडे थे। जहाँ तक ग्रन्थका प्रश्न है यह वर्तमानमें रोगों के जैव रसायन चिकित्सा दृष्टि और होमियोपैथीसे सम्बन्धित रूपमें परिपूर्ण है।

तन्तु औषधियोंके सम्बन्धमें हमारी धारणा हर नव सस्करणके साथ अन्तर प्राप्त करती चली जाती है इसका श्रेय भी इनके आदरणीय परिचायक कोई है। जबकि हम उनकी पहली धारणाके साथ हैं और इसे होमियोपैथी के पदचिह्नोंपर ही आगे बढ़ानेका प्रयास कर रहे हैं। शुसलर अब जैव रासायनिक पद्धतिको होमियोपैथीमे नितान्त पृथक समझता है। एक परिपूर्ण चिकित्सा पद्धति और रसायन सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञानके रूपमें जबकि उनका विश्वास है शरीर शास्त्रीय रासायनिक तथ्यों और सिद्धान्तोंपर जो चिकित्सा सम्बन्धित उनके औषध उपयोगका पथ प्रशस्त करता है, हम इन सबको स्वीकार करते हैं और इनका उपयोग करते हैं उन समस्त निर्देशक तथ्योंको भी लेते हैं जो परीक्षण उपरान्त सिद्ध होते हैं, यह निभ्रान्त और स्थायी आधार है रोगके लिये औषध निर्वाचनका। इस सम्बन्धमें डा० शुसलरके होते हुए भी हमारा विश्वास है हमारे सम्प्रदायके द्वारा सावधानी के साथ सभी शक्ति मात्राओंमें इन औषधियोंका परीक्षण करना चाहिए। बहुत कुछ हद तक द्वितीय संस्करण तक यह कार्य किया जा चुका है विशेषतः Kali Phos का जिसका उल्लेखनीय विवरण Medical Advance में

डा० H C Allen, M. D द्वारा प्रकाशित किया गया है। हमारे औषध विवरणमें उसके वैशिष्ट्यका उल्लेख किया गया है।

अन्तमें हम हमारे उन सभी मित्र बन्धुओंको धन्यवाद देते हैं जिन्होंने अपने अनुभव तथा चिकित्सा सम्बन्धी वस्तुओंसे इस ग्रन्थके निर्माणमें सहायता प्रदान की हैं।

सनफ्रांसिसको, विलियम बोरिक, एम० डी०
सेप्टेम्बर १, १८६२ विलिस ए० डिवी, एम० डी०

# पंचम संस्करणकी भूमिका

शुसलरकी ट्वेल्भ टिशू रेमिडीजको हमने तृतीय संस्करण तक इसी नामसे छापी है लेकिन इस संस्करणमें हमने ट्वेल्भकी जगह बारह शब्द बैठाया है। वर्तमानमें सभी वस्तुओंपर बढते हुए मूल्योंको देखते हुए हमें भी पुस्तकका मूल्य बढानेको बाध्य होना पडा है।

हमें आशा है कि यह हमारे होमियोपैथीके प्रिय पाठक इस पुस्तकको भी सदाकी भाँति व्यवहार करेंगे। इस बार हमने कागज व छपाईमें भी परिवर्त्तन किया है।

७-१-७८

—प्रकाशक

# विषय-सूची

१

साधारण परिचय, इतिहास, सिद्धान्त, स्वास्थ्य और रोग निर्माण, मात्रा, जैव रासायनिक एवं होमियोपैथिक सम्बन्ध आदि।

२

द्वादश-तन्तु औषधियोंको मेटिरिया मेडिका, लक्षण, प्रचलित नाम, रासायनिक विवरण, निर्माण शरीर शास्त्रीय-रासायनिक विवरण, साधारण क्रिया, निर्देशक लक्षण विशिष्ट होमियोपैथिक विवरण, प्रयोग व्यवस्था, सम्बन्ध आदि।

३

द्वादश-तन्तु औषधियोंका चिकित्सा सम्बन्धी व्यवहार, निर्देशक, लक्षण और चिकित्सा सम्बन्धी उदाहरण, आकारादि क्रम व्यवस्था।

४

द्वादश-तन्तु औषधियोंकी रिपोर्टरी, चिकित्सा सम्बन्धी अवयव शास्त्र के आधारपर व्यवस्थित क्रम।

# सूची-पत्र

## पहला भाग



## दूसरा भाग

### बारह टिशू रेमिडीजका निघण्टु ( भैषज तत्त्व )



## तीसरा भाग

### बारह टिशू रेमिडीज़का व्यवहार चिकित्सा

( अक्षरानुक्रमिक )

## चौथा भाग

### लक्षणावली ( रिपोर्टरी Reportory )

पहला भाग

# बारह टिशु रेमिडीज का व्योरा और परिचय

—०—

## भूमिका

—०—

## टिशु रमिडीज का इतिहास

सेम्युएल हनीमैन की अपूर्व बुद्धिमत्ताने, निर्जीव नमक कोपोको, औपधरूप में भारी महत्ता दी, वे ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने इन नमकोंकी रोगोत्पादक और रोगनिवारक शक्तियोंके बारेमें, पूरी-पूरी जाँच-पडताल शुरू की। उन्होंने चूने, नमक, पोटाश और सिलिका निवारक शक्ति की परीक्षा कर शेप टिशु रेमिडीजके लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया, उन परीक्षणोमे यह विदित हो गया कि इन निर्जीव पदार्थोंमें भी कितनी विशाल रोगनाशक शक्तियाँ निहित हैं। हालाकि प्रकटतया, कच्ची हालतमें, वे जड और अप्रवृत्त हैं। वे ही प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने यह संकेत दिया, कि इन शक्तियोंको कैसे विनिर्मुक्त किया जा सकता है—और औपधरूपमें उनका व्यवहार कैसे हो सकता है। बादमें, सन् १८३२ ई० में, 'स्टाफ आर्काईव' Stapf's Archive में प्रकाशित हुये, एक लेखकी ओर लोगोंका ध्यान गया—जिसमें 'मानव शरीरके अनिवार्य अगोंका रोगनिवारक महत्व' दर्शाया गया था। आगे चलकर १८४६ में, इसी पत्रमें एक और लेख प्रकाशित हुआ, जिसमे यह सिद्ध किया गया कि "मानव शरीरके अगभूत भौतिक तत्त्व उन्हीं अगों पर असर करते हैं, जिनसे वे बने है। जब वे ही लक्षणों (कष्टो) का कारण बने हों, तो वे अपना कार्य भली प्रकार करते हैं।" यह लेख निघण्टु—मैटीरिया मैडिकाके क्षेत्रमें अपूर्व प्रतिभा सम्पन्न, असाधारण विद्वान—कास्टेंटाईन हेरिंगकी लेखनीसे निकला था।

इसके कुछ और बाद, ग्रॉफोगल ने Grauvogal अपनी प्रसिद्ध रचना—**टैक्स बुक**में, इन बातो पर ध्यान दिया, और, उनकी व्याख्या की। परन्तु इन सुझावोंको विकसित करने, और उन्हे एक नयी चिकित्सा पद्धतिका आधार

बनानेका श्रेय, ओल्डनबर्ग (जर्मनी) निवासी डॉ० शुसलरको प्राप्त हुआ। मार्च १८३७ में, जर्मन भाषाकी एक होम्योपैथिक पत्रिकामें 'सक्षिप्त होम्योपैथिक चिकित्सा' शीर्षकसे, एक लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें बताया गया कि "लगभग एक वर्ष पहले मैंने रोगियों पर यह जाननेके लिये परीक्षण किया, कि उन्हें नैसर्गिक पदार्थों—भौतिक रूपमें कार्य करनेवाली औषधियों—द्वारा रोग मुक्त किया जा सकता है, बशर्त्ते कि उनके रोग साध्य हों।" उस समय इसपर कोई ध्यान न दिया गया, परन्तु पाँच मास बाद, लीपत्सिगके डॉ० लोरबेखरने, उसी पत्रमें, उसकी आलोचना की। डॉ० शुसलरने उस आलोचनाका उत्तर दिया, और वह उत्तर क्रमशः सात संख्याओंमें प्रकाशित हुआ। इस उत्तरमें, उन्होंने "सक्षिप्त होम्योपैथिक चिकित्सा' का विस्तार किया। उसके कुछ महत्त्वपूर्ण अश, इस पुस्तकमें दिये गये हैं।

उपर्युक्त जर्मन मेडिकल जर्नलमें, डॉ० शुसलरका जो मूल लेख प्रकाशित हुआ था, उसका अगरेजी भाषान्तर हुआ। और मई १८७३ में "मेडिकल इन्वेस्टीगेटर" में पहली बार प्रकाशित हुआ। कुछ दिन बाद, वही लेखमाला "बारह टिशु रेमिडीज़" के नामसे, डॉ० सी० हेरिंगने पुस्तक रूपमें प्रकाशित की —और होम्योपैथीके उस महान अध्यापकने, इन औषधोंके बारेमें अधिक जाँच-पड़ताल करनेकी सिफारिश की। जर्मन मूलके क्रमश. कई सस्करण छप गये,— और यह ऐतिहासिक मसविदा, मुख्यत. उन्हींके आधार पर, तैयार हुआ हे। इसके बाद, बारहवें जर्मन संस्करणके दो अनुवाद प्रकाशित हुये, एक अनुवाद था, डॉ० ओकोनर एम० डी० का, और दूसरा था,—डॉ० एम० डोसेटी वॉकर का। दोनोंमें एक परिशिष्टकी वृद्धि हुई, और इस तरह अनुदित पुस्तकें काफी बड़ी हो गई; इस परिशिष्ट का उद्देश्य बायोकेमिक चिकित्सा पद्धतिको लोकप्रिय बनाना था। डॉ० शूसलरकी मृत्यु सन् १८६८ के आरम्भमें हुई, और उन्होंने मरनेसे पहले, अपनी जर्मन पुस्तक का २५ वा सस्करण प्रकाशित किया। इस अन्तिम सस्करणमें, कुछ औषधोंके व्यवहारमें काफी विस्तार किया गया है, और काफी नयी सामग्री बढ़ायी गयी है। वह सारी पाठ्य सामग्री इस पुस्तकमे दी गयी है। यह प्रथम हिन्दी सस्करण उसी २५ वें जर्मन संस्करणके अगरेजी भाषान्तरका अनुवाद है।

यद्यपि डॉ० शुसलरने, अपनी पुस्तकके बादके सस्करणोंमें इस बातका खण्डन किया है, कि होम्योपैथीसे उनकी चिकित्सा पद्धति का कोई सम्बन्ध है, और उन्होंने इस बात पर जोर दिया है, कि उनकी चिकित्सा पद्धति का आधार होम्योपैथिक सिद्धान्त नहीं हैं—वरन् वे शरीर-विज्ञान सम्बन्धी रासायनिक प्रक्रियाँ हैं, जो मानव शरीरमें घटती रहती हैं, तो भी यह सत्य हे कि

चिकित्सा जगत में 'टिशु रेमिडीज'की वर्त्तमान व्यापक ग्राह्यता उस बीज का फल है, जो १८३२ में होम्योपैथिक क्षेत्रमें बोया गया था; और यह भी सत्य है, कि इनका विकास डा० शुसलरने किया, और उन्होंने इसे शरीर-विज्ञान सम्बन्धी रसायन, शरीर-विज्ञान, और निदान-शास्त्र पर आधारित किया।

---

# शुसलरकी बायोकेमिक पद्धतिका सिद्धांत

बायोकेमिक चिकित्सा पद्धतिका आधार, शरीर-विज्ञान सम्बन्धी यह वास्तविकता है, कि शरीरकी रचना, और जीवनी शक्ति,—दोनों ही, कुछ निर्जीव तत्त्वों की आवश्यक तथा निश्चित मात्रा, और उचित अनुपात पर आश्रित है। ये मूल तत्त्व जल जानेके बाद भी, कायम रहते हैं, और राखके रूपमें परिणित हो जाते हैं।

वास्तविकता यह है, कि ये निर्जीव तत्त्व ही मानव शरीर और उसके कोषो के निर्माण का भौतिक आधार है, और उनकी रचना की एकता तथा कार्यशीलताके लिये नितात अनिवार्य हैं। शुसलरके सिद्धान्तके अनुसार जीवित कोषोंमें, इन नमक-कणों को सूक्ष्म गतिविधिमें किसी प्रकार का अन्तर आना, जो इन निर्जीव तत्त्वोंका सन्तुलन बिगडने से आया हो—रोग है। १ जिस खनिज लवण की कमीके कारण, यह विकार, या रोग आया है —उसीका अल्प मात्रामें व्यवहार कराये जानेसे, यह विकार, या रोग दूर किया जा सकता है, और सन्तुलन बहाल किया जा सकता है। इस परिवर्त्तन का रहस्य कोष रचनाओंकी सूक्ष्म रचनाके अध्ययनसे प्राप्त हुई यह जानकारी है कि इन निर्जीव

---

१। प्रो० लीवके हालके परीक्षणोंसे, यह सिद्ध हुआ है कि रक्त धारमें सोडियम, पोटासियम और चूना लवणोंके उचित अनुपातके अभावमें विविध कोष-कणोंमें बड़ी तेजीसे विलगाव आता है। इनका स्वाभाविक अनुपात है, सोडियमके १०० परमाणु पोटासियमके २.२ परमाणु और चूनेके १ ५ परमाणु। जब इस अनुपातमें कोई बड़ी गड़बड़ी आती है तो परस या धात्वाग्नि में, न्यूनाधिक तेजीसे अपकर्ष आता है।

कोषके भीतर जीवनको स्थायी रखनेके लिए, उस तरलमें जो इन कोषोंके इर्द-गिर्द रहता है, इन लवणोंका उचित अनुपातमें रहना आवश्यक है। आरक्षकीय प्रक्रिया यही है। जीवित कोषोंके इर्द-गिर्द रहनेवाले इस तरलमें शरीर क्रिया सम्बन्धी सन्तुलन रहना चाहिये, और जब विविध लवणोंका यह सापेक्षिक सन्तुलन बिगड़ जाता है, तो शारीरिक क्रियाओंमें विकार और रोग आता है।

तत्वोंकी क्रियामें परस्पर क्या रासायनिक आकर्षण है। और इस तरह, शुसलरने इस चिकित्सा पद्धतिका नाम 'बायोकेमिक, पद्धति, रखा। उन्होंने, इस बात पर जोर दिया, कि यह कल्पित समता, शरीर रचना सम्बन्धी रसायन-शास्त्र, और ततसम्बन्धी विज्ञानोंके सुविदित तथ्यों पर आश्रित है।

---

## मानव शरीरके तत्त्व

हमारे रक्तमें पानी, शर्करा, स्नेह, अलब्यूमन,—अण्डेकी सफेदी जैसा तत्त्व, सोडियम क्लोराईड, पोटाश क्लोराईड,लाईम क्लोराईड, सिलिका, लोहा, चूना, मैंगेनीस, सोडा, और पोटाश आदि पाए जाते हे। इन अन्तिम तत्त्वोंमें फास्फोरस, कार्बन और सल्फ्यूरिक ऐसिड पाये जाते हैं।

रक्तके वर्णहीन तरलमें सोडेके लवणोंका आधिक्य है। पोटाशके नमक विशेषतः रक्तकणो में ही पाए जाते हैं। शूगर, स्नेह, और, अण्डेकी सफेदी जैसी चीजें भी रक्तके सजीव उपादान हे। जबकि उपर्युक्त लवण, और पानी उसके निर्जीव उपादान हैं। शूगर और स्नेह ( वसा ) दोनो ही, कार्बन, हाईडरोजन और प्राणवायुके यौगिक हैं, जबकि अलब्यूमन ( अण्डेकी सफेदी ) जैसे तत्त्वोंमें अतिरिक्त गधक और नेत्रजन भी पाये जाते है।

गधक, कार्बन और फास्फोरस शरीरमें अधिक मात्रामे, और मुक्तस्थितिमे नही पाए जाते हे। वे सजीव तत्त्वोंके साथ घुले-मिले रहते हैं।

सल्फर ( गधक ) और कार्बन दोनों अलब्यूमन—अण्डेकी सफेदी जैसे तत्त्वो में पाए जाते हैं, कार्बन, शूगर ( चीनी ) और निशास्ते ( स्टार्च ) आदि कार्बन, हाईडरेटोंमें तथा उन सजीव पदार्थोमें पाए जाते हैं, जिनकी अब काया पलट हो चुकी है। इसी तरह, फास्फोरस, लेसिथिन और न्यूक्लीनमें पायी जाती है। अलब्युमनकी गधक, सासके साथ भीतर गयी ओपजनके साथ मिलकर ओपजनवत हो जाती है। इस तरह, गधकाम्ल बन जाता है और कार्बोनेटोंके साथ मिलकर, सल्फेट तैयार हो जाते हैं, और ये कार्बोनिक ऐसिडके रूपमें परिणित हो जाते हैं।

---

## तन्तु निर्माण

शरीरके प्रत्येक तन्तु, और कोषका भौतिक पोषणकर्त्ता रक्त है, यह शरीर के प्रत्येक अगका पोषणकर्त्ता है, और इस तरह, उन्हें अपना कार्य सम्पन्न करनेकी

क्षमता देता है। इस तरह, शारीरिक क्रियाओंको अपना कार्य करते रहने के लिए जिस भौतिक तत्त्व, या पदार्थकी आवश्यकता पडती है, वह उसे रक्त से प्राप्त होती है।

रक्तका वर्णहीन तरल, क्षुद्र छिद्रों में से छन, और रिसकर, क्षुद्र नाडियों द्वारा आसपासके तन्तुओंमें पहुँचता है, कोष प्रत्यावर्त्तन के कारण, उनकी जो हानि होती है—इस तरह उसकी पूर्ति हो जाती है। आधुनिक जीव-शास्त्र के अनुसार यह आहार,—अपने ढंगका विशिष्ठ आहार—क्षुब्ध पदार्थ, या प्रास, या मूलधातु कहलाता है, और शरीरमें यही जीवित पदार्थ है, यह सारे शरीरमें व्यापक है; इसकी मात्रा, शरीरके भार का ५ वाँ भाग है, शेष ४।५ भाग सगठित, या ठोस है। अतएव, अपेक्षतः मृतक है। भौतिक रूपमें यह नेत्रजनीय, मुलाएम, रचनाविहीन, अर्द्ध तरल, अर्द्ध पारदर्शी, एकरूप ग्रन्थि स्नायुमण्डलके मान और धूसरवर्णीय स्नायु पदार्थ जैसा है। छन निकलने वाले इस पदार्थमें सूक्ष्मकण पाये जाते है, जिनके संयोगमें कीटाणु पाये जाते हैं, और इन्हीं कीटाणुओंके सयोगसे आगे चलकर कोष बनते हैं। इन कोषोंके सयोगसे हर प्रकारके तन्तु बनते है, और ये तन्तु ही सारे शरीरका निर्माण करते हैं। तन्तु निर्माणकी इस प्रक्रियामें दो तरहके पदार्थोंकी आवश्यकता पडती है—और—वे दोनों ही रक्तमें पाए जाते हैं। ये हैं सजीव और निर्जीव तत्त्व या उपादान।

सजीव उपादानोंमें शर्करा, वसा और अण्डेकी सफेदी जैसी चीजें शामिल हैं, जो कोषोंका भौतिक आधार हैं। दूसरी श्रेणी, अर्थात्, निर्जीव उपादानोंमें पानी, और लवणोंकी गिनती होती है। लवणोंमें पोटाश, चूना, सिलीका, लौह, मेगनेसियम, और सोडियम शामिल हैं। किसी विशेष प्रकारके कोषका निर्माण होगा—इसका निर्णय, इन्ही निर्जीव तत्त्वों से किया जाता है। समय-समयपर, अन्य लवण भी पाए जा सकते हैं, परन्तु मुख्य वही हैं, जो हर समय पाये जाते हैं। शरीरमें जहाँ-कहो भी नवकोषोका निर्माण होना होगा—वहाँ ये दोनों प्रकारके पदार्थ—सजीव और निर्जीव आवश्यक मात्रा, और उचित अनुपातमें पाए जायेंगे। रक्तमें इनकी उपस्थितिसे सभी अगों का निर्माण होता है, उनकी क्रियाओंमें स्थायित्व आता है, और उसका सन्तुलन बिगडनेसे, शारीरिक क्रियाओंमें गडबडी पैदा हो जाती है।

---

# कोषके निर्जीव यौगिक

स्नायु कोषोके निर्जीव तत्त्व हैं—मेगनेसिया फॉस, काली फॉस, नेटरम और फेरम। पेशी-तन्तुओमे भी यही पाए जाते हैं, और इनके अतिरिक्त, काली म्योर भी पाया जाता है। संयोजक तन्तु-कोषोमें सिलिका विशेष रूपसे पाया जाता है, और—शायद लचकदार तन्तु-कोषोमें कल्केरिया फ्लोर पाया जाता है। अस्थिकोषोमें कल्केरिया फ्लोर और मेगनेसिया फॉस, और सर्वाधिक अनुपातमें—कल्केरिया फॉस पाया जाता है। पेसियो, वातनाडियो दिमागके कोषो, और सयोजन-तन्तुओमें कल्केरिया फॉस अल्पमात्रामें पाया जाता है। कई पेशियो अर्थात् उपस्थियों, और श्लैष्मिक कोषोमें, निर्जीव तत्त्व—नेटरम म्योर, पाया जाता है। यह तत्त्व शरीरके सभी ठोस, और तरल अगोमें भी पाया जाता है। वालो और विल्लौरके समान स्वच्छ तरलोंमें, अन्य निर्जीव तत्त्वोके साथ-साथ फेरम ( लोह ) भी पाया जाता है। मोलशॉटका मत है, कि कोषनिर्माणके कार्यमें कारवोनेटोका कोई हाथ नहीं है।

---

# तन्तुकोषों का निर्माण

हवामें मिली हुई प्राणवायु, सासके साथ अन्दर पहुँचकर, रक्त द्वारा कोषो तक पहुँचती है, और उन सजीव पदार्थो पर असर करती है, जो कोषोके रूपमें परिणित होनेवाले हैं। इस परिवर्त्तनके परिणामस्वरूप वे सजीव तत्त्व मिल कर पेशियों, वातनाडियो, सयोजक तन्तुओ, और श्लैष्मिक पदार्थोंका निर्माण करते हैं। इनमेंसे कोई पदार्थ रक्तमें नही पाया जाता, वल्कि इनका निर्माण अलव्युमनकी सहायतासे, तन्तुओंमें होता है। निर्जीव लवण, रासायनिक आकर्पण द्वारा, इनके साथ सयोग करते हैं—और इस प्रकार नवकोषोका निर्माण होता है। नये कोषोके निर्माणके साथ-साथ पुराने कोषोका विनाश भी होता रहता है। यह विनाशलीला उन सजीव पदार्थों, और प्राणवायु की क्रिया के परिणामस्वरूप होती है, जो इन कोषोंकी आधार भित्ती होते हैं। इस ओषजन प्रक्रियाके परिणामस्वरूप ही तन्तुओंमें विनाश लीला होती है।

सजीव पदार्थों की इस जलाव क्रियाका अन्तिम परिणाम यह होता है कि, शरीरमें यूरिया, यूरिक ऐसिड, सलफ्यूरिक ऐसिड, फॉस्फोरिक ऐसिड, लैक्टिक ऐसिड, और कार्वोनिक ऐसिड वनते हैं, और पानी तैयार होता है।

इस सारी रासायनिक प्रक्रिया के अन्तरकाल में, हिपोक्सेंथीन एसेटिक ऐसिड, और व्युटरिक ऐसिड आदि भी वनते हैं, परन्तु यहा इस चिकित्सा पद्धति के सिलसिले में, उनकी चर्चा अनावश्यक है, क्योंकि, जहाँतक हमारी वर्त्तमान जानकारी का सम्वन्ध है—इनका कार्य नगण्य है। यूरिया, यूरिक ऐसिड और गन्धकाम्ल, अलव्यूमन जैसे तत्त्वों के ओपजनीकरण का परिणाम है, जवकि फॉस्फोरिक ऐसिड उस लेसीथीनके ओपजनीकरणसे वनता है, जो स्नायु-तन्तुओं, दिमाग, मेरुदण्ड और रक्तकणो में पायी जाती है। दुग्धशर्करा में उफान आने से लैक्टिक ऐसिड वनता है, और अन्तमें यह कार्वोनिक ऐसिड, और पानी के रूप में परिवर्त्तित हो जाता है।

सजीव पदार्थों के ओसजनीकरण का अन्तिम परिणाम है यूरिया, कार्वोनिक ऐसिड और पानी। ये तीनों चीजें और लवण-तन्तुओं को छोडकर—मिलकर अर्द्ध ओपजनीकृत सजीव पदार्थ तैयार करते हैं, और अन्तिम रूप में, उनमें भी वही परिवर्त्तन हो जाता है।

तन्तुओंके इस विपरीत परिवर्त्तनके उत्पादन, लसिका ग्रन्थियों, सयोजक-तन्तुओं, पर शिराओ द्वारा पित्तकोष, फेफडो, गुर्दो, मूत्राशय और त्वचा तक पहुँचते हैं, और इस प्रकार शरीरके मल,—जैसे पेशाव, पसीना और पाखानेके रूपमें शरीरसे वाहर निकल जाते हैं।

संयोजक तत्त्वोंके महत्त्व, और उनके कार्यकी विशेषताका ज्ञान विरशो और फॉन रेकलिंगहासनकी खोजोंका परिणाम है, और इन खोजोंसे इन सयोजक-तन्तुओंका अध्ययन किया गया, और इस तरह उनकी उपजाऊ क्रियाओ का प्रदर्शन हुआ। पहले यही समझा जाता था, कि ये पूरक या रक्षात्मक आवरण हैं; परन्तु अव ये गर्भकोप प्रतीत होते हैं, यहाँ क्षुद्र नाडियाँ रक्तसे उसके वर्णहीन तरल को लेकर कोषों तक आती हैं, और फिर उसे रक्तनाडियों तक वापस ले जाती हैं; इसके साथ ही, उन नवकोषो के पालन-पोषण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थल का कार्य करते हैं, जो अपरिपक्व अवस्था से विकसित होकर शरीरकी विविध रचनाओंमें परिवर्तित हो जाते हैं, और शरीरका अग वन जाते हैं।

---

# स्वास्थ्य और रोग

स्वास्थ्य क्या है? कोषोंका स्वाभाविक रूपसे निर्माण और प्रतिनिर्माण। इस प्रकार खाया-पिया पचकर, रक्त को उन त्रुटियों और हानियोंको पूरा

करता है, जों उसे तन्तुओं का पालन-पोषण करने से पहुँचती है—और जब यह क्षतिपूर्त्ति उचित मात्रामें, और उचित स्थान पर हो जाती है, तो फिर, परमाणुओंकी गतिविधिमे कोई अन्तर नही आता। केवल इन शर्तो और स्थितियो के अधीन ही, नवकोषो का निर्माण और पुरानोका विनाश होता है, तथा मलों का निस्सरण स्वाभाविक रूपसे होता रहता है।

रोग क्या है? निष्क्रिय तन्तु-लवणोमेंसे किसी एक के परमाणुओं की गतिविधिमें अन्तर पड जाना। उसी निर्जीव लवणकी अल्पतम मात्रा देकर, परमाणुओंकी गतिविधिके सन्तुलनको वहाल करना ही चिकित्सा है। इस तरह, औषधके रूपमें जिस चीजके परमाणुओंका व्यवहार हुआ है, वे प्रभावित या पीडित कोष, या तन्तु-लवणके अभावकी पूर्ति कर देंगे।

विरशोका मत है कि, कोषकी परिवर्तित अवस्था का नाम ही रोग है, और उसकी स्वाभाविक स्थितिका नाम स्वास्थ्य है। कोष रचनाका निर्णय इस वातसे किया जाता है, कि उसकी पोषक परिस्थितियाँ कैसी हैं? यह वैसी ही वात है जैसे कोई वृक्ष अपनी जडोके आसपासकी भूमि पर पनपता है।

कृषि-रसायनमें, खाद डालते समय, हम उस तत्त्वपर अधिक ध्यान देते हैं, जिसका भूमिमें अभाव हो। परन्तु तीन तत्त्व ऐसे हैं जिनकी खाद के तौर पर नितान्त आवश्यक पडती है, अर्थात्—अमोनिया, फॉस्फेट आव लाईम और पोटाश। पौधेके पोषणके लिए जिन अन्य तत्त्वो की आवश्यकता होती है, वे सव मिट्टी में पाए जाते हैं। अभावपूर्तिका यही सिद्धात वायोकेमिक औषधो पर भी लागू होता है। उदाहरणार्थ .

एक वालक शोष रोगसे पीडित है। इससे स्पष्ट है कि उसकी हड्डियोंमें फॉस्फेट आव लाईम की कमी है, और यह कमी इसलिए आयी कि उस लवण के कणों की गतिविधि में वाधा आयी है। हड्डियो के लिए फॉस्फेट आव लाईम की जितनी मात्रा में आवश्यकता थी, वह अपने निश्चित स्थान तक नही पहुँची, और रक्त में सचित हो गई, क्योंकि, वह पेशावके साथ वाहर भी नही निकली, क्योंकि गुदा का यह काम है कि वे रक्तके मूल अगो में सन्तुलन वहाल रखें, यदि रक्तमें कोई विजातीय तत्त्व आ गया है, या उसका कोई मूल अग फालतू मात्रामें आ गया है—उसे पेशावके साथ, वाहर निकाल देना—गुदाका काम है। अब उसी लवणका अल्प मात्रामें व्यवहार कराके, उसके कणों की स्वाभाविक गतिविधि को वहाल किया जा सकता है, फालतू मात्रा फिर रक्तधारमें शामिल हो जाएगी, और इस तरह, शोष दूर हो जाएगा।

प्रत्येक स्वाभाविक कोषमें, कुछ विशेष द्रव्यों का शोषण करने, या, न करने की क्षमता है। जब किसी क्षोभ के परिणामस्वरूप, कोषमें, किसी नमकका

अभाव हो जाता है, तो उसकी यह क्षमता घट, या, कुछ समय के लिए स्थगित हो जाती है। जैसे ही आसपास की पोषक भूमि से, उसी प्रकार के द्रव्यकी पूर्ति द्वारा, उस अभावकी पूर्ति कर दी जाती है,—सन्तुलन बहाल हो जाता है। परन्तु जब यह पूर्ति तत्काल नहीं होती, तो यह समझना पड़ेगा कि अभीष्ट लवणकी आवश्यक मात्रा, या परिणाम का अभाव है, या इसके विपरीत, रोग पीड़ित कोषमें भौतिक परिवर्त्तन हुआ है, और वहाँ वाञ्छित तन्तु-लवणका प्रवेश निषिद्ध है। ऐसी अवस्थामें वाञ्छित लवण, हीनावस्था में देना चाहिए; अर्थात ऊँची शक्ति का विचूर्ण दें।

यदि परिवर्त्तित कोष, क्षतिपूर्ति हो जानेके बाद, अपनी पूर्वावस्था में आ जाए, तो वे अपना स्वाभाविक कार्य फिर सम्पन्न कर सकते हैं, अर्थात् रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा, शरीर के मलोंका निस्सरण फिर कर सकते हैं। बायोकेमिक चिकित्सा पद्धति, किसी अंग विशेषमें जिस स्वाभाविक औषध—निर्जीव कोषलवणका अभाव पड़ गया है, उसकी पूर्ति द्वारा, रोग दूर करनेमें, प्रकृतिकी ही सहायता करती है, और इस प्रकार, शारीरिक रसायन की असाधारण अवस्थाओंको दुरुस्त करती है।

बायोकेमिक चिकित्सा पद्धतिका उद्देश्य है कि प्रत्यक्ष रूपसे अभावकी पूर्ति करना। अन्य चिकित्सा-पद्धतियाँ, इस लक्ष्य तक अप्रत्यक्ष रूपसे पहुँचती हैं, क्योंकि वे सब रोग निवारणके लिए, ऐसे तत्त्वोंका व्यवहार करती है, जो मानव शरीरकी रचनाके अंगभूत तत्त्वोंसे सर्वथा भिन्न हैं।

---

## स्वाभाविक कोष सन्तुलन बहाल करने के लिए तन्तुलवण की आवश्यक मात्रा या खुराक

बायोकेमिक औषधोंका व्यवहार कम-से-कम मात्रामें कराया जाता है और यह मात्रा, उस अनुपात के अनुरुप होती है जिसमें, कोष-लवण, तन्तुओं में पाया जाता है।

अल्प मात्राएँ रोगको कैसे दूर करती है? यह विशेषता समझनेके लिए, निम्न तथ्योंपर विचार करें।

प्रकृतिके सारे कार्यका आधार कण, या परमाणु या, उनका समूह है। जीव जन्तुओं और वनस्पतियोंका एक साथ—सामूहिक विकास, वर्त्तमान परमाणुओंके अतिरिक्त, नए परमाणुओं, या उनके समूह पर आश्रित है।

यद्यपि यह सत्य है कि प्रकाशकी क्रिया का नाप-तोल नहीं हो सकता; फिर भी, उसके कारण सजीव बनस्पतियो में परमाणु की गतिविधि होती है, और उसके परिणामस्वरूप, कार्बोनिक ऐसिड, कार्बन और ओपजनमें परिणित हो जाता है, और फिर फोटोग्राफिक प्लेट, आँखके उपतारे पर भी प्रकाश का प्रभाव पडता है, तो भी, इस बातका खण्डन करना असम्भव है, कि पदार्थके असीम सूक्ष्म कण जिनका नापतोल असम्भव है, सजीव देहों पर, आ सकते हैं। बायोकेमिक चिकित्सा-पद्धतिमें, अल्पमात्रा का व्यवहार, रासायनिक-शारीरिक आवश्यकता है। उदाहरणार्थः आप यह चाहते हैं कि सोडियम सल्फेट रक्त तक पहुँच जाए। उसका घोल पिलानेसे यह काम नही हो सकता। इसका असर केवल अन्तडियोपर होगा, और उसके परिणामस्वरूप, पानी-से पतले दस्त आएगे, और नमक शरीर से बाहर निकल जाएगा। परन्तु इसी नमक ( नेटरम सल्फ ) का कम शक्ति वाला घोल रक्त, और अन्तरकोषोंके उन तरलोंमें घुल-मिल जाएगा, जो मुँह और अन्ननालीसे निकलते हैं। यह लवण, अपनी जल या नमी नामक क्षमता द्वारा, तन्तुओंमें सञ्चित जल की अधिक, या फालतू मात्राको रक्त नाडियोंमें पहुँचा देता है, और वहाँ से वह पेशावके साथ बाहर निकल जाता है, अर्थात् तब पेशाब की मात्रा बढ जाती है।

बायोकेमिक औषधोंको भी काफी पतला बना लेना चाहिए, ताकि यह स्वस्थ कोषोंकी क्रियाको नष्ट न कर सकें, और जहाँ कही स्वाभाविक क्रिया में बाधा पडी हो—उसे दूर कर सकें।

स्वस्थ जीव-जन्तुओं या बनस्पतियोंमें, जो नमक पाये जाते हैं— वे घोल के रूपमें ही पाए जाते हैं, और ये घोल, औषधोंको ३X, ४X या ५X के घोल के बराबर होते हैं।

रक्त-कोषोंके विश्लेषण की निम्न तालिकामें मानव-शरीरका अनुपात बताया गया है।

बंगे द्वारा लिखित "शारीरिक और निदान सम्बन्धी रासायन" पुस्तकमे बताया गया है कि १,००० ग्राम रक्त कोषोंमें निर्जीव पदार्थोंकी मात्रा निम्नलिखित है।

| | |
|---|---|
| आयरन ( लौह ) | ० ९९८ |
| काली सल्फ | ० १३२ |
| काली म्योर | ३ ०७९ |
| काली फॉस | २ ३४३ |
| नेटरम फॉस | ० ६३३ |

| | |
|---|---|
| नेटरम | ०·३४४ |
| कैल्केरिया फॉस | ०·०६४ |
| मैगनेशिया फॉस | ०·०६० |

रक्तके वर्णहीन तरलके १,००० ग्राममें निर्जीव पदार्थोका अनुपात निम्न-लिखित है :

| | |
|---|---|
| काली सल्फ | ०·२८१ |
| काली म्योर | ०·३५६ |
| नेटरम म्योर | ५·५४५ |
| नेटरम फॉस | ०·२७१ |
| नेटरम | १·५३२ |
| कल्केरिया फॉस | ०·२६८ |
| मैगनेशिया फॉस | ०·२१८ |

नेटरम सल्फ, फ्लोर और सिलिका लेशमात्र है।

इस विश्लेपणके साथ-साथ आप दूधसे भी तुलना करें। दूधके एक लिटर या १,००० ग्राममें निम्न पदार्थ पाये जाते हैं :

| | |
|---|---|
| काली | ०·७८० |
| नेटरम | ०·२३० |
| कल्केरिया | ०·३३० |
| मैगनेशिया | ०·०६० |
| आइरन (लौह) | ०·००४ |
| फॉस्फोरिक ऐसिड | ०·४७० |
| क्लोर | ०·४४० |

फ्लोर और सिलिका लेशमात्र ही है।

जिस बच्चेका भार ६ किलोग्राम, या १३। पौण्ड है, उसके लिए नित्य एक लिटर ( एक क्वार्ट अर्थात् ३ पावसे कुछ ऊपर ) दूध काफी है।

अब यदि ६ सेण्टीग्राम ( ३॥ ग्रेन ) मैगनेशिया, एक बच्चेकी दैनिक आवश्यकता पूरी करनेके लिए काफी है, तो फिर, उस स्नायुशूलको दूर करनेके लिए, जो इस लवणकी अचिन्तनीय न्यूनताके कारण आया होगा—स्नायु तन्तुको कितने कम लवणकी आवश्यकता है।

एक कोषके खनिज यौगिक असीम अल्प है। शारीरिक विज्ञानके विशेषज्ञ डा० सी, श्मिडकी गणनाके अनुसार, रक्तके प्रत्येक कणमें एक ग्रामका १ खरववां भाग **काली म्योर** पाया जाता है। यह १२x विचूर्णके समान है।

ऐलोपैथिवाले कुछ औषधोका व्यवहार, इसी तरहकी अल्पमात्रामें करते हैं, जैसे कारौस्सिव सवलीमेट। इसके वारेमें प्रो० ह्यूगो शूलत्सने कहा है कि इसके १:६००,००० से लेकर १.८०,००० शक्तिका घोल, अगूर-शर्कराके उस घोलमें जवर्दस्त ख़मीर पैदा कर देता है, जिसमें पहले ही खमीर पैदा कर दिया गया हो ( देखिए **बर्लिनेर क्लिनिक वीचनाख्रिफ्ट**, ४ नवम्बर १८८६ । )

जो निर्जीव-तत्त्व, पोधोंका पोषण करते हैं—पौधे उन्हे अल्पतम मात्रामें ग्रहण करते हें। लाईविगने अपने रासायनिक पत्रोमें लिखा है कि मिट्टीके फास्फेटके वलवत्तम खादके मोटे चूर्णके असरकी तुलना, उसीके महीन चूर्णके असरसे नही की जा सकती, क्योंकि खादका यह महीन चूर्ण महीन होनेके कारण, मिट्टीका अग वन जाता है, और यह उसे आसपासकी मिट्टीसे मिल जाती है, परन्तु उसकी गतिविधिको जारी रखने, और उसके अस्तित्त्व को कायम रखनेके लिए, यह आवश्यक हे कि वाछित मात्रा वहा विद्यमान हो। उस मिट्टीमें जो खनिजतत्त्व अघुलनशील हैं, वनस्पति तक पहुँचनेसे पहले, जडोका अम्लरस उन्हे घुला देता है।

जव कोई खनिज, मनुष्य के आमाशयमें पहुँचता है, तो उसपर सवसे पहले, उस म्योरियाटिक ऐसिड का असर होता है, जो आमाशय रसमें मौजूद होता है। यदि वह लोहेका कोई लवण है, तो उसका क्लोराईड वन जाएगा। अव यदि आप औषधके रूपमें फास्फेट आव आयरन देना चाहते हैं तो उसे आमाशयसे दूर रखना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए अल्पतम मात्राकी आवश्यकता है—औषधको इस हद तक पतला वना देना चाहिए कि उसके कण मुँह, गलकोप और अन्ननाली की अन्तर त्वचा तक पहुँच जाएँ, और वहाँसे वे क्षुद्र धमनियोकी राह, रक्ततक पहुँच जाएँगे। जो पदार्थ पानीमे नही घुलते, उनका कमसे कम ६ X पोटैंसी तक विचूर्ण वनाना चाहिए, और जो पानीमें घुल जाते है, वे निम्न शक्तियोंमें होनेसे भी, अन्तर त्वचाके कोषों में समा जाते हैं।

कुछ खनिज जलोंमें खनिज लवण इतनी कम मात्रामें पाये जाते है कि ६ X या ८ X के वरावर होते हैं। इस तरह, रिलिशिंजेनके पानीमें जो **मेगनेशिया फास** पाया जाता है—वह ८ X शक्तिके वरावर है, उसमें जो **काली म्योर** पाया जाता है—वह ५ X के वरावर है, और **सिलिका** ६ X शक्तिके वरावर।

डा० वाहनिकेने, स्नानार्थ और खनिज पदार्थों वाले झरनोंके पानियोंके वारेमें, सही लिखा है कि जिस सापेक्षिक अनुपातसे, ये लवण, खनिज पानियोंमें पाये जाते हैं, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अधिकाश झरनोंकी प्रसिद्धिका एकमात्र

कारण यही वास्तविकता है कि उनके पानीमें, रोगनाशक तत्त्व अत्यत कम मात्रामें हैं, और प्रायः सर्वोत्तम परिणाम उन मात्राओंमे प्राप्त हुए, जो आमतौर पर अल्पल्प समझी गयी ।

रोग दूर करनेके लिए, अल्प मात्राकी मान्यता शरीर-रचना सम्बन्धी विज्ञान और रासायनिक तथ्यों मे पूरी तरह मेल खाती है, जैसा कि शरीर रचनाके विशेषज्ञ प्रो० वेलण्टाईनने लिखा है :—

"प्रकृति असीम अल्प आकार-प्रकारमे काम लेती हैं, समूह चाहे सम हो या विषम, हमारी अपेक्षत. कुंठित ज्ञानेन्द्रियाँ, उसका आभास तभी कर सकती हैं, जब वह ठोस रूप में हमारे सामने आ जाता है। जिस छोटेसे छोटे चित्रको हमारी आँख देख सकती है, वह प्रकाशकी लाखो लहरो या तरंगोका परिणाम होता है; लवणके जिस कणका हम रसास्वादन भी नहीं कर सकते, उसमें परमाणुओं के न जाने कितने ही मीनार होते हैं, जिन्हें हमारी स्थूल आँख कभी देख नहीं सकती।"

इस तथ्य का अधिक स्पष्टीकरण, प्राध्यापक किरशफ और प्राध्यापक बुनसेनके प्रसिद्ध परीक्षणोंसे किया जा सकता है। उन्होंने साधारण नमक ३ मिलीग्राम (१।२० ग्रेन से भी कम) मात्रा में लेकर, एक ऐसे कमरे में उडा दिया जिसमें ६० घन मीटर हवा थी। कुछ ही मिन्टोंके वाद कुछ दूरी पर अग्नि-शिखाके रूपमें, सोडियमकी लकीरें उभरी, जिन्हे इन स्थूल नेत्रो से देखा जा सकता था।

सूक्ष्म मात्राओं की शक्ति के वारे में, आधुनिक विज्ञान कितने ही उदाहरण उपस्थित करता है। हम उनमेंसे कुछ का हवाला यहाँ देंगे। इनमें से एक उदाहरण प्रसिद्ध समीक्षक डार्विन का है। 'कीडे खाने वाले पोधे' नामी अपनी पुस्तकमें उन्होने लिखा है :—"यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि अमोनिया फास्फेट एक ग्रेनका २ करोडवा भाग (यह मात्रा टिशु रेमिडीज में वतायी शक्ति के हिसाबसे, आमतौर पर, ६X के वरावर है) ग्रंथि में ऐसे परिवर्त्तन लाता है, जो कि शरीरकी सारी लम्बाईमें गतिकी प्रेरणा उत्पन्न कर देता है। गतिविधिकी यह उत्तेजक प्रेरणा १८० डिग्री पर आती है।"

यद्यपि स्वादकी नाडियोंको खानेके आम नमककी उपस्थितिका बोध हो जाता है, फिर चाहे वह कच्चा नमक इन नाडियों की परिधि से ही छुआ गया हो। अब विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या वह नमक, जिसे जलादि मिलाकर पतला नहीं किया गया, स्नायु-जालके आवरणोंमें प्रविष्ट हो सकता

है या वे उसका शोषण कर सकते हैं ? इस उद्देश्यके लिए, यह मान लेना अधिक युक्तियुक्त होगा, कि चूर्ण का जितना ऊँचा क्रम तैयार किया जायगा वह लवणके वाञ्छित परमाणुओं की उतनी ही पूर्ति करेगा ।

हटरका मत है कि जब १० लाख गुना जलमें अट्रोपीनका घोल तैयार किया जाता है, तो वह मानव और उन पशुओं की आँखों की पुतलियोंको फैला देता है जिनके रक्तमें गर्मी कम है ।

एक लिटर (एक क्वार्टसे कुछ अधिक) दूधमें, लगभग ४ मिलीग्राम लोहा पाया जाता है, और जो बच्चा दूध पर पलता है, उसे एक मिलीग्राम या इस मात्रामें १।६५ ग्रेन लोहा मिलता है । यदि बच्चेके पालनपोषण, और विकास के लिए, नित्य ४ मिलीग्राम लोहेकी आवश्यकता हो (क्योंकि यह शरीरमें सभी लौह कोषमें विलीन हो जाती है) , तब औषधके रूपमें, इस सूक्ष्मकोषमें आये परमाणु विकारका सन्तुलन बहाल करनेके लिए, लौह-लवणकी कितनी सूक्ष्म मात्राकी आवश्यकता है ? उदाहरणार्थ—वहाँ उस प्रकारका विकार रक्ताधिक्य ला सकता है, और इस तरह वहाँ क्षोभ पैदा हो सकता है ।

आजतक यह निश्चित नही हुआ कि दूधमें फ्लोरीनकी मात्रा कितनी है । मानव शरीरमें उसकी मात्रा, लोहेसे भी कम है । यह माना जा सकता है कि दूधमें फ्लोरीन की मात्रा, एक मिलीग्रामका दसवा भाग है । यदि औषध रूपमें एक मिलीग्राम कलशियम क्लोराईड दिया जाए, तो यह बहुत बडी मात्रा है । डॉ० हरमन हिल्ले पी०एच०डी० का मत है, कि बिल्लौरके समान स्वच्छ निर्जीव तत्त्वोंको कोषीय सजीव कणोंके रूपमें विकसित करनेका एकमात्र उपाय यही है कि उनका अधिक-से-अधिक शोधन किया जाए, और उनकी कम्पन-क्रिया बढायी जाए । क्या होम्योपैथिक औषधोकी निर्माण पद्धति यही नही है ?

रासायनिक चिकित्साके अनुसार, रोगीको, जिस किसी औषधकी जो भी मात्रा दी जाए, वह अतिमात्रा न होकर, अत्यन्त अल्प होनी चाहिए । इस अल्प मात्राकी पुनरावृत्ति ही वाञ्छित फल देगी,—परन्तु यदि मात्रा अधिक होगी, तो फिर उद्देश्व सिद्ध नहीं होगा ।

जब हरे पाण्डु या आमाशय के विकार दूर करनेके लिए लोहा, बडी मात्रामें दिया गया, तो, वह शरीरमें काम आये बिना ही, पाखानेके रास्ते निकल गया ; अधिकांशतः रोगपर उसका कोई प्रभाव न पडा ।

जब हाईडरोक्लोरिक ऐसिड को हज़ार गुना पानीमें पतला किया गया, तो यह शरीरके तापमानपर, तन्तुओं और निशास्तेको घुला देता है । और यदि

डाईल्यूशनमें ऐमिडका अनुपात बढा दिया जाए, तो, यह घुलाने वाला पाउडर बढ़ता नही, वरन घटता है। ( लाईविग द्वारा लिखित रासायनिक पत्र"। )

---

# तैयारी और मात्रा

चिकित्साके उद्देश्यके लिए 'टिशू रेमिडीज' भी वैसे ही तैयार की जाती हैं, जैसे कि होम्योपैथिक औषधियाँ, अर्थात डसमलव या सौके हिसाबसे, चूर्ण या डाईलूशन ( अर्क ) के रुपमें तैयार होती हैं। कच्चे रूपमें, परन्तु रासायनिक दृष्टिसे, शुद्ध चीज़ ली जाती है। इसका एक भाग और दुग्घशर्कराका ९ भाग लेकर, कमसे कम, २ घण्टे तक पीसा जाता है। यह १X विचूर्ण तैयार हो गया। इस विचूर्णके एक ग्रेनमें, उस कोष लवणका जिसे पीसा गया है, १।१० ग्रेन है।

अब इस १X विचूर्णमेंसे एक भाग विचूर्ण लेकर, ९ भाग दुग्ध शर्करामें मिलाकर, फिर २ घण्टे तक पीसें, तो, २X विचूर्ण तैयार हो जाएगा। यह प्रथम शक्तिके विचूर्णके बराबर है। इसमें पीसे हुये कोष लवणका १।१०० भाग है। परन्तु अनुभवसे देखा पया है—और देखा जा सकता है—जैसा कि ऊपर उदाहरण दिये गये हैं—सजीव देहके लिए, कणोका यह सूक्ष्म विभाजन जारी रखा जाता है, और, छठा, बारहवा या इससे भी ऊँचे कम बनाए जाते हैं।

---

# शुसलर की अपनी पद्धति

शुसलरकी छटी शक्ति, या १२X विचूर्णसे श्रीगणेश किया था। परन्तु उन्होंने, अपनी प्रारम्भिक प्रैकिटसमें ६X विचूर्णको ही सर्वाधिक मान्यता दी। बादमें यह देखा गया कि पोटासियम और सोडियम की निम्न शक्तियाँ भी जैसे ३X, और अन्य लवणों को ४X, या ५X, शक्ति भी समाने रूपसे गुणकारी है। अपनी 'सक्षिप्त चिकित्सा-पद्धति' के अन्तिम सस्करणमें, उन्होंने इस विषय पर लिखा है। "मै अपने रोगियोंको आमतौर पर ६X विचूर्ण देता हूँ; परन्तु फैरम फॉस, साईलीशिया और कल्केरिया फ्लोरका १२ शक्तिका विचूर्ण देता हूं। तरुण रोगोमें मटरके दाने के बराबर चूर्ण, हर घण्टे या दो घण्टे बाद देना चाहिए। पुराने रोगोंमें दिनमें ३ या चार मात्राएँ देनी चाहिए।

चूर्ण यों ही जवान पर डाला जा सकता है, या एक चम्मच भर पानीमें घोल कर दिया जा सकता है।

हमें स्वय भी ६X शक्तिके विचूर्णोसे अत्यन्त सन्तोषजनक परिणाम मिले हैं, और यदाकदा ही ऊपर, या नीचेकी शक्तियोका व्यवहार करना पडा है। हमारा दवा देनेका आम तरीका यह है कि चुनी हुई औषधके चूर्णको आधा ग्लास पानीमें घोल देते हैं, और फिर घण्टा या दो घण्टा वाद, चायका एक-एक चम्मच पिलाते रहते हैं।

इन विचूर्णों की १-१ ग्रेन वजन की गोलियाँ भी वनाई जा सकती है। ऐसी २ या ३ गोलियाँ, यों ही, जीभ पर डाल दी जाएँ, या पानीमें घोल कर दी जाएँ।

यदि तरल घोलका व्यवहार करना हो तो, फिर दवाकी कुछ बूँदें थोडे पानीमें डाल दी जाएँ, या गोलियाँ दवासे तर करके दी जा सकती है। छोटे वच्चों की हालतमें ऐसा ही करना चाहिए।

---

## मात्रा की पुनरावृत्ति

तरुण, अर्थात् नए रोगमें, हर एक या दो घण्टे वाद दवा देनी चाहिए। जव रोग अधिक कडा, और वेदनापूर्ण हो, तो फिर, १० या १५ मिनटके वाद भी दवा दी जा सकती है। पुराने रोगोंमें दिन भरमें कमसे कम एक, और अधिक-से अधिक ४ मात्राएँ देनी चाहिए।

कुछ उपयुक्त स्थितियोंमें, औषधोंका वाहरी व्यवहार भी हो सकता है; और यह लाभदायक सिद्ध हुआ है। इस उद्देश्यके के लिए निम्न शक्तिके विचूर्णों का व्यवहार होना चाहिए।

वायोकेमिक औषधकी मात्राका निर्णय करते हुए, रोगका उपद्रव कितना है,—यह सोचना कोई महत्वकी वात नहीं है। उदाहरणके लिए अन्तर त्वचाके कोष, रक्ताम्बुका अधिक मात्रामें निस्सरण कर सकते हैं, और **नेटरम म्योर** की सूक्ष्मतम मात्रा, जो स्वभावके अनुरूप हो, उस निस्सरणका पूर्ण शोषण कर सकती है।

कोष-लवणों की सापेक्ष मात्राओंके प्रकाशमें, प्रत्येक चिकित्सक, उस वायोकेमिक औषधकी मात्राका उचित चुनाव कर सकता है, जिसके लक्षण रोगीमें विद्यमान हैं।

यह अनुमान लगाया गया है कि किसी भी विशेष लवणके २X विचूर्णके १ मिलीग्राम ( १।१०० ग्रेन ) वजनमें १६ पद्‌म ( महाशख ) परमाणु होते हैं। इस अनुमानके आधार पर, ६X विचूर्णके उतने ही वजनमें, १६० खरब परमाणु होते हैं। परमाणुओंकी यह सख्या, विकृत परमाणु गतिविधिको नारमल बनानेके लिए काफी है।

आपत्तिके रूपमें, इस बात पर जोर दिया जा सकता है कि जिस विशेष पदार्थको, औषध रूपमें दिया गया है—उसके परमाणु, शरीरमें जाकर, सजातीय परमाणुओंसे हिलमिल जाएगे, और इस तरह, रोगमें सुधार लाने की चेष्टा भ्रममात्र रह जाएगी। परन्तु इस प्रकार का सम्मिलन सम्भव नहीं; क्योंकि रक्तमें जो कार्बोनिक ऐसिड पहले से ही मौजूद है, वह लवणों का पृथकीकरण करता रहता है।

---

## बायोकेमिक और होम्योपैथिक चिकित्साओं का संबंध

प्राय. यह पूछा जाता है : "क्या शुसलर पद्धति होम्योपैथी है ?" इसके प्रायः दोनों ही उत्तर दिए जाते हैं ; अर्थात् हा में भी और ना में भी। स्वयं शुसलरने, यह दावा किया है कि उनकी पद्धतिका, होम्योपैथीसे कोई सम्बन्ध नहीं है। उन्होंने यह दावा भी किया है कि उनकी चिकित्सा-पद्धति बिलकुल अलग है।

अन्य युक्तियोंके साथ-साथ, उन्होंने यह दावा भी किया है कि बायोकेमिक औषधियाँ पूरक हैं ; अर्थात् कमी पूरा करती हैं। यदि इस विचार पर अक्षरशः सोचा जाए तो यह भ्रममूलक है। उदाहरणके लिए : मान लीजिए शरीरमें **नेट्रम म्यूर**के परमाणुओं की गडबड है, तो यह आवश्यक नहीं है कि शरीर में जितना **नेट्रम म्यूर** होना चाहिए—उस मात्रामें कमी पड गई है। इसके विपरीत, यह भी सम्भव है, कि परमाणुओंकी वर्त्तमान निरन्तरता, या, एक-रसताकी व्यवस्थामें अन्तर पड गया हो। जब यह लवण, औषधके रूपमें दिया जाता है, तो, यह अपने अभाव की पूर्ति नहीं करता , क्योंकि वह जितनी मात्रामें दिया गया है—वह इस उद्देश्य की पूर्तिके लिए असीम कम है। और यदि यही सत्य हो, तो फिर, उतनी ही मात्रामें खाने-पीने के साथ दिया जा सकता था , ताकि वह यही असर कर सके। अल्पमात्रामें यह जिस अभाव को पूर्ति करता है, वह यह है, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, कि, **नेट्रम म्यूर** के परमाणुओंकी निरन्तरता, श्रृखला, या एकरूपतामें आयी अव्यवस्थाको

दूर कर देता है। इस तरह, उन्हें अपना काम उचित ढगसे करनेमें सहायता मिल जाती है। चूँकि अभाव भी परमाणुओंका था—और पूर्ति भी परमाणुओं द्वारा ही हुई।

औषधोंके कार्यके वारे में, यह विचारधारा, नयी नहीं है। महान समीक्षक फॉन ग्रॉफोगल की रचनाओं का जिन्होंने अध्ययन किया है—वे इस वातका समर्थन करेंगे। शुसलर की वहुत-सी कल्पनाओं का आभास ग्रॉफोगल और हेरिंग की रचनाओंमें पाया जाता है।

यह वात सदा ही विवादग्रस्त रही है कि हमारी होम्योपैथिक दवाएँ कैसे असर करती हैं? इसी सवालमें, अल्पतम मात्राका सवाल भी शामिल है; और यह सवाल होम्योपैथी तथा चिकित्सा की दृष्टिसे, अत्यधिक दिलचस्प है।

अवतक जो विश्लेषण हुये हैं, उनसे पता चलता है कि ये १२ नमक हमारी अनेक सुप्रसिद्ध और परीक्षित होम्योपैथिक औषधों का अगभूत हैं, और ये सव औषधियाँ हमें काष्टवर्ग अर्थात वनस्पतियोंसे प्राप्त होती हैं। यह वात निम्न तालिकामें दर्शायी गयी है।

## टेवल

| | |
|---|---|
| फैरम फास | चाईना, जेल्सी; विरेटरम, आर्निका, एनिसम स्टेलेटम; फाईटो, वर्वेरिस वल्गेरिस; असाफेटिडा (४)*, वाईवरनम, सीकेल (२५), ग्रेफाईटिस (२७४), रूमेक्स; एलेंथस। |
| कैल्केरिया फास | चाईना, वाईवरनम् प्रुन; एलेंथस, फाईटो, वर्वेरिस वल्गे; कालोसिंथ (२७) ग्रेफाईट। |
| नेटरम फास | रह्यूम, एलेंथ, एनिसम स्टेलेटम, हैमामेलिस। |
| केली फास | पलस, वप्टीशिया, रस, विरेटरम, इपोफेगस, वाईवरनम प्र; छिनि, सीमीसीफयूगा, कटस ग्रा, स्ट्रेमोनि, जैंथोक्सीलम; एलेंथस, एनिसम स्टे, हैमामेलिस; फाईटो; काकुस। |
| केली म्यूर | फाईटो, सेंग्वीनेरिया, स्टिलिंजिया; पाईनस, कैन, सक्लेपियस, वाईवरनम प्रून, एलेंथस, एनिसम स्टेलेटम, हैमामेलिस; सीमीसीफयूग। |
| नेट्रम म्यूर | सिड्रन, आरम ट्रिफाइल, एनीस स्टेल, हमाल,—सिमिसिफ, सीकेल (५०) |

* । कोष्ठोंमें जो अक दिये गये हैं, वे प्रतिशत हैं।

| | |
|---|---|
| केल्केरिया फ्लोर | फाईटोलैका |
| साईलीशिया | इक्वीजेटम (लगभग १८२); सीमीसीफयूगा (४); चेलीडोनियम; ग्रेफाईटिस (१३); सीकेल (१५); लाईकोपोडियम। |
| केल्केरिया सल्फ | एपोसाईनम; एलेंयस, असाफीटिडा (२.२) |
| नेट्रम सल्फ | एपोसाईनम्, आईरिस; कैमोमिला, चियानेथस; लाईकोपो; ब्रायोनिया; डिजि चेलीडोनियम; नक्स वा; ऐनिसम स्टेलेटम; हैमामेलिस, सीमीसीफयूगा। |
| केली सल्फ | पल्सेटिला; हाईड्रैस्टिस, माईरिस्टिका, सीमीसीफयूगा; फाईटो, वाइबरनम; एनिसम स्टे, हैमामेलिस। |
| मैगनेशिया फास | वाईबरनम आप, बेझा; लोबेलिया, स्ट्रेमोनियम, वाईबरनम प्र; एलेंयस, सीकेल (·५०), कालोसिंथ (३); जेल्सीमम; रस, ग्रेफाईट। |
| नेट्रम म्यूर | आरम ट्रि फाईलम। |

यह तालिका बहुत अधूरी है; हम वानस्पतिक और पशु जगतसे प्राप्त होनेवाली जितनी औषधों का व्यवहार करते हैं—उनकी अपेक्षा बहुत कमका विश्लेषण हुआ है। इनमेंसे अधिकाश विश्लेषण बहुत भद्दे ढग पर हुये हैं। उनमें केवल इन लवणोंकी उपस्थिति ही अकितकी गयी है; उनका अनुपात नहीं देखा गया। इस कार्यको सही तरीकेसे करनेके लिए बहुत समयकी आवश्यकता है, और यह व्यय साध्य भी बहुत है। नि.सन्देह, यह प्रश्न ऐलोपैथीवालोंके लिए ही नही है, वरन हम होम्योपैथिक चिकित्सकोंके लिये भी महत्त्व रखता है, जो अल्पतम मात्राका व्यवहार करते हैं, कि जब **इक्वीजेटममें** साईलीशिया १८ २ प्रतिशत है, **हैममेलिसमे** पोटाश और सोडियम लवण ६%है, **सीमीसीफ्यूगा**में साईलीशिया ४%है, **कालोसिंथमें** मैगनेशिया फॉस ३%है, और अन्य निर्जीव तत्त्व विभिन्न अनुपातमें हैं, तो, ये इतने महत्वकी चीजें कैसे बन गयी? हमें पशु जगत और वानस्पतिक जगतसे जो औषधियाँ प्राप्त होती हैं, क्या उनका परिमाण और अनुपात सम्बन्धी **इतना सही** विश्लेषण हो सकता है? यदि ऐसा सम्भव हो, तो फिर, हम यह निश्चय कर सकते हैं, कि कौन-सा लक्षण किस तन्तु लवणका है। यदि ऐसा हो जाए,

तो बहुत सम्भव है कि हम आसानीके साथ यह भी बता सके कि अमुक औषधा के लक्षण, अमुक औषधने क्यो पैदा किये ? किसी एक औषधके मार्गदर्शक लक्षण, दूसरी औषधमें गौण क्यों हो गए ? शायद यह भी कहा जा सकता है कि ये दोनोके निजी लक्षण न भी हो, बल्कि वे उस निर्जीव तन्तु-लवण के हो, जो दोनोंका अगभूत है ।

सम्भवतः **फाईटोलेका डिकेण्डरा** ही एकमात्र ऐसी औषध है जिसका अधिकसे अधिक पूर्ण विश्लेषण हुआ है, वाष्पीकरण, और भस्मीकरणके बाद, सब सजीव उपादान नष्ट हो गए, तो निर्जीव तत्त्व ८ ४% रह गये । इनमें ६ ८% घुलनशील थे, और वे अधिकाशतः पोटाश-लवण है, बाकी १ ०६% अघुलनशील थे, और वे कैल्सियम, आईरन और सिलिका थे । यदि हम **फोईटो** की रोगोत्पादक शक्तियो की तुलना, इन बायोकेमिक लवणोके साथ करें तो, हमें आश्चर्यजनक और महत्त्वपूर्ण सादृश्यता मिलेगी । निर्जीव लवणो में से, उसमें पोटाशकी मात्रा सर्वाधिक है, इसलिये, हम देखते है कि इसके अधिकाश लक्षण **केलीमे** मिलते है, जबकि कैल्सियम, आईरन और सिलिका से बहुत कम लक्षणो की समता है । यह बात निम्न तालिका से स्पष्ट होगी ।

| केली म्यूर | केली फास | केली सल्फर | कैल्केरिया फास |
|---|---|---|---|
| कानको मध्यनाली बद हो जाती है। नयनों से पानी-सा स्राव गिरे। मुंह; और गलेमें तथा टॉसिल पर घाव कफ बड़ी कठिनता से थूके। डिफ्थेरिया, पुराना सरदर्द। नजलेवाला अभिष्यन्द, सूखा जुकाम। मुंहमें छोटे-छोटे छाले। मसूढ़े प्रदाहित; पूर्ण अरुचि। जमे हुये खून की कै और अतिसार। खूनी बवासीर कब्ज, पेशाबमें लाल तलछट जमे, सुजाक, पुराना सुजाक। आतशक, आतशक के घाव। स्तनोंमें कड़ी गाठें स्तन सुकड़े हुये। स्वरभंग, स्वरलोप, कफ गाढ़ा, कड़ा। उगलियों के जोड़ फूले हुये। गठियावात जो हरकत से बढ़े। टांगोंके घाव ग्रथियां फूली हुई और प्रदाहित। प्रमेह विष आरक्तज्वर और वेदना। | चिड़चिड़ापन, कायरता, खिन्नता नराश। पेशावक जोड़दार वेग मुहका नासूर। मासिक समयसे पहले और अधिक मात्रामें आए। चक्कर आए, चेहरा बनवाटी। कैंसरका दर्द भारी थकान, निढाल हो जाना। गृध्रसी जगाने पर थका-थका नजर आए दुर्गन्धित पतला मवाद | जीभपर पीली मैल खांसी रातको बढ़े। दम घुटने जैसा बोध भ्रमणशील गठिया वात। आतशक। स्वरभग जो शामको बढ़े। जोड़ों का पुराना दर्द | ग्रन्थियां फूली हुई और प्रदाहित दर्द रातको बढ़े। दांत देरसे आए। |

| कैल्केरिया फ्लोर | कैल्केरिया सल्फ | फैरम फास | साईलीशिया |
|---|---|---|---|
| स्तनोंमें कड़ी गाठें गुदाका फटाव, कमर दर्द । टांगों पर गाठें बनें । | पीव जल्दी लाता है। खोपड़ी की तर दाद जिसपर मोटाखुरण्ड आए। स्तन सुकड़े हुए फोड़ा। | हड्डिया प्रदाहित । आँखोंमें जैसे रेत पड़ा है। जलनका वोध, खून । और लारकी कै । वक्षगह्वरमें दर्द और खासी । | पीव जल्दी लाता है पावकी उगलियोंपर पसीना । अस्थि आवरणों में वेदना । घाव |

यदि यह विश्लेषण परिमाण की दृष्टिसे सही होता, तो, हमें शायद यह पता चल जाता कि इसमें **नेट्रम म्यूर** कितना है ; क्योंकि इसका एक प्रमुख लक्षण है ; नाकसे पानी-सा पतला, चरपरा मवाद गिरना। **आरम ट्रिफाईलममें** भी, नाकका मोटा लक्षण यही है ; अर्थात् चरपरा, तीखा मवाद आता है। और शायद इसका कारण यही है कि इस पौदेमें **नेट्रम म्यूर** अधिक परिमाणमें पाया जाता है।

इससे यह वात स्पष्ट हो जाती हैं कि किसी एक होम्योपैथिक औषधमें विभिन्न प्रकारके लक्षण क्यों पाए जाते हैं ; और वे प्राय एक दूसरेके विपरीत भी दिखाई देते हैं। इसका कारण यही है कि उन्हें विविध प्रकारके लवणोंने पैदा किया है।

यही वात वनस्पतियो और पशुओ से प्राप्त होने वाली दवाओंके वारेमें भी कही जा सकती है। विश्लेषण द्वारा उन्हें प्रारम्भिक या मौलिक रूपमें परिवर्त्तित किया जा सकता है। हा , खनिज औषधो के वारेमें वात कुछ और है। उन औषधोके वारेमें तो कुछ कहनेकी जरूरत ही नहीं है, जिनमें **सल्फर** और **फास्फोरस** पाए जाते हैं, क्योंकि इनके गुण उन लवणोंसे आए है जिनका ये संयोग हैं। कार्वोनेटोंको फॉस्फेटोंके रूपमें परिवर्त्तित किया जा सकता है। **काली कार्व, कैल्केरिया कार्व** और **मेगनेशिया कार्व** आदि इसी तरहकी ओषधियाँ हैं।

अव **औरम, प्लाटिनम** और **आर्जेण्टम** जैसे, खनिज वाकी रहे। यह मान लिया गया है कि कच्चे रूपमें ये वेकार और निष्क्रिय हैं। उनमें शक्ति पैदा करनेके लिए, हम उनके चूर्ण वनाते हैं। कच्ची हालतमें, शरीरके सजीव ऐसिड, उनमें कोई भारी परिवर्त्तन नही ला पाते। विचूर्ण वन जाने पर, वे वैसे ही रहते हैं, परन्तु हा, उनमें नई शक्ति आ जाती है।

दुर्भाग्यसे इम नई शक्तिके उदाहरण वहुत कम हैं। जिनका हमें ज्ञान है, उनमेंसे एक निम्नलिखित है :

प्लाटिनम जव कच्ची दशामें रहता है—तो वह कोई परिवर्त्तन नहीं पैदा करता। यह ओषजन और हाईडरोजन का सयोग नही कराता। परन्तु रासायनिक प्रक्रियाओंके वाद, यह काम कर सकता है ; हालाकि उसमें कोई परिवर्त्तन नही आता।

यह पद्धति, निजी तौर पर वदले विना, दूसरे में परिवर्त्तन ला देती है। यह कैसे होता है ? इसका अभीतक पता नही—परन्तु ऐसा होता है—और यह वास्तविकता है। यह सम्पर्क-क्रिया है। खनिज ओपधें जो कच्ची हालतमें बेकार होती है, विचूर्ण वनाकर उन पर सम्पर्क क्रिया की जाती है, तव वह

खनिज औषध, परिवर्त्तन लाती है, और, जब स्वस्थ व्यक्तियोको खिलायी जाती है, तो लक्षण पैदा करती है।

इस तरह, युक्तियुक्तपूर्ण ढगसे यह स्पष्ट हो गया, कि किस प्रकार अप्रवृत्त और गतिहीन पदार्थोको रोग निवार्णार्थ प्रवृत्त किया जा सकता है। होम्यो-पैथीका अध्ययन करने के लिए यह बात बहुतोंके लिए बाधास्वरूप थी।

क्या हम औषधोंके परीक्षण नही करते ? अर्थात् क्या हम स्वस्थ व्यक्तियोंमें लक्षण पैदा नही करते ? होम्योपैथिक औषधोंके सभी परीक्षण प्राय शक्तिकृत औषधोंसे हुए हैं, और इस तरह, उन औषधोंमें जो निर्जीव लवणा पाये जाते हैं—उनका भी शक्तिकरण हुआ। क्या इस तरह हम किसी विशेष औषधके तन्तु-लवणोंके परमाणु-सन्तुलनमें गडबड पैदा नही करते ? उदाहरणके लिए: हम जब लक्षण प्राप्त करने के लिए **फाईटो** का व्यवहार करते हैं, तो क्या हम पोटाश-लवणोंके परमाणुओंमें गडबड पैदा नही करते ? क्योकि **फाईटो** में ६८% पोटाश-लवण पाए जाते हैं। यदि **फाईटो** कच्चे रूपमें दिया जाता, तो क्या स्वाद इन्द्रियाँ उसे ग्रहण कर लेती ?

यदि रोगके करण, इसी प्रकारकी गडबड आए, तो, शक्तिकृत **फाईटो** देकर उसे दूर किया जा सकता है, क्योंकि तब उमे उन पोटाश-लवणोसे जो स्वाभाविक रूपमें, उसका अग हैं, रोंग निवारक शक्ति प्राप्त हो जाती है।

इससे यह बात भी सिद्ध होती है कि प्रत्येक औषध अपने तौर पर इकाई है—और—उसका, उसी रूपमें परीक्षण होना चाहिए।

परन्तु ये लवण कुछ विशेष अनुपातमें, उसका मूल अंग हैं, और उस औषध के आभ्यन्तरिक गुणोंको जाननेके लिए, इन लवणोंका अनुपात निश्चित करना, और जानना आवश्यक है। और वह प्रश्न जिसका निर्णय होना चाहिए यह है: मूल औषध न देकर, यदि उन निर्जीव और अक्षम लवाणोंका ही व्यवहार कराया जाए, जो उसमें पाए जाते हैं, तो, क्या वही परिणाम प्राप्त होगा ? हमें प्रतीत होता है कि अन्तिम बात ही मूल होम्योपैथी है, और अप्रत्यक्ष रूपसे यही बायोकेमिक है।

परन्तु वनस्पतियोंमें जो लवण पाए जाते हैं, वे वैसे ही खनिज लवणोंकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली सिद्ध हो सकते हैं। वे समूह रूपमें तैयार किये जाते हैं, अतएव प्राणियों पर विचित्र ढंगमे काम कर सकते हैं। यह सुझाव डा जे. जे गार्थ विल्किमनने एक पत्र द्वारा, हमें (लेखकोंको) दिया था। इसके साथ उन्होंने बताया था कि उन्होंने भारतमें बांसोसे सिलका प्राप्त करके तैयार किया, और वह पुराने रोगोंकी अपेक्षा, नए रोगोंमें अधिक गुणकारी सिद्ध हुआ।

शुसलरने भी, अपनी पुस्तकके संस्करणोमें, यही वात मानी है, और कहा हैं, कि निर्जीव कोष-लवणोंके विक्षुब्ध परमाणुओं की गतिविधिको, जो रोगके रूपमें, प्रकट हुयी हो, समानधर्मा औषध देकर वायोकेमिस्ट्री द्वारा, प्रत्यक्ष रूपसे दूर किया जा सकता हैं, जवकि उसी विकारको, अप्रत्यक्ष रूपसे होम्यो-पैथी द्वारा, 'विपरीत धर्मा औषध' देकर ठीक किया जा सकता है।

---

## दूसरा भाग

—०—

# बारह 'टिशू रेमिडीज' का (भैषज तत्त्व)

—०—

## कैल्केरिया फ्लोरिका ( Câlcarea Fluorica )

**पर्याय : तुल्यार्थ** :—केलिसीआई फ्लोरिडम, केल्सियम फ्लोराईड, कैल्केरिया फ्लोरेटा।

**साधारण नाम** :—फ्लोर स्पार , फ्लोराईड आव लाईम।

**रासायनिक तत्त्व**—फार्मूला : सी. ए. एफ २ ( Ca F 2 )। बिल्लौर जैसे स्वच्छ कणोका गुरुत्व भार ३.४। इसमें ५८.२१ भाग केल्सियम है। प्रकृति स्वय इसे फ्लोर स्पार (नामी खनिज) के रूपमें तैयार करती है। ये वडे सुन्दर, स्वच्छ कण हैं। ये कण विविध रगोंमें घनीभूत रूपमें, और आठ-आठके समूहमें पाए जाते हैं। ये पानीमें बिलकुल नही घुलते , हाँ गंधकाम्लमें, इसके मौलिक तत्त्व अलग-अलग हो जाते हैं, और तब हाईडरोफ्लोरिक ऐसिड तैयार हो जाता है।

**तैयारी** : फ्लोर स्पारके चुने हुए स्वच्छ कर्णोको होम्योपैथिक औषध निर्माण पद्धतिके अनुसार, पीसकर, चूर्ण तैयार किया जाता है।

**शारीरिक-रासायनिक तथ्य** : **कैल्केरिया फ्लोर** हड्डियोके ऊपरी-स्तरमें, और चकडीकी ऊपरी परतमें भी पाया जाता है। यह लवण-कण लचकदार तन्तु, त्वचा, सयोजक-तन्तुओं, और शिराओंकी दीवारोमें पाये जाते हैं।

जब **कैल्केरिया फ्लोर**के परमाणुओंका सन्तुलन बिगड जाता है, तो फिर, अशान्त या पीड़ित तन्तुओंमें स्थायी फैलाव आता है। या उसी अगके लचकदार तन्तुओंमें, ऐसा विकार, अर्थात् ऐसी शिथिलता आयी हो, तो उस जगह ठोस निर्यासका शोषण नहीं हो सकता। परिणामस्वरूप वहाँ सख्ती आती है। जब शिराओके लचकदार तन्तुओंमें **कैल्केरिया फ्लोर** जातीय परमाणुओ की व्यवस्थामें विशृखलता आती है, तो वहाँ ऐसे विकार आते हैं जिन्हे, रोग-निदानकी भाषामें खूनी बवासीरके मस्से, शिरा प्रसारण, शिराओंकी

निष्क्रियता, ग्र थियोंकी सख्ती, प्रसवके बादका रक्त-स्राव, जरायु भ्रंश, और पेटकी दीवारोंकी दुर्वलता कहा जाता है ।

शरीरमें **कैल्केरिया फ्लोर**की कमी हो जानेसे निम्नलिखित हालतें आती हैं :—

१ । हड्डी पर सख्त, गाठदार उभार आते हैं ।

२ । लचकदार तन्तुओंमें शिथिलता या ढीलापन आती है , परिणाम स्वरूप शिरायें फैल जाती हैं ; जरायु अपनी असली जगहसे हट जाता हैं , पेटकी दीवारें ढीली पड जाती हैं—और तब पेट झूल, या लटक जाता है। गर्भाशयसे रक्त गिरता है , प्रसवके बाद दर्द नही आते ।

३ । चमडीकी ऊपरी परतके कोषोंसे किराटिन नामी पदार्थ निकलता है । (किराटिन त्वचा, वालों और नाखूनोंमें पायी जाती है) ; यह निस्सरण तत्काल सूख जाता है, और खुरण्ड वन जाता है । यह विकास आमतौर पर हथेलियोंमें आता है । परिश्रम करनेसे वहाँ त्वचा फट जाती है, और दरार पड जाते हैं ।

सख्तीको घुलानेके वारेमें, दो सभावनाएँ विचार योग्य हैं ।

(अ) सख्तीके आसपास जो लचकदार तन्तु हैं, उनपर दबाव पडा, और उनकी लचक नष्ट हो गयी । जव **कैल्केरिया फ्लोर** खिलाया जाएगा, तो, उसके परमाणु, उन लचकदार तन्तुओंकी स्वाभाविक गतिविधिको वहाल कर देंगे, और उन्हें उस सख्तीको वाहर फेक देनेमें समर्थ बना देंगे । ऐसी स्थितिमें लसिका-ग्रन्थियाँ उस सख्ती का शोषण कर लेंगी ।

(आ) रक्तमें जो कार्वोनिक एसिड रहता है, वह अपनी घनीभूत शक्तिसे फ्लोराईड आव लाईमसे फ्लोरीन नामी अंशको अलग करता है ; यह फ्लोरीन, वननेवाली हाईड्रोजनसे मिल जाता है, इस तरह हाईड्रोक्लोरिक ऐसिड धीरे-धीरे उस सख्तीको घुला देता है, और यह विकार लसिकाग्रन्थियोंमें चला जाता है । यहाँ कार्वोनिक ऐसिडने जो काम किया, वही काम, गधकाम्ल भी कर सकता है । यह गधकाम्ल, उस समय पैदा होता है, जव अलब्यूमन जैसे पदार्थ प्राणवायु (ओषजन) से संयोग करते हैं ।

इसी तरह जैसा कि (आ) भागमें कहा गया है, **कैल्केरिया फ्लोर** कण्ठनालीमें क्रूप या झिल्लियाँ (डिफ्थेरिया) भी पैदा कर सकता है ।

**साधारण वायोकेमिक क्रिया :** वे रोग जो त्वचाकी ऊपरी परत, दाँतों की सफेदी, और त्वचा, संयोजक-तन्तुओं, या शिराओंकी दीवारोंके लचकदार तन्तुओंमें आये हों । सक्षेपमें , ऐसे सभी रोग जो लचकदार तन्तुओंमें शिथिलता आनेके परिणाम स्वरुप प्रकट हुये हो , जैसे—शिराओंका फैल जाना, धमनियों और शिराओंकी रसोलिया, शिराओंका वढ जाना, ग्रन्थियोंकी पत्थर जैसी

सख्ती आदि। हड्डियो, विशेषतः दाँतोका दूषित पोषण ; चोट आनेके बाद हड्डियों पर बना फोडा , पेट का फूल जाना , जरायुका अपनी जगहसे टल जाना आदि , सख्तिया ।

**मन :** अत्यधिक खिन्न. , आर्थिक विनाशकी निराधार आशङ्का , दुविधा अपना मूल्य, वास्तविकतासे अधिक आकने का झुकाव ।

**सर और खोपड़ी** . नवजात बालकोंकी खोपडीके पहलुओं पर रक्त गुम्मड बनें। इन गुम्मडोका तल हड्डी जैसा कडी, और खुर्दरी होता है। खोपडीकी हड्डीपर रगडें आती हैं , इनके साथ , कडी खुर्दरी , और ऊँच-नीची गाठें भी बनती है। खोपड़ी पर फोडे निकलते हैं। खोपटी पर रक्तार्बुद (खूनका गुम्मड) बनता है। खोपडीके घाव, जिनके किनारे सख्त हो। दोपहर बाद सरदर्द हो, और उसके साथ मूर्च्छा लाने वाली मतली, यह कष्ट शामको घट जाए। डा० सारा एन० स्मिथके परीक्षणोंमें निम्नलिखित लक्षण आये "एक प्रकारकी कर्कश ध्वनि होती थी , जैसे वायोलिनमे होती है ,—जो नीदमें भारी विघ्न लाती है ; चरचराहट, दवाव और खिचाव ।"

**आखें :** भुनगे और अगारे दिखाई दें , कनीनिका (पुतली) पर दाग , सफेद पर्देका प्रदाह, अजनहारी निगाहोका काम करनेके बाद, निगाह धुधली पड जाए ; आंखके गोलेमें दर्द आए , यह कष्ट आखें बन्द करनेसे, और उन पर हल्का-सा दबाव डालनेसे घटे। मोतिया , मीबोमियन नामी ग्रन्थि बढ जाती है , आंशिक आधापन, निगाहका अधिक बारीक काम करनेसे निगाह का धुधला पड जाना , पपोटोंकी रसौलियां, पुतलीके घाव, जबकि उनके किनारे सख्त हों ।

**कान** . कानके ढोल पर चूने जैसी चीज जमा हो जाती है। कान गुजते हैं। स्तनाकार प्रवर्द्धनके रोग, जबकि अस्थि आवरण भी आक्रान्त हुये हों ।

**नाक :** सर्दी , छीकनेकी विफल चेष्टा , खुश्क जुकाम , पीनस , नाकसे मात्रामें अधिक, दुर्गन्धित, गाढा, हरा-सा, गांठदार और गहरे पीले रंगका स्राव आए । हड्डियाँ बढ जाए , नाककी हड्डियोके रोग , इस औषधका व्यवहार होनेके बाद मुर्दा हड्डियोंकी दुर्गन्ध मिट गयी। नाकके पिछले भाग और गलकोषकी ग्रन्थियाँ फूल जती हैं। गलसुओ (टाँसिलों) का बढ जाना, और नथनोंके पिछले भागकी श्लैष्यिक झिल्लियोका बढ जाना। ये विकार साधारणतः शैशावावस्था या वाल्यालमें आते हैं ।

**चेहरा :** गालो पर सख्त सूजन आती है, या दातोमें दर्द होता है , जबडे की हड्डियोंपर सख्त सूजन आती है। ठण्डे फोडे , सर्दीके करण होठोपर दाद जैसे छोटे-छोटे कडे दाने ये दाने , **मेटरम म्यूर**की तरह फैले हुये नहीं

होते। गालकी हड्डियो और दाँतोकी जड़ोके नासूर, जिनमे गहरे रंगका, दुर्गन्धित, और खून मिला मवाद टपके, बाहरकी ओर हड्डीपर सूजन आ जाती है।

**मुँह:** मसूढ़ा फूल जाता है, इसके साथ, जबडे पर सख्त सूजन आती है, जबडे की हड्डी पर पत्थर जैसी सख्त सूजन आती है। मुँहके कोनों पर ठण्डे फोडे बनते हैं। मुँह अत्यधिक खुश्क; मुँह और गलेके घाव, जिनसे पैतृक आतशक का सकेत मिले।

**जबान :** कटी-फटी, दरारो वाली, इसके साथ चाहे दर्द हो, या न हो। प्रदाह आने के बाद जबान सख्त हो जाती है।

**दाँत :** बच्चोंके दाँत देरमें निकलें। दाँतोंकी सफेदी खुर्दरी और दूषित; दाँतोका अप्राकृतिक ढीलापन, ( हिलना ), इसके साथ, दर्द हो या न हो; दाँत अपने गढेमें ढीले हो जाते हैं। दाँतोका दूषित या हीन पोषण, जब खाने की कोई चीज दाँतोसे छू जाती है, तो, दाँतोमें दर्द हो जाता है। दाँत दर्द जब की दाँत हिलते हों।

**गला :** डिफ्थेरिया जबकि सक्रामकता हवाकी नाली तक पहुँच चुकी हो। गला ढीला पड जाता है, इसके साथ कण्ठनालीमें गुदगुदाहट हो जोकि कौवा बढ जानेके कारण आए। कौवा ढीला पड़ जाता है, इसके कारण क्षोभ आता है, गुदगुदाहट होती है, और खाँसी उठती है, सुबह खाँसने से कफ आता है। गलेकी जलन गरम पेयसे घट जाती है। गलेमें अत्यधिक खुश्की , टासिल बढे हुए , सख्त, जब बेरिटा काम न कर सका हो, तो इसका व्यवहार कराया जाता है।

**आमाशय :** अनपच खाये की कै, कफ थूकनेसे हिचकी और दुर्बलता आए; और यह कष्ट दिनमें बार-बार आए। अफारा, जिगरमें कटनके साथ दर्द, हरकत करनेमे आराम आए।

**पेट और पाखाना :** विष्टब्धता, मल निकालनेमें असमर्थता, मलद्वारका फटाव (नासूर) , आतके निम्न भाग पर अत्यधिक सन्तापपूर्ण दरार (नासूर), खूनी बवासीर, मलद्वाराकी खुजली, जैसे महीन चुनूनों (कृमियो) के कारण होती हो, वादी बवासीर, जिसके साथ कमर दर्द भी हो, और यह दर्द नीचे त्रिकास्थि तक जाए, इसके साथ कब्जा भी हो, वादी बवासीर और उसके साथ, सरको और खूनका दबाव, दायी कोखमें दर्द, जो दर्द वाली करवट लेटने से बढ़े। निचला आतोमें हवा अधिक आए। सधिवातके रोगियोका अतिसार।

**मूत्रप्रणाली :** पेशाब मात्रामें अधिक आए, बार-बार वेग हो, कम आए गत गहरी, उससे तीखी गध आए।

**कामाग :** वीर्य और प्रोस्टेट ग्रन्थिका रस निरन्तर टपकता रहे, और अण्डोंका सुकड़ते जाना। अण्डोंका सख्त हो जाना। हाईड्रोसील; गर्भाशयका अपनी जगहसे टहल जाना, गर्भाशय और जघाओंमें खिंचावके साथ दर्द, गर्भाशयमें नीचेके रुख दवाव, भगकी शिराओंका फैल जाना।

यह औषध अतिरजमें, गर्भाशयकी सुकड़ाव शक्तिको बढ़ाता है। अति-रज और दर्द जिसमें नीचे की ओर दवाव पड़े। जरायु प्रदाह। स्तनोंकी कड़ी गांठ। आतशक का प्रारम्भिक घाव, इस घाव, इस घावकी सख्ती दूर करनेके लिए इस औषध का व्यवहार कराया जाता है।

**गर्भ :** प्रसवोत्तर वेदना, यदि वह दुर्बल सुकड़ावके कारण आती हो। छातियोंकी कड़ी गांठें। यदि गर्भकालमें इस औषधका सेवन कराया जाए, तो प्रसव आसानीसे हो जाता है।

**श्वास प्रणाली :** कण्ठनालीमें गुदगुदाहट; खुश्की, स्वरभग, कण्ठनालीमें गुदगुदाहट होकर सूखी, कष्टकर खांसी आए, और ऐसा बोध हो जैसे कण्ठनालीमें कोई विजातीय द्रव्य रखा है। जोर-जोरसे पढ़नेके बाद आया स्वर भग। असली क्रूपके लिए मुख्य औषध है। उस दर्मेंमें लाभदायक है जिसमें बहुत अधिक खासनेके बाद, गहरे पीले रंगकी कफके छोटे-छोटे गोले निकलें। खासी, जिसमें गहरे पीले रंगकी कड़ी कफके छोटे-छोटे गोले निकलें। गुदगुदाहटकी अनुभूतिके साथ खासी आए, लेट जाने पर क्षोभ होने से; कौवा बढ़ जाने से, या गले के पीछे बहुत गहराई में सरसराहट होनेसे खांसी आए। सास घुटे, अलजिह्वा (घण्टी) जैसे बन्द हो गयी है, या जैसे किसी बहुत गाढ़ी चीजमें से छनकर सांस आ रहा है।

**रक्तसञ्चार :** यह औषध और **फेरम फास**, दोनों मिलकर, धमनी अर्बुद को, जबकि वह अभी पहले दर्जेमें हो, घटा देती हैं, और बढ़ने नहीं देती, बशर्ते कि इससे पहली आयोडायड ऑव पोटाशका व्यवहार न हुआ हो, शिराओं का फैलाव, वृद्धि, क्योंकि लचकदार तन्तुओंमें सकोच लानेके लिए यह मुख्य औषध है। हृदयका फैल जाना, और धड़कन; शिराओंकी रसौलीके लिए मुख्य औषध है जब कि शिरा फैलाव भी आया हो। शिर फैल जानेके बाद बना घाव। **यह शिरा बढ़ जाने, या शिरा प्रसारणके लिए खास दवा है।** हृदयका अस्वाभाविक रूपसे बढ़ जाना।

**गर्दन और कमर :** गर्दनकी ग्रन्थियोंका पत्थरकी तरह सख्त हो जाना; छोटे छोटे गलगण्ड, कमर दर्द जो मेरुदण्डके क्षोभकी प्रतिक्रिया स्वरूप आए, इसके साथ नीचेके रुख खिंचाववाला दर्द; कमरके निचले (त्रिक) भागमें थकानकी अनुभूति और दर्द, इसके साथ भरे हुए होने का बोध हो,

या जलनके साथ दर्द हो, और कब्ज। पुराना कमर दर्द, जब चलना शुरू करें तो यह दर्द वढता है, और निरन्तर चलते रहनेसे यह घट जाता है। अन्तडियों का अपनी जगहसे टल जाना।

**हाथ-पाव :** कलाईकी पीठपर रसौली वन जाए, **नखव्रग** ( ३×वि० ) हाथ की उँगलियों के जोड सधिवात के कारण वढ़ जाते हैं, ऐसा फोडा जो मेरुदण्ड के भीतरी व्रण ( नासूर ) के कारण वना हो। कमर दर्द जो दवाव पडने से आया हो। घुटने के जोड का पुराना प्रदाह ; जोडोकी स्नेह झिल्लीका पुराना प्रदाह ; जोडोंमें कडकडाहट हो, उँगलियोंके जोडोकी हड्डिया आसानीसे स्थान भ्रष्ट जाएँ, हड्डियोंके नासूर ; मेरुदण्ड या खोंपडीकी हड्डीकी रसौली ; कुहनीके जोडकी सूजन, जोडों में चटाख की आवाज हो, जिससे यह मालूम होता है कि वहाँ (श्लेपण) स्नेह-तरलका अभाव है। हाथकी उँगलियोंकी हड्डियों पर रसौलियां वनें। हड्डियो की रसौलिया, या हड्डियों का वढ जाना ; इसके साथ् नासूर हो ; या, न हो, विशेपत. जवकि यह विकार चोट लगनेके वाद आया हो, हड्डी,—घोडोंकी एक वीमारी। जोडोंकी स्नेह झिल्ली का पुराना प्रदाह।

**स्नायुजाल :** दिनभार, विशेपतः सवेरेके समय कमजोरी, और थकान का वोध होता रहे।

**नींद :** सजीव स्वप्न, और किसी भावी सकरकी आशका ; स्वप्न में नये-नये दृश्य या, स्थान देखे।

**ज्वर :** ज्वर का आक्रमण एक सप्ताह, या इससे भी अधिक देरसे जारी रहे ; और उसके साथ प्यास हो। जीभ सूखी, भूरी।

**त्वचा :** रगड, खराश, परदार, जिसमें दरार वननेका झुकाव हो, जव कि चमडी सख्त, और, मोटी हो गयी हो ; छाले और पीवदार फुन्सियाँ जिन पर खुरण्ड भी आ सकता है (राल्फ वर्नस्टीन), त्वाचा फट जाती है, और दरार वन जाते हैं। **हथेलियों मे दरार वन जाते हैं।** या चमडी सख्त हो जाती है, और उसपर खुरण्ड आ जाते हैं। मलद्वार के फटाव, पीव आ जाती है, जवकि किनारे सख्त हो गये हो ; नखव्रण, उगलीका फोडा ; कभी-कभी आनेवाला विसर्प, नासूर जो भरने में न आते हों ; और जिनसे गाढी, गहरे पीले रगकी पीव आए, शिराओंके पुराने घाव इस औपधने ठीक किए हैं। सख्तियां, सूत जैसे महीन तन्तुओ वाल फोड़ा ; मीनवल्लिका,—एक चर्मरोग है जिसमें चमडी कडी, और खुर्दरी हो जाती है। त्वचा का परत मोटा हो जाता है। त्वचा पर नये उभार आते हैं, जो चौडे होते हैं, और उनकी रगत हल्की पीली होती है।

एक्ज़िमा जो रक्त अधिक सञ्चित हो जानेके कारण बना हो, यह कष्ट तर मौसममें बढे, और रात को घटे। पपडदार एक्जिमा, जिसमें त्वचा मोटी पड गयी हो, और दरार आ गये हों, मलद्वार का एक्जिमा जो खूनी बवासीर के कारण बना हो।

**तन्तु :** तन्तुओंमें कोई विजातीय चीज आकर ठोस हो जाती है। इस तरह, **ग्रंथियाँ पत्थर जैसी सख्त हो जाती है।** हड्डियोंके उभार, विशेषत जो पपोटों के नाडीजाल, या कलाई के जोड पर आए हों। **स्तनों मे गाठदार उभार, या, सख्त रसौलिया बनती हैं।** हड्डी के ऊपरी स्तर पर रगड या खराश आये, इसके साथ, सख्त खुर्दरी और ऊँची-नीची गाठें जैसा कि जबा की अगले भागपर। शोथ जो हृदय रोगके कारण आया हो, खून की कमी; नाडियों या कण्डराओं की रसौलिया जो लचकदार तन्तुओं पर अधिक जोर पडने से आयी हो, लचकदार तन्तु ढीले पर जाते हैं; **सूजन, सख्ती या प्रसारण** जो पेशियों के तन्तुमय आवरणों, या जोडों की बधनियोंके आवरणों, या कण्डराओं में बने हो; ऐसे घाव जो मेरुदण्डके व्रणके कारण बने हों; ऐसे घाव जिनके भरनेकी गति अत्यन्त मन्द हों; हड्डियों, या दातोंकी चमकके घाव; हड्डिया दबी हुई, नग्न व्रण, हड्डियोंके ऊपरी स्तरसे मवाद टपके, जो जो शीघ्र ही कडा हो जाए, और गांठका रूप धारण करले, या टेढा-मेढा हो जाए। हड्डियों में पीब आए, हड्डियोंके नासूर, और हड्डियों का मुर्दा हो जाना, इसके साथ, जलन, छेद होने जैसा दर्द हो, और गर्मी लगे। इन नासूरों से तीक्ष्ण पतला स्राव हो।

**ह्रास वृद्धि :** तर मौसममें और आरामके समय कष्ट बढता है, ठढक पहुँचाने, रगडने और गर्मी मे आराम आता है।

**होमियोपैथिक पथ्य :** डा० जे बी. बेलने **कैल्केरिया फ्लोर**के परीक्षण किये हैं, और ये विस्तार पूर्वक ऐलन के 'इन्साईक्लोपीडिया' खण्ड १०, पृष्ठ ३६८ पर दिये गये हैं। सर्वाधिक पूर्ण तथ्य 'गाईडिंग सिम्पटम्स' खण्ड ३ में दिये गए हैं। शुसलर द्वार महत्त्व दिये जानेसे पहले, इस औषधका व्यवहार बहुत कम होता था।

**दवा देनेका तरीका :** इस औषधकी उच्चतर शक्तियोंसे सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त हुये हैं, विशेषत. हड्डीकी बिमारियोंमें। भगदर, मलद्वारके नासूर, हड्डियों के बढ जाने खूनी बवासीर, शिराके फैल, या बढ जाने, नखव्रण में, इसका बाहरी व्यवहार भी होता है। बाहरी प्रयोगका तरीका यह है कि अभिष्ट शक्तिका २० ग्रेन चूर्ण, आधा ग्लास पानी में हल कर लें, और, उसमें रूई या लिंट तर करके पीडित स्थान पर बाध दें। शुसलरने इस उद्देश्यके लिए

१२ X के व्यवहार की सिफारिश की है, परन्तु ३ X और ६ X भी, बहुत गुणकारी सिद्ध हुए हैं।

**सम्बन्ध** . मन और कण्ठनालीके लक्षणोके लिए, **कल्केरिया फ्लोरका** अध्ययन, इसके सम्बन्धी, **कल्केरिया कार्बके** साथ-साथ करना चाहिए, नींद के लिए **फ्लोरिक एसिडमे**; सूत्रवत तन्तुओंकी सख्तीमें **कल्के आयोड, काली आयोड** तथा **मेग्नेशिया म्योरके** साथ अध्ययन करें। बहुत सारे लक्षणोंमें यह **फास्फोरस, मर्करी, रूटा, औरम तथा साईलीशिया** आदिके सदृश है। कमर दर्दमें **रस टाक्सके** बाद अच्छा काम करता है, क्योंकि दोनों की ह्रास-वृद्धिमें समता है। पीब आनेमें **साइलिशियाके** बाद; सन्धि प्रदाहमें **रूटा और फेरम फासके** बाद; ठण्डे फोडोंमें **नेटरम म्योरके** बाद काम करता है।

**तुलना करें :** बच्चोंकी खोपडीकी सूजनमें **साईलीशियामे**; हड्डियोंमें पीब आ जानेकी तकलीफमें **कल्केरिया फास, असाफीटीडा और साईलीशियासे**; घोडोंकी हड्डा नामी बीमारीमें—**फास्फोरिक ऐसिड और साईलीशियासे**।

अनीमिया (खूनकी कमी) में यह **कल्केरिया फासके** बाद हितकारी है। धमनियोंकी सख्तीमें आयोडायडोंके साथ इसकी तुलना करें, विशेषतः, **वेरिटा, कल्केरिया, प्लम्बम और वेरिटा म्योर** के साथ।

**स्वाध्यायके लिए समूह : सख्तीके लिए : कल्केरिया फ्लोर, वेरिटा आयोड, हल्का लावा, एस्टेरियस, कोनियम, फाइटोलैका, कैडमियम, कल्केरिया फास, निटरिक ऐसिड, काली वाईक्रोन, औरम, हीपर, एण्टीमनी सल्फ और औरम म्योर नीटरोनेटम, आर्सेनिक आयोड, नेटरन कार्बो, सिफिलीनम।**

---

# कल्केरिया फॉस्फोरिका

## ( Calcarea Phosphorica )

**पर्याय : तुल्यार्थ :** कैल्सीआई फास्फस प्रिसीपीटेटा, केल्सिस फॉस; प्रिसीपीटेटिड फॉस्फेट ऑव केल्सियम, कैल्सियम फॉस्फेट।

**साधारण नाम :** फॉस्फेट ऑव लाईम।

**रासायनिक तत्त्व : फार्मूला :** सी ए ३ (पी ओ ४)२

इसे डा० हेरिंगने तैयार किया था। उन्होंने डाईल्यूट फास्फोरिक ऐसिडको चूनेके पानीमें मिला दिया। कुछ समय बाद, पेंदीमें सफेद रंगका एक ठोस पदार्थ जमा हो गया। इसे परिश्रुत जलके साथ धोया गया, और तब इसे

महत्त्वपूर्ण वात यह है कि यह औषध तरुण रोगोंके वाद, प्रतिस्थापक तथा रसायन है, अर्थात् शारीरिक क्रियाओंको वहाल करती है; या अन्य औषधोंके लिए रास्ता वना देती है, इस तरह महत्त्वपूर्ण अन्तर-कालीन औषध है। शुसलरने यह रहस्य समझा कि रक्तके लालकणोंका उद्गम, श्वेत कण हैं, उन्होने इस औषधको यह श्रेय दिया कि यह श्वेत कणोंका पोषण करती है, और इस आधार पर, उन्होंने यह दावा किया, कि यह औषध श्वेत कण वनाकर, अप्रत्यक्ष रूपसे, लालकणोंका उत्पादन करती है। क्रियात्मक दृष्टिसे, यह औषध अनेक रोगोंमें शक्तिदाता सिद्ध हुयी है। शरीरको क्षीण वनाने वाली पुरानी वीमारियों, और, टीवीमें यही गुण करती है। जव पेशावमें फॉस्फेटकी मात्रा वढ गई हो, यह स्थिति दूषित समीकरणके कारण आती है, और शरीरसे मल निकालने वाले अगोंकी गल्त क्रियाका परिणाम है। तेजीसे वढने वाले नौजवानोंका अनीमिया; उन स्त्रियोंके लिए भी हितकर है जो जल्दी-जल्दी वच्चे जनने, अधिक देर तक स्तनपान कराने, या अतिरज, या लकोरियाके कारण दुर्वल हो गई हैं। पुराने व्राकाईटिस, टीवीके अतिसार, रातको आने वाले पसीने, और कण्ठमालाके नासूर, तथा फोडोंमें भी, मल निकालने वाली अपनी महान शक्तिके कारण, लाभदायक है।

वुढापेमें, जव वात नाडियोंके तन्तुओंकी नवनिर्माण शक्ति घट जाती है, तो **कल्केरिया फास** सुन्दर काम करता है। यह वुढापेमें चमडी और योनि की खारिशमें हितकर है, और कठिन, तरुण रोगोंके वाद, स्वास्थ्यको वहाल करनेमें सहायक है। फेफडोंके टीवीमें, जव शरीर सूखता जा रहा हो, रातके समय पसीना अधिक आता हो, खासीमें खून आता हो, और, जव इसी प्रकारके अन्य उपद्रव भी हों, तो **कल्केरिया फास**की निम्न शक्तियाँ रोगकी उग्रताको तोड देती हैं, और, रोगको दूर करनेमें सहायता देती हैं। विवाहित नौजवानोंको स्वप्नदोष ( स्त्रियोंकी कामोत्तेजना ) और, हस्तमैथुन करने वालोंके लिए भी, समान रूपसे, गुणकारी है। शोष रोगसे पीडित वच्चोकी हड्डिया जव वढ गई हों, तो भी, यह हितकर है। डा० ट्रेगर, खिलाने और लगानेके लिए, सेवकी शरावका व्यवहार करते हैं, और, उसके साथ **कल्केरिया फास** या **कल्केरिया फ्लोर** देते हैं। हरे पाण्डुमें भी वह यही चिकित्सा देते हैं, ( सेवका पानी, और **कल्केरिया फास** २ × को १०-१० ग्रेनकी ३ मात्रा )। लोहा खिलाने की अपेक्षा, वह इस चिकित्साको वेहतर समझते हैं। जव नौजवानी आने पर, पेशियोंमें झटके या खिंचाव आते हों, तो, उन औषधियोंकी अपेक्षा जिनकी आम तौर पर सिफारिश की जाती है—यह औषध अधिक गुणकारी है।

हड्डियों या उपास्थियोंके संधि स्थलों पर दर्द आता है, वह जगह सुन्न हो जाती है, ऐसा बोध होता है जैसे वहाँ कुछ रेंग रहा हो, इसके साथ ठण्डक; ये सब उपद्रव अनीमिया (खूनकी कमी) के कारण होता है, नमीसे यह कष्ट बढ़ता है, पसीना आने, और, ग्रन्थियाँ बढ़ जानेका झुकाव। छोटे-छोटे घेरों या जगहोंमें अनुभूतियाँ, चूनेका धातुदोष, अर्थात चूनेकी कमीसे होने वाले रोगोंका बार-बार आना। साधारण शारीरिक गर्मीका अभाव, और नमी से कष्ट का बढ़ना।

यदि रक्ताम्बु झिल्लियोंके कोषोंमें, **कल्केरिया फास**के परमाणुओंकी गति-विधिमें अन्तर या, विकार आए, तो गढ़ोंसे, रक्ताम्बु और अलब्युमन जैसे स्राव आते हैं। परिणामस्वरूप घुटनोंमें वातरोग आता है, या, घुटनेकी चौड़ी हड्डीमें पानीवाली रसौली बन जाती है। **कल्केरिया फास**की अल्पतम मात्रा इस पानीका शोषण कर लेगी।

यदि ऊपरी त्वचाके कोषोंमें **कल्केरिया फास** न रहे, तो, ऊपरी स्तरपर अलब्युमन आकर सूख जाता है, और खुरण्ड जम जाता है। **कल्केरिया फास** देकर उस खुरण्डको सुखाया जा सकता है, और, सारे उपद्रवको दूर किया जा सकता है। इसी तरह, जब श्लैष्मिक झिल्लियोंकी ऊपरी त्वचामें, **कल्केरिया फास**की कमी हो जाती है, तो, वहाँ अलब्यूमन जैसे स्राव आते हैं।

अनीमियाके कारण आनेवाले कमेड़ो और दर्दोंको भी यह दवा दूर करती है। इन दर्दोंके साथ सरसराहट होती है, और ठण्डक तथा सुन्नपनकी अनुभूति आती है।

यह औषध ऐसी हालतोंमें भी लाभदायक है जब लक्षण चूने, या फॉस्फोरस की माग करते हो, क्योंकि यह दोनोंके मेलसे बनता है। चूनेमें कायाकल्प करने और पोषण बढ़ानेका गुण है, और फॉस्फोरसमें पोषक और शक्तिदाता, उत्तेजक गुण है। (डा० टी० एम० स्ट्राँग)।

## चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** स्मृति बिगड़ी हुई, रोग चाहे कुछ हो, उसमें मानसिक व्यग्रता पायी जाएगी; दिमागी मेहनत बरदाश्त न हो, कमजोर दिमाग वाले बच्चे; ऐसे बच्चे जिनका स्वभाव चिड़चिड़ा, और, डरपोक हो, मूर्ख, बात देरमें समझें। दुःख, शोक, चिढ़, और निराशाके बाद आयी स्थितियाँ।

**सर और खोपड़ी :** वृढोंके सरका चकराना, सहसा छींक आनेसे सरदर्द घट जाता है, और, वह छींक नथनोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट छोड़ जाती है। सरमें ठण्डकका बोध, छूनेसे सर ठण्डा लगे, दूसरी बार दाँत निकलनेसे पहले और दौरानमें सरदर्द हो; यह दर्द **हड्डियोंकी सधियोंके आसपास,** दिमागी मेहनत करनेके बाद, नमीसे, और, **मौसम बदलनेसे बढ़े।** सरदर्द और उसके साथ अफारा, गठियावातके कारण आया सरदर्द, खोपडीकी हड्डीमें चीरने-फाड़ने की तरहका दर्द, जैसे कोई चीज रेंगकर चल रही है, **ऐसा जान पड़े जैसे सरके पिछले भागके ऊपरी हिस्से पर वर्फका पानी गिर रहा है।** उन छात्राओंका सरदर्द जो अब बालिग़ हो रही हैं, घबरायी हुई और, व्याकुल रहती हैं, और जिन्हें अम्ल, या खट्टी चीज खानेसे अतिसार आता है। **ब्रह्मरंध्र (तालु) बहुत दिनोंतक जुड़ता नहीं, खोपड़ी नरम और पतली रहती है।** दिमाग़के पर्दोंमें पानी आनेकी पुरानी शिकायत, सर बहुत बडा हो, और, हड्डिया अलग-अलग हों। खोपडी का क्षय, खोपडीकी त्वचा दुखे, तनी हुई, ऐसा जान पडे कि कुछ चीज वहाँ खिसक कर चल रही है, सुन्नपन, शामको खोपडीकी त्वचापर खुजली हो। चन्दियापर कठमालाके घाव, यह औषध दिमाग़के पर्दोंमें पानी आनेको रोकती है। दिमाग़के पर्दोंमें पानी आनेकी नयी, या पुरानी शिकायत, गजके दाग।

**आँखें :** पपोटोंके आक्षेपयुक्त विकार, जबकि **मेग्नेशिया फास** विफल रहा हो। अन्धापन (तिमिर) जो दिमाग, दृष्टिनाडी या पुतलीकी खराबीसे आया हो, और, मोतिया। दाँत आनेके दिनोंमें, आँखोंका प्रदाह, और, अत्यधिक खुश्की। चमक लगे। गैसकी रोशनीमें आँखें काम न दें। कनीनिका का घाव, चक्षुप्रदाहके बाद आयी धुंध, कठमालाके कारण आया कनीनिका (पुतली) का प्रदाह, कठमालाके रोगियों अभिष्यन्द (आँख दुखनी आना), शोष रोग द्वारा पीडित, और, कण्ठमालाकी प्रवणतावाले बच्चों की जन्मसे निगाहकी कमजोरी।

**कान :** कानका बाहरी भाग ठण्डा लगे, कानके आसपासकी सभी हड्डियों में निरन्तर वेदना हो, कानदर्द, और, उसके साथ गठियावात, इन दोनोंके साथ, कठमालाके रोगी बच्चोंकी गाठें फूली हुई। कान बहनेकी पुरानी शिकायत, और गलेकी खराबी।

सुननेकी नालीकी ऊपरी त्वचाका प्रदाह, इसके साथ, कान बहे, गधहीन, सफेद-सा, चर्बीला मवाद कानसे आए। कानमें गीली, नरम, गुद्देदार मैल आए; कानका छेद लाल, फूला हुआ, क्षुब्ध, खुजलाए, गरम, कान ठण्ड सहन न कर

सके ; रोगी आमतौर पर कफ रोगो, और, ग्रन्थियोंके विकारसे पीडित हो ; कान जैसे वन्द हैं , इसके साथ काफी वहरापन, परन्तु कानोमें तरह-तरहकी आवाजोंका आना ( कर्णनाद ) वहुत कम पाया जाता है । कान आसानीसे फैल जाएँ, इससे वुलवुले उठें और सुननेमें सुधार हो जाए ; कानोंके आसपास निरतर वेदना, और, चीरने-फाडनेकी तरहका दर्द , इसके साथ, कानके वाहरी भाग पर घाव हो, ऊँचा सुने, कर्णनाद । वच्चों और कठमालाके रोगी नौजवानोंका कर्णस्राव ।

"जव कोई व्यक्ति क्षय करने वाले रोगसे पीडित हो, धीरे-धीरे उसके शरीरका मास सूख रहा हो, कानसे पतला, दुर्गन्धित स्राव अधिक-मात्रामें आता हो, तो मुझे **कल्केरिया फास**का व्यवहार करानेसे कभी निराश नही होना पडा । फेफडेकी टीवीके रोगियोके कानके मध्य भागसे पीव आनेकी दशामें **कल्केरिया हाईपोफास** विशेष लाभदायक है ।" ( राउण्ड्स ) ।

**नाम :** नाककी नोक वर्फ-सी सर्द , कण्ठमालाके रोगी वच्चोंकी नाक घायल । सर्दी-जुकाम, नाकसे अण्डेकी सफेदी जैसा मवाद गिरे ; नाक ठण्डे घरमें वहे , गर्म घरमें, और घरसे वाहर जानेपर वन्द हो जाए । छींके आएँ, नथनोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट, अनीमिया और कंठमालाके रोगियोंका पुराना सर्दी-जुकाम । नासार्श, लम्बा मस्सा , पीनस , **कल्केरिया फ्लोर**के साथ अदल-वदल कर दें । दोपहर वाद नकसीर आए । नाककी जडपर दवाव मालूम हो , इसके साथ, पेशानीमें दर्द , या एक या दोनों आँखोके ऊपरी पपोटोंमें दर्द हो ; विशेषतः जव कि जालीदार हड्डी, या पेशानीकी नालीदार हड्डी आक्रान्त होनेकी आशका हो । श्लैष्मिक झिल्लियाँ पीली और ढीली ; या वहाँ कोमल कील निकले , छत्ता वने ; या ढीली-ढाली, फूली हुई और घावयुक्त; नाकसे कफका हल्का-सा स्राव आए, जिसमें छिछडे, या कभी-कभी रक्त आए ।

**चेहरा :** फुन्सियों और कीलोंसे भरा हुआ , विशेषतः लडकियोंका । चेहरे की रगत गन्दी , ऐसा नज़र आए जैसे चर्वी पोत दी गयी है । चेहरे पर ठण्डा पसीना आए , चेहरे में दर्द हो , ऊपरके जवडेकी हड्डियाँ फूल जाती है ; इसके साथ, कानदर्द हो । चेहरेकी चमडीका टीवी , चेहडेपर हल्के भूरे रंगके दाग पड़ें ।

**मुँह :** सुवह मुँहमें वहुत भद्दा, अरुचिकर स्वाद आए , मुँहका स्वाद कडवा ; और उसके साथ, सरदर्द । फूले हुए टासिलोंमें दर्द होनेके कारण मुँह खोलना पसन्द न करे । ऊपरका होठ फूला हुआ, और वेदनापूर्ण ।

**जीभ :** फूली हुई , सुन्न ; कडी , उसपर फोडा, या छाला निकले । जीभपर

सफेद मैलकी तह ; सुबहके समय मुँहका स्वाद कडवा ; और उसके साथ, सरदर्द भी है ।

**दाँत :** दाँत धीरे-धीरे निकले ; **दाँत निकलनेके दिनोंकी शिकायतें**, दाँतोंका बहुत जल्दी गिरना ; दाँत निकलनेके दिनोंके कमेडे, जबकि **मैग्नेशिया फास** काम न दे सका हो, चीरने-फाडने, और छेद होनेकी तरहका दाँत दर्द ; जो रातको बढ़े । मसूढे वेदनापूर्ण, और प्रदाहित, या पीले ।

**गला :** बाहरी ग्र'थिया वेदनापूर्ण, स्वरभग जो रातदिन रहे ; स्वरनाली, और, जीभके पीछले भागमें जलन हो, **गलेमे सन्तापपूर्ण वेदना, इसके साथ, निगलते समय चारों ओर वेदना हो,** बोलते समय चारों ओर वेदना हो ; बोलते समस खासकर निरन्तर गला साफ करते रहना पडे । **गलसुए ( टासिल ) बढ़नेकी पुरानी शिकायत ;** पादरियोका गलक्षत । **गला ढीला, और, गलक्षत ।**

**नाक और गलकोष :** (पेटमें अन्न रसादि ले जाने वाली नाली) : गलेका खुर्दरापन, इसके साथ, निगलनेमें कठिनाई । निगलने पर सन्तापपूर्ण वेदना हो ; जलन जो आसपासके भागोकी ओरसे गलेमें आए । खाली निगलते समय, और, पहला ग्रास निगलनेपर गलेमें खुश्की और जलन आए ; यदि रोगी कुछ देरसे बोला न हो, या, कुछ निगला न हो, तो कष्ट बढे, **कैंथारिस** (—निगलते समय गलेमें जलन हो, जो नीचेकी तरफ बढे ; **एक्टियारेस**— ख़ाली निगलने पर वेदना होती है । ) गलक्षत, और शामके समय गुदगुदाहटके साथ खासी आए, यह खासी रातको लेट जानेके बादमें बढ़े । गलेमें एक तरहका सुकडाव आए, जैसा कि बहुत रोने या, दौडनेके बाद होता है । सुबह जागने पर गलक्षतकी शिकायत आये, जिसका ज़ोर दायी ओर हो ; यह कष्ट मुखगह्वरके निचले हिस्से तक जाए, निगलते समय घट जाए, और जलपान करते समय बिलकुल चला जाए । यदि रोगीको सर्दी लग जाए, तो उसके साथ गले, गलसुओं गलकोष, टेंटवे, और, सांसकी नालीमें ख़ुश्की, और, सन्तापपूर्ण कष्ट आता है ; आक्रमणका जोड इन्ही अगोंपर आता है । ( **कल्के कार्ब**में नज़लेकी तकलीफ बढती है । ), गले और छातीमें सूइया गडने जैसा दर्द, छातीके ऊपरी भाग, और, बाजुओंमें गर्मी लगे । ख़ाली निगलनेपर, ऐसा जान पडे कि कौवेको निगल लिया है, हालाकि यह पिछली दीवारसे जाकर सट जाता है ; इससे घुटन आती है, फिर निगलने पर आराम हो जाता है । तालु ढीले पड जाते है । ऐसा प्रतीत हो जैसे गला भरा हुआ है ; यह तो बोधमात्र ही होता है, और या, ख़ून मिली कफकी उपस्थितिके कारण

ऐसा होता है। नाक और गलकोषसे आनेवाला स्राव, मात्रामें अधिक होनेकी अपेक्षा, लेसदार अधिक होता है। कठनालीको उस लेसदार मवादसे साफ करनेके लिए, रोगी निरतर गला साफ करता रहता है। गहरे पीले रगका सफेद, गाढा स्राव आए। गलकोषमें ख़राश हो, जो नीचेकी ओर चले।

टॉसिल वढ जाते हैं, उनकी रगत पीली पड जाती है, और, वे गर्म हो जाते हैं। इसके साथ घाव वनते है, या पुराना तालुमूल प्रदाह आता है, और, वह वढ जाता है, इसके साथ, कठमालाके नौजवान रोगियों, या कफ प्रकृतिवालोंकी अन्य ग्रन्थिया भी वढ जाती हैं। पुराना टॉसिलप्रदाह, इसके साथ, कानके मध्य भागका प्रदाह। खाद्य या गरम पेय निगलनेकी अपेक्षा, खाली थूक निगलनेसे गलेमें कष्ट अधिक आता है। (**मर्क सोल**), टॉसिल, अगर वढ गये हों, तो **कल्केरियाके** अन्य यौगिकोंकी अपेक्षा, आकारमें छोटे होते हैं, और परीक्षाके समय, अधिक विरोध करते हैं। लुशका टॉसिलमें भी यही हाल होता है, दोनोंमें ही **कल्केरिया कार्ब**की अपेक्षा, रगत अधिक स्वाभाविक होती है ( डा० टी० एम० स्ट्राँग )।

**आमाशय :** कलेजा जले और अफारा, अस्वाभाविक भूख, पेटके आधे ऊपरी भागमें भारी दुर्वलताका वोध हो, खाना खानेके वाद दर्द, और, दवानेसे सन्तापपूर्ण कष्ट हो। आमाशयके कष्ट, जरासा खा-पी-लेनेसे वढ जाते हैं। मन्दाग्नि, और उसके साथ आमाशयमें सन्तापपूर्ण कष्ट, जो कुछ खा लेनेसे, और, डकार आनेसे घटे। जव भूखा हो तो दर्द मेरुदण्डकी ओर जाए, वच्चा हर समय स्तनपान करते रहना चाहे, और, वार-वार कै करे। आमाशय शूल, और, उसके साथ दुर्वलता, ठण्डा पानी पीने, और, आईस क्रीम खानेके वाद, कै हो जाए। सरदर्द और अतिसार, खाना खानेसे कष्ट वढ़े। **सूअरका मास, जघाका मास, नमकीन या भुना मास खानेकी इच्छा। पेटमें हवा अधिक आए, पेट अन्दरको धस जाए, और थुलथुला।** मध्यान्त्रकी ग्रन्थिया वढ जाती हैं। जव भी कुछ खानेका यत्न करे, तो, आन्त्रशूल आ जाता है। शेप।

**पेट और पाखाना :** नाभिके आसपास सन्तापपूर्ण कष्ट जलन और भारी दुर्वलताका वोध, आन्त्रशूल, इसके साथ, हरे, चिकने और अनपचके दस्त आए, तथा **दुर्गन्धित हवा निकले। छोटे वच्चोंका अतिसार**, वच्चा जंघाका मास, भुना मास आदि न पचनेवाली चीजें खाना चाहे। पेट धंसा हुआ, नरम। टीवीका अतिसार, **मल गर्म, पानी-सा पतला, मात्रामें अधिक, दुर्गन्धित, जल्दी-जल्दी आये,** और आवाजके साथ आए

यह औषध गर्मीके मौसममें आनेवाली बच्चोकी तकलीफों, शोष (सूखा, मसान) और दाँत निकलनेके दिनोंकी तकलीफमें हितकर है। अतिसार जो फल खानेसे आया हो। नाभिके आसपास दर्द होनेसे बच्चा चीखे-चिल्लाए, जब भी वह स्तनपान करे, इसी तरह चीख मारे। जिनके शरीरमें खून की कमी है, और, जिनका शरीर जीर्णाशीणा है, उनकी अन्तडियोंमें कृमि बननेके झुकावको दूर करती है (**मेटरम फास**)। नई पित्त पथरियोंका बनना रोकती है। पेटकी हर्निया, जिनके शरीरमें खूनकी कमी है, और, जो कमजोर हैं, उनकी खूनी बवासीरसे रस स्रावकी पुरानी शिकायत; मलद्वारके फटाव और **भगन्दर**, जो **छातीकी तकलीफके साथ अदल-बदल कर आएँ**, या ऐसे **व्यक्तियों के लिए हितकर है, जिन्हें मौसममे किसी प्रकारका परिवर्तन आते ही जोड़ोंमे दर्द हो जाता है**। वेदनाहीन भगन्दर, कब्ज, कडे सुद्दे खूनके साथ आएँ, विशेषतः वूढोंमें जबकि खिन्नता, सरमें चक्कर आना, सरदर्द और पुरानी खामी भी हो। उन व्यक्तियोंकी हर्निया जिनके शरीरमें खूनकी कमी है। मध्यान्त्रकी ग्रन्थियोंका टीवी, पाखानेके साथ दुर्गन्धित पीव आए; मलद्वारका स्नायुशूल, त्रिकभागमें तेज दर्द जो पाखाना जानेके बाद आए, और, जबतक रातको सो न जाए दिन भर जारी रहे।

**मूत्रसस्थान :** पेशावमें फॉस्फेट आएँ, विस्तरमें पेशाव निकल जाए, और, आम दुर्बलता, पेशाव करनेका बारबार वेग हो, मूत्र-पथ और मसानेकी गर्दनमें कटनके साथ दर्द हो, बूढो और बच्चोंको पेशाव अनजानेमें निकल जाए, और इसके साथ, भारी दुर्बलता, मूत्रमेह, जबकि फेफडे भी आक्रात हों। पेशाव मात्रामें अधिक आए, और उसके साथ, थकना भी आए। पेशावमें अलब्यूमन आए (**काली फास**के साथ अदल-बदलकर दें), शर्कराश्मरी —पेशावमें रेत आना, फॉस्फेट आएँ, पेशाव अधिक आए, और, झागदार तलछट जमे। मसाने की पथरी, यह दवा उसे दुबारा बननेसे रोकती है। हाईडरोसील।

**कामाग :** कामवासना बढ जाती है। वेदनापूर्ण तेज़ी, सुजाकके कारण आया गठियाबात जिसकी तकलीफ, मौसममें हरबार ठण्डक आते ही बढ जाए (**मेडोरिनम**)। जिन व्यक्तियोंके शरीरमें खूनकी कमी है, उनकी सुज़ाककी पुरानी तकलीफ, जिसमें मूत्ररथ, और प्रोस्टेट ग्रन्थिमें तेज दर्द भी होता हो, खुजली आए, और सन्तापपूर्ण कष्ट हो। अण्डों और अण्डकोषकी सूजन।

**स्त्री जननेन्द्रिय :** गर्भाशयमें दुर्बलता और कष्ट, निढाल हो जाने जैसी दुर्बलता जो पाखाना जानेके बाद बढ़े। जरायुमें तपकन हो, गर्भाशयका अपनी

जगह से हट जाना ; और इसके साथ गठियावात के दर्द । जरायुभ्रंश जो अपनी ही सीमा में रहे ; इसके साथ कामवासनाका वोध । कठमालाके रोगी वच्चोंका हस्तमैथुन करना । कामोन्माद , जो ऋतुकाल मे पहले वढे । डिम्वशाय-प्रदाह , सख्त कमर दर्द ; और उसके साथ जरायुशूल ; त्रिक भाग, और, कूल्हेकी हड्डियोंमें सन्तापपूर्ण वेदना ; लकोरिया , शरीर को वल देनेके लिए व्यवहार कराया जाता है, जवकि स्राव अण्डेकी सफेदी जैमा, या क्रीम जैसा हो ; स्राव सुवह अधिक आए, इसके साथ, कामोत्तेजना । रोगिणी इधर-उधर घूमना चाहे, नष्टरज , नवयुवतियोंमें मासिक समय से वहुत पहले आए , रक्तकी रंगत चमकदार लाल , हर दो सप्ताह वाद मासिक आ जाए; आशाके विपरीत, वेदना कम होती है । स्ततपान करानेके दिनोंमें ऋतु स्राव हो जाए, युवतियो को ऋतु देरसे आए, रगत गहरी, विशेषतः गठियावातकी रोगिणियोंमें ; ऋतुसे पहले कामोत्तेजना आए, इसके साथ, और वादमें, भारी दुर्वलता, कष्ट और गठियावातके दर्द आएं मासिक आनेसे पहले, और वादमें, प्रसव जैसी वेदना हो , कभी-कभी पेशाव कर चुकने, या, पाखाना जाने के वाद भी ऐसा दर्द आए । मौसम वदलनेसे यह दर्द वढ़े । योनिमें जलन हो , छातियों की सख्ती ।

**गर्भकाल :** स्तनो में दर्द, जलन और सन्तापपूर्ण कष्ट हो , ऐसा जान पडे जैसे स्तन वढ गए हैं । माका दूध विगड जाता है । वह नमकीन और नीला-सा होता है , वच्चा ऐसा दूध पीने से इन्कार कर देता है । प्रसव के वाद, और, गर्भकालमें छातिया सिकुड जाती है । जरायुभ्रंश (**काली फास**के) साथ दें, **अधिक दिनों तक स्तनपान करानेके वाद**, जवकि आवाज भी दुर्वल हो, खांसी, कमज़ोरी, और, कधो के दरम्यान दर्द भी हो । गर्भकालमें सभी अगोंमें दुर्वलताका वोध हो ।

**श्वास प्रणाली :** दिनरात स्वर भग, और सूखी खासी, **अनैच्छिक रूपसे आहें भरे।** खासी जिसमें गहरे पीले रंग का, अण्डे की सफेदी जैसा कफ आये । यह कफ पानो जैसा पतला न हो , सवेरे खासी अधिक आया ; इसके साथ गला दुखे और खुश्क । छूनेसे छातीमें सन्तापपूर्ण दर्द । आवाज साफ करने के लिए वार-वार गला साफ करे और खांसे । **छातीकी शिकायतें और भयकर** टीवीके रोगियोकी पुरानी खांसी , जिनके हाथ-पाँव सर्द हो । जिनके शरीरमें खूनकी कमी है, उनका प्रारभिक टीवी , पसीना अधिक आए । विशेषत. सर और गर्दन पर । काली खासी, जव रोग दुस्साध्य हो चला हो, या रोगी को दात निकल रहे हो, और शरीर दुर्वल हो । वालकोंकी दम घोटनेवाली खांसी, जो लेट जानेसे घटे , वैठ जानेमे वढे । स्तनपान करनेके वाद वच्चोंको

घुटनेके दौरे पड़ें ; चिल्लानेके वाद ऐसा हो ; चेहरा नीला पड जाए ; दौरा आनेके वाद, शरीर ढीला पड जाए, सास जल्दी-जल्दी चले, अथवा सास कष्टसे आए। कठमाला या, संधिवात प्रकृतिवालोका नजला जवकि अनीमिया ( खूनकी कमी ) भी साथ हो। दात देरसे निकलनेके कारण श्वासनलीके मुँहका आक्षेप।

**रक्तसञ्चार :** धडकन और व्यग्रता , इसके वाद शरीर कापे, कमजोरी आए, विशेषतः पिण्डलियोंमें। भ्रूणके हृदयके दाएँ, और, वाएँ खानेका डिम्वाकार छिद्र वन्द न हो। रक्तसञ्चार अधूरा , रक्तसञ्चार रुका हुआ ; अगोंमें सुन्नपनकी अनुभूति । सास लेते समय, दिलके आसपास तेज दर्द हो।

**गर्दन और कमर :** वच्चोंकी गर्दन पतली, हवाका जरा-सा झोंका लगते ही गर्दनमें गठियावातका दर्द होने लगे, और, अकडन आ जाए , सुवह जागनेपर पीठमें दर्द हो ; गर्दन और कंधोके जोडके आसपास, कमरके निचले भागमें और गुर्दोंमें, कोई वोझ उठाने से, या, नाक साफ करनेमे ऐंठनके साथ तेज दर्द हो। त्रिक भाग और कूल्होंकी दरम्यानी उपस्थितिके आसपास सन्तापपूर्ण कष्ट ; रीढ़की आखिरी हड्डीमें निरन्तर वेदना हो। मेरुदण्डके नासूर ; मेरुदण्ड-के मोहरों ( कशेरुका ) का प्रदाह ; नवयुवतियोंकी रीढ झुक जाए , विशेषतः वालिग होते समय। रीढके गूमड, रीढके पैदायशी दोष , नितम्व और पीठ जैसे "सो गयी है"।

**हाथ पाव :** कधो और उनके जोडोमें तथा वाजुओके साथ-साथ, सन्तापपूर्ण, निरतर वेदना, वाजू ऊपर उठा न सके, कुहनियोंमें गोली लगने जैसा दर्द , वाजूके अगले हिस्सोंमें, कलाइयोंमें, हाथकी उगलियो, और नखोंमें ऐंठन होने जैसा दर्द आए। सधिवातकी गाठें । **जोड़ोका गठियावात ; इसके साथ ठण्डक और सुन्नपनकी अनुभूति ।** गठियावात ; मौसम वदलनेसे, वसन्तके मौसममें, भींग जानेसे कष्ट वढे, और हर पतझडमें लौट आए। अगोंमें ठण्डक और सुन्नपनकी अनुभूति , या, जैसे आक्रान्त अगपर चींटिया रेंग रही हैं। **ऐसा जान पड़े जैसे अंग सो गये हैं।** गठियावात और सधिवात , यह कष्ट रातको, और, खराव मौसममें वढे। सारे अंगोंमें वेदना, ओर, भारी दुर्वलता ; गठियावातके दर्द जो अपनी जगह वदलते रहें , जंघाओंमें वेदना, और, सन्ताप-पूर्ण कष्ट , घुटनोंका दर्द जो चलनेसे वढ़े। निम्नाग जैसे सुन्न हो गये हैं। पाव वर्फसे सर्द। जघाकी हड्डीमें दर्द। पिण्डलियोंमें ऐंठन , टखनोंके जोड जैसे उखड गये हैं। पांवकी उगलियों, और टखनोंके जोडोमें संधिवातका दर्द ; सर्दीके मौसममें उनमें दर्द हो। कूल्हेकी वीमारीका तीसरा दर्जा, जोडोंकी झिल्लियोंमें पानी आ जाता है। जोडोंकी स्नेह झिल्लीका पुराना प्रदाह , साथ

जुडी हुई हड्डीकी सूजन, बच्चोंकी टांगें धनुषकी तरह झुक जाएँ। बच्चा चलना देरमें सीखे। पैर और टखनेके जोडोंके नासूर। रीढ़का झुक जाना, पीठके घाव, आतशकके कारण हड्डियोंके पर्दोका प्रदाह, और घाव।

**स्नायुजाल :** स्नायुशूल, जो रातको आए, नियत समय पर लौटे, गहराईसे उठे, जैसे हड्डियोंमें होता हो, चीरने-फाडनेकी तरहके दर्द जो मौसममें किसी प्रकारका परिवर्त्तन आनेसे बढें, इसके साथ, यह अनुभूति **जैसे कोई चीज खिसक रही है, सुन्नपन, ठण्डक।** बिजलीकी तरह झटके आएँ। थोडी-थोडी जगहमें दर्द हो। गठियावात जनित लक़वा, **सुस्ती**, कमजोरी, विशेषतः चढते समय। कामकाज न करना चाहे; अंग कांपें, दुर्बल बनानेवाले तरुण रोगोंके बाद आयी भारी दुर्बलता, दाँत-निकलनेके दिनोंके कमेडे। हर तरहके कमेडोंमें हितकर है जबकि **मैगनेशिया फास** विफल रहा हो। मृगी।

**नींद :** ऊब, विशेषत. बूढोंमें, इसके साथ निराशापूर्ण विचार। सुबह आसानीसे जाग न आये, बच्चे रातको चीख मारे। जम्हाइयाँ, और अंगडाइया निरन्तर आएँ।

**ज्वरके लक्षण :** रेंगकर आनेवाली सर्दी, **फेफड़ोंकी टीबीके रोगीको रातके समय पसीना अधिक आए।** चेहरे पर ठण्डा पसीना आए, और शरीर ठण्डा, कठमालाके रोगी बच्चोंके बारीके पुराने बुख़ार। सर्दीसे सारा शरीर कांप उठे।

**त्वचा :** सूखी और ठण्डी; झुरियाँ पड जाएँ, नहानेके बाद लाल हो जाए, और खुजली हो। ताम्बे जैसा रंग, मुहासों और कीलोंकी भरमार, शरीरके ऊपरी भागपर कील निकलें। पुराने घावके दाग हरे हो जाएँ। त्वचा फट जाए, उमड जाए, छिल जाए, खुजली आए, उन **बूढोंकी खुजली** जिनके शरीरमें खूनकी कमी है, या, कठमालाके रोगी हैं, या, जिनके जोडोंमें दर्द होता है; ऐसा एग्ज़िमा जिसपर गहरे पीले, या, सफेद रंगका खुरण्ड आए, या, छाले निकलें। यह औषध भूरे रंगके दागोंको कम कर देती है। नयी या पुरानी दाद, जिसमें खुजली हो, पुरानी खुजली, त्वचाकी खुजली, वृद्धाओंके गुप्तांगकी खुजली हो। त्वचा पर, उससे, अण्डेकी सफेदी जैसा स्राव आए। त्वचाका टीबी। कठमालाके घाव, घावसे फोडे बनें। गुलाबी दाने।

**तन्तु :** यह औषध अनीमिया और हरे पाण्डुमें रक्तके नए कोष बनाती है। **ढीले-ढाले, मुरझाये हुए और सूखे शरीरवाले बालक।** चमडीकी रंगत मोम जैसी, हरी-सी, सफेद। हड्डियोंका अर्बुद (गुम्मड)। हड्डीकी बीमारियाँ, हड्डीके जोडके उभारपर सूजन आए, **बाल शोष, टूटी हुई**

**हड्डीका न जुड़ना**, मेरुदण्डके पैदायशी विकार, **गुम्मड़** जो नाक, मलान्त्र या गर्भाशयमें वनें। क्षय, शीर्णता, दूषित पोषण, हड्डियाँ पतली, और, खस्ता, शोथ; विकास अनियमित; शोप, और उसके साथ आये अन्य रोग, फुलवहरी; श्वेत कणोंकी सख्या वढ जाती है। गलगण्ड; रसौलिया; अर्वुद, क्लोम ग्रन्थियोंके रोग; जोड़ोंका सन्तापपूर्ण कष्ट।

**ह्रास-वृद्धि :** इस औषधके लक्षण आमतौर पर ठण्डसे, हरकत करनेसे, **मौसम बदलनेसे** वढते हैं। **सर्दी सहन नहीं होती**, भीग जानेसे और नमीसे भी कष्ट वढते हैं। अधिकाश लक्षण लेट जानेसे, आराम करनेसे घट जाते हैं।

**होम्योपैथिक तथ्य :** इसका होम्योपैथिक सवाद डा० सी० हैरिंगने संग्रह किया है, जो **गाईडिंग सिम्पटम्स, भाग** तीन और, **ऐलेन्स इंसाइक्लोपीडिया** में दर्ज हैं। विविध परीक्षणोंका सग्रह डा० सी. हैरिंगने किया है, और, वे सव **हनीमेनियन मन्थली**को मार्च १८३७ वाली संख्यामें प्रकाशित हुये हैं। **नार्थ अमेरिकन जर्नल आव होम्योपैथी**की सख्या २० में यह सामग्री छपी है।

**व्यवहार :** ३X से ६X तकके विचूर्ण ही आमतौर पर इस्तेमाल होते हैं। और संभवत. इन्होंने ही सर्वाधिक सन्तोषजनक परिणाम दिखाये हैं। हालाकि ३० और २०० शक्तिसे भी वडे शानदार परिणाम प्राप्त हुये हैं। शुसलर ६X विचूर्ण ही इस्तेमाल कराते थे। वडी मात्रामें दवा देना, व्यर्थ, वल्कि हानिकर है। अधिक देर तक व्यवहार करानेसे गुर्देका दर्द आ जाता है और छोटी-छोटी पथरिया निकलने लगती है। वूढोको निम्न शक्तियोंका व्यवहार नही करना चाहिए।

**सम्बन्ध :** यह औषध **कल्केरिया कार्व**से वहुत समता रखती है, परन्तु **कल्केरिया फास**के वीमारकी चमडीकी रंगत **गन्दी-सफेद या भूरी** होती है, और, वह आमतौर पर मुरझाया हुआ होता है। इन दोनोंके फेफड़ोंकी नई वीमारीके लक्षणोंमें अधिक मेल है। साधारणतया **फास्फेट** त्वचा, आखों और वालोंकी गहरी रंगत पसन्द करता है। जवकि कार्वोनेट हल्की रगतके वालों, और, नीली आखों वाले रोगमें अधिक अच्छा काम करता है। इसकी जगह **कल्केरिया कार्व** और **फास्फोरस**के मध्यमें है। यह **फास्फोरस**का पूरक **कल्केरिया फास**, और **बर्वेरिस** दोनो ही भगदरमें हितकर हैं। दोनोंके छातीके लक्षणोंमें भारी समता है, विशेषत. छातीका आपरेशन होनेके वाद। छात्राओंके सरदर्दमें, जो खूनकी कमीसे आया हो।

इसके वाद, **मैग्नेशिया फास** काम करता है। दाँतोंके नासूरमें, यह **फ्लोरिक ऐसिड, मैग्नेशिया फास** और **नेटरम फास**के समान है। मृगीमें

फेरम फास, काली म्योर, काली फास और साईलीशियाके समान है। कृमियोंके कारण आए रोगोंमें भी यह नेटरम फासके समान है। दिमागमें पर्दोंमें पानी आने, और खूनकी कमीमें चायनाके बाद अच्छा काम करता है।

कार्बो ऐनिमेलिस और रूटाका पूरक है। स्नायु दुर्बलतामें मिलते-जुलते लक्षणोंके लिये कल्केरिया हाईपोफास इससे अधिक अच्छा काम करता है। दुर्बल बनाने वाले तरुण रोगोंके पसीनेमें सोराईनसे तुलना करें। जोडोंके नए गठियावातमें, यदि नेटरम म्योर, और, काली फासका व्यवहार करानेके बाद, रोगका अशमात्र. शेष रह गया हो, तो फिर, इसका व्यवहार होना चाहिए। चेहरेकी चमडीके टीबीमें काली म्योरसे तुलना करें। बूढोंके लिये सपरेटा दूध और, घोडीके खमीर उठाए दूधसे बनायी शराब हितकर है, क्योंकि इनमें लैक्टिक ऐसिड पाया जाता है, और, वह चूनेको घुला देता है। यह ऐसिड कण्डराओं, धमनियों और अन्य स्थानों पर चूनेको जमने नही देता। बूढोंकी औषधके तौर पर, वैरिटाके साथ तुलना करें। अनीमिया (खूनकी कमी) और हरे पाण्डुमें नेटरम म्योरसे तुलना करें कल्केरिया फासके साथ उसका भारी लगाव है, विशेषतः कब्ज, लेट जानेपर धडकन होनेमें, और जब त्वचाकी रंगत मटयाली हो।

जवानीके कीलोंमें, कल्केरिया पिकराटा लडकोंके लिए अधिक गुणकारी है, और, लडकियोंके लिए कल्केरिया फास। उस मन्दाग्निमें, जो कुछ खा लेनेसे, अस्थायी रूपसे मिट जाती है, कल्केरिया फास हितकर है। परन्तु इस लक्षणके लिए अनाकार्डियम विशेष हितकर है। चेलीडोनियममें भी यही लक्षण पाया जाता है।

मानसिक खिन्नता, दुर्बलता, और, जब पेशाबमें फॉस्फेट आते हों, तो फिर हिलोनियससे तुलना करें। बच्चोंका अनीमिया, इकहरे शरीर वाले बच्चे जब उनमें शोष आनेका झुकाव हो, और जब सर पर तेल जैसा चिकना पसीना अधिक आता हो, तो फिर, साईलीशिया काम देता है। फैरम, क्यूपरम, और आर्सेनिक भी काम देते हैं। दिमागके पर्दोंमें पानी आनेकी शिकायतमें जिंकम इसका पूरक है। रूटा जोडोंकी बीमारियोंमें पूरक है। जब टूटी हड्डी न जुडती हो तो सिम्फाईटमसे तुलना करें। टीबीमें कल्केरिया फासके बाद, साईलीशिया, सल्फर, ट्यूबरक्यूलीनम काम देते हैं यह प्रायः फासफोरस, मर्क आयोड और आर्सेनिक आयोडके बाद काम देता है।

# कल्केरिया सल्फ्यूरिका ( Calcarea Sulphurica* )

**पर्याय :** कैल्सीआई सल्फास , कैल्सियम सल्फेट ।

**साधारण नाम :** जिपसम , प्लास्टर ऑव पेरी ।

**रासायनिक तत्त्व :** फार्मूला Ca SO4 अनहाईडराईट, जिपसम अल्बास्टर, और सेलेनाईटमें यह पाया जाता है। यह लवण विविध प्रकारके पानियों में भी पाया जाता है, और यह स्थायी सख्तीका कारण है। परमाणु अनुपात १७२। यह सेलेनाईट, और, जिपसममें पाया जाता है। यह अत्यन्त महीन, और सफेद रंगका कणदार चूर्ण है। यह ४०० भाग ठण्डे पानीमें घुल जाता है। अलकोहल, डाईल्यूट निटरिक ऐसिड, और, हाईडरोक्लोरिक ऐसिडमें नहीं घुलता। यह लवण कैल्सियम क्लोराइड, और डाईल्यूट गंधकाम्लके घोलकी पेंदीमें बैठ जाता है।

**तैयारी :** विचूर्ण बनाकर, जैसा कि फार्माकोपियामें आदेश दिया गया है।

**शारीरिक-रासायनिक तथ्य :** डा० वगेका मत है कि यह लवण केवल पित्तमें पाया जाता है। उनका यह भी कहना है कि वहाँ भी यह निरन्तर नहीं पाया जाता। पित्तमें जो **कैल्केरिया सल्फ** पाया जाता है, वह जिगरसे आता है। वहाँ यह जीर्णशीर्ण रक्तके लाल कणोका पानी खींच, या, शोषित करके, नष्ट करता है।

जब जिगरमें **कैल्केरिया सल्फ**की कमी पड जाती है, तो वहाँ, इन अक्षम लालकणोंकी विनाश-क्रियामें देर हो जाती है, इस तरह रक्तमें, ऐसे अक्षम कणो की फाल्तू सख्या चली जाती है। साधारण स्थितिमें, रक्तके ये बेकार कण, जिगरमें ही, **कैल्केरिया सल्फ** द्वारा नष्टकर दिये जाते हैं। जो शेष रहते हैं, उन्हें, पित्तक्रिया द्वारा, रक्तधारसे, छोटेसे-छोटे मार्ग द्वारा निकाल दिया जाता है। परन्तु यदि रक्तधारमें, प्राणवायु इन बेकार कणोको नष्ट कर दे, तो फिर, इन्हें शरीरसे निकलनेमें देर लगती है।

इस तरहके शेष कण जो रक्तधारसे जिगर द्वारा नही निकलते, और न ही लसिकाएं उनका शोषण करती हैं, तब वे श्लैष्मिक झिल्लियों, और चमडी तक पहुँच जाते हैं, और वहाँ स्राव तथा फुन्सियां पैदा करते हैं।

---

* । अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें डा० शुसलर ने इस दवा को अपनी सूचीसे निकाल दिया था , तब टिशू रेमिडीजकी सख्या १२ की बनाए ११ रह गयी थी। परन्तु बादमें, इसे रखना ही बेहतर समझा गया ; क्योंकि इसके पक्षमें चिकित्सा सम्बन्धी अनेक प्रमाण मिले। डा० शुसलर अपनी चिकित्सा पद्धतिके अन्तिम सस्करणोंमें इस दवा की जगह नेटरम फास साईलीशियाको जगह दी।

**साधारण बायोकेमिक क्रिया** पीब लानेमे कल्केरिया सल्फका खास सामीप्य है। जब श्लैष्मिक झिल्लियोंसे, रक्ताम्बु कोषोंसे पीब जैसे स्राव आते हों, तो यह उन्हें ठीक करता है। यह औषध आन्तड़ियोंके टीबी घावों या नासूरों, या, कनीनिका (पुतली) के घावोंको भी ठीक करती है; जब किसी अगमें चोरी-छिपे पीब आयी हो—और पीड़ित अंगोंने उसे बाहर निकाल दिया हो-परन्तु वहाँ पीब या मवाद अभी टपक रहा हो, तो यह औषध उसे ठीक कर देती है। ऐसी बीमारियोंमें भी यह दवा हितकर है, जिनमें पीब बहुत दिनों तक बहती रही हो, और जब बाहरी त्वचाके तन्तु भी आक्रान्त हुये हों। यह दवा संयोजक तन्तुओंपर भी असर करती है। यदि शरीरके किसी अंगमें इस लवणका अभाव पड जाता है, तो परिणामस्वरूप वहाँ पीब आ जाती है। ऐसा पीब जिसने बहनेके लिए अपना रास्ता बना लिया हो, इस औषधका साधारण लक्षण है।

## चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** स्वभाव बदलता रहता है। स्मरणशक्ति और चेतना सहसा नष्ट हो जाती है। अन्यमनस्क, चिडचिडा; व्याकुल, खुली हवामें आराम मिले। असन्तुष्ट, भयभीत।

**सर और खोपड़ीकी त्वचा :** बच्चोंका गंज, जबकि पीब जैसा स्राव आता हो, या, गहरे पीले रंगकी पीब जमकर खुरण्ड बन गया हो। खोपडीकी चमडीसे पीब आए, सर दर्द, उसके साथ, मतली आए, और ऐसा बोध हो जैसे आँखें अन्दर धंस रही हैं। ठण्ड लगनेसे सर दर्द आए, और ठण्डी हवा लगनेसे आराम आए। सरके चारों ओर दर्द, विशेषतः पेशानीमें। खोपडीका क्षय। सरमें चक्कर आए, और भयानक मतली हो; विशेषतः सरको जल्दी-जल्दी घुमानेसे। सरपर सिकडी ( रूसी ) अधिक आए। बाल झडें।

**आँखें :** पुतली का गहरा घाव; आखोंका प्रदाह जिसमें गाढा पीला स्राव आए। आँखके अगले पर्देमें आयी पीबका शोषण करती है, जबकि **साईलीशिया** विफल रहा हो। चक्षु पटल प्रदाह, आँख दुखने आना, पीब गाढी, और, पीले रंगकी। पुतली धुंधली, अगले पर्देमें पीब आए, ऐसा बोध हो जैसे वहाँ कोई विजातीय द्रव्य आ गया है। आखें बाधनी पडें, आंखमें कोई पारखची गड जानेके बाद इस दवाका व्यवहार होता है। छालेदार कनीनिका प्रदाह, और छालेदार श्वेत पटल प्रदाह, जिसके साथ गर्दनकी

पेशियां भी फूल गयी हो। आधी चीज दिखायी दे। पपोटोंमें खिंचाव आएं। कोये ( कोण ) प्रदाहित।

**कान :** बहरापन और, कानके मध्य भागसे स्राव आए; कभी-कभी उसमें रक्त मिला आए। नकसीर आए। एक नथना बहे। नथनों के सिरे दुखें। नथनोंके पिछले भाग से पीला-सा स्राव टपके। नाक सूखी; उसमें छिछड़े बनें; खुजली चले; बन्द।

**चेहरा :** गाल फूले हुए जबकि पीब आनेका खतरा हो। दाढ़ीके नीचे कोमल कील निकलें। चेहरे पर दादके दाग। **चेहरे पर कील, महासे और पीबदार फोड़े निकलें।**

**मुँह :** होठोंके भीतरी भागमें सन्तापपूर्ण कष्ट। होंठ जैसे कच्चे हों। मुँह खुश्क, गर्म। **मसूढ़े फूले हुए।**

**जीभ :** नर्म, थुलथुली, जैसे सूखी मिट्टीकी तह पडी हुई है; खट्टा, चरपरा, साबुन जैसा स्वाद; जडपर पीली मैलकी तह। जीभका प्रदाह जब पीब आयी हो; मटयाले रंगकी मैलकी तह।

**दाँत :** दन्तशूल; दन्तशूल जबकि मसूढ़े फूले हुए हों, और, उनमें सन्तापपूर्ण कष्ट हो; गाल फूले हुए। ब्रश करते समय दाँतोंसे खून गिरे। मसूढ़े फूले हुए; दाँतोंके घाव।

**गला :** गलक्षत जिसमें पीब आ गया हो। घाव वाले गलक्षतका अन्तिम दर्जा, जबकि गहरे पीले रंगका मवाद भी आता हो। टाँसिल प्रदाह जबकि पीब आ गयी हो, और वह बहती हो। नरम तालुका डिफ्थेरिया प्रदाह; मुखगह्वर अधिक फूला हुआ, सामान्य गलक्षत, जिससे पीब आए, गला घुटे **(हीपर)**।

**आमाशय** . फल खाने, चाय पीने, क्लेरयट नामी शराब पीने और हरी खट्टी सब्जियां खानेकी इच्छा। भूख और प्यासकी अधिकता आये। मतली और सर चकराये; खाते समय मुहकी छतमें दुख न हो। आमाशयमें जलनके साथ दर्द हो। उत्तेजक पदार्थों की इच्छा, ताकि कम्पके साथ आयी दुर्बलता को दूर कर सके।

**पेट और पाखाना :** अतिसार जिसमें पीब जैसा मल आए, खून मिला मल आए। पेचिश; पाखाना पीब-जैसा, और, क्षयकारी। अन्तडियोंके घाव, और, टायफस। **मलद्वार के वेदना हीन नासूर** जबकि भगदर भी हो। जिगरमें, और, पेड़ूके दायें भागमें दर्द हो। इसके बाद दुर्बलता, मतली और पेट दर्द आए। खाने, और मौसम बदलनेके बाद आया अतिसार। बच्चोंका अतिसार खानेके बाद बढ़े; वेदनाहीन पाखाना, जो अपने-आप निकल जाए। मलान्त्रमें खुजली हो; मलद्वार गीला रहे। काच निकले, कब्ज, जिसके साथ टीवी

ज्वर हो, और सास लेनेमें कठिनाई पड़े। अन्तड़ियोमें पीव जैसा चिकना स्राव आए।

**मूत्र-संस्थान और कामांग :** लाल रंगका पेशाव आए, और, उनके साथ यक्ष्मा ज्वर। पुराना मूत्राशय प्रदाह, वाघीकी पीवका नियन्त्रण करनेके लिए, **साईलीशिया**से अदल-बदलकर दें। सुजाक जिसमें पीव-जैसा, तीक्ष्ण स्राव आए। प्रोस्टेटका घाव, आतशककी पुरानी पीव, ग्रन्थियोंके घाव; वीर्य स्राव; मासिक देरसे आए, अधिक दिन तक जारी रहे; इसके साथ सिर दर्द हो, अंगोंमें खिंचाव आए; भारी दुर्बलता। पेड़ूके तन्तुओंमें पीव आ जाए, और, यह पीव बनाने वाली किसी झिल्लीतक सीमित रहे। मासिकके वाद योनिमें खुजली हो, और भगोष्ठों पर सूजन आए।

**श्वास-प्रणाली :** खासी जिसमें पीव-जैसी तीक्ष्ण कफ आए—और टीबी ज्वर। दमा जिसके साथ यक्ष्मा ज्वर भी हो। फेफड़ोंमें या उनके पर्दोमें पीव आ जाए, छातीके आर पार दर्द हो। नमोनिया का तीसरा दर्जा। दुस्साध्य स्वरभंग। ब्रांकाईटिस का तीसरा दर्जा; जब छातीमें संचित पानीको निकालनेके लिए छेद किया गया हो, और उसके बाद, फेफड़ोंमें पीव आ जाए। टीबी, छातीमें घुटन और सन्तापपूर्ण कष्ट हो; छातीमें जलन हो और दुर्बलता आए। पीव जैसी कफ आए, नजला, जिसमें गाढ़ा, गाठदार, सफेद पीला या पीव जैसा मवाद आए। क्रूप जब **काली म्योर** विफल रहा हो। वच्चोंकी खासी जिसके साथ छातीमें थकान हो, हरे रंगके पाखाने आये, और, दाद जैसे दाने निकलें।

**गर्भकाल :** स्तन प्रदाह जब पीव आ गयी हो, वहने लगी हो, और पहले **साईलीशिया**का व्यवहार हो चुका हो।

**रक्त संचार :** हृदयके पर्दोका प्रदाह जबकि पीव आ गई हो। रातको धड़कन हो।

**पीठ और हाथ-पाँव :** पीठ और त्रिक भागमें दर्द। उगलिया कड़ी हो जाए। पीठका कारबंकल, उगलियोंमें आयी पीवका अन्तिम दर्जा, जबकि पीव वह रही हो, और, घाव गहरा न हो। छोटे जोड़ोका दर्द। पिण्डलियोंमें ऐंठन। कूल्हेका गठिया। नया और पुराना गठियावात; कूल्हेके जोड़की बीमारियाँ। पीव बहानेके लिये यह औषध हितकर है। इसके साथ **फैरम फास** भी दें, रोगीको पूरा आराम करनेका परामर्श दें, तो यह रोग चला जाएगा। पीववाले घाव। **तलवोंमे जलन और खुजली।**

**स्नायु-जाल :** झटके आएँ, खिंचाव पड़ें। कमज़ोरी और सुस्ती; बूढ़ोका

स्नायुशूल ; उत्तेजक वस्तुओंकी इच्छा ; ताकि कम्पके साथ आयी दुर्वलता हटायी जा सके।

**नींद :** दिनमें नींद आए। रातभर जागता रहे। ऐसा स्वप्न आए कि भय के कारण आक्षेप आया है। विचारोंकी भरमारके कारण नींद न आए।

**ज्वर :** वारीके पुराने बुखार जिनमें शाम को सर्दी आए, और, यह सर्दी पैरोंसे शुरू हो। शामको आनेवाला ज्वर जिसमें सर्दी भी आए। टायफस जव अतिसार आ गया हो। यक्ष्मा ज्वर जो पीवके कारण आया हो, और उसके साथ, तलवोंमें जलन भी हो।

**त्वचा : दाद जैसे दाने** जो सारे शरीर पर निकलें। यह दवा पीवको कम, और, कण्टरोल करती है। कटाव ; घाव, रगड़ आदि, गन्दी पीव आए ; घाव जल्दी न भरें। आग या गर्म पानीसे जले ; पीव वाले दर्जेके लिये दूसरे दर्जेकी औषध है। कारवकल जिससे पीव वह रहा हो। ववाइया जिनमें पीव आ गयी हो ; सरकी तर दाद जिसपर मोटा खुरण्ड आया हो। पीले रंगके खुरण्ड या स्राव। चमडीसे पीव जैसे स्राव हों, पीव आना, फोडा ; कील ; पीव वाले फोडे, छाले ; और खुरण्ड आदि। त्वचाके रोग जिनसे पीव वहती हो। वालोंमें वहुत-सी फुन्सिया निकले, जिनमें मवाद न हो, उन्हें खुजलानेसे खून आए।

**तन्तु :** सयोजक तन्तुओंकी विमारिया। नासूर। पीव वहनेका समय घटा देती है, और, पीव वहना सिमित कर देती है। यदि **साईलीशियाके** वाद इसका व्यवहार किया जाए, तो यह घावको शीघ्र भर देती है। रक्ताम्बु वाली सूजन। पेशियों और कण्डराओंपर जोर पडनेके वाद आए विकार। कमर लगडी। अधिक शराव पीनेसे हुआ जीर्ण-शीर्ण शरीर। रसौली। प्रदाहका तीसरा दर्जा, जवकि गाठदार या रक्तवाला स्राव आता हो। खासीमें **वलगम आए**, लकोरिया और सुजाकमें भी वलगम जैसे स्राव आए, **गहरे पीले रंगका, गाढ़ा, गाठदार स्राव**, त्वचा या श्लैष्मिक स्तरोंसे मवाद, या, तीक्ष्ण पीव आए। अगमें रसादिका सञ्चित हो जाना जवकि पीव आ गई हो। लसिका ग्रन्थियोंसे पीव आए। ग्रन्थियोंके घाव ; हड्डियोंके जोड़ों और शरीरके किसी अगमें आयी पीव। छोटे-छोटे दाने निकलें, और उनमें दर्द हो, या घातक फोडे जवकि घाव वन गया हो।

**ह्रास-वृद्धि :** पानीमें रहकर काम करने या कपडे आदि धोनेसे लक्षण वढ जाते हैं, और, लौट आते हैं। चलनेके वाद, तेज़ चलनेसे, अधिक गर्मी लगेनेसे और गर्मीसे भी कष्ट वढते हैं।

**होम्योपैथिक तथ्य : कलकेरिया सल्फके** परीक्षण डा० क्लेयरेंस कोनेंटने

किये थे। ये परीक्षण १८७३ में "दी अमेरिकन इन्स्टीच्यूट ऑव होम्योपेथी" की वार्षिक कार्यवाहीमें प्रकाशित हुए थे। ये ऐलनके **इनसाईक्लोपिडिया,** भाग २, पृष्ठ ४१० पर दिये गए हैं। इन परीक्षणोंमें कोई विशेष बात प्रकट नहीं हुई। **गाईडिंग सिम्पटम्स** भाग ३ पृष्ठ २२७ पर इस औषधके सम्पूर्ण लक्षण दिये गए हैं।

**व्यवहार :** नखव्रणों, घावों और नासूरों पर लगानेके काम भी आती है। खिलानेके लिये ६X, और १२X सर्वाधिक उपयोगी हैं। आमतौर पर इन्हींका व्यवहार होता है। जब आँखसे पीब जैसा स्राव आता हो, तो निचले क्रम अधिक उपयोगी हैं।

**होमियोपैथिक सम्बन्ध कल्केरिया सल्फर** मिलता-जुलता है **हीपर सल्फ** से। परन्तु इससे अधिक गहराई तक पहुँचकर काम करता है, और, इसकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है। प्रायः उन हालतोंमें अधिक अच्छा काम देता है जब **हीपर** विफल रहा हो। जब **काली म्योर** भी जवाब दे गया हो, तो, **कल्केरिया सल्फ** काम देता है।

**अपोसायनममें कल्केरिया सल्फ** पाया जाता है।

पीबवाला हालतोंमें आप केलेण्डुलासे भी इसका मुकाबला करें।

**काली म्योर**—बच्चोंकी सरकी पकने वाली दाद तथा चमड़ीके अन्य विकारों, फूली हुई गालों, क्रूप और पेचिशमें लाभदायक है। जबकि **मेटरम सल्फ** आरक्त ज्वरके बाद आए शोथमें लाभदायक है। **साईलीशिया** कड़ी ग्रन्थियोंके लिये, या, जब उनमें पीब आ गयी हो, कनीनिकाके घावों, टॉन्सिल प्रदाह, स्तनप्रदाह और वर्फके बारेमें हितकर है। **पाईरोजनेमें** भी नासूर बनानेका झुकाव पाया जाता है।

स्नायुशूलोंमें, इसका स्थान **काली फास** और **मैग्नेशिया फासके** मध्यमें है। **मैग्नेशिया फासके** दर्द बड़ी तेजीसे आते हैं और **काली फासके** दर्द लक्कवेकी तरह होते हैं। यह वृद्धोंके लिये विशेषतः लाभदायक है; जबकि स्नायु-तन्तुओं में पुनरोत्पादनका अभाव हो।

प्रदाहके तीसरे दर्जेमें जब पीब बनना शुरू हो गया हो, तो यह दवा **काली म्योरके** बाद काम देती है जबकि स्राव गाठदार, और, खून मिला हुआ हो। परन्तु यदि स्रावकी रंगत गहरी पीली, या कफ जैसी हो, तो फिर, **काली सल्फ** काम देगा। यदि स्राव पीब जैसा हो, या पीबमें खून आता हो, तो फिर, **साईलीशिया** काम देता है।

कारबकलमें **एन्थासिनम** बेहतर है। **कल्केरिया सल्फ** आमतौर पर **काली म्योरके** बाद काम आती है। जबकि **काली म्योरने** केवल आंशिक

रूपमें ही काम दिया हो। यह दवा बैलाडोना आदि तरुण अवस्थाओंमें काम देने वाली औषधोंके बाद काम आती है।

जब लक्षणोंके अनुसार, सावधानीसे चुनी हुई दवा पूरा काम न दे सकी हो, तो फिर सल्फर, सोराईनम, और ट्यूबरक्यूलीनम आदि औषधोंके साथ, कल्केरिया सल्फका नम्बर भी आता है।

---

# फैरम फास्फोरिकम ( Ferrum Phosphoricum )

**पर्याय :** फैरोसी-फैरिक फॉस्फेट , फैरी फॉस्फास।

**साधारण नाम :** फास्फेट आव आयरन।

**रासायनिक तत्त्व :** फार्मूला Fe 3 ( PO 4 ) 2

सोडियम फॉस्फेट और सल्फेट आव आयरनको एक विशेष अनुपातसे मिलाकर यह दवा तैयार की जाती है। पेंदीमें जमे हुए पदार्थको फिल्टर किया जाता है, धोया, और फिर, सुखाया जाता है। फिर पीसकर पावडर बनाया जाता है , हवा लगकर इस चूर्णकी रंगत नीली-सी सफेद हो जाती है। यह सुगंधित और स्वादहीन होता है। यह ऐसिडोंमें घुल जाता है, परन्तु अलकोहल या पानीमें नहीं घुलता। सम्भवतः यही वह फॉस्फोरस है जो नीला पड़ जाता है ; जबकि फेफड़ोंकी टीबीके रोगीको खासीमें नीलेसे रंगकी पीव आती हो।

**तैयारी :** शुद्ध फॉस्फेट ऑव आयरन को पीसकर चूर्ण बनाया जाता है जैसाकि होम्योपैथिक फार्माकोपियामें लिखा हुआ है।

**शारीरिक-रासानिक क्रिया :** जितना लोहा रक्त-कणोंको लाली देने वाले पदार्थ—रञ्जक पित्त, होमोग्लोबिनमें-पाया जाता है—उतना शरीरके किसी और भागमें नहीं पाया जाता। जिस व्यक्तिके शरीरका भार ६५ किलोग्राम ( १६५ पौण्ड) हो, उसके सारे रक्तमें आयरनकी २ ८२ ग्राम (४४ ग्रेन) मात्रा पायी जाती है। प्रत्येक कोषके जीवनका आधार अलब्यूमन है। चूंकि अलब्यूमनमें भी आयरन है , अतएव प्रत्येक कोषमें लोहा होना ही चाहिए। लोहे और उसके लवणोंमें यह विशेषता है कि वे प्राणवायु (ओषजन) को अपनी ओर खींचते हैं। रक्तकणोंको जो लोहा मिलता है वह प्राण वायुसे मिलता है। लोहे और काली सल्फ की पारस्परिक प्रतिक्रियाके फलस्वरूप, यह शरीरके प्रत्येक कोष तक पहुँचता है। जब शरीरमें लोहेके परमाणुओंका सन्तुलन

विगड जाता है, तो फिर, पेशियोके तन्तु ढीले पड जाते हैं। शिराओंके पर्दोंमें यह परिवर्त्तन आता है, और परिणामस्वरूप शिरायें फैल जाती हैं, और उनमें रक्त सञ्चित हो जाता है। खूनका दवाव वढ जाता है, शिराओंकी दीवारें फट जाती हैं, और परिणामस्वरुप, रक्त वहने लगता है।

यदि अन्तड़ियोके ऊपर स्थित वालो जैसे गुच्छेकी पेशी-दीवारोमें, लोहेके परमाणुओंका सन्तुलन विगडनेसे शिथिलता आ जाए, तो फिर, पतले पाखाने आने लगते हैं। और जव यही विकार अन्तडियोमें आ जाता है, तो फिर, अन्तड़ियोंकी विपरीत क्रिया दुर्वल हो जाती है, और उनकी क्रियाशीलता घट जाती है। तव क्ब्ज आता है।

जव किसी कारणसे शिराकी पेशी-दीवारोमें शिथिलता आयी हो, और, उसके परिणामस्वरूप वहाँ रक्त अधिक सञ्चित हो गया हो, जैसाकि चोट लगनेसे हुआ करता है, तो **फैरम फास** ही औषध है। इसकी सूक्ष्म मात्राएँ लौह-कणोके सन्तुलनको वहाल कर देंगी, और इस तरह, पेशी तन्तुओंको वल पहुँचाएँगी। प्राणवायुको आकर्षित करनेकी विशेपताके कारण ही खूनकी कमी, हरे पाण्डु, और, श्वेत कुष्ट (फुलवहरी) आदिमें यह औषध हितकर है।

**साधारण वायोकेमिक क्रिया:** ऊपर जो कुछ वताया गया है उससे यह स्पष्ट हो जाता है जव पेशियोके तन्तु ढीले पड जाते है, तो उसके परिणामस्वरूप आए रोगोंमें **फैरम फास** लाभदायक है। रक्त कणोंकी असाधारण स्थितियोंके लिए भी हितकर है।

यदि शिथिलता प्राप्त पेशीकी यह स्थिति, कोषोंमें लोहेकी कमीके कारण आयी हो, और यदि उन्हें नए लौह कण मिल जाएँ, तो, उनकी स्वाभाविक शक्ति वहाल हो जाती है। तव शिराओके वेलनाकार तन्तु सुकड कर स्वाभाविक स्थितिमें आ जाते है। तव रक्त सञ्चार वहाल हो जाता है, और, ज्वर चला जाता है।

तव इसका कार्यक्षेत्र वे वीमारियाँ हैं: जो किसी अगमें रक्तके अधिक सञ्चित हो जानेसे आई हों, और, उनके साथ, उनके साधारण उपसर्ग जैसे गरमी, सूजन, लाली, नाडीकी चाल का तेज हो जाना, और रक्त सञ्चारका वढ जाना भी आया हो। सक्षेप में: **ज्वर और प्रदाहकी प्रारभिक हालतें जवकि वहाँ रस या पीव आदि न आए हों।** खूनकी कमी। लाल खूनका अभाव, उन वच्चोंकी दुर्वलता को दूर करनेके लिए विशेष रूपसे हितकर है जिनकी भूख घट रही हो, वुद्धि मन्द हो रही हो, और, जो निस्तेज होते जा रहे हों, जिनकी शक्ति, और भार घट रहा हो। **फैरम फास** न केवल

उनकी शक्ति वहाल कर देगा, वरन उनके शारीरिक विकास, और, अन्तडियो की क्रियाको भी नियमित बना देगा।

डा० शुसलरका कहना है कि जब रस या पीब आ गई हो, तो, यह औषध काम नहीं देती। परन्तु यदि इसके लक्षण हों, तो फिर, इसपर भरोसा किया जा सकता है। जब यह कोई वर्णनीय लाभ न करे, तो फिर इसे छोड देना चाहिए।

यह औषध, वहुतसे प्रदाह वाले ज्वरोंमें, और, उन ज्वरोंमें जिनमें दाने निकलते हैं, विशेषतः नौजवानों और कोमल प्रकृति वालोंमें **एकोनाईट** और **बेलके** दरम्यान है। इनमें **जेल्सीमियम** जैसी मन्दता पायी जाती है।

आयरन ( लोहा ) निम्न अवस्थाओंमें वायोकेमिक औषध है :

१। हर प्रकारके प्रदाहकी प्रथम अवस्था।

२। ऐसे दर्द जो हरकत करनेसे वढ़ते हैं, और, सर्दीमे घटते है।

३। रक्तस्राव जो रक्त सचित होनेका परिणाम हों।

४। ताजा घाव जो यान्त्रिक हो।

## चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** साधारण वातोंकी ओरसे उदासीन, उत्साहहीन, निराश, सोनेके वाद राहत आती है। दिमागमें रक्त सचित हो जाता है, और, उसके कारण प्रलाप आता है; उन्मादके रोगी जैसा स्वभाव वन जाता है और, क्षणिक उन्माद आता है। मदात्यय ( शरावियोंकी वकवास ); वेहद वाचाल; रक्ताधिक्य या क्रोधके कारण सर चकराये। सही शब्दोंका उच्चारण न कर सके, या, मनके भावोंको ठीक तरहसे प्रकट न कर सके।

**सर और खोपड़ीकी त्वचा :** सरकी ओर रक्तका सचार वढ जाता है। संधिवातकी प्रवणताके कारण सरदर्द आए (**सेटरम सल्फ**), चन्दियापर मन्दा-मन्दा, भारी दर्द; विशेपत. अतिरजके समय, या सर्दी लगने से। सरदर्द, जैसे-सर कुचला गया है, दवाव पड रहा है, या सूइया गड रही हैं; **छूनेसे सन्तापपूर्ण कष्ट हो।** सरदर्द ऐसा वोध हो जैसे सरके एक पहलूमें आँखके ऊपर कील ठोंकी जा रही है। आँखके ऊपर सरदर्द जो सरमें रक्त अधिक सचित होनेसे आए। ऐसा प्रतीत हो जैसे सरपर हथौडे पर रहे हैं, दायी ओर दर्दका ज़ोर अधिक हो। पीडित स्थानपर कोई ठण्डी चीज रखनेसे आराम मिलता है। नकसीर आनेसे सरदर्द घट जाता है। सर दर्द जिसके साथ अनपचकी के हो, चन्दिया ठण्डी हवा, आवाज और झटका आदि सहन न कर सके। वालोंका छूआ जाना सहन न हो, सरका मन्दा-मन्दा दर्द जो

चन्दियासे दायी आँखके ऊपरवाले छप्पर तक आए। गर्मी ( लू ) लगनेके दुष्परिणाम ( **कल्केरिया फास**के साथ बदल कर दें ); यह बच्चोंके सरदर्दके लिए मुख्य औषध है, सरमें तपकनका अनुभूति, **चेहरा लाल**, आँखें फैली हुई। सरको हिलानेसे, झुकनेसे, और हरकत करनेसे, सरदर्द बढ़ जाता है। सरदर्द जिसमें दिखायी देना बन्द हो जाए; पुराना सरदर्द जिसके साथ अनपच की कै हो, सर चकराये और सरकी ओर रक्तका संचार बढ़ जाए। दिमागके पर्दोंमें प्रदाह आनेके लक्षण; जबकि तन्द्रा, और भारीपन भी साथ हो। खोपड़ी की खालपर निकले दानोंका पहला दर्जा, खोपड़ीकी चमड़ीका सन्तापपूर्ण कष्ट, ठण्ढ और स्पर्श सहन न हो।

**आँखें :** फैली हुईं, सफेद पर्देमें रक्तका तरुण सचय, आँखोंका प्रदाह जिसके साथ दर्द भी हो, आँखोंसे कोई कीचड या पीव आदि न निकले। सफेद पर्देका तरुण प्रदाह, सफेद पर्देका प्रदाह जिसमें सफेद पर्दा शिथिल पड़ गया हो, और, चमक लगे ( चूंधियापन ), आँखके गोलेमें दर्द; जो आँखको घुमानेसे बढ़े। चक्षुपटल प्रदाह; **आँखें प्रदाहित, लाल, जलन हो, सन्तापपूर्ण कष्ट हो, और लाल दिखायी दें, अगले पर्देमें रक्त अधिक संचित हो जाए। ऐसा जान पड़े जैसे पपोटोंके भीतर रेतके कण पड़े हैं।** पपोटोंकी रसौलियाँ। दायी आँखके निचले पपोटेपर अजनहारी निकले। भीतरी गोले, और, नाकके साथ-साथ स्नायुशूल हो।

**कान :** आवाज़ सहन न हों; सर्दी लगने, या भीग जानेके बाद दर्द हो। प्रदाहपूर्ण कान दर्द, इसके साथ, जलन या तपकनके साथ दर्द; या सूई गड़ने जैसा तेज़ दर्द, कानोंमें तनाव, तपकन और गर्मी। खूनके दबावके कारण, या शिराओंकी शिथिलताके कारण जबकि वे रक्त वापस न ले जाती हों—कान गूंजें। **कर्णप्रदाहका पहला दर्जा।** एक केन्द्रसे चारों ओर फैलने वाले दर्द, कानोंमें तपकन, हृदयकी हर एक धड़कन कानोंमें सुनायी दे। नाड़ीकी चाल तेज, कमजोर होनी चाहिए, या दबने योग्य, नाड़ीकी चाल अधिक दुर्बलताका बोध कराये। छेद लाल, ढोलमें रक्त अधिक सचित हो जाए। श्लैष्मिक झिल्लियोंमें रक्तका अधिक सचय। चेहरेपर गोल, गहरे रंगके दाग। प्रदाह या पीव आनेके कारण बहरापन, जबकि कटनके साथ दर्द हो, तनाव और तपकन हो। कान गूंजें ( कर्णनाद )। प्रदाह आनेका झुकाव जो गोलाकार होनेकी बजाए, फैलने वाला हो। पीड़ित अगकी रंगत गहरी, गो-मांस जैसी लाल, कफ पीव-जैसा, और इसके साथ रक्त स्रावका झुकाव, स्राव शुरू हो जानेपर दर्दमें जब पूरी तरह आराम आया हो। दर्द दौरोंके रूपमें आए या, एक केन्द्रसे चारों ओर फैले। कानके बाहरी भागकी सूजन, स्तनाकार

प्रवर्द्धन फूला हुआ, और, कष्टमय ; पुराना कर्णस्राव जबकि पीव न हो, इसके साथ कानके ढोलकी झिल्लीका मोटा पड जाना, और सम्भवत. छोटी हड्डियोंके जोड़ोंकी अकडन।

**नाक :** सर्दी-जुकामका पहला दर्जा : सर्दी-जुकाम होनेका झुकाव। दाएँ नथनेमें सहसा डंक लगने जैसा दर्द ; विशेषत. सांस लेने पर। नजला ; ऐसा बोध हो जैसे बूँद-बूँद टपक रही है। खून मिला स्राव आए। खुरण्ड (चूहे) जमे ; चरपरा स्राव ; नाककी श्लैष्मिक झिल्लियोंमें रक्त अधिक सञ्चित हो जाए। नजलेका बुखार ; **नकसीर आए** विशेषतः बच्चोंको, इसके साथ अन्य औपसर्गिक उपद्रव भी आएँ ; नकसीरमें चमकदार लाल खून गिरे।

डा० आर० एस० कोपलैण्डने लिखा है—"हर प्रकारके सर्दी-जुकाममें, या श्लैष्मिक झिल्लियोंमें रक्त अधिक सञ्चित हो जानेमें इसके, और **एकोनाईट**के प्रारम्भिक लक्षण समान हैं। परन्तु यह औषध **एकोनाईट**के मुकाबले, अधिक देर तक उपयोगी काम कर सकती है। मेरा अनुभव यह है कि यदि सर्दी लगनेके तत्काल बाद ही **एकोनाईट** दे दिया जाए, तो ठीक है ;—अन्यथा बेकार है। परन्तु **फैरम फास** कई घण्टे बाद देनेसे भी सुन्दर कार्य कर सकता है।"

**चेहरा : चमकदार लाल :** परन्तु **बलाडोना**की अपेक्षा वातनाडियोंका तनाव कम होता है। तपकन के साथ सरदर्द हो, और, सारे सर और चेहरेपर पसीना आए। चेहरेका दर्द ; इसके साथ चेहरेकी तमतमाहट गर्मी, और, नाडीकी चाल तेज ; हरकत करनेसे कष्ट बढ़े ; तपकन, या दबावके साथ दर्द, चेहरा लाल, और इसके साथ गर्दनके पिछले भाग (गुद्दी) पर ठण्डक की अनुभूति ; जब भी सर दर्द आए, चेहरा लाल हो जाता है। खूनकी कमी वाला चेहरा ; मटयाला, पीला, मैला। आँखोंके नीचे गहरे रंगके घेरे। गालें दुखें, और, गरम ; ठण्डक पहुँचानेसे आराम मिले। चेहरेका शूल जो रक्त सञ्चित हो जाने, या प्रदाहके कारण आए।

**मुँह :** मसूढ़े गर्म और प्रदाहित, मुँहकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ लाल।

**जीभ :** मैलकी तह आए ; या साफ और लाल, इसके साथ, सर दर्द। जीभका प्रदाह, जीभ फूली हुई, रंगत गहरी लाल।

**दाँत :** दाँत दर्द और उसके साथ गाल गर्म, गर्मीसे कष्ट बढ़े, ठण्डे पेय या खाद्यसे घटे। दाँत निकलनेके दिनोंकी तकलीफ जबकि ज्वर भी आता हो। छूने या दबानेसे दाँतोंमें भारी कष्ट हो। ऐसा बोध हो जैसे दाँत बडे लम्बे हो गये हैं। जबडे बन्द करे तो दर्द आए।

**गला :** मुखगह्वरका प्रदाह ; रस या पीव आदि विजातीय द्रव्य आये

बिना ही लाली आ जाए, और, दर्द हो। **घावयुक्त गला** यह औषध वहाँ आए अधिक रक्त, गर्मी, ज्वर, दर्द और तपकनको कम कर देता है। **गलक्षत ; गला सूखा, लाल, प्रदाहित , और इनके साथ दर्द अधिक हो।** गलकोषके घाव , टॉंसिल लाल, प्रदाहित ; ग्रन्थियाँ फूली हुई । **डिफ्थेरियाका पहला दर्जा** , यह दवा ज्वर घटानेके लिए काम आती है। कानकी नालीका तरुण नजला । गानेवालों और वक्ताओंका गलक्षत ; निचले जबड़ेकी ग्रन्थियाँ बढ़ जाती हैं ।

**आमाशय :** माम और दूधसे अरुचि ; ठण्डे पानीके लिए प्यास ; ब्राण्डी और एल नामी शराब जैसी उत्तेजक चीजोंके लिए इच्छा करे । चर्बी जैसे डकार आए। आमाशय प्रदाह का पहला दर्जा, जिसके साथ दर्द और सूजन हो, तथा आमाशयका सूक्ष्मग्राहिता । मन्दाग्नि , इसके साथ चेहरा लाल, गर्म, पेटका ऊपरी भाग स्पर्शकातर, जीभ गन्दी , तपकनके साथ दर्द चेहरा लाल, और गर्म ; **अनपचका कै** ; अजीर्ण जो आमाशयकी शिरायें ढीली पड़ जानेसे आया हो। खाना खानेके बाद, और, पेटको दबानेसे दर्द हो । आमाशयमें सन्तापपूर्ण कष्ट , **आमाशयकी प्रदाहात्मक वेदना,** जैसाकि बच्चोंको सर्दी लग जानेसे हो जाया करता है, इसके साथ पतले दस्त आए। **चमकदार, लाल रंगके खूनकी कै।** अफरा ; खाये-पियेके डकार आए, भूख मिट जाती है, दूध स्वाद नहीं लगता। खानेके बाद मतली, और खाये-पियेका कै हो जाए। कै में जो मवाद निकलता है, वह प्रायः बहुत खट्टा होता है। अम्ल चीजें, मिर्च, माम, काफी और रोटी न खा सके। खाये पियेका कै होती रहे। जलपानसे कुछ देर पहले कै कर दे ।

**पेट ( उदरगह्वर ) और पाखाना :** आमाशय, और, अन्तड़ियों सम्बन्धी सभी ज्वरोंका पहला दर्जा। शीतावस्था ; हैजे और अन्तड़ियोंकी झिल्लीके प्रदाहका पहला दर्जा। कब्ज , इसके साथ अन्तड़ियोंके निम्न भागोंमें लगे, काच निकले , खूनी बवासीर, और, माम, खानेसे अरुचि। अतिसार, गर्मीके मौसमका बालातिसार ; चेहरा लाल हो, नाड़ी पूरी, भरी हुई और नर्म हो, पाखाने पानी-जैसे पतले, खून मिले ; पसीना दब जानेके बाद यह उपद्रव आए। पाखाना पानी-जैसा पतला, आम और खून मिला हुआ हो , वेग बढ़ता है, परन्तु ऐंठन नहीं आती। अतिसार जो अन्तड़ियोंके ऊपर वाले जैसे गुच्छेकी शिथिलताके कारण आए। उस पाखानेमें नमीकी साधारण मात्राका अभाव रहे। **अनपचके दस्त** , अतिसार जो सर्दी लगने से आया हो। पेचिशः **कोली म्योरके** साथ अदल बदलकर दें। खूनी बवासीर ; चाहे प्रदाहित हो, या, रक्त आता हो। चमकदार, लाल रंग गिरे और, उसमें, जमनेका झुकाव, यह

दवा उस समय काम देती है जब अभी किसी प्रकारकी सख्ती न आयी हो। काच निकलनेका झुकाव, प्रदाहित और उलझी हुई हर्निया; अन्तड़ियोंके कृमि। लम्बे कृमि।

**मूत्रप्रणाली :** पेशाबका बार-बार वेग हो; जब भी खाँसी आए, पेशाब निकल जाता है। पेशाबमें खून आए। मूत्राशय प्रदाहका पहला दर्जा। जब गर्मी, दर्द, और, ज्वर भी हो। मधुमेह; जब नाडीकी चाल तेज हो, या जब दर्द तनाव, तपकन, या, गर्मी, या शरीरके किसी भागमें रक्त अधिक सचित हो गया हो। **संकोचके पेशियोंकी निर्बलताके कारण पेशाब अपने-आप निकल जाए।** इच्छाके बगैर ही पेशाब हर समय निकल आता है, और यह विकार मसानेकी गर्दनके क्षोभके कारण आए। पेशाबका रुक जाना, इसके साथ गर्मी लगे, विशेषतः बच्चोंमें। गुर्दोंका कोई दर्द जो प्रदाह के कारण आए। पेशाबमें अलब्युमन आए और ज्वर। मसानेकी गर्दन और प्रोस्टेटका क्षोभ। रोगी जबतक खड़ा रहे, कष्ट बढ़ता रहता है, और, पेशाब करनेके बाद घट जाता बहुमूत्र; पेशाब मात्रामें अधिक आए।

**कामांग :** अण्डकोषकी रगें फूलकर गाठ बन जाती है, इसके साथ, अण्डोंमें दर्द हो। बाघी जिसके साथ गर्मी, तपकन और ज्वर हो। अण्ड-प्रदाह या अण्डउपत्वक प्रदाह ( Epididymitis ) या सुज़ाक। वीर्यस्राव; गर्भाशयके क्षोभसे **फैरम फास**का सामीप्य है, जबकि रोगका केन्द्र मसाना हो, या गर्भाशयकी झिल्लियोंमें विकार आया हो।

कष्टरज और चेहरा लाल, नाडी तेज, अनपच खाद्यकी कै, जिसका स्वाद कभी-कभी अम्ल हो। जरायु प्रदाहका प्रारम्भिक दर्जा, यह औषध ज्वर, दर्द और गर्मीको घटाती है। मासिकके दिनोंमें रक्तका अधिक संचित हो जाना; रक्त चमकदार, लाल। हर तीसरे सप्ताह ज्वर आ जाए। अतिरज, इसके साथ पेट, और, पीठके निचले भाग और चन्दिया पर दर्द हो। नीचेके रुख दबावका बोध और डिम्बमें निरन्तर, मन्द-मन्द दर्द हो। कष्टरज, और पेशाबका बार-बार वेग हो। रक्ताधिक्यके कारण आया कष्टरज जिसमें रज आनेसे पहले, और, पहले दिन दर्द हो। योनि आक्षेप, योनिप्रदाह, योनि सूखी, गर्म, सगम या परीक्षाके समय दर्द हो। चेतनाकी अधिकता और खुश्कीके कारण योनिमें आक्षेप आए।

**गर्भकाल और प्रसव :** स्तनप्रदाहका पहला दर्जा, गर्भकालीन मतली; जो कुछ खाए, कै हो जाती है, कै के समय उसका स्वाद चाहे आए या न

आए। प्रसवोत्तर वेदना, यह दवा उस ज्वरको रोकता है जो स्तनपान करानेके दिनोंमें आता है।

**श्वास प्रणाली : श्वास प्रणालीके प्रदाहका पहला दर्जा।** नासिका प्रदाह; कण्ठनाली प्रदाह; श्वासपथ प्रदाह; ब्रांकाईटिस, नमोनिया, प्लूरिसी और पसलियों तथा छातीका दर्द (प्लूरो-नमोनिया) **छोटे बच्चोंका ब्राकाईटिस,** तेजीसे आनेवाला फेफडोका टीवी। कफ कम आए, खूनकी धारीवाला; छाती दुखे, जैसे कुचली गयी है। पसलियोमें सूई चुभने जैसे दर्दके लिए, यह मुख्य और प्रथम औषधि है, जबकि साँस लेनेमें कष्ट हो, खासी हो, जबतक खुलकर पसीना न आए, तबतक खासी आती रहती है। फेफडोमें खूनका अधिक संचित हो जाना, इसके साथ दुर्बलता, और, घुटन आये। चोट आने या गिर पडनेके बाद खून थूके, सास उथला और कष्टसे आए और तेज ज्वर। सासकी छोटी नालियोमें गर्मी, जलन और सन्तापपूर्ण कष्ट खासीमें बलग़म निकले। पुराने ब्राकाईटिसमें, जब कष्टमें नई तेजी आयी हो। थोडी-थोडी देर बाद, दर्द, और, गुदगुदाहटके साथ, या हवाकी नालीमें क्षोभ आनेसे, या, गुदगुदाहट होनेसे खासी आए। आक्षेपपूर्ण खांसी जिसमें पेशाब अपने-आप निकल जाए। कडी, सूखी खासी और फेफडोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट, खासी, जिससे छातीमें घडघडाहट हो, जो रातको बढे, क्रूप, ज्वरके लिए हितकर है। काली खासी जिसमें खाए-पिए की कै हो जाए, **स्वरलोप, स्वरभग।** गाने या बोलनेके बाद आवाज़ बिगड जाती है। कण्ठनालीमें सन्तापपूर्ण कष्ट, और क्षोभ आता है।

**रक्त-संचार :** हृत्प्रदाह, हृदयकी झिल्लियों, हृदयकी पेशियों और धमनियोंके प्रदाहका पहला दर्जा, धमनीका गूमड, यह औषध रक्तसंचारको बहालकर देती है, और, हृदयके अधिक काम करनेसे जो उलझन आयी हो, यह उसे दूर करती है। दिल या शिराओंका फैलाव, क्षुद्र शिराओंका फैलाव, और तिलके निशान। धडकन, नाडीकी चाल तेज़। शिराका फैलाव, शिराप्रदाह, लसिका ग्रन्थियोंका प्रदाह, पहला दर्जा। नाड़ी पूर्ण, गोल; मगर रस्से जैसी नहीं।

**कमर और हाथ-पाँव :** सर्दी से गर्दनमें अकडन आती है। कमर, जघाओ, और, गुर्दोमें दर्द आता है। घुटनों और टखनोमें गोली लगने जैसा दर्द। गठियावातका दर्द जो हरकत करनेसे बढे। गठियावातका दर्द जो केवल हरकतके समय आए, और, गर्मीसे घट जाए। **हड्डियोंके जोड़ोंका दर्द,** विशेषत. कधेका; दर्द छातीके ऊपरी भाग तक फैल जाए, एकके बाद दूसरा

जोड आक्रांत होता रहे। पेशीवात या गठियावातका दूसरा दर्जा। सर्दीसे आया लगडापन; अकडन। दायी कलाई और कंधेमें गठियावातका दर्द। हाथकी उंगलियोंका प्रदाह; नख व्रणका पहला दर्जा, कूल्हेकी वीमारियाँ, विशेषतः दर्दके लिए हितकर है। जबकि कोमल अंगोंमें तपकन, प्रदाह और, गर्मी आए; वँधनियों और कण्डराओंपर जोर पडा हो। हाथकी पीठकी मोटी रगोंमें चर-चरकी आवाज हो। पीठमें सख्ती आती है (**कलकेरिया सल्फ**); हाथ फूल जाते हैं, और उनमें वेदना हो। हथेलियाँ गर्म।

**स्नायुजाल :** शारीरिक क्लेश, सन्ताप; थकान, जैसे निढाल हो जाएगा, बालकोंकी दुर्वलता जबकि किसी अंगमें किसी प्रकारका विकार न हो। आलस्यकी अनुभूति। कोई उत्तेजक वस्तु चाहे; गठियावातका लकवा, रातको घवराहट हो, जिन वच्चोंके दाँत निकल रहे हैं, उन्हें भयके कारण कमेडा आ जाए; मृगी, मरकी ओर रक्तका अधिक सञ्चार हो; स्नायुशूल जो सर्दीके कारण, रक्ताधिक्य आने, या प्रदाह आनेसे हो।

**नींद :** दिमागमें रक्त अधिक सञ्चित हो जानेके कारण नींद न आए। रातको व्याकुल रहे। व्यग्रतापूर्ण स्वप्न आएँ। दोपहरके वाद ऊंघ आए।

**ज्वर :** नज़ले-जुकाम और प्रदाहके कारण आए सभी तरहके ज्वर, जब वे अभी पहले दर्जे या शीतावस्थामें हों, गर्मी, नाडीकी चाल तेज, और दर्द भी हो। गठियावात, आमाशय या अन्तडियोंसे सम्बन्धित और टायफायड ज्वरकी शीतावस्था, रोग चाहे कोई हो, जब उसकी प्रारम्भिक अवस्था हो, गर्मी हो, ज्वर हो, और, नाडीकी चाल तेज हो, वारीके वुखार जिनमें खाये-पियेकी कै हो; आरक्त ज्वर-जिसमें किसी प्रकारकी पेचीदगी न हो, टायफायडका पहला दर्जा; हर रोज दोपहर वाद १ वजे सर्दी लगे। तेज ज्वर, नाडीकी चाल तेज, रातको पसीना अधिक आए, हथेलियों, चेहरे, गले और छातीमें सूखी गर्मी।

**त्वचा : रक्तका अधिक सञ्चय हो जाना**, किसी यान्त्रिक चोटके कारण आये ताजे घाव, जिनमें अभी पीव न आयी हो। क्षुद्र शिराओंमें रक्तका सञ्चित हो जाना, जिसके साथ त्वचामें जलन अधिक हो, और, गर्मी लगे। नासूर, फोडे, कारवकल, **नखव्रण**, इन सवकी आरम्भिक अवस्थामें, यह औषध गर्मी, वहाँ संचित हुए रक्त, दर्द और तपकनको घटा देती है। शीतला, **विसर्प**, त्वचाके विसर्प जैसे प्रदाह, ऐसी हालतमें यह दवा ज्वर और दर्दको कम करती है। चेचक, **आरक्त ज्वर**, छोटी चेचक; फुन्सियाँ,

कील, दर्द, गर्मी, और अधिक रक्तको कम करती है। घाव जिनके साथ ज्वर भी हो। तिल।

**तन्तु : खूनकी कमी, खून कमजोर** लाल खूनका अभाव; श्वेतकण असाधारण रूपसे बढ़ जाते हैं। **रक्तको किसी एक अंगमें अधिक सञ्चित हो जाना,** जबकि यह विकार शिराओंकी पेशियोंके तन्तुओंको शिथिलताके कारण आया हो। **प्रदाह जब कि अभी रस या पीव आदि न आयी हो**, रक्तस्राव, चाहे शरीरके किसी अंगसे हो, बस शर्त यही है कि रक्तकी रंगत चमकदार, लाल, और उसमें बड़ी तेजीसे जमनेका झुकाव हो; **नकसीर आए**, विशेषतः बच्चोंको। चोट-चपेट, ठोकर लगना, लाठी लगना, सर पर कुछ गिर जाना या कटाव आना; प्रदाहके लक्षणोंके लिए। हड्डीकी बीमारियाँ जबकि नर्म भाग लाल, प्रदाहित, और वेदनापूर्ण हो। रक्त अधिक निकल जानेके बाद आया शोथ। नौजवानोंकी शिराओंका फैल जाना, हड्डी टूटना विशेषतः। नर्म जगहसे। हड्डीके प्रदाहका पहला दर्जा। मोच आनेमें ऊपर लगाने और, खिलानेके, काम आती है। ग्रन्थियोंके घाव; नर्म अंगोंके घाव जबकि प्रदाहके लक्षण हों। सच्चे हरे पाण्डुमें **कलकेरिया फास**के बाद काम आती है।

**ह्रास वृद्धि :** इस दवाके सभी दर्द हरकतसे, जोशसे, और, गर्मीसे बढ़ते हैं, ठण्डक और चहल कदमीसे घटते हैं। बूढ़ोंमें शानदार काम करती है।

**होम्योपैथिक तथ्य :** डा० जे० सी० मार्गनने १८७६ में इस औषधके परीक्षण किये थे। इसके लक्षण **ऐलेनके इनसाईक्लोपीडिया** खण्ड दस और **साइक्लोपीडिया आव ड्रग पेथोजेनिसिस**के खण्ड २ में दिये गए हैं। इसके व्यापक व्यवहारका प्रचार डा० शुसलर ने किया। आजतक इस औषधके जितने परीक्षण हुए हैं, उनके आधार पर, रोगीकी चिकित्साके लिए, काफी मसाला नही मिला, जो कुछ इस्तेमाल होता है—वह केवल डा० शुसलरके बताए लक्षणोंके आधारपर ही होता है। इन लक्षणोंकी आजतक जो परीक्षा हुई है—उसका समर्थन हुआ है।

**व्यवहार :** डा० शुसलरने ६ X से १२ X तकके विचूर्णों, या डाईलूशनो के व्यवहारकी सिफारिश की है; हालांकि अनीमियामें १ X या २X जैसी अधिक निम्न शक्तियोंका व्यवहार भी होता है। विश्वस्त समीक्षकोंका मत है कि रातके समय १२ X से कम शक्तिका व्यवहार नही कराना चाहिए, अन्यथा अनिद्रा आ जाती है। मोच, घाव, रक्तस्राव, और खूनी बवासीर जैसी बीमारियों में डा० शुसलरने बाहरी व्यवहारकी भी सिफारिश की है। नज़ले, गर्मीके

मौसमकी शिकायतों और मुजाकमें २०० से भी लाभ हुआ बताया जाता है। डा० मार्गनने अपने शरीर पर औषधके परीक्षण किए। उन्होंने आरक्त ज्वरमें ३० शक्ति, पानीमें मिलाकर ली।

**सम्बन्ध :** प्रदाहकी अवस्थाओंमें जब पीव न आयी हो तो यह **एकोनाईट** के समीपतम है। **एलेंथस**में सजीव लौहका भारी अंश पाया जाता है, वहाँ सास और हाज्मेकी खराबियोंमें इसके तुल्य है। यह औषध **एकोनाईट** और **जेल्स**के मध्यमें है। मिलते-जुलते लक्षणोंमें **एकोनाईट**के व्यवहारके सिलसिले में, डा० शुसलरने लिखा है :—

"प्रदाहकी पहली अवस्था अर्थात् क्षोभ और किसी जगह रक्तके अधिक सञ्चित हो जानेमें, वानस्पतिक औषध **एकोनाईट**का व्यवहार अप्रत्यक्ष रूपसे बायोकेमिक है। **एकोनाईट** कैसे सुधार लाता है, इसके सम्बन्धमें दो **सम्भावनाएं** ध्यानमें आती हैं। या तो, **एकोनाईट**के परमाणु, पीडित स्थान पर पहुँचकर, अस्थायी रूपसे लोहेके उन कणोंकी जगह ले लेते हैं, जिन्होंने अपना काम करना छोड दिया है—परन्तु यह कार्य केवल उस समय तक ही होता है जबतक कि रक्त-संचारमें सुधार रहे, या **एकोनाईट** कण, तत्काल ही, पीडित अंगको लौह-कण सप्लाई कर देते हैं और जैसे ही पीडित अंगकी स्वाभाविक गतिविधि बहाल हो जाती है, वे, विजातीय द्रव्यके रूपमें, शरीरसे निकल जाते हैं। यही हाल सम्भवतः **एकोनाईट**के उन कणोंका भी होता है, जिन्होंने स्थानापन्नके रूपमें काम किया था। इन दोनों प्रकार की सम्भावनाओंका अप्रत्यक्ष आधार बायोकेमिस्ट्री है। परन्तु क्षोभ और रक्तके अधिक सञ्चयको **फैरम फास** द्वारा दूर करना **प्रत्यक्ष** बायोकेमिक तरीका है।"
—Walker's Edition of Schussler's Diphtheria.

**एकोनाईट**का विशेष लक्षण-यह है कि उसमें नाडी उछल कर चलती है; जैसे बधी हुई थी; व्याकुलता और व्यग्रता भी उसके विचित्र लक्षण हैं।

**जेल्सी**में नाडी अधिक नर्म और बहती हुई-सी चलती है, उसमें तन्द्रा और शिथिलता अधिक पायी जाती है।

खूनकी कमीकी हालतोंमें **चाईना**से तुलना करें। इन दोनोंके बहुत-से लक्षण मिलते-जुलते हैं। दिलचस्पीकी बात यह है कि जिस वृक्षसे **चाईना** प्राप्त किया जाता है, वह सदा ही ऐसी भूमिमें उगता है, जिसमें लौहांश अधिक हो।

जहाँ तक सासके अंगों पर इस दवाके असरका सम्बन्ध है वह **लोहे** और **फास्फोरस**के दरम्यान है। **फैरम**की तरह, यह औषधि भी उस समय काम

आती हैं जब श्वास प्रणालीमें रक्त अधिक मलिन हो गया हो, और जब बुखार भी काफी हो। इस बातपर विशेष रूपसे ध्यान दें कि घुटन और सासकी तेजी—दोनों ही **फेरम**, और **फास्फोरस**में मुख्य रूपसे पाए जाते हैं—और इन दोनोंके इस सम्मिश्रणमें भी पाए जाते हैं, और, यह इसके व्यवहारके लिए विश्वस्त लक्षण है। मोटे तौर पर यों कहा जा सकता है कि **फास्फोरस**के घुटन जैसे लक्षणोंकी चिकित्सा करनेके लिए, इस औषध का व्यवहार हो सकता है। ऐलनकी **हैण्डबुक**।

**फेरम फास** बहुत-सी बातोंमें **बाईओनिया**से मिलता-जुलता है; विशेषतः मध्य कानके तरुण प्रदाहमें **बेल, अर्निका हीपर, मर्क** आदि। बच्चोंकी क्षीणता और शक्तिके ह्रासमें यह दवा उस हालतमें, काम करती है जबकि शरीरका मास कड़ा हो, त्वचाकी रंगत नरम, बालोंकी रंगत हल्की हो, और वे घुंघराले हों, और जब इसके विपरीत, चेहरेकी रंगत गहरी हो, पेशियां ढीली-ढाली हों, बाल लम्बे और कमजोर हों, तथा त्वचा नमदार हो, तो फिर, **सलफर** काम देगा।

वृद्धोंके गठियावातमें जब पेशियां कड़ी और निर्बल पड़ गयी हों, वेदना पूर्ण एंठन आनेका झुकाव हो, तो फिर, **स्ट्रिकनिनम** और **फास्फोरस**से तुलना करें।

केलेफोर्नियाकी ज्वालामुखीवाली भूमिमें जो अंगूर पैदा होते हैं, उनसे, बनी शराब खूनकी कमीको दूर करनेके लिए बहुत उपयोगी है, क्योंकि उसमें लोहेका भारी अंश पाया जाता है। और यह लोहांश, उस भूमिसे मिलता है जिसमें वह अंगूर पैदा होता है। **फैरम फास**के बाद आमतौर पर **काली म्योर**के लक्षण आते हैं। विशेषतः डिफ्थेरिया, नमोनिया, और क्रूप आदिमें। प्रायः **काली सल्फ** भी काम आता है।

हरे पाण्डुमें यह दवा **कल्केरिया फास**के बाद, या उससे पहले काम आती है।

खूनी बवासीरमें **कल्केरिया फ्लोर**।
मधुमेहमें **नेटरम सल्फ**।
ब्राको-नमोनियामें **टारटर इमेटिक**।
कानकी बीमारियोंमें, नजलेके कारण आए बहरापनमें—**केलेण्डूला**, और, **हाईड्रास्टिस**, और सरदर्दोंमें **नेटरम फास** प्रायः इसके बाद अच्छा काम करता है।

---

# काली म्योरियाटिकम ( Kali Muriaticum )

**पर्याय :** पोटासियम क्लोरायड : काली क्लोरेटम , काली क्लोराइडम , पोटानिआई क्लोराइडम ।

**साधारण नाम :** क्लोराइड ऑव पोटास , या क्लोराइड ऑव पोटासियम ।

नोट :—इस औषध और कला **कालि क्लोरिकम**के बारेमें कोई भूल या भ्रम नहीं होना चाहिए , क्योंकि उसके पर्याप्त नाम मिलते-जुलते हैं , जैसे पोटासियम क्लोरेट, पोटासियम क्लोराम और पोटासि क्लोरास , साधारण नाम है क्लोरेट ऑव पोटास । उसका फार्मूला है : KClO इसकी तसदीक हो चुकी है , **'गाईडिंग सिम्पटम्स'** के लेखकोने, इस औषधको, बहुत बडी हद तक, डा० शुसलरके **काली म्योर**से मिलते-जुलते पाया , और अपनी पुस्तकमें उसे स्थान दिया , देखिये **"गाईडिंग सिम्पटम्स, खण्ड है ।"**

**रासायनिक तत्त्व :** फार्मूला KCl यह लवण, कोर्नेलाइट नामी खनिजमें, कुदरती तौर पर, पाया जाता है । हाइडरोक्लोरिक ऐसिडको शुद्ध पोटासियम कार्बोनेट, या हाईडरेटमें मिलाकर तैयार किया जा सकता है । इसके कण प्राय. ठोस, और, आठ पहलू वाले होते हैं । उनका कोई रंग नही होता, या फिर सफेद होते हैं । साधारण तौरपर पिघल जाते हैं, ऊंचे तापमान पर, विलगाव आये बिना ही उड जाते हैं । ३ भाग ठण्डा पानी और २ भाग उबलते पानीमें ये कण घुल जाते हैं । बलवान अलकोहलमें ये कण नही घुलते ।

**तैयारी :** होम्योपैथिक औषध निर्माण पद्धतिके अनुसार शुद्ध क्लोराईड को पीसकर विचूर्ण बनाया जाता है ।

**शारीरिक-रासायनिक तथ्य .** डा० शुसलरका मत है कि जमी हुई वसा से, इस लवणका विशेष रासायनिक सम्बन्ध है , जब इसके कणोंका स्वाभाविक सन्तुलन बिगडता है, तो वसामय रस, या पीब जैसा कोई निस्सरण आ जाता है । इस लवणके बिना, दिमागका कोई कोष बन नही सकता । यह लवण रक्त कणो, **पेशियों**, वातनाडियों, दिमागके कोषों, और, कोषोंके तरलमें पाया जाता है । शारीरिक रचनाकी दृष्टिसे, सोडियम क्लोराईडके साथ, इसका गहरा सम्बन्ध है । दोनोंके स्वाभाविक तत्त्वोंमें भारी समता है । अन्य निर्जीव लवणोकी अपेक्षा, अपने निकट सम्बन्धी सोडियम क्लोराईडको छोड कर, यह रक्तमें सबसे अधिक पाया जाता है । सम्बन्ध निम्नलिखित है .

**काली म्योर** ४ भाग १००० में, **नेटरम म्योर** ५॥ भाग १००० में ; यदि किसी क्षोभके कारण, ऊपरी चमड़ीमें **काली म्योर**के परमाणुओंकी कमी पड जाए, तो, वहाँसे सफेद रंगका वसामय रस आता है। सूख जानेपर वहा, सफेद रंगकी सूखी फुन्सी वनती हैं। यदि यह क्षोभ ऊपरी चमड़ीके नीचे स्थित तन्तुओ तक पहुँच जाए, तो फिर, जमी हुई वसा, और, रक्ताम्बु दोनों ही खारिज होने लगते हैं। तव त्वचाके पीडित या आक्रांत भागपर छाले वनते है। यही वह शारीरिक प्रक्रिया है जो छोटी चेचक, गौ चेचक और, वेक्सीनजनित रोगोंमें होती है। यही प्रक्रिया ऊपरी त्वचाके कोषोंमें भी हो सकती है। यदि **काली म्योर**के परमाणुओंका व्यवहार करानेसे, पीडित तन्तुकी एकरसता वहाल हो जाए, तो फिर, रस या पीव वहने लगती है। जो भी हो, यह परिणाम, सभवतः हाईडरोक्लोरिक एडिक पैदा होनेके परिणामस्वरूप आता है, और यह ऐसिड एच० सी० एल० HCl. के एक भाग क्लोरीन और प्राणवायुके सयोगसे वनता है। यह हाईडरोक्लोरिक ऐसिड उस वसामय तत्त्वको घुला देता है, और उसे फिर विकसित होनेका अवसर नहीं देता।

**साधारण क्रिया : काली म्योर** रक्ताम्बु झिल्लियोंके प्रदाहके दूसरे दर्जेके समान है, जवकि निस्सरण वसामय हो। यदि वसामय निस्सरणका शोषण हो जानेके वाद, श्वेत कण शेष रह जाएँ, तो **नेटरम फॉस** काम देता है। **काली म्योर** क्रूप या डिफ्थेरिया जैसे स्रावो (निस्सरणों) में काम आता है ; अतएव डिफ्थेरिया, पेचिश, क्रूप, क्रूपवाले नमोनिया, **सयोजक तन्तुओंमें वसामय स्राव आने**, लसिका ग्रन्थियोंके वढ जाने, गुप्त रूपसे आए प्रदाह, चमडीके दानों जैसी वीमारियोंमें हितकर है। साधारणतः मोटे लक्षण ये हैं : **जीभकी जड़पर सफेद या मैले-से सफेद रंगकी मैल जमती है, सफेद या मैले-से सफेद स्राव आते है, ग्रन्थिया फूल जाती हैं। खाँसीमे गाढी, सफेद, वसामय कफ आती है, अन्य श्लैष्मिक स्तरोंसे भी इसी प्रकारका स्राव आती है** ; त्वचासे आटे जैसी सिकडी झडती है। जिगरकी सुस्ती आदि।

कानके चिकित्सकोके हाथमें **काली म्योर** सर्वोत्तम और सिद्ध औषध। यह नज़लेके स्रावोंके दूसरे दर्जेमें हितकर है।

## चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** रोगी समझता है कि उसे भूखे रहना चाहिए।

**सर और खोपड़ीकी त्वचा :** सर दर्द, उसके साथ कै, खासकर दूध

जैसी सफेद बलगम थूके। पुराना रोज आने वाला सरदर्द जिसमें जबान पर सफेद मैल आए; या सफेद कफकी कै हो, जो जिगरकी सुस्तीके कारण आए। सरकी तर दाद जिसपर मोटा खुरण्ड आए, सिकड़ी झड़े।

**आँखें :** सफेद कीचड़ या स्राव आए, हरे, पीले रंगका, हरे-से रंगका; या गहरे पीले रंगका पीव-सा मवाद आए। पपोटोंके ऊपर मवाद के महीन-महीन बिन्दु आएँ, चौड़े-चौड़े, कम गहरे घाव जो छालेके कारण बने हो। कनीनिका पर छाले पड़ें। ऐसा जान पड़े जैसे आँखोंमें रेत पड़ा है। पुतलीका प्रदाह, मोतिया, जब **कल्केरिया फ्लोर** अपना काम कर चुका हो, ऐसे घाव जो बहुत मन्द गति से भरते हो, और लाली अधिक न हो; घावसे मैल सफेद रंगका, या गहरे पीले रंगका मवाद साधारण मात्रामें आए। कनीनिकाके पर्दोंमें पस आ जाती है। कुकरे; कनीनिका प्रदाह,- चक्षुताल प्रदाह जबकि रस या पीव आ गयी हो।

**कान : कानके मध्य भागका पुराना नजला**, कानके मध्य भाग या कानकी मध्य नालीकी सूजन, और, वहाँ रक्त अधिक सञ्चित होने के कारण आया बहरापन, या कान दर्द, या नाक साफ करते समय, या निगलते समय कड़कड़ाहटकी आवाज़ आए। गलेकी खराबियोंके कारण आया बहरापन जबकि जीभ भी सफेद हो। कानके बाहरी भागकी सूजनके कारण आया बहरापन, कानके ढोलकी झिल्लियोंके ऊपरी स्तर की नमदार खराश, बाहरी छेद और कानके ढोलकी झिल्लियों पर दाने बनना; दोनोंकी भरमार; मध्य कानका प्रदाह जो बढ़ता जाए, ऐसा बोध हो जैसे कान बन्द हो गया है। बहरापन; नाक और गलकोषमें कोई रुकावट आए, **कानकी मध्य नालीका बंद हो जाना**। डा० आर० एस० कोपलैण्डने लिखा है: "जब कानकी मध्य नालीको फैलाने वाला रबड-यन्त्र काम न दे सका, तो **काली म्योर**की कुछ खुराकें, उसे बड़ी आसानीसे फैला देती हैं।" कानके ढोलकी झिल्लियोंका सुकड़ाव; कानके बाहरी छेदकी दीवार सुकड़ी हुई; दाएँ कानकी मध्य नाली पर अधिक असर करता है। कानके आसपासकी ग्रन्थियाँ फूली हुई। **कान गूँजें (कर्णनाद); कानमें चटककी आवाज आती है।**

**नाक :** नज़ला, सफेद, गाढा स्राव गिरे। नाक बन्द, जीभ सफेद-सी मैली; सूखा जुकाम, गलकोषकी मेहराब पर बड़ी लेसदार पपड़ी आए। दोपहर बाद नकसीर चले (होलब्रुक)।

**चेहरा :** गालें फूली हुईं और वेदनापूर्ण। मसूढ़ा फूलनेके कारण चेहरेमें दर्द हो।

**मुँह :** छोटे बच्चो, या स्तनपान कराने वाली माँके मुँहमें भूरे या मैल-से सफेद रगके छाले पड़ें। मुँहके गलने-सडने वाले घाव, जिनसे तीक्ष्ण स्राव आए, और मुँह कच्चा हो जाए, जबड़ों और गर्दनकी ग्रन्थियाँ फूल जाएँ।

**जीभ :** सूजन आती है, मैल-से सफेद रंगकी सूखी या चिकनी मैलकी तह जमती है। जीभ पर आडी-तिरछी लकीरें बन जाती हैं, जैसे नकशा हो।

**दाँत :** मसूढ़ोंका फूलना जबकि अभी पीव न आयी हो। दाँत दर्द जबकि मसूढ़ों, और गालो पर सूजन हो।

**गला :** डिफ्थेरियाके अधिकाश रोगियोंके लिए एकमात्र औषध है। **फेरम फास**के साथ बदल कर दी जाती है। इसीके साथ गरारे करायें। कनपेड़, गलकोष प्रदाह, गलेमें मैले-से सफेद रंगके दाग पडते हैं, या पीव आ जाती है। ग्रन्थि प्रदाहको इसने अनेक बार कम किया है। दुर्गन्धित, पानी जैसे और छोटे-छोटे गोले खासकर थूके। निगले तो दर्द हो, आतशकके कारण आया गलक्षत, टॉसिल प्रदाहमें जैसे ही सूजन आए, तो दूसरे दर्जे की औषध है। टॉसिलों पर सूजन आती है, और, वे इतने बढ़ जाते हैं कि सास लेना मुश्किल हो जाता है। गलेमें सफेद, या भूरे रगके दाग पड़ें। सफेद रंगकी मैल आए। सन् १६०० के **होम्योपैथिक रिकार्डर**में इस औषधकी ६ शक्तिके परीक्षण प्रकाशित हुए थे। वहाँ इसने बहुत बुरा गलक्षत पैदा किया, पानी तक निगलनेसे दर्द आया, टॉसिल प्रदाहित हुए, गला कडी, रेशेदार बलगमसे भर जाता था। टखनेके जोड फूल गये थे। जिस व्यक्ति पर यह दवा आजमायी गई, वह इसके व्यवहारका आरम्भ करनेसे पहले बिलकुल तन्दुरुस्त था।

**आमाशय :** अरुचि, पित्त विकार, जबकि जीभकी रगत भूरी, या सफेद हो। मन्दाग्नि और अजीर्ण, जबकि जीभ सफेद-सी हो। चिकनायी खानेके बाद तबीयत बिगड जाए, और, दायी ओर कधेके नीचे दर्द और भारीपन आए। अजीर्ण जिसके साथ कै भी हो, और, कैमें सफेद, और अपारदर्शक कफ आए, मुँहमें लार भरे। आमाशय प्रदाह जो अधिक गर्म पेय पीनेसे आया हो। आमाशय शूल, कब्ज, और कै जिसमें गाढी सफेद बलग़म आए, या गहरे रगका, छिछडेदार और लेसदार कफ आए। मुँहका स्वाद कडवा और कब्ज, इन लक्षणोके साथ पीलिया (होलन्डक)।

**पेट और पाखाना :** पीलिया जो कि सर्दी लगनेसे आया हो, सर्दीके परिणामस्वरूप बारह उगल आतसे नजला गिरे, और, पाखानोंकी रंगत हल्की। जिगर शिथिल या पूर्णतः निष्क्रिय और दर्द हो, हल्के या गहरे

पीले रंगके पाखाने आए, या कब्ज हो, और, जीभपर मैल जमे। टायफायड, जिसमें पतले, या झागदार पाखाने आए। पेट कोमल और उसपर सूजन आए। टायफायड और कब्ज, छोटे-छोटे, सफेद कृमि जो मलद्वारमें खुजली पैदा करें ( **नेटरम फास** ); अफारा, पेटका फूल जाना आदि। अन्तड़ियों के पर्दोंकी सूजनका दूसरा दर्जा, अन्धी आनके आसपासकी सूजन, अधी आनका प्रदाह ( अंधी आंतकी सूजन शीर्षकके नीचे परीक्षण देखें ), कब्ज जिसमें हल्के रंगके पाखाने आए, जो इस बातका संकेत है कि पित्त दूषित है। जिगरकी सुस्ती, या जब यह रोग किसी और मौलिक कारणसे आया हो और, चिकनाईवाली चीजें हजम न होती हों। **अतिसार :** जो स्निग्ध पदार्थ खानेके बाद आए, या टायफायडके साथ आए; जब पाखाने पीले, मटमैले या नारंगी रंगके आएँ, पाखानेकी रंगत सफेद और चिकनी। **पेचिश**. जिसमें चिकने पाखाने आए। **खूनी बवासीर :** खूनकी रंगत गहरी, गाढी; चर्बी जैसा, छिछड़ेदार।

**मूत्रप्रणाली और कामाग :** मसानेका तरुण प्रदाह, जो दूसरे दर्जेमें पहुँच गया हो, जब सूजन आ गया हो और गाढा, सफेद मवाद आता हो। पुराने मूत्राशय प्रदाहमें भी मुख्य औषध है। गुर्दोका प्रदाह, गहरे रंगका पेशाब, जबकि यूरिक ऐसिड भी आता हो। सुजाक और अण्डप्रदाहमें मुख्य औषध है; जबकि तकलीफ सुज़ाक दब जानेसे आयी हो। बाघी जिसमें नई सूजन हो, और, सादा आतशकके लिए भी यह मुख्य औषध है (३X)। पुराना आतशक जिसमें निदान सम्बन्धी सभी लक्षण हों। पुराना सुजाक जिसके साथ एग्जिमा भी हो।

मासिक धर्म बहुत देरसे या बिलकुल ही न आए। बार-बार आए। ल्युकोरिया जिसमें दूध-से सफेद रंगका गाढा, कोमल स्राव आए। गर्भाशयकी गर्दन, और, मुँहकी सूजन, जबकि गाढा सफेद, कोमल स्राव आता हो। जरायुमें रक्त सञ्चित होनेकी पुरानी शिकायत, जरायुका फैल जाना, दूसरा दर्जा ( देखिए **कल्केरिया फ्लोर** )।

**गर्भकाल**. गर्भकालीन कै जिसमें सफेद बलगम निकले। प्रसूत ज्वरके लिए मुख्य औषध। स्तनप्रदाह, स्तनव्रण, यह औषध सूजनका नियन्त्रण करती है।

**श्वास-संस्थान :** स्वरलोप; स्वरभंग जो सर्दी लगनेसे आया हो, इसके साथ ज़बान सफेद, दमा जिसके साथ आमाशयकी खराबियाँ भी हों, बहुत खाँसनेसे जरा-सी कफ आए। साँसकी नालियोंका दमा, ब्राकाईटिसका दूसरा दर्जा, जब सफेद, गाढा बलगम निकलती हो। फेफड़ोंकी टीबीको

खासी जिसमें गाढी, सफेद, दूध-सी सफेद कफ आए। खांसते समय आवाज़ हो जिसमें गाढी और सफेद कफ आए। आखें बाहरको निकली नजर आएं, जीभ सफेद, क्रूप खाँसी जिसमें कफ न आए, और, कुत्तेके भौंकने जैसी आवाज़ आए। क्रूप खासीमें यह मुख्य औषध है। नमोनिया, दूसरा दर्जा; सफेद, लेसदार कफ आए। प्लुरिसी, दूसरा दर्जा, जिसमें चर्बी जैसी कफ आए और, पर्दामें चिपकाव, या सटाव आ चला हो, खर्राटेसे साम ले, सासकी नालीमें घडघडाहट हो, जबकि वहाँ गाढा लेसदार कफ जमी हुई हो, और उसे खास-करके थूका जा सके। सूखी खाँसी। बच्चा खासते समय गला पकड ले।

**रक्त संचार :** समावरोधन : अर्थात् शिराओमें रक्त-कण जमकर रक्त सचारमें बाधा उपस्थित कर देते हैं। खूनमें जमने-जमानेका झुकाव आ जाता है। ये जमे हुए कण डाटका काम करते हैं। दिलकी झिल्लियोंका प्रदाह; जब वसामय कफ आ गया हो, या उन झिल्लियोंमें चिपकाव आ गया हो। जब दिल फैल गया हो, तो दिलकी ओर अधिक रक्त आनेसे धडकन होने लगती है।

**कमर और हाथ-पाव :** गर्दनकी ग्रन्थिया फूल जाती हैं। गठिया-वातका ज्वर, जोडोंमें रस या पीव जैसी विजातीय चीजें आ जाती हैं, **या सूजन हो जाती है।** जोडोंकी संधियोंका नया गठियावात, जोडोके दर्द जबकि वे हरकत करनेसे बढते हों, और, जीभपर सफेद रगकी मैल आती हो। गठियावातका दर्द केवल हरकत करते समय आता है, या उस समय बढ जाता है (**फैरम फॉस**), गठियावातका दर्द जो रातको बिस्तरकी गर्मीसे बढ़े; कमरके निचले भागसे पैरों तक बिजली की-सी तेजीसे दर्द हो, बिस्तर छोड देना पडे, और बैठ जाना पडे। लिखते समय हाथोमें अकडन आ जाए। पुराना गठियावात और सूजन जबकि किसी तरहकी हरकतसे दर्द आ जाता हो। टागों और पैरोंकी पुरानी सूजन जो वेदनाहीन हो, और, उसमें असह्य खुजली चले। कूल्हेके जोडोंकी बीमारियोका दूसरा दर्जा हाथ-पावके घाव, जिनसे वसामय स्राव हो। पावके अगूठेकी सूजन। हाथकी पीठकी कण्डराओंमें चरचराहटकी आवाज़ हो। बवाइया।

**स्नायुजाल :** मृगीके लिए सिद्धौषध है। बशर्ते कि : जबकि यह रोग एग्जिमा या किसी और तरहकी फुन्सिया दब जानेके बाद आया हो कुछ समय तक निरन्तर खिलाते रहना चाहिए। मेरुदण्डका टीबी।

**नींद :** ज़रा-सी आवाजपर चौंक उठे। तन्द्रा, व्याकुल नींद।

**ज्वर :** रक्तका अधिक सचित हो जाना, **प्रदाहका दूसरा दर्जा चाहे वह शरीरके जिस अगमें आया हो।** आमाशय ज्वर, टायफायड ज्वरमें दूसरे दर्जे की औषध हैं। प्रसूत ज्वर के लिए मुख्य

~~औषध है~~; गठियावात ज्वरमें **फेरम फॉस**के साथ अदल-बदल कर दी जाती है। अधिकांश केसोंको ठीक कर सकी है। टायफायड ज्वरकी कब्ज। बारीके ज्वर जबकि इस औषधके अन्य मार्ग दर्शक लक्षण भी मौजूद हों। लाल ज्वरके लिए प्रतिशोधक है, अर्थात् इसे खानेसे यह ज्वर नहीं आता। नजले-जुकामका ज्वर, भारी सर्दी लगे, जरा-सी ठण्डी हवा शरीर के पार हो जाती है। सर्दीसे बचनेके लिए रोगीको आगके पास बैठना पड़ता है। बिस्तरमें कपडा ओढकर लेट जानेसे आराम मिलता है (हालब्रूक)।

**त्वचा :** नासूर, फोड़े, कारबंकल आदिका दूसरा दर्जा, जबकि पीडित अंगके भीतर पीब आ चुकी हो। यह औषध पीब आनेसे पहले सूजन को हटा देती है कील, लाल दाग; एग्जिमा, छाले आदि जिनमें गाढा सफेद मवाद आया हो, एग्ज़िमा जिससे अलब्यूमन जैसा मवाद निकले, चेचकका टीका लगवानेके बाद जब त्वचाका कोई रोग आया हो। गर्भाशयकी क्रिया बिगड जानेके बाद आया एग्ज़िमा। त्वचासे सूखी, आटे जैसी रूसी झडे, दुस्साध्य एग्ज़िमा; सरकी तर दाद जिसपर मोटा खुरण्ड आए, छोटे बच्चेके चेहरे और सरपर खुरण्डदार दाने निकलें।

आगसे जला। बाहर लगानेके लिए भी काम आती है, छाले आदि। ३xके विचूर्णको पानीमें घोलकर जली जगह लगाएँ। दर्द और जलन तत्काल बद हो जाएगी। पावके अगूठेको सूजन, बवाई या त्वचाके दाने आदि जिनका सम्बन्ध आमाशय या मासिक धर्मकी खराबीसे हो। छालेदार विसर्पके लिए मुख्य औषध है। दाद; वर्त्तलाकार विसर्पिका, त्वचाका एक रोग है जिसमें शरीरके दायें भाग पर चकत्ते पडते हैं, और, जाघ पर सूजन आ जाती है, चेहरेकी चमडीका टीबी, चेचक, स्वरभंग सहित खासी, और, ग्रन्थियोंकी सूजन, इन रोगोंके बादके उपद्रवोंके लिए भी हितकर है। चेहरे और गर्दनके फोडे-फुन्सियां। छोटी चेचकके लिए मुख्य औषध है। यह औषध छाले नही पडने देती। घाव जिसके ऊपर आटे जैसे सफेद खुरण्ड आए, या वसामय, सफेद स्राव आए। सुजाक (साईकोसिस) के लिए मुख्य औषध है। मासमें गडकर बढने वाले नाखून। हाथके मस्से।

**तन्तु :** खूनकी कमी, यदि इसके साथ चमडीका कोई विकार भी हो, तो, यह अन्तरकालीन औषधके तौरपर दी जाती है। रक्तस्राव, काला, छिछडेदार, लेसदार। चोट-चपेट, कटाव या रगड आदि। ऐसी हालतमें सूजनेके लिए हितकर है। शोथ जो दिल, जिगर या गुर्दोंके खराबीके

कारण आए, या पित्तकी नाडियोंमें रुकावट पडनेसे, या दिलकी कमजोरीसे आए। जबकि धडकन भी होती हो। पेशाबमें सफेद तलछट जमती जाती है, और जीभपर सफेद मैलकी तरह आए। जब संयोजक-तन्तुओंमें आए वसामय निस्सरण, या लिम्फका शोषण न हो रहा हो। ग्रन्थियों की सूजन, उनके आसपासकी जगहमें पीव आदि निस्सरण गुप्त रूपसे आ जाते है। घावमें आया गदा मास, असख्य दाने, कण्ठमाला; शीताद जिसमें गुप्त रूपसे सख्त मवाद आया हो। मोच और गण्डमालाके लिए दूसरे दर्जेकी दवा है। चेचकका टीका लगानेके कुपरिणाम। आतशक।

**ह्रास-वृद्धि :** आमाशय और पेटके लक्षण स्निग्ध, गुरु पदार्थ (पकवान) खानेसे बढ़ते हैं। गठियावातके या दूसरे दर्द हरकत करनेसे बढते हैं।

डा० सॉडर्सने लिखा है : "यह सुस्तीसे काम करनेवाली औषध है, सुस्त लक्षणों और सुस्त तबीयतोंके लिए हितकर है। यही कारण है कि कठमाला, सुजाक और आतशकके लिए हितकर है।"

**होम्योपैथिक तथ्य :** डा० हेरिंग द्वारा लिखित गाईडिंग सिम्पटम्स खण्ड ६ में इस औषधके सारे लक्षण दिए गए है, परन्तु दुर्भाग्यसे उन्हें काली क्लोरिकमके लक्षणोंसे मिला दिया गया है। दोनोके लक्षणोंमें वहाँ कोई सीमा-रेखा नही है। इस तरह, अध्ययनकी दृष्टिसे, उनका कोई मूल्य नही रहा। यह मूल्य तभी था। जब दोनोंको अलग-अलग रखा जाता।

**व्यवहार :** शुसलरने ६X या १२X को विशेषता दी है, हालाकि बाद में, वह इनसे भी कम शक्तियोंका व्यवहार करते रहे। डिफ्थेरियामें उन्होंने ३X की १० या १५ ग्रेन एक गिलास पानी मिला कर गरारे करनेकी सिफारिश की है। आगसे जलेमें, फोडों, कारबकल, चमडीके अन्य विकारों और मस्सोंके लिए उन्होने बाहर लगानेकी सिफारिश भी की है।

**सम्बन्ध :** चूँकि यह औषध पीव आदि आते ही, हर प्रकारके प्रदाह के दूसरे दर्जेमें हितकर है, अतएव इसके अन्य सहयोगी हैं, ब्राईओनिया, मर्क, ऐपिस, थुजा, स्पोंजिया, आयोडिन, फ्लस, रस और सलफर।

निम्नलिखित औषधोमें, जब उनपर होम्योपैथिक ढगसे विचार किया गया, तो, मालूम हुआ कि काली म्योर काफी मात्रामें पाया जाता है : फाईटो, संगनेरिया, स्टिलिंजिया, पाइनस केन, एस्क्लेपिअस, एलैथस एनिसै स्टिल्ले, स्टस्टिगेलिस, सिमीसिफ्यूगा, बर्बेरिस।

इन सबके बहुतसे लक्षण काली म्योरके साथ मिलते-जुलते हैं। जब वानस्पति और पशुजगतसे, मिलने वाली विविध औषधोंका रासायनिक विश्लेषण होगा, तब इनके मूल तत्त्वोंको दृष्टिमें रखते हुए, इनके लक्षणों की तुलना हो सकेगी।

कानकी मध्य नालीके रोगोंमें मर्क डल्सिससे तुलना करें; आवश्यक में काली सल्फ और साइलीशिया इसके बाद काम आते हैं। चेहरेकी चमड़ीके टीबीमें कल्केरिया फॉस इसके बाद अच्छा काम करता है।

शुसलरकी चिकित्सा पद्धतिमें काली म्योरका वही दर्जा है जो शुद्ध होम्योपैथीमें सल्फरका है। यह बहुत गहराई तक पहुँच कर काम करती है, और, रोगको जड़-मूलसे उखाड़ फेंकनेका इसमें झुकाव है। यह अन्तरकालीन औषधके रूपमें हितकर है, और दूसरी औषधोंके लिए रास्ता साफ कर देती है। काली म्योरके बाद, आम तौर पर, कल्केरिया सल्फ अच्छा काम करता है। यह उनके कार्य को पूरा कर देता है, जबकि सूजनको पकानेके लिए लसिका जैसा सच्चा मवाद आ चुका हो जब संयोजक तन्तुओंके आसपास त्वचाकी गहरी पर्त्तें आक्रान्त हुई हों, और जब त्वचा उधड़नी शुरू हो गयी हो, जीभ पर सफेद रंगकी मैल आयी हो, और, सफेद-सा अपारदर्शी स्राव आने लगा हो, तो यह नेटरम म्योरको मात कर देता है। (मार्गन)।

क्लोरेटके साथ भी काली म्योरकी तुलना की जा सकती है, पोटाश के सभी नमकोंमें काली क्लोर सबसे बढ़कर विषैला है। यह आमाशय और अन्तड़ियोंकी सारी श्लैष्मिक झिल्लियोंमें भारी क्षोभ लाता है, और, वहाँ सड़ाव (गेंगरीन) जैसे घाव पैदा करता है। मुँह आने, पेचिश, कैंसर और वृक्क प्रदाहमें इसका मुकाबला करें। (देखिए ऐलेनकी हैण्डबुक)।

---

# काली फॉस्फोरिकम ( Kali Phosphoricum )

**पर्याय :** पोटास्सियम फॉस्फेट, पोटास्सिआई फॉस्कास।

**साधारण नाम .** फास्फेट ऑव पोटाश।

**रासायनिक तत्त्व :** फार्मूला : K2, HPO4.

तरल फॉस्फोरिक ऐसिडमें पोटाश, हाईडरेट या कार्बोनेटकी काफी मात्रा मिलाई जाती है। जबतक इस घोलकी प्रतिक्रिया हल्के तौर पर ऐलकलाईन न हो जाए, इसे पड़ा रहने देते हैं। इसके कण बड़ी कठिनता से बनते हैं :

**तैयारी :** होम्योपैथिक फार्माकोपियाके सिद्धान्तोंके अनुसार उसका विचूर्ण तैयार किया जाता है।

**शारीरिक रसायनिक तथ्य : काली फॉस** शरीरके सभी अगों और तन्तुओ विशेषतः दिमाग, वातनाडियो, पेशियों, और रक्त कणोंमें पाया जाता है। तन्तुओंका निर्माण करने वाली चीजोंमें भी यह तत्त्व पाया जाता है। शरीरका पोपण करने वाले सभी तरलोंमें भी पाया जाता है, साराश यह है कि तन्तुनिर्माणके लिए यह अनिवार्य है। हम यह वात भी जानते हैं कि सांस लेते समय प्राणवायु और अन्य गैसोंमें, तथा रक्तमें क्या-क्या रासायनिक परिवर्त्तन आते है, हम यह भी जानते हैं कि स्नेहका कैसे साबुन वनता है, और प्राण-वायुसे उसका कैसे सयोग होता है। ये सारे परिवर्त्तन खारो, विशेपतः **काली फॉस** की उपस्थितिके कारण होते है।

डा० डाल्टन का मत है कि शरीरके भीतर जो वडे-वडे परिवर्त्तन होते हैं, उनके लिए अल्कलाईन (खार) की उपस्थिति अनिवार्य है। रक्तधार में, या शरीरके वंद गढोंमें, जितने प्रकारके तरल पाए जाते हैं, उन सव में, निर्विवाद रूपसे, खार पाए जाते हैं। यह देखा गया है कि वात-नाडियो अपने महत्त्वपूर्ण तत्त्वोंको वहुत देर तक सुरक्षित रखती हैं, और, उनमें यह लवण तरल रूपमें पाया जाता है।

डा० गॉफोगलने लिखा है : "जव पेशाव द्वारा **काली फॉस**का वाहर निक-लना **कम हो जाता है**, तो शरीरमें ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं जो टायफसके 'विलगाव (विशृंखलन) पैदा हुए उपादानोंका पूरा-पूरा विरोध करती हैं, और इस रोगके प्रसार या फैलावको भी रोकती हैं।"

**काली फॉस** क्षतनाशक है, और, तन्तुओंमें आने वाले विनाश या ह्रास को रोकता है। दुर्वलता, अपकर्प, या ह्रास **काली फॉसके विचित्र** लक्षण हैं।

डा० हैरिंगने लिखा है : लीविगका यह आविष्कार वहुत महान और महत्वपूर्ण है कि पेशियोंके रक्ताम्बुमें पोटाश और रक्तधारमें क्लोराईड ऑव सोडियम प्रचुर मात्रामें पाए जाते हैं। हमने इस आविष्कारसे भारी लाभ उठाया है, विशेपतः एक या दूसरे पोषणको विशेपता देनेमें।

जव शरीरमें **काली फॉस**के परमाणुओंका सन्तुलन विगड जाता है, तो निम्नलिखित विकार आते हैं.

१ मनमें : भीरुता, लज्जा, व्यग्रता, भय, आंसू वहाना, घर वालोकी याद सताए और उनसे मिलनेके लिए जाने की व्याकुलता, स्मरण शक्तिका अभाव तथा खिन्नता आदि।

२. रक्त संचारमें : नाड़ीकी चाल छोटी हो जाती है और वह बार-बार धड़कती है ; बादमें वह सुस्त पड़ जाती है ।

३. वेदनाशील वातनाड़ियोंमें : दर्द आता है, जैसे उन्हें लकवा मार गया है ।

४. संचालक वातनाड़ियोंमें : पेशियों और वातनाड़ियोंकी दुर्बलतासे लेकर लकवे तककी हालत होती है ।

५. सहानुभूतिशील वातनाड़ियोंमें वसामय तन्तुओंका अपकर्ष : किसी एक स्थानके पोषणमें देर होनेसे लेकर पोषणके सर्वथा बन्द हो जाने तककी ; परिणामस्वरूप पीड़ित वातनाड़ियां नर्म पड़ जाती हैं, और, उनका क्षय (अपकर्ष) शुरू हो जाता है ।

**साधारण कार्य :** ऐसी हालतें वातनाड़ियोंकी दुर्बलताके परिणामस्वरूप आती हैं, जैसे थकान, परिश्रम, दिमागी ताकतकी कमी, और खिन्नता। डा० गॅयिलकी देख-रेखमें जिन व्यक्तियोंने यह औषध खा कर, लक्षण बताए, उन्होंने मुख्यतः थकान आनेकी शिकायत की। उन्होंने इस थकानका केन्द्र मन, वातनाड़ियां और पेशियां बताया। **काली फास** दिमाग, वातनाड़ियोंके कोषों, और रक्त-कणोंपर असर करता है। यह रक्त कणोंके पोषणको प्रभावित करता है, और, परिणामस्वरूप वहां क्षोभ, हलका-सा प्रदाह, और कुछ हद तक, अपकर्ष पैदा करता है। आमतौरपर दिमागमें सुस्ती आती है। यदि दिमागको उत्तेजना मिले, तो वह काम कर सकता है। अधिक दिमागी काम करनेके बाद आयी थकान। यह हालत उन हालतोंसे मिलती-जुलती है, जिसे हम **स्नायु दुर्बलता** कहते हैं, और, यही वह क्षेत्र है जिसमें इस औषधने सर्वाधिक प्रशंसा प्राप्त की है। शरीरके सभी मलोंसे तेज गंध आना इसका बड़ा लक्षण है। तरुण रोगों, पेशीवात और पेशियोंमें क्षीणता लाने वाले रोगोंके बाद आयी पेशी दुर्बलताको यह औषध दूर करती है। ऐसे विकार जो स्नायु जालकी स्वाभाविक क्रिया बिगड़नेके बाद आए हों, बूढ़ोंके अपकर्ष जैसी हालतें जो रक्त-कणों और पेशियोंके रसमें बड़ी तेजीसे आए बिलगावका परिणाम हो, जैसे संक्रामक रक्तस्राव, अतिसार जिसमें मलसे मुर्दार जैसी गन्ध आए, शीताद, मुँह आना, सड़ाव ( गेंगरीन ) की वेदना, आतशकका घाव, और, टायफायडकी हालतें आदि।

## चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** व्याकुलता, **स्नायविक भय** जो अकारण हो, निराश, विचित्र

बातें सोचे, हर बात के निराशापूर्ण पहलूपर बातें करें, कुढन ; कारवार और रुपए पैसेके बारेमें निराशासे घिरा रहता है। दोस्तोंके साथ मिलना-जुलना या बातचीत करना पसन्द नहीं करता। **अधिक मानसिक परिश्रमसे आयी दिमाग कमजोरी उत्साहहीनता, चिड़चिड़ापन**, भारी अधीरता, **स्मरण शक्तिका अभाव :** लिखते समय भूलें करे, गलत अक्षरों या शब्दोंका व्यवहार करे, विचारोंमें गडवड। आवाजसे भय लगे और सहन न हो। जडता, मानसिक शक्तिका अभाव, जरा-सा परिश्रमी भारी काम जान पडे। अनिश्चित, अधिक परिवर्त्तनशील। जब गा रहा हो, तो अनियमित और वेतुकी बातें करे (**नेटरम म्योर**), भय शोक और दुखके, दुष्परिणाम, ज्ञानेन्द्रियोंका भ्रम ; घर जानेके लिए व्याकुल, भूत कालकी बातोंसे परेशान ; भावनाओंमें सहसा परिवर्त्तन आने, हँसी या चिल्लानेके दौरे पडनेके बाद, और गलत धारणाओं के बाद आया **हिस्टीरिया**। पागलपन और दिमागके दूसरे विकार। भारी वहम ; चित्तोद्वेग, खिन्नता, प्रसवोन्माद, आहें भरे, उत्साहहीनता ; लज्जाशील, अत्यधिक भावुक, जिससे चेहरा लाल हो जाए, तन्द्रा और हल्का-सा प्रलाप, कराहे, भयभीत, अगडाइया ; शराबीका बकवास, भय, नींद, व्याकुलता, सन्देह, वेतुकी बातें करे। कल्पित चीजोंको पकडनेके लिए हाथ उठाए, दिमागी विकार, दिमागका नर्म पड जाना, पहला दर्जा ; छूते ही चौंक पडे। बच्चोंके दिमागी लक्षण, चिडचिडा, बदमिजाज, भयभीत, चीख मारे, कराहे। रातको सोते-सोते-डरे। लज्जाशील और चेहरा लाल, सोते-सोते उठकर चल दे। अत्यधिक सूक्ष्मग्राही, सोते-सोते जरा-सी आवाजपर चौंक पडे। सोते समय बोले, जागते समय एक से दूसरे कमरेमे जाना चाहे, (हालनुक)।

डा० जार्ज रायलने जो परीक्षण किए है, उनमें उन्होंने चिडचिडापन, घबराहट, उत्साहहीनता, तन्द्रा, स्मरण शक्तिका अभाव, और वेचैनी आदि महत्त्वपूर्ण दिमागी लक्षण पाए।

**सर और खोपड़ीकी चमड़ी :** जब लेटे-लेटे खडा हो ; खडा होनेपर, बैठनेपर और ऊपरकी ओर देखनेसे सर में चक्कर आए वातनाडियों की थकान और दुर्वलताके कारण सरमें चक्कर आए। पेशानीमें मन्द-मन्द दर्द जो बन्द घरमें बढे। दिमाग जैसे जड हो गया है, और थका हुआ है। **दिमागमें खूनकी कमी**, दिमागपर चोट आना ; दुर्वलता की हालत, छात्रो और उन व्यक्तियोंके सरका दर्द जो कामकाजमें अधिक मेहनत करते-करते थक गए हैं। चहलकदमीसे सर दर्द घट जाता

है। **सरके पिछले भाग ( गुद्दी ) में, और, आँखोंके ऊपर दर्द हो जैसे वहाँ बोझ रखा है। खाते समय यह दर्द घट जाए**, इस दर्दके साथ थकान और निढाल होनेकी अनुभूति, सोच-विचारकी अक्षमता और इस औषधके अपने विचित्र मानसिक लक्षण।

सर दर्द जिसके साथ थकानकी अनुभूति हो और आमाशयमें भारी दुर्बलता आए। मासिक धर्मके दिनोंमें आने वाले सर दर्द जिनके साथ भूख भी हो। स्नायविक सर दर्द, कानोंमें भिनभिनाहट, इसके साथ सँभल कर बैठनेकी अक्षमताका बोध, प्रसन्नतापूर्ण जोशके वातावरणमें राहत मिलती है। बदसूरती सूरत। अर्थात् आँखोंमें आसू आए रहें, खाते समय कष्ट घट जाता है। दिमागमें पानी आ जाता है। खोपड़ीकी चमड़ीकी खारिश; सरके पिछले भाग ( गुद्दी ) में सन्तापपूर्ण कष्ट जैसे बाल खींचे जा रहे हैं। बायीं ओरके स्तनाकार प्रवर्द्धनमें असह्य दर्द जो हरकत करने से और खुली हवामें बढ़े।

**आँखें :** डिफ्थेरिया और भारी थकानके बाद आयी निगाहकी कमजोरी और दर्द जो हरकत करनेसे और खुली हवामें बढ़े। इन्द्रिय ज्ञानका अभाव, आखें जैसे जोशमें हैं, डिफ्थेरियाके बाद आया भेंगापन। पपोटोंका झूल जाना; आखकी पेशियोंमें पारस्परिक असहयोग, पासकी चीज स्पष्ट दिखायी न दे। ऐसा जान पड़े जैसे आँखोंमें रेत पड़ा है, या छड़ी रखी है। पपोटोंमें सन्ताप-पूर्ण कष्ट, उनमें जलन हो जैसे धूएँसे भरी हुई हैं। पपोटोंमें खिचाव, या झटके आए, निगाह धुधली। आँखोके आगे काले भुनगे या पतगे उड़ें।

**कान :** वातनाडियोंका विकृतिके कारण आया बहरापन; उसके साथ वातनाडियोंकी दुर्बलता और थकान, वातनाडियोंकी दुर्बलताके कारण, सोते समय कान गूजें। कानोंसे दुर्गन्धित, पतली पीब बहे। कानके ढोलकी झिल्लियोके घाव, कानके मध्य भागसे पीब आए। यह औषध उस हालतमें अधिक अच्छा काम करती है, जब स्राव **दुर्गन्धित**, पतला, और गन्दा हो। बूढ़ोंमें अपकर्षकी हालतें। तन्तु सुकड़ जाते हैं, और उनके ऊपरसे परत उतरती है। भिनभिनाहट ( **मैगनेशिया फास** ), सुनने की नालीमें खुजली हो, सुननेकी चेतना बढ़ जाती है, अर्थात् शोर-गुल सहन नहीं होता।

**नाक :** कमजोर और नाजुक शरीर वालोंको नकसीर आए; नक-सीर आनेकी प्रवणता, पीनस, नाकमें गहरे, पीले रंगके और दुर्गन्धित छिछड़े जमे। घाव, गहरे पीले रगका स्राव; जरा-सी ठण्डक लगते ही के आने लगे। नाकसे गहरे पीले रगकी पपड़ी गिरे

और उसके बाद नकसीर आए। नथनोके पिछले हिस्सेसे गाढ़ा स्राव गिरे ;

**चेहरा** . नीलाभयुक्त और मुरझाया हुआ , आँखें खोखली । लाल, गर्म ; चेहरे और पेशानीमें जलन हो , पीला ; चेहरेमें स्नायुशूल जिसके बाद भारी दुर्बलता आए। दायी ओरका स्नायुशूल जो ठण्डकसे घटे। स्नायुशूल जो ऊपरके दांतोंसे बाए कान तक जाए। जबडेकी हड्डियोंमें दर्द हो , जो खाने, बोलने और छूनेसे घटे। चेहरेकी पेशियोंकी दुर्बलता, जिसके कारण ऐंठन आए। दाढीमें खुजली हो, फुन्सिया , पानीमें काम करनेसे आया चेहरेका लकवा ।

**मुह** : होठों पर पानीवाली फुन्सियां निकलें , होठो पर फुन्सिया या छाले निकलें और कष्टपूर्ण खुरण्ड आएँ। त्वचा उघडे , मुह आ जाए , अर्थात् मुहमें छाले बने , साससे दुर्गन्ध आए। मसूढे नरम , मुहके गलने-सडने वाले घाव , भूरे रंगके घाव , लार अधिक आए , गाढी और नमकीन ।

**जीभ** : प्रातःकाल **अत्यंक खुश्क** , ऐसा जान पडे कि जीभ मुहकी छतमे जा लगेगी। जीभ सफेद, चिकनी, भूरी-सी। जीभका प्रदाह, जब खुश्की अत्यधिक हो, या थकान आयी हो। जीभके किनारे लाल और कष्टपूर्ण ।

**दाँत** : मसूढोसे खून गिरनेकी प्रवृत्ति , मसूढों पर लाल रगकी मैल आए , क्षीण या भरे हुए दाँतका दर्द , दाँत और पेशानीका दर्द अदल-बदल कर आएँ वातप्रकृतिवालों, नाजुक, या पीले शरीर वालो, और भावुक व्यक्तियोंका दाँत दर्द , जबकि मसूढों से खून गिरता हो और उन पर चमकदार लाल रंगकी मैल या लकीर आयी हो। दाँतोंका कडकडाना। स्पष्ट न बोल सके , धीरे-धीरे बोले। दाँतोमें सन्तापपूर्ण कष्ट, दाँत पीसे।

**गला** : टॉसिल बढ़े हुए, सन्तापपूर्ण , उन पर सफेद रगकी ठोस मैल जमे, जैसे डिफ्थेरियाकी झिल्ली हो। गला अत्यधिक सूखा , हर समय निगलना चाहे , स्वरभग , स्वर लोप , गलेमें नमकीन कफ आए। सडाव वाला गलक्षत , क्रूपका अन्तिम दर्जा , मूर्च्छा आए और , स्नायविक थकान। डिफ्थेरियाके बादकी हालतें , निगाहकी कमजोरी , नाकमें बोले और किसी भी अगका लकवा , सडाव वाली घातक हालतें , थकान , स्वर नाडियों का लकवा ।

**आमाशय** · आमाशयका घाव , क्योंकि यह परिपोषण करने वाली नाडीका विकार है। खाना खानेके कुछ ही देर बाद फिर भूख लग आती है। आमाशयमें भारी दुर्बलता आती है , जैसे अभी जान निकल जाएगी।

हवाके डकार आएँ। आमाशय प्रदाह जब चिकित्सा करानेमें देरकी गयी हो और शरीर क्षीण भी हो। अजीर्ण जिसके साथ स्नायविक दुर्बलता भी हो। आमाशय शूल जो भय या जोशके कारण आया हो। अधिक प्यास, मतली और खट्टे या कडवे खाद्य; या खूनकी कै; आमाशय जैसे खाली है, या जैसे दाँतोंसे कुतरा जा रहा है, यह बोध कुछ खा लेनेसे मिट जाता है। गैस के डकार जिनसे कडवा या खट्टा स्वाद आए। पेटके ऊपरी भागमें किसी थोडीसी जगह में निरन्तर दर्द आए। गहरे या नीले रंगकी कै जो दिमाग की खरीवीसे आए।

**पेट :** वायी ओर हृदयके नीचे दुर्बलताका बोध हो। तिल्लीकी खरावी, अफारा जिसके साथ हृदयके आसपास, और आमाशयके वायी ओर कष्ट हो, पेटपर सूजन आए और जबान खुश्क आदि। टायफायड ज्वर जबकि दुर्बलता आदि इस औषधके अन्य विचित्र लक्षण भी पाए जाएँ। पेट हवा से फूल जाता है। दर्द जिसका रुख नीचेको हो। पेटके निम्न भाग में दर्द; और इसके साथ, मलत्यागका अपूर्ण वेग, दोहरा हो जानेसे आराम मिले। अवसाद; चेहरों की रंगत नीली-सी, सफ़ेद, नाडी क्षीण।

**पाखाना और मलद्वार :** अतिसार वेदनाहीन, पानी-सा पतला मल आए; भय या अन्य अवसादजनक कारणोंसे अतिसार आना, इसके साथ भारी थकान; सडा हुआ मल आए; जैसे मांड है; खून मिला, मुर्दार जैसी गंध आए। दुर्गन्धित। टायफायडकी पेचिश, पानी-सा पतला मल आए, और तात्कालिक वेग, इसके वाद ऐंठन हो। हैजे जैसे लक्षण, दुर्गन्धित अपान वायु जो आवाजके साथ खारिज हो। भोजन करते समय मलत्यागका तात्कालिक वेग, मल मात्रामें अधिक, वेदनाहीन, और दुर्गन्धित; इसके वाद फिर वेग पडे, जो पूरा न हो। मलत्यागके वाद मलान्त्र में जलन और सन्तापपूर्ण कष्ट हो, काच निकले, कब्ज, मल गहरे, भूरे रंग का; उसपर पीले रंगकी धारी। मलात्र और वृहदान्त्रकी शिथिलता। जैसे आंशिक लक़वा आया हो। खूनी ववासीर जिसमें सन्तापपूर्ण दुखन, वेदना और खुजली हो।

**कामांग :** अत्यधिक कामवासना, सवेरे तेजी आए, रातको तेजी विना ही वेदनापूर्ण स्वप्नदोष हो, और नामर्दी कामवासना घट जाती है। अधिकांश समय पूर्ण शिथिलता, मैथुनके वाद भारी थकान आए, और, निगाह धुंधली पड जाए। आतशकका सडा हुआ घाव, लिंगमुण्ड (सुपारी) प्रदाह। **स्त्री** :—वात प्रकृतिवाली स्त्रियोंमें मासिक समयसे पहले और मात्रा में अधिक आए। मासिक अनियमित, कम, लगभग काला, दुर्गन्धित।

**नष्ट रज, उत्साहहीनता, सुस्त, और वातनाड़ियोंकी आम कमजोरी।** मासिकके साथ मन्द-मन्द सर दर्द, गहरी थकान, नीदका जोर, अंगोंमें दर्द मारे पेडू और गर्भाशयमें सूइया चुभने जैसा दर्द, वायी ओर डिम्बों में दर्द, त्रिकभागके आरपार तेज दर्द। लकोरिया, पीला-सा, छाले डाल देने वाला, **सतरे की गत जैसा** जलता-जलता, चरपरा। मासिकके वाद **काम-वासना वहुत वढ़ जाती है।** वात प्रकृति वाली, आसू वहाने वाली और पीले रग वाली स्त्रियोका कष्ट रज। **हिस्टीरिया**, योपोपस्मार (वाय गोला); **घवराहट।**

**मूत्रप्रणाली : वड़ी आयु के वच्चों**का पेशाव अपने-आप निकल जाए, मसानेका आशिक लक़वा, स्नायविक दुर्वलतावश पेशाव अनजानमें अपने-आप निकल जाता है। वार-वार पेशाव आए, मात्रामें अधिक आए, वार-वार, जलता-जलता पेशाव आए। मूत्रपथसे खून आए। ममानेकी मकोचक पेशियोंके लक़वेके कारण पेशाव अनजानमें अपने-आप निकल जाए। दुर्वलता से आया मूत्राशय प्रदाह और भारी थकान, पेशावमें अलव्यूमन आए। मधुमेह और उमके साथ स्नायविक दुर्वलता, और लोभपूर्ण भूख, सुजाक जिसमें खून आए। पेशाव **केसरिया पीला**, मूत्र पथमें खुजली हो। मसाने और मूत्राशय में कटनके साथ दर्द।

**गर्भ :** वात प्रकृति वाली स्त्रियोंमें गर्भस्रावका खतरा, **प्रसूतोन्माद; प्रसूत ज्वर**, दुर्वल और अपूर्ण प्रमव वेदना, नकली प्रसववेदना, शारीरिक दुर्वलताके कारण कष्टदार प्रमव, स्तनप्रदाह जवकि पीवकी रगत भूरी-सी, गन्दी, और दुर्गन्धित हो, क्षीणताकी अवस्था।

**श्वासप्रणाली :** जरा-सा कुछ खा लेते ही दमेका दौडा पडता है। दमा (वडी मात्रामें और वार-वार दें, ३x) जवकि स्नायविक खिन्नता भी हो। स्वर नाडियोके लक़वेके कारण स्वरलोप, मौसमी नजले-जुकामके साथ दमा, स्वरभग, और उसके साथ, आवाजका अधिक व्यवहार होने से आया दुर्वलता, विशेपतः जवकि गठियावात या घवराहट भी हो। खांसी जो हवाकी नालीके क्षोभके कारण आए, और, हवाकी नालीमे सन्तापपूर्ण क्षोभ, गाढा, पीली, दुर्गन्धित कफके साथ सन्तापपूर्ण कष्ट, उन व्यक्तियोंकी काली खामी जिन्हें घवराहट वहुत हो और वुरी तरह थके हुए भी हों। फेफडो का तरुण शोथ, आक्षेपपूर्ण खासी जिममें झागदार, पतली कफके गोले आए, और, दम घुटनेकी आशका। सीढियां चढे तो दम फूल जाए। कोई परिश्रम करनेसे भी दम फूल जाए। क्षयका आखिरी दर्जा, जिसके साथ भारी दुर्वलता हो, और चेहरेकी रंगत पीली या नीली हो।

**रक्त-संचार :** वात प्रकृति वाले व्यक्तियोंको यह आभास हो कि मूर्च्छा आ जाएगी, या हृदयकी दुर्वलताके कारण सर चकराये। भय या थकानके कारण मूर्च्छा आए। दिल रुक-रुककर धडके, इसके साथ स्नायविकता, चेतनाधिक्य, यह विकार भावुकतावश, दुख, शोक, या चिंताके कारण आए, और इसके साथ **धड़कन**। दिलके स्वाभाविक कार्यमें गडवड, इसके साथ अधीरता और घवराहट आदि। भावनाओंमें जरा-सा उतार-चढाव आने, या सीढ़ियाँ चढनेसे धडकन होने लगे। नाडी रुक-रुककर, अनियमित चले, या नार्मलसे भी कम रहे। गठियावातका ज्वर और उसके वाद धडकन हो, जवकि अवसाद भी हो। खूनकी कमी, दुर्वल, धडकन इनके साथ **अनिद्रा** और अशांति, रक्त-सचार शिथिल।

**कमर और हाथ-पाँव :** रीढमें खूनका अभाव, मेरुदण्डका नर्म पड जाना, जो मूल रोगके रूपमें हो; अपना नेतृत्व करनेमें कष्ट हो, चलने-फिरने की असमर्थता, लडखडाए और चलते-चलते ठोकर खाकर गिर पडे।

**गठियावात या लकवेके कारण आया लॅगड़ापन**, इसके साथ आराम के वाद अकडन आए, चहलकदमीसे आराम मिले। कमर और हाथ-पाँवमें दर्द, जिसमें हरकत करनेसे आराम मिले। कमर और हाथ-पाँवमें दर्द जो हरकत करनेसे घटे, कधोंके जोडमें दर्द। हाथकी उगलियोंके सिरे जैसे सुन्न हो गए हों; **हथेलियों और तलवोंमे खुजली हो**, रातको टागोंमें खुजली हो, और उसके साथ सुन्नपन या दुर्वलता आए। वैठकर उठने पर, या कडा परिश्रम करनेके वाद दर्द वढ जाता है। पीडित अगोंमें कुचले जाने जैसा दर्द हो, और वहाँकी चमडीका रग विगड जाए। नया और पुराना गठिया-वात, जिसके दर्द चहलकदमीसे मिट जाते है, आराम करनेके वाद, सुवहके समय, और, वैठकर उठने पर वढ जाते हैं, पीडित अगोंमें अकडन आ जाती है, परिश्रम और थकानसे कष्ट वढता है। अकडन, लकवा आनेका झुकाव, कूल्होंमें दर्द। तलवोंमें लकवे जैसा और खिंचावके साथ दर्द हो, पाँवकी उगलियोंकी ववाइयाँ। कडी वीमारीके वाद पेशियोंकी निर्वलता।

**स्नायुजाल** . यह नमक स्नायुजालके लिए भारी वलदाता है। **स्नायविक वेदना चाहे शरीरके किसी भी अगमे आए; जवकि उसके साथ दुर्वलता, अशक्ति, आवाज और प्रकाशकी असहनशीलता भी हो। सुखद जोशके समय, धीरे-धीरे टहलनेसे दर्द घट जाते हैं; परन्तु जव चुपचाप लेटा हो, या, अकेला हो, तो दर्द वढ़ जाते हैं।** गृध्रसी, जाघोंके पिछले भागसे घुटने तक खिंचावके साथ दर्द आए;

सुस्ती, अकड़न, भारी व्याकुलता, दर्द, स्नायविक दुर्बलता आदि। **घबराहट**; जिसके लिए कोई उचित कारण न हो, रोगी राई और "तिलका ताड़ तथा राईका पर्वत बनाए" शरीरके किसी अंगका लकवा। आँख; होंठ, मसाने, या ऊपर वाले पपोटेका लकवा। आमतौर पर लकवा लगता आता है। लकवा जो क्षीणताके कारण आए। हाथ, पाँव, घुटनों आदिका लकवा उरुस्तम्भ, उत्तेजक शक्तिका ह्रास। बेकार चलता जाना लकवा जिसकी प्रगति बहुत मन्द हो। शरीरमें दर्द आनेकी प्रवणता, इसके साथ स्पर्शज्ञान का अभाव; चेहरेका लकवा। मृगी, चेहरा मुरझाया हुआ; आक्रमण होने के बाद ठण्डक लगे, और, फड़कन हो। आक्रमण भयके कारण आए। हिस्टीरिया; जिसका दौरा भावनाओंमें सहसा उतार-चढ़ाव आनेसे हो; ऐसा जान पड़े जैसे गलेमें कोई गेंद आ रही है। (गोलस्फार), घबराया हुआ, व्याकुल अस्थिर। कामकी अनुभूति वाले रोगोंमें; जिसके साथ घबराहट, और चिड़चिड़ापन भी हो। शरीरमें दर्द अचानक हो जाते हैं। आसानीसे चौंक पड़ता है। मैथुनका डर। स्नायविक दुर्बलता विशेषकर जब उसका कारण अति रमण हो, और मेरुदण्डमें भारी क्षोभ भी हो। घबराहट जो कामोत्तेजनाके कारण आए, इसके साथ त्रिक भागमें दर्द, अनिद्रा, सरके पिछले भाग और कमरमें निरन्तर वेदना, पेशाब बार-बार हो, निराशा (डा० जे० सी० नोटिंगहम)। **दर्द दौरोंके रूपमें आए, इसके बाद थकान भी आए**; बालकोंका लकवा, **मेरुदण्डमें खूनकी कमी,** जो किसी क्षयकर रोगके बाद आयी हो, इसके साथ लगड़ा बना देने वाला दर्द जो आरामके समय बढ़े, और चलना शुरू करने पर घटे।

**नींद**, अनिद्रा, जो चिन्ता या स्नायविक जोशके बाद आए। सोते-सोते उठकर चल दे, अंगड़ाइयाँ आएँ, थकान; इसके साथ आमाशयमें खालीपनका बोध। हिस्टीरियाकी अंगड़ाइयाँ; आग, ठगों, गिरने और भूतोंके स्वप्न आएँ। बच्चे रातको सोते-सोते डरें। गहरी नींदसे चीख मार कर जाग उठें। कामवासनाके स्वप्न, सुबह बिस्तर छोड़ना न चाहे; नींद आने पर पेशियोंमें खिंचाव आए, और, फड़कन हो।

**ज्वर**: बारीके बुखार, पसीना दुर्गन्धित, कमजोर बनाने वाला, और अधिक, टायफस, घातक सड़ा हुआ कैम्प ज्वर, दिमागकी खराबीसे आया ज्वर। टायफायड, आमाशय और आन्त्र ज्वरके लिए मुख्य औषध है जबकि जीभकी रंगत भूरी और खुश्क हो, शरीर पर बैंगनी रंगके दाग पड़ें जैसा कि सन्निपातिक ज्वरोंमें आया करते हैं, अनिद्रा, तन्द्रा और बड़बड़ाहट आदि। यह औषध टायफायड और घातक ज्वरोंके सभी लक्षणोंको

दूर कर देती है। तेज ज्वर, आरक्त ज्वर, गलेमें सडावकी हालत, निढाल, तन्द्रा आदि। अधिक और थकान लाने वाला पसीना, जिससे दुर्गन्ध आए। खाते समय पसीना आए और आमाशयमें भारी दुर्बलता आए। मौसमी इन्फ्लुएजा जबकि वातनाडियोंमें क्षोभ भी हो।

**त्वचा :** एग्जिमा जबकि अधिक चेतना, सूक्ष्मग्राह्यता और घवराहट भी साथ हो। नखव्रण, नासूर, कारवकल, जबकि दुर्गन्धित मवाद आता हो। घातक छाले जिनमें पानी भरा हुआ हो, त्वचा, पर झुर्रियाँ पडी हों, और चेहरा भी सिकुडा हुआ हो। चिकनी खुजली जिससे दुर्गन्ध आए। **वाल गिरें; गंजके दाग**; त्वचा पर क्षोभजनक पसीना आए। पैरों और **हथेलियोंकी खुजली**, जहाँ कि त्वचा सर्वाधिक मोटी हो। **खुजली** और ऐसा जान पडे जैसे चीटियाँ चल रही है सहलाना अच्छा लगता है, जोरसे रगडनेसे कष्ट हो और खाल उधड जाए। छोटी चेचक। पाँवकी उगलियों, हाथों और कानोंपर ववाईयाँ फटें, उनमें सरसराहट हो, और, खुजलीके साथ दर्द हो। घातक छाले या फुन्सियाँ।

**तन्तु :** अनीमिया, मास कम होता चला जाए, **शीर्णता; क्षयकर रोग जिनमें सड़ा हुआ पाखाना आए।** खूनी ववासीर, खूनकी रंगत गहरी, पतली, जमे नही और सडा हुआ, आम कमजोरी और निढाल। ऐसे व्यक्ति जो कामवासनाका दमन करने, या, अधिक रमण करनेसे पीडित हैं। पतला, पानी-सा पतला, वहुत पतला, गन्दा, और दुर्गन्धित मवाद आए। तीक्षण, चरपरे स्राव, **सड़ाव (गेंगरीन) की हालतें**; गलने-सडनेकी प्रारम्भिक अवस्था; कैंसर, दर्दको कम करता है, उसके दुर्गन्धित स्रावको रोकता है, और त्वचाके विगडे हुये रंगको सुधारता है। वालशोष (सूखा, ममान) जिसमें वदवूदार पाखाना आए। शीताद (स्कर्वी) जिसमें सडाव (गेंगरीन) आ चला हो। **पीव वाले दूषित रक्त स्राव;** घावसे गन्दा, पानी-सा पतला और दुर्गन्धित पस आए। रक्तमें श्वेत कणोंकी संख्या घातक रूपसे वढ जाती है। टायफस, गन्दी हालतें। वुढापेकी जीर्ण-शीर्ण अवस्था, तन्तु सूखे, परतदार, अशक्ति। स्रावसे मुर्दे जैसी गन्ध आए।

**ह्रास-वृद्धि :** डा० रॉयलने सावधानीके साथ जो परीक्षण किए हैं उनसे सिद्ध होता है कि लक्षण आरामसे, पोषक खाद्य और गरमीसे **घटते हैं।** जोश, चिंता, शारीरिक और मानसिक परिश्रमसे **वढते हैं।** इस औषधके अनेक लक्षण शोर-गुल, वैठकर उठनेके वाद, शारीरिक परिश्रमसे, निरन्तर परिश्रम, और आराम करनेके वाद, **ठण्डी हवासे वढ़ जाते हैं।** टहलने

से, **खानेसे,** जोश आनेपर, दूसरोंके साथ मिल बैठनेपर, **कष्ट घटते हैं।** अकेला रहनेपर बढ जाते हैं। दर्द और खारिश आधी रातके बाद २ बजेसे ५ बजे तक बढते हैं।

**होम्योपैथिक तथ्य :** इस औषधके परीक्षण डा० एच० सी० ऐलनकी निगरानीमें शिकागोकी प्रवर्स युनियनने किये थे। उनका साराश ऊपर दे दिया गया है। बादमें आईओवा विश्वविद्यालयके अध्यापक डा० रॉयल ने इसके परीक्षण किए। इनकी रिपोर्ट १९०७ में प्रकाशित हुयी। उसका मुख्य साराश भी ऊपर दे दिया गया है। उसके बाद इसके परीक्षण एक बहुत नाजुक मिजाज औरत पर डा० फिंकेने किए। ये परीक्षण एक लाख शक्ति से हुए। यह शक्ति खिलायी नही गयी थी, केवल हाथकी उगलियोंके दरम्यान थमा दी गई थी। हम यह मानते हैं कि हमने इस वीरतापूर्ण परीक्षण के परिणाम नहीं पढ़े, इसलिए हम उन्हें यहाँ दे भी नही सके। जिन्हें इस परीक्षणके परिणाम पढनेकी उत्सुकता हो वे आई० एच० ए० की कारवाई और **'मेडिकल एडवास'** मार्च १८९२ का अध्ययन करें। इस अकमें डा० ऐलनके परीक्षण भी पढ़े जा सकते हैं। उन दिनों इस दवाके बारेमें जो अधूरा मवाद प्राप्त था उसके आधार पर डा० सेम्युएल लीलोथलने इसका तुलानात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया, जो १८९० के **अमेरिकन इन्स्टीच्यूट ऑव होम्योपैथीमें** देखा जा सकता है। इस तरह इस औषधके गुणोंमें विस्तार हुआ, और, सावधानीके साथ इसके परीक्षण किए गए जिनमें विविध शक्तियोंका व्यवहार हुआ।

**व्यवहार :** मालूम होता है कि निम्न शक्तियाँ सर्वोत्तम कार्य करती हैं। इसीलिए डा० शुसलरने दमेमें २ × या ३ × के व्यवहारकी सिफारिश की है। तो भी ६ × और १२ × जैसी उच्चतर शक्तियों, और इनसे भी उच्च शक्तियोंका व्यवहार सफलतापूर्वक हुआ है।

**सम्बन्ध : रस टॉक्स** और **फास्फोरस** इसके समीपतम हैं। इन दोनों के साथ, इसके अनेक लक्षण समता रखते हैं। **पल्सा**के स्नायविक लक्षणोंका कारण यही है कि इसमें **काली फास** पाया जाता है। गृध्रसोमें तुलना करें। **इग्नेशिया**में भी शायद **काली फास** पाया जाता है; क्योंकि हिस्टीरियाके लक्षण दोनोंमें समान हैं। स्नायु जालके लिए, शायद औषध के रूपमें, **काली फास, इग्नेशिया, काफे, हायोसियास** और **कैमोमिला**से सम्बन्धित है।

मासिक धर्मके सर दर्दमें **जिंकम, सिमिसिफ्यूगा जैलसीमम** और **सीक्लेमन** आदिसे मुकाबला करें। मसानेकी तकलीफोंमें **काली फास**

पूरक है **मैग्नेशिया फॉसका**। **मैग फासमें** आक्षेप मुख्यतः पाया जाता है, जबकि **काली फासमें** लकवे जैसी हालत मुख्यतः पायी जाती है। दिमाग़के प्रारम्भिक लकवेमें जब गुर्देका क्षोभ भी हो तो **जिंक फाससे** तुलना करें।

चमकदार, या गहरे लाल रंगके पतले, पानीसे पतले रक्तमें, जो छिछड़ों की शक्ल में न हो, **काली फासके** बाद **नेटरम म्योर** और **निट ऐसिड** काम आता है। क्षयकर रोग के बाद फ्रासका खुम्ब, किसी अन्य औषधकी अपेक्षा, पेशियोंको अधिक अच्छी तरह बहाल कर सकता है।

दिमाग़ सम्बन्धी विकारोंमें **सोक्लेमनसे** तुलना करें, यह औषध पागलों की स्वप्नावस्था, जैसी असाधारण अवस्थाको दूर करती है। प्रसूत ज्वर में **काली म्योरसे**; डिफ्थेरियाके बादकी शिकायतोंमें **लैकेसिस**, और सड़ाव वाली हालतमें **काली क्लोरसे** तुलना करें।

**काली फासके** साथ निम्न औषधोंका अध्ययन भी करें :

१—स्नायविक लक्षण : **सिमिसिफ्यूगा, हायोसियामस, स्ट्रेमो, जिंकम साईली अनाकार्डियम , कोनियम, स्टेफिस**।

२—रक्तके विलगावमें : **बप्टीशिया , म्योर ऐसिड , लैकेसिस, कोटेलस, करियोजोट , आर्सेनिकम , कार्बो , चाईना**।

---

# काली सल्फ्यूरिकम ( Kali Sulphuricum )

**पर्याय :** पोटासियम सल्फेट, काली सल्फास, पोटास सल्फास।

**रासायनिक तत्त्व :** फार्मूला : KSO4

यह नमक लावा ( ज्वालामुखीकी राख ) में पाया जाता है। चतुष्कोण या षट्कोण वर्णहीन, छोटे-छोटे और स्थायी क्रकच घनक्षेत्रके रूपमें पाया जाता है। ठण्डे जलके १० भाग और उबलते पानीके ३ भागमें घुल जाता है। सुरासार ( अलकोहलमें ) नहीं घुलता। इसका स्वाद बड़ा तेज, कड़वा और खारा होता है।

**तैयारी :** शुद्ध सल्फेट ऑव पोटाशका विचूर्ण बनाया जाता है, जैसा कि होम्योपैथिक फार्माकोपियामें निर्देशित है।

**शारीरिक रासायनिक तथ्य** . डा० शुसलरके मतानुसार त्वचाके बाहरी और भीतरी परत इसी नमकके सहारे कार्य करते हैं। जब शरीरमें इस कोष-लवणकी कमी पड़ जाती है, तो जीभ पर पीली, चिकनील

आता है। पीले, चिकने, पतले या गाढ़े रंगके या हरितामयुक्त स्राव आते हैं। श्लैष्मिक झिल्लियोंसे पानी-सा पतला स्राव आता है। चमड़ीका भीतरी या ऊपरी परत उधड़ता है। पीलापन शायद विपरीत परिवर्तन अर्थात् प्रदाह वाली जगह चर्बी आ जाने, और, त्वचाके भीतरी परतके दुर्बल, क्षीण भागके निस्सरणसे आता है।

प्राकृतिक दृष्टिसे, सल्फर और लोहेके ऑक्साईड प्राणवायु वाहक हैं। यदि सल्फेट और आयरन ऑक्साईड एक साथ किसी ऐसे सजीव पदार्थसे मिलते हैं जो अब क्षीण हो चला है, तो, वह अपनी प्राणवायु गंवा बैठता है। तब आयरन सल्फेट तैयार होता है। इसमें प्राणवायुके कारण फिर विशृंखला (विलगाव) आती है, और, तब सल्फ्यूरिक ऐसिड, और आयरन ऑक्साईड तैयार होता है। अनुकूल परिस्थितिमें, यह फिर प्राणवायु वाहक बन जाता है। मानव शरीरमें भी यह प्रक्रिया हो सकती है। इस तरह, सल्फेटोंमें, सम्भवत **काली सल्फ** सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काम करता है; क्योंकि यह कोषों और उनके दरम्यानी तरलमें, पेशियोंमें, वातनाड़ियोंमें, त्वचाके भीतरी परत, और, रक्त-कणोंमें पाया जाता है, यह प्राणवायु सञ्चारक है। रक्त-कणोंमें जो लोहा पाया जाता है, वह भी प्राणवायु सञ्चारक है, **काली सल्फ** और आयरन परस्पर मिलकर उसे प्रत्येक क्षेत्र तक पहुँचाते हैं। अपनी उन्नति और विकासके लिए, प्रत्येक क्षेत्रको प्राणवायुके बलदाता प्रभावकी आवश्यकता है। जब यह प्रक्रिया निरन्तर होती है, तो उन कोषोंका सजीव आधार भी प्राणवायुमय हो जाता है। तब उनके अंगभूत, जिस स्थानमें, और, जिस सीमा तक, **काली सल्फ**की कमी पड़ती है, उसके अनुसार निम्नलिखित लक्षण आते हैं।

भारीपन, और थकानकी अनुभूति, सरमें चक्कर आना, सर्दी लगना, धड़कन, भय, खिन्नता, दाँतदर्द, सरदर्द, अंगोंमें वेदना, यह वेदना रुक-रुककर आती, और, जगह बदलती रहती है। ये दर्द बन्द घरमें, गरमाईसे, शामके समय, ताजी, खुली हवामें—जहाँ प्राणवायु अधिक हो—बढ़ते हैं।

त्वचाके ऊपरी और भीतरी परत हीनपोषणके कारण, नष्ट होकर, अधिक मात्रामें बाहर निकलते हैं। यदि **काली सल्फ** द्वारा पीड़ित अंगतक प्राणवायु पहुँचायी जाए, तो, वहाँ नए परत बनने शुरू हो जाते हैं, और इन नए परतो की क्रिया तथा नवनिर्माण, बेकार परतोंका निष्कासन बढ़ा देता है।

**साधारण क्रिया :** यह औषध प्रदाहके तीसरे दर्जे, या उसके वक्री होकर लौटनेकी अवस्थामें काम आती है। चूँकि सल्फेट उस समय बनते हैं, जब तन्तुओं में प्राणवायुका सञ्चार होता है, और, पोटाशियमका विशेष कार्यक्षेत्र है

ठोस अग। इन दोनोंके संयोगसे जो लवण वनता है, वह इनकी राखका मुख्य मूल अग होता है। उस दशामें हम होम्योपैथिक पद्धतिसे, उसी दर्जेमें, इसका व्यवहार कर सकते है। जव ऊपरी परतका निष्कासन प्रचुरतासे होने लगता है, तो निम्न रोग आते हैं :

गहरे पीले रंगके **कफ जैसे स्राव,** रातको ज्वर आता है, जो **शामको वढ़ता है।** एक और विचित्र वात यह है कि लक्षण **ठण्डी, खुली हवा** में घट जाती है। एसे रोग जो उद्भेद दव जानेके वाद आए हों। यदि **फेरम फास** पसीना लानेमें विफल रहा तो, **काली सल्फ** पसीना ला देता है।

# चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** डरता है कि गिर पड़ूँगा। **अत्यधिक चिड़चिड़ा;** शामको व्याकुलता आए, मानसिक परिश्रम करनेसे कष्ट वढता है, हर समय जल्दीमें रहता है। **लज्जाशील।**

**सर और खोपड़ी :** सरमें चक्कर आता है, विशेषत. देखने और खडा होनेपर। सरदर्द जो गर्म घरमें, और, शामको वढे, ठण्डी या खुली हवामें घटे। वाल झड़ें; गजके, दाग; गठियावातसे आया सरदर्द जो शामको, और, गर्म वातावरणमें शुरू हो; सरको इधर-उधर हिलानेसे, या, पीछेकी तरफ करनेसे कष्ट वढे। खोपड़ीसे रूसी अधिक झडे; खोपडी तर और लेसदार। रूसी झडे; गज।

**आँख :** मोतियाविंद, स्वच्छ तालका धुँधलापन; पपोटोंपर आँखसे **गहरे पीले**-से या हरे-से रंगका, पीव जैसा कीचड आए, स्वेत पटल प्रदाह; वाल अभिष्यन्द (वच्चोंकी आँख आना); कनीनिकाका नासूर, अगले पर्देमें पीव आना।

**कान** . कर्ण गह्वरमें रक्त अधिक आ जानेसे, या कानकी मध्यनालीके नजले या सूजनसे आया वहरापन। कष्ट गर्म घरमें वढे, जीभपर गहरे पीले रगका, चिकना मैल आए। कान दर्द जिसके साथ पानी-सा पतला, या, **गहरे पीले रग**का मवाद आए। प्रदाह आनेके वाद **पतला, चमकदार, पीला** या, हरे-से रगका स्राव आए (**कल्के सल्फमे गाढ़ा,** पीव जैसा, स्राव आए), कानके नीचे तेज़, कटनके साथ दर्द आए, तनाव स्तनकाकार प्रवर्द्धनके नीचे सूई गडने जैसा दर्द। कई मुँह वाले नासूरका स्राव जो कानके छेदको वन्द कर दे। कानसे दुर्गन्धित स्राव हो।

**नाक** . जुकाम जिसमें गहरे पीले रगका, चिकना स्राव, आए, या पानी

जैसा मवाद गिरे। शामके समय, ओर, गर्म घरमें आमतौरपर कष्ट वढे। नाकसे गहरे पीले-से, हरे रंगका स्राव गिरे। यदि **फैरम फास** खुलकर पसीना न ला सका हो, और, चमडी अव भी सूखी हो, तो, यह औषध काम देती है। पुराना नजला जिसमें पीताभ, लेसदार स्राव आए। नाक वन्द हो जाए, और, नथनोंसे पीला-सा स्राव आए। सूघनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है। **पीनस।** नाकमें खुजली हो।

**चेहरा :** चेहरेका दर्द जो गर्म घरमें, और शामको वढे, ठण्डी, या खुली हवामे घट जाए। चेहरा, पीला, लाल, विगडा हुआ, कैंसर।

**मुँह :** निचला होठ फूल जाता है। निचला होंठ खुश्क और उससे वडी-वडी पपडिया उतरें। मुँहमें जलके साथ गर्मी।

**जीभ :** गहरे पीले रगकी, चिकनी मैल आए, कभी-कभी किनारे सफेदसे हों। स्वाद गदा, कसैला। होठ, जीभ और मसूढे सफेद; कोई स्वाद न आए।

**दाँत :** दर्द जो गर्माईसे, और शामको वढे, ठण्डी, खुली हवामें घटे; मसूढोंकी पुरानी वेदना।

**गला :** खुश्क, **घुटन हो**, खखारमें कफ आए, टॉंसिल फूले हुए। निगलना मुश्किल। नाक और गलकोपकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ भर जाती हैं; विशेपतः ग्रन्थियोंके आपरेशनके वाद। मुँहसे सास ले। खर्राटे भरे।

**आमाशय :** आमाशयमें जलनके साथ गर्मी, जलनके साथ प्यास, मतली, कै, जीभ गन्दी। अजीर्ण, इसके साथ यह जान पडे जैसे आमाशयमें वोझ रखा है, या आमाशय भरा हुआ है। दर्द हो, मुँहमें लार आए। आमाशय में भारी दुर्वलताकी अनुभूति जैसे मुर्च्छा आ जाएगी। अन्त्रशूलमें हितकर है, जवकि **मैग्नेशिया फास** विफल रहा हो। अमाशयकी गहराईमें दर्द हो। आमाशय ज्वर जो शामको आए, और, सुवह घट जाए। प्यासका अभाव; गर्म पेयमे डरे। आमाशय-पाकाशय नजलेके कारण आया पीलिया।

**पेट और पाखाना :** अतिसार जिसमें पीला, चिकना, पानी-सा, पीव जैसा मल आए, जवकि जीभपर भी पीली और चिकनी मैल हो। आन्त्रशूल जैसा दर्द। छूनेसे पेट ठण्डा लगे। अफारेके कारण आए आन्त्रशूल जैसे दर्द, जो अधिक गर्मी, जोश या पेटको एकाएक ठण्डक लगनेसे आए। अपानवायुसे गधक जैसी गध आए। दस्त आए और शूल हो। पुराना कब्ज, पाखाना जाते समय मलान्त्र और मलद्वारमें दर्द हो। वाहरी और भीतरी खूनी ववासीर जिसमें जीभ और स्रावकी रगत पीली, चिकनी हो। टायफायड और आन्त्रज्वर जो शामको वढे, और, सवेरे घटे। अफारा, मरोड और अन्त्रावरण

प्रदाहका पूर्वरूप। पेट तना हुआ; ठण्डा। मलद्वारमें भयानक खुजली; सुई गड़ने जैसा दर्द और ऐंठन। हैजेके लक्षण; मल काला, पतला दुर्गन्धित, आरक्त ज्वरके बाद आया वृक्क प्रदाह।

**कामांग :** सुजाक जिसमें चिकना, पीला, या, हरे-से रंगका मवाद आए। लिंगमुण्ड प्रदाह; पुराना सुजाक। अण्डप्रदाह जो सुजाक दब जानेके बाद आया हो।

लकोरिया जिसमें पीला, हरिताभयुक्त, चिकना, या, पानी-सा स्राव आए। ऋतु बहुत देरमें, और, बहुत कम आए, इसके साथ पेटमें बोझकी अनुभूति, जैसे भरा हुआ है। सरदर्द और जीभ पर गहरे पीले रंगकी मैल। आतशक, जिसका कष्ट शामको बढ़े। बच्चेदानीसे रक्त आए, पेड़ूमें नीचेके तरफ दबाव। कामांगोंमें जलन।

**मूत्र :** पुराना मूत्राशय प्रदाह। पेशाब दर्दसे आए; और, रातको अधिक आए; बूंद-बूंद आए। अलब्यूमन आए; लेसदार तलछट अधिक आए।

**श्वास-प्रणाली :** दमा जिसमें गहरे पीले रंगकी कफ आए, जो गर्म मौसममें या, गर्म वातावरणमें बढ़े। ब्राकाईटिस जिसमें कफ गहरे पीले, या, हरे-से रंगका, चिकना, पानी जैसा और अधिक आए; खासी शामको बढे और उसके साथ गर्मी आए। नमोनिया, कफ छातीमें घडघडाए, परन्तु थूक न सके; कफके साथ पतला मवाद भी आए। कफ फिर भीतर फिसल जाए, और, आमतौर पर निगल लिया जाता है। क्रूप जैसी कडी, सूखी खासी। गलकोषमें थकानकी अनुभूति, **छातीमें भारीपन, घड़घड़ाहट और उसके साथ खासी हो।** नज़लेकी खासीका तीसरा दर्जा जिसमें पीले रंगकी कफ अधिक आए। क्रूप जैसा स्वरभंग, बोलनेसे थकान आए। सर्दीके कारण आया स्वरभंग। काली खाँसी जिसमें गहरे पीले रंगका चिकना कफ आए। नमोनिया जिसमें सीटी बजने जैसा आवाज आए, जिसमें पीला, पतला कफ आए और छाती घड़घडाए, या पानी-सा पतला कफ आए। गर्म वातावरणमें दम घुटता-सा जान पडे। ठण्डी हवाकी इच्छा।

**रक्त-संचार :** नाडी तेज और पेड़ूके ऊर्ध्व भागमें तपकनके साथ, छेद होने जैसा दर्द। नाडीका मुश्किलसे पता चले। सारे शरीरमें **फड़कन** हो।

**कमर और हाथ-पाव :** कमर, गर्दनके पिछले भाग, या, अगोंमें स्नायुशूल, या गठियावातका दर्द, जो समय-समय पर आए, शामको या गर्म घरमें बढे, और निश्चय ही ठण्डे वातावरणमें घटे। जोडों या

शरीरके किसी भी भागमें गठियावातका दर्द जो **जगह बदले**; एक जगह स्थिर हो जाए, फिर कहीं और चला जाये, जबकि ह्रास-वृद्धिके विचित्र लक्षण भी मौजूद हो। जोडो पर छत्ते जैसा प्रदाह आए। ऊपर और नीचे के अगोंमें मरोडके साथ दर्द। परतदार दाने जो अधिकाशतः बाजुओं पर निकले, गर्म पानीसे घटे।

**स्नायुजाल :** विविध अगों या भागोंमें स्नायुशूल जो आधी रात तक हो। यह औषध पसीना लाती है, इसलिए वार-वार देनी चाहिए, और, साथ ही गर्म कपडा ओढा देना चाहिए। वारीके ज्वर जिनमें जीभ पीली और चिकनी हो। रक्त दूषित होने, आमाशय, या अन्तडियोकी खरावीसे आनेवाला ज्वर, टायफायड, आरक्त ज्वर; जव खाल उधड रही हो, और पसीना ठण्डा आता हो।

**त्वचा :** छाले, फोडे, दाने जिनमें हरे-से पीले रगका मवाद आए, और ऊपर पतला खुरण्ड आए, जो यों ही नाम मात्रके लिए सटा हुआ हो। वादमें वहाँ कीलदार फुन्सिया निकलती हैं, खुरण्ड सूख कर उतर जाता है, और, वहुत-सी रूसी झडती है ( वर्नस्टील )। त्वचाकी निष्क्रियता जव रोगी विस्तरमें लेटा हो तो यह दवा गर्म पानीमें घोलकर दें और कम्वल उढा दें। त्वचाके ऊपरी परतोंका कैंसर, जिससे पतला, पीला, पानी-सा पतला मवाद आए। एग्जिमा जिससे पीला या हरा-सा पानी-सा मवाद आए और जव यह मवाद सहसा दव गया हो। चेचक, या लाल ज्वरके दानों, या एग्जिमाका सर्दी या किसी और कारण से, सहसा दव जाना, जवकि त्वचा खुर्दरी और सूखी हो। छालों वाला विसर्प, यह दवा खुरण्ड उतारनेमें सहायता करती है। जलन और खुजली वाले दाने। नाखूनोंके रोग, उनका विकास रुक जाये **( साईलीशिया )**, त्वचासे रूसी झडे, जवकि उसकी तह लेसदार हो। फोडे जिनमें पीला, पानी-सा मवाद भरा हुआ हो। उसके आसपासकी चमडी उधड जाये। ईरी जहर या शीतपितका कुप्रभाव, चेचकमें खुरण्ड उतारती है और वहाँ स्वस्थ चमडी लाती है। हथेलियोंकी दाद। वालकोंकी त्वचाका लग या फट जाना, पुरानी दाद, टी० वी० के घाव जिनसे पीली पीव निरन्तर वहती रहे।

**तन्तु :** वडा लक्षण है • **शामके समय कष्ट बढ़ना,** और, **ठण्डी हवामें** घटना।

**गर्म घरमें कष्ट अधिक हो जाता है।** श्लैष्मिक झिल्लियोंसे गहरे पीले रगका, लेसदार और चिकना स्राव आना भी मुख्य लक्षण है।

**होम्योपैथिक तथ्य :** कोई नियमित परीक्षण नही हुये, परन्तु वडी

मात्राएं देकर, और ऐलोपैथिक साधनोंसे, कुछ संक्षिप्त लक्षण मिले हैं; और ये **ऐलेनके इन्साईक्लोपीडिया** खण्ड ५ और १० में तथा **गाईडिंग सिम्पटम्स**के खण्ड ६ में दिए गए हैं। वे सव यहाँ शामिल कर दिये गये हैं।

**व्यवहार :** डा० शुसलरने १२ X और ६ X, के व्यवहारकी सिफारिश की है। इनसे सर्वोत्तम परिणाम मिले हैं। ज्वरकी दशामें इसकी मात्रा वार-वार देनी चाहिए। रूसी झडने और खोपडीके रोगोंमें इसके ऊपरी व्यवहारको भी सिफारिश की गयी है। यह औषध **काली म्योर** द्वारा शुरू किए हुए कामको पूरा करती है।

**सम्बन्ध : काली सल्फ**का निकटतम साथी **पल्सा** नजर आता है। इन दोनोंका तुलनात्मक अध्ययन वहुत विचित्र है, क्योंकि दोनोंके अनेक लक्षण मिलते-जुलते हैं। इन दोनोंमें :

गरम घरमें लक्षणोंका वढ़ना पाया जाता है। ठण्डी और खुली हवामें दोनोंके कष्ट घट जाते हैं। दोनोंमें श्लैष्मिक झिल्लियोंसे गहरा पीला, पीव जैसा स्राव आता है, कभी-कभी पीला-सा हरा स्राव भी आता है; जीभ पर पीली, चिकनी मैल आती है। पेट जैसे भरा हुआ है, और, वोझ की अनुभूति; दोनोंमें ही ऐसा सुजाक पाया जाता है जिसमें गहरे पीले रग का, या, पीले-से हरे, रंगका कोमल स्राव आता है। खाँसीमें पीली कफ आती है। साधारण सर्दीसे दोनोंमें स्वरभग आ जाता है। दोनोंके दर्द रातको, और, गर्मीसे वढ़ते है। ठण्ढी खुली हवामें घट जाते हैं। धडकन। दोनोंमें ही भ्रमणशील—जगह वदलने वाले दर्द आते हैं।

**पल्साटिल्ला**का रासायनिक विश्लेषण होनेसे पता चला है कि उसके अगभूत, मौलिक तत्त्वोंमेंसे **काली सल्फ** भी एक है। इसके अतिरिक्त उसमें **काली फास** और **कल्केरिया फास** भी पाये जाते हैं। इसमें श्लैष्मिक झिल्लियोंके जो लक्षण पाए जाते हैं, वे सम्भवत. **काली सल्फ**के कारण हैं। मानसिक और वातनाडियोंके लक्षण **काली फास**के कारण हैं। परन्तु निश्चय ही, ये सव वातें अनुमान और कल्पना मात्र हैं। ये अनुमान केवल अधिक अध्ययन और पर्यवेक्षणका आधार मात्र हैं।

**काली सल्फ**, आमतौर पर **काली म्योरके** वाद अच्छा काम करता है। खुजली और चमडी की लालीमें **ऐसेटिक ऐसिड, आर्स, कल्के कार्व, डोली-कस, हीपर, पल्स, सिपिया, रस, साईलीशिया, सल्फर, थुर्टिकासे** तुलना करें।

बहरापन, पेट दर्द, छातीमें घड़घड़ाहट और अधिक कफ आनेमें **नेटरम म्योर**से तुलना करें ; परन्तु याद रखें कि **नेटरम म्योर**के स्राव अधिक पतले होते हैं ।

---

## मैग्नेशिया फॉस्फोरिका ( Magnesia Phosphorica )

**पर्याय :** मेग्नेसियम फॉस्फोरिकम ।

**साधारण नाम :** फॉस्फेट ऑव मेग्नेशिया ।

**रासायनिक तत्त्व :** फार्मूला : Mg HPO4, 7H2O

फॉस्फेट ऑव सोडाको सल्फेट ऑव मेग्नेशियामें मिलाकर इसे तैयार किया जाता है। इसके कण षट्कोण, सूई जैसे होते हैं। ये ठण्डे होते हैं, इनका स्वाद कुछ मीठा-सा होता है। ये कण प्रायः पानीमें नहीं घुलते ३२२ भागमें बहुत दिनों तक पड़े रहनेके बाद घुलता है। उबालनेसे यह नष्ट हो जाते हैं। यह खाद्यान्नोंमें पाया जाता है और बीयरमें काफी मात्रामें मिलता है।

**तैयारी :** यह नमक होम्योपैथिक फार्मेसीके नियमोंके अनुसार तैयार किया जाता है।

**शारीरिक-रासायनिक तथ्य :** यह नमक पेशियों, वातनाड़ियों, हड्डियों, दिमाग़ ( विशेषतः धूसर वर्णीय पदार्थमें ), रीढ़, वीर्य, ( विशेष रूपसे ), दाँतों, और रक्त-कणोंमें पाया जाता है। जब इस लवणके कणोंके सञ्चारमें विघ्न पड़ता है, तो उसके परिणामस्वरूप ऐंठन, दर्द और लक़वा आता है। शुसलरका मत है कि **मैग्नेशिया फास**का असर, और, कार्य लोहेके विपरीत है। जब लौह-कणोंके संचारमें विघ्न पड़ जाता है, तो पेशियों के तन्तु ढीले पड़ जाते हैं, परन्तु मैग्नेशियमके कणोंके संचारमें विघ्न पड़नेसे उनमें सुकड़ाव आता है। यही कारण है कि यह ऐंठन, मरोड़, आक्षेप, कमेड़े और अन्य स्नायविक विकारोंमें लाभ करता है।

**साधारण कार्य :** यह उन रोगोमें हितकर है जिनका मुख्यतः केन्द्र स्नायु कोष, या, उनके अन्तिम गोल सिरे, या पेशिया, या पेशी-तन्तु हैं। जलन के साथ आने वाले दर्दोंको छोड़कर, यह दवा सभी दर्दोंमें हितकर है। विशेषकर उन दर्दोंमें उपयोगी है जो ऐंठनके साथ आते हैं। भाला लगने

की तरह ऐंठनके साथ आने वाले, छेद होने जैसे, विजली की-सी तेजीसे आने वाले दर्दोंमें लाभदायक है, जबकि सुकडाव या घुटन आनेकी अनुभूति भी हो। ये दर्द प्रायः अपनी जगह वदलते रहते हैं, **गर्मी और दवावसे घट जाते है**। यह दवा **ऐंठन**को हटाती है; अतएव साँसकी नालीके मुँहके आक्षेप, धनुषवात, मृगी, आदिके दौरोंमें, आक्षेपके साथ पेशावका रुक जाना और कम्पवातमें लाभदायक है।

यह औषध दुवले-पतले शरीर वालों और वातप्रकृति वालोंके लिए **सर्वाधिक** लाभदायक हैं। जिनका रग हल्का है, उन्हें, और शरीरके दाए भागको यह औषध विशेषता देती है। आम ठण्डक अनुकूल है, जवकि गर्मी और दवावसे इसके असरमें वाधा पडती है। अतएव रोगीको इनसे आराम मिलता है। रोगके आक्रमणके साथ आमतौरपर भारी थकान और कभी-कभी पसीना आता है। **मैग्नेशिया फास**का रोगी हारा-थका, सुस्त, निढाल और वैठनेमें असमर्थ होता है। फिर चाहे उसका रोग नया हो या पुराना।

# चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** ज्ञानेन्द्रियोंका भ्रम, भुलक्कड, जाड्यता, स्पष्ट सोचनेमें असमर्थ, दिमागी या शारीरिक काम न करना चाहे, सिसकिया भरता रहे, पश्चात्ताप करे। हर समय दर्दके वारेमें शिकायत करे, इसके साथ हिचकिया आएं। अपने-आपसे वातें करे, या विलकुल चुपचाप वैठा रहे। चीजें एक जगहसे दूसरी जगह उठा कर रखता रहे।

**सर और खोपड़ी :** वच्चोकी दिमागी खराविया इसके साथ वेहोशी और कमेडेके लक्षण। सर दर्द; जैसे गोली लगी हो, भाला लगा हो, छुरी लगी हो; जगह वदलने वाला दर्द, ठहर-ठहर कर दर्द आये, आक्षेपके साथ आए, दौरेके रूपमें आए; स्नायविक शूल; **यह दर्द सदा ही गर्माईसे घटे।** स्नायविक सर दर्द; और इसके साथ आँखोके आगे चिनगारिया झडें। सरमें वहुत तेज दर्द; नौजवानों और वलिष्ठ शरीर वालोंको अधिक हो, स्कूलमें पढ़ते समय निरन्तर हो, **दिमागी काम करनेके वाद हो**; कोई हानिकर उत्तेजक पेय पीनेके वाद सर दर्द आए। चन्दियापर और सरके पिछले भागमें दर्द जो रीढ तक फैल जाए, कंधोंके दरम्यान अधिक जोर हो। सर दर्द जो सरके पिछले भागसे शुरू होकर, सारे सरपर फैल जाए।

इसके साथ मतली हो, और, सर्दी लगे। खोपड़ी जैसे खुरदरी है; रूसीकी अधिकता, पीब वाली फुन्सियां।

आईओवा युनिवर्सिटीमें जो परीक्षण हुए, उनसे जान पड़ता है कि दर्द आमतौरपर सरके बाएं हिस्सेमें आता था, सरको जल्दी-जल्दी आगेकी ओर झुकानेसे या झटका आनेसे दर्द बढ़ता था। दबावसे किसी हद तक आराम आता था, **खुली हवामें चलनेसे आमतौरपर आराम आता था।** अधिकांश हालतोंमें सरमें चक्कर भी आया। ३ परीक्षकों को यह भी अनुभव हुआ जैसे सरके भीतरी अंग इधर-उधर लुढ़क रहे हैं, या जैसे दिमाग़के अंग अपनी जगह बदल रहे हे।

**आँखें :** निगाहपर असर आया; तरह-तरहके रंग दिखायी दें। चिनगारियां झड़ें, प्रकाश सहन न हो, एकके दो दिखायी दें, पुतलियां सुकड़ जाएं। दृष्टि नाडी या उपतारेके विकारके कारण निगाह मन्द पड़ जाएँ। काले धब्बे उड़ते दिखायी दें। आक्षेपयुक्त भैंगापन, आँखका अण्डा निरन्तर घूमता रहता है। पपोटे झूल जाते हे, पपोटोका लकवा। पपोटोंमें झटके आएँ। **आँखके गोले और उसके ऊपरी भागका स्नायुशूल जिसका दायीं ओर अधिक जोर हो और गर्माईसे घटे।** स्पर्शकातर। आँसू अधिक आएं और दर्द हो। पपोटोंको खुजली। चक्षुताल प्रदाह। आँख आसानी से थक जाये। केवल कुछ ही पंक्तियां पढ़ सके। पपोटे भारी, जैसे इन पर बोझ रखा है।

**कान :** श्रवण नाडीकी दुर्बलतासे आया बहरापन। कानका दर्द जो शुद्ध स्नायविक हो। गर्मीसे घटे। दाएँ कानके पीछे स्नायविक शूल जो ठण्डी हवामें जानेसे तथा **चेहरा और गर्दन ठण्डा पानीमें धोनेसे कष्ट बढ़े।** "कानके भीतरी भागकी सभी बीमारियोंमें इसपर ध्यान देना चाहिये"—( कोपलैण्ड )।

**नाक :** नजलेकी शिकायतके बगैर ही, सूघनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है, या पलट जाती है। नथनोंका बारी-बारीसे बन्द होना, और बहना, सहसा डंक लगनेसे जैसा दर्द और कच्चापन, जो दायें नथनेमें अधिक हो। सर्दी-जुकाम जो बारी-बारीसे सूख जाए, और, बहे।

**चेहरा :** आँखके ऊपर और नीचेका स्नायुशूल। चेहरेका स्नायुशूल; दर्द बिजलीकी तरह आए, रुक-रुक कर आए, सदा ही गर्माईसे घटे, छूनेसे, दबावसे, ठण्डकसे बढ़े, दाईं ओर जोर हो। दोपहर बाद २ बजे और बिस्तारमें भी दर्द बढ़ जाता है। स्नायुशूल जो आँखके निम्न छिद्रसे शुरू होकर अगले दाँतों तक आए, और वहाँसे धीरे-धीरे चेहरेके सारे

दायें भागमें फैल जाए, छूनेसे, मुँह खोलनेसे, ठण्डी हवासे और शरीर ठण्डा होनेसे दर्द बढ़ जाता है। हाथ-मुँह धोने, कपडे धोने, या ठण्डे पानीमें खड़ा होनेसे भी दर्द आ जाता है। उत्तरकी ठण्डी हवा भी दर्द लाती है। डा० वैरिज ने इस दवासे, ऐसा दर्द दूर किया जो दायी ओर के ऊपरी जवडेसे शुरू होकर सारी पेशानी तक फैल जाता है।

**मुँह :** मुँहके कोणोंमें आक्षेपपूर्ण खिचाव आए। निचले जवडेके जोडमें खिचाव या सुकडावकी अनुभूतिके साथ दर्द, इसके साथ पीछेकी ओर झटके आए। आक्षेपपूर्ण तुतलाहट, हनुस्तम्भ, दाँदन ( दाँत पडना ), मुँह सूखा और लेसदार लार ; होठोंके किनारे फट जाए।

**जीभ :** आमतौर पर साफ रहती है, और, पेट दर्द। सफेद मैल और अतिसार। मल चमकदार लाल और मुँहमें कच्चापन, बायी ओर सन्तापपूर्ण कष्ट ; सहसा डक लगने जैसा दर्द जैसे गले-सडे घाव हों, खाते समय कष्ट हो, जैसे मुँह गरम पानीसे जल गया है।

**दाँत :** छूना और ठण्डी हवा सहन न हो। ठण्डे पानीसे ब्रश न कर सके ; दाँत दर्द जो लेटनेके बाद बढे, और अपनी जगह बडी जल्दी-जल्दी बदले। यह दर्द ठण्डी चीजोंसे, ठण्डे पानीसे कुल्ले करने से बढे, **गर्मी और गर्म पेयसे घटे** ( यदि ठण्डसे घटे—**फैरम फास, ब्राईओ॰ काफे** ) **टूटे या हिलते, या भरे हुए दाँतमे असह्य वेदना** हो। दाँतके घाव, इसके साथ गले, चेहरे और गर्दनकी ग्रन्थियों तथा जीभ **पर सूजन आए। दाँत निकलनेके दिनोंके बाल रोग**। ज्वरके बगैर आक्षेप।

**गला :** गिल्हड। सन्तापपूर्ण कष्ट और अकडन, विशेषतः दायी ओर। पीड़ित अग जैसे फूल गए हैं, इसके साथ **सर्दी लगे,** और निरन्तर वेदना। निगलते समय दर्द हो जो गर्दनके पिछले भाग तक जाए। निगलना पडे। हल्क़में नजला टपके, इसके साथ छींकें आएँ और गलेमें खुरदरापन। सासकी नलीके मुँहका आक्षेप। तरल चीज निगलनेकी चेष्टा करने पर आक्षेपपूर्ण घुटन और साथ ही दम घुटनेकी आशका। एक परीक्षकने गलकोपसे कफ जैसा मवाद भी थूका।

**आमाशय :** अम्ल चीजें सहन न हों, काफेसे अरुचि, चीनी खाने की इच्छा। **हिचकी**, दिन-रात उबकाइया आए। दुराग्रही हिचकी जिसके बाद बहुत देर तक सन्तापपूर्ण कष्ट हो। खाये-पियेकी उल्टी। जलन, स्वादहीन डकार, गर्म पानी पीनेसे आराम आए, कलेजेमें जलन, आमाशयशूल जबकि जीभ साफ हो, गर्माईसे और दोहरा हो जानेसे

आराम आए। पेटके ऊपरी भागको छूनेसे दर्द बढता है, और, ठण्डा पानी पीनेसे लौट आता है। आमाशयमें आक्षेप, दर्द ऐसे हो जैसे शरीरके चारों ओर रस्सी बाँध दी गयी है। अफारा, जिसके साथ सुकडावके साथ दर्द हो। अफारेके साथ मन्दाग्नि मतली और कै।

**पेट : आन्त्रशूल, अफारेके कारण दर्द जिसके मारे रोगीको दोहरा हो जाना पड़े, पेट रगड़नेसे हरारतसे दबावसे घटे; इसके साथ हवाके डकार आए जिनसे कोई आराम न मिले।** हवा खारिज न हो, पेटमें गडगडाहट हो और डकार आए। **बच्चों और नवजात शिशुओंका पेट दर्द।** पेट दर्दके कारण भारी व्याकुलता आए। दर्द नाभिसे चारो ओर फैले, अंगडाई लेनेसे दर्द बढे। प्राय. हर दर्दके साथ अतिसार भी आता है। टागें फैलाकर चित्त न लेट सके, घुटने समेटने पडते हैं। **अफारा, ऐसा जान पड़े जैसे पेट फूल गया है कपड़े ढीले करने पड़े, इधर उधर टहलना पड़े,** हवा निरन्तर निकलती रहे। परीक्षकोंको मरोडके साथ पाखाना जानेसे पहले दर्द आया। पाखाना जानेके बाद भी दर्द जारी रहा, और, दबावसे आराम आया।

**पाखाना :** अतिसार **मल पानी-सा पतला,** इसके साथ कै और पिण्डलियोंमें ऐंठन हो, सर्दी लगे, और, आमाशयमें शूल हो। मल बडे जोरसे निकले, पेचिश जिसमें ऐंठनके साथ दर्द हो, पेशाब रुक जाए। खूनी बवासीर जिसमें कटनके साथ, बिजली की-सी तेजीसे दर्द आए, जो बेहोश बना दे, यह दर्द पेट और मलान्त्रमें अधिक तेजीसे आए। हर बार जब पाखाना हो, मलान्त्रमें दर्द आए। पेटकी पेशियोंमें बहुत देर तक आक्षेपके साथ दर्द जारी रहे। शिशुओंकी कब्ज, जिसमें हर बार मलत्याग की चेष्टा करने पर आक्षेपके साथ दर्द हो। दर्दके कारण बच्चा तेज चीख मारे। पेटमें हवा अधिक आए, गडगडाहट हो, और हवाके कारण दर्द हो। सभी परीक्षकोंमें कब्ज आमतौर पर आई। सख्त, गहरे भूरे, रंगके सुद्दे आए, जो बहुत मुश्किलसे निकले।

**मूत्र-प्रणाली और कामांग :** जबतक खडा रहे या चलता रहे तो पेशाबका निरन्तर वेग बना रहे। मूत्राशयका आक्षेप, बच्चेको पेशाब अधिक मात्रामें आए। पेशाबकी आक्षेपपूर्ण शिकायतें, आक्षेपके साथ पेशाबका रुक जाना, मूत्राशयकी गर्दनका आक्षेप, वेदनापूर्ण वेग, स्नायविक क्षोभके कारण रातको पेशाब अपने-आप निकल जाए। केथेटर व्यवहारके बाद आया मसानेका स्नायविक शूल, फॉस्फेट कम या अधिक आए, रेत आए, कामेच्छा बढ जाती है।

**स्त्री जननेन्द्रिय : कष्टरज :** रज आनेसे पहले दर्द हो ; रुक-रुक कर दर्द आए, जिसका जोर दायीं ओर अधिक हो , गर्मीसे भारी राहत मिले। डिम्बशूल ; विशेषतः दायी ओर आक्षेप ( परिप्लुवा योनि ), डिम्ब प्रदाह, **कष्टरज जिसमे झिल्लियाँ आएँ** ( वहुत-से केस ठीक हुये हैं )। मासिक धर्म समयसे वहुत पहले आए ; रगत गहरी ; तन्तुमय , रेशेदार। वाह्यागों पर सूजन आती है। सारे पेड़ पर ऐंठनके साथ भयानक दर्द , दोनों ओर कमरके निचले भागमें तेज दर्द। वच्चेदानी सुकड़ती हुई छूई जा सके, और, खून वडे जोरसे निकले। सेंक देनेसे तत्काल आराम आए। खूनकी रंगत गहरी, छिछडेदार ; रुक-रुककर आए।

**गर्भकाल :** आक्षेपपूर्ण प्रसव वेदना जिसके साथ अंगोंमें भी ऐंठन आए , ऐंठनके साथ दर्द , वच्चेको वाहर निकालनेके लिए विशेष प्रयत्न करना पडे। प्रसवकालीन कमेडे ( अन्तरकालीन औषध ), सुकडी हुयी वच्चेदानीको ढीला करती है। रुकी हुयी आवल-नालको निकालती है।

**श्वास-संस्थान :** दमा जवकि कष्टकर अफारा भी हो। हवाकी नाली का आक्षेपके साथ वन्द हो जाना , इसके साथ सहसा तेज चीख निकल जाए, छातीमें घुटन। पुरानी स्नायविक खाँसी ; सच्ची आक्षेपपूर्ण खाँसी जो दौरों के रूपमें आए, और, जिसमें कुफ न आए ; वातज कास जिसमें ऐंठनके साथ दौरे पडें, और, अन्तमें काली खाँसीकी तरह दौरा पडे , काली खाँसी जिसके दौरे रातको पडें और जो लेटने न दें। छातीमें भाला गडने जैसा दर्द, दायीं ओर इसका जोर हो , यह दर्द अन्तडियोंसे शुरू होकर चारों ओर फैले। छाती घुटे , साँस फूले ; छाती और गलेमें घुटन जिसके साथ आक्षेप आए। गुदगुदाहटके साथ आनेवाली खाँसी। साँस लेनेवाली पेशियाँ दुर्वल नजर आए। साँस छोडते समय ऐसा जान पडे कि छाती काम न करेगी। चलने-फिरने पर, हरकत करनेसे छातीका दर्द वढ़े।

**रक्त-संचार :** हृदयमें स्नायविक शूल ; स्नायविक आक्षेप ( वेहतर हो कि गर्म पानीके साथ दी जाए ), स्नायविक धडकन जवकि वह आक्षेपपूर्ण हो। दिलकी चाल आसानीसे वढ जाए। वायीं ओर लेटनेसे धडकन घट जाए। हृदयके शिखर भागको धडकन कपडोंमें से देखी जा सके।

**गर्दन और कमर :** कमरके निचले भाग और गर्दनमें सन्तापपूर्ण कष्ट , कमरके किसी भी भागमें छेद होने, भाला गडने जैसा या स्नायविक शूल। भ्रमणशील दर्द ; मोहरोंके दरम्यान स्नायविक शूल। रीढके मोहरे वेदनापूर्ण और स्पर्शकातर।

**हाथ-पाँव :** कधों और वाजुओंमें भाला गडने जैसा दर्द जिसका जोर दायीं ओर हो। जोड वेदनापूर्ण। हाथोका कम्प। वातकम्प। सरमराहट की अनुभूति। निम्नागोमें रातको स्नायविक शूल हो, अधिकाशतः पेशियोंमें आक्षेपयुक्त खिचाव आए। विस्तरमें लेटनेके वाद अगोंमें निरन्तर वेदना। अगोमें विजली जैसे झटके आएँ, इसके वाद पेशियोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट आए। पिण्डलियोंमें ऐंठन आए। गृध्रसी जिसमें कुचले जाने जैसा, आक्षेपके साथ दर्द हो। जोडोंमें तेज दर्द (गठियावातके दर्दमें अन्तरकालीन औषधके रूपमें इसका व्यवहार कराया जाता है)। घुटनों और पैरोंमे गतिका अभाव। पीव वहुत नाजुक, जरा-सा छूनेसे दर्द वढ जाता है।

**स्नायु जाल :** का पोषण करने वाली दवा है। यह उसके कार्यको सुचारू भी वनाती हैं। **शिथिल, थका हुआ, निढाल**, वैठनेमें असमर्थ, मदात्यय। रातको स्नायविक शूल आए, जिसमें पेशियोंमे आक्षेपके साथ खिचाव आए। संचालक तन्तु जालमें मूल रोगके रूपमें, आक्षेप आएँ। जागते समय सारे शरीरमें झटका आए। विजलीकी तरह तेजीसे आने वाले दर्द। कमेडा जिसमें अग या सारा ही शरीर अकड जाए, उगलिया वन्द हो जाए और अगूठा मुट्ठीके भीतर चला जाए। हिचकी, **पेशियोंमे खिचाव आए**, सारे अगोंमें खिचाव आए। मृगी जो बुरी आदतों और दुश्चरित्रताका परिणाम हो, आक्षेप आए, अगोंमें अकडन आए, नाक वन्द हो जाए, और, मुट्टी वॅध जाए। वातकम्प, अग, हाथ या सर कापे। स्नायु-तन्तुओंका लक़वा। लिखने वालों, पियानो या वायोलिन वजाने वालोंके हाथमें ऐंठन आए। धनुपवात; दाँत वन्द होना (मसूढों पर मल दें)। ऐंठन या कमेडेके समय सुवकिया ले। आइओवा कालेजमें जो परीक्षण हुए उनसे प्रतीत हुआ है कि यह औषध स्नायु केन्द्रोंको प्रभावित करती है, और, उन्हें अशक्त वनाती है।

**नींद :** आक्षेपके साथ जभाइया आए। थकान, या, दिमागके दूषित परिपोषणके कारण आयी अनिद्रा, ऊँघ कष्टकर स्वप्नोंके कारण नींदमें विघ्न पडे, या गर्दन और सरके पिछले भागमें दर्द होनेसे नींद ठीक न आए।

**ज्वर :** वारी के ज्वर जिनमें पिण्डलियोंमें ऐंठन हो। दोपहरका भोजन करनेके वाद, शामको, शामके ७ वजेके लगभग सर्दी लगे। **सर्दी कमर पर ऊपर-नीचे चले, और कम्प आए।** इसके वाद दम घुटनेकी अनुभूति हो। सुवह ६ वजे वहुत जोर की सर्दी लगे। पित्त ज्वर। पसीना अधिक आए।

**त्वचा :** चण्डीमें जलन और डक लगने जैसा दर्द। सुजाक विषजनित खुजली। दादके दाने जिनपर सफेद परत आए। फोडे। दाने जिनमें भिडका डक लगने जैसा दर्द हो। ये दाने घुटनों, टखनों और कुहनियों पर अधिक निकलें।

**तन्तु :** आक्षेप और स्नायुशूल। स्नायविक दमा। सासकी नालीके मुँहका आक्षेप। पेशियोंमें झटके आए। हनुस्तम्भ, हानिकर उत्तेजक पदार्थोंके व्यवहारके कुपरिणाम।

**ह्रास-वृद्धि :** इस औषधके सभी दर्द **विशेषताके साथ दायीं ओर जोर पकड़ते है ; सर्दीसे बढ़ते हैं ;** ठण्ठी हवासे, हवाके झोंकोंसे, ठण्डे पानीमें नहानेसे, और, **स्पर्श**से बढते हैं। वे सदा ही **गर्मीसे, दोहरा हो जानेसे** और सहलानेसे **घट जाते हैं।**

परन्तु आई ओवरा कालेजमें जो परीक्षण हुए, उनमें दायी ओर कष्ट अधिक आया। चक्कर आना और सरके लक्षण खुली हवामें घटे।

**होम्योपैथिक तथ्य :** डा० शुसलर द्वारा उपस्थित किये जानेके बाद, डा० डबल्यू पी० वस्सलहेफ्ट और डा० जे० ए० गाना आदिने भी इसके परीक्षण किए। उनमें डा० शुसलर द्वारा बताये गये मुख्य लक्षणोंकी वृद्धि हुयी। इस तरह यह औषध बहुत अधिक व्यापक, और, शानदार बन गयी। डा० एच० सी० ऐलनने इन सारे परीक्षणोंको नियमित रूपसे सम्पादित किया है, और, दिसम्बर १८८६ के **"मेडिकल एडवास"** में प्रकाशित किया है। हमने उनमें जिन लक्षणोंको विश्वस्त और सरक्षणीय समझा वे सब यहाँ दे दिए गये हैं। डा० हेरिंग द्वारा लिखित **'गाईडिंग सिम्पटम्स'** खण्ड ७ में भी इन लक्षणोंकी चर्चा की गयी है। १६०६ में आइओवा स्टेट युनिवर्सिटीके होम्योपैथिक डिपार्टमेंटके आठ छात्रोंने **मैग्नेशिया फॉस**के परीक्षण किये थे। उनके अधिक महत्त्वपूर्ण भाग यहाँ दे दिए गए हैं।

**व्यवहार :** डा० शुसलरने ६ X विचूर्णकी सिफारिश की है। उन्होंने यह भी सिफारिश की है कि यदि यह दवा गर्म पानीमें दी जाए तो अधिक अच्छा काम करती है। अनेक चिकित्सकोंने इस बहुमूल्य सकेतको तसदीक की है। अनुभव और परीक्षणोंसे यह भी सिद्ध हुआ है कि यदि ६ X विफल सिद्ध हो, तो फिर, निम्न शक्तिया जैसे १ X या २ X का व्यवहार होना चाहिए।

आन्त्रशूलमें, डा० जे० सी० मार्गनने ३० X पानीमें देनेकी सिफारिश की है, और, कहा है कि ऐसी दशामें मात्रा जल्दी-जल्दी देनी चाहिए। परन्तु चूंकि परीक्षकोंने उच्च और उच्चतर शक्तियोंसे वस्तुत. आश्चर्य-

जनक और पूर्णतः विश्वस्त परिणाम प्राप्त किये, अत. उन्हें दृष्टिमें रखते हुए हम यह सिफारिश करेंगे कि जब निम्न शक्तिया काम न दें, तो फिर, उच्च और उच्चतर शक्तियोका व्यवहार होना चाहिये।

**सम्बन्ध : मैग्नेशिया फासने** सर्वाधिक ख्याति स्नायविक रोगोकी चिकित्सामें प्राप्त की है; विशेपकर स्नायविक शूलमें। **काली फास** दूसरी टिशू लवण-औषध है जिसके साथ यह इस क्षेत्रमें साझीदार है। **काली फास** मुख्यतः दिमागको **ताकत देनेवाली दवा है**। और—चिकित्सा क्षेत्रमें वह आंशिक पक्षाघातमें अधिक मिलती-जुलती है। जबकि **मैग्नेशिया फास** आक्षेपयुक्त रोगोंके लिए सिद्ध औपध है। ह्रास-वृद्धिकी आम स्थितियोंमें अन्तर है। **काली फास**के कष्ट ठण्डक मिलने से घट जाते हैं।

इस औपधका अध्ययन करते समय पता चलता है आन्त्रशूल और अन्य स्नायविक लक्षणोंमें, यह **कालेसिंथ**के अधिक समीप है। मजेदार बात यह है कि **कालेसिंथ**में ३% **मैग्नेशिया फास** है। अफारेके कारण आनेवाले आन्त्रशूलमें **डायस्कोरिया**का भी याद आती है। अन्य निकट सम्बन्धी **जेलसेमियम** है। दोनोंके परीक्षणोंमें आक्षेपयुक्त और आंशिक लकवेके लक्षणोंमें गहरा सामीप्य पाया जाता है। यही कारण है कि हिस्टीरिया, चित्तोद्वेग, और मेरुदण्डके क्षोभमें दोनोका सफलतापूर्वक व्यवहार हुआ है। कमर पर सर्दीका ऊपर-नीचे चलना दोनोंमें पाया जाता है। इस शारीरिक समूहमें **इग्नेशिया** और **नक्स मास्काटा**का आना भी स्वाभाविक है। दोनो के अफारेके लक्षणोंकी, और, **इग्नेशिया**के आक्षेपपूर्ण लक्षणोकी तुलना करनी चाहिए। **मैग्नेशिया फास** आक्षेपमें **बेलाडोना**के समान है, और, आमतौर पर इसके बाद काम आता है, जबकि **बैला** काम न कर सका हो, और पुतलिया फैली हुई हो, आखें पथरायी हुई हो, और रोगी जरा-सी आवाज पर चौंक उठता हो।

तुलना करें : भैंगापनमें, यदि वह कृमियों (चनूनों) के कारण आया हो **नेटरमफास**से, मृगीमें :—**काली म्योर, कल्केरिया फास** और **सईली से;** शरीरके दायें अगमें आनेवाले रोगोंमें . **बैल, बाईओ, चेलीडोनि, काली कार्ब, लाईकोपो, पोडोकि**। तेज दर्दोंमें **बैला** और **स्ट्रेमोनियम**को भी याद रखें।

बडी तेजीसे जगह बदलने वाले दर्दोंमें याद रखें **पल्सा, काली सल्फ, लैक कैनि**। निचोडनेकी तरह और घुटनकी अनुभूतिमें . **काकस, कल्के आयोड, सल्फर**।

समता : कष्टरज और प्रसव वेदनामें **वाईबरनम, पलसा**। परन्तु इसके विपरीत दर्द गर्मीसे घटते हैं। इस हालतमें **सिमिसीफ्यूगा** भी बहुत-कुछ तुल्य है,

परन्तु इसके **मैग्नेशिया फास**की अपेक्षा अधिक स्थायी होते हैं, जबकि **मैग्नेशिया फास**के दर्द अधिक आक्षेपपूर्ण होते हैं। ये दर्द अधिक गहरायी तक ही सीमित रहते हैं।

झिल्लियोंवाले कष्टरजमें याद रखें ; **वीरेक्स, ऐसेटिक, ऐसिड, वाईवर्नम, ओप**।

**लोवेलिया, सिम्फाईटम, स्ट्रेमोनियान** और **वाईबरन** आदि वानस्पतिक औषधोंमें **मैग्नेशिया फास** पाया जाता है, और, यही कारण है कि इनके अनेक लक्षणों में सादृश्यता है। रातको आनेवाले जो स्नायुशूल गर्मीसे घटते हैं—उनमें **आर्से** से तुलना करें। स्नायुजाल पर **जिंकम**का असर भी है—इसकी भी तुलना करनी चाहिए।

**प्रतिवर्ष : वैल, जेल्सीमियम**, लैकेसिस।

—०—

# नेट्रम म्योरियाटिकम ( Natrum Muriaticum )

**पर्याय :** सोडियम क्लोराईड, क्लोरेटम सीडिकम, नेटरम क्लोरेटम पुरम, सोडिआई क्लोराईडम, क्लोराईड ऑव सोडियम।

**साधारण नाम :** आम नमक, खानेका नमक।

**रसायनिक तत्त्वः** फार्मूला NaCl.

इस लवणको प्रकृति हर जगह बनाती है। तरल घोलसे इसके वर्ण-हीन, पारदर्शी और जलविहीन घन-कण बनते हैं। ये कण ३ भाग ठण्डे पानीमें घुल जाते हैं। उबलते पानीमें नही घुलते। शुद्ध सुरासारमें बिलकुल ही नहीं घुलते। इसका जलीय घोल उन चीजोंको घुला देता है जो आम पानीमें नही घुलते, जैसे **कल्केरिया फॉस** आदि। एक ग्राम नमकमें क्लोरीन ०.६ और नेटरम ०.४ पाया जाता है।

**तैयारी :** एक भाग शुद्ध क्लोरायड ऑव सोडियमको नौ भाग डिस्ट्रल्ड वाटर ( परिश्रुत जल ) में घोला जाता है। औषध शक्ति १।१० भाग तरल और विचूर्ण हेनीमेनके तरीकेसे बनाने चाहिए।

**शारीरिक रासायनिक तथ्य :** डा० लोवके परीक्षणोंसे प्रकट होता है कि विविध प्रकार के तन्तु-लक्षण, सोडियम पोटासियम-और-खारे लवणों के अभावमें, रक्तमें विशृंखलित हो जाते हैं। इनका स्वाभाविक अनुपात है :

सोडियमके १०० कण, पोटासियम के २.२ कण और चूना १.५। जब इस अनुपातमें कमी-बेमी आती है, तो शरीरमें विकार आ जाते हैं। यद्यपि कोषोंके निर्माणमें, इनमेंसे कोई भी नमक नहीं पाया जाता; तो भी इन कोषोंके आसपास रहनेवाले रक्तकणोंमें इन लवणका, इसी अनुपातमें, रहना परम आवश्यक ही नही, वरन् अनिवार्य भी है। क्योंकि कोष झिल्लियोंकी रक्षाका कार्य ये ही लवण करते हैं। यह रक्षात्मक कार्य "रग देना" कहलाता है। डा० लोवका मत है कि इस प्रक्रिया द्वारा कोपके भीतर स्थायी परिवर्त्तन आता है प्रतीत होता है कि शारीरिक क्रियाओंके इस सन्तुलन का मुख्य रहस्य यह है कि चूनेके लवणो और सोडियम तथा पोटास्सियम का कार्य परस्पर विरोधी है।

क्या चूने के अभावमें, अन्य लवण प्रत्यक्ष विपके रूपमें काम करते ह, या, चूनेके अभावमें कोपकी रक्षाका कार्य कमजोर पड जाता है, और, इस तरह, क्या अन्य विपयोंको शरीरमें प्रत्यक्ष उपद्रव करनेका अवसर मिल जाता है? या, क्या कोपकी दीवारोंको रग देनेकी इस प्रक्रियाके अभाव में, कोपमें तरलोंकी पहुँच अस्थायी हो जाती है? इन सब वातोंका अभी तक स्पष्टीकरण नही हुआ।

पानीको छोडकर अन्य तत्त्वोंकी अपेक्षा, प्रकृतिने नमक सर्वाधिक मात्रामें वनाया है। शरीरके सभी रसो और ठोस भागोमें यह लवण पाया जाता है। रक्तधारमें जितने भी रसायनिक तत्त्व पाये जाते हैं, यह उन सवमें अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसका अनुपात लगभग ०७% है।

साधारण रचनाके विचारसे, और, इस वास्तविकताको निगाहमें रखते हुये, कि शरीरके कोष फॉस्फेट तथा, सल्फेट आदि अन्य लवणोंकी अपेक्षा, सोडियम क्लोराईडका शोपण अधिक तत्परतासे करते हैं, लवण रसादि तरलोंको शरीरके, प्रत्येक अग तक नियमित रूपसे पहुँचानेका वडा साधन है। और, इसतरह, यह मुख्य कार्योंमेंसे एक सम्पन्न करता है; अर्थात् रक्तके गुरुत्त्व भारको एकरस रखता है। सारे मानव शरीरमें लवणकी कुल मात्रा ( वजन ) लगभग ११ औंस है। यदि दैनिक व्ययकी कमी पूरा करनेके लिए पर्याप्त और आवश्यकतासे अधिक मात्रामें खाया जाए, तो, गुर्दे उसे तत्काल वाहर फेंक देते हैं। ( टी० जी० स्टोनहम )।

कोपोंके भीतर एक विशेप और निश्चित सीमा तक आर्द्रता ( नमी ) स्थिर रखनेकी इस लवणकी क्षमताका रहस्य यह है कि उस जलको अपनी ओर आकर्पित करता है, जो पीने या खानेके साथ शरीरमें पहुँचता

है। यह जल भीतरी त्वचाके कोषोंका श्लैष्मिक झिल्लियों द्वारा रक्त तक पहुँचता है। वहाँसे यह विविध कोषों तक जाता है। इस तरह, उन्हें आवश्यक नमी पहुँचाता है। प्रत्येक कोषमें सोडा पाया जाता है, जो बढने वाली क्लोरीनके साथ शामिल रहता है। और यह क्लोरीन, उस सोडियम क्लोराईडके टूटनेसे बनती है जो कोषोंके आसपास्के तरलमें रहती है। इस तरह कोषोंके भीतर जो सोडियम क्लोराईड तैयार होता है, उसमें पानी को आकर्षित करनेकी विशेषता है। इसके परिणामस्वरूप कोष बडे हो जाते हैं और विभक्त होते रहते हैं। कोषोंका यही विभाजन उनकी सख्यामें उत्तरोत्तर वृद्धि करता है।

यदि कोषोंके भीतर सोडियम क्लोराईड न बने, तो वह पानी जो उन्हें नमी पहुँचानेके लिए था—कोषोंके मध्यवर्ती स्थानोंमें पडा रह जाता है। तब इस निष्क्रियताके परिणामस्वरूप रक्त पानीकी तरह पतला और पारदर्शी रह जाती है। ऐसी दशामें, पीडित व्यक्ति, व्यक्तिका चेहरा फूला हुआ नजर आने लगता है, वह सुस्त, तन्द्राग्रस्त, रोनी सूरत वाला होता है, और, उसे सर्दी लगाता है। विशेष्कर रीढ और हाथ-पाँव पर। उनके शरीरमें पानी अधिक सचित होता है, मुँहमें लार अधिक आती है। उसे नमक खानेकी इच्छा अधिक होती है। खानेमें यों नमककी मात्रा भले ही बढा दी जाए, इससे रोगमें कमी नहीं होगी, कारण यह है कि कोष उस लवणके कणोंका शोषण नहीं कर सकते। केवल उसी दशामें उसका शोषण कर सकते हैं जबकि वह बहुत सूक्ष्म तरलके रूपमें दिया जाए।

जब कोषोंके अन्तर्वर्त्ती तरलमें नमककी मात्रा बढ जाती है तो मुँहका स्वाद नमकीन हो जाता है, क्योंकि मुँह, जीभ और गलकोषकी वात नाडियों में क्षोभ आ जाता है। यह परिस्थिति श्लैष्मिक झिल्लियोंके स्रावको चरपरा बना देती है, या फिर खुले घाव आते हैं।

भीतरी त्वचाके परतोंके स्वस्थ कोषोंकी झिल्लियोंमें जो सोडियम क्लोराइड पाया जाता है, वह रक्त नाडियोंमेंसे पानीके गुजरनेकी क्रियाको नियमित बनाता है, और, उसे विविध गर्त्तों तक पहुँचाता है। जब लवण-कणोंकी इस प्रक्रियामें विघ्न पड जाता है—तो परिणाम यह होता है कि विविध गर्त्तोंमें पानी सचित हो जाता है। जब नमक—नेटरम म्योर-सूक्ष्म मात्रा में, औषधके रूपमें दिया जाता है, तो वह कोषोंमें उस जलको पुन. शोषित करनेकी क्षमता पैदा कर देता है।

जब आँसू या लार बनाने वाली ग्रन्थियोंकी भीतरी चर्म-परतोंमें इस लवण

के कणोंकी गतिविधिमें अन्तर आ जाता है, तो आँसूओं, या लारकी मात्रा बढ़ जाती है।

यदि दाँतों सम्बन्धी पाँचवा स्नायु गुच्छ क्षुब्ध हो, और यह विकार बढ़ते-बढ़ते आँसू ग्रन्थियो तक पहुँच गया हो, और आँसूकी ग्रन्थियोका काम सवेदनशील वातनाडियोके निस्सारक तन्तुओ द्वारा होने लगा हो—और जब इस गडबडीके कारण, इन कोषोंमें लवण-कणोंकी गतिविधिमें भी अन्तर आया हो, तो फिर, दाँत दर्द आता है, और इसके साथ मुँहमें लार अधिक आती है।

अन्तडियोंकी श्लैष्मिक झिल्लियोंकी भीतरी परतके कोप, अपने लवणके माध्यमसे, उस पानीको, जो खानेके साथ उन्हें मिला था,—मलान्त्रके शिरा-जालके रक्तमें भेज देते हैं। जबकि किसी क्षोभके कारण उनकी स्वाभाविक प्रक्रियामें विघ्न आता है, तो परिणाम यह होता है कि बहाव पलट जाता है। तरल रक्त अन्तडियोमें दाखिल हो जाता है, और उसके परिणाम स्वरूप पानी-से पतले दस्त आने लगते हैं। यदि वह क्षोभ अन्तडियोंके श्लैष्मिक कोपो तक पहुँच जाए, तो फिर, पानी-सा पतला आमातिसार आता है। जब श्लैष्मिक कोषोंका कफाश ऊपरी तहपर आ जाता है, वह चिकना, रेशेदार और पारदर्शक होता हे। कफका स्वाभाविक निस्सरण घट जाता है, जबकि श्लैष्मिक कोषोंमें नमक और कफाशकी मात्रा बहुत घट जाए।

विशेप रूपसे सोडियम क्लोराईडका ही यह काम है कि वह रक्त-कणो में जाने वाले पानीकी मात्राका नियन्त्रण करता है। इस तरह उनके आकार-प्रकार और अस्तित्वकी रक्षा करता है। प्रतीत यह होता है कि यह लवण भी शरीरके अर्द्ध घन अगोमें अन्य लवणोंके समान ही कार्य करता हे, और उनका अनुधर्मी है। ( डाल्टन )।

लवण पुनः पेशाव, पसीने और विशेषकर आँसुओंकी राह, शरीरसे निकल जाता है। यह लवण शरीरके अधिकाश रसोंमें पाया जाता है। जबकि **काली म्योर** मुख्यतः निर्मित तन्तुओंमें ही पाया जाता है।

**नेटरम म्योर**के कण पाकस्थलीकी ग्रन्थियोंकी भीतरी परतके कोषोंमें पाये जाते हैं, और, रक्तमें मिश्रित कार्बोनिक ऐसिडकी कोमल क्रियासे टूट जाते हैं। तब इनकी क्लोरीन अलग हो जाती है और हाईडरोजनसे मिल जाती है। यह नया यौगिक पानीमें घुल जाता है, और, हाइडरोक्लोरिक ऐसिडके रूपमें आमाशयमें पहुँचता है। यदि पाकस्थलीकी ग्रन्थियोंके भीतरी कोपोंमें नमकका अभाव हो, तो फिर, हाईडरोक्लोरिक ऐसिड नहीं बन सकता, परिणाम यह होता है कि आमाशयकी श्लैष्मिक झिल्लियोंकी भीतरी परतोंसे खारी कफका स्राव बढ जाता है। यदि पतला हाईडरो-

क्लोरिक ऐसिड, उचित मात्रामें दिया जाए, तो, वह इस स्थितिमें शामक कार्य करता है। आमूल सुधार के लिए यह निन्तात अनिवार्य है कि खानेके नमकके उन परमाणुओं की गतिविधि वहाल की जाए जो पाकस्थलीकी ग्रन्थियों की भीतरी परतोंके कोषोंके पोषक रसोंमें पाया जाता है। यह गतिविधि वहाल तभी हो सकती है जव सहधर्मी परमाणु वहाँ पहुँचाया जाएँ।

कफाशकी गतिविधिको वहाल रखने के लिए भी, यही एकमात्र दवा है, और, यह कफाश सारी श्लैष्मिक झिल्लियोंकी भीतरी परतके कोषोंमें पाया जाता है। यह लवण उन सभी स्रावोंको दूर करता है जो इसके स्वाभाविक स्रावसे सादृश्यता रखते हों। जिसतरह वह हाईडरोक्लोरिक ऐसिड जो पाकस्थलीकी भीतरी परतोंके कोषोंमें वनता है, त्वचाकी भीतरी परतोंसे चढ़े हुए खारे स्रावको घटा कर स्वाभाविक स्थितिमें ला देता है, ठीक उसी तरह, वह हाईडरोक्लोरिक ऐसिड, भी जो शरीरकी सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंके कफाशमें, सोडियम क्लोराइडके टूटने या विभिक्त होनेसे वनता है, कफके स्रावको उस जगह ही सीमित कर लेता है—जहाँ वह वनता है।

यह सच है कि हाईडरोक्लोरिक ऐसिड खानेके नमकसे मिलता है। इसके दो साधन हैं; (१) नमकके ढेर पर कार्बोनिक ऐसिडकी क्रियासे, (२) पानीकी इसी प्रकारकी क्रिया द्वारा। पहली हालतमें कार्वोनिक ऐसिड उस सोडियमसे मिल जाता है जो अपनी क्लोरिन गँवा वैठा है। यह यौगिक रक्तमें पहुँच जाता है। दूसरी हालतमें सोडियम हाईडरोक्लोराईड तैयार होता है। यह कफांशको घुला देता है और कफके स्रावको वढा देता है। वस यही कारण है कि नमदार वातावरणोंमें नजलेकी शिकायतें आती हैं।

नमककी प्रक्रियामें वडा विकार आनेके परिणामस्वरूप, हरल रक्त आमाशयमें पहुँच सकता है, तव पानी जैसी पतली कै आती है, अर्थात् मुँहमें लार अधिक आता है। यदि भीतरी परतोंके नीचेके कोषोंमें नमकका अभाव हो, तो, उन तक पानीकी पर्याप्त मात्रा नही पहुँच सकती, तव ऊपरी त्वचा पर छाले वनते हैं, जिनमें पारदर्शी, पानी-सा पतला मवाद भरा रहता है। आँखके सफेद पर्दे पर भी, इसी तरहका विकार आनेसे, इसी प्रकारके छाले वन जाया करते हैं।

लवणकी प्रक्रियामें विघ्न पडनेके परिणामस्वरूप, अन्य अगोंमें भी स्राव घट या वढ जाते हैं। जैसे आमाशयके नज़लेमें पानी या कफको कै आ सकती है। जवकि साथ ही कब्ज़ भी आती है, क्योंकि वृहदान्त्रमें कफ का स्राव घट गया है। लवणकी अधिक मात्रा खानेसे शरीरकी पोषण क्रियाओंमें गहरे परिवर्तन आते हैं। जैसे शोथ, जलोदर, रक्तकी स्थितिमें

परिवर्तन आनेसे अनीमिया हो जाता है, या श्वेत कण बढ जाते हैं। शरीरमें ऐसे मल रुक जाते हैं जो आगे चलकर संधिवातके लक्षण लाते हैं।

अधिक लवण खानेसे अन्य कष्ट आनेके साथ-साथ, मोटे-मोटे विकार निम्नलिखित हैं :

१—स्वर नोडिया मोटी पड जाती है; उनपर आंशिक लक़वा आता है, गलक्षतकी शिकायत निरन्तर रहने लगती है। बहता जुकाम।

२—चेहरेकी रंगत पीली, मोम जैसी हो जाती है, बाहरी त्वचा खुश्क हो जाती है। हालांकि परिश्रम करनेसे पसीना खूब खुलकर आ जाता है। चेहरेकी रंगत भूरी हो जाती है।

३—कब्ज या पुराना अतिसार।

४—असाधारण भूख ( भस्मक )। निरन्तर प्यास।

५—मोटापा।

६—तरल चीजोंके भीतर जानेपर बाहर निकलनेमें बाधा पडती है।

७—रक्त पतला पड जाता है, रक्तसंचार शिथिल पड जाता है, और, तापमान घट जाता है। हर समय सर्दी लगती रहती है; विशेषतः कमरके निम्न भाग पर।

८—खोपडीसे रूसी झडती है, त्वचाके विकार आते हैं, मवाद जमा हो जाती है, नासूर बन जाते हैं। क्षोभ आता है। पीब वाले छाले बनते हैं।

**साधारण क्रिया : नेटरम म्योर** तन्तुओंमें परिवर्तन लाता है, उनको स्वाभाविक प्रक्रियाको बल देता है, और, यूरियाका निस्सरण बढाता है। अतएव यह उस पुराने कंठमालामें हितकर है, जिसमें ग्रन्थियों, अँतडियों और त्वचाको आक्रांत किया हो। रक्त, लसिका प्रणाली, पाकस्थलीको श्लैष्मिक झिल्लियों, जिगर और तिल्ली पर भी इसका असर है। यह रक्तादि अन्य महत्वपूर्ण तरलों को बिगाड़ता है। स्कर्वी जैसी हालतें, पैदा करता है, प्रदाह लाता है, घाव बनाता है, और, स्पष्ट रूपसे रक्त दोष लाता है। यह लवण मलेरिया और कूनीनके व्यवहारसे आने-जैसे विकार पैदा करता है—और उन्हें दूर भी करता है। **हीनपोषण, दूषित पोषण और शोष।** प्रवृद्ध शोष, जबकि खूब अच्छा खाता-पीता भी हो। ( डा० हॉकस )। **अनीमिया,** श्वेत कणोंका बढ जाना, रक्तमें जलकी मात्राका बढ जाना, जिसके कारण रक्त पानी-सा पतला, और, पारदर्शी हो जाता है। हरा पाण्डु और स्कर्वी ( शीताद )।

आम लवणका कण वह आधार है जिसपर रक्तकणोका निर्माण होता है। और इस कोष लवणकी महत्ता और प्रक्रियाका रहस्य यही है। यही

कारण है कि हीन या दूषित पोषणके दोषोंको यह दूर करता है, जबकि रक्त खराब हो। पानी-सा पतला स्राव आना इस औषधका प्रधान मार्ग-दर्शक लक्षण है। यह उन दर्दोंको दूर करता है जिनके साथ मुँहमें लार अधिक आता है, या, आँसू अधिक आते हैं, या पानी या कफकी कै आती है, फिर चाहे दर्द शरीरके किसी भी अगमें आए। सारी श्लैष्मिक झिल्लियाँ प्रभावित होती हैं। परिणामस्वरूप वे स्पजकी तरह नर्म हो जाती हैं। खून वहने लगता है, श्लैष्मिक झिल्लियोंका स्राव बढ जाना है। परिणाम-स्वरूप सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंमें नजले जैसी हालत आती है। **पारदर्शी, पानी-सा, झागदार स्राव आता है।** पानी जैसे पतले मवाद वाले छाले, वे जब फट जाते हैं, तो उनपर पतला-सा खुरण्ड आ जाता है। पानी-सी पतली कै; शरीरके किसी अगमें पानी आ जाना, दिमागके पर्दोंमें पानी आ जाना आदि। **जीभ साफ, चमकदार, होती है या, उसके किनारों पर झागदार लार के बुलबुले उठते हैं।** या, **जीभ चौड़ी, पीली, फूली हुयी और उस पर चिकनी, लेसदार मैलकी तह आए।** शरीके किसी भी भागसे स्रावका घट जाना, स्वाद नमकीन।

लिम्वर्गनिवासी डा० लिओन रोजनवखने, रक्त सचार वन्द (हार्ट फेल) होनेकी आशका की दशामें चमडीके नीचे सूई (इन्जेक्शन) देनेके वारेमें एक वहुत अनुकूल परीक्षण किया है। हम यहाँ उसका साराश दे रहे है, और वता रहे हैं, कि किस स्थितिमें इन्जेक्शन देना चाहिए और उसकी मात्रा क्या हो।

१—सहसा मूर्च्छा आ जाना **नेटरन म्योरके** ६% घोलकी ५ से ८ ड्राम तक एक मात्रा।

२—किसी तरुण रोगमें हृत्पेशियों का आशिक लक़वा (५ से ८ ड्राम तक तत्काल, और वादमें १ या २ ड्राम नित्य)

३—तरुण आन्त्र-आमाशय प्रदाह, जव कै और दस्तोंके वाद भारी दुर्वलता आए। (६% नवाये घोलका ८ से २० औंस तक)

४—जव फेफडो, आमाशय, या अँतडियोंसे रक्त स्राव हो (५ ड्राम, फिर डेढ ड्राम नित्य)।

५—किसी पुरानी वीमारी, या किसी पुराने शारीरिक या मानसिक विकारके कारण जव हार्टफेलका खतरा हो (कुछ दिनो तक १॥ ड्राम नित्य दें)।

लवण जलका स्नान, रगडने और इसी तरहके विविध कामोंमें आता है। यह लवण जल-स्नान, पुराने गठियावात, कण्ठमाला, आदिमें हितकर है।

शरीरको प्रदाहात्मक भीतरी रोगोंसे मुक्त करनेके लिए भी इन लवण-स्नानों का व्यवहार सफलतापूर्वक हुआ है। परन्तु हृदय रोगमें इनका व्यवहार नहीं होना चाहिए, क्योंकि इनके वाद अनिद्रा और घबराहट आदि विकार आते हैं।

कोई चाहे तो एक ग्राम नमक दैनिक खा सकता है, परन्तु तो भी पीडित तन्तु-कोष पूर्ववत 'परमाणु अभाव' से पीड़ित रहेंगे। उनका स्वाभाविक कार्य स्थगित हो जाएगा। इस तरह कोषों, और, उनकी दरम्यानी जगह का तरल शरीरमें समान रूपसे विभाजित नहीं होता। परिणाम यह होता है कि किसी एक जगह **जल सञ्चित हो जाता है**। इस जलमें **सोडियम क्लोराईड** और अन्य लवण पाये जाते हैं—क्योंकि उनका शोषण नहीं हुआ।

हाँ, यदि **सोडियम क्लोराईड** का उचित रीतिसे चूर्ण तैयार किया जाए, तो इस तरह उसके परमाणुओंको असीम रूपसे क्रियाशील वनाया जा सकता है, क्योंकि उनके अन्दर जो **गुप्त शक्ति निहित है**—उसे विचूर्णीकरण द्वारा **मुक्त कर दिया गया है**। ये परमाणु रक्त और तन्तु कोषोंको जो अवतक भूखे और सुकडे हुये थे,—वाञ्छित मात्रामें तरलका पुन. शोषण करनेकी सामर्थ्य प्रदान कर देते हैं। इस तरह उनका विभाजन, और, पुनर्विभाजन फिर आरम्भ हो जाता है, नए कोषोंका निर्माण शुरू हो जाता है। इस तरह **संयोजक तन्तुओं**के अन्तरवर्ती स्थानमें जो तरल रहता है—उसका विभाजन सारे शरीरमें पुन समान रूपसे होने लगता है। तव किसी अंगमें उसका **अभाव** ( जिसके परिणाम स्वरूप **खुश्की** आती है ), और, दूसरे अंगोंमें उसकी **अधिकता** ( जिसके कारण जल **सञ्चित होता है** ) मिट जाती है, और, सारे शरीरमें जलके विभाजनका सन्तुलन पुनः स्थापित हो जाता है।

इस कोष लवणकी महत्ता पूरी तरह नही आकी जा सकती, क्योंकि यह मुख्य "प्रतिषोधकों" में से एक है। जव किसी क्षोभजनक औषधके प्रभावसे, या किसी और कारणसे, यह या अन्य लवण शरीरसे निकाले जाते हैं, तो शरीरमें तरलकी मात्रा असाधारण रूपसे वढ जाती है, और चूँकि **नेटरम म्योरियाटिकम** इस विकारको दूर करता है, और, तरलके समान विभाजनका नियन्त्रण करता है, इसलिए उसके परमाणु या **विद्युतिकृत मात्रा** देनेसे यह दोष दूर हो जाता है, और, फिर तरलका विभाजन एकरस हो जाता है। ( सी० एस० सॉडर्स एल० आर० सी० पी० )।

## चरित्रगत गुण और लक्षण

मन : भविष्यके वारेमें निराशाकी भावना। हतोत्साह, सहानुभूति प्रकट करने और **सान्त्वना देनेसे कष्ट वढ़ता है**। इसके वाद, हृदयमें फडफडाहट

आती है। **अवांछित, अप्रिय खिन्नता तथा अवसाद लानेवाली बातों पर विचार करनेकी प्रवृत्ति।** पुराने दुख याद आते हैं और उनपर विचार करता रहता है। **आसू बहानेके लिये तैयार।** प्रलाप करे और चौंक उठे। बडबडाये और जीभपर झाग आये, **वहमी** इसके साथ कब्ज। जोश; जो भारी उपद्रवके रूपमें आए, इसके साथ गाने और नाचने की इच्छा करे; क्रोधी, चिडचिडा, आवेशके दौरे। मदात्यय; अधिकाश केस इस औषधने ठीक किए हैं। **दरिद्रताका वहम : दिमागी कमजोरी।** स्मरणशक्ति कमजोर, दिमागी मेहनतसे थकान आए।

**सर और खोपड़ी :** सर दर्द जो मुख्यतः पेशानी और कनपटियोंमें आए, या आधे पहलूमें हो। सरमें रक्त सञ्चित होनेके ढगका सर दर्द जो सुबह बढ़े; सोनेसे घटे; ऐसा सर दर्द प्रायः मासिक धर्मके दिनोंमें आता है। मन्दा-मन्दा, भारी सर दर्द, जिसके साथ आँखोंमें आसू अधिक आए, तन्द्राका जोर हो और सो कर ताजगी न आए। गर्दनकी पेशियोंकी दुर्बलताके कारण सर अपने-आप आगे को झुक जाए। सर दर्द और उसके साथ कब्ज जो अन्तडियोंकी श्लैष्मिक झिल्लियोंके एक भागकी सुस्ती और खुश्कीके कारण आए, जबकि जीभ साफ हो, या झागके बुलबुलोंसे ढकी हुई हो। सर दर्द जिसके साथ पारदर्शी कफ या पानी की कै हो। स्थायी सरदर्द जबकि यही लक्षण हो। (**कल्केरिया फॉस**) आधे सरका दर्द जिनमें अचेतना आए और अंगोंमें खिचाव आए। **सर दर्द जैसे सर पर हथौड़े बरस रहे हैं यह दर्द आम तौर पर सवेरे बढ़ता है।** मासिकके दिनों, छात्राओंका सर दर्द, जिसमें चाँदपर जलन भी हो। लू लगनेके लिए यह प्रधान औषध है। रक्त नाडियोंमें रक्त भर जाता है, इसके साथ रक्तस्रावकी प्रवणता और दिमागमें अस्थायी रूपसे रक्त सञ्चित हो जाए। **गर्दनके पिछले भाग पर बालों की जड़ों पर खुजली वाले दाने निकलें।** और उनसे बहुत लेसदार मवाद निकले। रूसी, खोपडी पर सफेद कील, कभी-कभी इनके साथ मुँहमें लार अधिक आए, नाकसे पानी-सा पतला स्राव आए, और आखोंमें आसू अधिक आएँ। बाल झडें।

**आँखें :** निगाह धुधली; कनानि पर छाले या सफेद दाग पडे। जब काचप्रका आक्रात हुआ हो, तो यह दवा हितकर है। धुध; पढ़ते समय अक्षर परस्पर सट जाएँ। निगाहसे बारीक काम करनेके कारण सर दर्द आ जाए। लू **लगे**; पेशानीके छिद्रोंका प्रदाह; कनीनिकाके कठमाला जनित घाव, और इसके साथ चमक लगे। कठमाला या टी.वी के रोगियोंके लिए विशेषतः लाभदायक है। साफ कीचड आए, साफ आसू आए जिसका

कारण यह होता है कि आँसूकी नाली बन्द हो जाती है। [illegible] व्यवहारके बाद कष्ट बढ़े। पपोटोंमें भारी खुश्की, इसके साथ [illegible] जैसा दर्द, खारिश, और, जलन हो। [illegible] साथ आँखोंसे सफेद कीचड़ आता है, और [illegible] लाल हो जाते हैं। पलकोंकी सूजनसे [illegible] प्रदाहित पपोटोंमें [illegible] लगने जैसा दर्द और जलन हो, [illegible] चरपरे आँसू आएँ और छोटे-छोटे छाले निकलें, जिनमें ऐसी जलन हो [illegible] गर्म पानीसे जला है। पेशियोंकी दुर्बलतासे आयी निगाहकी कमजोरी, इस रोगके लिए हमारे पास इससे बेहतर औषध नहीं है। [illegible] समय-समय पर आए, इसके साथ आँसू आएँ और सफेद पर्दा लाल हो जाए; पलकोंका स्नायुशूल जो सूरजके साथ बढ़े और घटे; आँसूकी नालीका [illegible]। स्वच्छ तालका धुंधलापन।

**कान :** कर्णछिद्र पर सूजन आनेसे बहरापन आए, [illegible] का विशेष लक्षण भी मौजूद हो। कर्णछिद्र और मध्यनालीसे स्राव आए (**काली सल्फ**)। गर्ज सुनाई दे। कानोंसे पीब जैसा स्राव आए। **चबाते समय कड़कड़ाहटकी आवाज हो।** खुजली और जलन हो; सुई गड़ने जैसा दर्द।

**नाक :** पुराना नजला जो गलेमें टपके, इसके साथ चखने और **सूँघनेकी शक्ति मिट जाए।** सर्दीके कारण छाले पड़ जाएँ, जिनमें पानी जैसा मवाद आए, ये छाले फट जाते हैं और घाव पर पतला-सा खुरण्ड आ जाता है। छिछड़े जमें। इनफ्लूएँजा, मौसमी इनफ्लूएंजा,। उन रोगियोंका पुराना नज़ला जिनके शरीरमें खून नहीं है। कफका स्वाद नमकीन। जुकाम जिसमें नाकसे साफ पानी जैसा स्राव आए, या कभी नाक बहे और कभी खुश्क हो जाए। इसके साथ **सूँघने और चखनेकी शक्तिका नाश।** नथनोंके पिछले भागमें खुश्की की अनुभूति। छींकें बहुत आएँ। आगेकी ओर झुकने और श्वासनेसे नकसीर आए। नजलेकी शिकायत आमतौर पर सवेरे बढ़ती है। नाक लाल, फुन्सियां निकलें, छाले और वेदना-पूर्ण गाठें बनें। नाकका एक पहलू सूत्र। सर्दी-जुकाम छींकोंके साथ शुरू हो। बहते जुकामको **नेटरम म्योर ३०** ठीक कर देता है। नाकमें सन्तापपूर्ण कष्ट और भारी खुश्की की अनुभूति जैसे नाक बंद हो गयी है, अण्डेकी सफेदी जैसा स्राव आए। यह स्राव केवल एक नथनेसे आए।

**चेहरा :** भूरी रंगत, सीसे जैसी रंगत, चेहरेमें दर्द और कब्ज, जबकि जबानका विशेष लक्षण भी मौजूद हो, या पानी जैसी कै आती हो। कूनीन

खानेके बाद, समय-समयपर आनेवाला स्नायुशूल जबकि आँसू भी अधिक आते हों। त्वचा चिकनी-चिकनी। खाते समय पसीना आए सुज़ाक विष, मूछें झड़ें, खारिश अधिक हो, और छाले जिनमें पानी जैसा मवाद भरा हो। पेशानी पर पीब भरे छाले निकलें।

**मुँह :** लार अधिक आए जिसका स्वाद खारा हो। मुँहके आसपास मोतियों जैसे छाले, कोनोंपर तर फोडे, मुँहमें छाले या दाने पड़ें और लार अधिक आए। होठ फटें उनमें जलन और दर्द हो। कव्वा लटक जाये। गलकोषका लक़वा, होंठ फूले हुए; ठुड्डीपर दाने निकलें।

**जीभ :** चिकनी मैल आए, साफ और पानी-सी, पतला कफ, जीभके दोनों ओर झागदार थूक या लार आए। स्वाद नाश। जीभकी नोकपर छाले बनें, जीभपर नक्शे जैसे आडे-तिरछे निशान; सुन्न; बच्चे बोलना देरसे सीखें। जीभपर जैसे बाल रखा है। जीभ और मुँह खुश्क। वास्तविक खुश्की कम होती है और उसका बोध अधिक।

**दाँत :** अधिक कोमल ग्राही, मसूढ़ोंसे खून आसानीसे गिरने लगता है और घायल। दाँत दर्द जिसके साथ आँसू या लार अपने-आप आए। दाँत हिलें, ढीले। तेंदवा। लार बनाने वाली ग्रन्थियोंका पुराना प्रदाह। मसूढ़े फूल जाए, उनमें तपकनके साथ, या छेद होने जैसा दर्द हो।

**गला :** गर्दन सूख जाती है। डिफ्थेरिया, बशर्ते कि चेहरा फूला हुआ पीला हो, तन्द्राका जोर हो, पानीसे पतले दस्त आते हों, मुँहमें लार अधिक आती हो, या पानी जैसी पतली कै आती हो। लक़वा जो डिफ्थेरियाके बाद आया हो और खाया-पिया गल्त रास्ते चला जाता हो, और, केवल तरल ही निगला जा सकता हो। गलक्षत जिसमें टॉसिलोंपर पारदर्शी कफ आयी हो, कव्वा ढीला, लटका हुआ; पुराना गलक्षत, और उसके साथ यह अनुभूति जैसे गलेमें कोई **डाट** या **गाँठ** अटकी हुई है। गलेमें भारी खुश्की। यह बोध हो जैसे कानोंमें डाट लगा हुआ है, यह अनुभूति कानकी मध्यनाली तक जाये, गला चिकना और खुश्क नज़र आये। घुटन और सूई चुभने जैसा दर्द। गलकोष और उसके आसपासकी जगह प्रदाहित, विशेषत. सिगरेट-बीडी पीनेवालोंका और **सिल्वर नाइटरेट**के व्यवहारके बाद। निचले जबडे की ग्रन्थियोंकी सूजन; टॉसिलकी सूजन, गिल्हड जबकि पानीसे पतले स्राव भी हों मुख्य औषधि है **कल्केरिया फॉस**, कनपेड, मुँहमें लार अधिक आए। बार-बार खासी आए और कफ थूके जिसका स्वाद खारा हो। कव्वा बढ़ जाता है। कव्वेका प्रदाह। सास दुर्गन्धित।

**आमाशय :** हिचकी। अजीर्ण जिसके साथ-साथ, झागदार पानीकी

या रेशेदार लार की कै हो, या दर्द हो और लार गिरे। सांस दुर्गन्धित। आमाशय शूल जवकि उपर्युक्त लक्षण हो। भारीपन और भरा हुआ। **लार खारा** मुँहमें जो पानी आए वह अम्ल नहीं होता। आमाशयमें दवाव, अफारा। **नमकीन चीजें खानी चाहे :** नमकीन और कडवी चीजोंकी इच्छा। खाना खानेके वाद कलेजेमें जलन। खट्टा स्वाद। **तेज प्यास :** अधिक मात्रामें पानी पीना चाहे। **मरभुखे की तरह, वहुत लालची होकर खाये। रोटी खानेसे अरुचि।** तम्बाकू पीनेकी इच्छा मिट जाती है। पीलिया और ऊ ध। आमाशयमें भारी दुर्वलताका वोध। आमाशयपर लाल दाग पडें।

**पेट और पाखाना :** कब्ज जो अँतडियोंमें नमीके अभावके कारण आए। श्लैष्मिक झिल्लियोंकी खुश्की और पानी जैसे पतले स्राव ; अन्यथा पानी जैमी कै, आँसू और लार अधिक आए। जिगर और तिल्लीमें दर्द हो। खूनी और वादी ववासीरकी कब्ज। कब्ज और उसके साथ अँतिडियोंकी भारी दुर्वलता। भारी सुस्ती, परन्तु दर्द नहीं होता। खुश्क **पाखाना** जिमके कारण मलद्वारमें फटाव आए और मलाशयमें जलनके साथ दर्द हो। ववामीर जिसमें डक लगने जैसा दर्द हो। मलद्वारके आमपाम दादके दाने। **पाखाना जानेके वाद यह जान पड़े कि मलद्वार फट गया है। खून आये, सहसा तेज डक लगने जैसा दर्द हो, मल कडा; सूखा ; मुश्किलसे उतरे, चूर-चूर होकर उतरे और मलान्त्रमे सूई गड़ने जैसा दर्द हो।** गुदाकी वातवेदना। पेटकी परिधिमें दर्द। अतिसार, मल पानी जैसा पतला झागदार। अतिसार और कब्ज वारी-वारीसे आए। पानी-सा पतला मल जो तीक्ष्ण हो। मल अपने-आप निकल जाए, रोगी यह समझ नही पाता कि हवा निकलेगी या पाखाना आएगा। पेटकी पेशियोंकी भारी दुर्वलता।

**मूत्र प्रणाली और कामाग :** वहुमूत्र विशेपतः जवकि मुँहमें लार अधिक आती हो, और, शरीर वहुत सुख गया हो। स्कर्वीके कारण पेशाव में खून आए। पेशाव कर चुकनेके वाद कटन और जलन हो। दूसरोंकी मौजूदगीमें पेशाव न कर सके। वहुत देर तक इन्तजार करनेके वाद पेशाव उतरना शुरू हो। अण्डोमें दर्द। अण्डकोषपर असह्य खुजली, कामाद्रि पर से वाल गिरें। वीर्य रज्जुओंमें और अण्डोंमें दर्द हो, सूजन आए और वहाँ विजातीय द्रव्य आ जाए: मसानेका नजला। जव कि सूजन पानी-सा और साफ स्राव हो। चलते या खाँसते समय पेशाव अपने आप निकल जाए। सुजाक जिसमें जलता-जलता पेशाव उतरे। पुराना सुजाक जिसमें पानी-सा, पारदर्शी, चिकना स्राव हो और असह्य खुजली हो। मूत्राशय स्पर्शकातर, पेशाव कर चुकने के वाद मूत्रपथमें कटन हो। पुराना आन्तशक जिसमें पानी

सा स्राव हो। विथसे वाल गिर जाये। वीर्यपात उसके वाद सर्दी लगे और थकान व सुस्ती आए और काम-वासना वढ़ जाए। कोषका शोथ। नामर्दी। प्रोस्टेटका रस गिरें।

**स्त्री कामाग :** लकोरिया जिसमें पारदर्शी, सफेद, गाढा, स्राव अधिक मात्रामें आए, या योनिमें असाधारण खुश्की आए इसके साथ सहसा तेज डंक लगने जैसा दर्द हो जिसके कारण रमणनमें वेदना हो। पेशाव कर चुकने के वाद योनिमें जलन और सन्तापपूर्ण कष्ट आए। पेशाव अपने-आप निकल जाए; मासिकका रक्त पतला पानी जैसा पतला, खून मिला देरसे आए, इसके साथ सरदर्द हो। भगकी खुजली; मासिकके दिनोंमें भयानक शोक आए। लकोरिया पानी-सा; अतिरज जिसमें चिकना चरपरा प्रदर भी शामिल हो। मासिक आ जानेके वाद या दूसरा मासिक होनेसे पहले पानी जैसा पतला और चरपरा स्राव आए, जिसमें सहसा तेज डक लगने की तरह दर्द आए। जलता-जलता, गरम क्षोभजनक स्राव जो विल पर खुजली पैदा करे और वाल नष्ट कर दे। मासिकसे पहले उदासी और खिन्नता आए। मासिकके समय और वादमें सरदर्द आए। जरायुभ्रंश, उससे वचनेके लिए वैठ जाना पडे। योनिमें भारी खुश्की, हरायाण्ड, त्वचा गन्दी दिखायी दे और उसके साथ धडकन हो। **चित्त लेटनेसे या, तकिये पर लेटनेसे जरायुके कष्ट घट जाते है।** सुवहके समय कामागोंमें दवावकी अनुभूति; जैसे कोई चीज भीतर ढकेली जा रही है।

**गर्भकाल :** गर्भकालीन कै जिसमें झागदार, पानी जैसी वलगमकी कै हो। प्रसवके दिनों या स्तन पान करानेके दिनोंमें वाल गिरे। स्तन ग्रन्थियोंका क्षय।

**श्वास प्रणाली :** ह्त्राकी नालीका तरुण प्रदाह जिसमें साफ, झागदार पानी जैसी पतली वलगम निकले। छातीमें घडघडाहट, कभी-कभी कफको थूकनेमें मुश्किल आए। आमाशयके क्षोभके कारण दिन-रात थोडी-थोडी सूखी खाँसी आती रहती है। व्राकाईटिस जिसमें वक्ष गह्वरके पीछे गुदगुदाहट हो कर खाँसी आए। खाँसीके कारण सर दर्द आए जैसे सर फट पड़ेगा, पेशाव अपने-आप निकल जाए, पेटके घेरेमें और वीर्य रज्जुओंमें दर्द हो, आँसू आएँ, धड़कन हो और छातीमें सूई गडने जैसा दर्द आए पुराना तर व्राकाइटस, "शीतकालीन खाँसी।" खाँसी जिसमें सरदर्द जैसे सर फट पडेगा, या, आँसूओ की झडी लग जाए और पेशाव अपने-आप निकल जाए। दमा जिसमें पानी जैसा पतला कफ अधिक आए। काली खाँसी जिसमें पानी जैसा कफ मात्रामें अधिक आए। फेफडोंका प्रदाह जिसमें कफ छातीमें

घडघडाये, पानी जैसी पतली, झागदार कफ बडी कठिनतासे खारिज हो। प्लूरिसी जब पानी आ गया हो। फेफडोंका शोथ जबकि कफके विशेष लक्षण भी विद्यमान हों। स्वरभग, दर्द, श्वासकृच्छ्रता।

**रक्त-सञ्चार :** हृदयके शिखरमें दर्द, जो किसी प्रकारकी हरकतसे या गहरा सास लेनेसे बढे। नाडीकी चाल तेज; रुक-रुक कर चले। बायी ओर लेटनेसे कष्ट बढे; धडकन मारे शरीरमें विशेषत. पेटके ऊपरी भागमें स्पष्ट अनुभव हो। दिलमें फडफडाहट हो। घुटनकी अनुभूति। दिलका बढ जाना, बार-बार लेटना पडे, हाथ ठण्डे और पाव सुन्न।

**कमर और हाथ-पाँव :** बच्चोंकी गर्दन सूख जाती है। **किसी कड़ी चीज पर लेटनेसे कमरका दर्द घट जाता है।** मेरुदण्ड और हाथ-पाँव अधिक सूक्ष्म ग्राही। कमरमें सर्दीका बोध हो। संधिवातके नियम समयपर दौरे हों। भारी कमजोरी और थकान। जोडोंका पुराना गठियावात, जोडोंमें कडकडाहट। गठियावात, सधिवातके दर्द; टांगोंमें अपने-आप झटके आएँ, सोते समय हाथ-पाँव अस्थिर रहें, या उनमें झटके आएँ अडकन, सधिप्रदाह। टखने दुर्बल, खडा होनेपर कमरके निचले भागमें दर्द हो। उगलियों पर छाले पडे जिनमें पानी जैसा मवाद भरा हो। हाथोंकी त्वचा विशेषतः नाखूनोंके आसपास खुश्क और फटी हुई, हथेलियों पर मस्से। कूल्होंमें दर्द त्रिकशूल, गृध्रसी, बडी नाडीमें वेदनापूर्ण खिंचाव, टागोंमें अपने-आप झटके आएँ घुटनों और पिण्डलियोंकी दुर्बलता। चलते समय जोडोंमें कडकडाहट हो। जोडोंके आसपास शीतपित्त निकले, पाँवकी उगलियो के दरम्यान फटाव आएँ। टागें और पाँव बार-बार सो जाएँ; उसके साथ टखनोंके जोडोंकी दुर्बलता।

**स्नायु जाल :** पेशी-जालकी शिथिलता और दुर्बलता सदा थका-मादा रहे और कोई परिश्रम न करना चाहे। पीडित-अग जैसे सुन्न हो गये हैं। घड और अगोंके विविध पेशी-समूहमें आंशिक लक़वे जैसी दुर्बलता, मेरुदण्ड छूना या दबाव सहन न करे। मेरुदण्डका क्षोभ पेशियोंकी व्याकुलता और उनमें खिंचाव आए। कमरके निचले हिस्सेमें लक़वे जैसे दर्द। स्नायु-शूल विशेषतः पित्त-कोप और आँखके निचले भागमें। यह दर्द नियत समय पर आए, इसके साथ आँसू या लार अधिक आए। वातनाडियोके साथ-साथ गोली लगनेकी तरह दर्द और पानी भरे दाने। पेशियोमें झटके आएँ। हिस्टीरियाकी दुर्बलता जो सुबह अधिक हो। हिस्टीरिया जैसे आक्षेप और दुर्बलता। सर्दी आसानीसे लगे। जल्दी ही थक जाए। हिचकी (**मैग्नेशिया फॉस**) मृगी जब मुँहके कोनो पर झग आए।

**नींद :** अधिक आये जबकि कारण हो दिमागमें पानीका अधिक सचित होना। सोकर ताजगी नहीं आती, सुबह सोकर उठने पर थका-मादा अनुभव करे। निरन्तर सोये रहना चाहे, अधिक देर तक सोना चाहे। स्वप्नमें देखे कि चोर घरमें घुस आए हैं। सोते समय बार-बार चौंके। व्याकुल नींद, नींद बहुत देरमें आए। अनिद्रा इसके साथ असाधारण उल्लास और प्रफुल्लता।

**ज्वर : नेट्रम म्योर** ठण्डी दवा है। रीढ, अमाशय; हाथ और पाँव आदि विविध अंगमें ठण्डे लगें। सर्दी लगे और प्यास, दोनों एक साथ। लाल बुखार जिसमें ऊँघ, खिचाव, झटके आना या पानी जैसे पतले मवाद की कै भी आए। पसीना अधिक आए, रातको पसीना अधिक आए। गठियावात ज्वरमें दूसरे दर्जे की दवा है जबकि सर्दी लगे और अन्य विशेष लक्षण भी मौजूद हों मौसमी इन्फ्लुएजा जिसमें आँसू अधिक आए और नाक खूब बहे। टायफल जबकि तन्द्राका जोर हो। **बारीके बुखार जबकि कूनीनका अपव्यवहार हुआ हो, रोगी किसी नमदार जगह,** या नई बस्तीमें रहता हो। सर्दी सुबहसे दोपहर तक लगे; लगभग १० बजे सुबह आए सर्दी आनेसे पहले, तेज खुजली हो, गर्मी सरदर्द और प्यास आए, खट्टी गन्ध वाला और दुर्बल बनाने वाला पसीना आए, कमर दर्द, और टपकन के साथ सरदर्द हो भारी सुस्ती आए, शोषक चेहरेका मैला ( भूरा ) पड जाना और होठो पर बारीक-बारीक दाने निकलें। टायफायड या अन्त घातक लक्षण जबकि झटके आए, अर्द्ध चेतना हो और पानी जैसी पतली कै आती हो।

**त्वचा : ऐसे विकार जब छोटे या बडे छाले हों, उनमे पानी जैसा मवाद भरा हो और उनपर पतला सफेद-सा खुरण्ड आए।** चिकनी, विशेषतः बालों वाला भाग जहाँ रोमकूप अधिक हों, या फिर बाल खुश्क हों और झडें चमडीके पुराने रोग शीतपित्त, बाजरे जैसे दाने। एग्जिमा जिस पर बहुत साफ खुरण्ड आया हुआ हो, या ऐसे दाने जिसमें पानी जैसा मवाद आए। दाद जो किसी और रोगके दौरान निकले, छाले जिनमें पानी भरा हुआ हो। घुटनों और कुहनियोंके जोडमें दाद निकले। वर्णहीन, पानी भरे छाले जिनपर पतला खुरण्ड आए जो उतरे और फिर जल्दी आ जाए रगड; खराश; बच्चोंकी त्वचामें सन्तापपूर्ण कष्ट, इसके साथ पानीसे स्राव आएँ। हथेलियों पर मस्से बने। खोपडी पर सफेद परत जमे। जघाओं और अण्डकोषके दरम्यान रगड़ आए। जिससे चरपरा और खालको छीलने वाला स्राव आए। छाले जिसमें पानी भरा हुआ हो। वर्त्तुलाकार विसर्पिका।

एक त्वचा रोग जिसमें शरीरके वाएँ भाग पर चकत्ते पडते हैं और जंघा पर सूजन आ जाती है। जवकि अन्य मार्गदर्शक लक्षण भी मौजूद हो। दाद। आतशकके दाने। छाले जिसमें पीव न हो। प्रमेह विप जवकि पानी जैसे स्रावके लक्षण मिलते हो दाढीके वाल गिरें रूसी झडे। **भिड़तैया विच्छू आदिके डंकके कुपरिणाम,** शीतपित्त असह्य ख़ारिश जो शारीरिक परिश्रमके वाद आए। जोडोंमें दाद। तीक्ष्ण स्राव। एग्जिमा जो अधिक लवण खानेसे आया हो। नर्म छत्ता जिसमें खून आया हो। एग्ज़िमा जो पलकोमें, कानके पीछे, खोपडीके वालोंपर, पेशानीपर या गर्दनके पिछले भागपर या जोडोकी त्वचापर वना हो नाखून खुश्क और फटे हुये।

**तन्तु :** सर्वाङ्गशोथ, तन्तु जालमें पानी आ जाना, जलोद, शोथ, तन्तुओंका फूल जाना, पानी आना, पानी जैसा स्राव अनीमिया, पानी पतला, पानी जैसा पतला, हरापाण्डु।

**अनीमिया** और हरेपाण्डुके लिये यह मुख्य औषध है ( **कल्के फॉस**के साथ ), क्योंकि यह देखा गया है कि अनीमिया पीडित व्यक्तियोंके रक्त-अलव्यूमनमें लोह पर्याप्त मात्रामें पाया जाता है। परन्तु यह खानेके लवणकी गलत प्रक्रिया है। जिसके कारण कोषोंका विभाजन और पुनर्विभाजन रुक गया है। और **कल्के फॉस**के अभावके कारण नये कोषोंका निर्माण वन्द हो गया है इस तरह तिल्लीको लोहांश नही मिलता वस अनीमिया और हरेपाण्डुका कारण यही है। 'लोहेके शक्ति दाता' यौगिक जो इन रोगोंमें आमतौर पर खिलाए जाते हैं न केवल व्यर्थ सिद्ध होते हैं, वरन् वे उस विकारको और वढाते हैं जिसे घटानेके लिए वे दिये गये थे अर्थात् रक्तमें लोहांशकी कमी वढ़ जाती है, क्योंकि वार-वार मोटे लोहेकी मात्रायें दी जाती हैं। मधुमेह, पेशाव में अलव्यूमन आए। गोल कृमि। अधिक नमक खानेसे आया अनीमिया। शोष जिसमें चमड़ीकी रगत पीला, गदी, ढीली-ढाली और शिथिल हो। रक्त पानी जैसा पतला हो जाता है, दुर्वलता, कठमाला। वृक्क विकार। श्लैष्मिक झिल्लियोंकी खुश्की, जव घाव वननेकी नौवत आ गयी हो। **शोष जबकि खाता-पीता अच्छा हो।** गर्दनका शोष। निम्न ग्रन्थियों और वसास्रावी ग्रन्थियोंकी पुरानी सूजन। यह औपध उपस्थियो, कफकी थैली और ग्रन्थियों, थूक वनाने वाली ग्रन्थियो और मध्यान्त्र, ग्रन्थियोंपर भी असर करती है। श्लेष्मिक झिल्लियोंका नजला। सभी स्राव पारदर्शी, चिकने और उवले हुये निशास्ते जैसे होते हैं। कुरुप नख। खोपडीके वालोंमें प्रायः पीव वाले छाले आते हैं, पर पतले आते हैं जिनके कारण वाल गिरने शुरू हो जाते हैं।

सहयोगी विकारके रूपमें आमाशय या पेशाव सम्बन्धी रोग आते हैं ; जबकि इनके साथ शोष, दुर्बलता, सर दर्द और मतिभ्रम भी आता है। (वर्नस्टीन)।

**ह्रास-वृद्धि :** आमतौरपर कष्ट सुबह बढता है ; समय-समयपर आता है, **समुद्र तटपर,** ठण्डे मौसममें। कमर दर्द किसी तेज चीजपर लेटनेसे घट जाता है। पेशाव कर चुकनेके बाद कष्ट आता है ; सिलवर नाईट्रेट और कूनैनके व्यवहारके बाद भी कष्ट बढता है।

**होम्योपैथिक तथ्य :** पहले पहल हैनीमैनने हर दवाके परीक्षण किये थे और उन्होंने अपनी पुस्तक 'क्रॉनिक डिसईजिज' खण्ड ४ में इसकी चर्चा की है। बादमें आस्टरियाके कुछ व्यक्तियोंने इसकी आजमाइश की। हैनीमैनने इसके जो रोगोत्पादक गुण बताये है और चिकित्साके समय ३० शक्तिसे जो परिणाम प्राप्त हुये हैं—उन्होंने उनका समर्थन किया है। इसकी रोगोत्पादक विशेषताएँ पूर्ण रूपसे 'क्रानिक डिसईजिज' में देखी जा सकती है। यह पुस्तक छप चुकनेके बाद जो नए परीक्षण हुए, वे सब हेरिंग लिखित 'गाईडिंग सिम्पटम्स' खण्ड ७ में और ऐलनकी रचना **'हैण्ड बुक ऑव-मेटीरिया मेडिका'** में शामिल है। औषधोंके विधिकरण या विचूर्णीकरणके सिद्धांतकी जाँचके तौरपर डा० जे० सी० वेनेट द्वारा लिखित **'नेट्रम म्योरियाटिकम'** की चर्चा करना उपयुक्त है।

**व्यवहार :** शुसलरने ६ठी शक्तिके व्यवहारकी सिफारिश की है। होम्योपैथिक चिकित्सकों का अनुभव यह है कि उच्चतर शक्तियां अधिक उपयोगी हैं। डा० एच० सी० ऐलन ने कहा है कि ३० शक्तिमे ऊपरकी शक्तिया अधिक उपयोगी कार्य करती हैं, भिडनतैये या बिछूके डकमर लगाने और नज़ले जुकामकी हालतमें गरारे या स्प्रे करनेके लिए डा० शुसलरने सिफारिश की है।

**सम्बन्ध :** तुलना करें : कानकी मध्यनाली और ढोलके नजलेमें **काली सल्फ** और **काली म्योरसे**। आमाशय और अँतडियोंके विकारोंमें **नेटरम सल्फसे** मासिकके दिनों छात्राओंका सर दर्द : **कल्के फॉस , फैरम फॉस।** मासिक धर्मके दिनो सर दर्द **काली सल्फ** जब मासिक धर्म कम आए। **नेटरम म्योर।**

जीवोंके डककी व्यथामें **लेडम** इसके समीपतम है। परन्तु इस कामके लिए **फैरम फॉस** और **काली फॉसका** भी सफलतापूर्वक व्यवहार हुआ है। **लाईको पोडियम** इसका समीपतम अनुधर्मी है वह प्राय' इसके कामको पूरा करता है। **नेटरम म्योर** रक्तमें नमीका नियन्त्रण करता है विशेषत. धमनी

जालमें प्रवाहित और सचारित रक्तकी नमीका जबकि **नेटरम सल्फ** धमनी जालकी रक्तकी नमीका नियन्त्रण करता है।

पूरक : **एपिस , अर्जेण्टमनिट** । पुराने रोगोमें इससे पहले **सीपिया** और **सल्फर** काम आते हैं।

जब : खानेमें नमकका अधिक व्यवहार हुआ हो तो **फॉस्फोरस** और **स्पिरट निटरी सल्फ**का व्यवहार भी लाभदायक है। **नेटरम म्योर** ३० शरीर को ऐसा बल देता है कि जिसकी सहायतासे वह अधिक नमकको वाहर फेंक देता है और अधिक नमक खानेकी आदतमें भी कोई परिवर्तन नही आता। समुद्रस्नानके कुपरिणाम :— **आर्स** । जब किसी श्लैष्मिक स्तरको सिलवर नाईटरेटसे जलाया गया हो ( क्षारकर्म ) तो उसके दुष्परिणामको दूर करनेके लिए **नेटरम म्योर** उपयोगी है।

श्लैष्मिक झिल्लियोंकी खुश्कीमें तुलना करें : **ग्रेफाईटिस, ब्राईओनिया, अल्युमिना** । तेदवामें : अम्ब्रा ।

---

# नेटरम फॉस्फोरिकम ( Natrum Phosphoricum )

**पर्याय :** सोडियम फॉस्फेट , निटरी फॉसफस , फॉसफस निटरीकस ; सोडा फॉसफास , सोडिआई फॉसफस ।

**साधारण नाम :** फॉस्फेट ऑव सोडा ।

**रासायनिक गुण :** फार्मूला : Na2 HPO4, 12H2O, गुरुत्वभार १ ५५ । आर्थो फॉस्फोरिक ऐसिड और सोडियम कार्बोनेट को तटस्थ बना कर इसे तैयार किया जाता है। इसके कण बडे-बडे और पारदर्शी होते है उसमें पानीके १२ परमाणु होते हैं इसका स्वाद खारा, मृदु, और ठण्डा होता है। यह २ भाग गर्म और ६ भाग ठण्डे पानीमें घुल जाता है। अलकोहलमें नही घुलता । इसके घोल हल्के खारे होते हैं।

**तैयारी :** शुद्ध सोडा फॉसफेटको होम्योपैथिक पद्धतिके अनुसार पीसा जाता है। ( इसे अच्छी तरह डाट बन्द करके रखना चाहिए )।

**शारीरिक-रसायनिक तथ्य :** यह लवण रक्तमें पाया जाता है। वहाँ इसका अनुपात है : ० ३-० ५:१००० , पेशियो स्नायुजाल, दिमागके कोषो और कोषोंके मध्यवर्ती तरलमें भी पाया जाता है। इस लवणकी उपस्थितिमें

लैक्टिक ऐसिड कार्बोनिक ऐसिड और पानी के रूपमें बदल जाता है। यह कार्बोनिक ऐसिडका शोषण करता है; शोषणका अनुपात है इस लवणके १ कण और कार्बोनिक ऐसिडके २ कण। कार्बोनिक ऐसिडका शोषण करके यह उसे फेफड़ोंमें पहुँचाता है। वहाँ प्राण वायु इसमेंसे प्राण खींचकर शेष भागको मुक्त कर देता है। इस शेष भागको रक्तकणमें उपस्थित लौह ले लेता है **नेटरम फॉस** उन हालतोंके लिए लाभदायक है। जो लैक्टि ऐसिड की अधिकताके कारण आयी हों। यह पित्त कोषमें, कोलेस्टरीनके कणो की सहायतासे पित्त और कफ को गाढा नही होने देता और इस तरह उन अनेक विकारोंको दूर करता है जिनके परिणाम स्वरूप पीलिया, यकृत वेदना और पित्तज सर दर्द आते है तथा, पित्तके अभाववश स्नेह (वसा) का अपूर्ण समीकरण होता है। यह पैरकी गठियावात, सन्धिवात, और, नये तथा पुराने गठियावातमें हितकर है और इस तरह अम्ल तबीयतोंमें लाभदायक है।

मालशॉट और शुसलरके मतानुसार स्वाभाविक दशामें इस लवणका मुख्य कार्य यह है कि यह रक्तमें लैक्टिक ऐसिडके कणोंका सयोग-नियोग करता है। इस तरह यह रक्तधारको पेशियोंके मलसे शुद्ध करता है। यह मल तब बनता जब वे सञ्चित ग्लाइकोजनको ऐसिडके रूपमें परिवर्तित करती हैं। प्राणीमात्रके शरीरमें जिगर मुख्य प्रयोगशाला है। यहाँ नाइट्रोजन और हाईड्रो कार्बन वाले पदार्थों की काया पलट होती है। यहाँ रक्त शुद्ध और अशुद्ध हो जाता है। यहाँ निशास्ते और चीनी वाले खाद्योसे ग्लाईकोजन और अंगूर की चीनी बनती है। यहाँ यूरिक ऐसिड और तन्तुओंके अन्य मलोके साथ प्राण वायु का सयोग होता है। उन्हें यूरियाके रूपमें बदल दिया जाता है। फिर उसे गुर्दों की राह बाहर निकाल दिया जाता है यहाँ शुद्ध पित्त बनती है जो अन्तड़ियों को अपना काम करनेमें सहायता देती है। जब जिगर शिथिल पड जाता है, वह यह विशाल और महत्वपूर्ण काम करनेमें असमर्थ हो जाता है। जब वह अधिक कार्यशील हो जाता है, तो उसका उत्पादन बढ जाता है और तब वैसे ही लक्षण आते हैं। ये सब कार्य कोषों द्वारा होते हैं। इन दो कोषोंके दो भेद हैं। एक कार्यवाहक और दूसरे अभ्यन्तरिक। पित्तजकोष नाडियोंकी क्षुद्र शाखाओंकी भीतरी परतके साथ-साथ फैले हुए हैं। जिगरको नाडियोंसे इनका गहरा सम्बन्ध है। और यही बात कार्यवाहक कोषोंके बारेमें भी है। रक्तकी नाडियों और पित्तकी क्षुद्र नाड़ियोंसे इनका नजदीकी ताल्लुका है। साथ ही उनका भीतरी परतका ग्रन्थियोंसे भी इनका सामीप्य है। इन कोषोंके दो मोटे काम हैं जैसे ग्लाईकोजन बनाना

और यूरिक ऐसिड तैयार करना। इन सब बातोंके अतिरिक्त, जिगरमें पुराने लाल कण भी होते है, परन्तु जिगरके शिराजालमें पहुँच कर उनका विलगाव होता है और वहाँ नए लाल कण बनते हैं। ये सब विविध कार्य. एक दूसरेसे जुदा हैं और आवश्यक रासायनिक परिवर्त्तनो द्वारा, एक दूसरेके सहायक भी हैं। विश्वास यह किया जाता है कि ग्लाईकोजन जब रक्तधारमें मिल जाता है तो यह पेशी तन्तुओंमें सञ्चित रहता है; यह उन्हें गतिविधि प्रदान करता है और रासायनिक दृष्टिसे लैक्टिक ऐसिडके दो भागमें बदल जाता है। आगे चलकर यह ऐसिड शरीरको अपना मुख्य कार्य करनेमें सहायता देता है और अन्तमें रक्त धारमें रहते-रहते कार्बोनिक ऐसिड और पानीके रूपमें परिवर्त्तित हो जाता है। इस कायापलटका रहस्य यह है कि रक्तमें सोडा फॉस्फेट या **नेटरम फॉस** पाया जाता है। यह इसी लवणकी सयोग वियोग क्षमताका परिणाम है। जब इस लक्षणका अभाव पड जाता है, तो फिर यह रासायनिक परिवर्त्तन नहीं आता और लैक्टिक ऐसिड 'जू का तू' रह जाता है। अब शरीरमें अम्लता आ जाती है। और उसके परिणाम स्वरूप गठियावात, मन्दाग्नि, और अन्तडियोंके विकार आते हैं। शुसलरके मतानुसार, इस लवण का सूक्ष्म मात्रा देनेसे, उपयुक्त सयोग-वियोग क्रिया फिर बहाल हो जाती है। अम्लताकी स्थितिका अन्त हो जाता है। और उसके उपद्रव स्वरूप आये गठियावात और अन्य रोग दूर हो जाते हैं।

सोडा फॉस्फेटकी उपस्थिति यूरिक ऐसिडको रक्त धारमें घुलाये रखती है। इसी कारण रक्तका स्वाभाविक तापमान भी नार्मल रहता है। जब कभी इस लवणकी कमी पड जाती है यूरिक ऐसिड लवणके साथ मिल जाता है और सोडा यूरेटके रूपमें परिवर्त्तित हो जाता है। यह नया यौगिक घुलता नही, तब यह जोडोंके आस-पास जमा हो जाता है। इसी जमावका दूसरा नाम सधिवात और तरुण प्रदाहात्मक गठियावात है। तरुण संधिवातके दौरेके समय, हम देखते हैं कि जोडोंके आस-पास जो सोडा यूरेट सञ्चित हुआ है उसीके अनुपातसे, पेशाबमें यूरिक ऐसिडका आना भी घट जाता है।

**नेटरम फॉस** चर्बीले ऐसिडोंको तेल मिले सफेद मिश्रणके रूपमें परिवर्त्तित करनेमें सहायता देता है। अतएव यह उस मन्दाग्निमें लाभदायक है। जो अधिक घी, दूध या मक्खन आदि स्निग्ध पदार्थ खानेसे आयी हों या जब इस स्निग्ध पदार्थोंके व्यवहारसे मन्दाग्निका कष्ट बढे। इन ऐसिडोंके साथ मिलनेके अतिरिक्त, सोडा फॉस्फेट, अलब्युमनके परमाणुओंका भी सन्तुलन बहाल रखता है, क्योंकि ये परमाणु भी जीव-रसायनकी दृष्टिसे ऐसिडके रूपमें काम करते हैं।

रक्तके सफेद कण अन्तड़ियोंकी दीवारोंसे स्नेह परमाणुओं और पेपटोनको रक्त धार तक पहुँचाते हैं और फिर वहाँसे तन्तुओं तकको ले जाते हैं। इस प्रक्रियाके दौरान पेपटोन परिवर्त्तित अलब्यूमनके रूपमें आ जाती है। यह सारी क्रिया श्वेत कणोंकी सक्रियताके कारण होती है। जब ये श्वेत कण अन्तड़ियोंकी दीवारोंसे चलते हैं तो वे पेपटोनसे परिपूर्ण होते हैं। ये सीधे मार्गसे चलते हैं। और जो श्वेत कण वसा कण लेकर चलते हैं—उनका मार्ग प्रत्यक्ष—सरल नही होता। वे रस वहाँ नाड़ियोंकी राह चलते हैं। वे अन्तमें तन्तुओं तक क्षुद्र रक्त शिराओंकी राह पहुँचते हैं पेपटोन यहाँ पहुँच कर फिर अलब्युमनवत बन जाते हैं। वे वहाँ सञ्चित रहते हैं और नवकोषोंके निर्माणका कारण बनते हैं। ये नवकोष विभाजन द्वारा बनते हैं।

ये श्वेत कण, लसिक ग्रन्थियोंकी राह, वसाकणोंको लेकर चलते हैं—तब यदि इनकी राहमें किसी कारणसे, या किसी प्रकारकी बाधा, उपस्थित हो जाए, तो फिर, त्वचा, हड्डियोंपर या फेफड़ोंपर या अन्य ग्रन्थियोंपर प्रदाह आता है, सूजन आती है, और इन अगों तथा तन्तुओंपर टी० बी० की सभामकता आ जाती है।

चूँकि इन अवरुद्ध श्वेत कणोंमें अलब्यूमन भी होती है, उनके तेल बन जाना सम्भव है। जबतक वस्तुतः ऐसा अपकर्षन हुआ हो, तो फिर **नेटरम फॉस**, इन श्वेत कणोंको असबन्धनसे मुक्त करा देता है और इस तरह उन्हें अपना निर्दिष्ट तथा विशिष्ठ कार्य करनेकी क्षमता और अवसर प्रदान करता है। यह सब इसके दो गुणोंसे होता है—वसाको तरल बना कर फिर चाहे स्नेह अम्लका निशान ही बाकी रहा हो और दूसरा—पेपटोन परमाणुओंको ले चलना।

**साधारण कार्य :** बालकोंके ऐसे रोग जो लैक्टिक ऐसिडकी अधिकता से, और, अधिक दूध तथा चीनी खानेसे आए हों। अम्लताकी अधिकतासे आए विकार। **जीभपर पतली, गीली मैल। नर्मतालुकी रंगत पीली सी क्रीम जैसी नजर आए, खट्टे डकार आए, खट्टे कै हो हरे-हरे रंगके पतले दस्त आएँ**, दर्द, आक्षेप, और ज्वर जिसके साथ अम्लताके लक्षण हों। यह लवण हड्डियों, ग्रन्थियों, फेफड़ों और पेटके अगों पर असर करता है। पिछले सालोंमें शुसलरने इस औषधके प्रभाव और कार्य क्षेत्र सम्बन्धी जानकारीमें भारी वृद्धि कर दी थी, कठमाला और टी० बी० के लिये यह मुख्य औषध है। यदि **नेटरम फॉस**की छोटी मात्रा इन्जेक्शन

दिया जाए, तो यह मार्फिनकी इच्छा घटा देता है, अतएव उसे खानेकी आदत छुडानेमें सफल सहायक है।

# चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** अधीर, व्यग्र, सशक, जैसे कुछ होने वाला है। जड, लाल-सा और भावना हीन, रातको यदि जाग जाए तो फर्निचरको आदमी समझे, बराबर वाले कमरेमें किसीकी पद चाप सुननेका भ्रम। घबराया हुआ; चिडचिडा। जरा-सी बातपर नाराज हो जाए। भुलक्कड। भारी दिमागी थकान।

**सर और खोपड़ी :** सुबह जागनेपर चन्दियापर दर्द हो इसके साथ तालु के पिछले भागपर क्रीम जैसे रंगकी मैल नजर आए और जीभ पीली, गीली। सरमें तेज दर्द जैसे सारा सर भरा हुआ है इसके साथ मतली हो, या कै हो जिसमें कुछ चिकना-सा मवाद आए। चन्दियापर भारी दबाव और गर्मी, जैसे वह फट जाएगी। चक्कर आए, इसके साथ आमाशयकी खराबी। पुराना सर दर्द जिसमें खट्टी भागकी कै आए।

**आँखें :** सुनहरी पीले, क्रीम जैसे रंगकी गीड (कीचड) आए। अभिष्यन्द (आख उठ जाना) जिसमें आखसे पीला, क्रीम जैसा। कीचड आए और सुबहके समय पलकें सट जाए। अगले पर्देमें पीव आ जाए। जलते आसू। चिनगारिया टूटती या झडती दिखायी दें। भैंगापन जो कृमि जैसे कारणोंसे अन्तडियोंमें क्षोभ आनेका परिणाम हो। कुकुरोंके कारण श्वेत पटल प्रदाह जबकि कुकरे छोटे छालो जैसे नजर आए। कठमालाके कारण आखदुखनी आए। आंखोमें दर्द हों निगाह धुँधली, जैसे आखोपर पर्दा पडा हुआ हो।

**कान :** बाहरी भागमें दुखन, जलन और खुजली हो। एक कान लाल, गर्म, बार-बार खुजलाए, इसके साथ आमाशयकी खराबी और अम्लता। गर्ज सुनाई दे।

**नाक :** काटा गडने जैसा दर्द, जब इसके साथ अम्ल पित्त और चनूनो (कृमियों) की शिकायत भी हो। नथनोंमें काटा गडने जैसी वेदना। दुर्गन्ध आए। नज़ला जिसका मवाद गाढा, पीला और पीव जैसा हो। नाककी जड़ पर तनाव।

**चेहरा :** लाल, चकत्ते वाला, फिर भी ज्वर नही होता, इसके साथ अम्लताके लक्षण और नाक या मुँहके आस-पास सफेदी। चेहरेका स्नायु-

शूल। गोली लगने या सूई गडने जैसा दर्द। दाएँ निचले जवडेमें सन्ताप-पूर्ण कष्ट। चेहरेकी रंगत पीली या नीली-सी, चमकीला-लाल और खट्टे डकार आए।

**मुँह :** **मुँहकी छतके पिछले भाग पर पीली, क्रीम, जैसी मैल आए।** स्वाद अम्ल कसैला।

**जीभ :** इस औषधके व्यवहारके लिए प्रधान लक्षण है . **गीली, जीभ के पिछले भाग पर क्रीम जैसे रंग की, सुनहरी पीली मैल,** छाले, ऐसा जान पडे कि जीभ पर वाल रखा है। कठिनतासे वोल पाए। दाँत, वच्चे सोते-सोते दाँत पीसें।

**गला :** जीभके पिछले भागपर गीली, क्रीम जैसे या सुनहरी पीले रंगकी मैल। नर्मतालु, टाँमिलों और कौवे पर भी इसी तरह की मैल आए। गलेके किसी भागका प्रदाह जवकि इसी तरहकी मैल हो, **नेटरम फॉसके** व्यवहारके लिए निश्चित लक्षण है। आमतौर पर इस विशिष्ट लक्षणके साथ अम्ल पित्त भी शामिल रहता है। गलेका डिफ्थेरिया, यह नाम गलत दिया गया है। ऐसा जान पडे जैसे गलेमें कोई गाँठ या गोला अटका हुआ है पानी निगलनेसे कष्ट वढे नथनोंसे गाढा, पीला स्राव टपके, यह कष्ट रात को वढे।

**आमाशय :** अम्लपित्त-लेक्टिक ऐसिड की अधिकताके कारण खट्टे डकार आएँ, आमाशयके घाव। खाना खानेके वाद किसी एक जगह दर्द हो खट्टे तरल या कॉफि चूर जैसे काले मवादकी कै खट्टे डकार और अरुचि। मन्दाग्नि जवकि जीभ और डकारके विशिष्ट लक्षण मजूद हों और मुह में खट्टा पानी आया। परिणामशूल, खाना खानेके दो घण्टे वाद दर्द आए। मतली और अम्ल तरल या दही जैसा (खाद्य की नई) कै हो। लार आए और अम्लता। अफारा और खट्टे डकार आएं वच्चोंका पेट दर्द जवकि अम्ल पित्त हो, हरे खट्टी गन्धवाले पाखाने आएं और दही जैसे जमे हुए दूधकी कै हो कृमियोके कारण पेट दर्द। पेटमें खालीपन की अनुभूति, जैसे जान निकल जाएगी और इसके साथ खड्-गवत उपस्थितिके ऊपर जैसे वोझ रखा है। पित्तके अभावके कारण स्नेहका अपूर्ण समीकरण।

**पेट और पाखाना :** छोटे वच्चोंकी स्थायी कब्ज जवकि वीचवीचमें कभी-कभी अतिसार भी आ जाता हो। जिगरकी सख्ती। यह औषध अन्त-ड़ियोंकी ग्रन्थियो पर भी असर करती है। अम्लताकी अधिक पतले पाखाने आए; पाखानोंसे खट्टी गध आए, हरे, जेली जैसे आमके दस्त आए। दर्दके साथ आए, जोर लगाना पडे, जमी हुई केसीन आए, पाखाना कम और वार-

बार आए। मल त्यागके लिए सहसा वेग हो ; मलको रोक न सके। दाएँ जघामें दर्द। अन्तडियो कृमि, लम्बे कृमि, जबकि अम्लताका विशिष्ट लक्षण मौजूद हो, बच्चा बार-बार नाक नोचता हो, कभी-कभी भेंगापन हो, अन्तडियोमें दर्द हो, नीद बेचैनीके साथ आए। कृमियो कारण मलद्वारमें खुजली हो, विशेषतः रातको जब बिस्तरमें हो ( इसी दवाका इन्जेक्शन भी दें ), हरे या सफेद पाखाने जबकि अतिसार भी हो और कभी-कभी पीलिया भी हो जो पित्तके अभाववश आए। अफारेके कारण आन्त्रशूल। पुराना कब्ज मलद्वारमें खुजली हो, सन्तापपूर्ण कष्ट और कचापन।

**मूत्र प्रणाली कामाग :** मधुमेह जो जिगरकी खराबीसे आए। निरन्तर वेग, धार कट कट, बट कर आए, जोर लगाना पडे। बच्चों को थोडा-थोडा पेशाब अनजाने में होता रहता है जबकि इसके साथ अम्लता भी हो। पेशाबकी रंगत गहरी लाल और इसके साथ सधिप्रदाह। बारबार पेशाब हो। मूत्राशयकी दुर्बलता। स्वप्न आये बिना वीर्यपात हो। वीर्य पतला, पानी जैसा, कामवासना फिर जाती है या लिंगमें तेजी आए बिना बढ जाती है। अण्डों और वीर्यनाडियोमें खिचाव आए। मासिक समयसे बहुत पहले, रगत पीली, इसके साथ दोपहर बाद सर दर्द आए जिसका आँखों पर जोर हो, मासिक धर्मके बाद कष्ट बढे और ऐसा जान पडे कि घुटनेकी नाडियाँ छोटी हो गयी है। जरायुकी दुर्बलता और कष्ट जरायुभ्रंश जबकि पाखाना जानेके बाद भारी दुर्बलता आए जैसे जान निकल जाएगी। जरायुभ्रंश और इसके साथ गठियावातका दर्द। बाझपन और इससे साथ योनिसे तीक्ष्ण स्राव आए। लकोरिया जिसमें क्रीम जैसा, या शहदके रंगका, या तीक्ष्ण और पानी जैसा स्राव आए। जरायुसे खट्टे गन्ध वाला स्राव आए। मासिकसे पहले जोश और इसके साथ अनिद्रा।

**गर्भकाल :** गर्भकालीन, मतली जिसमें खट्टा तरल ठोस रूमे आए।

**श्वास प्रणाली :** नज़लेकी हालतोंमें जबकि अम्लता भी हो, अन्तरकालीन औषधके रूपमें हितकर है। नौजवानोका फेफडोकी टी० बी० बड़ी तेजी से आगे बढ रहा हो। इसके साथ आहें भरनेकी पैतृक प्रवणता, विशेषतः मासिकके दिनोंमें। कब्ज पसलियोंकी दरम्यानी पेशियों और निम्न वक्षगह्वर में शन्तापपूर्ण कब्ज। छातीमें दर्द जो दबाब और गहरा सास लेनेसे बढे।

**रक्तसंचार :** हृदयके आसपास कम्प हो। हृदयके **तल** भागमें दर्द हो जिसके आने पर अगोंका दर्द मिट जाये धडकन, नारी शरीरके

विविध अगोमें भी अनुभव हो। ऐसा जान पडे जैसे धमनियोमें कोई गोली लुढक रही है।

**कमर और हाथ-पांव :** गर्दनमें सख्ती आ जाती है। गर्दनकी ग्रंथियाँ फूल जाती है। गिल्हड़। कमर और अंगोंमें दुर्बलताका बोध हो। हाथ-पाँव सर्द। चलते समय टागे जवाब दे जाएँ। लडखडा कर चले। मेरुदण्डमें रक्तकी कमी, निम्नागोंमें लक़वे जैसे दुर्बलता। जघाओ के भीतरी भागमें खिचावमें सन्तापपूर्ण कष्ट। घुटनो, टखनो, जघाके अगले भाग, पाँवके खोखले भाग और पाँवके मासल भागमें दर्द हो। घुटनेमें चटखकी आवाज हो। बाजू थके हुये। बाजूके पिछले भागकी प्रसारक पेशियोंमें सुकडाव आए। कलाईमें दर्द। लिखते समय हाथों में ऐंठनके साथ दर्द हो आए। जोडोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट आए। गठिया-वातके कारण आया सधिप्रदाह, विशेषकर हाथकी उगलियोके जोडोंमें दर्द अपनी जगह छोडकर सहसा हृदयमें आ जाता है।

**स्नायु जाल :** कृमियोंके कारण अन्तडियोका क्षोभ, इसके कारण कभी-कभी भैंगापन आ जाता है और चेहरेकी पेशियोंमें खिंचाव भी आती है। दिमागी थकान और अधिक रमणके कारण आयी घबराहट। थकामकी अनुभूति, आमाशयमें भारी दुर्बलताका बोध गर्दनमें सख्ती, कम्प और धडकन। भारीपन जैसे लक़वा मार गया हो। थकान।

**नींद :** कृमियोंके कारण अशात नीद, अत्यधिक ऊघ; बैठे-बैठे सो जाए। खारिशके कारण सो न सके। आसानीसे जाग जाये। काम-वासनाके स्वप्न।

**ज्वर :** बारीक बुखार जबकि अम्लडकार आएँ खट्टे स्वाद वाला ढेरका ढेर आ पडे। पसीना तीक्ष्ण जिसमें बहुत तेज खट्टी गध आए। दिनमें पाँव बर्फसे सर्द रहें और रातको जलें। हर रोज दोपहर बाद गर्मीकी तम-तमाहट और सर दर्द हो।

**त्वचा :** फट जावे। एग्ज़िमा जबकि अम्लता हो, स्राव क्रीम जैसे रगका या मधु जैसे रगका हो। पीलिया। कमला। लाल दाग पडें। गुलाबी दाने। सुनहरी पीले रगके खुरण्ड। स्राव पीला, मधु जैसा और त्वचा पर सन्तापपूर्ण कष्ट आए। खोपडीकी बरदाद शीतपित्त, सारे शरीर खुजली हो। जैसे मधुमक्खी या भिडतैया डंक मारती हो। टखनेके जोड पर अधिक खारिश और इसके साथ एग्जिमा जैसी फुन्सियाँ, **तन्तु :** स्राव पीले, मधु जैसे रंगके रक्तमें श्वेत कणकी सख्या घातकरूपसे बढ जाती है। किम्पग्रन्थियोंकी सूजन जबकि अभी सरप्रीन आयी हो। बाल शोंप। **पीलिया :** १X विचूर्णका

व्यवहार करें। हड्डीकी बीमारियोंमें फॉस्फेट ऑव लाइमका सञ्चय बढ़ाता है। कंठमाला, इसकी ग्रन्थियोंपर ऐसा असर है जिसके अधीन वहाँसे विजातीय द्रव्य हट जाता है। गठियावात जनित संधि प्रदाह। रक्तकी भारी कमी।

**ह्रास-वृद्धि :** दर्दोंकी कुछ हालतें तूफान आने और बादल गर्जने पर बढ़ गयी। मासिक धर्मके दिनोंमें दोपहर बाद और शामके वक्त अनेक लक्षण बढ़ते हैं। ठण्डी हवासे परहेज।

**होमियोपैथिक तथ्य :** इस, औषधके परीक्षण डा० ई० ए० फैरिंगटन की देखरेखमें हुये थे। उनका साराश ऐलनके इन्साईक्लोपेडिया खण्ड १०में देखा जाता है। यह सब, इससे पहले, **हैनिमैनियन मथली** खण्ड १२ में छपे थे। इसके शानदार लक्षण ऐलनकी **हैण्ड बुक** और हैरिंगकी 'गाईडिंग सिम्पटम्स' खण्ड ८ में भी पाये जाते हैं।

**व्यवहार :** शुसलरने ६Xके व्यवहारकी सिफारिश की है। विचूर्ण और तरल ( अर्क ) दोनोका ही व्यवहार किया जा सकता है। डा० क्वीसका मत है कि ४ X का व्यवहार अधिक उचित जचता है, क्योंकि रक्तमें इस लवणकी अनुपात भी यही है। कृमियोंके कष्टमें इसका इजेक्शन भी दिया जा सकता है। डा० मार्गन कभी-कभी ३ शक्तिके व्यवहारकी राय देते हैं। उच्चतर और उच्चतम शक्तियोंका भी सफलतापूर्वक व्यवहार हुआ है।

**सम्बन्ध :** तुलना करें : कंठमालामें जब इसी तरहकी अम्लता हो, **केल्केरिया कार्व**से। आमाशयके नजलेमें **केल्केरिया कार्ब, काली कार्ब; नक्स; कॉकुल, कार्बो कार्बोलिक ऐसिड।**

बच्चोंके लिए **नेटरम फॉस** सर्वश्रेष्ठ दवा है विशेषकर जबकि अम्लपित्त के लक्षण मार्ग दर्शकके रूपमें मौजूद हो और खट्टी गंध वाले पाखाने भी आते हो, यहाँ **रेह्युम**से तुलना करें। इसमें सारे शरीरसे ही खट्टी गंध आती है, परन्तु पाखानेसे विशेषकर खट्टी गंध आती है। मजेदार बात यह है कि **नेटरम फॉस**के आमाशय सम्बन्धी लक्षणोंकी चिकित्साके दौरान अनेक बार तसदीक हो चुकी है और परीक्षणके समय इसमें संधिवातके लक्षण भी आए। संधिवातकी मंदाग्निमें **नेटरम फॉस**को विशेषरूपसे याद रखना चाहिए। इस हालतमें **कॉलचिकम, बैंज ऐसिड, ग्वायकम, लाइकोपोडियम,** और सल्फर की भी तुलना करे। सारे शरीरकी खुजलीमें तुलना करें, **डोलीकस, युर्टिका और सल्फर।**

---

# नेटरम सल्फ्यूरिकम ( Natrum Sulphuricum )

**पर्याय :** सोडियम सल्फेट, सोडा सल्फास, सोडिआई सल्फास।

**साधारण नाम :** ग्लॉबरका नमक ( समुद्रनमक ) सल्फेट ऑव सोडा।

**रासायनिक तत्त्व :** फार्मूला . $Na2\ SO4,\ 10H2O$

यह स्वाभाविक रूप से बहुत पैदा होता है। समुद्रके पानीसे, खारे झरनों और रूसी नमकीन झीलोंसे उपलब्ध होता है। आम नमक पर गंधकाम्लकी प्रक्रिया द्वारा इसे तैयार किया जाता है और दुबारा इसके कण बनाए जाते हैं। इसके बड़े-बड़े, वर्णहीन पारदर्शी टेढ़े या पट् कोण कण बनाते हैं। इनका स्वाद ठण्डा, कड़वा और खारा होता है। ये गर्म हवा में ३०° पर फूल जाते हैं। ये अपने ही पानी में घुल जाते हैं। ३३° मी पर स्वतः घुल जाते हैं। इससे ऊँचे या नीचे तापमान पर घुलनशीलता घट जाती है।

**तैयारी :** शुद्ध सोडियम सल्फेटसे होम्योपैथिक पद्धति पर तैयार किया जाता है।

**शारीरिक रासायनिक तथ्य :** अलव्यूमनवत पदार्थसे जब प्राणवायु का संयोग होता है। तो गधकाम्ल बनता है। वह तन्तुओंको नष्टकर देता है। वहाँ वह पनपनेकी हालतमें कार्बोनेटसे मिलता है। इसतरह कार्बोनिक ऐसिड मुक्त हो जाता है। यह लवण कोषो में नहीं पहुँचता, केवल मध्यवर्ती तरलमें ही रहता है। यह फालतू पानीका नियत्रण करता है और उसे शरीरसे निकालता है। फालतू पानीका मतलब है वह पानी जो लैक्टिक ऐसिड और सोडियम फॉस्फेटके विलगावसे बनता है और जलोदर के रूप में प्रकट होता है। इस लवण्के कणोका सन्तुलन बिगड़नेसे यह फालतू पानी तन्तुओंमें ही पड़ा रह जाता है जैसा कि असजीव पदार्थो और प्राणवायुके सयोगसे बना था।

**नेटरम सल्फका काम नेटरम म्योरके** विपरीत है। दोनोंमें ही पानी को अपनी ओर आकर्षित करनेका गुण पाया जाता है, परन्तु दोनोंके उद्देश्य विपरीत है। **नेटरम म्योर :** पानीको आकर्षित करता है और उसे शरीरमें ही खपा देता है, जबकि **नेटरम सल्फ** इसे विपरीत परिवर्त्तन या स्त्री काया-पलट के लिए आकर्षित करता है और उसे शरीरसे वाहर निकाल देता है।

**नेटरम म्योर :** सख्या वृद्धिके लिए, कणोका विभाजन करता है। जबकि **नेटरम सल्फ** बेकार श्वेत कणोंसे पानी खीचता है। और इस तरह कोषों का छितराव करता है और यही कारण है कि यह रक्तमें श्वेत कण

बढ जानेकी हालतमें काम आता हैं। यह त्वचाके भीतरी परतके कोषों और वात नाडियोंमें क्षोभ लाता है जैसा कि निम्न तथ्योंसे प्रकट होता है :

**नेटरम सल्फ**की गतिविधिके परिणामस्वरूप, मूत्रप्रणालीकी भीतरी परतके कोष, फालतू पानीको, जो वहाँ तरलके रूपमें पडा है, या उनकी शिथिलताके कारण रुका हुआ-गुर्दोंमें पहुँचा देते हैं। यह फालतू पानी गुर्देकी नलियो और मूत्राशय द्वारा, पेशाव वनकर वाहर चला जाता है।

**नेटरम सल्फ** पित्तकी नालियो, क्लोम और अन्तडियोकी भीतरी परत के कोषोंको उत्तेजना देता है, और इनके स्रावको स्वाभाविक स्थितिमें रखता है। यह इन अगोंकी वातनाडियोंको भी वल देता है।

यदि मूत्राशयकी सवेदनशील नाडियोंको **नेटरम सल्फ** उत्तेजना नही देता तो दिमागको मूत्र त्यागके वेग की सूचना नहीं मिलती और तव पेशाव अपने आप निकल जाता है। यदि निष्कासक पेशियोंकी चालक नाड़ियोंमें क्षोभ न आए, तो फिर उसके परिणामस्वरूप, पेशाव ही रुक जाता है। ( मूत्राघात )।

पित्तकोष की नाडियों पर **नेटरम सल्फ**को अनियमित क्रियाके फलस्वरूप, पेशावका आना कम या अधिक हो जाता है।

जव क्लोम रस घट जानेके कारण वहुमूत्र आया हो तो **नेटरम सल्फ** हितकर है।

यदि **नेटरम सल्फ** वृहदांत्रकी सचालक नाडियोंको पर्याप्त रूपसे प्रभावित न करे, तो, फिर या तो कब्ज आ जायगी, और या अफारा आकर दर्द होगा।

यदि **नेटरम सल्फ**के परमाणुओकी दूषित गतिविधिके कारण कोषो के मध्यवर्ती स्थानमे फालतू पानी शरीरसे वाहर न निकले तो, रक्त पानी जैसा पतला और पारदर्शी हो जाता है ; पानी जैसा पतला और पारदर्शी रक्त के कारण तथा जव पित्तका निस्करण और वहाव दूषित हो गया हो, तो फिर निम्नलिखित रोग आते हैं :

वारीके ज्वर, पित्त ज्वर ; इनफ्लूएँजा, पित्तकी कै, पित्तातिसार, शोथ, शोथयुक्त विसर्प, छाले वाले दाने जिसमें पीले रगका मवाद भरा हो ; एग्जिमा, दाद, प्रमेहके उपद्रव, पीले-से हरे या हरा स्राव।

ग्रॉओगल द्वारा वर्णित कफ प्रकृति, **नेटरम सल्फ**से मिलती-जुलती है, ढीला-ढाला; सुस्त, पानीका अश अधिक, रक्त पानी जैसा पतला और पारदर्शी।

**साधारण कार्य :** दूसरे अलकलाईन सल्फेटोंकी तरह, यह कडारेचक है। यह अन्तरियोंसे मल निकालता हैं, और, अन्तड़ियोंकी ग्रन्थियो जिगर और क्लोमकोंको उत्तेजित करता है। इसके अतिरिक्त, यह आमतौर पर

यूरिक एसिडकी प्रवणता भी पैदा करता है। और, निश्चित ही यह उस अनेक रूप वाले रोगकी विविध स्थितियोंमें लाभदायक है ( टी० एफ० एलेन ) आमाशयके पित्तज विकार ; कण्डरा जालमें पानीका सञ्चित होना, त्वचापर पीला पानी-सा स्राव आना, या छालों और फुन्सियोंपर पीलेसे रंगका खुरण्ड आना। पित्तका अधिक स्राव, यकृत विकार, शर्कराश्मरी ( पेशाबमें रेत आना), मधुमेह, सन्धिवात, आतशकी मस्से आदि।

मुख्य लक्षण है : **जीभकी जड़पर गन्दी, हरी-सी मैल या हरे-से भूरे रंगकी मैल जमना, और, बायीं करवट लेटनेसे कष्टका बढ़ना।**

पश्चिम देशोंकी हवा पानीमें, मलेरियाके सक्रिय साधनके रूपमें, **नेटरम सल्फ, नेटरम म्योर और सल्फरका** विचित्र सम्मिश्रण है। नमदार घरों तहखानों और गुफाओंमें रहनेसे आये रोगोंके लिये **नेटरम सल्फ,** सिद्धौषध है। कष्ट नमदार मौसममें बढ़ते हैं और वे कफ प्रकृति और प्रमेहविषसे मिलते-जुलते होते हैं। बच्चोंकी शारीरिक गठन होती है कि उन्हें तर खांसी और दमेकी बीमारियाँ आती हैं। **नेटरम सल्फ** शरीरमें जो विकार या रोग लाता है वे सबसे पहले वृहदान्त्रके निम्नांश और छोटी आंतके अन्तिम भागके आस-पास प्रकट होते हैं। वृहदान्त्रके गर्भकोष फूल जाते हैं। परिणाम यह होता है कि क्षुद्र शिराओंके सिरे लाल हो जाते हैं। दरम्यानी श्लैष्मिक झिल्लिया या तो पीली पड जाती हैं या वहां निशान पड़ जाते हैं। छोटी आंतके निम्न भागकी श्लैष्मिक झिल्लियोंकी रंगत चमकदार लाल हो जाती है। यह लवण कार्ल्सबाद झरनेके पानीका मुख्य अंग है। चूँकि यह जिगरके लिये उपयोगी है, इसीलिए यह पानी इतना अधिक पिया जाता है।

**सल्फेट ऑव सोडियम :** रक्त स्रावको रोकता है। रेवर्डिनने एक बार फ्रेंच सर्जिकल एसोसियेशनके सामने एक निबन्ध पढ़ा था और उसमें इस बातपर जोर दिया था कि यह लवण रक्तस्राव रोधक है। 'उन्होंने इसे अनेक बार सफलतापूर्वक बरता। यह छोटी मात्राओं ( १० सेण्टीग्राम —१॥ ग्रेन ) में, घण्टे-घण्टे बाद देते थे जबकि क्षुद्र शिराओं या केशिकाओं से खतरनाक तौरपर रक्तस्राव होता हो , फिर रक्तस्रावका कारण चाहे स्थानीय हो या चोट लगना। जैसे त्वचाके नीचेसे घातक फोडेको ऑपरेशन करके निकाला गया था और उसके बाद ऐसा रक्तस्राव शुरू हुआ जो ८ सप्ताह तक जारी रहा और उसने कोई चिकित्सा कबूल न की। चोट आनेकी हालतमें और अतिरजकी हालतमें भी यही सही है।

कस्समॉलने भी, इस औषधका व्यवहार किया था। उत्तर जर्मनीमें यह हेमोफिलियाके लिए काम आती है।

मेरा अनुभव यह है कि यह औषध खिलानेसे अधिक लाभ करती है और, जब इसके इंजेक्शन दिये जाते हैं तो यह कोई काम नहीं करती।

इसका निरन्तर व्यवहार करनेसे लम्बे कृमि निकल जाते हैं। डा० रेडमेखर ने कब्जके साथ पेशियोकी सुकडनमें ६०।० का घोल दिया और लाभ पहुँचाया। दिनमें वह एक ग्लास पिलाते थे और इससे ३-४ पाखाने हो जाते थे।

## चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** आत्मघात करनेका झुकाव **संयमका सहारा लेना पड़े,** जंगलीपन और चिडचिडापन जिसके बाद कई-कई रात नींद न आए। पित्तके कारण चिडचिडापन आए। प्रलाप, संगीत सुनकर तबीयत खराब हो जाती है, सुबहके समय कष्ट बढे। मग्न हृदय। गिर जाने के बाद या **सरपर चोट पड़ने से दिमागी लक्षण आया हो।**

**सर और खोपड़ी :** टपकनके साथ असह्य दर्द जो चन्दियापर अधिक होता है। सर चकराये जो पेटकी खराबीसे या पित्तकी अधिकतासे आए और जीभपर पीली मैल हो या मुँहका स्वाद कडवा हो। हर रोज़ आने वाला सरदर्द जिसके साथ पित्तातिसार या पित्तकी कै, मुँहका स्वाद कडवा हो और पेटदर्द भी हो। सरदर्द और उसके साथ सरमें चक्कर आए। सरके पिछले भागमें दर्द हो। गिर जाने या सरपर चोट आनेके दुष्परिणाम और इसके बाद **आए दिमागी विकार।** सरमें रक्त संचित हो जाता है। दिमागकी जडमें असह्य दर्द जैसे कुचला गया हो, या जैसे शिकजेमें जकडा गया हो, या जैसे कोई चीज़ दाँतोंसे कुतर रही हो। प्रलाप करें। चन्दिया पर जलन हो। ऐसा जान पड़े जैसे दिमाग ढीला हो गया है। खोपडी कोमलग्राही, कन्घे करे तो बालोमें दर्द हो।

**आखें :** सफेद पर्दा। पीला पड जाए, बडे-बडे, छाले जैसे दाने और जलते-जलते आंसू आए। पपोटोंके सिरोंपर जलन हो। सफेद पर्देका पुराना प्रदाह, इसके साथ कुकरे, हरे रंगकी पीब और अत्यधिक चमक लगे। सुबह पपोटे सट जाए और अत्यधिक चमक लगे। कोरनिया पर दाग़।

**कान :** कान दर्द, जैसे कोई चीज़ बाहर आ रही है। यह दर्द तर मौसम

में वढ़े। कान गूँजें। विजली की-सी तेजीसे चुभन हो जो कानके पार हो जाए।

**नाक :** मासिकके दिनोंमें नकसीर चले आतशकके कारण आया पीनस ; जव भी खुश्क मौसम तर हो, कष्ट वढे। जैसे वन्द है। भारी खुश्की और जलन। नथनोंमें खुजली हो। प्रकाश लगकर पीवका रंग हरा हो जाए। नजला। नमकीन कफ थूके।

**चेहरा :** मैला, पीला जो पित्तके कारण हो। गालकी हड्डीमें दर्द। चेहरेपर छाले पड़ें और फुन्सिया निकलें।

**मुँह :** स्वाद कडवा, लारसे भर जाए, गाढा, लेसदार, सफेद कफ या लार आए। गले, हवाकी नाली और आमाशयसे रोसाखखार निरन्तर आता रहे। आमाशयसे ऐसा खखार निरन्तर आता रहे आमाशयसे जो खखार आए वह सदा चिकना ; लेसदार और नमकीन होता है। मुँहमें जलन हो। स्वाद व्रुरा और सदा ही कफसे भरा रहे। मुँह और ठुड्डीके आसपास छालेदार फुन्सिया। मुँहकी छत स्पर्शकातर। तालु कोमलग्राही, ठण्डी चीज खाने से आराम मिले।

**जीभ :** गन्दी ; भूरी-सी हरी, या मैली हरा मैल आए। स्वाद कडवा, जीभ लेसदार नोकपर जलन वाले छाले। लाल।

**दाँत :** दाँत दर्द, तम्बाकू पीने से या ठण्डी हवासे या मुँहमें ठण्डा पानी रखने से घट जाता है। मसूढ़ोंमें जलन हो, मसूढ़ोंपर छाले पड़ें।

**गला :** डिफ्थेरिया जवकि हरे रगकी कै हो, अन्तरकालीन औषधके रूपमें हितकर है। गलक्षत, निगलनेपर ऐसा जान पडे जैसे गलेमें कोई गाठ रखी है। गला खुश्क। घाव वाला गलक्षत। गलेमें नजला गिरे जिसमें सफेद, गाढा, लेसदार कफ अधिक मात्रामें आए। सुवह खखारे तो नमकीन कफ आए।

**आमाशय :** हर रोज शामको प्यास लगे। आमाशय फूला हुआ और भारी मालूम दे, निरन्तर मतली आए। पित्तकी कै, मुँहका स्वाद कडवा, खट्टा ; सरमें चक्कर आए और दर्द हो। खारे स्वाद और हरे-से रगकी कै। पित्तके विकार पित्तका अधिकता, कडवे तरलकी कै, जीभ हरी-सी भूरी या हरी-सी मैला। पित्तजशूल जवकि उपर्युक्त लक्षण हों और पाखाना गहरे रगका हो। निशास्ते वाली चीजें हजम न कर सके। पीलिया जो चिढ के कारण आया हो। हरा पाखाना, भूरी त्वचा, आखें पीली। सीसक विप जनित उदरशूल ( १ × या २ × दे और वार-वार दें )। खट्टे डकार

आए, कलेजेमें जलन हो और [illegible] आए। [illegible] गुदामें अधिक हो। [illegible] पेट [illegible] [illegible] निरन्तर वेदना और [illegible]। [illegible] बायीं करवट लेटनेसे बढ़े। [illegible] उसमें पीब जैसा कफ आए। [illegible] पित्तपथरी।

**पेट और पाखाना :** [illegible] जिगरमें रक्त अधिक [illegible] हो जाए। [illegible] सके। पित्त [illegible] अफारेके कारण उदरशूल [illegible] दायें जंघामें शुरू हो और फिर सारे पेटमें फैल जाए। [illegible] में दर्द और उसके साथ [illegible]। [illegible], [illegible] पीला या हरी। [illegible] पतले पाखाने [illegible]। [illegible] खुजली। जिगर [illegible], यह विकार कभी-कभी अधिक [illegible] मेहनतके बाद आती है। छूनेसे जिगरमें [illegible] हो, [illegible] लगनेसे भी ऐसा ही कष्ट आए; [illegible], सुई [illegible] दर्द हो। [illegible] आतका प्रदाह। प्रातःकालीन अतिसार, [illegible] पर और जवाओंके दरम्यान [illegible] जैसी [illegible]। [illegible]।

**मूत्र प्रणाली और कामांग :** पेशाबमें [illegible]। [illegible] मुख्य औषध है। पुराना वृक्क प्रदाह, मूत्रपथमें [illegible] आए—जैसे पीला-सा, हरा। मूत्र [illegible] आए। [illegible] जैसी [illegible] और आमतौरपर इसके साथ सन्निपात भी होती है पेशाब करते जलन हो। पेशाबमें रेत आए। बहुमूत्र, विशेषतः मधुमेहमें। सुपारी और अण्डकोषका शोथ। प्रोस्टेट बढ़ जाए; पेशाबमें पीब और कफ आए। आतशकके जख्मोंसे जो नर्म और मांसल हो, उनसे हरे-से रंगका स्राव हो। कामांगोंकी खुजली; पुराना सुजाक। सुजाक और प्रमेह सुजाक जो दब गया हो। स्त्री कामांग प्रदाहित, फूले हुए और छालों से भरे हुये। मासिक आने से पहले नकसीर चले, मासिक मात्रामें अधिक आए, चरपरा और त्वचाको छीलने वाला, इसके बाद पेट दर्द और कब्ज, या प्रातःकालीन अतिसार हो और सर्दी लगे। लकोरिया जिसका स्राव तीक्ष्ण और त्वचाको छीलने वाला हो। भग प्रदाहित।

**गर्भकाल :** गर्भकालीन कै जिसमें कड़वा मवाद आए। जंघाशिराका फैल जाना जबकि यह विकार प्रसवके बाद आया हो। भगकी दाद।

**श्वास प्रणाली :** स्वर भंग। **दमा** जो मौसममें नमी आ जाने के बाद बढ़े। **तरदमा**; कफ घड़घड़ाये। दमा जो सासकी नलीकी सोजिशसे

आया हो। छाती में भारी दुर्बलता जैसे बस अभी प्राण निकल जाएँगे। खाँसी जिसमें गाढी, रेशेदार, हरी-सी और पीब जैसी कफ आए, छातीमें सन्तापपूर्ण कष्ट, जो दबावसे घटे, परिणामस्वरूप खाँसते समय रोगी अपनी छातीको थाम लेता है। भाला गडने जैसा दर्द विशेषत: छातीके बायें भागमें। नमदार मौसममें श्वासकृच्छ्रता बढे। सासकी नालियोंकी सोजिश; खाँसी प्रातःकाल बढे। (काली कार्ब)।

**रक्त संचार :** हृदय पर दबाव और व्याकुलता, इससे आराम पानेके लिये खुली हवामें जाना पडे।

**कमर और हाथ-पाँव :** कमरके निचले भाग और त्रिकभागोंमें कुचले जाने जैसा दर्द। मेरुदण्ड और गर्दनमें सन्तापपूर्ण कष्ट, गर्दन तोड बुखारके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण दवा है। जबकि गर्दनके पिछले भागमें खिचाव आए और पीठमें आक्षेप हो। बगलकी ग्रन्थियोंकी सूजन और उनमें पीब आ जाना। नखव्रण। बायें कूल्हेमें सूई गडने जैसा दर्द, हाथ कापे सुस्ती और पैरोंपर शोथ आ जाए। नाखूनकी जडके आसपास प्रदाह और पीब आ जाए। नाखूनोंके नीचे सरसराहटके साथ दर्द जैसे वहाँ घाव हो गया है। पावकी अगुलियोंमें खुजली। गृध्रसी जो बैठकर उठनेपर या बिस्तरमें करवट बदलनेपर बढ़े और किसी हालतमें भी कल न आए। कूल्होंसे घुटनों तक दर्द हो। अगोंका गठियावात जबकि आमाशयके लक्षण विशिष्टरूपसे मौजूद हों। जोडोंमें कडकडाहट। ऊरुस्तम्भ। पावका गठियावात; नया हो या पुराना। तलवोंकी जलन जो घुटनों तक पहुँच जाए। सधि प्रदाह।

**स्नायुजाल :** थकानकी अनुभूति विशेषतः घुटनोंमें हरकत करनेके लिए बेचैनी। निठाल और पेटदर्द। पेशीकम्प और क़ब्ज। सारा शरीर कापे। सोते-सोते हाथपावमें झटके आए। लिखते समय हाथ कापे।

**नींद :** तन्द्रालुता, प्राय: पीलियाके पूर्वरूपके तौरपर आती है इसके साथ पित्तके लक्षण, कष्ट दोपहरसे पहले और पढते समय बढ़े। व्यग्रतापूर्ण स्वप्न रातको दमेका दौरा होनेसे जाग उठे। सोते ही स्वप्न आने लगे; चौंके जैसे डर गया था। अफारेके कारण आए दर्दसे नींद टूट जाए।

**ज्वर :** "मलेरिया; बारीके बुखारोंकी हर एक हालत, पित्तकी कै। विराम पित्तज्वर, पीलाज्वर जिसने सख्त विराम पित्तज्वरका रूप धारणकर लिया हो और उसमें हरी-सी पीली, भूरी या काली कै हो। शामको सर्दी लगे जिसमें शरीर बर्फ-सा सर्द पड जाए। चन्दियापर गर्मी लगे। पसीना आए और प्यासका अभाव जिगरमें सन्तापपूर्ण कष्ट, हवा अपनी जगह बदले और अतिसारका झुकाव" (जे० डब्ल्यू० वार्ड एम० डी०)।

**त्वचा :** आखोके इर्द गिर्द, खोपडीपर, चेहरेपर, मलद्वारपर, और, छातीपर मस्से वनानेकी प्रवणता। वच्चोंकी त्वचा फट जाती है और इसके साथ पित्तके लक्षण भी आए। एग्जिमा। छाले, फुन्सिया जिनमें पीला, पानी-सा मवाद आए उगलिया फूली हुई और कडी। हथेलिया कच्ची और सन्तापपूर्ण और उनसे पानी जैसा मवाद टपके। विसर्प, चिकना, लाल, चमकदार, त्वचामें सरसराहट या वेदना हो। सारे शरीरपर छाले जिनमें पानी भरा हुआ हो ऐसे निशान जिनमें पीला पानी-सा मवाद भरा हुआ हो। दाद। छाले कट जानेके वाद उनपर पीले रगका खुरण्ड जमे। त्वचाके तर विकार जिनके साथ पित्तके लक्षण भी हों। शोथयुक्त त्वचा रोग। त्वचा पीली, कपडे उतारे तो खुजली हो प्रमेहके मस्से। वरसो पुराने नासूर जिनमे पानी जैसी पीव आए और उनके इर्द-गिर्द चौडी नीली-सी लकीर।

**तन्तु :** शिराजालमें पानीकी मात्राका नियन्त्रण करती है। शोथ, चिकनी सूजन विजातीय द्रव्यका अनजानेमें सञ्चित हो जाना। जलोदर जा कडरा जालको अशात करे। पीले, पानी जैसे स्राव, प्रमेह और रक्तमें श्वेत कणोंका घातकरूपसे वढ़ जाना। **कफ प्रकृति**। क्षय। विषाक्त रक्त। गृध्रसी।

**ह्रास-वृद्धि :** तर, गीले मौसममें कष्ट वढता है। खुली हवामें गर्म, खुश्क मौसममें कष्ट घटता है। ऐसे लक्षण जो नमदारघरों, तहखानोमें रहनेपर या काम करनेसे आए पानी चाहे किसी रूपमें हो, कष्ट वढता है। ऐसे पौधे जो पानीके पास पनपें और मछली कष्ट वढाती है। दर्दके कारण वार-वार पहलू वदलना पडे (रस) **वायीं ओर लेटनेसे आमतौरपर कष्ट वढ़ता है।**

**होम्योपैथिक तथ्य :** सबसे पहले डा० शूमलरने १८३२ में इसके परीक्षण किए थे। वादमें डा० नेनिंगने भी इसे अजमाया। सर्वोत्तम लक्षण हैरिंगके **मेटिरिया मेडिका**में पाए जाते हैं, और कुछ परिवर्त्तनोके साथ ऐलेनके **इनसाइक्लोपिडिया**में आए। परन्तु दार्शनिक सूझवूझ और औषधके रूपमें व्यवहार करके जांचनेका, जानकारीमें वृद्धि करनेका श्रेय ग्रॉफोगलको प्राप्त है। उन्होंने इस औषधके लक्षणोंकी तुलना करके इन्हें कफ प्रकृतिका नाम दिया और वताया कि यह सव सुजाककी पुरानी सक्रामकताके प्रभाव है उनके मतकी वार-वार तसदीक हुयी है।

**व्यवहार :** सीसकविषमें निम्न शक्ति १ X या २ X दें और वार-वार दें। शुसलरने ६ X के व्यवहारकी सिफारिश की है। ग्रॉफोगलने मुख्यत. २ X से ६ X तकका व्यवहार किया जवकि हैरिंग और दूसरोंने ३० और २०० शक्ति व्यवहार किया।

**सम्वन्ध : नेटरम सल्फ**के अनेक लक्षण नेटरम-समूह औषधो और सल्फर

में पाए जाते हैं। आखके लक्षणोंके लिए ग्रेफाईट्ससे तुलना करें, इसमें भी आँखके पुराने रोगोंमें प्रकाशसे कष्टमें भारी वृद्धि होती है। खाँसी की तकलीफमें **ब्रायोन नेटरम सल्फ**से मिलता-जुलता है। छातीमें भारी दुर्बलता का बोध, सन्ताप और छातीको सहारा देनेकी जरूरत भी दोनोंमें आम पायी जाती है। भेद यह है कि **नेटरम सल्फ**में खासीमें जो कफ आता है वह पीब-सा पतला; गाढा, रेशेदार, पीला-सा हरा होता है और ऐसा बादकी हालतों (दर्जों) में होता है। जबकि **ब्राईओन** आरम्भमें आता है, इसमें खांसीके साथ छातीमें कच्चापन, घुटन, जलन और चीरने-फाडनेकी अनुभूति भी पायी जाती है।

दमेमें **साईलीसिया**से तुलना करें जो कि दमेके लिए मूल औषध है। सुज़ाकमें **नेटरम सल्फ**, थुजा और मर्करीने मुकाबला करता है। **नेटरम सल्फ** में वेदनाहीनता पायी जाती है और स्राव पीला-सा हरा, गाढा होता है।

जो प्रमेहविष शरीरकी गहराई तक पहुँच गया हो—उसमें यह थुजाका पूरक है, पर जबकि प्रमेहविष किसी कफ प्रकृतिवालेको सक्रामकताके रूपमें मिला हो। बहुमूत्रमें **फेरम फॉस ऐसिड फॉस** इससे पहले आते हैं। कूल्हेकी बीमारियोंमें **स्टिलिजिया**से तुलना करें।

# साईलीसिया ( Silicea )

**पर्याय :** सिलिका, साईलीसिया टेरा; साईलेक्स; डिकार्बोनाईज्ड ह्वाईट पवल, ऐशिडियम सिलिसिकम; सही नाम है, सिलिसिक आक्साइड।

**साधारणनाम :** प्योर फ्लिंट या क्वार्त्स, सिलिशिस अर्थ।

**रासायनिक तत्त्व :** फार्मूला : $SiO_2$

सिलिका और सोडियम कार्बोनेटको मिलाकर बनाया जाता है। घुली हुयी तलछटको फिल्टर किया जाता है और फिर हाईडरोक्लोरिक ऐसिड के साथ अत. पात किया जाता है। यह सफेद चूर्ण है। इसका न कोई स्वाद है न गंध।

**तैयारी :** शुद्ध **साईलीसिया** होम्योपैथिक फार्मोकोपियाके नियमोंके अनुसार पीसा जाता है। डा० पी० वाईल्ड विशेषतः इस सोडासिलिकेट का व्यवहार करते हैं जो "लिक्विड ग्लास" कहलाता है। यह पानीमें आसानी से घुल जाता है। (देखिए "व्यवहार") डा० गार्थविलिकिन्सन

उस **साईलीसिया**को पसन्द करते हैं जो बासमे प्राप्त होता है। यह बास वाला साईलीसिया नए रोगोंमें अधिक लाभदायक है।

**शारीरिक रासायनिक तथ्य :** यह निर्जीव लवण कई तरहके घासों, अनाज और पत्तों आदि वनस्पतियोंमें बहुलतासे पाया जाता है। और इसके मुकाबलें, पशुओंमें कम पाया जाता है। परन्तु जितना भी मिलता है, वह बहुत बढ़ियाँ किस्मका होता है। विशेषतः वह जो पशुओंकी रीढ़के मोहरोंमें मिले। **साईलीसिया** बहुत अल्पांशमें रक्तकी राख, पित्त या पेशाव में भी पाया जाता है; अण्डेकी सफेदीमें कुछ अधिक (७०।०) पाया जाता है। बाहरी चमडी, बालों और नाखूनोंकी राखमें इसमेंसे भी अधिक मात्रामें पाया जाता है। यह लवण सयोजक तन्तुओं विशेषतः अविकसित अवस्था में पाया जाता है। अतएव मेरुदण्ड दिमाग और वातनाडियोंपर असर करता है। जब इस नमकके परमाणुओंकी गतिविधिमें विघ्न पड जाता है तो सयोजक तन्तु शिथिल पड जाते हैं और वहाँ सूजन आ जाती है, यह सूजन कुछ दिन रहती है, फिर मिट जाती है या वहाँ पीव आ जाती है। गायसवल्डि विश्वविद्यालयके अध्यापक शूलत्सने यह लवणमें चक्षुताल, पीव और डिम्ब रसौलीमें भी पाया।

**साधारण कार्य : साईलीसिया** मानव शरीरके मुख्य भागों जैसे हड्डियों, जोडों, ग्रन्थियों; त्वचा और श्लैष्मिक झिल्लियोंपर प्रधान रूपसे असर करता है। यह वहाँ पोषणहीनता लाता है, और कण्ठमालासे मिलती-जुलती हालतें पैदा करती है। इसका असर बहुत गहरा है और देर तक जारी रहता है। यह लवण विशेषरूपसे उन तबीयतोंके लिए हितकर है जो अपूर्ण पोषणसे पीडित है, क्योंकि समीकरण भी दूषित रहता है।

यह उन बीमारियोंकी दवा है जिनमें **पीव बन चुकी हो**, इस तरहके नासूरों से इसका सामीप्य है। जहाँ किसी सयोजक तन्तु या त्वचाके प्रदाहित भागपर पीव आ गयी हो, वहाँ इसका व्यवहार हो सकता है। कण्ठमाला का विष जो शरीरमें बडी गहराई तक फैल चुका हो और पीवकी सक्रामकता (वैकसीन) की कुछ खास हालतोंके लिए यह हितकर है।

**कल्केरिया सल्फ**की तरह, **साईलीसिया**भी पीववाली हालतोंके समान है। दोनोंमें अन्तर यह है, **साईलीसिया** नासूरको **पकाता है और पीव लाता है**, जबकि **कल्केरिया सल्फ पीवका नियन्त्रण करता है** और पीव वाले घावको भरता है। जबतक विजातीय द्रव्य मौजूद रहेगा **उसे केवल पीव द्वारा ही बहाया जा सकता है**, तबतक **साईलीसिया** काम देता है और जब तक सारी पीव बह न जाए और विजातीय द्रव्य निकल न जाए,

इसका इस्तेमाल जारी रखना चाहिए। यदि अब भी घाव न भरे, तो फिर **कल्केरिया सल्फ** देना चाहिए। हड्डियोंके पर्दोंकी बीमारियाँ। पीव जो बहुत गहराई में हो। पीव गाढी, पीली, ऐसी अवस्थाएँ जब रोगने विपरीत गति धारण करके वातनाडियों को प्रभावित किया हो। जब पीव आना बन्द हो गया हो, परन्तु सिलसिला चल रहा हो और जब पीवने पुराना ठिकाना बना लिया हो, चाहे वह छोटा हो या बडा नासूर हो या कुछ और ; तथा— जब शारीरिक स्थिति क्षुब्ध और दुर्बल हो और जब स्नायु जाल आसानीसे थकान मान लेता हो ( जैसा कि डनहमने कहा है इसका विपरीत लक्षण है ; वातनाडियोंकी **आम थकान, शिथिलता** ) तो फिर **साईलीसिया** सिद्धौषध है।

स्थानीय थकानकी हालतमें जब लकवेसे मिलते-जुलते लक्षण आए हों जैसे मलान्त्र फूल गयी हो या फैल गयी हो, क्षुब्ध हृदय, आम भारी दुर्बलता जैसे प्रसवके बाद आती है। तो इस पर सदा ध्यान देना चाहिए। जब स्पर्शके ज्ञानहीनता, सुन्नपन या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिक्षेप आए हो, तो भी, यह लवण काम करता है।

रक्तवाले या पतले अलब्यूमनवाले स्रावोंको जो तन्तुओंमें आए हों, **साईलीसिया**, लसिकर ग्रन्थियों द्वारा उसका पुनः शोषण कर लेता है। ऐसी हालतोंमें यह **कल्केरिया फॉस**के बाद काम करता है।

साईलीसिया पुराने सन्धिवातवाले दर्दोंके लिए परमौषध है। यहाँ यह सयोजक तन्तुओंको उत्तेजित करता है और उन्हें विवश करता है कि वे वहाँ सग्रहीत और सञ्चित युरेटोंको लसिकाओं द्वारा बाहर फेंक दें।

**साईलीसिया** पावके दवे हुए पसीनेको भी बहाल करता और इस तरह अपरोक्ष रूपसे यह उन बीमारियोंके लिए लाभदायक है जो पावका पसीना दब जानेसे आयी हों धुध, मोतिया और लकवा आदि।

यदि सयोजक तन्तुओंके किसी भागमें **साईलीसिया**के कणोंका अभाव हो जाए, तो उसके परिणापस्वरूप उनमें क्षीणता या अपकर्ष आता है। स्नायु-जालके मध्यभाग और छोरों पर भी इसका गहरा असर है जैसा कि सुस्ती ऊँघ व्यग्र स्वप्न, स्नायविक क्षोभ, खिलता, सरदर्द, कम्प और आशिक लकवे की हालतमें देखा जाता है।

## चरित्रगत गुण और लक्षण

**मन :** सोच-विचार कठिन हो जाता है। मनको एकाग्र कर सके। जगाया जा सके , परन्तु आसानीसे थक जाए। शारीरिक दृष्टिके

मुक़ाबले दिमागी तौर पर बलवान होता है। **करकराहट**, खिलना ; चिड़चिड़ा ; जीवनसे उकताया हुआ। **आवाज सहन हो,** इसके साथ व्यग्रता। भारी चिड़चिड़ापन। एक अव्यवहारिक और विचित्र प्रकारका मानसिक विकार आता है और रोगी सूईयों और पिनोंसे खेलता है। दिमाग़ी कमज़ोरी। छात्र कोई चीज पढ़ते या दोहराते समय घबड़ा जाता है। क्योंकि वह अपने मनको एकाग्र नही कर सकता। सोचना चाहता है। परन्तु सोच नहीं सकता।

**सर और खोपड़ी :** चक्कर आए, आगे बायी ओर गिरनेका झुकाव, कानकी किसी खराबीसे चक्कर आए। सर दर्द और उसके साथ चक्कर ; खोपडी पर छोटे-छोटे गूमड निकलें, भूख, पेटके क्षोभ, अधिक अध्ययन और स्नायविक थकानके कारण सरदर्द हो और चक्कर आए। सरदर्द, तपकनके साथ, जैसे कूटा या पीटा जा रहा है, जैसे दो पत्थरोंके दरम्यान मीचा जा रहा है, सर ठण्डा और उसे निरतर बाधे रखना चाहे। **गर्दनके पिछले भागसे चाद तक दर्द हो, दायीं ओर अधिक हो : आवाज़, परिश्रम, प्रकाश, और अध्ययनसे अधिक हो और गर्मीसे घटे।** दवानेसे दर्द जो ऊपरसे नीचेको आए। इसके साथ भगमें रुकरुककर खारिश हो। दिमाग़के विकारसे मृगी आए। मृगीका दौरा होनेसे पहले खोपडीके दायें भागकी गहराईमें सूई गडने जैसा दर्द, और इसके साथ बाजूमें मन्दा-मन्दा, भारी ऐंठन। साथ दर्द हो। खोपडी अत्यधिक कोमलग्राही और सन्तापपूर्ण। खुजलाए। वेदनापूर्ण फुन्सियाँ। पीववाले घाव। बच्चोके सरपर पसीना आए, वह सरको लपेटकर और गर्म रखना चाहे। ब्रह्मरध्र खुला। सरके पिछले भाग पर दुर्गन्धित फुन्सियाँ निकलें। बाल झडें। खोपडीका कडा गूमड गाठ।

**आँखें :** आसूकी नाडियोंकी बीमाडियोंके लिए महौषध है। आंसूकी नाड्यिोंका नासूर। अजनहारी। पलकोंकी सूजन। पपाटोंके नाडी जालकी रसौली, आँखो और पपोटोंके आसपासके फोडे और गाठें। छालेवाले कनीनिका प्रदाह। कनीनिकाके घाव, विशेषतः छोटा घाव और छेद होनेका झुकाव। गन्दा घाव जिसमें भाला गडने जैसा दर्द हो (हीपर) मोतिया। धुंध जो पावका पसीना या फुन्सी दब जानेके बाद आया हो आखको कोपोंके विकार। कनीनिकाके पुराने घावके निशान और धुँध जो चेचकके बाद आए हों। पलकोंका स्नायुशूल विशेषतः दायीं आँख के ऊपर। गोलोंमें दबाव और सन्तापपूर्ण कष्ट। धूलकण जो हवामें उडते

हुए रोगीको मक्खीके आकारमें दिखायी दें। लिखते या पढते समय अक्षर सट जाएँ। गोलेके नासूर।

**कान :** ऊँची आवाज सहन न हो मर्ज सुनाई दे। मध्यभागका प्रदाह; विशेषतः पुराना पीब जो बहे। बाह्यछिद्रका प्रदाहपूर्ण सूजन। ऊँचा सुनायी दे, इसके साथ मध्यनालीकी सूजन और कानसे दही जैसा, पतला स्राव आए और इसके साथ स्तनाकार कोपोंका नासूर। नहानेके बाद प्रदाह आए। बहरापन; कभी-कभी ऊँची आवाजके साथ कान खुले।

**नाक :** नोंक लाल, नथनोंमें खारिश हो, छींकें आएँ। जुकाम, नजला। पीनस, नाकसे दुर्गन्धित स्राव आए जबकि रोगने सयोजक तन्तुओंकी निम्न श्लैष्मिक झिल्लियोंमें या अस्थि आवरणोंमें घर कर लिया हो। पुराना सर्दी जुकाम; इसके साथ श्लैष्मिक झिल्लियोंकी सूजन, खुश्की, त्वचाका छिल जाना, पपडी जमना और घ्राणशक्तिका मिट जाना भी पाए जाय। आतशक या कठमालाके कारण नाककी हड्डियोंके नासूर। नाकमें असह्य खुजली चले। दुराग्रही घाव जिनसे चरपरा, त्वचाका छिलनेवाला स्राव आए। नथनों और होंठोंके आस-पास दादके दाने।

**चेहरा :** चेहरेमें दर्द और इसके साथ चेहरेमें छोटी-छोटी गाठें निकलें। मसूढा निकलनेके बाद गोल तन्तुओंमें सख्ती आए प्रमेहविष, जवानीके कील, चेहरेकी चमडीका टी० बी०। चेहरेकी चमडी फट जाए। जबडोंका नासूर और मुर्दापन। होंठकी गाठें। चेहरा पीला, मटयाला।

**मुँह :** लार बनानेवाली ग्रन्थियोंकी सूजन। मुँह का सडाव; इसके साथ तालुओं पर गहरे घाव। पुराना गलकोप प्रदाह और उसके साथ कब्ज। मुँहके कोनोंके घाव।

**जीभ :** जीभकी सख्ती, घाव, ऐसा बोध हो जैसे जीभपर कोई बाल रखा है।

**आमाशय :** जैसा ही स्तनपान करता है, कै कर देता है। अलकोहल वाले उत्तेजक पदार्थ सहन न हों। आमाशयके निम्न छिद्रकी सख्ती। पुरानी मन्दाग्नि जिसमें डकार भी आएँ, कलेजेमें जलन हो, और सर्दी लगे; सुबह दो पहरसे पहले कै हो, मास और गर्म खानेसे अरुचि। अत्यधिक भूख।

**पेट और आमाशय :** बच्चोंका बडा पेट। जघासेकी ग्रन्थियाँ बढ जाती है। कब्ज जिसके साथ **मेरुदण्ड**के विकार भी हो, मलान्त्रके अर्द्ध पक्षाघात के कारण आया कब्ज; विशेषत. **जबकि पाखाना आशिक रूपमे बाहर आकर भीतर लौट जाय**, यह विकार मलद्वारकी सकोचक पेशीके क्षोभके कारण आए। जिगरका नासूर जबकि जिगर सख्त भी हो। बालातिसार;

पाखानेसे मुर्दा जैसी गंध आए , चेचकका टीका लगवानेके बाद ऐसा विकार आए , इसके साथ खट्टी गंधवाला पसीना, जो सर पर आए और पेट गर्म, फूला हुआ, सख्त । पाखाना पीला, पानी-सा पतला ; माण्ड जैसा । हवा इधर-उधर चले , अत्यधिक वेदनापूर्ण खूनी बवासीर । कृमि जनित उदरशूल । मलद्वारका फटाव नासूर । पेटमें अफारा ।

**मूत्र प्रणाली और कामांग :** गुर्दोंमें पीव आ जाए, पेशाब, और खून आये । प्रोस्टेटका प्रदाह । पेशाबमें लाल रेत और युरिक ऐसिड आये । चन्नों या पेशियोंमें खिंचाव आनेके कारण पेशाब अपने आप निकल जाये । पुराना आतशक जिसमें पीव और सख्ती आयी हो । पुराना सुजाक जिसमें गाढा पीव जैसा, बदबूदार स्राव आये । कामोत्तेजना ; कामवासना सम्बन्धी विचार दिमाग पर छाए रहते हैं । कभी-कभी स्वप्नदोष भी हो और इसके साथ लकवे जैसी कोई बीमारी । नामर्दी । मैथुनके बाद भारी दुर्बलता आए ; आसानीसे थक जाए । अण्डकोष पर अधिक खातीशह हो और पसीना आए । हाइड्रोसील । वीर्यस्राव । **मासिक धर्मके दिनोंमे सारा शरीर बर्फकी तरह सर्द पड़ जाता है, कब्ज आती है, और पैरों पर बदबूदार पसीना आता है ।** ऋतु समयसे पहले परन्तु कम आए । मात्रामें अधिक आना कभी-कभार ही पाया जाता है । योनिके बाह्य भागपर जलन और खुजली हो । कामोन्माद । लकोरिया, स्राव तीक्ष्ण, मात्रामें अधिक और खुजली पैदा करने वाला । स्तनपान करानेके दिनोंमें मासिक आए । दो मासिकोंके दरम्यान , रक्त आ जाए । गर्भाशयकी नालियोंमें पानी उतर आए, या पीव आ जाए , इसके साथ पानी स्राव मात्रामें अधिक हो । योनिकी रसौली जिसमें तरल भरा हुआ हो । बाझपन । भगोष्ठका घाव जिसके नासूर बननेका खतरा हो । पानीमें खडे रहनेके कारण बच्चेदानीसे खून आए ।

**गर्भकाल :** छातियाँ बहुत सख्त और वेदनापूर्ण , जैसे सुकड रही हों । स्तन प्रदाह, यह दवा वहाँ पीव नहीं आने देती और सख्तीको शोषणकर लेती है । स्तन फट जाते हें , नासूर बन जाते हैं । उनमें सख्त गाठें पड जाती हैं और उनमें पीव आनेका खतरा पैदा हो जाता है गर्भकालमें पैरमें भारी सन्ताप-पूर्ण कष्ट और लगडाहट आए ।

**श्वास प्रणाली :** नमोनिया जब पीव आ चली हो । फेफडोंके पर्दोंमें पीव आ जाती है । घडघडाहटके साथ, तर खासी जिसमें पीव वाली, गाढी, पीली-हरी पीव आए और टी० बी० ज्वर ; रातको पसीना अधिक आए जो

कमजोरी पैदा करे। पुराना ब्राकाईटिस और फेफडोकी टी० बी० बीमार बच्चो की खासी और रातको पसीना अधिक आए। स्वरभग क्षोभजनक खासी जिसमें यह बोध हो कि जीभ पर बाल रखा है। गलेमें और वक्षगह्वरके ऊपरी भागमें गुदगुदाहट होकर खासी आए। यह खासी ठण्डा पानी पीने से, रातको लेट जानेके बाद बढे बलगम अधिक गाढा, पीब जैसा और दुर्बलताके साथ आये तथा छातीकी गहराईमें दर्द हो। फेफडोंमें टी० बी० के घाव। खासी और गलक्षत जिसमें दुर्गन्धित कफके छोटे-छोटे दाने निकलें।

**रक्त संचार :** बहुत तेज हरकत या शक्तिसे बैठे रहनेके बाद धडकन हो। दिलके पुराने रोग।

**कमर और हाथ-पाव :** कधोके दरम्यान सन्तापपूर्ण कष्ट। मेरुदण्ड झुक जाता है, बालशोष, **मेरुदण्डका क्षोभ।** घुडसवारीके बाद त्रिकभाग में दर्द हो। मेरुदण्डका कारबवल। मेरुदण्डका जन्मजात रोग। जघा की पेशियोंका घाव। कूल्हेकी बीमारियाँ। यह दवा वहाँ पीब नही आने देती या इसका नियन्त्रण करती है। हाथ-पावके घाव जिनसे गाढी, पीला मवाद आए और पीब बननेका केन्द्र बहुत गहराईमें हो।

**नखव्रण :** उगलियोंके सिरोमें ऐसी अनुभूति जैसे वहाँ पीब आ गयी है। यह दवा पीब बनाने, उसका नियन्त्रण करने और नया नाखून लानेमें सहायता करती है। घावमें गन्दा मासल आए, नासूर, पुराने घाव जिसमें जलन और भाला गडने जैसा दर्द हो। घुटनेके जोडका पुराना प्रदाह जिसमें सूजन अधिक हो और जोड़में अडकन भी हो। हड्डियों विशेषतः जघास्थितमें दर्द। यह दर्द दबानेसे बढता नही। हाथोंका कम्प। हड्डियोके नासूर जिसमें पतली पीब और गली-सडी हड्डीके टुकडे निकले। पावकी उगलियोंके नाखून मासमें गडकर बढें। **पावपर दुर्गन्धित पसीना आए;** अत्यधिक दुर्गन्धित। यह पसीना दब जानेसे और कई तरहके रोग आ जाते हैं। बगलमें बदबूदार पसीना आए। **नाखून बढ़े और मुड़ जाएँ, टेढ़े मेढ़े बढ़े,** उनपर सफेद दाग पडें। टखनेसे तलवे तक पावमें दर्द हो। टखने कमजोर। पाव असह्य रूपसे कोमल हो जाते है। रीढपर चोट आनेके बाद आए स्नायविक रोग। **लिखते समय हाथमे ऐंठन आए।** हाथ और बाजू भारी-भारी लगे जैसे लक्वा मार गया हो। रातको कधे और बाजूमें दर्द हो जो गर्म कपडेमें लपेट लेनेसे घटे। अग बहुत थके-थकेसे जैसे उन्हें लक्वा मार गया है। जोडोमें दर्द हो, विशेषत कूल्हों, घुटनों और कधोंके जोडोमें। दर्द उस समय आता है जब बैठा हो। **अधिक दूर चलते समय पाव और पाव**

की उगलियोंमे ऐंठन आए। पीठपर ठण्डी हवा लगने के बाद आए रोग।

**स्नायु जाल :** मृगी जिसका दौरा रातको आए। दौरेका आरम्भ सूर्य चन्द्रसे हो, शरीरके विविध अगोंमें दर्द जैसे वहाँ घाव बना रहे हैं। मेरुदण्डका क्षोभ और कोमलग्राहता जिसके साथ सहानुभूति पूर्वक आने वाले दर्द भी हों। सकोचक पेशियोंका आक्षेपके साथ बन्द हो जाना। हिस्टीरिया और कष्टसाध्य वातवेदना। पीड़ित अग ठण्डा लगे, परन्तु नमी सहन न हो। दुर्बलता, लेट जाना चाहे। अगोंका कम्प और आशिक लकवे जैसे लक्षण मोहरोंका टी॰ बी॰। जरा-सी उत्तेजना आनेमें आक्षेप आ जाए। **थकान और स्नायविक उत्तेजना।**

**नींद :** खूनकी गर्मीके कारण नींद न आए। धड़कन, नाड़ी तेज, गर्मी लगे। सोते-सोते बोले, अगोंमें झटके आए। बुरे स्वप्न आए।

**ज्वर :** टी॰ बी॰ (यक्ष्मा) ज्वर जिसके साथ देरसे पीव आती हो दिनभर **सर्दी लगती रहे**; हरकत करते समय भी सर्दी लगे; शरीरमें स्वाभाविक गर्मी की कमी। ठण्डी हवा सहन न हो। दोपहर बाद **गर्मी लगे** जो सारी रात जारी रहे और उसके साथ ही पैरोंमें जलन भी हो : **रातको पसीना आए,** भूख मिट जाए और थकान आए। सरपर पसीना अधिक आए **पावपर दुर्गन्धित पसीना आए।**

**त्वचा** . अत्यधिक कोमलग्राही, खुजलाए, जले, गाठें कड़े, छाले पड़े घाव, कारबकल, नखव्रण, घातक फोड़े। बवाइया, खोपड़ीकी तर दाद जिससे दुर्गन्धित स्राव आए। एग्जिमा जो कीलदार हो। कील। अत्यन्त वेदनापूर्ण फुन्सियाँ शरीरके किसी भी भाग पर फोड़े निकलनेका भारी झुकाव। नासूर, कारबकल और बादमें रही सख्ती। घाव जिसमें गदा मास आया हो, उससे गदा पतला और तीक्ष्ण मवाद आए, कनारे उभरे हुए और नीलेसे; नासूर। नाखूनोंके आसपासके घाव। **घाव बड़ी मुश्किलसे भरे और पीव बड़ी आसानीसे आ जाए।** कंठमाला। फटाव, दरार। विसर्प जिसमें तरल स्वाद हो। ग्रथियोंकी सूजन। चेचक, जब पीव आ गयी हो। चेचकका गदा टीका। कोढ, विशेषतः नाकका घाव; गाठ, ताम्बेके रग जैसे दाग। तन्तुओं या सकोचक पेशियोंमें अटके हुये विजातीय द्रव्यको यह दवा बाहर निकाल देती है।

**तन्तु जाल** · छत्तेकी शक्ल वाला मस्सा जिससे खून आए। और नासूर। प्रदाहात्मक सूजन, हड्डियोंके घाव, हड्डियोंका मुर्दापन। बालशोष गोलतन्तुओंमें पीव आए, बहुत सुस्तीसे बढ़े और बादमें रही सख्ती। घातक

और सडाव वाले प्रदाह। ग्रन्थियोंका वढ जाना और उनमें पीव आ जाना ; विशेषतः गर्दनकी ग्रन्थियोंमें। चोट जिसकी अपेक्षा की गयी हो और जवकि पीव आनेका खतरा हो। स्राव दुर्गन्धित। शोथ। जलोदर। त्वचाके नीचे की ग्रन्थियोंमें पीव आ जाना। कण्ठमालाकी प्रवणता। उपास्थिका फोडा।

**ह्रास-वृद्धि :** प्रायः लक्षण रातको और पूर्णिमाके आसपास वढते हैं। (शुक्लपक्ष पक्षकी ८मींसे से पूर्णिमा तक)। **गर्मीसे, गर्म घरमें और गर्मी के मौसममे घटते हैं।** सरको **गर्म कपड़ेसे लपेट** लेनेसे सरदर्द घट जाता है। पेटदर्द, खासी, गठियावातका दर्द गर्मीसे घट जाता है। खुली हवामें **ठण्डी हवामें** और सर्दीके मौसममें, पाव का पसीना दव जानेसे, पाव को सर्दी लगनेसे या ठण्डकसे कष्ट वढता है। तूफान आनेसे पहले कष्ट वढ जाता है। स्नायविक उत्तेजनासे, सवेगे कष्ट वढता है। सभी कष्ट ठण्डकसे वढ जाते हैं।

**होम्योपैथिक तथ्य :** इस औषधके परीक्षण हैनिमैनने किए थे। सर्वप्रथम इसका विवरण "क्रानिक डिसईजिज" खण्ड ३ में १८२८ में प्रकाशित हुआ था।

**व्यवहार :** शुसलरने ६ X और १२ X शक्तियोंके व्यवहारकी सिफारिश की है। होम्योपैथिक पद्धतिसे उच्चतर शक्तियोंके व्यवहारसे शानदार परिणाम निकले हैं ( देखिये क्लिनिकल डिसिज खण्ड ३ ) शुसलर और अन्य विद्वानोने इसके वाहर लगानेकी भी सिफारिश की हैं। उन्होने कारवकल, घावों, जरायुके घाव और नासूरपर लगाने और पीनसमेंसे स्प्रे (spray) करनेके लिये सिफारिश की है। कण्ठमाला और ग्रंथियोंकी ऐसी सूजनमें जिसमें अभी पीव न आयी हो वडी मात्रा देनी चाहिए। परन्तु जहाँ पीव आ चुकी हो, या इसके आनेका खतरा हो, तो फिर, उच्चशक्तिया ( ३० ) देनी चाहिये। पुराने रोगोंमें भी उच्चशक्ति हितकर है। ऐसी हालतमें रोज एक मात्रा देनी चाहिए। या इससे भी अधिक देर वाद दें। कम पुराने रोगों में सुवह-शाम एक-एक मात्रा दी जा सकती है। तरुण रोगोंमें हर २ या ३ घण्टे वाद देनी चाहिए। **साईलीसिया**का व्यवहार करनेका अधिक प्रभावपूर्ण तरीका यह है कि घासका कड़ा क्वाथ वनाए जाए। इसमें **साईलीसिया** अधिक प्रतिशतमें पाया जाता है। सिलीकेट ऑव सोडा घोलके रूपमें वार-वार देना चाहिए। **साईलीसिया**के व्यवहारका यह वहुमूल्य तरीका डा० पर्सी वाईल्ड रामडीने जारी किया था। वह इसकी ३-४ वून्दें दिनमें ३ वार दिया करते थे। हर एक मात्रा एक तिहाई ग्लास पानीमें दी जाती थी।

बेहतर है दूधमें दी जाए। दवाके असरपर सावधानीसे निगाह रखनी चाहिए। क्योंकि ४८ घण्टेके अन्दर-अन्दर यह फोडेमें सक्रिय परिवर्त्तन ला देती है। (देखिए Tumors Part III)

**सम्बन्ध :** पीव आनेमें **कल्केरिया सल्फ**से तुलना करें। अन्तर यह है कि **साईलीसिया** पीव लाता है और उसे मवादको पकाकर बहा देता है; जबकि **कल्केरिया सल्फ** पीव बनना रोकता है और घावको भरता है। चेचक का गन्दा टीका लगानेके दुष्परिणामके लिए **साईलीसिया**के अतिरिक्त हमारे पास थुजा और काली म्योर भी है। शुशलाके मतानुसार इसके उद्देश्यकी पूर्तिके लिए **काली म्योर** आवश्यक औषधोंमेंसे एक हैं।

**साईलीसिया**का सरदर्द **स्पाईजेलिया, पेरिस,** पिकरिक ऐसिड **कॉक्युलस, जेल्स और ऐनम्युन**के समान ही है। आसूकी नालीके नासूरमें **नेटरम म्योर** और **पेट्रोल**से तुलना करें। **नखव्रण** और मासमें गडकर नाखूनोंके बढनेमें जब **साईलीसिया** विफल रहा हो; प्राय, **ग्रेफाईटिस** सफल रहता है। हड्डियोंके नासूरमें **असाफि ग्रेफाईटिस कोनियम पलैटिननयोर**से, टी०बी०में **अल्युमिना** और रुटासे तुलना करें। साईलीसिया इस हालतमें लाभदायक है, जहाँ **पुलसट**के पुराने लक्षण हों। जब तरुण रोगोंमें **पुल्सट** सफल रहा हो और वे पुराने पड जाएँ तो फिर **साईली** काम देता है। पुल्सट **रेतवाली तह**पर पनपता है और सभवतः इसमें **साईलीसिया** पाया जाता है। हड्डीके रोगोंमें यह मर्कके सदृश है। परन्तु मर्कके बाद इसका व्यवहार नही करना चाहिए; अन्यथा यह उलझनें पैदाकर देगा।

डा० मोलेस्काटका मत है कि इक्वीसेटइयेम लगभग सारेका सारा **साईलीसिया** है। **इक्वीजेट**के बारेमें मसानेके रोगोंमें लाभदायक सिद्ध होने सम्बन्धी जो विवरण प्राप्त हुए उनमें उसकी सफलताका प्रधान कारण शायद **साईली**की मौजूदगी ही हो। बारजस ( पाईरीनीस ) के **झरने**के पानीमें **साईलीसिया** भारी मात्रामें घुला हुआ है और इसका पानी उन सभी रोगोंमें सिद्ध औषध समझा जाता है जहाँ वह होम्योपैथिक पद्धतिसे हितकर सिद्ध हुआ है। (पर्सी वाईल्ड एम० डी०)।

कानकी खराबीसे आने वाले चक्करमें **नेटरम सिलिसी**से तुलना करें। नाखूनोंके आसपासके घावोंमें **सोराईनम** भी बहुत उपयोगी है। सम्बन्धित दवाएँ हैं :—**फ्लोरिक ऐसिड, पिकरिक ऐसिड, हाईपेरिकम, रूटा मर्क** आदि।

---

तीसरा खण्ड

# बारह टिशु रेमिडीज का व्यवहार चिकित्सा

—o—

## नासूर ( ABSCESS )

**फैरम फॉस :** यह औषध हर तरहके फोडो, जैसे कारवकल, नखव्रणों, या, ऐसी कोई हालत जिसमें पीव आयी हो, ज्वर हो, रोगी गर्मी महसूस करे ; तपकनके साथ दर्द और पीडित अगमें रक्त अधिक सचित हो, तो यह सर्वप्रथम औषध है। यदि आरम्भमें इसका व्यवहार हो जाय, तो फिर प्रायः पीव नहीं आती।

**काली म्योर :** यह औषध फोडो, कारवकलों, नखव्रणों और नासूरो आदिमें, जहाँ जो भी सूजन हो, और पीव न आयी हो, हितकर है। विशेषत. यह औषधि छातियोंके फोडोंमें लाभदायक है जवकि उपर्युक्त विशिष्ट लक्षण मौजूद हों , अर्थात् सूजन हो और पीव न आयी हो। यह औषध कारवकलों, फोडों और अन्य ऐसे घावोंमें, सूजन हटानेके लिए दी जा सकती है , इसके काम करनेका मौका वह है जव पीव न आयी हो। इसका मलहम वनाकर घाव पर लगाया जा सकता है।

**नेटरम सल्फ :** वरसो पुराने नासूर जिनसे पानी जैसी पीव वहती हो, और जिनके इर्द-गिर्द नीले-से रगका घेरा वना हुआ है। नालीदार, गहरे जाने वाले फोडे (नासूर)। ३ शक्तिके विचूर्णकी एक मात्रा सारे उपद्रवोंको दूर कर देती है, और अनुकूल स्थिति पैदा कर देगी। फोडा मुरझा जाता है और नाली सूख जाती है। नखव्रण।

**साईलीसिया :** यह दवा तव काम आती है जव फोडोंमें पीव आ चुकी हो। यह दवा पीवको वहानेमें भारी सहायता करती है, फोडेको जल्दी पकाती है , अर्थात् पीव लाती है और प्रायः फोडेको तत्काल फोड देती है , अर्थात् वहा देती है। यह दवा **काली म्योर**के वाद उन हालतोंमें, काम करती है जव पीव वननी शुरू हो चुकी हो, जैसाकि स्तनोंके फोडोंकी हालतमें हुआ करता है , विशेषकर जवकि **काली म्योर पीवको आने** से रोक न सका हो। जव फोडा फट जाए, तो, इस औषधका व्यवहार तव तक जारी रहना चाहिए जवतक कि घावमें सूजन या पीव रहे। यह अन्धे फोडोंके लिए भी

लाभदायक है। नखव्रणमें **साईलीसिया** पीव लाता है और उसका नियन्त्रण भी करता है। यह वहाँ नया नाखून लाता है। नखव्रणके आरम्भमें ही इसका व्यवहार कराया जा सकता है। २-२ घण्टे बाद मात्रा देनेसे २४ घण्टेमें यह नखव्रणको ठीक कर देता है (ए० पी० डेविस एम० डी०)।

**कल्केरिया सल्फ :** जहाँ पीव आ गयी हो, वहाँ यह दवा **साईलीसिया**के बाद खूब अच्छा काम करती है फिर चाहे वहाँ विजातीय द्रव्य मौजूद हो; या न हो, पीव आनी शुरु हो जाती है, क्योंकि पीडित तन्तु शिथिल होते हैं। यह दवा ऐसे फोडों, सुकडे हुये स्तनों, और, नखव्रणोंमें हितकर है जबकि वे बह रहे हों। १२ × शक्तिका व्यवहार कराने से नखव्रण और, फोडे ठीक हो जाते हैं ( डबल्यू ई एल.)। इसका मोटा लक्षण यह है कि फोडेमें पीव मौजूद हो और इसका मुँह बन गया हो; अर्थात् बहने लगा हो। इस दवा और **साईलीसिया**में बडा अन्तर यह है कि **साईलीसिया** फोडेको **पकाता** है; यह वहाँ पीव लाता है। **कल्केरिया सल्फ** बहते घावको भरता है; क्योंकि पीवको बनने से रोकता है। इसके मवाद **साईलीसिया**के मवाद जैसी दुर्गन्ध नही होती। यह वहाँपर **सल्फर**के सदृश है, परन्तु यह उसकी अपेक्षा अधिक गहराई तक पहुँचकर, और, अधिक तेजीके साथ काम करती है। **मलद्वारके आसपास वेदनापूर्ण नासूर। फूले हुए मसूढ़े**के लिए भी बहुत उपयोगी दवा है।

**काली फॉस :** यह दवा फोड़ों, कारबकलों, नखव्रणों और पीव वाले अन्य फोडोंमें उस समय काम आती है, जबकि शिथिलता और दुर्बलताके लक्षण मौजूद हों और पीव आनेके बाद घाव गन्दा हो गया हो। पीव पानी जैसी पतली, खून मिली, दुर्गन्धित और देखने में गन्दी होती है। स्तन प्रदाह में भी हितकर है जबकि पीवकी रंगत नीलाभयुक्त, गन्दी और दुर्गन्धित हो।

**कल्केरिया फ्लोर :** जबकि पीवने हड्डीको भी अक्रान्त किया हो, या, जबकि घावके सिरे बहुत कडे हों, तो यह औषध लाभ करती है। इसके घोलमें तर किया हुआ कपड़ा नखव्रणपर रखने से भी लाभ होता है। "पेड के घावोंमें यह दवा अत्यन्त लाभदायक है जबकि घाव हड्डीके किसी नासूरके कारण आया हो," (साउथविक); "स्तनोंके पुराने नासूरमें यह औषध मुझे विशेष रूपसे हितकारी नजर आयी है।" ( जे० डबल्यू० वार्ड० एम० डी० )।

## चिकित्साकालीन अनुभव

**उदाहरण :** रोगीको सर्दी लगी थी जिसका असर मसूढ़ों और नर्म तथा

कडे तालुओंपर हुआ। ऊपरके अगले दाँतोंके ठीक पीछे मसूढा फूल गया। उसे **फेरम फॉस** दिया गया और उमने कुछ फायदा किया। परन्तु मसूढ़ेमें पीव आती निश्चित नजर आयी। सूजन बढती रही और वह अत्यधिक वेदनापूर्ण हो गया। मैंने **कल्केरिया सल्फ**पर एक लेख पढ़ा था। उसमें विद्वान लेखक ने लिखा था "दाँतोंके मसूढ़े जब फूल जाते हैं, तो मै केवल **कल्केरिया सल्फ**का ही व्यवहार करता हूँ।" मैंने यह पढकर, यही औषध देनेका निश्चय किया। मैंने ३ X शक्तिकी ५ ग्रेनकी दिनमें ३ या ४ मात्राएं, २ दिन तक दीं। इससे तात्कालिक सुधार आया, दर्द घट गया; बीच-बीचमें इसका व्यवहार जारी रहा और तब फोडा घुलकर गायब हो गया। (एम० एफ० आर०)।

२—एक महिलाकी टागपर घुटनेसे नीचे सूजन आ गयी थी। कई मास तक वह अपने चिकित्सकसे इलाज कराती रही। उसपर पुल्टिस बन्ध-वायी गयी और, उसका मुँह खोल दिया गया। परन्तु उससे कुछ न निकला। वह चलने-फिरनेसे रह गयी, तब उमपर आयोडिन लगाया गया, परन्तु उससे भी कुछ न बना। तब असाधारण कडी सूजनको घटानेके लिए पट्टी बांधी गयी, और, दिनमें ३ बार उसपर ठण्डा पानी ढाला जाने लगा। पट्टी खोलने पर उसके कुछ भाग नीले-से दिखायी दिए, आक्रात जगह बहुत ठण्डी और कडी थी और ऐसा नजर आता था कि बस अब फटा और अब फटा। वह जगह फूलकर, साधारणसे दुगुनी हो गयी थी। मैंने उसपर सेंक लगायी, और खिलाने तथा लगाने के लिए **काली म्योर** दिया। टाग तीन सप्ताहमें ठीक हो गयी (शुसलर)।

३—उपर्युक्त महिलाकी ६ वर्षीया बेटी—लिलीके दाँतपर घाव था और इसके उपद्रवस्वरूप उसका मसूढ़ा भी फूल गया। मसूढ़ा यों ठीक होता नजर न आता था। मैंने टिशू लवणोंको उपयोगिताकी जाँच करने के लिए **कल्केरिया सल्फ** ३ X की लगभग १२५ गोलिया दे दीं। साधारण स्थितिमें ये गोलियां १०-१२ दिन चलतीं, परन्तु मीठी समझ कर बच्ची उन्हें ३ ही दिनमें खा गयी। इससे मसूढा और दाँत दोनों ही ठीक हो गए।

(एम० एफ० आर०)

४—अगस्त १८७७ की बात है। एक नौजवानको कई सालसे गृध्रसीकी तकलीफ थी और वह उस दर्दसे छुटकारा पाने के लिए मार्फिया के इजेक्शन लेता था। आखिरमें उसे चूतड़पर एक फोडा बन गया। उससे मवाद खूब बहता और वह भरने में न आया। जब बहुत दिन बाद घाव भरता नज़र आया और वह पहलेसे अच्छा था कि रोगीको सर्दी लग गयी। पीव फिर

आ गयी और इस बार मवाद और भी अधिक आने लगा। उसकी माँ चिन्तित हुई। नौजवान बहुत दुर्बल हो गया और भूख मिट गयी। नींद भी ठीक न आती, उसे हर समय प्यास रहने लगी।

मैंने उसके लिए **साईलीसिया** तजवीज़ किया। खाली पेट हर रोज एक मात्रा दी जाती। एक सप्ताह बाद, माताने बड़ी अनुकूल रिपोर्ट दी: "मवाद प्रायः बिलकुल घट गया है। प्यास भी अब नहीं रही और भूख लौट आयी है। नींद अच्छी आती है। उसे पहले सर्दी लगती थी वह अब बिलकुल नहीं रही।" इस केसमें पीवपर **साईलीसिया**ने बहुत ही शानदार सफलता प्राप्त की, जबकि इसके विशिष्ट लक्षण मौजूद थे ( डा० गालिन जूनियर )।

५,—एक दर्जिनको दायें हाथके अगूठेपर नखव्रण हो गया। उन दिनों उसके पास कामका बहुत जोर था। **फेरम फॉस** १२ पानीमें मिलाकर दिया गया और इसने तात्कालिक लाभ पहुँचाया। उसने समझ लिया कि वह ठीक हो गयी है। वह इस दवाको खाती रही। तीन दिन बाद नख-व्रण फिर उभरा। इस बार उसमें दर्द और सूजन पहलेसे कहीं अधिक आयी। **काली म्यूर** १२ ने उसकी सारी तकलीफ दूर कर दी। नाखूनके नीचे पीव की एक बुन्द नजर आयी और उसे कैंचीकी मददसे निकाल दिया गया।

( जे० सी० मार्गन एम० डी० )

६—एक वृद्ध मेरे दवाखानामें आए। उनके हाथकी उगलियोंकी दूसरी गाठपर, बन्धनियोंमें प्रदाह आया हुआ था। सारेका सारा हाथ पीले रंगकी गाढी पीवसे भरा हुआ था। उन्हें यह कष्ट तीन माससे था। नींद उनके लिए हराम हो गयी। प्रदाह वाली जगह पुल्टिस लगवा दी गई थी। फोडे का मुँह खुल गया था और मार्फिया दिया जाता था। परन्तु इन सबसे कुछ न बना। तब ऐलोपैथिक चिकित्सकोंने उगली काट देनेका परामर्श दिया। वृद्ध उसी उद्देश्यसे नगरमें आया भी था। चूँकि उसका ऐलोपैथिक चिकित्सक नगरसे बाहर गया हुआ था, वह मुझसे परामर्श करने आया। मैंने उन्हें सलाह दी कि वह उगली न कटायें, हालाकि प्रसारक पेशिया सड गयी थी, पीवने उन्हें खा लिया था, हड्डीकी झिल्ली प्रदाहित थी, तो भी मुझे आशा थी कि उगली ठीक हो जायगी। मैंने छेदमें युकालिप्टसका इजेक्शन दिया और इससे सारी उगली और हाथ भर गया। घावको साफ करने के बाद, मैंने अच्छी तरह बाँध दिया और उसे **साईलीसिया** खानेके लिये दिया और दिनमें २-३ घण्टे बाद दवा खानेकी हिदायत की। उसे और कुछ न दिया गया। युकालिप्टस की पट्टी हर रोज जारी रही। चार सप्ताहमें उगली अपनी असली हालत और आकारमें आ गयी। परन्तु चूँकि सभी प्रसारके पेशियाँ नष्ट हो चुकी थीं,

अतएव उगली फैल न सकती थी। साईलीसियाने सभी सयोजक-तन्तुओंको बहाल कर दिया। वृद्ध बिलकुल ही ठीक हो गया और सन्तुष्ट भी हुआ। ( ए० पी० डेविस एम० डी० )।

७—**साईलीसिया** बहुत शानदार दवा सिद्ध हुयी। पिछले मास एक नवयुवतीको ठीक किया। (आयु १६ वर्ष)। मैंने स्वय उसे देखा नहीं। उसकी माँ मेरे पास आयी और शिकायत की कि उसकी बेटीके दाएं पाँवमें गत कई माससे तकलीफ है जो चिकित्सक इसकी दवादारू करता है, उसने राय दी है कि पाँव काटना पडेगा। पाँव बुरी तरह सूजा हुआ था। उससे मवाद खूब बहता था। उसकी टागने झुककर घुटने के साथ सरल कोण बना लिया था और उसे फैलाना असम्भव था। मैंने उसे खाने और लगानेकी सारी दवाइयाँ बन्द करने का परामर्श किया और **साईलीसिया** दिया। दिनमें केवल एक मात्रा दी गयी। तीन मास बाद रोगिणी, अपने आप, किसीकी सहायताके बगैर, चलकर आयी। पाँव लगभग ठीक हो चुका था। उससे बहुत कम मवाद आता था।

इसी तरह मुझे कान बहनेके एक केसमें सफलता मिली थी। इसका कई माससे इलाज हो रहा था ; परन्तु 'मर्ज बढता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।' यह रोगी भी **साईलीसियासे** ही ठीक हुआ ( शुसलर )।

## वृक्क रोग ( Addison's Disease )

**नेटरम म्योर :** जब पोषणहीनता हो, गुर्दोंमें तनाव और गर्मीकी अनुभूति हो, चेहरेकी रंगत मटयाली हो, हाथोंकी पीठपर भूरे दाग़ पड गये हों, शारीरिक और मानसिक थकान अत्यधिक हो। टागें कापें, निगाह धुधली हो, भूख मिट गयी हो, मिचली और कै हो, माससे अरुचि और कब्ज भी हो। हिलना-डोलना और किसी प्रकारका परिश्रम करना न चाहे, बार-बार जम्हाइयाँ और अगडाइयाँ आए। हाथ-पाँव सर्द हों, मानसिक खिन्नता और चिडचिडापन हो, खडा होने या चलनेकी चेष्टा करनेपर सरमें चक्कर आए।

## नष्टरज ( Amenorrhoea )

### ऋतुका दब जाना

**काली म्योर :** जिगर सुस्त , जीभपर सफेद मैलकी तह और ग्रन्थियों की शिथिलता।

**काली फॉस :** नष्टरज और मानसिक खिन्नता, सुस्ती और दुर्वलता, जब नष्टरजके कारण छातीका कोई रोग भी आ गया हो। मन्द-मन्द सर दर्द जो निरन्तर होता रहे। चिडचिडा, वदमिजाज, अस्थिर ; अपनेको नियन्त्रित न कर सके।

**काली सल्फ :** ऋतु कम आए, या विलकुल ही न आए ; इसके साथ पेट में वोझकी अनुभूति हो और ऐसा जान पडे जैसे पेट भरा हुआ है।

**नेटरम म्योर :** यह औषधि नौजवान लडकियोंके लिए हितकर है जबकि मासिक विलकुल ही न आए या कम आए और वडे अन्तरसे आए।

**कल्केरिया फास :** उन स्त्रियोका नष्टरज जिनके शरीरमें रक्तकी कमी हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. एक नवयुवतीको कई माससे मासिक नहीं हो रहा था, और इसके परिणामस्वरूप उसकी छातीमें भी तकलीफ आ रही थी। उसे सुवह-शाम **काली फास** ३० दिया गया। मासिक शीघ्र हो गया और चार सप्ताहके भीतर-भीतर इसकी छातीमें भी दर्द न रहा।

२ एक वाईस वर्षीया युवतीको मासिक कम आता था, और पिछले एक सालसे जो थोडा-वहुत आता भी था, वह भी अव वन्द हो गया था। अव उसके सर और आँखोंमें तकलीफ आयी। १२ मई १८८७ को, मैंने उसे **काली फास** की ६ पुडियाँ दी। ३ दिन वाद उसे मासिक आ गया। इसके साथ ही सख्त सर दर्द भी आया जो सात दिन तक जारी रहा। उसके अन्य कष्ट भी धीरे-धीरे चले गए। ( मानेट्सव्लेटर )।

३ डा० रायलने निम्न लक्षणोके साथ नष्टरजके एक केसका हवाला दिया है जो **काली फास** ३ X से ठीक हुआ. "मन्द-मन्द सर दर्द जो निरन्तर होता था। दिन भर ऊंघता रहता था, चिडचिडा और वदमिज़ाज, यो ही चीख़ मार उठे। अत्यन्त अस्थिर यहाँ तक अपनेको सम्भाल न सके।

## खूनकी कमी ( Anaemia )

**कल्केरिया फॉस :** यह औषध रक्तके नये कण वनाती है। ऐसे दर्द और ऐसी ऐंठन जो अनीमिया ( खूनकी कमी ) के कारण आयी हो। हरा पाण्डु , त्वचाकी रंगत मोम जैसी, हरी-सी सफेद , निरन्तर सर-दर्द हो

और कान गूजे। हरे पाण्डुके लिए शुसलरने केवल इसी दवाका व्यवहार किया है।

"शरीर रचनाकी दृष्टिसे, दिमागमें खूनकी कमीके लिये यह सिद्ध औषध है जबकि विकारहीन पोषणका परिणाम हो।"—आरण्ड।

खूनकी घातक कमी, खडा होने या बैठकर उठनेपर सर चकराये, आखोंके आगे धुध आए, नकसीर चले, नाककी नोक ठण्डी, चेहरा पीला, भूरा ; पीला ; मटयाला, चेहरेपर ठण्डा पसीना आए, शरीर ठण्डा, स्वाद और गन्ध बुरी ; जीभ सफेद, जीभकी जडपर अधिक मैल आए, मिचली और कै, पेट के ऊपरी भागमें भारी दुर्वलताका वोध हो, जैसे प्राण निकल जाएगे पानी-सा पतला पाखाना आए, मलत्यागके बाद, और दिन-रात मलत्यागका वेग बना रहे; पेशावमें झागदार तलछट आए , अतिरज, खूनकी रंगत चमकदार लाल या बहुत गहरी ; धडकन उसके साथ व्याकुलता, इसके बाद कम्प और दुर्वलता आए ; विशेषतः पिण्डलियोंमें थकान और भारी दुर्वलता।—आरण्ड।

किसी क्षयकर रोगके बाद, रक्तमें श्वेतकणोंकी सख्याके घातक रूपसे वढ़ जानेकी शिकायतमें भी यह दवा हितकर है।

**फेरम फॉस :** जैसे ही स्वास्थ्यकी आम हालतमें सुधार आना शुरू हो जाए, **कल्केरिया फॉस**के बाद, यह दवा काम आती है। शरीरमें जब रक्तके लाल कणोंका अभाव हो, तो यह दवा उसे पूरा करती है। यह दवा अपने सहज गुणसे, प्राणवायुको अपनी ओर आकर्षित करती है। **कल्केरिया फॉस**ने रक्तमें जो नये कण बनाये होंगे, यह उन्हें लाल रंग देती है और उन्हें समृद्ध बनाती है।

शुसलरने एक पत्रमें लिखा है : "वह लौहा जो रक्तके नए कण बनाता है, हरे पाण्डुके रोगियोकी रक्तधारमें मौजूद रहता है। यही कारण है कि मैंने अपनी पुस्तकके पहले सस्करणोंमें जहाँ यह सिफारिश की थी कि हरे पाण्डुमें लौह देना चाहिए, वादके सस्करणोंमें यह वात छोड़ दी।"

**काली म्योर :** इस औषधको खूनकी कमीमें, दूसरे दर्जेकी औषधके रूपमें, या अन्तरकालीन औषधके रूपमें, दिया जा सकता है जबकि खून की कमीके साथ-साथ एग्जिमा या दाने आदि भी मौजूद हों।

**काली फॉस :** दिमागमें खूनकी कमी हो और जब इसके उपद्रव स्वरूप अकारण घबराहट आयी हो। ऐसे कारणोंसे खूनका अभाव होना जिन्होंने निरन्तर ही दिमाग और स्नायुजालपर वोझ डाला हो। यह औषध रक्तमें घातक रूपसे बढी हुयी श्वेत कणोंकी सख्याको घटाती है, जबकि यह विकार किसी दीर्घकालीन विकारके परिणाम स्वरूप आया हो। "मेरुदण्ड

में खूनका अभाव" जो किसी क्षयकर रोगके परिणामस्वरूप आया हो ; जैसे डिफ्थेरिया, प्रतिक्रियास्वरूप आया निम्नागोंका पक्षाघात जिसमें वेदना भी हो और यह आराम करने से बढ़े, और जब चलना आरम्भ करे तो अधिक हो।"—आरण्ड।

**नेटरम म्योर :** अनीमियाकी वे हालतें जहाँ रक्त पतला, पानी जैसा पतला हो, हरा पाण्डु, जब स्वाभाविक रूपसे रोगी कमरपर ठण्डक अनुभव करे। नवयुवतियोंका हरा पाण्डु जबकि त्वचा गन्दी हो, बार-बार धड़कन हो, छातीमें घुटन और व्याकुलता हो, सुबह-सवेरे खाँसी आए जरा-सी मेहनत करनेपर थकान आए, यहा तक कि बेदम हो जाए और इसके साथ जीभका विशिष्ट लक्षण भी हो ; मलेरिया विष प्रवणता ; मलेरिया और कूनैन के दुष्परिणाम, जबकि चमडी भूरी या पीली पड गयी हो, आमाशयमें अफारा और दवाव हो, कब्जके साथ मलद्वारमें सुकडाव या घुटन हो और भयानक शोकाकुलता भी हो।

**नेटरम फॉस :** मेरुदण्डमें खूनकी कमी, निम्नागोंकी दुर्बलता जैसे उन्हें लक्वा मार गया हो, इसके साथ आम थकान, भारीपन, कुछ दूर चलने या सीढियाँ चढनेके बाद बेदम हो जाए ; टाँगें जवाब दे जाए जैसे अब और आगे न चला जायगा।

**नेटरम सल्फ :** खून पानी जैसा पतला और पारदर्शी हो जाता है, सुज़ाक विष, कफ प्रकृति वालोंका अनीमिया, नमदार मौसम या नमदार घरोंमें रहने से आया अनीमिया ( लीलीन्थल )।

**साईलीसिया :** जब मासिककी जगह लकोरिया हो, क्षणिक अंधेपन या निगाहके धुधला पड जानेके दौरे। दुबले-पतले, नाजुक मिजाज शिशुओंका अनीमिया जबकि शेष ( सूखा, मसान ) आनेका झुकाव हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

डा० एस पावेलने अनीमियासे पीडित दो नवयुवतियोके केस बताये हैं। उनकी आयु क्रमशः १७ और २१ वर्षकी थी। उनके विशिष्ट लक्षण निम्न-लिखित थे :—

चेहरा पीला जैसा कि खूनकी कमीमें हुआ करता है, भारी थकान, हतोत्साह, खिन्न चित्त, असह्य सर-दर्द जो पेशानीसे शुरू होकर सरके पिछले भाग तक फैल जाता था। छोटी आयु वाली लडकी ६-७ वर्षसे यह रोग भुगत रही थी। वह कई ऐलोपैथों और होमियोपैथोंसे चिकित्सा करा चुकी थी। ऐलोपैथ

उसे लौह भारी मात्रामें देते रहे और इससे उसे कोई लाभ न हुआ। दूसरी को भी यह तकलीफ कई सालसे थी। दोनोंके उपद्रव तत्काल मिट गए। उसका रंग वदल कर गुलावी हो गया। पहले कान पीले रहा करते थे, यहाँ तक कि अपारदर्शी और अर्द्धस्वच्छ थे। वे अब लाल हो गये और स्वाभाविक स्थितिमें आ गये। उन दोनोंको पहले १० या १२ दिन तक **कल्केरिया फॉस** १२ दिया गया, वादमें २ सप्ताह तक **फैरम फॉस** दिया गया और फिर **कल्केरिया फॉस** दिया गया। वे ६ मासमें स्थायी रूपसे स्वस्थ हो गयी।

२ एक १७ वर्षीया युवतीको, देरतक अध्ययन करनेके वाद, अनीमिया और हरा पाण्डु हो गया। यहाँतक कि विवश होकर उसे स्कूल छोडना पडा। उसकी भूख मिट गयी थी और वह हरदम घरमें लेटी रहती। उसे कहीं जाने या कुछ करने की इच्छा ही न होती। पढने से उसके सरमें दर्द आया और उसने थककर पढना विलकुल ही छोड दिया। उसका मासिक भी अनियमित था; महीनों रज न आता, फिर आता तो कभी कम, और कभी ज्यादा। मैंने उसे **कल्केरिया फॉस** ६ दिया और वीच-वीचमें **फैरम फॉस** भी देता रहा। कुछ मास वाद वह इतनी स्वस्थ हो गयी कि पढने-लिखने लग गयी, वह जहाँ चाहती आने-जाने लगी और उसके रंगमें भी सुधार आ गया। (सी. टी. एम.)

**नेटरम म्योर:** डब्ल्यू रालीने अनीमियाके एक ऐसे केसका हवाला दिया है जो अधिक नमक खानेसे आया था। रोगी क्षीण था। शरीरकी आम रंगत पीली थी, कमज़ोरी थी और सज्ञा अत्यधिक वढी हुई थी। मासिक धर्म कभी समयपर और नियमित नहीं होता था। कब्जका झुकाव था। वह नमक वहुत अधिक खाती थी। चिकित्साकालमें उसे नमक कम खाने की हिदायत कर दी गयी और उसे **नेटरम म्योर** २०० की एक मात्रा दी गयी। इसके वाद उसके स्वास्थ्यमें आम सुधार आया। मासिक नियमित रूपसे और समयपर आने लगा। शरीरमें वल आया और स्वास्थ्यकी साधारण स्थितिमें व्यापक सुधार आया।

## धमनीजालका फोड़ा ( Aneurism )

**कल्केरिया फ्लोर:** इसकी सहायतासे इस विकारको आरम्भमें ही रोका जा सकता है, या कम किया जा सकता है। यह इस रोगकी मुख्य औषध है। इसे **फैरम फॉस**के साथ अदल-वदल कर देना चाहिए; वशर्तेकि पहले **पोटाश आयोडायड** न दिया गया हो।

**फैरम फॉस :** यह औषध आरम्भमें ही देना चाहिए ताकि रक्त सचार नार्मल हो जाए और दिलकी अधिक चालके कारण आयी पेचीदगियोंको दूर किया जा सके, इसे **क्लकेरिया फ्लोर**के साथ अदल-बदल कर भी दिया जा सकता है छोटे धमनी अर्बुद जिनमें तपकन अधिक हो ।

## स्नायविक हृच्छूल ( Angina Pectoris )

**मैग्नेशिया फॉस :** जब दर्द स्नायविक हो, आक्षेपके साथ आता हो, तो यह मुख्य औषध मानी जाती है । यह गर्म पानीके साथ देनी चाहिए । छातीमें स्नायविक सुकड़ाव या घुटनके साथ दर्द । यह "नकली" हृच्छूलके लिए भी लाभदायक है । डा० वल्लेस मैक जार्जको इसके व्यवहारसे दौरोंकी उग्रता तोड़नेमें और उनकी मुद्दत घटानेमें सफलता मिली । इसका असर तत्काल आता है ।

**फैरम फॉस :** जब चेहरा तमतमाया हुआ हो, जलन हो या गर्मी लगे ; यह दवा **मैग फॉस**के साथ अदल-बदल कर दी जा सकती है ।

**काली फॉस :** जब हृदय दुर्बल हो, या रुक-रुक कर चलता हो और यदि मूर्च्छा आनेकी आशका भी हो, तो यह दवा भी **मैग फॉस**के अदल-बदल कर दी जा सकती है ।

## स्वरलोप ( Aphonia )

( देखिये 'स्वरभग' )

**फैरम फॉस :** गाने या भाषण देनेके बाद स्वरलोप हो जाना । वक्ताओं या गाने वालोंकी आवाजका बिगड़ जाना, जबकि कठनालीमें सन्तापपूर्ण वेदना भी हो ।

## सन्धि-प्रदाह ( Arthritis )

**फैरम फॉस :** आरम्भमें ही यह दवा बार-बार देनी चाहिए, जबकि थोडा बहुत ज्वर भी हो । बादमें, इसे अन्तरकालीन औषधके रूपमें भी दिया जा सकता है । हिलने डोलनेपर जोड़ोंमें दर्द होता है । हरकत करनेसे दर्द आता है , और बढ जाता है ।

**काली म्योर :** यह उस तरुण सधि प्रदाहमें काम आता है जिसमें सूजन हो और जब जबानपर सफेद मैलकी तह हो । इसे **फैरम फॉस**के साथ अदल-बदल कर दिया जा सकता है । हरकत करनेमे दर्द बढ जाते हैं । यह औषध विशेष रूपसे **फैरम फॉस**के बाद काम आती है ।

**नेटरम म्योर :** पुराना सधिप्रदाह , जोडोंमें कडकडाहट ( जबकि जीभके और अन्य विशिष्ट लक्षण भी मौजूद हों, तो यह सोडियम यूरेटका निस्सरण बढाती है )। घुटनेके जोडका प्रदाह ; सधिवात, घुटनेकी मोटी रगका दर्द ( परीक्षित है )।

**नेटरम म्योर :** नया सधिवात (**फैरम फॉस**के बाद)। पुराना सधिवात जिसमें खट्टी गधवाला पसीना अधिक आए। गठियावातका सन्धिप्रदाह, विशेषत. उगलियोंके जोडोंका। पेशावकी रगत गहरी लाल। दर्द जोडोंको छोडकर सहसा दिलमें चला जाता है। मदिर शिरा ( घुटनेकी मोटी रग ) में सन्तापपूर्ण दुखन। ऐसा जान पडता है कि घुटनेके जोडकी गर्म, वेदनापूर्ण सूजनके लिए भी यह दवा हितकर है।

**मैग्नेशिया फास :** उग्र दर्दोंके लिए अन्तरकालीन औषधके रूपमें हितकर है। विशिष्ट लक्षण हैं : कुचलनेकी तरहका दर्द। आक्षेपयुक्त दर्द।

**काली फास :** गठियावातवाला सधि-प्रदाह जहाँ दर्द एक जोडसे दूसरे जोडमें चले जाएँ , गर्मीसे कष्ट बढे। जोडोंका भ्रमणशील दर्द। सन्धि-प्रदाह जिसमें सूजन नर्म हो। सफेद रगकी सूजन।

**साईलीसिया :** जब जोडोंमें पीब आ गयी हो।

**कल्केरिया सल्फ :** यह दवा उस दशामें लाभकर है जब पीब आ गयी हो।

**नेटरम सल्फ :** तरुण सधिवातके दौरे। यह दवा **फेरम फॉस**के साथ अदल-बदलकर देनी चाहिए। पुराने सधिवातमें तो यह अकेले ही पर्याप्त है , पैरके जोडोंका नया और पुराना दर्द। गठियावात और सन्धिप्रदाह, विशेषत. हाथकी उगलियोंके जोडोंका। दर्द अपनी जगह छोडकर सहसा दिलमें चला जाए और पेशावकी रगत गहरी लाल।

**कल्केरिया फास :** गठियावात जो रातको और खराब मौसममें बढे। पानीवाली रसौली। शोथ।

**कल्केरिया फ्लोर :** सधिवातके कारण हाथकी उगलियोंके जोड बढ जाते है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१—गठियावातके दर्द जो हरकत करनेमे बढ़े **ब्राईओनिया** और **काली आयोड** विफल हो चुके थे। **फैरम फॉस** १० वीं शक्तिका घोल दिया गया और उसने लाभ किया। ( Pop Zeitschrift, Berline 1886 )

२—वर्लिनका एक मोची सर्दी लगनेके वाद वीमार हो गया। ज्वरके साथ दायें कधेमें वहुत तेज दर्द भी था। मैंने उसे जिस दिन देखा, उसे वीमार हुए वह तीसरा दिन था। ज्वर वहुत तेज था, नाडी पूरी और तेज थी। प्यास और भूख नदारद थी। दायाँ कधा वहुत लाल था और छूना सहन नही होता था। वह विस्तरमें लेट नही सकता था, क्योंकि तकियेका दवाव भी असह्य था। वह गद्देके सहारे सोफामें लेटा हुआ था, ताकि कधे पर किसी तरहका दवाव न पडे।

मैंने उसे **फैरम फॉस** पानीमें घोलकर दिया। यह घोल उसे घण्टे-घण्टे वाद एक चाय चम्मचकी मात्रामें दिया गया। कुछ ही घण्टों वाद, उसे आराम प्रतीत हुआ। रातको वह सो गया। अगले दिन ज्वर उतर गया। ३ दिनमें वह अपना हाथ मुक्तरूपसे हिलाने लगा। कुछ दिन वाद वह विलकुल ही ठीक हो गया। सूलजर ( शुसलरसे )।

**सधिप्रदाह :** अनीमियासे पीडित एक लडकीके घुटनेके जोडकी सूजन दो दिनके भीतर हटा दी गई थी। उसे **नेटरम फॉस** ६x दिया गया था। यह केस और इसी तरहका एक और केम डा० मैकनीशने सितम्वर १६०८ के 'होमियोपैथिक वर्ल्ड' में छपवाया था।

## दमा ( Asthma )

**काली फास : स्नायविक दमा**—इस रोगके लिए यह मुख्य औषध है और वडी मात्रामें तथा वार-वार देनी चाहिए। इससे साँस साफ हो जाता है और स्नायुजालको वल मिलता है। नजले-जुकाम वाला दमा और इन्फलुएजा। **जरा-सा खाते ही दमे का दौरा पड़ जाता है।**

**काली म्योर :** आमाशयकी खरावी जव विशिष्ट लक्षणके तौरपर मौजूद हो, जीभपर सफेद-सी, या हरे-से रंगकी मैल आए, खाँसीमें सफेद कफ आए जिसे खाँसकर थूकना कठिन हो। जव इसके साथ साँस भी कष्टसे आता हो, तो इसे **काली फॉस**के साथ अदल-वदलकर दें। **दिलकी खरावीसे दमा** जिसमें यह जान पडे कि फेफडे और दिल दोनो ही सुकड गये हैं।

**नेटरम म्योर :** दमा जिसमें झागदार कफ अधिक मात्रामें आए। **काली फास**के साथ अदल-वदल कर दें। जव खाँसते-खाँसते आँसुओंका तार वध जाता हो। साँसके साथ आक्षेपयुक्त झटके आएँ।

**कल्केरिया फास :** हवाकी वडी नालीका दमा, अन्तरकालीन दवाके तौरपर काम आती है। जवकि कफ साफ और सख्त हो। जैसे ही वच्चे को पालनेसे उठाया जाता है, उसका दम घुट जाता है।

**कैल्केरिया फ्लोर :** जब बहुत अधिक खाँसनेसे कफके छोटे-छोटे गले निकले। **काली फॉस**के साथ अदल-बदल कर दिया जाता है। इन गोलो की रंगत पीली-सी होती है। साँस कष्टसे आए। साँसकी नलीका मुँह जैसे बन्द हो गया है। या जैसे साँस किसी गाढी चीजमें से होकर आ रहा है।

**मैग्नेशिया फॉस :** जब दमेके साथ अफारा अधिक कष्टकर हो। दमेके आक्षेपपूर्ण दौरे। गुदगुदाहटके साथ आनेवाली सूखी खाँसीके दौरे जिनमें लेटना मुश्किल हो जाए।

**काली सल्फ :** दमा; साँसकी नालीका दमा, कफकी रंगत पीली गर्म घर में या गर्म वातावरणमें कष्ट बढ जाता है। कफ अधिक घडघडाये। उस दमेमें हितकर है जिसका दौरा खाना खानेके बाद पडे, और चेहरेकी रंगत बिगड जाए, या जब रोगी बडी शीघ्रतासे सूखता जा रहा हो, या आँखें धस गयी हों। ऐसी दशामें डा० रैपने **काली** यौगिकोंके व्यवहारकी सिफारिश की है। (शुसलर)

**नेटरम फॉस :** दमा जिसमें पीले रंगकी गाढी कफ आए।

**नेटरम सल्फ :** उस दमेमें विशेष हितकर है जिसमें सुजाक विषकी पुट हो और दमा इसकी प्रतिक्रियाके रूपमें आया हो। दमेका दौरा तडके ४ या ५ बजे आता है। चिकना, लसदार, रेशेदार कफ आए, कफकी रंगत हरी-सी, मात्रामें अधिक, खाना खानेके बाद कै हो। कष्ट तर, बरसाती मौसममें, या नमदार तहखानोंमें रहनेसे बढता है। पाकस्थलीकी खराबीसे आया दमा। सुबह सोकर उठे तो पतले दस्त आए। बच्चोंका दमा। नौजवानोंका दमा जो साँसकी नालीके नजलेसे हो। जब भी मौसम तर हो जाता है, कष्ट बढ जाता है।

**साईलीसिया :** साँस लेनेमें ऐसी कठिनाई आती है कि आँखें अपनी घेरो से निकल आती हैं। दरवाजे और खिडकियाँ खोलनी पडती हैं। दौडा सदा बादलकी गर्जवाले तूफानके समय पडता है। शरीर गठनकी दृष्टसे **नेटरम सल्फ**के साथ अदल-बदल कर दी जाती है ताकि रोगकी जड काट दे। **धातु विकारकी बुनियाद पर आया दमा।**

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. एक वृद्ध को दस दिनसे दमेके दौरे बार-बार पड रहे थे, साँस बडी तकलीफ और मुश्किलसे आता था, वह बोल भी न सकता था; कफ पीली और गाढी थी, छाती में घडघडाहट भी थी। **काली फॉस** ३x ने उसे तात्कालिक लाभ पहुँचाया। —एम० ई० डगलस एम० डी०।

२ रोगिणी विवाहिता थी, आयु ३६ वर्ष। दमेसे पीड़ित थी, उसे बहुत तेज दौरे पड़ते थे। खाँसीमें हरी-सी, पीव जैसी कफ आती थी सुबह सोकर उठते ही उसे, पतला पाखाना आता था। पिछले दो दिनसे उसको यही हालत थी। उसे **नेटरम सल्फ** ५,०० हर २-२ घण्टे बाद दिया गया। वह उसी रात आरामसे सो गयी। साँसकी चाल और खाँसीमें भारी सुधार आया। खखार आसानीसे निकलने लगा। अगले दिन वह बिलकुल ही ठीक हो गयी।

३. रोगिणी विवाहिता थी और उसकी आयु ४२ वर्ष की थी। उसे बरसों से दमेकी बीमारी थी। कफकी रगत हरी-सी थी और मात्रामें अधिक आती थी। **नेटरम सल्फ** तीन-तीन घटे बाद दिया गया। कुछ ही मात्राएँ देनेके बाद उस हालतमें सुधार हो गया। कफकी रगत पीली हो गयी, मात्रा घट गयी। बरसों बाद उसने अपनेको पहली बार बेहतर महसूस किया। वर्णनीय बात यह रही कि इस बार केवल कुछ ही मात्राए देनेसे खखारकी मात्रा घट गयी, जबकि पहले दौरोंमें यही स्थिति कई-कई सप्ताह बाद आती थी। इससे स्पष्ट है कि **नेटरम सल्फ**ने रोगकी जड पर असर किया।

—विलियम जे० गरेंसी एम० डी०

४ जम्बरोटा निवासी डा. ओ एच. हालमें देनेके एक रोगीका बडा दिलचस्प केस बताया है। उसने अनेक नामी चिकित्सकोंसे चिकित्सा करायी थी। आखिर **काली फॉस** ३X से उसे लाभ हुआ। अब १८ माससे उसे रोग का दौरा नही पडा। —मैडिकल मथली, नवम्बर १८८६

५ श्री क ख को वर्षोंसे दमेके दौरे पडते थे। साँस बडे जोरसे आता, यहाँतक की उसकी आवाज कुछ दूर सुनी जा सकसी थी। कोई असाधारण मेहनत करनेके बाद दौरा पड जाता था। वह लम्बे कदका और हृष्टपुष्ट था। उसके परिवारमें ऐसा रोग किसी और को नहीं था। उसकी छाती तग थी। दौरा बीत जानेके बाद, जब उसके फेफडोंकी जाँच की गयी तो कोई असाधरण बात नजर न आयी ; हाँ, साँसकी बडी नालीके साथ-साथ घडघडाहट थी। अप्रैल १८८७ को उसे असाधारण दौरा पडा और यह कठोर शारीरिक परिश्रमका परिणाम था। उसका यह असाधारण दौरा **नेटरम सल्फ** २०० ने तत्काल तोड दिया। बीच-बीचमें उसे कई बार यह दवा दी गयी और इससे उसे दौरे पडने बिल्कुल बद हो गये।

—विलियम ई, ल्योनार्ड एम. डी.

५. श्रीमती-ई—पुराने ब्रांकाईटिस और अन्य कई रोगोंसे पीड़ित थी और मेरी चिकित्सामें थी। उसे ६ जुलाईको मौसमी इनफ्लुएजाका तीसरा

वार्षिक दौरा पड़ा ; वह इन दौरोंके कारण पहलेसे ही निढाल थी और उनसे बहुत आतंकित थी। उसका पति शामको मेरे पास आया और उस समय छींकें आने लगी थी और साँस उखड़ गया था। उसने यह भी बताया कि वह लेट नहीं सकती। जरा-सी हरकतपर साँसकी तकलीफ बढ़ जाती है। कन्धोंके दरम्यान झुकाव आ जाता है। कोई और ऐसा लक्षण न मिल सका जिसके सहारे औषध निर्वाचनमें सहायता मिलती। और पहले दौरोंके समय अन्य चिकित्सक अनेक औषधियाँ दे चुके थे। मुझे मालूम हुआ था कि **नेटरम म्योर**से उसे भारी राहत मिलती है, अतएव मैंने उसे **नेटरम सल्फ** २०० दिया और आध-आध घण्टे बाद उसे दोहराया। वह पहली खुराक खाकर ही आरामसे सो गयी। कुछ ही दिनमें दमेके सारे लक्षण मिट गये। १८ जुलाईको उसके फेफड़ोंकी जाँचकी गयी तो दमे जैसे साँसका कोई निशान नहीं था। —विलियम ल्योनार्ड एम डी.।

## क्षीणता ( Atrophy )

### शोष Marasmus

**कल्केरिया फास : बच्चोंकी ऐसी कण्ठमाला जिसने हड्डियों तक असर किया हो ( कल्केरिया फ्लोर )।** दूषित समीकरणके परिणामस्वरूप आयी दुर्बलता। दाँत देरसे निकलें। पानी जैसे पतले दस्त आएँ और पेटमें अफारा भी हो। पेट ढीला-ढीला और सुकड़ा हुआ। चेहरा मैला, बच्चों का चेहरा बूढ़ों जैसा नजर आए।

**काली फास :** *क्षयकर रोग जबकि दुर्गन्धित पाखाना आए। हड्डियोंकी* क्षीणता।

**नेटरम म्योर :** बच्चोंकी **गर्दन और गलेका शोष**, जो बड़ी तेजीसे आए। चिड़चिड़ापन। बच्चा बोलना सीखनेमें बहुत देर करे। सर्दी लगे। चेहरेकी रंगत मटियाली ; कब्ज।

**नेटरम फास :** बोतलका दूध पीनेवाले बालकोंका शोष। पेट फूला हुआ ; जिगर बढ़ा हुआ। खाना खानेके बाद पेट दर्द आए। पाखानेमें अनपच खाद्य निकले।

**नेटरम सल्फ :** पैतृक प्रमेह विष। पेटमें अफारा, गड़गड़ाहट, पाखाना

पानी जैसा पतला, पीला, वडे जोडसे आए। सुबह सोकर उठनेपर जैसे ही चलना-फिरना शुरू करे, पाखाना हो जाता है।

**साईलीसिया : शरीर क्षीण और सर असाधारण रूपसे वढा हुआ**, वच्चेको पसीना वड़ी आसानीसे आता है अधिक घवराया हुआ और चिडचिडा, चेहरा मुरझाया हुआ, वूढो जैसा, **माँका दूध न पीना चाहे**। यदि पिये तो कै कर दे। पाखाना दुर्गन्धित और पानी जैसा। मौसममें किसी प्रकारका परिवर्तन आते ही वच्चा निढाल हो जाता है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

खाद्यके दूपित समीकरणमें **कल्केरिया फास**।

कुमारीके—आयु ५ वर्प, आरम्भसे ही दुवली-पतली थी। वह इस ससारमें अधिक दिन जिन्दा रहती नजर न आती थी। उसमें खूनकी भारी कमी थी और उसका चेहरा वडा गन्दा था। वह कभी-कभी वहुत डरती और वहुत घवरा जाती। वहुत नाजुक तवीयत थी। उसे जरा-सा सख्त-सुस्त कहा नही कि वह वीमार हुई नहीं, और फिर कई दिन तक वीमार रहती। उसके सरपर वाल न थे और आरम्भमें वह सर न उठा सकती थी। उसे चमक वहुत लगती थी। मुँहका स्वाद वुरा था। दाँत भी वहुत देरमें निकले थे और उसके टासिल देरसे वढ़े हुये थे। खाना खानेके वाद उसे पेट दर्द होता था। और ऐसा वोध होता था जैसे पेटमें कोई गोला रखा है। अधिक खा भी नही सकती थी, क्योंकि इससे उसे वहुत कष्ट होता था। उसे क़ब्ज भी था।

पेशावकी रगत गहरी थी और वार-वार होता था। अगोंमें दर्द होता था। वेचैनी थी। वह हर समय टहलते रहना चाहती थी और उस समय वेहतर रहती थी। उसे लकोरियाका निरन्तर स्राव होता रहता था जो वहुत दुर्गन्धित था। वह वड़ी आसानीसे थक जाती थी और सर्दी सहन न कर सकती थी। उसकी हड्डियाँ भी छोटी और निर्वल थी और आसानीसे टूट सकती थी।

मैंने उसे सोनेसे पहले सप्ताहमें ३ दिन, ठण्डे पानीसे स्नान करने और खुली हवामें घूमनेका आदेश दिया। मुझे उसके सारे लक्षण **कल्केरिया फासमें** नजर आए। मैंने उसे **कल्केरिया फास** ३x की २-२ गोली हर २-२ घण्टे वाद दी। पहली खुराक खाते ही परिवर्त्तन शुरू हो गया। उसकी आम हालतमें स्थायीरूपसे सुधार आया और यह इस दवाकी जीत थी।

—ओ॰ ए पामर एम डी॰।

# कमर दर्द ( Backache )

**साईलीसिया :** कमरमें आक्षेपके साथ खिंचाव जो रोगीको चुपचाप लेटने पर विवश कर दे। मेरुदण्डके मध्य भागमें निरन्तर वेदना।

**फैरम फॉस :** कमर, जघाओं और गुर्दोमें दर्द। चले तो गठियावातकी वेदना आए। कभी-कभी तो रामबाण सिद्ध हुयी है।

**काली म्योर :** **फैरम फॉसके** बाद लाभ करती है जबकि वह विफल रहा हो।

**काली फॉस :** दर्द जो लगडा अर्थात बेबस बना दे। पीड़ित अग अशक्त हो जाता है। चहलकदमीमे दर्द और अकड़न धीरे-धीरे घट जाती है। परन्तु अधिक दूर चलनेसे दर्द बढ जाता है। यह दर्द बैठकर उठनेपर और चलना शुरू करनेपर बढ जाता है।

**कल्केरिया फॉस :** सुन्नपन, ठण्डककी अनुभूतिके साथ दर्द, चीटी रेंगने जैसी अनुभूतिके साथ दर्द जो रातको और आरामके समय बढ़े। **फैरम फॉसके** साथ अदल-बदल कर दी जा सकती है। किसी क्षयकर रोगके बाद आया कमर दर्द। सुबह जागनेपर कमरके निम्न भागमें दर्द हो।

**काली सल्फ :** दर्द गर्म घरमें और शामके समय बढता है। खुली (ठण्डी) हवामें घटता है भ्रमणशील दर्द।

**मैग्नेशिया फॉस :** दर्द जैसे गोली लगी हो, छेद होता हो, रुक-रुक कर आए, जगह बदलने वाला दर्द; स्नायविक शूल, दर्द जो गर्मीसे घटे।

**कल्केरिया फ्लोर :** कमर दर्द जिसके कारण मेरुदण्डमें क्षोभ हो। थकानकी अनुभूति और कमरके निम्न भागमें दर्द, इसके साथ यह अनुभूति जैसे दर्द वाली जगह भरी हुयी है, और दर्द जलनके साथ हो, कब्ज। कमर दर्द चलना शुरू करते ही बढता है और निरन्तर चलते रहनेसे घट जाता है।

**नेटरम म्योर :** कमरके निचले भागमें दर्द जो किसी सख्त चीज़पर लेटनेसे घटे, जबकि जीभका विशिष्ट लक्षण भी मौजूद हो, मुँहमें झागदार लार लाए। अधिक देर तक झुके रहनेसे आया कमर दर्द, जैसे दर्द वाली जगह कुचली गयी है। कमर दुर्बल, सुबह कष्ट बढे। मेरुदण्ड अधिक कोमलग्राही। गर्दन अकडी हुई और सूजी हुयी। भारी दुर्बलता और थकान।

**नेटरम सल्फ :** कमर दर्द जैसे घाव हो गया है। दर्द रातभर जारी रहे। केवल दायीं करवट लेट सके। मेरुदण्ड और गर्दनमें सन्तापपूर्ण दर्द।

**नेटरम फॉस :** सुबह सोकर जागनेपर कमरके निम्न भागमें आरपार दर्द।

## कीड़े मकौड़े का दंश ( डंक ) ( Bites of Insects )

**नेटरम म्योर :** तत्काल लाभ करता है। डंक वाली जगहको गीला करके इसपर **नेटरम म्योर** ६ विचूर्ण रगड दें। दर्द तत्काल मिट जाएगा ( शुसलर )।

## हड्डियों के रोग ( Bone Diseases )

**कल्केरिया फॉस :** हड्डी टूटनेकी हालतमें यह उसकी मरम्मत करने के लिये लाभदायक है। जब चूनेके परमाणुओंके कारण हड्डियाँ दुर्बल और नर्म हों, तो यह दवा उन्हें स्वभाविक स्थितिमें लाती है। बालशोष ; बच्चोंकी हड्डियाँ धनुषकी तरह हो जाती हैं। खोपडीकी हड्डीके घाव क्षय। टखनेका नासूर जबकि उसके किनारे कडे हों और पानी-सा पतला मवाद आता हो। हड्डी और उपास्थियोंके जोडोंके साथ-साथ दर्द।

**फैरम फॉस :** हड्डियोंके ऐसे रोगोंमें जबकि नर्म भाग लाल, गर्म, वेदनापूर्ण और प्रदाहित हो। हड्डी प्रदाह , हड्डीके आवरणोंका प्रदाह। कूल्हेके जोडकी बीमारियाँ।

**काली म्योर :** हड्डीके प्रदाहका दूसरा दर्जा।

**काली फॉस :** हड्डियोंकी क्षीणता और अतिसार जिसमें पतले पाखाने आएँ।

**साईलीसिया :** हड्डियोंके प्रायः सभी रोगोंमें काम आता है। हड्डियोंके नासूर जबकि स्राव दुर्गन्धित हो। आसपासकी जगह सख्त, फूली हुयी, नीली-सी लाल , जोडों विशेषतः घुटनेका सौत्रिक भाग प्रदाहित। हड्डियों, और उपास्थियोंके घाव जबकि सभी स्राव—पीब, पाखाना और पसीना आदि बदबूदार हो। कूल्हेके जोडकी बीमारियाँ।

हड्डियोंके नासूर और मुर्दार हो जानेमें, अन्य औषधोंकी अपेक्षा, **साईलीसिया** अधिक प्रकट होता है और लाभ करता है, यह औषध। शरीरमें बहुत गहराई तक पहुँचकर काम करती है। यह **मर्क**से बहुत अधिक मिलती-जुलती है। यह ध्यान रहे कि **मर्क**के बाद इसका व्यवहार नहीं करना चाहिए। ऐसी हालतोंमें यह नई उलझनें पैदा कर देगी। यह पुरानी हालतोंमें, या

कम-से-कम जब पहला दर्जा बीत चुका हो। अधिक लाभ करती है ( गिलक्रिस्ट )। दूसरी कोई ऐसी दवा नही है जो मुर्दा हड्डीके टुकडोंको इससे अधिक जल्दी बाहर निकाल दे, और इस तरह रोपण कार्य अर्थात् घावके भरनेमें सहुलत दे। हड्डी और उपास्थियोंके बहुत किस्मके नासूरों, मुर्दारपनमें ग्रॉफोगलने इस औषधकी जोरदार सिफारिश की है और इसे अधिक लोकप्रिय और प्रभावशाली बताया है।

**कल्केरिया सल्फ :** हड्डियोके नासूर , टी बी ।

**कल्केरिया फ्लोर** हड्डियोंके बाह्य स्तरपर सख्त, खुरदरे, ऊँचे-नीचे, नालीदार उभार आएँ। यह उस रक्तार्बुदमें भी हितकर है जो नवजात शिशुओंकी खोपडीकी हड्डीपर बन जाया करते हैं। हड्डियोंकी खराश। चोट आनेके बाद आया हड्डीका फोडा। हड्डीका ऐसा मुरदापन जिसके कारण पेडूमें नासूर बन जाए। गाठें , हड्डियोंकी कडी सूजन। आतशक यपारेक दुर्व्यवहारके कारण हड्डियोका मुरदारपन। मेरुदण्डका नासूर। हड्डियोका कैंसर। हड्डियोंका दूषित पोषण, विशेषतः दाँतोंका। कलाईकी हड्डियों और पपोटोंके नाडी जालके उभार। गाठें। हड्डियोंमें पीव आना। दाँतोंके नासूर और दाँतोंका हिलना।

**मेग्नेशिया फॉस :** मेरुदण्डके नासूरमें **कल्केरिया फ्लोर**के साथ अदल-बदल कर दें।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ **कुहनी और कलाईकी ( प्रकोष्ठास्थि ) हड्डी टूटकर न जुड़ना :** रोगीकी आयु २२ वर्ष थी। वह छरहरे बदनका था और उसके शरीरमें खूनकी कमी थी। कई मास पहले उसकी हड्डी टूटी थी। जब मैंने उसे देखा तो परखच्चियाँ हटा दी गयी थी। दुखन मिट गयी थी, परन्तु हड्डियाँ जुडी नही थी। हड्डियाँ काटी भी गयी थी। नये किनारे बनाये गये थे, उन्हें मिलाकर जोड़ दिया गया था और सहारा दिया गया था।

उसे दिनमें ३ या ४ बार **कल्केरिया फॉस** दिया गया। इसने बडा शानदार नतीजा दिखाया। —ओ० ए० पामर एम० डी०।

२ **उपास्थि अर्बुद :** एक ६० वर्षीया वृद्धाके बाए हाथकी पहली उगलीपर चमकदार सूजन आयी और वह १८ मास तक बनी रही। यह गाठ सख्त और वेदनापूर्ण थी। इसका आकार अखरोटके छोटे टुकडेके बराबर था। सूजन अपेक्षतः चौडी थी। रोगिणी बहुत घबरायी हुई और खिन्न थी। उसे मैंने **कल्केरिया फ्लोर,** ३x दिनमें ४ बार ६-६ ग्रेनकी मात्रा में दिया।

दो सप्ताह वाद सूजन विलकुल चली गयी, नर्म हो गयी और उसका आकार सुकड गया। ३ मासमें सव उपद्रव मिट गया। खुराक या निवासमें कोई परिवर्त्तन न किया गया।—जे सी वेनेट एम डी।

३ पिण्डलीकी हड्डीपर कई साल पहले चोट आयी थी। चोटवाली जगहपर सूजन आयी। एक प्रसिद्ध सर्जनने उसे हड्डीका कैंसर क़रार दिया और आपरेशन करानेकी सलाह दी। **कल्केरिया फ्लोर**ने दर्द और सूजन हटा दी।—एल० ए० वेल एम० डी० **'हैनिमैनियन मन्थली'**, अप्रैल, १८८७।

४. कोपनहेगन निवासी डा० हेनसेनने पिण्डलीकी लम्वी हड्डीके २ साल पुराने एक नासूरके केसका हवाला दिया है। नासूर हड्डी तक पहुँच गया था। इस नासूरकी राह, मुर्दा हड्डीके टुकडे निकलते थे। स्राव गाढा और पीला था। रातको छेद होने जैसा दर्द भी आता था। **कल्केरिया फ्लोर** ६ खिलाया गया और पाँच मासमें सारा उपद्रव मिट गया।

**उपास्थि अर्वुद साईलीसियासे ठीक हुआ :** (ग्रॉफोगल द्वारा लिखित **टैक्स्ट वुक**' से)। रोगीकी आयु ६ वर्ष की थी। इसके दाऍ हाथकी ३ उगलियों और अगूठेपर ऐसी सूजन आयी जो अण्डेके वरावर थी और वहुत कडी थी। सारी उगलियोंका स्तर एक जैसा हो गया था। अव ६ माससे जोड भी कडे हो गये थे और हिलते-डोलते नही थे। जगह-जगह घाव वन गये थे। प्रोव डालकर परीक्षा करनेसे कडी आवाज आती थी। ऐसी वहुत सी जगहें थीं जहाँ-प्रोव आसानीसे चला जाता था और कई जगह ऐसी भी थीं जो सख्त थी। वच्चेकी भूख मिट गयी थी। वह एक कुम्हारके पास नौकर था और मिट्टी ढोता था। पीडित अगोमें भारी दर्द होता था, उसे दिनमें ऊँघ आती थी, सुस्ती और थकान भी थी। सर्जरीके सिद्धान्तोंके अनुसार कलाईसे हाथ काट डालनेके सिवा और कोई चारा नहीं था।

उसे दो-दो घण्टे वाद **साईलीसिया** ६ की ५-५ वूद दी गयी। ८ दिन वाद घाव भरने लगे और अर्वुदका आकार घट गया। चौदह दिन वाद जोडोंमें गति आ गयी, हालाकि वह वहुत सीमित थी। और दो सप्ताह वाद सारे उपद्रव मिट गये भूख लौट आयी, वालकका चेहरा खिल गया।

५. तीन सालके वच्चेके वायें हाथकी पहली उंगलीकी हड्डीमें खरावी थी। उपद्रवका केन्द्र पहले दो जोडोंके दरम्यान था। घावका मुह वहुत वारीक था और उससे सफेद रंगका मवाद आता था। इसपर सूजन अधिक थी। पीडित स्थानकी रगत विगडी हुयी थी और देखनेमें उगली वहुत भद्दी दिखायी देती थी। एक चिकित्सकने, दवादारूसे रोग

को हटानेमें विफल रहनेपर उगली कटवा देनेकी सलाह दी। परन्तु घरवाले सहमत न हुये और उन्होने अन्य उपचार आजमानेका इरादा किया।

उसे साईलीसियाका घोल दिया गया। उसने तात्कालिक लाभ किया और कुछ दिनोंमें हड्डी बिलकुल ठीक हो गयी। घावका निशान रह जाने के अतिरिक्त, रोगका कोई निशान न रहा और उगली स्वाभाविक दशामें आ गयी।

६—डा० सी एफ निकोलसने हड्डीके रोगोंके कई केसोंका हवाला दिया है जो कल्केरिया फ्लोरसे ठीक हुये ( आर्गेनिन १८८० )।

**७—टूटी हुयी हड्डीका मन्दगतिसे जुडना :** रोगीकी आयु ६० वर्ष थी। उसकी जघास्थि टूट गयी थी। दवादारूके बावजूद यह दो मास तक हिलती रही। उसे तब **कल्केरिया फॉस** १२ दिया गया। आरम्भमें हर रोज रातको दिया जाता था। बादमें हर तीसरी रात दिया जाने लगा। टूटी हुयी हड्डी सख्त हो गयी और बादमें बिलकुल ठीक हो गयी। यह उगली कटवानेसे अच्छा रहा। १८ मास बाद वही हड्डी फिर टूटी। पहले तरीकेके अनुसार फिर दवा दी गयी और वह २ माममें राजी हो गया। ( जे० सी० मार्गन एम डी. )।

८—एक १४ वर्षीया अनाथ बालिकाको **साईलीसिया**ने पाँव कटवाने से बचा दिया। उसकी हड्डीकी बीमारीका एक अर्से तक इलाज होता रहा था। परन्तु रोग बढता ही गया। तब चिकित्सकको पाँव काटनेके सिवा कोई चारा नजर न आया।

उसे घण्टा-घण्टा बाद **साईलीसिया** दिया गया और घावपर इसीके घोलमें तरकी हुयी पट्टी रखी गयी। पाँचवे दिन टखनेकी हड्डी और आसपासकी जगहपर सुधारके ऐसे स्पष्ट लक्षण दिखायी दिए कि पाँव कटवाना व्यर्थ समझा गया। कुछ दिनमें लडकी बिलकुल राजी गयी। —एम डी डब्ल्यू ; शुसलरसे।

## दिमाग ( Brain )

( दिमागके पर्दोंका प्रदाह देखिये See Meningitis )

**फरम फॉस :** प्रदाहका पहला दर्जा।

**काली फॉस :** दिमागका नर्म पड जाना : पहला दर्जा, जबकि दिमाग के पर्दोंमें पानी भी आ गया हो। इसके साथ अदल-बदलकर **कल्केरिया फॉस** भी दें। प्रदाहके कारण दिमागका नर्म पड जाना ; जब यह विकार

गुप्त रूपसे आ रहा हो। दिमागपर चोट आता। दुर्गन्धित पाखाना। अनिद्रा और ऊँघी।

**मैग्नेशिया फॉस :** जब कमेडेकी स्थिति भी मौजूद हो। दिमागपर चोट आनेके बाद आयी निगाहकी खराबियाँ।

**कल्केरिया फॉस :** दिमागके पर्दोंमें पानी आ जाना। जब यह हालत पुरानी हो गयी हो। ब्रह्मरन्ध्र देर तक खुला रहे। खोपडीकी हड्डीका टी० बी०।

**कल्केरिया फ्लोर :** दिमागका रक्तार्बुद।

**नेटरम सल्फ :** सरपर चोट आनेके बाद। जब दिमागपर चोट आने के बाद दिमागी खराबियाँ आयी हों। सरके पिछले भागमें तेज दर्द।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१—डा० जे० सी० मर्गनने **पन्सलवेनिया होमियोपैथिक मेडिकल सोसायटी**की सन् १८८२ के वार्षिक विवरणमें पृष्ठ १२ पर लिखा है कि **मैग्नेशिया फॉस** ३० की सहायतासे कुछ ऐसे बच्चे ठीक हुये जिन्हें दिमागी खराबियाँ थीं और कमेडे आते थे।

२—एक वृद्धको दिमागके प्रदाहके दौरे बडी देरसे पडते थे। वह धीरे-धीरे सभला, परन्तु दिमागी कमजोरीके लक्षण उभर आए। उसको बोलने की शक्ति प्रभावित हुयी। उसे बेहोशीके क्षणिक दौरे पडने लगे, वह यह समझते हुए भी जल्दी नही कर मकता था कि मेरे मोटर आदिके नीचे आकर कुचले जानेका खतरा है। या यह देखते हुए भी चलना बन्द नही करता था कि अब आगे बढनेमें खतरा है।

उससे **काली फॉस** लाभ हुआ। ( एम. डी डब्ल्यू ; शुसलरसे )

## दिमागी कमजोरी ( Brain Fag )

**कल्केरिया फॉस :** स्नायविक थकान, इसके साथ उत्साहहीनता, रातको पसीना अधिक आए, चेहरा पीला, रोगियो जैसा पीला, और मुरझाया हुआ, मर्दाना ताक़त नष्ट हो जाती है। हाथ-पाँव स्वाभाविक रूपसे ठण्डे और उनमें रक्तका अधिक सञ्चित हो जाना। अनिद्रा। भूखका अभाव ; सुन्नपन की अनुभूति।

**साईलीसिया :** मतिभ्रम ; चित्तको एकाग्र न कर सके, दब्बू, व्यग्र ; लिखने-पढनेका काम करनेसे थकान आ जाए। सोच-विचारका काम न

कर सके। भारी दुर्बलताकी अनुभूति। परन्तु रोगी सभला रहता है। वह शीघ्र थक जाता है और आराम करनेपर मजबूत हो जाता है। छात्राओंकी दिमागी कमजोरी ; पढते समय गडवडा जाए , क्योंकि वे अपने विचारोंको एकाग्र नही कर सकतीं। सोचना-विचारना चाहें, परन्तु ऐसा न कर सके।

**काली फॉस :** यह खोयी हुई स्नायविक शक्तिको वहाल करता है। यह हर तरहकी स्नायविक दुर्बलतामें लाभ करता है। सरके पिछले भागमें निरन्तर वेदना, उघ और व्याकुलता। दुर्गन्धित मॉस।

**नेटरम म्योर :** ज़व अनिद्रा भी हो, निराश ; कुढे , वातचीत करनेके वाद थकान आए, दिमागी परेशानी।

**मैग्नेशिया फॉस :** स्नायविक दुर्वलताके लिए प्राय. अमोघ दवा है विशेपतः जवकि दर्दका विशिष्ट लक्षण मौजूद हो, कम्प और दुर्वलता भी हो।

१—उपर्युक्त रोगके अनेक रोगियोकी चिकित्सामें 'टिशू रेमिडीज' वहुत उपयोगी और सफलदाता सिद्ध हुयी हैं। जिन रोगियोंने अन्य चिकित्सा पद्धतियों द्वारा दवादारू करायी, और विफल रहनेके वाद जव उन्होंने , टिशू-रेमिडिज का आश्रय लिया, तो उनमें विशेष परिवर्त्तन आया और वडी तेजीसे सुधार आया। जिन अनेक कारणोंसे रोग आया हो, उसकी विविध और विभिन्न अवस्थाएँ नगण्य हैं—वायोकेमिक पद्धतिसे चिकित्सा करनेमें उनपर ध्यान देनेकी आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता और महत्ता है—रोगीके शरीरको उचित पोपण देनेकी और फिर 'टिशू रेमिडिज़ द्वारा शरीरकी त्रुटियोंकी पूर्ति करना। उचित पोपणकी पूर्तिकी दृष्टिसे यह आवश्यक है कि रोगीके रहन-सहनका वातावरण वदल दिया जाय, उसे सुखद काम-धंधेमें लगाये रखा जाए, हवा-पानी और स्थान वदल दिया जाए, साथ ही खान-पान भी वदल दिया जाए। और फिर 'टिशू रेमिडिज' की सहायतासे रोगीके थके-मांदे और जीर्ण-शीर्ण शरीरकी मरम्मत की जाए। उसे सयम सिखाया जाए। नियमित रूपसे व्यायाम करे, नियत समयपर खाये नियत समयपर सोये, वडे सवेरे जागे और मलमूत्रका त्याग करे। ये सव काम वहुत महत्वपूर्ण हैं।

आमतौरपर **काली फॉससे** इलाज़ शुरू किया जाता है। यह दवा मनको वल देती है। इसकी सहायताके लिए आवश्यकतानुसार **कल्केरिया फॉस फैरम फॉस** या **नेटरम फॉस** भी दिये जा सकते हैं। जव इन औषधोंके व्यवहार से वातनाडियोंको काफी वल मिल गया हो, तो **कल्केरिया सल्फ** देना चाहिए। फॉस-परिवारकी औषधोंने जो काम शुरू किया है—उसे पूर्ण करने के लिए सल्फ परिवार की जरूरत पडती है। इस कामके लिए २ माससे

लेकर २ वर्षतक का समय लग सकता है। परन्तु सफलता निश्चित है। साथ ही सफाई का ध्यान भी रखना चाहिए।

एफ डी विट्टिंग एम डी डेटन, ओहाइओ।

२—यहाँ मैं २ रोगियोंका हाल अपनी नोट बुकसे लिख रहा हूँ :

(क)—२३ जनवरी १८८३, श्रीमती क, ग आयु १६ वर्ष ; पपोटे फड़कते हैं, विशेषकर हर रोज शामके ५ बजे और चिराग जलनेपर। पपोटोंमें फड़कन आनेके साथ-साथ आँसू भी आते हैं। किसी दुर्घटना का भय सताता है। शरीरमें कम्प आनेके साथ दौरा खत्म होता है। तब घबराहट भी मिट जाती है। कमजोरी महसूस होती है। सर भी चकराता है। रास्ते चलना पड़े तो नालीके सहारे चलती है, निराश, जब बारह वर्षकी थी तो पेशी कम्प आया था और यह रोग दो वर्ष जारी रहा था। १७ वर्षकी आयुमें कई मास तक, उसे अन्दर दे देकर भयके दौरे पड़े थे।

उसे **काली फॉस** ४x एक-एक ग्रेनकी मात्रामें दिनमें चार बार दिया गया।

३० जनवरी १८८८ :—मानसिक स्थिति और चक्कर आनेमें कमी है। दवा जारी है। फिर वापस नहीं आयी।

४ जून : रोगिणीने बताया है कि दूसरे सप्ताहमें पपोटोंकी फड़कन, भयके दौरे और रास्ता चलनेकी कठिनाई मिट गयी थी और फिर इस तरह का कोई कष्ट नहीं आया। सर चकराने की शिकायत कुछ है। और यह शायद इसलिए है कि उसे गर्भ है।

(ख) ३० मार्च. श्री ग, आयु १२ वर्ष, दायी टाग, दायें बाजू और कमर में दर्द है। हाथमें थामी हुई चीज गिर पड़ती है, विशेषत. चौंकने पर। बोलने में कठिनाई पड़ती है, चिड़चिड़ा स्वभाव, व्याकुल, कब्ज, नींद ठीक नहीं आती। सात साल की उम्रसे घबराहट है, क्योंकि तब कमरमें चोट आयी थी। २ वर्ष तक चिकित्सा करानेके बाद वह बहुत कुछ बेहतर हो गया। नमक पानी द्वारा-मेरुदण्ड स्नानसे उसे बहुत लाभ हुआ।

उसे **काली फॉस** ४x दिया गया।

मई ४ : हर हालतमें बेहतर है। दाएँ हाथमें पकड़ी हुई चीज अब भी कभी-कभी गिर पड़ती है। सुबह कष्ट बढ़ता है, दोपहरको घट जाता है।

मई ११ : चीज थामनेमें कम कठिनाई पड़ती है। लिखना अधिक सरल हो गया है दोपहरको प्रफुल्लित रहता है।

जून ८. अब कोई कष्ट नहीं रहा। लवण-जलसे मेरुदण्ड स्नान पाँच सप्ताहके बाद कर दिया गया।—टी० सी० विग्गिन्स।

३—एक जापानी मजदूरने शिकायत की कि उसे शामके वाद दिखायी नहीं देता। उसे वृक्ष या आदमी जैसी वडी चीजें तो दिखायी देती थीं। परन्तु गन्ना और नरसल आदि छोटी चीजें दिखायी न देतीं। पूछनेपर यह भी पता चला कि यह विकार रविवार या छुट्टीवाले दिन आता है। इससे मैं यह समझा कि यह नर्व थकानका उपद्रव है।

मैंने उसे **काली फॉस** ६x दिया और २ ही ३ दिनमें वर्णनीय सुधार आया। —टी० सी० विग्गिन्स।

४—श्री ब—आयु ६० से ऊपर; कई माससे आर्थिक सकटमें है। वह सहसा एक दिन वेहोश हो गया। उसका पतन समीप नजर आता था। मैंने उसे **काली फॉस** ६x दिया और कामकाज कम करनेका परामर्श दिया। कुछ दिन वाद वह हवा वदलने चला गया। लौटकर उसने वताया कि "दवाने आश्चर्यजनक काम किया।"

५—रोगी जब केलेफोर्निया आया तो उसके पास सामान्य पूजी थी। वह उसे सट्टेमें गवा वैठा। कारवारी चिन्ता और अधिक परिश्रमके कारण वह एक ट्रेनमें वेहोश हो गया। घर पहुँचकर उसे दिलमें भयानक आक्षेपयुक्त दर्द आया। इसके साथ मुर्च्छा आया, साँस फूला और हाथ-पाँव सर्द पड गये। यह हालत कई घण्टे तक जारी रही। आगे चलकर यह हालत दिनमें कई-कई वार अनियमित अन्तरसे आती। अव दिमागी कमजोरी भी आने लगी। उसे चिकित्सकोंने वताया कि उसे मृगी होनेका डर है। वह वहुत निराश हो गया।

६—चार सप्ताह वाद कुछ सुधार आया। एक दिन घरमें कुछ काम करते हुए रोगका दौरा फिर हो गया। वह जव मेरे पास आया, तो मुझे असाध्य नजर आया। चेहरेपर चिन्ताकी छाप स्पष्ट थी, निराशा छायी हुई थी और स्नायविक अवसादके लक्षण नजर आये। लकवा नहीं था। छाती और चेहरे के दाएँ भागमें भाला गडने जैसे दर्दके कारण रातको नींद नही आती थी।

उसे **काली फॉस** ३x दिया गया ताकि स्नायुजालको वल मिले। आक्षेपपूर्ण दर्दके लिए **मैगनेशिया फॉस** दिया गया। दोनों दवाएँ अलग-अलग प्यालोंमें आधा प्याला पानी घोलकर दी गई और अदल-वदलकर आध-आध घण्टे वाद सोते समय तक दी गई। ... सप्ताह वाद वह दवा लेने आया। काफी सुधार नजर आया। ... ता और जीर्णशीर्णताकी जगह निश्चिन्तता और आशा नजर ... सप्ताहमें दर्दका केन्द्र ... पडा। अव वह थकान ... व काम कर सकता था

को नीद अच्छी आती थी। एक सप्ताह वाद उसकी पत्नीने वताया कि वह अव विलकुल ही ठीक है। —सम्पादक, **'केलीफोर्निया मेडिकल जर्नल'**

# ब्रांकाईटिस और साँसकी नालीका नजला

## ( Bronchitis and Bronchial Catarrh )

**फेरम फॉस :** प्रदाहके पहले दर्जेमें यह **एकोनाईट**की जगह काम करता है। पुराने ब्राकाईटिसके नये दौरोंमें भी हितकर है। खाँसीमें जो कफ निकले उसके आधारपर औषधका निर्वाचन करें और उसके साथ इसे अदल-वदल कर दें। प्रदाहके कारण साँसकी नालीका क्षोभ, जवकि उसके साथ श्वासकष्ट, गर्मी या जलनके साथ सन्ताप भी हो। उथला साँस, घुटन और साँमकी चाल तेज। **छोटे वच्चोंकी साँसकी क्षुद्र नाड़ियोंका प्रदाह।** खाँसी थोडी ; आक्षेपयुक्त और वहुत वेदनापूर्ण।

**काली म्योर :** ब्राकाईटिसके दूमरे दर्जेमें हितकर है जवकि कफ गाढा वसा जैसी और सफेद हो।

**काली सलफ :** जव कफकी रगत स्पष्ट रूपसे पीली हो, पानी जैसी और मात्रामें अधिक हो : या हरी-सी चिकनी और पानी-जैसा पतली हो। जव कफ पक चला हो।

**नेटरम म्योर :** हवाकी नालीका तरल प्रदाह जिसमें झागदार, पानी-जैसी पतली कफ आए। या कफ पतली हो और फिर भी उसे खाँसकर निकाल न सके और छातीमें घडघडाहट हो। पुराना ब्राकाईटिस, हवाकी नालीका नजला। "सर्दीकी खाँसी" जवकि उपर्युक्त लक्षण हों। कफ साफ पानी जैसा पतला और निशास्ते जैसा। खाँसनेके वाद छातीमें सन्ताप हो और ऐसा लगे जैसे छाती छिल गयी है। पुराना ब्राकाईटिस जिसमें वलगम पारदर्शी सडा हुआ हो, आवाज कमजोर हो और दिलमें फडफडाहट हो। समुद्रतटपर कष्ट वढे।

**कल्केरिया फॉस :** उन रोगियोंके लिए हितकर है जिनके शरीरमें खूनकी कमी है और कफ अण्डेकी सफेदी जैसा हो।

**कल्केरिया सल्फ :** जव कफकी रगत पीली या पीली-सी हरी हो , या उसमें खून मिला हुआ हो ; जव कफ पक चला हो। ब्राकाईटिसका तीसरा दर्जा, मामूली नजला-जुकाम और ऐसी हालतें जिनके लिए **हीपर सल्फर** लाभदायक समझा जाता है।

**नेटरम सल्फ :** जब खाँस कर कफ थूकनेके वाद छातीमें सन्तापपूर्ण कष्ट आए। खाँसते समय रोगीको अपनी छाती थामनी पड़ती है। दमेका दौरा सवेरेके समय बढ़े। कष्ट ठण्डे, तर, बरसाती मौसममें बढ़ता है।

**साईलीसिया :** खाँसीका कष्ट ठण्डकसे बढ़ता है और गर्म पेयसे घटता है। पीव जैसी कफ आए। यदि पानी वाले बर्तनमें थूके तो कफ पेंदेमें चला जाए और तलमें बैठ जाए। शोष रोगसे पीड़ित बच्चोंकी हवाकी नालीके विकार। खाँसी सुबह आए जिसका कंठ नालीसे सम्बन्ध हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

ब्रॉंकाईटिस, ब्राङ्को-न्यूमोनिया और छातीके इसी तरहके रोगोंमें विशेषतः जब रोगी बालक थे, **फैरम फॉससे** लाभ हुआ। उसके बाद, या अदल-बदल कर, **काली म्योर** भी दिया गया। कभी-कभी **फैरम फॉसके** साथ **ब्राईओनिया** भी अदल-बदल कर दिया गया, और इसने बहुत शानदार काम किया। किसी और दवाकी जरूरत ही न पड़ी।

# आगसे जलना ( Burns )

**काली म्योर :** आगसे या गर्म पानीसे जलना जबकि छाला पड़ गया हो, यह दवा जलेपर लगायी भी जा सकती है, जबकि घावपर सफेद या मैले भूरे रंगका परत आयी हो।

**कल्केरिया सल्फ :** जब पीव आ गयी हो।

**नेटरम फॉस :** जब आगसे जली जगहपर पीव आ गयी हो। ऊपर भी लगाया जाता है।

**नेटरम म्योर :** जब आबला पड़ गया हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

क्लीवलेण्ड निवासी डा० जे० टी प्रॉली आगसे जलेपर **फैरम फॉस** २x का चूर्ण छिड़कते हैं जबकि गर्मी और लाली अधिक हो।

# नज़ला-जुकाम ( Catarrhal Trouble )

**फैरम फॉस.** सर्दी जुकामका पहला दर्जा जबकि रक्तसंचारमें भी गड़बड़ हो, ज्वर हो, नाककी श्लैष्मिक झिल्लियोंमें रक्तका अधिक संचित

हो जाना। नथनोंमें सहमा डक लगने जैसा दर्द आए जो साँस लेनेपर वढ़े। सर्दी-जुकामकी प्रवणतामें विशेषरूपसे हितकर है। **कल्केरिया फॉसके** साथ अदल वदल कर भी दे सकते है।

नजले (जव जुकामका स्राव नाकके रास्ते वहने की वजाए, गलेमें गिरता हो) के लिए **फैरम फॉस** ३x शानदार दवाई है जवकि वलगम सफेद और झागदार हो। इससे मुझे कभी निराशा नही हुई।"—डब्ल्यू० आर० किंग।

"सर्दी-जुकामके आरम्भमें यह वहुत गुणकारी है और सोनेके वरावर तौल कर रोगीको दिया जा सकता है।"—डा० जे० पी० लेम्वर्ट।

नाकमें छोटे-छोटे घाव वन जाते हैं जिनसे खून आता है। यह दवा उन घावोंको भर देती है।

**काली म्योर :** सर्दी-जुकाम जवकि कफ सफेद, गाढी और पारदर्शी हो। सूखा जुकाम। नाक वन्द और जीभपर सफेद-सी मैल आए। गलकोष में चिपकी हुयी कफ। डा० इवेन्सने लिखा है ' जव नाकसे पीव जैसा कफ गिरता हो, तो इसके व्यवहारसे भारी लाभ होता देखा है। नज़ले-जुकामके नए प्रदाहमें जव जलनके साथ खुश्की भी हो, **काली म्योर** अत्यन्त सन्तोष-दायक औषध है। श्लैष्मिक झिल्लियोंपर गहरी लाली आती है और वे मोटी हो जाती हैं। यहाँ तक कि ठोस नजर आने लगती हैं।"

गलेमें जो स्राव टपके, उसे खाँसकर थूकना पडता है। आतशकके कारण आया पीनस। पुराना नासिकाप्रदाह और नजलेकी शिकायत, कान की मध्य नाली वन्द हो जाती है। स्राव गाढा और लसदार होता है। वह अपारदर्शी भी हो सकता है। नथनोंमें सफेद या पीले-से, हरे रगकी पपडी ( छिछडे ) जमती है।

**कल्केरिया फ्लोर :** नज़ला जिसमें पीले-से रगके कफके छोटे-छोटे गोले निकलें। सूखा जुकाम। नाक वन्द ( **काली म्योरके** साथ अदल-वदलकर दें )। छींक लेनेकी विफल चेष्टा। पीनस। नाककी हड्डीकी वीमारियाँ; नासार्वुद। इसके साथ मुर्दा हड्डीसे वदवू आए।

**नेटरम म्योर :** सर्दी-जुकाम और नजला जिसमें पानी जैसा पतला, पारदर्शी और झागदार कफ आए। जिनके शरीरमें खूनकी कमी हो, उनको नजले-जुकामकी पुरानी शिकायत; कफका स्वाद कमी-कभी नमकीन रहता है। सर्दी-जुकामके कारण छालेदार फुन्सियाँ निकल जाती हैं जिनमें पानी जैसा मवाद भरा रहता है। जव ये फट जाते हैं तो घावपर पतली-सी पपडी या खुरण्ड आ जाता है। जुकाम, "वहता जुकाम" जिसमें पानी-

सा पनला, साफ और झागदार स्राव आये। ठण्डी जगह जाने-से और परिश्रम करनेसे कष्ट बढ़े। इन्फ्लुएंजा, नकसीर आए; झुकनेसे और खाँसनेसे खून अधिक गिरे। नथनोंका पिछला भाग खुश्क। सूँघनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है। डा० जियो हेरिंगका अनुभव है कि इस औषधकी प्रथम शक्तिका विचूर्ण उन सर्दी-ज़ुकामके लिए सिद्धौषध है जो छींकोंके साथ शुरु हो। हमें यही लाभ ३० शक्तिका व्यवहार कराने से प्राप्त हुआ है। रातको कपड़े उतारने पर और सुबहके वक्त छींकें अधिक आयें। ज्वरके बाद मुँहके कोनोंपर दाने निकल आयें। पेशानीके गर्त्तोंका प्रदाह।

**काली सल्फ :** स्राव पीला, चिकना, या पानी जैसा पतला : यह इस औषधका विशिष्ट लक्षण है। आमतौरपर शामके समय, या गर्म घरमें कष्ट बढ़ता है। नाकसे गहरे पीले रंग या पीले से रंगका स्राव गिरता है। सर्दी-ज़ुकाम और त्वचाकी खुश्की; जब **फैरम फॉस** खिलाने से भी पसीना खुलकर न आए तो यह दवा पसीना ला देती है। नाक और गलकोषकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ सट जाती हैं। साँस खर्राटेसे ले, साँस मुँहकी राहसे ले।

**कल्केरिया फॉस :** दुर्बल और क्षीणकाय व्यक्तियोंका पुराना सर्दी-ज़ुकाम (अन्तरकालीन औषधके तौरपर व्यवहार होता है)। सर्दी-ज़ुकाम जिसमें नाकसे अण्डेकी सफेदी जैसा मवाद गिरे। छींकें आए और नथनोंमें सन्ताप-पूर्ण कष्ट।

डा० एल० ए० बुलने लिखा है : मैं प्रायः हवाकी नालियोंके नजले-ज़ुकाम का इलाज **कल्केरिया फॉससे** ही शुरू करता हूँ। मैंने देखा है कि यह औषध निश्चित रूपसे शक्तिदाता है। श्लैष्मिक झिल्लियोंपर इसका असर बहुत अच्छा है। अधिकांश मौकोंपर यह **सिंकोना** यौगिकोंका स्थान ले लेता है।"

नासार्श। नाककी नोक बर्फ जैसी सर्द। कंठमालाके रोगी बच्चोंकी नाक फूली हुयी, घायल नाक और गलकोषकी ग्रन्थियोंका प्रदाह।

**कल्केरिया सल्फ :** सर्दी-ज़ुकाम जिसमें गाढ़ी, पीला, अपारदर्शी और पीब जैसा-स्राव आए। उसके साथ प्रायः रक्तकी धारी भी आया करती है। यह श्लैष्मिक ग्रन्थियोंको साफ कर देती है। नकसीर।

**नेटरम फॉस :** अन्तरकालीन औषधके रूपमें व्यवहार होता है, जबकि आमाशय सम्बन्धी लक्षण भी हों, जैसे अम्ल डकार आना या जीभपर गहरे पीले रंगकी मैल आए। बार-बार नाक नोचे। नज़ला जो गलेमें गिरे;

गाढी, पीली कफ आए, विशेपकर कंठमालीय पीनसमें हितकर है। नाकके आगे दुर्गन्ध आए।

**नेटरम सल्फ :** मासिकके दिनोंमें नाकसे खून गिरे। आतशकके उपद्रव स्वरूप आया पीनस जो खुश्क मौसमसे तर होनेपर बढे। श्लैष्मिक झिल्लियोंका आम नजला जबकि हरे-से कफका स्राव अधिक आनेका झुकाव हो। यह औषध कफवात ज्वर ( इनफ्लूएंजा ) के लिये भी सिद्धौषध है। जबकि इस रोगका आक्रमण तन्तुओंमें जलका अनुपात बढ जाने के परिणामस्वरूप आया हो।

**काली फॉस :** पीनस ; नाकसे दुर्गन्धित स्राव आए, साँससे दुर्गन्ध आए और जहाँ स्नायविक विकार प्रतिक्रिया स्वरूप या गौण रूपमें आया हो। नकसीर और उसकी प्रवणता। नाकसे गहरे पीले रगके छिछडे गिरें। गलेसे गाढी कफ खखारमें आए।

**मैग्नेशिया फॉस :** सूघनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है या पलट जाती है। जुकाम बारी-बारीसे बहे और खुश्क हो जाए। नथनोंसे जो स्राव हो, वह बडे जोरसे गिरे।

**साईलीसिया :** पीनस जिसमें नाकसे बदबूदार मवाद गिरे और जब कि रोगका केन्द्र निम्न श्लैष्मिक झिल्लियाँ या हड्डीके पर्दे हों। ( इसी औषधके घोलकी पिचकारी दे कर नाक साफ करें )। नाककी पुरानी, वेदनापूर्ण खुश्की, या हठी घाव जिससे तीक्ष्ण स्राव आए। नथनो और होठोंके आस-पास दादके दाने। नाककी नोकपर खुजली।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ डा. एच गौलनने ( Pop Zeitschaft ) ने पुराने नजलेमें **नेटरम फॉस**की बहुत प्रशसाकी है, उन्होंने इसके व्यवहारके लिए निम्न लक्षण बताये हैं :

"सुनहरे पीले रगका स्राव, जीभकी रगत गहरी पीली", उन्होंने एक केसका हाल बताया है जो **नेटरम फॉस** ३x के व्यवहार से ठीक हुआ जबकि **काली बाईक्रोम** विफल हो चुका था। और चिकित्साएँ भी विफल हो चुकी थीं और रोगी वहमी हो गया था।

२ पीनसका केस था, स्राव गाढा, पीला और बदबूदार था। इसके साथ पानी जैसा पतला मवाद भी अदल-बदल कर आता था। उसे यह कष्ट गत १८ माससे था। गध और स्वाद नष्ट हो चुका था। दायें नथनेमें कष्ट अधिक

था। हर तीन सप्ताह बाद रज हो जाता था। सर्दी बडी आसानीसे हो जाती थी। तीन साल पहले मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ था।

मैंने उसे **काली सल्फ** १२ की तीन मात्राएँ पानीमें बना कर दी और आदेश दिया कि सप्ताहमें एक मात्रा ले।—एक मासमें उसका नजला बिलकुल ठीक हो गया। सूँघने और चखनेकी शक्ति लौट आयी।

डब्ल्यू० पी० वैस्सलहॉफ्ट एम० डी०।

३ कुमारी-द, दर्जिन, आयु २६ वर्ष कद मझौला, दायें नथनेमें बड़ा-सा गूमड था। दायें नथनेकी हड्डी काफी बाहर उभर आयी थी और उसने बढकर दायीं आँखकी आँसू की नालीमें बाधा उपस्थित कर की थी। इससे वह कुरूप हो गयी थी। इतना ही नही, वह चार सालसे नाककी राह साँस लेनेमें असमर्थ थी।

उसे **नेटरम म्योर** १००० एक सप्ताहमें एक बार करके ६ मास तक दिया गया। इससे उसकी सारी शिकायतें मिट गयी। नाककी राह साँस आने लगा और गूमड मिट गया। —डा० डब्ल्यू० डी० मार्गन।

४ म्युनिख निवासी डा० ब्रूअरने एक केसकी रिपोर्ट दी है। उसे पाँव का पसीना दब जानेके बाद ब्राकाईटिस हो गया था। वह **कल्केरिया सल्फ** और **साईलीसिया**के व्यवहारसे ठीक हो गयी। ए० एच० जैड, १८८३।

५ श्री य; रंग गेंहवा। उसे सप्ताहमें एक बार गाढी, गहरे भूरे रग की, अर्द्धतरल, अत्यन्त दुर्गन्धित पीव दायें नथनेके ऊपरी भागसे आती थी। एक मास पहले, दायें जबडेके ऊपरी दाँतके नासूरसे मुर्दार हड्डीका एक टुकडा भी निकला था। यह दाँत चार साल पहले निकलवाया गया था। **कल्केरिया** और **साईलीसिया** आदि कई औषधियाँ विफल सिद्ध हुयी। तब उसे **काली सल्फ** ६ पानीमें घोलकर, एक बडा चम्मच सुबह-शाम चार दिन दिया गया। इससे स्राव बन्द हो गया और नासूर बन्द हो गया।

—डब्ल्यू० पी० वैस्सलहाफ्ट एम० डी०।

**६ नेटरम म्योरियाटिकम :** डा० लूईबुल्लने नाक तथा गलकोपकी क्षीणताके एक केसका हवाला दिया है। उसकी त्वचा बदरग और खुश्क थी। उसपर छोटे-बडे अनेक धब्बे थे।

उन्होंने एक औंस पानीमें खानेका १० ग्रेन नमक मिलाकर नाक धोयी और शक्तिकृत नमक (**नेटरम म्योर**) खिलाया और परिणाम बहुत ही सन्तोषजनक रहा। —होमियोपैथिक रिकर्ड

७ (क) **प्रेशाबनीके गर्तके प्रदाहके लिए नेटरम म्योर :** श्रीमती-अ पाँच साल पहले उसी पीवके साथ प्रदाह आया। कुछ सप्ताहकी चिकित्साके बाद रोग

दब गया, और वहाँ केवल साधारण कोमलता रह गयी। कभी-कभी दर्द आता; परन्तु प्रदाहका कोई लक्षण न आया। यह दर्द ८-१० दिन तक जारी रहा। सुर्खी या सूजन नहीं थी; परन्तु पीडित जगह बहुत स्पर्शकातर थी। स्राव भी नहीं था। परन्तु नाककी श्लैष्मिक झिल्लियोंपर सूजन थी। मुझे आपरेशनकी कोई तात्कालिन आवश्यकता नजर न आयी, हालांकि उसे नाक विशेषज्ञोंने तत्काल आपरेशन करानेकी सलाह दी थी। सच्ची बात यह है कि मुझे आपरेशन की जरूरत ही नजर न आयी।

उसे **नेटरम म्योर** ३० दिया गया और एक सप्ताहमें कष्टका कोई निशान भी न रहा। अब ८ साल हो गये, उसे वह तकलीफ नहीं हुयी।

(ख) कई महीने हुये एक युवती मेरे पास आयी। उसने दायीं पेशानीके उभारमें निरन्तर दर्द करनेकी शिकायतकी। उसे यह दर्द ६ सालसे हो रहा था और इन ६ सालोंमें यह दर्द एक क्षणके लिये भी बन्द न हुआ था। कभी-कभी पपोटोंमें सूर्खी और सूजन आ जाती थी। पीडित स्थान बहुत ही स्पर्शकातर था। नथूने पीव जैसी गाढी कफसे भरे हुये थे।

**नेटरम म्योर** १२x से चौबीस घण्टेके भीतर-भीतर दर्द बन्द हो गया। कुछ सप्ताह तक नाक आर्जीरोलमें रूई भिगोकर साफ की जाती रही। **नेटरम म्योर**के बाद **काली सल्फ** १२x भी दिया गया।

## शीतला ( Chicken pox )

**फैरम फॉस** . यही अकेला काफी है। या दानोंके हिसाबसे जिस औषध के लक्षण हों, उसके साथ अदल बदल कर देनी चाहिए, जैसाकि **काली म्योर, कल्केरिया सल्फ, नेटरम सल्फ या साईलीसिया।**

## हैजा ( Cholera )

**फैरम फॉस :** पहले दर्जेमें जबकि मसानेका कष्ट उभर आया हो, **काली म्योर**के साथ अदल-बदल कर दें। बालातिसार; पाखाना बार-बार हो, पानी-सा पतला, बल्कि खून मिला। बालक बहुत क्षीण हो जाता है, अर्द्ध चेतना आ जाती है, चेहरा लाल हो जाता है, पुतलियाँ फैल जाती हैं, सर इधर-उधर पटकता है, नाडीकी चाल नर्म और पूरी, पसीना दब जानेके बाद आया हैजा।

**काली फॉस :** जब पाखाना चावलोंके मांड जैसा हो। पतितावस्था। चेहरा नीला पड जाये और नाडी मन्द।

**काली सल्फ :** कमेडा, ऐंठन और हैजेके अन्य लक्षण।

**मैग्नेशिया फॉस :** हैजेकी ऐंठन। पहला दर्जा, पानी जैसे पतले दस्त और कै; पिण्डलियोंमें ऐंठन।

**नेटरम सल्फ :** शुसलरके मतानुसार हैजे और हैजेके पूर्व रूपके लिए सिद्धोषध है।

**कल्केरिया फॉस :** बच्चोंके दस्त। कण्ठमालाके रोगी बच्चोंके हरे दस्त, पाखाना चिकना, पानी जैसा पतला, अनपचका और दुर्गन्धित। बच्चा इकहरे बदन वाला, वृद्धों जैसा नजर आये।

## चिकित्साकालीन अनुभव

एक बूढ़ेको कै और दस्त बडे जोरसे होने लगी, पिण्डलियोंमें ऐंठन आयी, पाखाना चावलकी माँड जैसा था।

**काली फॉससे** उसे लाभ हुआ ( शुसलर )।

# झटके आना ; पेशियोंमें खिंचाव आना (Chorea)

**कल्केरिया फॉस :** कठमाला वाले बच्चोंके लिए हितकर है जिन लडकों या लड़कियोंका विकास दूषित रूपसे हो रहा हो, उन्हें बालिग होनेके समय झटके आएँ।

**मैग्नेशिया फॉस :** यह इस विकारके लिए मुख्य औषध है। अंगोंका अनैच्छिक गतिविधि और खिंचाव, इसके साथ चेहरेपर सहानुभूति पानेकी भावना झलके। काम-धंधेके कारण झटके या ऐंठन आना, जैसे लेखकों और प्यानो बजाने वालोंके हाथकी ऐंठन आदि। स्थानीय खिंचावके लिए हितकर है। यह दवा **कल्केरिया फॉसके** बाद, या उसके साथ अदल-बदल कर दी जा सकता है।

**साईलीसिया :** जब विकार कृमियोंके कारण आये, भयानक स्वप्न आनेसे नींद टूट जाये, आँखें बिगड जाएँ, चेहरा पीला पड जाये, बहुत लालची बन कर खाये, नथनोंमें क्षोभ, कब्ज, भारी प्यास, हाथ-पाँव और चेहरेका शोथ।

**नेटरम म्योर :** पुराने रोगमें हितकर है, जबकि रोग भय या चेहरेपर निकले दाने दब जानेके बाद आया हो। उछलनेके दौरे पडें। दाएँ अंगोंमें झटके और खिंचाव आएँ। कष्ट शुक्लपक्षकी ७मी से पूर्णिमा तक आए। मलेरिया, और खूनकी कमी वालोंके लिए विशेषतः हितकर है। जबकि प्यास और ज्वर भी हो।

**नेटरम फॉस :** जब रोग कृमियोंके कारण आये या जब अम्लके लक्षण भी हों ( साईलीसिया देखिये )।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. पेशी कम्प : चेहरे और शरीरका ऊपरी भाग पीडित हुआ था। मुँहके अगले भागमें नीचेकी ओर झटके आते थे। पपोटे खिंचते थे। सर सहसा आगेकी ओर खिंच जाता था। अन्य अनियमित गतिविधियाँ भी थीं। नींदमें आराम रहता था। पाखाना जानेसे या भावनाओंमें उथल-पुथल आनेसे कष्ट बढता था। **इग्नेशिया** विफल रहा था।

**मैग्नेशिया फॉस :** ३, तीन मास तक दिया गया। इसका परिणाम अच्छा रहा। परन्तु रोग बिलकुल ठीक न हुआ। शुसलरका परामर्श मानते हुये **कल्केरिया फॉस, मैग्नेशिया फॉस**के साथ अदल-बदल कर दिया गया। एक ही मासमें बच्चा बिलकुल ठीक हो गया। —डी. आर हिल्टिगर एम डी.

२ रोगिणी निरन्तर चुपचाप बैठी रहती थी, या हर समय सामानकी जगह बदलती रहती थी। वह **मैग्नेशिया फास** ३x से बिलकुल ठीक हो गयी।
( डा० सेगर )

३ रोगीकी आयु सात वर्ष, २ सालसे पीडित था। रोग भयका परिणाम था। चेहरा पीला, कोमलाग, खूनकी कमी थी, पानी बहुत पीता था। ज्वर आता था। जीभ सफेद थी, मुँह आया हुआ था।

**नेटरम म्योर** १२ से वह बिलकुल ठीक हो गया। —सी० पी० हार्ट एम डी

४ **झटके आना : मैग्नेशिया फाससे ठीक हो गया :** डा० जॉन एच क्लार्कने रिपोर्ट दी है : रोगिणीकी आयु ६ वर्ष थी। उसे लण्डन होमियोपैथिक अस्पतालमें ३०-३-१८८७ को भरती किया गया था। उसे पिछले आठ माससे पेशी कम्प था। गत २ मासमें उसे अस्पतालके आउट-डोरसे इस रोगकी कितनी ही दवाइयाँ दी गयी थीं, परन्तु कोई लाभ न हुआ था। रोगका कोई निश्चित कारण मालूम न हो सका। उसे कृमि न थे। भयका इतिहास जरूर पाया गया। भरती होनेके बाद पता चलाकि वह जबतक जागती है, उसे झटके आते रहते हैं, और नींदके समय कोई झटका नहीं आता। वह अच्छी तरह चलती-फिरती थी। उसकी वाणीमें दोष था, दिलकी चाल भी तेज थी, परन्तु कोई असाधारण आवाज सुनायी न दी। बादमें यह देखा गयाकि कभी-कभी फैलाव आनेसे पहले, नरम आवाज आती है जैसे झटकोंका कारण हृत्पेशियाँ हों। पुतलियाँ समान रूपसे फैली हुई थीं।

उसे **मैग्नेशिया फास** ६x विचूर्ण, २-२ ग्रेनकी ६ मात्रा दिनमें दी गयी।

सुधार मन्द परन्तु स्थिर गतिसे आया। झटके कम हुए, बोलना स्पष्ट हुआ, रातको नींद अच्छी तरह आयी और डर कम हुआ जिसकी सबसे अधिक शिकायत थी।

१७ मईको कम्पका कोई निशान न रहा। आदेश देनेपर बडी आसानी से खडी हो गयी, आँखें बन्द कर ली और बाजू फैला दिये। वह आँखें बन्द करके बड़ी आसानी और सफलताके साथ चल सकी। यह उसकी कडी परीक्षा थी। जब वह भरती हुयी थी बहुत अस्पष्ट बोलती थी और उसे समझनेके लिए अटकलसे काम लेना पडता था। अब वह बिलकुल साफ बोलने लगी।

वह सात मासमें **मैग्नेशिया फॉस** खानेसे बिलकुल ठीक हो गयी। कोई और दवा न देनी पडी। —होमियोपैथिक वर्ल्ड, जुलाई १८८७।

# पेट-दर्द ; आन्त्रशूल, ( Colic )

**मैग्नेशिया फॉस :** बच्चोंको अफारेके कारण दर्द आए। टांगें ऊपर खिंच जाएँ। दर्दके मारे रोगी दोहरा भी हो जाए। रगडनेसे, गर्मीसे और डकार आनेसे आराम मिले। नाभिके आस-पास दर्द। पेशियोंमें खिंचाव आए। दर्द रुक-रुक कर आए। ऐंठन हो।

डा० जे० सी० मार्गन एम० डी० लिखते हैं: "नवजात शिशुओंके-पेट दर्दमें आमतौरपर **मैग्नेशिया फॉस** ३० देता हूँ और मुझे इससे सदा सफलता मिली है। दर्दके मारे बच्चा चीखता है, चिल्लाता है। पित्त पथरीका दर्द।

**नेटरम फॉस :** बच्चोंका पेट-दर्द जबकि अम्लताके लक्षण भी हों, पाखाना हरे रंगका हो, उससे खट्टी गन्ध आए और फटे हुए दूधकी कै हो।

**फेरम फॉस :** मासिक धर्मके दिनोंका पेट-दर्द, इसके साथ गर्मी, चेहरे की तमतमाहट और नाडीकी चाल तेज।

**नेटरम सल्फ :** हवाके कारण पेट-दर्द जो दायें जघासे शुरू हो, पित्तज शूल, इसके साथ मुँहका स्वाद कड़वा और जीभकी जडपर भूरी-सी या भूरे-हरे रंगकी मैल आए। सीसक विषके कारण आये पेट-दर्दमें इस औषध की १x या २x शक्तिका विचूर्ण देना चाहिए। पेट और कमरके निम्न भागमें दर्द जैसे कुचला गया हो। हवाकी अधिकता। हवा खारिज न हो, प्रसव के बाद पेटमें हवा आने और क़ब्ज होनेकी शिकायत।

**काली सल्फ :** पेट-दर्द, पेट छूनेसे ठण्डा लगे ; कभी-कभी अधिक गर्मी, जोश या सहसा ठण्डक लगनेके कारण दर्द आता है। अपान वायुसे गन्धक जैसी गन्ध आए। जब **मैग्नेशिया फॉस** फेल हो जाए, तो यह दवा काम देती है।

**काली फॉस :** पेटके निचले आधे भागमें दर्द हो, इसके साथ पाखाने का अधूरा वेग, दोहरा हो जानेसे आराम आए। अफारा।

**नेटरम म्योर :** डा सी. ई. फिशरका मत है : पित्तज शूलमें जब **कार्बो वेज** जैसे डकार आएँ, **डायस्कोरिया** और **कोलोसिंथ** जैसा पेट-दर्द हो, तो मैंने देखा है कि **नेटरम म्योर** वहुत शानदार काम करता है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१—वृद्धा आयु ६० साल, उसे २ सालसे आमाशय और अँतड़ियोंमें दर्द होता था। यह दर्द कई-कई दिन तक जारी रहता। जब भी-दौरा आता उसमें सिर्के जैसी खट्टी डकारें भी आतीं। दो ऐलोपैथ उसकी चिकित्सा कर चुके थे और दोनो विफल हो चुके थे। उनका निदान था कि उसे पेटका कैंसर है। मेरा निदान था कि लैक्टिक ऐसिड अधिक वनता है।

उसे **नेटरम फॉस** दिया गया और दो ही दिनमें सुधार आ गया। कुछ सप्ताहमें वह विलकुल ठीक हो गयी। (शुसलर)

२—एक महिलाको पित्तशूल था। वह पित्तकी कै करती थी और मुँहका स्वाद वहुत कड़वा था। मैंने उसे थोड़ेसे पानीमें **नेटरम सल्फ** दिया। दो ही मिनट वाद रोगिणीने वतायाकि कष्ट कम हो गया है। ५ मिनट वाद उसे खुल कर पाखाना हुआ। अगली सुवह तक वह ठीक हो गयी।

३—एक पादरीको कई सालसे पेट-दर्दके वार-वार और वड़े सख्त दौरे पड़ते थे। वहुत ही नाज़ुक था, वेचैनी और व्यग्रता भी थी। ये दौरे आमतौर पर तीन दिनसे एक सप्ताह तक जारी रहते थे। प्रायः एक साल पहले यह देखा गया था कि दर्द दाएँ जघासे शुरू होकर सारे पेटपर फैलता था।

उसे **नेटरम सल्फ** दिया गया और इसने तात्कालिक लाभ दिखाया। उसके वाद फिर उसे पेट-दर्द कभी न आया। —हैरिंगका मैटीरिया मैडिका।

## दिमाग पर चोट आना ; ( Concussion of Brain )

**काली फॉस :** दुर्वलताकी अवस्था ; पुतलियाँ फैली हुई, चोटके कारण जव दिमागके कोष अपना काम करना छोड़ दें।

**फेरम फॉस :** जव चोटके परिणामस्वरूप ज्वर आया हो।

**मैग्नेशिया फास :** जव दृष्टि भ्रम भी साथ आया हो।

**कल्केरिया फॉस :** अन्तरकालीन औषधके रूपमें व्यवहार किया जाता है ; विशेषतः जवकि सुन्नपन भी आ गया हो।

**नेटरम सल्फ :** गिर जाने या सरपर चोट आनेके पुराने प्रभाव।

## कब्ज, मलबद्धता ( Constipation )

**नोट :** कोई जुलाव देनेकी जरूरत नही है। आमतौरपर कब्ज किसी प्रारभिक विकारके परिणामस्वरूप आता है। लक्षणों और कारणोंपर ध्यान दें। जिस दवाके लक्षण होंगे, उसका उचित व्यवहार कब्जको दूर कर देगा। शुससर।

**काली म्योर :** कब्ज जिसके साथ जीभपर सफेदी-सी मैल आए और जब पकवान अनुकूल न आएँ। पुरानी कब्जके लिए विशेष लाभदायक है। जिगरका सुस्ती, हल्के रगके पाखाने जबकि जिगरकी शिथिलतासे पित्त का आभाव हो।

**काली फॉस :** पाखानेकी रगत गहरी भूरी, उसके साथ पीले, हरे रग की आँव आए। मलान्त्र और कोलनका आशिक पक्षाघात।

**नेटरम म्योर :** पाखाना जानेके बाद मलान्त्रमें फाडे जाने या सहसा तेज डक लगने जैसा दर्द हो। अँतडियोको अधिक दुर्बलताके कारण आया कब्ज, और ऐसा कब्ज जो अँतड़ियोंमें नमीके कारण आया हो। अँतिडियोंकी श्लैष्मिक झिल्लियोकी खुशकी और जब अन्य अगोंसे पानीका स्राव अधिक मात्रामें हो। पानी जैसी कै, आँसू अधिक आएँ, मुँहमें लार अधिक आए। तन्द्रा और लार अधिक आए। सुद्दे, खुश्क पाखाना जो बहुत मुश्किलसे उतरे मलान्त्रशूल, पेटके घेरेका दर्द। डा० फ्रौलीका मत है कि यह औषध मोटे-ताजे शरीर वालो, विशेषतः उन व्यक्तियोंकी कब्जके लिए हितकर है जिनका हृदय दुर्बल हो।

**कल्केरिया फॉस :** कब्ज जिसमें कडे सुद्दे आएँ और उनके साथ खून भी आए, विशेषत. वृद्धोंका। इसके साथ मानसिक खिन्नता हो, सर चकराये और सरमें दर्द हो।

**कल्केरिया फ्लोर :** पाखाना उतारनेकी असमर्थता।

**नेटरम फॉस :** बच्चोका पुराना कब्ज। दुराग्रही कब्ज जिसमें कभी-कभी पतले दस्तभी आएँ। यदि बच्चोंको दूध या रोटीके साथ दी जाए तो यह शानदार दस्तावर ( रेचक ) है। ६ मासके बालकके लिये दिनमें ५-१० ग्रेनकी ३ मात्राएँ।

**नेटरम सल्फ :** सख्त सुद्दे जिनके साथ खूनकी धारा आए। पाखाना होनेसे पहले, और उसके साथ मलद्वारमें तेज डक लगने जैसा दर्द हो। नर्म पाखाना भी बडी मुश्किल और तकलीफके साथ आए। बदबूदार हवा बहुत निकले ( स्ट्रांग )।

**फैरम फॉस :** कब्ज और अँतडियोंके निम्न भागमें गर्मीकी अनुभूति, अँतडियोंकी पेशियोंकी दुर्वलताके कारण आया कब्ज।

डा० डोनाल्डसनका मत है : "**फैरम फॉस** उस पुरानी और कष्ट साध्य कब्जमें हितकर है जिसमें काँच निकलती हो और वादी वावासीर भी हो। इसके साथ खूनकी कमी भी हो, चेहरा पीला हो, जल्दी ही तमतमा जाए, हाथ-पाँव सर्द हों, धडकन होती हो, निरन्तर सर्दी लगती रहे, पेटमें हवा हो और माससे भारी अरुचि हो।

**साईलीसिया :** ऐसा प्रतीत हो कि मलान्त्रमें मलको वाहर निकालने की शक्ति नहीं रही है। मल आंशिक रूपमें वाहर आकर फिर भीतर चला जाए। मलद्वारमें भारी सन्ताप, सूई गडने जैसा दर्द और गोली लगने जैसा दर्द हो। कब्ज जिसके साथ पुरानी कंठमाला या कोई ऐसा पुराना रोग हो जिसमें पीव वहता हो। हीनपोषणवाले वालकोंका कब्ज, जवकि चेहरा पीला और मटयाला हो। सरपर पसीना अधिक आए और इसके साथ लकवे जैसी कोई तकलीफ हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ श्रीमती—ख—आयु २६ वर्ष ; तीन वच्चोंकी माँ थी। ३ मास पहले तीसरा वच्चा पैदा हुआ था तवसे कब्जकी शिकायत है। रेचक ( दस्तावर ) दवाएँ देनेसे कोई लाभ न हुआ। पाखाना सख्त और खुश्क था ; वहुत जोर लगानेसे थोडा मल वाहर आता था, और फिर भीतर चला जाता था।

**साईसिलयिा** १२ की चार खुराकने ही उसकी सारी तकलीफ दूर कर दी। —जे पी जॉनमन।

२ हैनिमैनके शिष्य डा. ग्रॉसने पुरानी कब्जका एक वडा दिलचस्प केस दिया है जो **नेटरम म्योर** ३० देनेसे ठीक हुआ।

रोगीकी आयु ११ वर्ष थी। उसके माता-पिता कठमालाके रोगी थे। उसका एक भाई मूर्ख था। रोगी भी गूँगा और लगभग जड था। उसे जन्म से ही कब्जकी शिकायत थी। उसे तीन-तीन चार-चार सप्ताह तक पाखानेकी हाजत ही नहीं होती थी। कुछ दिन **नेटरम म्योर** ३० खिलानेसे कब्ज हट गया। (पूरी रिपोर्ट देखिये डा० स्ट्रॉंग द्वारा लिखित कब्ज पृ० ६७२ पर)

३ लण्डन निवासी डा० सी स्टर्लिंग सॉंडर एल. आर पी ने लिखा है "वरसों पुरानी कब्ज **नेटरम म्योर** खिलानेसे हट गयी"।

४. अ—आयु २५, उसको वर्षों पुरानी कब्ज थी। उसे रोज ही रेचक और सारक दवाएँ खानी पडती थीं। उसे **नेटरम म्योर** ६ विचूर्ण दिया गया

कुछ ही दिनों में शिकायत मिट गयी। वह ६ सप्ताह तक दवा खाता रहा। और उसके बाद दवाके विना ही रोज पाखाना आने लगा।

## खाँसी ( Cough )

**फेरम फॉस :** नयी, वेदनापूर्ण, थोडी-थोडी, गुदगुदाहटके साथ आनेवाली खाँसी। हवाकी नालीके क्षोभके कारण वार-वार, थोडी-थोडी, सन्तापजनक आक्षेपपूर्ण खाँसी आए। इसके साथ फेफडोंमें भी सन्तापपूर्ण कष्ट आए। खखारमें कुछ न निकले। सख्त, सूखी खाँसी जिसमें सर्दीसे भारी सन्ताप आए। खाँसी; जिसमें वलगम छातीमें घडघडाए, कष्ट रातको वढे।

**काली म्योर :** वडी आवाजके साथ खाँसी आए जो आमाशय से उठती प्रतीत पडे; इसके साथ जीभपर मैली-सी सफेद मैल आए। थोड़ी-थोडी खाँसी वार-वार, आक्षेपके साथ आए। नयी खाँसी। जैसे काली खाँसी हो आवाजके साथ होनेवाली खाँसी जिसमें वलगम छातीमें घडघडाए। आँखें वाहर निकल आएँ और जीभपर सफेद या भूरे रंगकी मैल आए। क्रूप खाँसी। वच्चेको जव खाँसीका दौरा पडे, तो वह अपना गला पकड ले। क्रूप खाँसी जैसा स्वरभग। खाँसी जिसमें गाढी दूध जैसी सफेद, लसदार और अण्डेकी सफेदी जैसी कफ आए। फेफडोंकी टी० वी० की खाँसी जिसमें गाढी, दूध या सफेद और लसदार कफ आए, जीभपर सफेद मैल आए।

**काली फॉस :** हवाकी नालीमें क्षोभ आनेसे खाँसी आए। हवाकी नालीमें सन्ताप हो। वलगम गाढा, पीला, नमकीन और दुर्गन्धित, छातीमें सन्ताप।

**काली सल्फ :** वलगम गहरे पीले रंगका, या पानी-सा पतला। गर्म घरमें या शामके समय कष्ट वढ़े। खखार फिर भीतर चला जाए और आमतौरपर निगलना पडे।—**कास्टिकममें** भी ऐसी ही होता है। क्रूप जैसी खाँसी जिससे गलकोषमें थकान आए। **खाँसीमें पुल्सा टिल्ला**की अपेक्षा कहीं अधिक घडघडाहट होती है और कफ थूकना भी कहीं अधिक मुश्किल होता है।

**मैग्नेशिया फॉस :** वास्तविक आक्षेपयुक्त खाँसी जिसके दौरे पडें। खाँसनेसे वलगम न आए। रातको आक्षेपके साथ खाँसी आए जो आरामसे लेटने न दे। काली खाँसी। रोगी वार-वार शिकायत करे कि गलेमें आक्षेप पडता है। खाँसते-खाँसते फेफडोंमें भारी कष्ट आता है। वात प्रकृति वाले वच्चोंकी सूखी खाँसीके लिए सदा इस दवाको याद रखें।

**कल्केरिया फ्लोर :** गहरे पीले रंगकी कफके छोटे-छोटे गोले खाँसने पर निकलें। लेट जानेपर गलेमें सरसराहट, गुदगुदाहट और क्षोभ होकर आए। नज़ला टपकनेसे भी इसी प्रकारकी खाँसी आए।

**कल्केरिया फॉस :** खाँसनेसे अण्डेकी सफेदी जैसा गाढा बलगम अधिक आए। छातीकी टी० बी० की खाँसीमें अन्तरकालीन औषधके तौरपर काम आती है। बच्चोंकी खाँसी जिसमें दम घुटे और लेट जानेसे आराम मिले।

**कल्केरिया सल्फ :** खाँसीमें पानी जैसा कफ आए।

**नेटरम म्योर :** खाँसीमें पानी जैसा पतला बलगम अधिक आए। टी. बी. की खाँसी जिसमें पानी जैसा पतला नमकीन स्वादका कफ आए। सर्दी के मौसमकी खाँसी। खाँसते समय जिगरमें सूइयाँ गडने जैसा दर्द हो। सूखी खाँसी जो बार-बार आए और दिन-रात उठती रहे, आमाशयमें क्षोभ आनेके कारण खाँसी आए।

**नेटरम सल्फ :** खाँसी जिसमें छातीमें भारी कमजोरी आए; जैसे अभी प्राण निकल जाएँगे। पीब जैसी खाँसी। गाढा, रेशेदार और पीले हरे रंगका बलगम आए। दुखन और कमजोरीको घटानेके लिए छाती सहलानी पडे।

**साईलीसिया : ठण्डे पेय पानीसे खाँसी आए।** छातीका सन्ताप खाँसी और दुर्बलता, गरम, तर हवासे घटे। कंठनाली सम्बन्धी खाँसी जो सुबह को बढ़े और उसमें गाढी कफ आए। झुकनेसे या लेट जानेसे साँस तकलीफ से आए। खाँसनेसे कफ मात्रामें अधिक, पीलेसे हरे रंगकी, चिकने स्वादकी और दुर्गन्धित आए। रातको खाँसनेसे दम घुटे। —( लीलोंथल )

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ डा बीगलरने आई० ए० एच० की १८८८ की वार्षिक रिपोर्टमें कंठनालीके पुराने प्रदाहके एक केसकी चर्चाकी है, जो **काली फॉस** ३० से ठीक हुआ। रोगीके लिए यह दवा "दुराश मात्र" के रूपमें तजवीजकी गयी थी। उसे दुर्बलता थी, चेहरा पीला-सा, बहुत मन्द स्वरमें बोलता था और जो कुछ भी बोलता था, वह स्पष्ट समझने नहीं आता था। **काली फॉस**का निर्वाचन इसलिए किया गया चूँकि ग्रॉफोगलने लिखा है . साँसकी नालीमें प्राणवायु, तथा अन्य गैसोंकी प्रतिक्रिया, और रक्तमें जो रासायनिक परिवर्त्तन होते हैं वे सब **काली फॉस**की उपस्थितिके कारण आते हैं"।

२ डा० एफ. डब्ल्यू साउथवर्थने आक्षेपयुक्त खाँसीके दो केसोंका हवाला दिया है, जिन्हें **मैग्नेशिया फॉस** ४x और ६x से तात्कालिक लाभ हुआ। विशिष्ट लक्षण था, आक्षेप, लेटनेसे और रातके समय ठण्डी हवामें साँस लेनेसे कष्टमें वृद्धि हो जाती थी। बैठनेसे आराम मिलता था। छातीपर कसाव था। दूसरे रोगीको खाँसते-खाँसते पेशाब निकल जाता था।

३. डा० फिशरने भी ऐसा ही केस बताया है। उनके पास एक

महिला आयी। उसे खाँसते-खाँसते पेशाव निकल जाता था। **फेरम फॉस**ने उसे वडी जल्दी आराम पहुँचाया। कुछ समय वाद उसे इसी प्रकारकी खाँसी फिर आयी। इस वार भी **फेरम फॉस**ने वही असर किया और उसे जल्दी आराम आया। ( शुसलर से )

## क्रूप ( Croup )

**काली म्योर :** जव झिल्लियों जैसा निस्सरण हो तो यह मुख्य औषध है। इसके साथ **फेरम फॉस** अदल-वदल कर देना चाहिए। नक़ली क्रूपमें भी यह मुख्य औषध है।

**फेरम फॉस :** यह दवा **काली म्योर**के साथ अदल-वदल कर देनी चाहिए; साँस उथला, कष्टसे आए और जल्दी-जल्दी आए।

**कल्केरिया फॉस :** यह दवा उस समय काम देती है जव उपर्युक्त दोनों दवाएँ विफल रही हों। डा० ब्रेडफोर्डने लिखा है: वच्चेको जैसे ही पालनेसे उठाया जाता है, उसका दम घुटने लगता है। स्तनपान करानेके वाद, चिल्लाने के वाद, या पालनेसे उठानेके वाद वच्चेका साँस आना वन्द हो जाता है, सर पीछेकी ओर झुक जाता है, चेहरा नीला पड जाता है। वच्चा हाथ-पाँव पटकता है। दौरा वीत जानेके वाद वह निढाल हो जाता है।

**काली फॉस :** यदि इलाजमें देर हुयी हो और रोग तीसरे दर्जेमें पहुँच गया हो। मूर्च्छा। स्नायविक अवसाद, चेहरा पीला या नीला पड जाए। **काली म्योर**के साथ अदल-वदल कर दें।

**मैग्नेशिया फॉस :** हवाकी नालीका आक्षेप। सहसा चीख मारे। दम घोटने वाली खाँसी।

**कल्केरिया सल्फ :** जव कडी झिल्लियाँ नर्म पड गयी हों और गलेमें सख्त कफ मौजूद हो जिससे अधिक वेआरामी हो। यह क्रूप खाँसीको सर्दी-जुकामकी खाँसीके रूपमें वदल देती है और जव समयपर दी जाए तो फिर निस्सरणको रोक देता है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१—रोगी—७ वर्षका लडका था। उसे नकली क्रूप था। कई साल पहले उसे सच्ची क्रूपका वडा तेज़ दौरा पडा था। पिछली पतझडमें भी उसे ज्वरके साथ दौरा पडा, जैसे कुत्ता भौंकता हो, ऐसी खाँसी होती थी। ऐसी

नकली क्रूपके लिए अधिकाश आचार्योंने **एकोनाईट** और **हीपर सल्फ**की सिफारिश की है। परन्तु उनके व्यवहारसे कोई लाभ न हुआ। रातको खाँसी और व्याकुलता वढ जाती थी। उसके सम्बन्धी वहुत घवरा गए। सूखी गर्मी और साँसमें भारी घुटन भी थी। मैंने उसे **हीपर सल्फर**की जगह, **काली म्योर** दो-दो घण्टे वाद दिया। कुछ मात्राएँ दिए जानेके वाद, खाँसी तर हो गयी। कुत्तेके भौंकने जैसी आवाज आनी एकदम वन्द हो गयी। अगली रात वच्चा वडे आरामसे सोया। अगली सुवह वह जव सोकर उठा तो प्रफुल्लित था। ( शुसलर )

क्रूपमें ऊँची शक्तिके व्यवहारसे मत घवराइए। वे प्रायः निम्न शक्तियों के मुक़ावले अधिक अच्छा काम करती हैं। ( ई एच एच. )

## प्रलाप : वड़वड़ाना ( Delirium )

**फैरम फॉस :** जव तेज ज्वर हो।

**नेटरम म्योर :** जव प्रलापके साथ चौंकना भी पाया जाए। रोगी वड-वडाये। जीभपर झाग आए। शरावियोंका वकवास (मदात्यय)। इन सवके लिए यह मुख्य औषध है। यदि यह विफल रहे तो फिर **काली फॉस :** दें।

**काली फॉस :** मदात्यय , शरावियोंका आतक, भय, अनिद्रा, व्याकुलता और सन्देह, वडवडाहट, कल्पित चीजोंको पकडनेका यत्न करना और कल्पना करना। **नेटरम म्योर**के साथ अदल-वदल कर दें ; क्योंकि यह दवा दिमाग़की प्रक्रियाओंको वहाल करती है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

शुसलरने लिखा है : "एक व्यक्तिके सम्वन्धियोंने मुझसे परामर्श किया। वह शरावके नशेमें वक रहा था। मैंने उसे **नेटरम म्योर** दिया। इसने तत्काल काम किया। इस विकारके लिए प्रधान औषध है ; क्योकि जव दिमाग़में **नेटरम म्योर**के परमाणुओका सन्तुलन विगड जाता है और वहाँ पानी स्वाभाविक अनुपातसे वढ जाता है तो ऐसा विकार आता है।

## दाँत निकलना ( Dentition )

**फैरम फॉस :** दाँत निकलनेके दिनोंके कष्ट जवकि ज्वर भी हो, चेहरा तमतमाया हुआ, आँखें चमकदार, पुतलियाँ फैली हुयी ; अत्यधिक व्याकुलता और चिडचिडापन। ज्वर तरुण होता है, परन्तु **एकोनाईट**की तरह कष्टकर नहीं होता। डा० राऊ ने लिखा है "यह दवा उस दशामें

विशेषत. लाभ करती है जब साँसकी नाली आक्रान्त हुयी हो। इसकी पहचान यह है कि साँसकी चाल तेज हो जाती है, सूखी खाँसी आती है, स्वरभग हो जाता है और व्याकुलता आती है।"

**मैग्नेशिया फॉस :** जब ज्वर न हो और दाँत निकलने वाले बच्चोंको कमेडे आते हों। **फैरम फॉस**के साथ अदल-बदल कर दें। डा० जे० सी० मार्गन एम० डी० लिखते हैं : कमेडेकी ऐसी हालतोंमें जहाँ **बेला**के लक्षण नजर आते हों, और उसने कोई उपकार न किया हो, आक्षेपके साथ पेट दर्द भी हो, और पतले पाखाने भी आते हों, तो यह शानदार काम करती है।

**कल्केरिया फॉस :** दाँत निकलनेके दिनोंके उपद्रवोंके लिए मुख्य औषध है। अगर दाँत देरसे आते दिखायी दें, तो इसका व्यवहार उन्हें जल्दी निकाल देगा। यह दवा विशेषत: ढीले-ढाले और सूखे शरीर वाले बच्चोंके लिए हितकर है, जिनका ब्रह्मरन्ध्र अभी खुला हो। ऐसे बच्चे जो चलना भूल गए हों और जिनका शरीर क्षीण होता जा रहा है। पाखाना फडफडाहटके साथ और कै भी हो।

**नेटरम म्योर :** जब मुँहसे लार अधिक गिरती हो।

**साईलीसिया :** उन बच्चोंके लिए विशेषतः लाभदायक है जिनका सर बड़ा हो, खोपडीके जोड खुले हों, सरपर पसीना अधिक आता हो, चमडी वडी साफ हो, अधिक कोमलग्राही हो, हीन पोषणता जो दूषित समीकरणका परिणाम हो।

**कल्केरिया फ्लोर :** यह दवा भी दाँत निकालनेमें भारी सहायक है। दाँत निकलनेके दिनोंकी कै। हड्डियाँ कमजोर विशेषत. दाँत। कमेडे जिनमें साँस रुक जाए, बच्चा निरन्तर चिल्लाता रहे, और क्षणिक रूपसे वेहोशी आए।" डा जेडक्यू वार्ड।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. दाँत निकलनेके दिनोंमें खाये-पियेकी कै होती थी, पाखानेमें अनपच खाद्य निकलता था, दही जैसा फटा हुआ दूध भी आता था उसमें हरे रगके दाग भी आते थे। हवा भी दुर्गन्धित आती थी। सोते समय सरपर इतना पसीना आता था कि तकिया भींग जाता था, सर छोटा था। **कल्केरिया फॉस** २ से उसे ठीक कर दिया।—( राऊ-रिकार्ड १८७३ )

२ दाँत आना शिशुको आयु १८ मास थी। त्वचा गर्म, गाल अत्यधिक तमतमाये हुये, आँखें अगारेकी तरह लाल थीं और पुतलियाँ फैली हुई थी; व्याकुलता अत्यधिक थी और चिडचिडापन भी था।

१ १ घण्टे बाद फैरम फॉस ६x पानीमें मिलाकर दिया गया। पहली मात्रामें ही शामक कार्य किया। पहली खुराक पीनेके कुछ देर बाद बच्चा सो गया। गालोंकी तमतमाहट काफी घट गयी। कुछ और मात्राएँ देनेके बाद उसका सारा क्षोभ मिट गया। —वाईल्ड।

३ मैंने दाँत निकलनेके दिनोंके बालकोंके अनेक प्रकारके कष्ट बहुत बार **मैग्नेशिया फॉससे** दूर किये हैं। नए चिकित्सकोंकी सुविधाके लिए मैं यहाँ यह कह दूँ कि मैं बालकके साथ उसकी माँ की चिकित्सा भी करता हूँ ताकि कष्टकी पुनरावृत्ति न हो। माँ की चिकित्सा इस प्रकार होती है।

जब मैं यह देखता हूँ कि मेरी चिकित्सामें रहनेवाली कोई स्त्री ५ या ६ माससे गर्भिणी है तो मैं उसे हर रोज सुबह शाम **कल्केरिया फॉस** ३x विचूर्ण देता हूँ। इससे एक लाभ तो यह होता है कि माँ के दाँत नहीं गिरते; दूसरे बालकके दाँत आसानीसे, बिना कष्ट और समयपर निकल आते हैं।

—ई ए डेकेलहल एम. डी.

## मूत्र-मेह ( Diabetes Melletus )

**नेटरम म्योर :** पेशाब अनेक बार आता है; बहु-मूत्र, अमिट प्यास; शोष, नींद और भूख मिट जाती है। भारी दुर्बलता और खिन्नता आती है। कष्ट हर तीसरे दिन बढता है। सरमें दर्द होता है जैसे सरपर हथौडे बरस रहे हैं।

**नेटरम सल्फ :** यह इस रोगके लिए प्रधान औषध है। शुसलरने इस विकासका विशेष कारण बताया है कि **क्लोम ग्रन्थिसे निस्सरण घट जाती है।**

**काली म्योर :** पेशाब अधिक आता है और उसमें चीनी भी आती है। भारी दुर्बलता और तन्द्रा।

**काली फॉस :** स्नायविक दुर्बलता, अम्लता, अनिद्रा और अधीर होकर मर भुखेकी तरह खाना; इस औषधको अन्तरकालीन औषधके रूपमें व्यवहार करनेके लिए विशिष्ट लक्षण हैं। पश्चात् मस्तक और आमाशय तथा छातीका स्नायु गुच्छ सजग होकर अपना कार्य स्वाभाविक रूपसे करने लगता है। इस तरह पाचन क्रिया और फेफडों को बल मिलता है और वे अपना काम ठीक करने लगते हैं।

**फैरम फॉस :** मधुमेह जिसमें नाडीकी चाल तेज हो या जब दर्द या गर्मी

की शिकायत मौजूद हो, या शरीरके किसी भागमें रक्त अधिक सञ्चित हो गया हो। ऐसी हालतोंमें यह अन्तरकालीन दवाके तौरपर वर्त्ती जाती है।

**कल्केरिया फॉस :** बहुमूत्र, जिसके साथ दुर्बलता हो, अधिक प्यास, मुँह और जीभ सूखी, पेट ढीला-ढाला और धसा हुआ, सूअरका मास और अधिक नमक खानेकी प्रबल इच्छा हो। **पेशाबमे चीनी आना जबकि फेफड़े भी आक्रान्त हों।**

**कल्केरिया सल्फ :** शुसलरने लिखा है कि यह दवा भी इस रोगमें लाभ-दायक सिद्ध हो सकती है। **काली सल्फ :** भी हितकर है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. एक लेखकने मधुमेहकी वायोकेमिक चिकित्साकी व्याख्या करते हुए लिखा है .

कार्वोनिक ऐसिड और पानीसे मिलकर **लैक्टिक ऐसिड** बनता है। फेफड़ों तक पहुँचते-पहुँचते यह विच्छृंखलित हो जाता है यह परिवर्त्तन उस **सोडियम फॉस्फेट** द्वारा आता है जो रक्तमें पाया जाता है। जब किसी कारण-वश शरीरमें **सोडियम फॉस्फेट (नेटरम फॉस)** की कमी पड जाती है, तो पानीका सन्तुलन बिगड जाता है, और लैक्टिक ऐसिडका परिमाण बढ़ जाता है। प्रकृति अपनी तौर जब उस पानीको बाहर निकालनेका प्रयत्न करती है तो, वह मधुमेह कहलाती है।

चूँकि मधुमेह बननेका मुख्य कारण यह है कि शरीरमें **सोडियम फॉस्फेट** कम हो जाता है, अतएव इस रोगकी मुख्य औषध भी **सोडियम फॉस्फेट** है। कारण यह है कि यह दवा रक्तमें पानीके अनुपातके सन्तुलनकी रक्षा करती है। **सोडियम फास्फेट** प्राणवायु छोडता है। और यह चीनीका समीकरण करनेके लिए नितात आवश्यक है। तब यह चीनी अपने उसी रूपमें गुर्दो तक नहीं पहुँचने पाती। यह इस पित्तका स्वाभाविक घनत्व भी पतला बना देती है, जो इसके अभावमें गाढी हो जाती है।

यदि मधुमेहकी शिकायत काफी बढ गयी हो, तो फिर लैक्टिक ऐसिड और चीनीके कारण जो गुर्दोसे गुजरती है, उनपर प्रदाह आ जाता है। गुर्दोंके इस घावको भरनेके लिए, गुर्दे रक्तके लाल कणोंसे फराद करते हैं, और इस हालतमें उस निर्जीव लवण **आयरन फास्फेट**की भी कमी पड जाती है। तब प्रकृति इस कमीको पूरा करनेके लिए वातनाड़ियोंके तरलपर दबाब डालती है। ऐसी स्थितिमें पोटाशियम फॉस्फेटका व्यय अधिक तेजीसे होता है, और इस तरह रोगीके स्नायुजालमें भारी थकान आता है।

ऐसी हालतमें बहुमूत्रकी चिकित्सा निम्नलिखित होनी चाहिए : **फॉस्फेट ऑफ सोडियम , फास्फेट आफ आयरन, फास्फेट आफ पोटासियम तथा सल्फेट आफ सोडियम।**

जब **फास्फेट आफ पोटासियम**की अधिक पूर्ति करनेके लिए रक्तपर बोझ पड़ता है, तो वातनाडियोंकी स्वाभाविक क्रियामें भारी विघ्न उपस्थित होता है। इसके परिणामस्वरूप अनिद्रा आती है और रोगी मरभुखे की तरह बहुत अधीर होकर खाता है। ऐसी हालतमें **पोटासियम फास्फेट** अमोघ औषध है। यह लवण पश्चात् मस्तिष्क और फेफड़ो तथा आमाशय को पोषण तथा नियन्त्रण करनेवाले स्नायुगुच्छकी स्वाभाविक क्रिया बहालकर देता है।

प्यासकी अधिकता, अनिद्रा, शोष और निराशा आदिके लिए **सोडियम क्लोराईड** दें। यह शरीरमें जलके समान वितरणका नियन्त्रण करता है, और शीघ्र ही स्वाभाविक स्थिति बहाल हो जाती है।

जहाँ लक्षण हों, वहाँ एकसे अधिक फॉस्फेट मिलाकर दिए जा सकते हैं, परन्तु **सोडियम सल्फेट** और **सोडियम क्लोराईड** अलग-अलग ही देने चाहिए। जहाँ शोष अधिक हो और भूखकी कमी हो, तो फिर, **कैल्सियम फास्फेट**की अल्पमात्रा, भोजनके बाद, देना चाहिए।

मेरी रायमें मधुमेहकी चिकित्साके समय पथ्य और खाद्यका कोई महत्त्व नहीं है। हाँ, भोजनकी मात्रा घटा देनी चाहिए। मुख्य बात यह है हज्म अधिक होना चाहिए, अतएव पाचन क्रियाकी रक्षा करना चाहिए मधुमेहके रोगियोंको अपनी भूखसे अधिक कदापि नहीं खाना चाहिए।

एक बात और भी , अधिक दूध और पकवान भी लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकते। इसका स्पष्ट कारण यह है कि पकवानको हज्म करनेके लिए जिगर को अधिक काम करना पड़ता है। इस अधिक परिश्रमके परिणामस्वरूप पित्त और कफ अधिक गाढ़ी हो जाती हैं। कभी-कभी तो पित्ताशयमें पित्तके कण जम जाते हैं। इससे जिगरमें दर्द आ जाता है, पीलिया हो जाता है, या पित्तज सर दर्द आता है।

२ लास एजल्सके डा डब्ल्यू. जे हाकसनने **'पेसेफिक कोस्ट जर्नल ऑफ होमियोपेथी'**, (अक्टूबर १६१२) में निम्नलिखित मनोरंजक विवरण दिया था .

कुमारी बार, सगीत अध्यापिका, डा० जेम्स बार, १४०० वेस्ट, ३६ वी गली ( मैं उनका नाम-धाम उनकी अनुमतिसे दे रहा हूँ ) की बेटी थी , वह २२-७-१६११ को मेरे पास आयी। उसका मधुमेह बहुत बढ़ गया था।

वह सूख गयी थी, यहाँ तक कि उसका भार कुल ८० पौण्ड रह गया। वह थोडी दूर भी आरामके साथ नहीं चल सकती थी। गर्दनका सूख जाना विशेष रूपसे वर्णनीय था। उसकी भूख वहुत वढी हुई थी। वह हर समय भूख ही भूख चिल्लाती थी। भूखकी तरह प्यास भी वहुत वढी हुयी थी। वह कई-कई गैलन पानी पी जाती थी, और फिर भी प्यासी रहती थी। मुँह और होंठ खुश्क थे। पेशावमें चीनीकी मात्रा अधिक थी।

इतना खाते-पीते रहनेपर भी सूखते चले जानेके आधारपर सवसे पहले, **नेटरम म्योर**पर ध्यान गया। अधिक पूछ-ताछपर इस औषधके अन्य विशिष्ट लक्षण भी सामने आ गए, जैसे दोपहरसे पहले हर तीसरे दिन कष्टका वढ़ जाना, विशेप प्रकारका सर दर्द, और नमक अधिक खानेकी इच्छा आदि। मैंने उसे ३० शक्तिकी कुछ पुडिया दीं, और एक सप्ताह वाद हाल वतानेके लिए कहा। मैंने उसे यह भी हिदायतकी कि वह वीच-वीचमें पेशाव नापती रहे कि २४ घण्टेमें कितना हुआ है।

एक सप्ताह वाद, २७ जुलाईको, उसने रिपोर्ट दी कि लक्षणोंमें कोई वेहतरी नही आयी। **उसने वताया कि उसे २४ घण्टेमे लगभग २२ पाव पेशाव आता है।** मुझे इसपर संदेह हुआ और उसके पितासे कहाकि वह स्वय माप करें। उन्होंने पहली रिपोर्ट का समर्थन किया। जुलाई, अगस्त और सितम्वरमें वह इसी प्रकार रिपोर्ट देती रही हर सप्ताह सुधार होता चला गया। अक्तूवरमें उसने कोई रिपोर्ट न दी। दिसम्वर, जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रिल, जून और सितम्वर १८१२ में उसने एक-एक वार रिपोर्ट दी।

पिछले ६ मासमें उसके चेहरेकी रंगत निखर गयी। उसने स्वीकार किया कि अव उसकी हालत वेहतर है। अव उसे २४ घण्टेमें लगभग ६० औंस पेशाव आता है। अव रोगका केवल एक ही लक्षण शेष है, अर्थात १ औंस पेशावमें १ या १॥ ग्रेन शूगर आती है। उसका वजन भी अभी नार्मल नहीं हुआ। उसका वजन इस दौरानमें १० पौण्ड वढ़ा।

मैंने जव पहली वार यह दवा इस रोगिणीके लिए तजवीजकी तवतक मैंने यह नहीं सुना था कि यह मधुमेहमें भी हितकर है।

२ डा ई. वी रेन्किनने मधुमेहके एक केसकी रिपोर्ट दी है, जो **नेटरम फॉस :** ६x से ठीक हुआ। इससे उसकी प्यास, भूख और शारीरिक वलमें सुधार आया। पेशावकी मात्रामें भी कमी आयी। हाँ, इतना जरूर है कि कोई स्थायी लाभ न हुआ।

—सदर्नजर्नल ऑफ होमियोपैथी, अप्रैल १८८६

४. शुसलरका स्काटलेण्डसे दो रोगियोंका विवरण मिला था उनमेंसे एक रोगीको एक इटालियन चिकित्सकने **नेटरम सल्फ** दिया था उनमें सफलता मिली थी। दोनोंका विवरण अप्राप्य है।

५. मुझे मधुमेहके अनेक रोगियोंकी चिकित्सा करनेका अवसर मिला है। मेरे ख्यालमें वे सब स्नायविक ढंगके थे। मुझे आमतौर पर **नेटरम सल्फ** और **मैग्नेशिया फॉस** ६x का व्यवहार करनेसे सफलता मिली। चिकित्सा काल ४८ घण्टेसे लेकर एक सप्ताह तक रहा। मैं ये दोनों लवण घण्टे-घण्टे बाद अदल-बदल कर दिया करता हूँ—ई ए. डीकैलहम एम. डी।

६. श्रीमती क्ष—आयु ४२ वर्षने बतायाकि उसे २४ घण्टेमें प्रायः ४ गैलन पेशाब हो जाता है। गुरुत्व भार १०४० था। पूछने पर मुझे मालूम हुआ कि रोगका मूल कारण स्नायविक ( हस्त-मैथुन ) था। **नेटरम सल्फ, नेटरम फॉस, काली फॉस और मैग्नेशिया फॉस**का लक्षणोंके अनुसार व्यवहार कराया गया, और चिकित्सा ३ मास तक जारी रही। वह तीन वर्ष बाद मुझे फिर मिली और पूछनेपर उसने बताया कि अब वह बिलकुल ठीक-ठाक है और रोगका कोई लक्षण बादमें लौटकर न आया।

—ई० ए० डीकैलहल, एम० डी०

## अतिसार ( Diarrhola )

**फेरम फॉस :** जब अतिसार आँतोंकी दुर्बलताके परिणामस्वरूप आया हो या जब अँतरियाँ नमीका स्वभाविक रूपसे शोषण करती हों। अनपचके पाखाने हों और जब यह विकार सर्दी लगकर बुखार आनेसे हुआ हो। मलान्त्रका भ्रंश। निरन्तर वेदना। मल मात्रामें अधिक आए, पानी जैसा पतला, सहसा, दर्दके साथ और प्रायः कै के साथ आए—गिलबर्ट।

बच्चोंका अतिसार ; पाखाना पानी जैसा पतला, रंगत हरी और बार-बार हो , बच्चा सरको इधर-उधर पटके और आहें भरे। चेहरा मुरझाया हुआ, आँखें अधखुली , पेशाब कम आए, नाडी और साँसकी चाल तेज हो जाती है, सोते-सोते चौंक उठे, अनपच खाद्यका पाखाना। त्वचा गर्म और खुश्क ; प्यास। दाँत निकलनेके दिनोंका अतिसार। जरा-सा परिश्रम करते ही बच्चे का चेहरा तमतमा जाता है।

**काली म्योर :** पकवान खानेके बाद अतिसार आए। पाखानोंकी रंगत हल्की पीली, मटयाली। टायफायड ज्वरका अतिसार , सफेद या चिकना पाखाना, विशेषतः जबकि ज़बानपर सफेद मैलकी तरह भी हो। **पाखाना खून मिला** या लसदार, चिकना।

**काली फॉस :** दुर्गन्धित पाखाना आए , प्राय. ऐसे अतिसारमें हितकर है जो किसी और रोगके साथ, उपद्रवरूपमें आया हो। उन कारणों या हालतोंको दूर करता है जिनसे पाखाना दुर्गन्धित आता है। तेज गन्धवाला पाखाना, जब इसके साथ भय जैसा कोई और कारण भी हो। ऐसा अतिसार जिसमें स्नायविक दुर्बलता प्रधान रूपसे हो ; दर्द हो या न हो। भाण्ड जैसा पाखाना। मलान्त्र बाहर निकल आए। पेटमें अफारा। पाखाना सडा हुआ, चावलोंके मांड जैसा, खून मिला, मुर्दार जैसी गन्धवाला। बडी ऊँची आवाजके साथ हवा निकले। खाते समय पाखानेका तात्कालिक वेग और मल मात्रामें अधिक आए, तथा वेदनाहीनता। इसके बाद भी मलत्यागका वेग पडे, परन्तु आए कुछ न। मलान्त्रमें जलन और सन्तापपूर्ण कष्ट। काच निकले।

**नेटरम म्योर :** अतिसार , पाखाना पानी जैसा पतला, लसदार और झागदार, पारदर्शी मल, रेशेदार, जब नमक अधिक खाया जाता हो। यह औषधि बच्चोंके पुराने अतिसारमें विशेषतः लाभदायक है। गर्दनका सूखना, चिकना, चमकदार चेहरा, विशिष्ट इच्छाएँ और अरुचियाँ इस औषधके व्यवहारका निश्चित संकेत हैं। ( बैल एण्ड लेपर्ड )। जीभपर चिकनी मैल आती है और नोकपर लारके छोटे-छोटे बुलबुले आते हैं।

**नेटरम फॉस :** मलद्वारमें खुजली, सन्ताप और कच्चेपनकी अनुभूति। दूषित पित्तके कारण पाखानेकी रंगत सफेद या हरी हो। **अम्लताके कारण अतिसार**। पाखानोसे खट्टी गन्ध आए, रंगत हरी और जीभपर पीली, क्रीम जैसी सफेद मैल आए। कै जिसमें खट्टा पानी, दही जैसा फटा मवाद आए। गर्मीके मौसमका अतिसार जो मन्दाग्निका परिणाम हो। उसमें पाखाना या तो मटियाला हो या हरा। आमतौरपर पेट दर्द भी आता है। इसके साथ पुराना कब्ज जिसमें कभी-कभी अतिसार आता हो। ऐसा अतिसार प्रायः छोटे बच्चोंमें पाया जाता है। जैली-जैसी आँव जो दर्दके साथ आए और उसे निकालनेके लिए जोर लगाना ( किनछना ) पडे , जमी हुई केसीन, मल कम और बार-बार आए ( गिलबर्ट )। दूध देनेकी गन्दी आदतोंके कारण आया अतिसार।

**नेटरम सल्फ :** अतिसार , पानी जैसे पतले, गहरे रंगके, पीले या हरे पाखाने आएँ। मलत्यागसे पहले पेटमें दर्द और गडगडाहट होनेके सिवा आमतौरपर वेदना नहीं होती। खाना खानेसे कष्ट बढे।

डा० बैल और डा० लेपर्ड ने लिखा है , "पुराने अतिसारमें यह सर्वाधिक उपयोगी औषध है, और प्रायः अधिकाश बार इसीके लक्षण आते हैं। विशेषतः जबकि पाखाना पतला हो। सुबहके समय मल बडे वेगसे निकले , यह इस

औषधका विशिष्ट लक्षण है। अफारा आना भी विशिष्ट लक्षण है। परन्तु इसका आना नितांत आवश्यक नहीं है। तर मौसममें कष्ट बढ़ता है। आरक्त-ज्वरका हरा अतिसार। बाजुओंपर और जंघाओंके मध्यमें मस्से जैसे दाने निकलें।

**पुराना अतिसार सुबह-सवेरे बिस्तर छोड़नेके बाद इधर-उधर टहलनेसे बढ़े।**

**काली सल्फ :** अतिसार, मल गहरे-पीले रंगका, लसदार, पानी-जैसा पतला, पीव जैसा। जीभपर गहरे रंगकी मैल आए, विशेषतः जड़वाले भागपर। हैजे जैसे लक्षण, कमेडा आए, ऐंठन हो। पाखाना काला, पतला और बदबूदार।

**कल्केरिया सल्फ :** पीव जैसा, खून मिला पाखाना आए और जीभपर मटियाले रंगकी मैल आए। टायफसका अतिसार। 'मेपल' नामी चीनी खानेसे और मौसम बदलनेसे कष्ट बढ़े।

**कल्केरिया फॉस :** दाँत निकलनेके दिनों बच्चोंका अतिसार, अन्तर-कालीन या अदल-बदलकर दी जाने वाली औषध है। ऑतड़ियोंकी टी० बी० में अन्तरकालीन औषधिके रूपमें दी जाती है। कठमाला और शेष (मसान) के रोगी बालकोंके अतिसारके लिए हमारी सर्वाधिक उपयोगी औषधोंमेंसे एक है। पाखानेकी रंगत हरी, लसदार, अनपच। पाखाना गर्म, पानी जैसा, मात्रामें अधिक, बदबूदार, आवाजके साथ और फड़फड़ाहटके साथ हो।

**मैग्नेशिया फॉस :** पाखाना पानी जैसा, बड़े जोरसे निकले और ऑतड़ियों में दर्द होकर आए, अफारा और शूल, दोहरा हो जानेसे आराम मिले; या गर्म सेंक देनेसे राहत आए। पिण्डलियों में ऐंठन हो और कै आए। रुक-रुककर दर्द आए।

**साईलीसिया :** बच्चोंका अतिसार, जिसमें पखानोंसे मुर्दार जैसी गन्ध आए, चेचकका टीका लगानेके बाद आया अतिसार, जिसमें सरपर खट्टी गंधवाला पसीना आए; पेट गर्म और अफरा हुआ सख्त।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. एक ७५ वर्षीया वृद्धाका पुराना अतिसार **फैरम फॉससे** ठीक हुआ।

—( डब्ल्यू० पी० डब्ल्यू )

२. सुबह-सवेरे सोकर उठते ही पतला पाखाना आए, तात्कालिक वेग, मल बड़े जोरसे निकले, उसके साथ हवा भी आए। पाखाना फड़फड़ाकर निकले और इधर-उधर फैल जाय।

**नेटरम म्योर** १० लाख देनेसे लाभ हुआ। —सी० लिप्पे।

३ एक वृद्धको कै और दस्तोंका सख्त दौरा पडा। इसके साथ पिण्डलियोंमें अत्यधिक वेदनापूर्ण ऐंठन भी आयी। पाखाने चावलकी माँड जैसे थे। दौरा पडनेके ६ घण्टे वाद मैंने चिकित्सा आरम्भ की। **काली फॉस** की एक ही मात्राने आराम कर दिया। इस औषधने जिस तत्परतासे हैजे जैसे इस अतिसारमें लाभ किया उससे इस विश्वासको वल मिला कि **काली फॉस** हैजेके लिए सिद्ध औषध है। —शुमलर

४. डा० गॉलनने दो साल पुराने अतिसारके एक रोगीका हाल लिखा है। पाखाना माँड जैसा था, जीभ भी गदी थी। उसे **कल्केरिया सल्फ**से लाभ हुआ।

५ इस औषधोंका व्यवहार पहले-पहल मैंने एक नीग्रो वालकपर किया। वह २ मासका था। निम्न लक्षण उपस्थित थे :

वेदनापूर्ण अतिसार, सरको निरन्तर इधर-उधर पटकता था, आँखें ऊपर चढ गयी थी, जीभपर भूरी पीली मैल थी, कुछ समयसे स्तनपान करनेकी इच्छा नही थी। माँने वताया कि वह एक सप्ताहसे वीमार है। मैं इसे विविध चीजें देती रही परन्तु हालत विगडती गयी। मैंने देखभाल कर उसे वताया कि इसके वचनेकी आशा कम है। तो भी मै भरसक प्रयत्न करूँगा।

मैंने उसे १५-१५ मिनट वाद **मैग्नेशिया फॉस** और **कल्केरिया फॉस** अदल-वदल कर दिया। दवा सुवह ८-१० वजे दी गयी। मैं दोपहर वाद ३ वजे फिर गया कि यह देखूँ कि रोगी जीता है या नहीं। जव मैंने उसे वेहतर पाया तो मेरे हैरानीकी हद न रही। सर पटकना वन्द हो चुका था, आँखें स्वाभाविक दशामें आ गयी थीं, उसने एक या दो वार स्तनपान किया और अव सो रहा था। मैंने दवा देनेका अन्तर वढानेका आदेश दिया। अगली सुवह तक वह काफी वेहतर था।

इस वार मैंने जीभ पर **सफेद** रंगकी मैलकी मोटी तह देखी। अव **कल्केरिया फॉस**की जगह **काली म्योर** दिया। यह **मैग्नेशिया फॉस**के साथ १-१ घण्टे वाद, अदल-वदल कर दी गयी।

अगले दिन जीभ साफ हो गयी। कुछ और दवा देकर उसे छुट्टी दे दी गयी। —ई० एच० एच०

६ डा० टी० एफ० ऐलनने एक वुढियाका पुराना अतिसार **नेटरम सल्फ** ७x देकर ठीक किया था। उसका कष्ट सवेरे वढता था जवकि वह विस्तर छोडकर इधर-उधर घूमती।

—नार्थ अमेरिकन जर्नल ऑफ होमियोपैथी।

# डिफ्थेरिया ( Diphtheria )

**फेरम फॉस :** आरम्भमें ही दी जाती है जबकि ज्वर भी हो ।

**काली म्योर :** अधिकाश हालतोंमें यही एक मात्रा और मुख्य औषध है, और **फेरम फॉस**के साथ अदल-वदल दी जाती है। पिछली दवा ज्वरको कम करती है और आमतौरपर रोगके आरम्भमें ही काम आती है। जीव शास्त्रकी दृष्टिसे अलव्यूमन जैसी चीजोंसे **काली म्योर**का वही सम्वन्ध है जो फॉसफेट ऑफ लाईमका अलव्यूमनसे है। जब उन कोषोंपर जहाँ डिफ्थेरियाका केन्द्र वनता है, या जहाँ **काली म्योर**के परमाणु रहते हैं अत्यधिक क्षोभका उग्र आक्रमण हो जाता है, तो वहाँ **काली म्योर**के कणों का अभाव हो जाता है, और परिणामस्वरूप कुछ कणोपर परमाणुओंकी हानि भी हो जाती है। इसके साथ ही अलव्यूमन जैसे पदार्थका (जो इन कोषों का मूल आधार है) कुछ अश मुक्त हो जाता है और यह मुक्त भाग आक्रान्त श्लैष्मिक झिल्लियोंपर आकर सञ्चित हो जाता है। हम इस सञ्चय को डिफ्थेरिया कहते हैं।

जवतक आक्रान्त स्थानमें **काली म्योर**के कणोकी गतिविधि दूषित रहेगी, तवतक निस्सरण या सञ्चय जारी रहेगा। वायोकेमिक पद्धतिसे, डिफ्थेरियाकी चिकित्सा करनेके लिए यह अनिवार्य है कि इस लवणके नए परमाणु उन आक्रान्त तन्तुओं तक पहुँचाए जाएँ, और यही कारण है कि यह दवा सूक्ष्म रूपमें दी जाती है। ३ या ६ शक्तिके विचूर्णकी १०-१५ ग्रेन एक ग्लास जलमें घोल दे और २-२ घण्टे वाद, एक-एक चम्मच पिलाते रहें, या मटर जितना चूर्ण जीभपर डाल दें।

**काली म्योर** · जव गलत इलाज होनेके कारण हवाकी वडी नाली आक्रान्त हो गयी हो, तो यह दवा दें और इसके साथ **कल्केरिया फॉस** अदल-वदल कर दें।

**कल्केरिया फॉस :** जव डिफ्थेरियाकी झिल्लियाँ हवाकी नालीकी ओर फैलती जा रही हों, जव केवल टिशु रेमिडीज़का व्यवहार हो रहा हो, तो इस प्रकारकी उलझन प्रायः कभी नही आती। जव वडी झिल्ली उतर जाती है तो वहाँ सफेद-सा दाग़ रह जाता है।

**काली फॉस :** जव रोगने घातक रूप धारण कर लिया हो, सडाव आ चला हो, रोगी निढाल हो गया हो। डिफ्थेरियाके वादके दुष्परिणाम, जैसे निगाहका कमजोर पड जाना, नाकमें वोलना या शरीरके किसी अगका पक्षाघात आदि

और भैंगापन इस औषधके व्यवहारसे मिट जाते हैं। सडाववाला लक्षण भी विशिष्ट है। जैसे मुँहसे सडा गन्ध आती है।

**नेटरम म्योर :** डिफ्थेरिया ; जवकि रोगीका चेहरा **फूला हुआ और पीला हो और भारी तन्द्रा भी हो** पानी जैसे पतले दस्त, मुँहसे लार गिरे या पानी जैसी कै। **जीभ सूखी,** खर्राटेसे साँस ले। जैसे ही ये लक्षण मिट जाएँ, इस दवाका व्यवहार भी तत्काल वन्द कर देना चाहिए।

**नेटरम फॉस :** डिफ्थेरिया ; नकली, विशेषकर उस दशामें हितकर है जव कि टासिलोंपर पीली, क्रीम-जैसी मैल आयी हो, और मुँहका पिछला भाग भी क्रीम जैसा पीला नजर आए। जीभकी मैल तर हो, उसकी रंगत क्रीम जैसी या सोने जैसा पीली हो।

**नेटरम सलफ :** जव डिफ्थेरियामें हरे रंगकी या पानी जैसी कै होती हो, यह दवा अन्तरकालीन औषधके रूपमें व्यवहारकी जाती है। अमाशयसे गलेमें वार-वार या निरन्तर कफ या लार आ कर अटकती है।

**नोट** · इन दवाओंके साथ चूनेका पानी, कार्वोलिक एसिड या वर्फका पानी आदि का इस्तेमाल कदापि नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह सम्भव है कि ये चीजें इन लवणोंके कार्यमें वाधा डालें। —( शुसलर )

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ डिफ्थेरिया पूरी तरह उन्नत हो चुका था, ग्रन्थियाँ फूल चुकी थी, टासिलों, कौवे और सारे नर्म तालुपर मोटी झिल्ली आ चुकी थी। निगलनेसे भारी कष्ट होता था, उसके लिए भारी प्रयत्न करना पडता था। थकान भी वहुत ज्यादा थी।

दो-दो घण्टे वाद **काली म्योर** ६ दिया गया। अगले दिन वर्णनीय परिवर्त्तन नजर आया। अगले चार दिनमें गला विलकुल साफ हो गया और वालक **कल्केरिया फॉस**की सहायतासे विलकुल ठीक हो गया।

—डब्ल्यू० एच० प्रैट एम० डी०, **नार्थ अमेरिकन जर्नल ऑफ होमियोपैथी ;** मई १८८३।

२ गत गर्मीमें २१ जुलाईको मैंने डिफ्थेरियाके एक रोगीकी जाँच की। घाववाला साधारण गलक्षत नजर आता था। मैंने उसे **कल्केरिया सल्फ** दिया और वालककी माँसे कह दिया कि यदि वह शाम तक सुधार न देखे तो वह मुझे सूचना दे। शामको वह फिर आयी। रोगीको ज्वर था और वह नाकसे वोलता था। मैंने उसका गला ध्यानसे देखा। टॉसिलपर भूरे से रंगके दाग स्पष्ट दिखायी दिये। अव मैंने **फेरम फॉस** और **काली म्योर**

अदल-वदल कर दिया। रातके ८ वजे मैंने उसे फिर जाकर देखा। वच्चे की हालतमें कोई परिवर्त्तन नहीं था। वच्चेने वताया कि कुछ चीज वार-वार गलेमें आ रही है। मैंने समझा शायद लार आती होगी। मैंने **नेटरम फॉस** दिया। परन्तु इस वार भी कोई परिवर्त्तन न आया। रात भर पहली दवा दी गई, और सुवह हालत देखी, तो और भी खराव थी; झिल्ली काफी फैल गई थी और टासिल काफी वढ गये थे। गलेमें कफ आना निरन्तर वढता गया। रविवारको भी मैं उसे तीन वार देखने गया। उसे निम्न शक्तियाँ दी। रात भर ३x दिया। सोमवारको उसकी माँ आयी और उसने रोते-रोते कहा कि यदि आपसे कुछ नहीं वनता तो, किसी और वेहतर चिकित्सकको दिखाओ। तव मुझे सहसा ध्यान आया कि गलेमें वा-वार या निरन्तर कफ आते रहना **नेटरम सलफ**का लक्षण है। मैंने उसे २०० शक्ति (वी० टी०) की एक मात्रा दी। कुछ ही घण्टोंमें वेहतरी आ गयी। कुछ दिनमें वच्चा ठीक हो गया। (ई० एच० एच०)

२ मैंने डिफ्थेरियाके १४ रोगियोकी चिकित्सा वायोकेमिक पद्धतिसे की और परिणाम पूर्णतः सन्तोषजनक रहा **काली म्योर** वडी तेजीसे सुधार लाता है, सफेद भी भूरी झिल्ली मिट जाती है। **काली म्योर**के ग़रारे कराने और कुल्ले करानेसे गलेके सारे उपद्रव मिट जाते हैं। कभी-कभी **फेरम फॉस** भी देना पडता है। इलाजका यह तरीका वहुत शानदार सिद्ध हुआ। तीन रोगियोंको आरम्भसे ही भारी थकान आती थी, तव **काली फॉस** अन्तर-कालमें दिया गया। दो रोगियोको मुख्य औषध **काली म्योर**के साथ **नेटरम म्योर** भी वदलकर दिया गया क्योंकि मुँहसे लार काफी चलती थी, पाखाना भी पानी जैसा पतला और तन्द्रा अधिक थी।

लक़वा निगाहकी खरावी, स्नायविक शूल आदि कोई उपद्रव न आया, जैसा कि आम इलाजमें आता है। (एम० डी० डब्ल्यू)

४ यह शुसलरका केस था, ओल्डनवर्गसे कुछ मील दूर, एक गाँवमें एक वच्चेको डिफ्थेरिया हुआ। आरम्भमें ही कठनाली आक्रान्त हो गयी। आम इलाज हुआ और वच्चा मर गया।

कुछ दिन वाद उसी गाँवमें दूसरे परिवारके एक वच्चेको वैसे ही लक्षणोंके साथ डिफ्थेरिया हुआ। रोगी वच्चेका पिता मेरे पास अया। मैंने उसे मूल रोगके लिए **काली म्योर** दिया और कंठनालीकी पडाके लिए **कल्केरिया फॉस** दिया। दोनों दवायें अदल-वदल कर, वारी-वारी दी गई। दो दिनके वाद वालकके पिताका पत्र आया कि रोगी विलकुल ठीक है।

डिफ्थेरिया (घातक) में जब सभी दवाइयाँ विफल सिद्ध हुई हो, तो **काली फॉस** और **काली म्योर** खिलानेसे घातक लक्षण मिट जाते हैं और रोगी स्वस्थ हो जाता है। कभी-कभी इसके साथ **नेटरम म्योर** भी देना पडता है।
(डा० एफ० शुसलरसे उद्धृत)

५ निम्नलिखित दो केस भी बहुत दिलचस्प हैं। ये **फेरम फॉससे** ठीक हुये थे।

(क) एक नवयुवतीको गलनक्ष आया, टॉन्सिलोंपर हल्की सूजन थी, उनकी रंगत गहरी लाल थी और ज्वर था। १॥ दिन तक ३-३ घण्टे बाद **फेरम फॉस** ३ देकर बन्द किया गया। हालत सभलकर फिर बिगड गयी। डिफ्थेरियाकी झिल्लीने दाएँ टॉन्सिल को ढँक लिया था। पहलेकी तरह **फेरम फॉस** ३० फिर दिया गया। अगले दिन झिल्ली लगभग गायब हो गयी, सूजन और लाली भी घट गयी थी। चार-चार घण्टे बाद दवा दी जाती रही। अगले दिन और बेहतरी आयी। दवाका अन्तर बढा दिया गया, और अगले दिन रोगी बिलकुल ठीक हो गया।

(ख) रोगीकी आयु ५ वर्ष थी, ज्वर था, आँखें चमकदार थीं, गालें लाल थीं, टॉसिल भी लाल थे और फूले हुये थे, विशेषत. दायाँ। उसके मध्य भागपर कलगीकी तरह झिल्ली आयी हुई थी। उसका व्यास १-४ इंचके लगभग था और वह लटक रही थी। ऊपरी भाग काला-सा नजर आता था। साँस बदबूदार था।

**फेरम फॉस** ३० दिया गया। अगले दिन टॉसिल साफ था। परन्तु इसी तरहकी झिल्ली गलेके पिछले भागमें दिखाई दी। यही दवा ४-४ घण्टे बाद जारी रही। रोगी अगले दिन बिलकुल ठीक हो गया।
—जे० सी० मार्गन एम० डी० 'हैनिमैनियन मन्थली' भाग ७

## सर चकराना जिसमें गिरनेका भय हो। (Dizziness)

डा० सी० आर० फ्लूरीका मत है; जब रोगी वात प्रकृतिवाला हो मन्दाग्निका कोई लक्षण न हो, और खुराकका पोषक तत्व शरीरका अग न बनता हो, तो खाना खानेके बाद **कल्केरिया फॉस** १x देना चाहिए।

## शोथ (Dropsical Affection)

**काली म्योर :** जब शोथ हृदय, जिगर या गुर्दोंकी खराबीके कारण आया हो, और जब इस औषधके विशिष्ट लक्षण भी मौजूद हों। पित्तनाडी

में रुकावट पड जाने और जिगर बढ़ जानेसे आया शोथ। आमतौरपर जीभ पर सफेद मैल आती है। हृदयकी कमजोरीसे आया शोथ ( **काली फॉसके** साथ अदल-बदल कर दें )। शोथ और उसके साथ धडकन। ऐसा शोथ जिसमें तरल सफेद सा हो या पेशाबमें कफ तलछटमें जमता हो। जीभपर निरन्तर सफेद मैल आए। हाइडरोशील।

**नेटरम सल्फ :** साधारण शोथ जबकि शरीरके गोल तन्तु आक्रान्त हुये हों। अण्डकोष या लिंगमुण्डका शोथ भीतरी और बाहरी अंगोंका शोथ।

**नेटरम म्योर :** शरीरके किसी भी भागके चक्करदार तन्तुओंका शोथ या शोथवत सूजन। लिंगमुण्ड या अण्डकोषका शोथ।

**फैरम फॉस :** रक्त निकल जानेके बाद आया शोथ। **कल्केरिया फॉसके** साथ अदल-बदल कर दें।

**कल्केरिया फॉस :** जब खाया-पीया ठीक तरहसे अंग न लगता हो। खूनकी कमी या वीर्यादि रसोंके अधिक क्षयसे आया शोथ।

**कल्केरिया फ्लोर :** ऐसा शोथ जो हृदयरोगसे आया हो, या गत्तोंके फूल जानेसे आया हो। पुराना हाईड्रोसील।

**काली सल्फ :** आरक्त ज्वरके बाद आया शोथ।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ एक चार वर्षके बालकको आरक्त ज्वर आनेके बाद शोथ आया। **डिलिटे, आर्स, एपोसाईनम** आदि कोई लाभ न कर पाए। २४ घण्टेमें जो पेशाब होता था, वह बहुत कम था। और ४८ घण्टेमे पेशाब आता ही नहीं था। उसे भयानक सर्वाङ्गशोथ था। लेट सकना उसके लिये असम्भव था। उसे हर २-२ घण्टे बाद **नेटरम म्योर** ६ दिया गया। २४ घण्टेमें बालकने ६ पाव पेशाब किया और उसके बाद वह शीघ्र ठीक हो गया।

—डब्ल्यू० एम० प्रैट एम० डी०

२ डा० गॉलन जूनियरने हाथ-पाँवके शोथमें **काली म्योरका** व्यवहार कराकर शानदार सफलता प्राप्त की। उन्होंने इस दवाके व्यवहारके लिये अतिरिक्त लक्षण बताये हैं, यह औषध आमतौरपर हाथ-पाँवके शोथमें काम आती है, विशेषकर जबकि आरम्भमें सूजन नर्म हो और बादमें कडी हो जाए। दर्द और लालीका अभाव हो। हाँ, उसमें खुजली होती है। सूजन सुबहको घट जाती है और शामको बढ जाती है। परन्तु उसमें तनाव आता है और ऐसा जान पडता है जैसे वह फट पडेगी।

३. ६ सालकी लडकी डिफ्थेरिया और लाल बुखारसे वच गयी और अव स्वस्थ हो रही थी। सहसा उसे सूजन आ गयी, चेहरा फूल गया और टखनों तक पाँव भी फूल गए, पेशाव न घटा, उसमें अलव्यूमन भी नहीं था। दवानेसे गुर्दोंमें दर्द नहीं होता था। ज्वर था। भूख, नीद और पाखाना नार्मल था।

मैंने उसे ३ दवाइयाँ दी ; जिसमें **एकोनाइट** भी था ; उनसे कोई लाभ न हुआ सर्वाङ्ग शोथ वडी तेजीसे वढ रहा था। पेशाव घट गया था। कभी-कभी थोडा-सा पेशाव होता था। पेशाव कुछ गन्दला था और उसमें अलव्यूमन था। अव दवानेसे गुर्देमें दर्द होता था। अव प्रलाप भी आ गया।

अकेले **नेटरम म्योर**ने २ सप्ताहमें सव ठीक कर दिया।

—डा० काहन ; शुसलरसे उद्धृत।

## पेचिश (Dysentery)

**काली म्योर :** पेटमें सख्त मरोड, कटन जैसे छुरियाँ चल रही हों, हर चन्द मिनटके वाद पाखानेकी हाजत होती है, उसके साथ मरोड भी आता है जिससे चीख निकल जाती है। मल चिकना और पतला होता है। अधिकाश हालतोंमें यह दवा रोगको दूरकर देती है जवकि **फैरम फॉस**के साथ अदल-वदल कर दी जाए।

**फैरम फॉस :** जव पेचिश सख्त बुखारके साथ आयी हो, तो यह सर्व प्रथम औषध है और रोगको कर देनेके लिए काफी है। दर्द किसी प्रदाहके कारण हो और निरन्तर होता रहे और दवावसे वढे। यदि मरोड हो तो यह दवा कोई लाभ नही करती।

**काली फॉस :** केवल उस हालतमें उपकार करती है जव पाखानेमें खून भी आता हो, रोगी प्रलाप करता हो, पेट फूला हुआ हो या जव पाखानेसे दुर्गन्ध आती हो। अत्यधिक दुर्गन्धित पाखाना आए, जीभ पर भारी खुश्की। कॉच निकले। मल त्यागके वाद मरोड उठे।

**मैग्नेशिया फॉस :** मरोड, दोहरा हो जानेसे, गर्मीसे, रगडनेसे या दवावसे घटे। मरोड और मलमूत्र त्यागका निरन्तर वेग। पाखाने, जानेके वाद वडी देर तक मलान्त्रमें दर्द होता रहता है। जैसे पेशियोंमें आक्षेप आया हो।

**कल्केरिया सल्फ :** पीव जैसा पाखाना जिसमें खून मिला हुआ हो, विशेषतः उस हालतमें हितकर है जव पहले **काली म्योर** दिया जा चुका हो और उससे लाभ न हुआ हो।

**नेटरम सल्फ :** जब पित्तके लक्षण हों ।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. डा० ई० एच० हालब्रूकने पेचिशके एक केसकी रिपोर्ट दी है जो **कल्केरिया सल्फ** १ लाख देनेसे ठीक हुआ । यह रोग पित्ततीसारके रूपमें परिणत हो गया और यह विकार **नेटरम सल्फ**के व्यवहारसे ठीक हो गया ।

२ एक महिलाको मरोडकी शिकायत हुई । उसे मल-मूत्र त्यागका वेग भी बार-बार पडता था । जब भी मरोड और आन्त्रशूल उठता था, उसे राहत पानेके लिए दोहरा हो जाना पडता था । उसे केवल गर्म पानीसे ही आराम मिलता था ।

**मैग्नेशिया फॉस** २०० पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद दिया गया तो तीसरी मात्रा देनेके बाद उसका कष्ट मिट गया । डा० रोड

३ पेचिशके रोगीकी चिकित्सा करते हुए, उसका मरोड रोकनेके लिए मेरी सूझ-बूझकी परीक्षा हो गयी । **मर्क कॉर** देनेसे रोगीको काफी लाभ हुआ और उसके पाखाने कम हो गये थे, परन्तु दर्द बढ़ता गया । यहाँ तक कि दर्दके कारण मूर्च्छा आने लगी । मलान्त्र और पेटमें दर्द अत्यधिक तेज़ था । उसमें भी मलान्त्रमें । मरोड ऐसे उठता था जैसे मलान्त्रकी पेशियोंमें ऐंठन आयी हो ।

मैंने उसे गर्म पानीमें **मैग्नेशिया फॉस** दिया । पहली ही मात्रा देनेसे दर्द बिलकुल चला गया । इतनी जल्दी तो इंजेक्शन भी असर न करता । मुझे सारी आयुमें ऐसा तात्कालिक और सुखद परिणाम नही मिला था ।

**मैग्नेशिया फॉस :** बहुत शानदार आक्षेपनाशक औषध है । यह हमारी अन्य आक्षेपनाशक औषधोंकी तरह विश्वस्त और सिद्ध फलदाता है । मुझे इस औषधका ज्ञान बिंघामटन, (न्यूयार्क) के डा० ई० ई० सिण्डरसे प्राप्त हुआ था । उन्होंने इसका व्यवहार मूत्राशय प्रदाहके एक रोगीके मरोडमें किया था । उसे यह कष्ट सुजाकके कारण आया था । —एच० के० लिओनार्ड एम० डी० ।

## कष्टरज, (Dysmenorrhœa)

( 'मासिक और स्त्री रोग' प्रकरण भी देखिए )

**कल्केरिया फॉस :** जब जवानी आने पर रोगिणी पूरी तरह सावधान रही हो, और उसके परिणामस्वरूप कष्टरज आया हो, स्त्रियोंका कामोन्माद । रज आनेसे पहले और दौरानमे प्रसव वेदना जैसा दर्द ; इसके

साथ सख्त कमर दर्द, चकराये, प्रबल कामवासना और तपकनके साथ सर दर्द।

**फेरम फॉस :** हर मासिकके दिनोंमें दर्द हो; इसके साथ चेहरेका तमतमा जाना; नाडीकी चालका बढ जाना, अनपच खायकी कै जिसका स्वाद अम्ल हो; यदि हर बार यही लक्षण आते हो, तो मासिक आनेसे पहले यह दवा देनी चाहिए। ऐसा करनेसे कोई कष्ट नही होता। मासिक धर्मके दिनों रक्तका अधिक संचित हो जाना, रक्तकी रंगत चमकदार लाल, योनि सूखी और कोमलग्राही।

**काली फॉस :** पीले चेहरे वाली, रोनी सूरत वाली, चिडचिडे स्वभाववाली और नाजुक तबीयत वाली स्त्रियोंके कष्टके लिये विशेषतः लाभदायक है।

**मैग्नेशिया फॉस :** कष्टरजके लिये प्रधान औषध है। वेदनापूर्ण मासिक या मासिक धर्म होनेसे पहले दर्द आए। गर्मीसे आराम मिले। ऐंठनके साथ दर्द जो हरकत करनेसे बढे। **झिल्लियों वाला कष्टरज।** यह औषध स्नायविक कष्टरजके लिये भी गुणकारी है।

**नेटरम म्योर :** मासिक मात्रामें कम आए; रक्तकी रंगत गहरी, मासिक होनेसे पहले पेशानीमें दर्द हो। प्रायः होठोंपर छाले पड जाते हैं; जैसे ज्वर जानेके बाद हुआ करता है। या गर्मीमें शीत-पित्तके दाने निकलते हैं। योनिमें सन्तापपूर्ण जलन और गर्भाशयमें कटन यथा जलनके साथ दर्द। भारी खिन्नता। मासिक समयसे बहुत पहले और मात्रामें अधिक आए; इसके साथ ऐसा सर दर्द हो जैसे सर फट जाएगा और बार-बार सर्दी लगे और कॉपे।

**नेटरम सल्फ :** मरोडके साथ मासिक आए। रक्त तीक्ष्ण। पेटमें चुटकी काटने जैसा दर्द हो जो सुबह सवेरे आए। जोरकी नकसीर आए। योनि प्रदाह। हाथ कॉपे झटके आऍ। पॉव शिथिल।

**साईलीसिया :** कष्ट-रज जिसमें सारा शरीर बहुत ठण्डा हो। मासिक आरम्भ होते ही सारा शरीर बर्फके समान ठण्डा पड जाता है। योनि कोमलग्राही।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ कुमरी-क-आयु १६ वर्ष, उसे मासिक होनेसे पहले ही, या पहले ही दिनसे दर्द शुरू हो जाता था। इस दर्दके कारण वह खटिया पकडने पर मजबूर हो जाती थी। उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट, सुडौल था और शरीरमें रक्त अधिक था।

उसे **फेरम फॉस**की १०-१० ग्रेनकी कुछ मात्राएँ, आध-आध घण्टेके अन्तरसे, गर्म पानीमें दी गई। तीसरी मात्रा देनेके वाद दर्द मिट गया। अव उसे यह आदेश दिया गया कि वह रातको सोते समय ही पानीके साथ खा ले। अन्तर कालमें, सप्ताहमें एक वार लवण मिले गर्म पानीमें कटिस्नान दिया गया।

अगली वार मासिक ठीक समयपर और विना कष्टके आया। वह तबसे विलकुल ठीक है। —एफ० डी० विहंगर एम० डी० डेटन, ओ।

२ जे टी कैण्टने कष्टरजके एक दो साल पुराने केसकी रिपोर्ट दी है जो दो मास तक **कल्केरिया फॉस** खानेसे ठीक हो गया था।

होमियोपैथ फिजीशियन, , १८८४।

३ डा० आर० डी० वेल्डिग (न्यूयार्क) ने कष्टरजका एक केस वताया है। रोगिणी वरसोंसे इस रोगसे पीडित थी। विशिष्ट लक्षण निम्न थे :

वायी कोखसे सख्त दर्द शुरू होता था जो दाएँ कंधेके जोड तक जाता था। दर्द वायी करवट लेनेसे वढता था। इसके साथ सर-दर्द और अतिसार भी था। रोगिणी ठण्ड और खुश्क मौसममें वेहतर रहती थी। हर साल गर्मीके मौसममें उसे शीतपित्त निकलता था। स्वप्नमें डाकू और लुटेरे दिखायी दिया करते। ऊपरके होठों पर वार-वार ठण्डा फोडा निकलता था।

**नेटरम म्योर** २०० ने उसे ठीक कर दिया।

४ डा० डी० वी० ह्विट्टियरने कष्टरजके कई केसोंका विवरण दिया है जो **काली फॉस** और **मैग्नेशिया फॉस**से ठीक हुये। केस **'हैनिमैनियन मन्थली'** जलाई १८८७ में प्रकाशित हुये हैं।

५. डा० ए० पी० डेवीसने कष्टरजका एक केस वताया है। उसके गर्भाशय, कमर और निम्नागोंमें सख्त दर्द होता था। पेटकी सेंक देनेसे कोई लाभ नही होता था **मैग्नेशिया फॉस** ६x की वडी मात्रा देनेसे आध घण्टेमें दर्द मिट गया। दूसरी मात्रा देनेसे रज विना कष्ट जारी हो गया। आमतौर पर रज आनेसे कई घण्टे पहले दर्द शुरू हो जाया करता था। इसके वाद भी प्रतिशोधकके रूपमें यह दवा कई मास तक दी गयी और रोगिणी विलकुल ठीक हो गयी।

डा० डेविसके मतानुसार गर्भाशयके स्नायुशूलके लिये **सिमीसीफ्यूगा** की अपेक्षा **मैग्नेशिया फॉस**को वेहतर ख्याल करते हैं। उनकी राय है कि यह गर्भाशयमें रक्त अधिक सचित हो जानेकी हालतमें भी हितकर है।

उन्होंने जरायुमे रक्त आनेका एक केस दिया है जो **मैग फॉस** ६x देनेसे ठीक हुआ।

**कष्टरजके लिए काली फॉस :** डा० डी० वी० हिट्टियरने कष्टरजका एक केस वताया है जो १५ वर्षसे चल रहा था। ऐलोपैथिक चिकित्सा विफल सिद्ध हुयी थी। वह ६ मास तक **काली फॉस** खाकर ठीक हो गयी। रोगिणी वहुत ही स्नायविक, नाजुक मिज़ाज और हिस्टीरियासे पीड़ित थी। होमियोपैथिक दवा भी कोई काम न आई। मुख्य लक्षण ये थे :

स्तन इतने कोमल और स्पर्श कातर थे कि कपडेका स्पर्श भी सहन न होता था कष्टरज था और ऐंठनकी तरह दर्द होता था। कोखमें नीचे के रुख भारी दवाव पडता था। रज शुरू हो जानेके वाद तो दर्द एकदम असह्य हो जाता था। जब दर्द जोरोंपर होता था, तव कोखसे शुरू होकर आमाशय तक पहुँचता था। इसके वाद यह मालूम पडता था कि जैसे आमाशयपर कुछ वह रहा है इसके तत्काल वाद पित्त या झागदार अम्ल पदार्थकी कै हो जाती थी। कै में कभी–कभी खूनकी धारी भी आती थी। कै हो जानेके वाद आमाशयका कष्ट घट जाता था, मगर पेशावमें दर्द वढ जाता था। यह हाल कभी-कभी पूरे २४ घण्टे तक जारी रहता। आमतौरपर सर दर्द आता और वायीं आँखपर टिक जाता। ज्यों-ज्यो सरदर्द वढता, अन्य जगहोंके दर्द घट जाते। यह इसके विपरीत होता।

**काली फॉस** देनेके वाद, पहली वार जो मासिक हुआ उसमें तकलीफ पहलेकी अपेक्षा कम थी।

— होमियोपैथिक जर्नल ऑवस्टेट्रिक्स, नवम्वर।

६ कष्ट-रजकी तकलीफ कुछ दिनोंसे थी। हर वार जव मासिक होता, उसमें १ से २ इन्च तक लम्वे आकारकी झिल्लियाँ निकलती। रज शुरू हो जानेके वाद पेटके निचले भागमें दर्द आता। जव रोगिणी पेटपर गर्म पानीकी थैली रखकर दोहरी होकर लेटती तो यह घट जाता। दर्द एक दिन जारी रहता और अगले दिन छिछडा निकलता।

मैंने उसे मासिक हो लेनेके वाद **मैग्नेशिया फॉस** १० लाख दिया। अगले मासिकमें काफी आसानी रही **मैग्नेशिया फॉस** २ दिन, सुवह-शाम फिर दिया गया। अगले मासिकके दिनो दर्द न हुआ। हाँ, छिछडा इस वार भी आया। इसके वाद मासिक साफ होने लगा।

डा० कैम्वल, हैनिमैनियन एसोसियेशन १८८९ का वार्षिक विवरण।

७. मेरे पास एक रोगिणी थी जिसे मासिकके दिनोंमें गोली लगनेकी तरह का तेज स्नायुशूल होता था। दर्द आमाशयमें होता था। और एक या

दो दिन जारी रहता। यह कमरसे शुरू होता था और कमरके चारो तरफ घूमकर आमाशयमें केन्द्रित हो जाता था दर्द दबाव और गर्मीसे घट जाता था।

**मैग्नेशिया फॉस** : १० हजारकी एक मात्राने उसके सारे कष्ट दूर कर दिए। —जे० टी० कैण्ट एम० डी०

८. **होमियोपैथिक वर्ल्ड** के हालके अङ्कमें कष्टरजका एक केस छपा है जो **मैग्नेशिया फॉस** ४x देनेसे ठीक हुआ। शिकायत कई साल पुरानी थी और इस दवाके व्यवहारसे उसे पूर्णतः आराम आया।

## कानके रोग ( Diseases of Ear )

**फैरम फॉस** : सर्दी लगनेके बाद आया कान दर्द, जिसमें दर्द जलन और तपकनके साथ होता हो। आवाज सहन न हो। कर्णप्रदाहका वह दर्जा जब रक्तसचित हुआ हो। काम दर्द जिसमें सूई गडने जैसा तेज दर्द हो। कानमें तरह-तरहकी आवाजें आएँ, जो खूनके दबावसे हो और जब खूनकी नाडियोंकी शिथिलताके कारण खून वापस न जाता हो। प्रदाहत्मक स्थितियाँ; एक केन्द्र बिन्दुसे फैलनेवाले दर्द : कोमलग्राह्यता, विशेषतः खूनकी कमी से पीडित व्यक्तियोंके कानका कष्ट। चिकित्साकालमें एक और लक्षण यह मिला, "कानमें तपकन स्पष्ट नजर आती थी। हर एक धडकन वहाँ सुनाई देती थी कान और सरपर जैसे चोट पड रही है। नाडीकी चाल गिनी जा सकती थी।—( हॉटन )। पुराना कर्णस्राव जिसमें पीव नही और ढोलकी श्लैष्मिक झिल्ली मोटी पड गयी हो और जहाँ छोटी हड्डीके जोडोंमें अकडन हो।"

इस औषधका व्यवहार करानेके लिए निम्न लक्षण भी विचारणीय हैं :

१ प्रदाहमें सीमित रहनेकी अपेक्षा फैलनेकी प्रवणता।

२. पीडित स्थानकी रंगत गहरी, गोमास जैसी।

३. पीव जैसा स्राव और खून आनेका झुकाव।

४ कान बहना शुरू भी हो जानेके बाद भी दर्द नही मिटता।

५ दर्द दौरोंके रूपमें आता है।

बास्टॉल "इन्सटीच्यूट ट्रांसऐक्शन्स" १८८६ पृष्ठ ३८६।

इसके साथ ही यह भी याद रक्खें कि कान बहता नहीं, एक केन्द्रसे दर्द शुरू न होकर चारों ओर फैलता है। कोमलग्राह्यता, खूनकी कमी और जीर्ण-शीर्ण अवस्था।

प्रदाह या पीव आनेके कारण आया बहरापन, जबकि कटनके साथ दर्द हो, तनाव हो, तपकन या गर्मी हो, रक्तसचार अधिक होनेके कारण

कानोंका गूजना। ढोलका प्रदाह, विशेषतः जब कि झिल्ली खुश्क हो और नाडियाँ रक्तसे भरी हुयी हों। कानकी बाहरी नालीमें फैलकर आनेवाला प्रदाह और कानके मध्यभागका नया विकार ( एच० सी० एफ० )।

कानकी मध्य नालीमें स्राव आए।

"ठण्डी हवा लगने या भींग जानेके बाद आया कानका दर्द। मेरे पास इस मरीजके लिए इससे बेहतर दवा नहीं है।" —आर० एस० कोपलेण्ड

**काली म्योर :** कान दर्द जिसके साथ जीभपर सफेद या भूरे रंगकी मैल भी आई हो, ग्रंथियाँ और गला फूला हुआ हो। कानकी मध्यनालीपर सूजन आ जाती है और निगलते या नाकको साफ करते समय कडकडाहटकी आवाज होती है। कानकी मध्य नाली पर सूजन आ जानेके बाद आया बहरापन। कानके बाहरी भागपर आयी सूजनके कारण जब बहरापन आया हो, तो भी यह मुख्य औषध है। त्वचाका पुराना प्रदाह। ढोलकी भीतरी परतोंका उघडना और उस जगहका गीला रहना। कानका घाव जिसमें सफेद सी पीब आयी हो। कानके ढोलकी झिल्लियोंपर दानें निकालें। दानें अधिक संख्यामें निकलें।

"डा० एच० सी० हॉटन लिखते हैं : कानके मध्य भागके पुराने प्रदाह और स्राव के लिये सर्वाधिक गुणकारी औषध है, विशेषत. उस भेद के लिए जिसे हम 'संख्या वृद्धि द्वारा विकास' कहते हैं। ऐसा बोध हो कि जैसे कान बन्द हो गया है। आवाजें सुनाई दें, बहरापन, नाक और गलकोपकी रुकावट, गलकोप प्रदाह जिसमें दाने पडे हों, कानकी मध्य नालीका बन्द हो जाना और कानके ढोली श्लैष्मिक झिल्लियोंका सुकडाव आदि, बाहरी छेदकी दीवारोंका सुकडाव। यह दवा दाएँ कानकी मध्य नालीको अधिक प्रभावित करती है। पुरानी पीबमें हितकर है। यह उसका बनना रोकती है, दोनोंको भी रोकती है। मरम्मत शीघ्र करती है।"

काली म्योर कान बहनेके दूसरे दर्जेकी हालतोंके लिए मुख्य दवा है, जबकि रोग श्लैष्मिक झिल्लियोंके लगातार सम्पर्कके कारण कानके मध्य भाग तक पहुँच गया हो। नलेकी **श्लैष्मिक झिल्लियाँ मोटी पड़** जाती है। यह हालत आमतौर पर तब आती है जब रोग पुराना पड गया हो और मुख्यतः जबकि रोग कर्णगह्वर तक ही सीमित हो, या इसने वहाँ अपना केन्द्र बना लिया हो और ऊपरी स्तर पर दाने दिखायी दें। श्लैष्मिक झिल्ली अधिक लाल नजर नहीं आती, जबकि इसके व्यवहारके लिए उसका पीला होना ही लक्षण समझा जाता है। या यों कहिए कि सुकड़ावकी सक्रिय अवस्था अब कम सक्रिय हो गयी है। सफेदसे निस्सरणके छोटे-छोटे दागोंकी उपस्थिति

और जीभपर सफेद या भूरे रगकी मैल आना भी इसके चुनावके लिए निश्चित लक्षण हैं। इसके साथ ही, अनुसगिक उपद्रवके स्वरूप नाककी श्लैष्मिक झिल्लियाँ मोटी पड जाती हैं, नाक रुक जाती है, और नाकसे गाढ़ा, गहरे पीले रगका स्राव आता है। यह सामूहिक लक्षण भी इसका विशिष्ट लक्षण है। बादमें यह स्राव गाढ़ा सफेद-सा हो जाता है। यह औषध इन अगोंको नजलेसे भी पीडित होनेकी प्रवणता कम करती है।

यही विकार बढते-बढते कानकी मध्य नाली तक पहुँच जाता है। उसकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ भी मोटी पड जाती हैं, और आशिक या पूर्णरूप से रुक जाती है। इस विकारके परिणाम स्वरूप कानके जो लक्षण पैदा होते हैं—उनका अनुमान लगाना सरल है। विविध प्रकारका बहरापन आता है; उसी अनुपातसे आवाजें सुनायी देती हैं, कर्णनाद, ये आवाजें कभी-कभी बहुत अप्रिय और अरुचिकर होती हैं। निगलते समय कानकी मध्य नाली सहसा और आशिक रूपमें खुलती है। परिणाम स्वरूप वहाँसे बडे जोरके साथ निकलकर कानके गढ़ेमें आती है। इस तरह आशिक रूपसे एक स्थान रिक्त हो जाता है। जब भी ढोल बन्द गढा बन जाएगा, यह हालत जरूर आती है। यदि ऐसे समय कानके भीतरी भागकी परीक्षाकी जाए तो पता चलेगा कि ढोलीकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ सुकड गयी हैं। कानकी मध्य नालीकी इन हालतोंमें यह दवा तभी लाभ करती है जब कि रोग पुराना पढ गया हो अर्थात् नयी हालतोंमें लाभ नही करती। या प्रदाहकी उन हालतोंमें काम नही करती जहाँ प्रदाहके फैलनेकी रफ्तार आरम्भसे ही सुस्त है। बायें कानकी अपेक्षा दाएँ कानकी मध्य नाली पर यह दवा अधिक असर करती है।

जब कानके ढोलमें पीव बहुत मन्द गतिसे बन रही हो, और जब श्लैष्मिक झिल्लियाँ मोटी पढ गयी हों और इसके परिणामस्वरूप धीरे-धीरे बहरा-पन आ रहा हो, इसके साथ आवाजें आती हों ( कर्णनाद ) या न आती हो—और दर्द न होना भी इस औषधका निर्वाचन करनेके लिए विशिष्ट लक्षण है। अधिक सक्रिय और वेदनापूर्ण आक्रमणो को रोकनेके लिए तथा—बचे-खुचे प्रदाहको दूर करने, और यथासम्भव उसके दुष्परिणामोंको रोकने ( जैसे कानके ढोलकी श्लैष्मिक झिल्लियों को मोटा पकडनेसे रोकती है और कानके ढोलकी अधिक नाज़ुक जगहोंमें कोई स्थायी विकार न आने देना आदि ) के लिये भी यह सिद्धौषध है। कानमें पीव आनेकी अपेक्षा, यह औषध प्रदाहपूर्ण उपद्रवोंके लिए अधिक उपयोगी है परन्तु जब दाने अधिक सख्यामें बन गए हों, तो यह उनका बनना रोकती है। और

उनमें पीव लाती है। जब पीव बनना बन्द हो चुका हो तो यह औषध चिपकाव आनेके झुकावको रोकनेके लिए मुख्य औषध है। यह चिपकाव आना पीव बनना बन्द होनेके बाद आने वाले मुख्य खतरोंमेंसे एक है।"

"अन्तिम बात यह है कि कानके बाहरी भागकी तकलीफोंमें अभी तक इस औसधका व्यवहार आम नही हुआ। यहाँ इसके व्यवहारका प्रधान लक्षण है कानकी बाहरी त्वचाके परतोंकी खुश्की और परतें उतरना, और दीवारोंपर सुकडाव आनेका झुकाव। कानके आस-पासकी ग्रन्थियो, गर्दनकी ग्रन्थियों और जबडेके कोणोंकी सूजन भी इसके चुनावके लिए मोटा लक्षण है।"

'**काली म्योर**के बारेमें मेरा अनुभव कानके मध्य भागसे स्राव आने तक ही सीमित है। मैंने इस तरहके दो सौ रोगियोंका पूरा रिकार्ड रखा है और उसका अध्ययन करनेसे मै इस परिणामपर पहुँचा हूँ कि कानके इस उपद्रवकी चिकित्सा करनेके लिए यह सर्वाधिक विश्वस्त और गुणकारी दवा है। यह औषध ऐसे वरमों पुराने रोगकी रोक थाम करनेमें भी हमारी सहायता करती है जो जरा-सी उकसाहट मिलनेपर निरन्तर बिगडते चले जाते हैं और जिनके बारेमें कोई भी व्यक्ति यह आशा नही कर सकता कि वे ठीक होंगे। इसका सर्वाधिक सन्तोष जनक परिणाम उन हालतोंमें दिखायी देता है जो कई महीनो बल्कि २-३ सालमें उन्नति कर रहे हैं—परन्तु अभी तक तन्तुओंमें कोई ऐसा स्थायी परिवर्त्तन न आया हो जो इस रोगमें आना सुनिश्चित है।"

—प्राध्यापक एच० पी० वेल्लोज एम० डी०।

कानके बाहरी भागकी सूजन जिसने छेदको मोटा और तग कर दिया हो और कानसे पतला स्राव आता हो।

"काली म्योर कानकी मध्य नालीको खोल देता है। इसके व्यवहारके बाद प्रदाह चला जाता है।" (आर० एस० सी०)

**नेटरम म्योर**. कानके ढोलकी सूजनके परिणाम स्वरूप आया बहरापन, और इसके साथ पानी जैसे स्राव, कानमें गर्जनकी आवाज हो, जीभ पर बुल-बुले आएँ। मुँहमें लार अधिक आए। कानके ढोले और मध्य नालीसे स्राव आए। पीव जैसा मवाद बहे। कानोंमें खुजली चले और जलन हो, सूई गडने जैसा दर्द।

**काली फॉस**: ऊँचा सुनायी दे; तरह-तरहकी आवाजें सुनाई दें। स्नायविक दुर्वलतावश आया बहरापन, आवाजें आए, दुर्बलता और मतिभ्रम। सुननेकी नाडीमें खुजली हो, आवाज सहन न हो; स्नायु जालकी आम थकान।

"कानके ढोलकी श्लैष्मिक झिल्लियोंके घाव, मध्य भागमें पीव आए जो पानी जैसी पतली, गन्दी, भूरी-सी और **बहुत दुर्गन्धित** हो। कानसे खून आए, घाव भरता दिखायी न दे। पीव अधिक आए। यह औषधि वूढोंके लिए विशेष गुणकारी है। वूढोंकी दुर्वलता, जीर्णशीर्ण अवस्था, तन्तुओंकी खुश्की जीवनी शक्तिका अभाव" ( हॉटन )।

जव **काली फॉस**के लक्षण हों और वह कानोंकी भिनभिनाहट को दूर न कर सके, तो **मैग्नेशिया फॉस** अदल-वदल कर दें।

**कल्केरिया सल्फ :** कान वहे, जिसमें कभी-कभी खून आए। वहरापन और कानके मध्य भागमें पीव आए तथा ग्रन्थियोंकी सूजन आदि। कानके पीछे सूजन जो कोमल ग्राही हो और उसमें पीव आनेका झुकाव हो।

**कल्केरिया फॉस :** कानके वाह्यभागपर ठण्डक लगे। कानके आस-पास की हड्डियों दर्द हो। गठियावातको शिकायतके साथ कान दर्द, जवकि कंठमालाके रोगी वच्चोंकी ग्रन्थियाँ भी फूली हुई हों। वच्चोंका पुराना कर्ण-स्राव और दस्त तकलीफसे निकले ( एच० सी० एफ० )। कानके ढोलमें छेद हो जाए, वहरापन और कान वहे। —( कूपर )

**मैग्नेशिया फॉस :** सुननेकी नाडीके स्नायु जालकी वीमारीके कारण आया वहरापन या ऊँचा सुनायी देना। यह **काली म्योर**का सहायक है। कानके मध्य भागका विकार जो वढता जाए। (डा० डाऊण्डस)। स्नायविक कर्णशूल।

**काली सल्फ :** कर्णशूल और इसके साथ गाढी, गहरी पीली या प्रदाह के वाद हरी-सी मवाद आए। कानके नीचे तेज, कटनके साथ दर्द। स्तनाकार प्रवर्द्धनके नीचे सूई गडने जैसा ; तनावके साथ और भाला गडने जैसा दर्द। पानी जैसा मवाद या गहरे पीले रंगकी **पीब** वहे। गलेकी खरावीसे आया वहरापन और नजला जिसके कारण कानकी मध्य नाली की झिल्लियोंपर और मध्य कानपर प्रदाह आए, इसके साथ गहरे पीले रग का पानी जैसा स्राव आए और जीभपर गहरे पीले रंगकी मैल हो। वहरापन जो गर्म घरमें वढ़े। कानके मध्य भागका प्रदाह और पीव आना जवकि पीव गाढी हो। ( एच० सी० एफ० )

**साईलीसिया :** ऊँचा सुनायी दे। मध्य नाली और ढोलका सूजन का स्राव कानका वाहरी भाग प्रदाहित, वाहरी छेद सूजा हुआ, स्तनाकार प्रवर्द्धनके रोग ( चिकित्सा कालीन अनुभव देखिए ) आवाज सहन न हो। कानसे गन्दा मवाद आए। ऊँची आवाजके साथ कान खुले। पीव वाला

कर्ण प्रदाह जिसमें पतला, पानी जैसा पतला और दुर्गन्धित स्राव आए तथा इनके साथ हड्डीका विनाश।

**नेटरम फॉस :** कानमें सन्तापपूर्ण दुखन, वाह्य भागपर नर्म, पतली, क्रीम जैसे रंगवाली पपडी, जीभपर पीली मैल। एक कान गर्म, लाल, वार-वार खुजलाए और इसके साथ आमाशयकी खरावी तथा अम्लता। कानसे पीव आए।

**नेटरम सल्फ :** कान दर्द जैसे कोई चीज वाहर आ रही है। तर मौसममें कष्ट वढ़े। घण्टियाँ वजती सुने।

**कल्केरिया फ्लोर :** स्तनाकर प्रवर्द्धनके रोग जवकि हड्डीके वजाए हड्डीका पर्दा आक्रान्त हुआ हो (हॉटन)। ढोलपर चूने जैसा जमाव और कर्णनाद।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ एक लडकेका कान सात सालसे वह रहा था। कभी-कभी कान दर्द होता और कान गूँजते। अव उसके कानके मध्य भागमें प्रदाह था और उसमें हल्का दर्द भी है। **फैरम फॉस**ने ये सव उपद्रव मिटा दिए कुछ दिन वाद देखा गया कि कानकी मध्य नाली वन्द हो गयी है। गलकोषकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ पीली थी। **काली म्योर**ने सव कुछ ठीक कर दिया और पूरी तरह सुनाई देने लगा।

२ एक पन्द्रह वर्षीय किशोरको १२ सालसे कान वहनेकी शिकायत थी। आरक्त ज्वर आनेके वाद, कानके मध्य भागमें पीव आ गयी। इस समय दोनों कान प्रदाहित है। दर्द नहीं; परन्तु आवाजें सुनाई देती है। सुनाई भी वहुत कम देता है। छेद पीवसे भरा रहता है। मध्य नाली फैलने योग्य है। दाएं कानके ढोलमें दाने भी हैं। दाएँ कानके ढोलमें छेद हो गया है गलकोष की झिल्लियाँ मोटी पड गयी है।

**कल्केरिया सल्फ** देनेसे तत्कालिक सुधार आया जो वादमें भी जारी रहा। दायें कानके ढोलके दाने मिट गए और सुधार एक पहेली वना रहा।

३ आरक्त ज्वरके वाद कानके मध्य भागमें पीव और प्रदाह आया। दोनों कानोंमें पीव आयी। दोनों कान गहरे रंगकी पीवसे भरे रहते थे। यह पीव दुर्गन्धित थी।

**काली फॉस**ने सव कुछ ठीक कर दिया। हॉटन। 'Clinical otonoey'

४ **चूने जैसा जमाव और कर्णनाद :** रोगीकी आयु ४३ वर्ष थी। उसने शिकायतकी कि उसे सारे शरीरपर चीटियाँ रेंगती जान पडती

हैं। कानोंमें गर्ज होता है, कष्ट रातको बढ जाता है। पाँव, टखने और कलाइयाँ ठण्डी रहती हैं। दाएँ कानके ढोलपर चूने जैसी मवाद जमा हो गयी थी।

**कल्केरिया फ्लोरने** ४ मासमें उसे ठीक कर दिया। प्रायः एक साल बाद उसकी फिर परीक्षाकी गयी। तब चूने जैसी मवाद और गर्ज नही थी।

—डा० डायल० ई० एस० हेज।

प्राध्यापक हॉटनने अपनी पुस्तक **'कानकी चिकित्सा'** में ऐसे अनेक केस दिए हैं जिन्हें इन दवाओंसे लाभ पहुँचा। उपयुक्त सारे केस उसी पुस्तकसे दिए हैं। इनमें किसी और औषध या साधनका सहारा नही लिया गया। इस पुस्तकमें और भी ऐसे केस हैं जहाँ कानकी बीमारियोंमें **फैरम फॉस, काली म्योर और कल्केरिया सल्फ**से लाभ हुआ।

५ कानके मध्य भागका प्रदाह इस अनुभूतिके साथ शुरू हुआ कि जैसे कान भरा हुआ है और ऊँचा सुनाई देने लगा। यह हालत ४८ घण्टे तक जारी रही और रोगीकी हालत बिगडती गयी। जाँच करनेपर पता लगा, दर्द दौरेके रूपमें आता है। ऐसा जान पडता था जैसे कानमें डाट लगा हुआ है। कानके ढोलकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ उभरी हुई थी। पीब आनेका कोई चिह्न नही था। सुननेकी नाडीकी दीवारका पिछला भाग लाल था। कान बहुत स्पर्श करता था।

**फैरम फॉस** ६x घण्टे-घण्टे बाद दिया गया। इस तात्कालिक सुधार आया। ४८ घण्टे बाद दवा बन्द कर दी गयी।

६ डा० एच० डब्ल्यू चम्पलिनने कानके मध्य भागकी सूजनके कई केस दिए हैं जो **फैरम फॉस**से ठीक हुए। उन्होंने ३x से ६x तकका व्यवहार किया है। उनका कहना है कि यह दवा अकेली दी जानी चाहिए।

७ श्रीमती अ, आयु ४५ वर्ष, १६-२-१८८७ को मेरे पास आयी। ३ वर्ष पहले उसके कानोंमें दर्द आया और कान गूँजने लगे। मासिकके दिनोंमें उसका यह कष्ट बढ़ जाता। दर्द अत्यधिक तेज हो जाता दर्द बाएँ कानसे शुरू होकर सर तक पहुँचता। कान कभी-कभी घण्टों गूँजता रहता। पिछले ६ माससे दर्द नही है परन्तु बहरापन आ गया। अब बहरापन दाएँ कानमें भी आया। परन्तु दर्द नही है और आवाजें नहीं आती। वैसे आम सेहत अच्छी है। हाँ, मासिकके दिनोंमें गर्दनकी ग्रथियाँ फूल जाती हैं। उन्ही दिनो कानोंका कष्ट भी बढता है। यह भी देखा गया कि बाएँ कानमें हड्डीपर टकार करनेसे और दाएँ कानमें हवामें टकार करनेसे सुनता है। ढोल सूखा था।

दाएँ कानकी मध्य नाली लगभग वन्द थी। दायी ओरका अधिक मुक्त थी। वायीं ओरके कानमें वार-वार जलन होती थी।

**काली म्योर** ६x ने उसे ठीक कर दिया।

ए० चर्ची० विल्लोज एम० डी० मेडिकल गजट नवम्बर १८८८।

८ एक दुर्वलकाय स्त्री को ३-४ दिनसे कानमें और सरके दाएं भागमें दर्द था। कान यद्यपि ३ दिनसे वह रहा था, फिर भी दर्द कम न हुआ था। यह दर्द चारों ओर फैलता था। ढोलकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ लाल थी, फूली हुई थी, उनमें छेद हो गया था। उससे पीव जैसा मवाद अधिक आ रहा था। छिद्र लाल, फूला हुआ और प्रदाहित था।

**फेरम फॉस** २x पानीमें १-१ घण्टे वाद दिया गया, एक ही सप्ताहमें सारा उपद्रव मिट गया।

९ डा० वास्टलने ३ केस दिये हैं जो **फेरम फॉस**से ठीक हुये। मात्रा २x से १२x तक दी गयी और परिणाम वहुत ही शानदार रहा। उससे तेज ज्वर, प्रलाप और दर्दको जो कानके मध्य भागके प्रदाहके कारण, उपद्रव स्वरूप आए थे विलकुल ठीक हो गए।

अमेरिकन इन्सटीच्युट ऑफ होमियोपैथिककी वार्षिक रिपोर्ट, १८८६ पृ० स० ३९६।

१० एक नवयुवतीके दाएँ कानसे वडा दुर्गन्धित स्राव आता था। वह कठमालासे पीड़ित थी। छेदके पास कुछ मस्से वने हुए थे जिन्होंने छेदको ढक लिया था। उनने ८ सप्ताह तक इस कानसे कुछ सुना नहीं था। वह वहरापन उत्तरोत्तर वढता गया।

**काली सल्फ** १२x दिया गया। २ मासमें कान वहना विलकुल वन्द हो गया। मस्सा भी मुरझा गया। साफ सुनाई देने लगा। अव हर तीसरे दिन २ मात्राएँ दी गई। रोगिणी विलकुल ठीक हो गई।

—डब्ल्यू० पी० वैस्सल हेफ् एम० डी०।

११ **कानकी वाहरी सूजन :** डा० स्टेनली वाईल्डने कानके वाहरी भागको सूजनका केस वताया है। उसका कान वादमें वहने लगा और वहरापन आया। **मर्क सोल, हायडरास्टिस** और **सल्फर** देनेसे भी वहरापन कम न हुआ। कानका छेद मोटा और तग हो गया। उससे पतला मवाद वहने लगा। घडीकी टकटकी ४ इञ्चकी दूरीसे सुन सकता था।

**काली म्योर** ३x ने वहाव रोक दिया और वहरापन हटा दिया।

डा० वाईल्डने वताया है कि जिन वच्चोंके टॉसिल वढ़ जानेसे कानकी

मध्य नाली प्रभावित होकर बहरापन आया, उसे भी इस दवाने ठीक कर दिया।
—होमियोपैथिकरिव्यू।

१२ डा० गॉलनने एक वृद्धकी हालत बताया है। वह कर्णनादसे बुरी तरह पीडित था। बाजारके शोर शराबेसे उसका यह कष्ट और भी बढ़ जाता था। उसे प्रदाहात्मक गठियावातके कई दौरे हो चुके थे और यह कर्णनाद शायद उसीकी प्रतिक्रिया था। वह मानसिक तौरपर भी बहुत अधिक खिन्न था। सुनाई कम देता था।

**काली फॉस** ६x कुछ दिन खानेसे उसके सारे कष्ट मिट गये।

१३ रोगीकी आयु ४ मास थी। उसके एक कानसे पानी-सी पतली दुर्गन्धित पीव आती थी। यह पीव जहाँ लगती थी वहाँ फुन्सियाँ बन जाती।

उसे **काली फॉस** ६x ६-६ घण्टे बाद दिया गया। बच्चा कुछ दिनोंमें बिलकुल ठीक हो गया।

जब संयोजक तन्तु प्रभावित हुए हों, तो मैं **काली फॉस**के साथ **साईलिसिया** भी अदल-बदल कर देता हूँ। —ए० पी० डेविस एम० डी०

१४ कान बहनेका एक और केस। रोगी ऐलोपैथिक चिकित्सा कराकर ६०० डालर खर्च कर चुका था। और कोई आराम नही आया था। रोगी लम्बे कदका, इकहरे बदन वाला, हृष्ट-पुष्ट, वातप्रकृतिका, गवार, अनपढ और उज्जड़ था। निदान करनेके लिये मैने उसकी अच्छी तरह जाँच की। स्तनाकार प्रवर्द्धनपर काफी उभार था। त्वचा लाल, चमकदार और नर्म थी। वहाँ सख्ती थी और सयोजक तन्तुओंके टूटनेके लक्षण भी थे। कान पीवसे भरा हुआ था और उससे मुर्दार जैसी गध आती थी।

मैंने स्तनाकार प्रवर्द्धनमें चाकू मारा तो वहाँसे १०-१२ औंस रक्त और पीव निकली। मैने युक्लिप्टमसे घाव साफ करके बाँध दिया। उसमें नाली डाल दी कि पीव बहती रहे। घाव हर रोज साफ करता रहा और २-२ घण्टे बाद **साईलिसिया** खानेको दिया। हालत दिनों-दिन सुधरती गयी और चार मासमें वह बिलकुल ठीक हो गया। कितने ही ऐलोपैथी उसे असाध्य करार दे चुके थे। —ए० पी० डेविस एम० डी०।

१५ रोगीका नाम विलयम मैक्की, आयु २७ वर्ष। उसे कान बहनेके कारण बहरापन आया था। वह बचपनसे ही बालिग होने तक रातको नाचने जाया करता था। वह खूब नाचता, यहाँ तक कि पसीनेसे तर हो जाता और फिर कपडे उतारनेके लिये कमरेसे बाहर चला जाता। इस तरह उसे सर्दी लगती रही, आखिर उसे नज़ला जुकाम हो गया। जो हर समय बहता रहता। इसी दौरानमें उसके कान गूंजने लगे। होते-होते उसे पता चला कि उसे कम

सुनाई देता है। यह एक-एक करके कई डाक्टरोंके पास गया, अन्तमें निराश होकर इलाज ही छोड़ दिया। उसके चिकित्सकोंमें कई ऐलोपैथिक भी थे।

आखिर वह मेरे पास भी आया। उसका कद मझला है, आँखें नीली हैं। रंग गेहुआ है। स्मृतिकी कुछ कमी भी नजर आती है। उसकी बहुत बडी शिकायत यह थी कि वह रातको बहुत जोरकी आवाज सुनता जैसे बमका धमाका हुआ हो। उसके बाद कान बजते रहते और वह सो न सकता। कुछ स्नायविक लक्षण भी थे जिनके लिए मैं डा० बर्टलैटसे उसकी परीक्षा करायी। जैसे एकाकीपनकी खिन्नता; वह घण्टों तक अकेले बैठा रहता और अपनी तकलीफपर कुढ़ता रहता। चलता तो डगमगाता। घुटनेके जोडमें झुकाव कम था। आँखें बन्द करके खड़े होते ही वह मेरे बाजुओंमें आ गिरा। वह आँखें बन्द करके तीन कदम भी न चल सका।

मैंने उसे काफी दिनों तक फेरम फॉस खिलाया। और उसने बडा अच्छा काम किया। उसे कई फुट दूर खड़ा करके जब मैं लम्बे-लम्बे वाक्य बोलता तो वह उन्हें साफ सुन लेता था। अब कानमें आवाजे आना काफी घट गया है। उसे अच्छी नींद नहीं आती है। स्नायविक लक्षण भी बडी तेजीसे मिट गए। —डा० एफ० डब्ल्यू० मेस्सर्वे।

**१६ स्तनाकर हड्डीके आवरणोंका प्रदाह साईलीसिया :** मिन्नेसोटा निवासी डा० ए० टी० शरमनने एक रोगीका हाल लिखा है जिसे स्तनाकार हड्डीमें दर्द था। कानके ढोलकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ बुरी तरह आक्रांत थीं। कानके पासकी हड्डीके पास जब टकारकी गयी तो वह उसे स्पष्ट सुन न सका। पीड़ित पहलूके कानकी सुननेकी शक्ति काफी घट गयी थी। तापमान १००° था। बहुत दुर्बल, स्नायविक; चेहरेके दाएँ भागकी पेशियोंमें पूरा लकवा था। श्रवणशक्तिके ह्रासके आधारपर अनुमान लगाया गया कि दिमागमें भी कोई खराबी है। निगलनेमें कोई कठिनाई नहीं थी। इससे यह समझा गया कि कनपटीकी हड्डीके स्नायुजालसे रोगका कोई सम्बन्ध नहीं है। चखनेकी शक्ति या लाल ग्रन्थियोंमें कोई विकार नही था। इससे यह निष्कर्ष निकला कि कानके ढोलकी स्नायु गुच्छा भी रोग मुक्त है। स्तनाकार प्रवर्द्धनके आवरणोंका शोथ इस आधारपर माना गयाकि जहाँसे सातवाँ स्नायु गुच्छ बाहर निकलता है, वहाँ दबाव पडता था। जब रोगी अपनी जीभ बाहर निकालता था तो जीभ पीडित अंगकी ओर झुकती थी। रोगीने यह भी बताया कि पीड़ित जगह गर्म पुल्टिस बाँधनेसे आराम आता है। इस आधारपर उसे

साईलीसिया २०० दिया गया। ३-३ घण्टे बाद दवा दी गई। ४८ घण्टेमें दर्द और ज्वर चला गया।

**गर्म तरोसे आराम आना साईलीसियाका विशिष्ट लक्षण है।**

१७ डा० फैलोमने 'क्लिनिक' मेंके २ रोगियोंका हालत लिखा है जो **साईलीसिया** ३x और ६x देनेसे ठीक हो गए।

१८ श्रीमती 'ख' आयु ३४ वर्ष; ३० मार्च १८८६। कई सालसे दाएँ कानमें समय-समयपर बहरेपनके दौरे पड़ते हैं। कान गूंजते भी हैं। कभी-कभी दर्द भी होता है। दाएँ कानका छेद कुछ मोटा हो गया है। नाक भी बहता है।

सुननेका अन्तर=२२"=२६", कैथ २; **कल्केरिया फॉस** २x सुबह शाम। नाक को आम नमकके कमजोर घोलसे स्प्रे ( Spray ) किया गया।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ अप्रैल | सुननेका | अन्तर=२१"=३१"—कैथ २, | **काली म्योर** ६x सुबह शाम |
| १४ | " | " | २२"=५२" कैथ-३ " " " |
| २१ | " | " | ३६"=६ फुट " कर्णनाद बन्द हो गया है। **काली म्योर** ६x रात को। |
| २७ | " | " | ४६"=७ फुट कैथ-३ अब कर्णनाद बिलकुल नही है। **काली म्योर** ६x तीसरी रात। |

३ सालसे चिकित्सा बन्द है और उसे कोई कष्ट नही है।

अन्तमें मै यह कहना चाहता हूँ कि जहाँ तक कानकी बीमारियोंका सम्बन्ध है, मेरा यह अनुभव है और मैं इस बारेमें दूसरोंके अनुभवका भी समर्थन करता हूँ कि **काली म्योर** आम तौरपर **फैरम फॉस** या **मर्क डल** के बाद अच्छा काम करता है और इसके बाद **कल्केरिया सल्फ** विशेष रूपसे लाभदायक है।

एच० पी० बेलोम एम० डी० नार्थ ईस्टर्न मैडिकल गजट नवम्बर १८८६।

१६ **कर्ण स्रावके लिए साईलीसिया** : डा० विल्सनने एक और केस दिया है। उसे बार-बार पेशानीमें दर्द होता था जिसका सम्बन्ध प्रकट तथा पुराने कर्णस्रावसे था। ढोलमें छेद हो गया था। **साईलीसिया** ३ कई मास तक दिया गया। स्राव सूख गया। घाव भर गया। सुनाई ठीक देने लगा। सर दर्द भी जल्द मिट गया।—नार्थ ईस्टर्न 'मैडिकल गजट' फरवरी १८९३।

अनजाने और अनच्छिक रूपमे पेशाब हो जाना (Enuresis)

देखिये पेशाबके रोग।

## मृगी : ( Epilepsy )

**काली म्योर :** यह औषध इस रोगमें सिद्धौषध है विशेषत. जबकि रोग किसी उद्भेदके साथ या उनके दब जानेके बाद आया हो।

**काली म्योर :** 'टिशु रेमिडीज' में से एक ऐसी दवा है जिसकी इस रोगकी चिकित्सामें बड़ी आसानीसे और आमतौरपर अपेक्षाकी जाती है स्नायविक केन्द्रोंसे इसका जो नाजुक सम्पर्क है उसके कारण इसका असर बड़ी मन्द गतिसे आता है। चूंकि मृगीमें आमतौरपर चिकित्सक शामको औषध देते हैं, इसलिए भी इसका इस्तेमाल नहीं होता। निस्सन्देह यह औषध तन्तुओंकी रक्षा करती है और उनमें किसी प्रकारका विकार नहीं आने देती, इस रोगकी चिकित्सामें यही मूल आधार होना चाहिए, ऐसा चिकित्सकका विश्वास है। साधारण बात है कि आप दौरा दूर कर दें। इससे रोग अपने आप सीमित हो जाएगा। वास्तविक उद्देश्य तो रोगकी प्रबलता और अपकर्षको रोकना है। **काली म्योर** निश्चय ही शरीरके तन्तुओं को बल देता है। और यह क्रिया दिमागकी एकरसताको बनाए रखती है। जब दिमागके कोषोंको उचित रूपसे पोषण मिल जाता है तो वे ज्ञान तन्तुओंमें आए क्षोभसे अपनी रक्षा करनेमें समर्थ हो जाते हैं। और ये ज्ञान तन्तु दिमागके कोषोंको चारों ओरसे घेरे रहते हैं। जब ऐसा हो जाता है तो हम रोगके कारणको पनपनेसे रोक देते हैं।— 'दक्लिनिक' १५ जून १८६७।

**काली फॉस :** मृगी या मृगीके दौरे जब त्वचा सुकड़ गयी हो, शरीर ठण्डा पड़ गया हो और उस दौरेके बाद धड़कन भी हो।

**मैग्नेशिया फॉस :** मृगीके दौरे। जब किसी गुप्त और गन्दी आदतके कारण दौरे पड़ते हों तो मूल कारण दूर करना चाहिए और रोगीको संयमसे रहना चाहिए।

**फेरम फॉस :** जब सरकी ओर रक्तका सचार अधिक होनेसे मृगीका दौरा पड़ा हो।

**नेटरम म्योर :** अदल-बदल कर दी जाती है, विशेषतः यदि रोग कृमि जनित हो अर्थात अँतड़ियोंमें क्षोभ आनेसे दौरा पड़े।

**नेटरम सल्फ :** चोट चपेटसे आयी मृगी। सर पर चोट आनेके बाद कमेड़ा पड़ना।

**साईलीसिया :** मृगी जिसका दौरा रातको पड़े विशेष कर कृष्ण पक्षकी अष्टमीसे अमावश तक, दौरा आनेसे पहले ठण्डक लगे। दौरा सूर्य चक्रसे

शुरू न हो और ऊपरकी ओर चले। स्नायुजालकी अधिक कोमलता और अधिक थकान।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. श्रीमती विधवा, आयु ३० वर्ष, पतिका देहान्त हुए ६ वर्ष हो गये, तवसे प्रायः रातको मृगीके दौरे पडते हैं। आहें भरती है, कराहती है, जीभ काटती है, मुँहमें खून मिली झाग आती है, कब्ज, जरायु सम्बन्धी कोई रोग नहीं है।

**साईलीसिया : २००** दौरोंकी मुद्दत बढा दी। —होईन।

२ **मृगीके लिए काली म्योर :** डा० सी० सी० एफ० वाचङ्गपने रिपोर्ट दी है कि ४५ वर्षीय एक व्यक्तिको सितम्बर १८८८ में दाने निकले और ये अगस्त १८८९ तक दवे रहे। नवम्बर १८८९ में वे दवा दिए गए और तभीसे उसे मूर्च्छाके दौरे पडने लगे। शरीर पीला पड जाता। फिर शरीर गर्म हो जाता, तव दौरा पडता इसके साथ ही लघुमस्तिष्कमें दर्द आता और आमाशयमें जलन होती। दौरा सदा भय लगनेके वाद आता।

**नक्स, वूफू और आर्सेनिकम** दिए गए और विफल रहे। तव **काली म्योर ६x** इस लक्षणके आधारपर दिया गया : **दाने दव जानेके वाद मृगी आए।** छठे दिनके वादसे उसे कोई दौरा न पडा। वह अव भी कभी-कभी यह दवा खा लेता है।

३ आर० एल० व्लेकहैंडने (१८८९ में) एक रोगीको **नेटरम सल्फ २००** देकर ठीक किया था। उसे गत १७ वर्षसे मृगी आती थी।

४. श्रीमती' आयु ३२ वर्ष, विवाहित, एक वच्चा ६ साल का। जवसे यह वच्चा पैदा हुआ, तवसे हर ५-७ दिन वाद दौरा पड जाता। मासिक के दिनोंमें अधिक तेज दौरा पडता। एक दौरा २४-२४ घण्टे चला जाता। चन्दमिनटमे लेकर एक घण्टा तक तो आम वात थी। मासिकके दिनोंमें दौरा २ से ४ दिन तक जारी रहता। स्त्री का क़द दर्म्यान, शरीर भारी, गर्दन छोटी, पेट गोलमोल, चेहरा लाल, हृष्टपुष्ट और नर्म तवीयतकी थी। कनपटियों और सरके पिछले भागमें हर समय दर्द होता रहता था। चंदिया पर निरंतर गर्मी लगती रहती। कमरके निचले भागमें सख्त दर्द होता, निम्नांगोंमें सुन्नापन रहता और सारे शरीर पर ठण्डा, लसदार पसीना आता। चिकित्सक का मत था कि उसे जो मृगी आती है वह गर्भाशयके विकारसे आती है।

निदानके झञ्झटमें पडे विना और यह सोचे विना कि ऐलोपैथिक चिकित्सक उसे क्या चिकित्सा देते रहे हैं, मैंने उसे **कल्केरिया फॉस** और **काली-**

फॉसकी ३-३ मात्राएँ राज दीं। मासिकके दिनोंमें पहले २ दिन २-२ घण्टे मैग्नेशिया फॉस दिया। २ मास बाद उसकी हालत बदल गयी। उसे फिर गर्भ रह गया वह कल्केरिया फॉस खाती रही और सुरक्षित रही।

—ए० पी० डेविस एम० डी०।

५. एक तेरह वर्षीय बालकको ६ सालकी आयुसे हाथ-पाँव काँपनेकी शिकायत थी और धीरे-धीरे मृगीकी ओर बढ रहा था। उसे काली क्लोर दिया गया और दो मास बाद उसे कोई दौरा न पडा।

६. रोगिणीकी आयु २३ वर्ष; उसे १७ वर्षकी आयुसे मृगीके दौरे पडते थे वह काली फॉस ३० खानेसे बिल्कुल ठीक हो गयी। कुछ दिन बाद उसने लिखा अब मुझे कोई दौरा नहीं आता।

## विसर्प ( Erysipelas )

**फैरम फॉस :** त्वचापर गुलाबी दाने पडते हैं या विसर्प जैसा प्रदाह आता है। ज्वर, दर्द और प्रदाहके उग्र लक्षणोके लिए हितकर है।

**काली म्योर :** छालोंवाला विसर्प; मुख्य औषध है।

**काली सल्फ :** छालोंवाला विसर्प। पतले खुरण्डको उतारनेमें सहायक है।

**नेटरम सल्फ :** विसर्प, चिकना, लाल, चमकदार; त्वचामें सरसराहट हो या वेदनापूर्ण सूजन आए। त्वचाका पानीवाला प्रदाह।

**नेटरम सल्फ :** चिकना विसर्प, लाल, चमकदार, बडे-बडे चकत्ते पडें। त्वाचा अधिक फूली हुई, पित्तकी कै हो या न हो। त्वचा शोथपूर्ण, फूली हुई, प्रदाहित।

## चिकित्साकालीन अनुभव

**फैरम फॉस्फोरिकम :** पिछले दिनों होमियोपैथिकवर्ल्डमें एक इण्डियन आदिमवासी चिकित्सकने एक केस प्रकाशित कराया है जिससे इस दवाके असरका पता चलता है। रोगीकी आयु ६ वर्ष थी। उसकी बायीं जाँघपर छालोंवाला विसर्प था। यह विकार उसे ६ सप्ताहसे था। **मर्क आयोड, हीपर सल्फ** और **साईलीसिया** आदि दिए गए और बेकार साबित हुए।

आखिरमें **फैरम फॉस** ६x दिया गया और वह फलदाता सिद्ध हुआ।

२ श्रीमती फारवेस, विधवाको विसर्प हुआ। ज्वर बहुत तेज था और थकान भी बहुत थी। घरवालोंने समझ लिया कि वह मर जाएगी। क्योंकि वह प्रलाप भी करने लगी थी। उसके सर और चेहरेपर इतनी अधिक सूजन आ गयी थी कि आँखें सचमुच ही बन्द हो गयी थीं। दर्द असह्य हो गया था।

**नेटरम सल्फ** और **फैरम फॉस** एक-एक घण्टा बाद अदल बदलकर दिए गए **नेटरम सल्फ**की दूसरी मात्रा दिए जानेके बाद उसे पित्तकी कै बडे जोर से हुई लक्षणोंकी उग्रता घट गयी। **फैरम फॉस** अन्तर कालमें दिया गया क्योंकि नाडीकी चाल घट गयी थी। चार दिन बाद वह अपने कामपर चली गयी और यह देखकर उसके परिवार और परिचितों को भारी हैरानी हुयी।

आँकडोंसे स्पष्ट है कि इस रोगके कारण हर साल २००० मौतें होती हैं। एक ८७ वर्षीया वृद्धाको ऐसे ही लक्षणोंके साथ विसर्प हुआ था। वह इन्हीं दो औषधियोंकी सहायतासे ठीक हो गयी। उसे बीच-बीचमें **काली-फॉस** भी दिया गया। जबकि एलोपैथिक चिकित्सामें, आयोडिन और ब्राण्डी आदि सब विफल सिद्ध हुए थे।

—एम० डी० डब्ल्यु, 'शुसलर' से उद्धृत।

## गण्डमाला ( Exophthalmic Goitre )

**नेटरम म्योर :** धडकन, दिल इतने जोरसे धडकता है कि सारा शरीर काँप जाता है। जरा-सी मेहनत करते ही दम फूल जाता है।

### चिकित्साकालीन अनुभव

२ स्त्रियोंकी गर्दनपर दोनों तरफ सूजन आ गयी थी। आवाज बदल गयी थी। दिल फैल गया था और सुकडावकी आवाज धौंकनी जैसी थी। उन्हें **नेटरम म्योर** १२ से लाभ हुआ—डा० हॉफरिखटर।

## आँखकी बीमारियाँ ( Eye, Diseases of )

**फैरम फॉस :** आँखके किसी भागका ऐसा प्रदाह जिसमें कीचड या पीब न हो। आँखके अण्डेका दर्द जो आँखको हिलाने डुलानेसे बढ़े। जलन। प्रदाहित और लाल नजर आएँ। चक्षुताल प्रदाह। अधिक लाली और उसके साथ तेज दर्द; कीचड या पीबका अभाव। सफेद पर्देमें रक्ताधिक और ऐसा जान पडे जैसे पपोटेके नीचे बालूकण पडे हैं, निगाह धुंधली, पढते समय अक्षर नीचे नजर आए; फिर चाहे रिफ्रेक्शन नार्मल ही हो और यदि कोई विकार हो भी तो उसे चश्मेकी मददसे दूर कर दिया गया हो या जब भीतरी कोणकी पेशियाँ दुर्बल हों। चमक लगे और यह कष्ट नकली रोशनीसे बढ़े।

( एच० एफ० हविन्स एम० डी० )

डा० कूपर राबर्टने रिपोर्ट दी है कि वह एक रोगीको दुर्बलताके लिए

यह दवा दे रहे थे, उसे दाई आँखके निम्न पपोटेपर तीन वार अजनहारी निकली।

**फेरम फॉस :** विशेषतः श्वेत पटल प्रदाहके लिए उपयोगी है जवकि वहाँ की श्लैष्मिक झिल्लियाँ अधिक ढीली हों। आँखके ऊपरी प्रदाहमें यह दवा, अधिकाश हालतोंमें **एकोनाईटको** मात दे गयी। चक्षुताल प्रदाहमें जवकि चक्षुतालकी नाड़ियोंमें रक्त अधिक आया हो, यह अधिक लाभ करती है।

—एच० सी० फ्रैंच एम० डी०।

**काली म्योर :** आँखकी ऐसी वीमारियाँ जिनमें सफेद या गहरे पीले-हरे रंगका मवाद आए ( **काली सल्फ भी** )। ऐसा जान पडे जैसे आँखमें रेत पडा है। पपोटों गहरे पीले रंगका, पीव जैसा खुरण्ड आए। कनीनिका पर छाले निकलें उपतारेका प्रदाह। चौडा घाव जो गहरा न हो और कोई छाला फट जानेसे वना हो। चक्षुताल प्रदाह।

"कनीनिका प्रदाह। पहले दर्जेमें भी अधिक हितकर है। फैलने वाले कनीनिका प्रदाहमें भी यह दवा भारी गुणकारी सिद्ध हुयी है जवकि कनीनिका अपने स्तरपर अधिक फैला हुआ हो। निस्सन्देह हमें यह विश्वास है कि कनीनिकाके अनेक रोगोंमें यह सिद्धौपध है। कनीनिकाके पुराने नासूरमें भी यह वहुत लाभदायक है।" —एच० सी० फ्रैंच एम० डी०।

डा० जार्ज एसनार्टनने **'नार्थ अमेरिकन जर्नल आफ होमियोपैथी'** (सितम्वर १८६५, पृ० सं० १४) में लिखा है कि **काली म्योर** कनीनिकाके घावके लिए वहुत अच्छी दवा है। उन्होने इसे उस घावके लिये लाभदायक पाया है जो दुर्वलताके कारण आया हो, मन्द प्रदाह हो, कष्ट साध्य रोग, श्वेत पटलकी सुर्खी जो अधिक न हो। चमक, दर्द और आँसू भी साधारण ही हों या विलकुल ही न हों। घाव कनीनिकाके किसी भी भागपर आ जाए, परन्तु वह परिधिसे शुरू होकर केन्द्रकी ओर वढ़ता है। घावका तल गन्दा, सफेद या गहरे पीले रंगका नजर आए या वह प्रायः छाला होता है और उसके आस-पास प्रदाह स्पष्ट रूपसे आता है। स्राव सामान्य ही होता है, या सफेद कीचड आए। कभी-कभी उसमें पीव जैसा मवाद भी आ जाता है। जो कनीनिकाके पर्दों में ही वढ़ता रहता हो, या अगले पर्दोंकी ओर वढता है अर्थात् अगले पर्दोंमें पीव आ जाती है। तव भी यह सारा विकार दुर्वलता जनित होता है। कभी-कभी यह सारा उपद्रव नासूर ही नजर आता है और वादमें घाव वन जाता है। आमतौरपर जीभपर सफेद, पतली मैल जमती है। ( चिकित्साकालीन अनुभव देखिये )। **मोतिया** जवकि पहले **कल्केरिया फ्लोर** दिया जा चुका हो।"

—डा० नार्टनने लिखा है

**काली म्योर :** विशेषत: उस घावके लिये हितकर है जो छालेके कारण आया हो और कनीनिकाके अभ्यान्तरिक प्रदाहके कारण आया हो (**ऑरम म्योर कैनाविस**, मर्क ; सक्रिय अर्थात् फैलने वाला घाव और छाले वाला) चमक लगती है और आँसू आते हैं, परन्तु वे इतने अधिक नहीं होते जैसे कि **कल्केरिया फॉस**में होते हैं। दर्द भी अधिक नहीं। हाँ, सामान्य रहता है। लाली होती है, परन्तु अधिक नहीं होती ; चमकादार लाल ; अंगारे जैसा। कुकरे।

**काली फॉस :** निगाह कमजोर जो शरीरकी दुर्बलताका परिणाम हो ; डिफ्थेरियाके बाद आयी निगाहकी कमजोरी। ऐसा जान पडे जैसे आँखोंमें रेत पड़ा है या परखच्ची रखी है। आँखके अण्ड और पडे पपोटोंमें सन्वापपूर्ण कष्ट, जलन जैसे आँखें धूएँसे भरी हुई हैं। आँखोंमें खिचाव आए, निगाह धुँधली पड जाए और आँखके आगे काले धव्वे उडते नजर आएँ। चमक लगे। उत्तेजित, टकटकी लगाकर देखे। यह किसी बीमारीके दौरान स्नायविक विकारका लक्षण है। पपोटे फूल जाते हैं। भैंगापन। जो आक्षेप युक्त न हो। डिफ्थेरियाके बाद आया भैंगापन। दृष्टिमान्ध जो पेशियोंकी दुर्बलतावश आया हो। पेशियोंमें असहकार, विशेषतः जो स्नायविक दुर्बलताका हो। (एच० सी० एफ०)।

**काली सल्फ :** पपोटोंपर गहरे पीले रगकी पपडी आए, आँखमें गहरे पीले रंगका या हरे-से रंगका कीचड आए। गहरे पीले रगका, पीव जैसा चिकना या गहरे पीले रगका पानी-सा कीचड या मवाद आए। मोतियाविन्द चक्षुताल धुँधले (**नेटरम म्योर**)। नवजात शिशुओंकी आँख आना (अभिस्यक), आँख से गहरे पीले रगका या पानी-सा पतला मवाद आए और सफेद पर्देपर झिल्लियो का सटाव या चिपकाव। जब कोई और दवा काम न दे सकी हो, तो यह दवा लाभ करती है। यह कनीनिकाके घावके विशेष रूपसे लाभदायक सिद्ध हुई है और इस जगह निश्चय ही **काली म्योर**से बढकर है। आँखके अगले पर्दोंमें जब पीव आयी हो, तब भी यह बहुत लाभदायक है। २-३ रोगियोको इस दवा (३X) से आश्चर्यजनक और तात्कालिक लाभ हुआ।

(एच० सी० फ्रैंच० एम० डी०)

**मैग्नेशिया फॉस :** पपोटे फूल जाते हैं। आँखकी ऐसी बीमारियाँ जिनमें चमक अधिक लगे, या पुतलियाँ सुकड जाय, निगाह आकात हो, अंगारे दिखायी दें। आँखके आगे तरह-तरहके रग आएँ, पपोटे फड़के या उनमें खिचाव आएँ, आक्षेपयुक्त भैंगापन, नाड़ी-दृष्टिकी दुर्बलतावश आयी निगाहकी कमजोरी। एकके दो दिखायी दें। आँखके ऊपरी भागका स्नायुशूल जो गर्मी

से घटे। चक्षुतालमें रक्त अधिक संचित हो, प्रकाशकी चमक आए या आँखके आगे काले भुनगे उडते दिखायी दें ; इसके साथ स्नायुजालकी आम उत्तेजना ( एच० सी० एफ० )। चक्षुनाल प्रदाह ( आर० सी० एफ० )। पलकोंके स्नायुजालको इस दवाने अनेक बार दूर किया है।

**नेटरम म्योर :** दृष्टिमान्ध जो पेशियोंके विकारसे आया हो। इस रोगके लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण दवा है। कनीनिकाके छाले, आँखसे साफ मवाद आए या आँसू अधिक आएँ जबकि आँसूकी नाली बंद हो। समय-समयपर स्नायु-शूल आए और आँसू भी आएँ। तीक्ष्ण आँसू जो त्वचा को खरोंच दें या छोटा-सा छाला डाल दें। कुकरे जबकि आँसू न आते हों। पलकें अधिक मोटी पड जाएँ और उनकी रंगत लाल हो जाए। कनीनिकापर सफेद दाग। इस दवाके घोलसे आँखें हर रोज धोयी जा सकती हैं। इस लवणके जो प्रभाव आँखमें रह जाएंगे, वे हवासे नमी चूसनेकी अपनी स्वभाविक क्षमताके कारण, आँख को तर रखेंगे और धीरे-धीरे दागको घुला देंगे। पलकोंका स्नायुशूल। प्रारंभिक मोतिया। उपतारा प्रदाह **नेटरम म्योर** उन हालतोंमें विशेषरूपसे हितकर है जबकि आँखके अण्डोंमें पानीकी मात्रा बढ गयी हो और इस तरह भीतर दबाव पडता हो। "धुंधमें भी लाभदायक सिद्ध होनेकी संभावना है।"

—आर० एस० सी०।

**नेटरम फॉस .** सुनहरी पीले रंगका, क्रीम जैसे पीले रंगका स्राव आए। श्वेत पटल प्रदाह जिसमें गहरे पीले रंगका या क्रीम जैसे पीले रंगका स्राव आए। आँखके अगले पर्देमें पीब आ जाए। सुबह पपोटे परस्पर सट जाएँ। जबान और तालुपर निगाह रखें और अम्ल डकार आते हैं या नही, यह भी देखना चाहिए। जलते-जलते आँसू आए, आँखें आरक्त, निगाह धुंधली, जैसे आँखोंपर पर्दा पडा है। कंठमाला जनित अभिष्यन्द। आँख आना, भेंगापन जो अँतडियोंके क्षोभ अर्थात कृमियों ( चनूनों ) के कारण आया हो नवजात शिशुओंका आँख आना। इसीके लोशनसे आँख धोनी भी चाहिए। आँख दुखती आ जाए और उससे मात्रामें अधिक, जैसे रंग का और चिपकने वाला मवाद आए, निगाह धुंधली, विशेषतः वृद्धाओंके लिए हितकर है, विशेषतः जब अतिसार भी हो" (डफफील्ड) चिनगारियाँ उडती दिखायी दें। आँखमें छेद होने जैसा दर्द जो गठियावातके कारण आए।

**नेटरम सल्फ :** आँखके ऊपर दर्द, कुकरोंके कारण श्वेतपटल प्रदाह ; कंठमाला जनित अभिष्यन्दमें चमक लगना। डा० एच० सी० ऐलनका मत है कि **ग्रेफाईटिस**को छोडकर पुराने अभिष्यन्दमें इतनी अधिक चमक किसी और औषधमें नहीं पायी जाती।" सफेद पर्देका पीला पड जाना। छाले जैसे

बडे कुकरे और जलते-जलते आँख आएँ, तथा पपोटोंके सिरोंपर जलन हो। आँखके अगले पर्दोंमें पीव आ जाए।

**साईलीसिया :** पपोटोंपर अजनहारी निकले। इसके घोलसे आँख धोनी भी चाहिए, ताकि उसका मवाद वेदना वगैरह निकल जाए और साफ हो जाए। अगर प्रदाह अधिक हो तो फिर **फेरम फॉस** देना चाहिए। कनीनिका गहरा घाव, अगले पर्दोंमें पीव आ जाना। चमक लगना, दिनौंधीके आकस्मिक दौरे; दृष्टिमान्ध और मोतिया जो पाँवका पसीना दब जानेके बाद आए। पपोटोंके आसपास छीटसौलियाँ आपारदर्शी कनीनिका। दायीं आँखके ऊपर स्नायविक-शूल। पपोटोकी सख्ती। कठमालाके कारण आँख आ जाना।

**कल्केरिया फॉस :** पपोटोंके आक्षेपयुक्त विकार जबकि **मैग्नेशिया फॉस** विफल रहा हो। कठमाला विषवालोंका आभ्यान्तरिक कनीनिका प्रदाह। मोतिया को रोकनेके लिए भी हितकर है। दाँत निकलनेके दिनोंका सूगा प्रदाह। चमक लगना। धुध। जब पपोटे और श्वेतपटल अधिक पीडित हो तो यह दवा कोई काम नही करती। शोपरोगसे पीडित और कठमाला विषवाले बच्चोंकी जन्मजात धुँध। जबकि इस दवाके विशिष्ट लक्षण भी हो। फैलनेवाले कनीनिका प्रदाहमें हितकर है जबकि छाले हो और जबकि **काली म्योर**की अपेक्षा चमक लगना कही अधिक पाया जाय और कठमाला प्रवणता हो। मोतियाबिन्द और चेहरेकी चमडीका टी० बी०, कैंसर, टी० बी० या मधिवात आदि।

**कल्केरिया सल्फ :** कनीनिकापर गहरे घाव, आँख आना, पीव गाढी और गहरे पीले रंगकी। आँखका प्रदाह जिसमें गाढा, गहरे पीले रंगका मवाद आए। कनीनिकाके गहरे घाव (**साईलीसिया**) आँखके अगले पर्दोंमें पीव आए यह दवा पीवका शोषण करती है (**साईलीसियाके बाद**)। चक्षुतालप्रदाह। आँखमें जैसे विजातीय द्रव्य आ गया है। चोटके बाद जब आँख को बाँधना पडे। छालोंवाले कनीनिका प्रदाह और सफेद पर्देका प्रदाह, गर्दनकी ग्रन्थियाँ फूली हुई; कोपा प्रदाहित "बच्चोंकी आँख आनेके पीव जैसा स्राव सुखानेमें, मुझे इस दवासे भारी सहायता मिली है"। (एच० सी० एफ०)

**कल्केरिया फ्लोर :** आँखके आगे भुनगे या चिनगारियाँ झडें।

कनीनिकाका दाग, सफेद पर्देका प्रदाह; **मोतिया** पपोटोकी सख्ती। मीबोझियन ग्रन्थिका बढ जाना।

डा० आर० सी० कोपलैण्ड लिखते हैं :

"यह दवा आंशिक अंधेपनमें लाभदायक सिद्ध हुई है। निगाहका अधिक काम करनेके बाद आयी निगाहकी कमजोरी, मैंने अपने दवाखानेमें कितने ही

रोगियोंको कल्केरिया फ्लोर दिया। एक बूढ़ेको भी दिया जिसे मोतिया उतर आया था। निश्चय ही उसकी निगाह में सुधार आया।

## चिकित्साकालीन अनुभव

सिनसिनाटी निवासी डा० एम० स्टीवर्टने निम्नलिखित अनुभव भेजे हैं।

१ बालक २ वर्ष, दुर्बलकाय, खोपडी बारीक बाह्यरंध्र खुला, बायीं आँखका नर्म मोतिया। कल्केरिया फ्लोर ६x दिया गया ३ मास बाद जब खोपडीकी हड्डीका अगला जोड जुडा हुआ मिला। बालककी आम सेहतमें भारी सुधार आया मोतियामें कोई परिवर्तन न आया।

२. एक व्यक्तिकी आँखपर प्रकाशकी किरणें एक बिन्दुपर केन्द्रित न होती थी उसे मुनासिब नम्बरका चश्मा दे दिया गया परन्तु इससे उसका कष्ट पूरी तरह दूर न हुआ। अब उसे आँखोंमें जलन और खुजली होने लगी निगाह कभी-कभी धुँधली हो जाने, आँखके आगे शरीर टूटने और प्रकाशसे भी कष्ट बढनेकी शिकायत की, काली फॉस ६x ने उसकी सारी शिकायतें दूर कर दी।

३ आँसू अधिक आनेकी शिकायत। मुनासिब नम्बर का चश्मा दे दिए जानेपर भी पूरी तरह ठीक न हुई। कल्केरिया फ्लोरने निम्न शिकायतें पूरी तरह दूर कर दी :—

पपोटोंकी श्लैष्मिक झिल्लियोंकी खुजली; आँसू आना, ऐसा जान पडता था जैसे आँखों पर हवा बह रही है। यह तकलीफ चश्मा लगानेसे होती थी।

आभ्यन्तरिक कनीनिका प्रदाह, दाईं आँखकी कनीनिका प्रदाह जो ३ मासमें सारे ऊपरी स्तर पर फैल गया। रोगी केवल उगलियाँ ही गिन सकता था। कुछ दर्द था, हल्की-सी चमक थी और लाली भी थी। पुतलियाँ एटरोपीन देनेसे फैल गयी थी, परन्तु बादमें फिर शीघ्र सुकड गयीं। अमोन म्योर और सिलावार खिलाया गया तथा एटरोपीन आँखमें टपकायी गयी। परन्तु कोई लाभ न हुआ।

आखिर काली म्योर ६x देनेसे लाभ हुआ। कनीनिका प्रदाह और चक्षु-ताल प्रदाह भी काली म्योरसे दूर हो गए।

—एलेन और नार्टन, चक्षुचिकित्सा Ophthalmic therapeutics P 106

'होमियोपैथिक मोनात्सब्लेटर' Homoeopatische Monatsblatter 1882 पृ० ६५ पर मोतियाके १३ केस दर्ज हैं जिनमेंसे ११ कल्केरिया फ्लोरसे ठीक हुए थे। केवल ८ दिनमें ही सुधार दिखायी दे गया था। दूसरे दो रोगियों को कल्केरिया फ्लोरके बाद काली म्योर भी देना पड़ा।

'नार्थ अमेरिकन जर्नल आफ होमियोपैथी' की सख्या सितम्बर १८८५

में डा० जार्ज एसनार्टनने कनीनिकाके घावके कुछ केस दिए हैं जो **काली म्योर** खिलानेसे ठीक हुए।

१ कनीनिका घाव वडे आकार का था और धीरे-धीरे फैलता जा रहा था। तलमें छाला था। सामान्य लाली थी, दर्द नही था, चमक भी साधारण ही थी, आँसू अधिक आते थे, नाकमें संतापपूर्ण दुखन थी, कोनोंमें घाव थी।

**काली म्योर** ६ दिया गया और उसने फौरन असर दिखाया। घाव सूखना शुरू हो गया। पाँच दिनमें छाला मिट गया और १० दिनमें आँख विलकुल ठीक हो गया।

२ कनीनिका घावके किनारे उभरे हुए थे। तलमें छाला था। यह छाले वाले कनीनिका प्रदाहका परिणाम था। हर तरहकी चिकित्सा होनेपर भी घाव फैलता ही गया। घावके आस-पासकी जगह धुँधली पड गयी।

**काली म्योर** ६ दिया गया और उसका प्रभाव तात्कालिक सिद्ध हुआ। घाव भरने लगा और २ सप्ताह में प्रदाहके सारे लक्षण मिट गए।

३. इस रोगीको भी छाले वाले कनीनिका प्रदाहके कारण कनीनिका पर घाव आया। कनीनिकाके पर्दोंमें पीव भी आ गयी। चमक अधिक थी। लाली मामूली थी और दर्द नही था। कई दवाएँ दी गयी और किसीमे लाभ न हुआ।

**काली म्योर** ३ ने सारा उपद्रव दूर कर दिया।

४ एक वालककी कनीनिकाने केन्द्रके पास गहरा घाव था। उसमें मवाद भी काफी था। अगले पर्दोंमें भी दर्द था। लाली सामान्य थी और दर्द नही था। एटरोपीन डाली गयी। अगले पर्दोंकी पीव सूख गयी और **काली म्योर** ३ देनेसे २४ घण्टे वाद वडी तेजीसे सुधार आया।

५ श्रीमती (क) की दाई आँख पर एकाएक सूजन आ गयी। एक चक्षु, विशेषज्ञने उसे आपरेशन करानेकी सलाह दी। पलकोके नीचे गहरे पीले-हरे रगकी मवाद भरी पडी थी और पलकोंको वडी मुश्किलसे खोला गया। सफेद पर्देमें भी मवाद आ गया था। और निगाह विलकुल खत्म हो गयी थी।

**काली सल्फ** ३ ने सारी सूजन और प्रदाहात्मक लक्षणोंको १॥ दिनमें पूरी तरह खत्म कर दिया (क्वीस)।

६. श्रीमती 'अ'; आयु ४६ वर्ष, ७ मई १८९२ को कनीनिका प्रदाहका इलाज कराने आयी। उसे डा० वोरिकने मेरे पास भेजा था। घाव वायीं आँखमें था। सूजन पिछले ५ माससे थी। ऐलोपैथिक इलाज हुआ और उससे कोई लाभ न हुआ पलकें और सारी कनीनिका वुरी तरह प्रदाहित थी। कनी-निका पर छाले थे। कनीनिकाके किनारों पर सफेद घेरा वना हुआ था। एक

घना, बेक़ायदा दाग था जिसने आस-पासकी जगहको पूरी तरह आक्रान्त किया था। यह दाग़ दृष्टि बिन्दु तक पहुँच रहा था। वह बड़ी-बड़ी चीजों को कनखियोंसे देख सकती थी। केन्द्र भागमें दृष्टि नहीं थी।

६ मई को उसे **काली म्योर** ३x, तीन-तीन घण्टे बाद दिया गया। पहले २४ घण्टेमें वर्णनीय सुधार आया। सात दिन बाद **काली म्योर** ६x चार-चार घण्टे बाद दिया और अन्त तक जारी रहा। २३ मई को निगाह ५।२० थी। धुँधला भाग काफी हद तक साफ हो गया था। दाग़ लगभग मिट गया था। और आसानीके साथ यह कहा जा सकता था कि कुछ सप्ताहमें **काली म्योर** व्यवहार होते रहनेसे निगाह लौट आएगी। —एच० सी० फ्रेंच।

७. आठ सालके बालककी दोनो आँखोंमें धुँध थी। घाव ताज़ा था। पीब मामूली थी और लाली न थी। **काली म्योर** ६x देनेसे घाव भर गया। मवाद सूख गया।

८ कनीनिकाके बाहरी सिरे पर मामूली-सा घाव था **काली म्योर** देनेसे वह ठीक हो गया।

९ बायीं आँखकी कनीनिकाके निचले किनारे पर छोटा-सा घाव था। उसमेंसे होकर बहुत-सी नाड़ियाँ गुजरती थीं। ऐसा जान पड़ता था जैसे आँखोंमें रेत पड़ा है। पपोटोंके सिरों पर पपड़ी थी।

**काली म्योर** १२ खिलाया गया और आँखमें डाला गया १० दिनोंमें कनीनिका साफ हो गयी। ३ सप्ताहमें पपोटे भी साफ हो गए। पपोटोंकी यह तकलीफ उसे २ सालसे था। —डब्ल्यू० पी० वेस्सल हेफ्ट एम० डी०।

१०. डा० कोच लिखते हैं: वृद्धा ७२। उसकी आँखोंमें हर समय जलन होती थी और जलते-जलते आँसू गिरते थे। यह तकलीफ सुबह ८ बजेसे शुरू होती थी और सूर्यास्त तक जारी रहती। मै बचपनसे देखता आया था कि वह आँखोंपर हरा चश्मा पहनती थी। रातके समय वह बेहतर रहती। प्यास अधिक थी परन्तु भूख नहीं थी। सफेद पर्दे पर पुराना प्रदाह था। नाकके दोनों ओरकी खाल उधड़ चुकी थी और वहाँ एग्जिमा था। यह सब तीक्ष्ण आँसूओंका परिणाम था। आँसूकी नाली फैल गयी थी परन्तु उसमें कोई रुकावट नही थी। मुझे यह झिझक हुई कि **काली म्योर** या **आर्सेनिक**। परन्तु चूँकि आँसू अधिक आनेकी हालतमें शुसलरने **नेटरम म्योर**का व्यवहार करानेकी सफारिशकी, अतएव मैंने उसे यही दिया। दवा पानीमें घोलकर दी गयी और एक-एक छोटा चमचा दिनमें ३ बार दिया गया। ३ सप्ताहमें लक्षणोंमें भारी कमी आयी और कुछ दिन बाद वे बिलकुल मिट गए।

—शुसलरसे उद्धृत।

११. मैं अबतक कण्ठमालाके रोगियोंको **नेटरम फॉस** ही देता आया हूँ और वह भी तब जब **कल्केरिया फॉस** आदि विफल सिद्ध हुए हो। उनमेंसे एक केस वर्णनीय है, क्योकि उसे बहुत जल्दी आराम आया। रोगिणी ८ साल की थी और उसके सफेद पर्दे पर तीव्र प्रदाह था। चमक अत्यधिक थी। मुझे यह भी बताया गया कि उसे कई साल पहले चेचक निकली थी। और तबसे आँखका कष्ट है। **कल्केरिया कार्ब** आदि दवाएँ कोई काम न कर सकीं गर्दनकी बढी हुई ग्रथियों और क्रीम जैसे रंगके मवादके सहारे मैंने **नेटरम फॉस** अजमानेका निश्चय किया। मैंने दिनमें इसकी ३ मात्राएँ दी। एक सप्ताह में सारा उपद्रव मिट गया। 'शुसलर' से उद्धृत।

१२. लूईजी, आयु १६ वर्ष, उसकी दायी आँख एक सप्ताहसे आरक्त थी। उसने बताया कि पिछले ५ दिनसे उसकी निगाह बिगड रही हैं। आँखकी जाँच करनेपर पता चला कि साधारण चमक है, आँसू आते हैं, सफेद पर्दा लाल है और पलकें दबी हुई हैं। कनीनिका (पुतली) बहुत धुँधली थी, परन्तु उस पर छाला नही था। स्तर साफ था। निगाह इतनी कमजोर थी कि वह आँखसे केवल ६ इञ्चकी दूरीपरसे उंगलियाँ गिन सकता था। स्पष्ट तो न हुआ, पर इतना सकेत मिला कि रोग आतशकके कारण नही वरन् कण्ठमालाके कारण आया है।

आँखमें **एटरोपीन** टपकाई गई और खानेके लिए **काली म्योर** दिया गया। इस तरीकेसे वह बिलकुल ठीक हो गया लगभग १॥ मास बाद उसकी निगाह १५।४० थी और चार माम बाद उसकी निगाह नार्मल थी अर्थात् १५-१५ परन्तु अब रोग बायीं आँखमें आता दिखाई देने लगा। वहाँ प्रदाहके सामान्य लक्षण आए और पुतलीका बाहरी किनारा कुछ धुँधला नजर आया। निगाह १५-३० थी। वही चिकित्साकी गई परन्तु इस बार उससे कोई लाभ नजर न आया और २ सप्ताह बाद पुतली अधिक धुँधली हो गयी, लाली बढ गयी दर्द बढ गया जैसे आँखोंमें कुछ पड गया है। चमक और आँसू भी बढ गये और निगाह घट गयी अर्थात् केवल ६ इञ्चसे उगलियाँ गिन सकता था।

रस टक्स ६x के साथ **काली म्योर** ६x दिया गया और दुर्बलताकी स्थिति मिट गई प्रदाहके लक्षण बडी फुर्तीसे घट गये। बादमें केवल **काली म्योर** दिया गया। इससे सुधार जारी रहा और कुछ दिनमें निगाह नार्मल हो गयी।

१३ डा० कोशने सूचना दी है कि उनके पास एक खेत कर्मचारी आया और बताया कि उसे दिखायी नही देता। कुछ दिन पहले लकडीका एक टुकड़ा उसकी आँखमें घुस गया था। इलाज हुआ, जुलाब दिए गए और

ठण्डे पानीकी पट्टी दी गई परन्तु उसे लाभ न हुआ और उसकी निगाह जाती रही लक्षण निम्नलिखित थे ; तल छालोंसे भरा हुआ था, सफेद पर्दा फूल गया था, पपोटे भी क्षुब्ध और प्रदाहित थे, पुतली धुधली थी। अगले पर्दे धूएँ जैसे मैले नजर आते थे, विशेषतः पुतली और उपतारेके दरम्यान। कुछ मवाद भी तैरता हुआ साफ नजर आ रहा था मुझे कोई विजातीय दृश्य नजर आया। आँखमें सख्त जलन थी, जैसे किसी विजातीय दृश्यके कारण होती है, आँसू निरन्तर बहते रहते थे। उसने अपनी आँखें बाध रखी थी। भूख अच्छी थी। और नाडीकी चाल भी नारमल थी। चिकित्साकी दृष्टिसे मुझे दो विकारों का इलाज करना था, एक अगले पर्दोंमें आयी पीवका दूसरे सफेद पर्देका।

सबसे पहले मैने उसे **फेरम फॉस** २-२ घण्टे बाद दिया। एक सप्ताहमें जलन, दर्द और आँसू घट गये। एक सप्ताह बाद रोगीने शिकायतकी कि उसे कुछ दिखाई नही देता। अब मेरे सामने दो काम थे। मवाद सुखाना और पुतलीको साफ करना। पहली हालतके लिये मैने **हीपर सलफर** दिया। दो सप्ताह तक यह खिलानेसे भी कोई लाभ न जान आया। तब मैने उसे **कल्केरिया सलफ** पानीमें मिलाकर दिनमें ३ मात्राएँ दी। एक सप्ताहके बाद रोगी आया तो बडा प्रसन्न था। उसने बताया कि दायीं आँखसे कुछ दिखाई देने लगा है। मैने देखा पुतली ( कनीनिका ) पहलेसे अधिक साफ थी और मवाद भी कम था। अब मैने दवा सुबह शाम देनी शुरू की। ३ सप्ताहमें सारा मवाद सूख गया। पुतलीका धुँधलापन बिलकुल मिट गया और उसे दिखाई देने लगा। इसके साथ ही साथ सफेद पर्दा भी साफ हो गया।

'शूसलर' से उद्धृत।

१४. महिला ५६ वर्ष, उसे दायी आँखसे दिखाई देना बन्द हो गया था। कारण और कार्य निम्नलिखित थे : सर्दीका मौसम था। और वर्फ गिरी हुई थी। सूरज चमक रहा था। उस धूपमें उसे कुछ दूर चलना पडा। उसे चमक लग गयी। सहसा दायी आँखमें सख्त दर्द आया। उसने कुछ वर्फ उठाकर आँखपर रख ली ; इससे उसे कुछ आराम आया। घर पहुँच कर एक डाक्टरको बुलाकर आँख दिखायी गयी। उसने जोक लगायी और तेज जुलाव दिया। वह तीन सप्ताह खाटमें पडी रही। तब उसने शहरमें आकर एक चक्षु विशेषज्ञको अपनी आँख दिखायी। उसने जुलाव दिया और आँखके चारों ओर लगानेके लिए एक मरहम। 'पीला मरहम' दिया। इसका उसके मसूढों पर बुरा असर पडा और दाँत हिल गये। उसने मरहम बन्द कर दिया। निगाहमें अब भी कोई परिवर्तन न हुआ।

तब वह नाम सुनकर प्रोफेसर रॉथमण्डके पास गयी। उन्होंने उसे दवा

देकर कहा कि यदी इससे आपको आराम न आया तो फिर आप आयुभर अधी रहेगी। उन्होने उसे **पोटाश आयोडायड** दिया था। इससे भी उसे कोई लाभ न हुआ। क्रमशः कमजोर होने लगी। परीक्षा करनेपर मालूम हुआ कि सफेद पर्दा पुतली और उपतारा ठीक है। इससे पता चला कि खरावी आँखके अन्दर है। चक्षुताल धुँधले नजर आये। स्वच्छ तालसे पीछे तक धुँधलापन फैला हुआ था। विभिन्न दिशाओंमें प्रकाश डालकर चक्षुतालको अच्छी तरह जाचकी गयी। यह धुँधला था। नाडियाँ साफ थी, कहीं-कही दाग भी नजर आये। इनमेंसे कुछ वडे थे। जैसे वे सडे हुए रक्तके अवशेप हों। रक्त नाडियाँ दिखाई न दी। वे पीली थीं और स्वाभाविक दशाकी अपेक्षा अधिक सुकडी हुई थीं। जव समझ आयी कि इस मवादका शोपण होना चाहिए। क्योंकि निगाहके धुँधलेपनका कारण यही था।

प्रो० रॉथमण्डके मतानुसार चक्षुतालका प्रदाह सदा ही सयोजक तन्तुओसे आता है। वहाँ जो मवाद आया था, वह जमा हुआ था और निःसन्देह यह तन्तुमय था और इसके कारण वहाँ अपकर्प आ सकता था, इस विकारके लिये मुझे **काली म्योर** सर्वोत्तम नजर आया। मैंने उसे ८ पुडियामें दो सेण्टीग्राम दवा दी और उसे हिदायत दी गयी कि वह शराव पीनेके ग्लासको पानीसे आधा भर ले और उसमें एक पुडिया घोल ले और उसमेंसे एक चम्मच सुवह-शाम ले। १४ दिन वाद वह आयी तो वताया कि हालत पहलेसे अच्छी है—वही दवा और दे दें।

एक दिन वडे सवेरे वह मेरे पास आयी और वडी खुशीसे वोली कि आज पहली वार मैं अपनी घरकी खिड़की साफ तौर पर देखी। मैंने आँखकी जाँच की तो उसे वेहतर पाया। **काली म्योर** जारी रहा और चार मासमें वह विलकुल ठीक हो गयी।
—शुसलर

१५. रोगिणी १६ वर्प, उसे पुतलीका प्रदाह था। वायी आँख पर प्रदाह अधिक था। चमक लगती थी, कनीनिका कुछ धुँधली थी। कही-कही लाली थी।

**कल्केरिया फॉस**ने उसे विलकुल ठीक कर दिया। जव पलकें और सफेद पर्दा प्रदाहित हों, तो मुझे यह दवा काम करती नजर नही आयी।

—आर० टी० कूपर।

१६ रोगी वही-खातेका काम करता था। आयु २८ वर्ष निगाह पर अधिक जोर पड़ा। उसे ऐसा जान पडता था जैसे ववाईयाँ फटी हैं। वार-वार आँखें झपकता था और पलकें खीचता था। उसकी निगाहें तिरछी थी। वह १५ फुटकी दूरीसे नं० १५ कठिनतासे पढ सकता था। चश्मा लगानेसे उसे

कोई लाभ न हुआ १२ इञ्च दूर रखी हुई मोमबत्ती उसे दो दिखायी दें। आभ्यान्तरिक पेशियोंके आंशिक लकवेके कारण उसको धुंधला दिखायी देता था।

**नेटरम म्योर** १२ से उसके सारे कष्ट दूर हो गए।—टी० एफ० ऐलेन।

१७ स्व० डा० कफकाने एक केस दिया है। जिसमें उन्होंने बताया है कि ठण्डी हवाका झोंका लगनेसे एक आदमीको दायी आँखसे निरन्तर आँसू आने लगे। यह विकार आँसूकी नालीमें रुकावट आनेसे आया।

**नेटरम म्योर** ६ का व्यवहार करते हुए चार मासमें वह ठीक हो गया। कुछ दिन बाद यही विकार उसे फिर आया। तब भी उसे यही दवा दी गयी और इससे उसे उसी प्रकार लाभ हुआ।

—'होमियोपैथिक 'रिकार्डर' जनवरी १८९३।

१८ डा० एम० ई० डगलमने एक केस दिया है। एक गर्भिणीको पेशाबमें अलब्यूमन आने लगा और सहसा वह अन्धी हो गयी।

**काली फॉस** ६x ने उसे ठीक कर दिया।

—'अमेरिकन मेडिक्ल मैगजीन', अगस्त १८८६।

**१९ काले पर्देके प्रदाह और चक्षुताल प्रदाहमे आए अन्धपनको काली म्योर, नेटरम फॉस, कल्केरिया फॉस और काली फॉसने ठीक कर दिया :**

रोगीकी आयु १४ वर्ष, वह कुछ दिनोंसे स्नायविक दुर्बलतासे पीड़ित था। वैसे भी वह वात प्रकृतिका था। सबसे बड़ी तकलीफ आँखमें थी। चश्मा लगाने पर उसकी निगाह दिनों-दिन कमजोर होती गयी। आखिर यह पता लगा कि वह साफ देख ही नही सकता। उसे आँखके कई विशेषज्ञों को दिखाया गया। एक विशेषज्ञने तो यह कह दिया कि **एक आँख बिलकुल बेकार हो गयी है,** और दूसरी आँख भी जल्द ही खराब हो जाएगी। उसका निदान था कि काले पर्देमें और चक्षुतालमें प्रदाह आ गया है या यों कहिये कि दोनो जगहकी रक्त नाड़ियोंमें पानी आया है। मैने यह केस अपने हाथमें लिया और चेष्टा करने तथा अच्छी आँख को बचानेका प्रयत्न करनेका आश्वासन दिया।

उसे स्कूलसे उठा लिया गया और उपर्युक्त दवाएँ दी गयीं। २ मासमें उसकी निगाहमें आश्चर्यजनक सुधार आया। तब उसे फिर एक चक्षुविशेषज्ञ का दिखाया गया। वह भी यह परिवर्तन देखकर बहुत हैरान हुआ। जो आँख खराब थी उसका मवाद एकदम सूख गया था। और दृष्टि बहाल हो गयी थी। अब वह स्कूल जाने लगा।

—डा० सी० स्टिरलिंग सॉण्डर एल० आर० सी० पी० लण्डन।

# ज्वर सादा ( Fever Simple )

'देखिए ज्वर विशेष' See also Special Fever

**फैरम फॉस :** नजले जुकामका ज्वर जिसमें नाडीकी चाल तेज हो हर दर्जेमें थोडा-बहुत ज्वर रहे , हर तरहके प्रदाह वाले ज्वर जैसे गठिया वातका ज्वर , उनके लिए यह मुख्य औषध है। चोट चपेटसे आए ज्वरोंमें सर्वोत्तम प्रतिवेधक है। सामान्य ज्वर। दोपहर बाद एक बजे सर्दी लगे। हथेलियों, चेहरे गले और छातीमें सूखी गर्मी लगे।

**काली म्योर :** जब कब्ज भी हो और जीभपर सफेद रंगकी मैलकी मोटी तह आए। नजले जुकामका ज्वर, भारी शीत , जरा-सी शीत लगते ही काँप उठे और अगीठीके पास बैठना पडे, फिर भी सर्दी लगे। बिस्तरमें कपडा ओढकर पडे रहनेसे आराम मिले। —हाल ब्रुक।

**काली सल्फ :** जब शाम को गर्मी आए, तो यह दवा पसीना लानेमें सहायता करती है। यह दवा देकर रोगीको गर्म कपडा ओढा देना चाहिए, यह दवा बार-बार देनी चाहिए। ऐसे ज्वर जो खून गन्दा होनेसे आएँ।

**नेटरम म्योर :** मौसमी इनफ्लूएजा जिसमें नाक खूब बहे और आँसू अधिक आएँ।

**काली फॉस :** वातज्वर जिनमें ताप अधिक हो , नाडीकी चाल तेज और अनियमित। स्नायविक उत्तेजना या भारी दुर्बलता, अवसाद और खिन्नता। ऐसे ज्वर जिनमें ताप कम हो, मुँह सूखे, दाँतोंपर मैल आए और प्रलाप। ऐसी हालतोंमें यह दवा बहुत ही शानदार काम करती है। ( भीडो )।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१—श्री, के, आयु ३८ वर्ष , पसीना आया हुआ था कि सर्दी लग गयी। परिणामस्वरूप हाथ पाँवमें चीरने-फाडनेकी तरहके दर्द आए, कान गूजने लगे, ऊँचा सुनाई देने लगा और पेशानीमें दर्द आया। इन दर्दोंके साथ ज्वर भी था। रात पसीना भी अधिक आता था, परन्तु उससे आराम नहीं आता था। भूख खराब और जबान पर सफेद मैलकी तह थी।

मैंने उसे **काली म्योर** पानीमें मिलाकर २-२ घण्टे बाद दिया। आम हालतमें सुधार आया। परन्तु दर्द और पैरोंमें सुन्नपनमें कमी न आयी, पैरों पर अब भी पसीना नहीं आया था। अब उसे **साईलीसिया** सुबह शाम दिया गया। पैरों पर पुनः पसीना आया और यह आते ही उसके बाकी सारे उपद्रव मिट गए और वह स्वस्थ हो गया। —शुसलरसे उद्धृत।

२—डा० जी० एच० मार्टिनने एक केसकी रिपोर्ट दी है। रोगीको १४०° ज्वर था। आम थकान थी, पेशियोंमें अकडाव था, सर दर्द था और भूख मिट गयी थी।

उसे **फैरम फॉस** १२x दिया गया जिससे उसे कोई लाभ न हुआ। तब उसे **फैरम फॉस** ६x दिया गया और उससे उसे तात्कालिक लाभ हुआ।

## भगन्दर ( Fistula-in-ano )

**कल्केरिया फॉस :** **कल्केरिया फॉस** १x और **साईलीसिया** ३x की एक-एक मात्रा दिनमें ३ बार, हर सप्ताह बदल कर दें। यह डा० सी० आर० फ्लरीका परीक्षित है।

**कल्केरिया सल्फ :** मलद्वारका वेदनापूर्ण घाव, अँतडियोंसे पीव जैसा मल आए।

## पित्तपथरी ( Gall Stones )

**कल्केरिया फॉस :** पित्तपथरीके कारण आक्षेप आए।

**नेटरम सल्फ :** कमर पर तग कपडे सहन न हों।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ विवाहिता, आयु ३७; कई बडे बच्चोंकी माँ है। कई सालसे पित्त की कै के बाद सर दर्द आता था। चेहरा बैंगनी, गर्मीसे दर्द घटता था। दर्द बायीं आँखमें आता था और वहाँसे पेशानी तक जाता था। सरके पिछले भागमें खिचावके साथ दर्द आता था। त्रिक भागसे दर्द शुरू होकर जंघाओं तक जाता था और दायीं ओर इसका जोर होता था। घबरायी हुई; जरासी बात पर चौंक उठे, सशक, बहुत चुस्त। ३ मास पहले पित्तपथरीका शूल हुआ। पाँव सर्द हैं। पिछले १६ सालसे मासिकके दिनोंमें सर दर्द आती है। मासिकका रक्त गाढा, छिछडेदार, गहरे रगका, केवल एक दिन जारी रहता है। जब बीमार हो तो पाखाना हल्के रगका आए और जब बेहतर हो तो गहरे रंगका आता था। आत्म सयमसे काम लेना पड़ता है, अन्यथा आत्म-हत्या करना चाहती थी नाडी प्राय. मन्द रहती थी। हर समय थकी-थकी-सी रहती थी। सर्जनने पित्तपथरीका आपरेशन करानेका परामर्श दिया था।

**नेटरम सल्फ**ने उसे बिलकुल ठीक कर दिया। पित्तपथरियाँ गायब हो गयी।

२ व्यापारी था, वजन १८० पौण्ड, आयु ३०, पित्ताशयमें दर्द था। पित्तपथरीका दर्द। यह दर्द अजीर्णके बाद आता। दर्द केवल टहलनेसे घटता। गुर्दों और जंघाओंमें भी दर्द था। पेशाव गँदला था। पेशाव कर चुकनेके बाद भी बूँद-बूँद टपकता था। दायी पसलियोंके पीछे मन्द-मन्द भारी दर्द था। यह दर्द निरन्तर रहता और स्तन तक जाता। छातीमें छूरा लगने जैसा दर्द होता। खाना खानेके बाद बारह उगल आनेमें दर्द आता।

**नेटरम सल्फ**से वह ठीक हो गया। डा० केण्ट **"मैटिरिया मेडिका।"**

डा० जुलियासी लूसने **'होमियोपैथीशियन'** मई १९१२ में एक बड़ा दिलचस्प केस दिया है। जो **नेटरम सल्फ ५०** हजारसे ठीक हुआ। इस औषधका निर्वाचन निम्न लक्षणोंके आधार पर हुआ :

बार-बार पित्तशूल आता था। पित्ताशयने एक तिहाई पेट घेर रखा था। ठण्डी चीजोंके लिए इच्छा होती थी। बार-बार करवटें बदलनी पड़ती; रातको ११ बजेसे सुबह ६ बजे तक कष्ट बढ़ता था। हरकतसे स्थानीय कष्ट बढ़ता था। टांगें समेटनेसे और गर्मीसे आराम मिलता था। पेशावमें झागदार तलछट था। तापमान नार्मल नाडी १०८, पाखानेका वेग पड़ता था, परन्तु मलकी जगह हवा आती थी। जीभ सूखी और फटी हुई, मैली। प्यास सामान्य थी। जंघामें तेज दर्द था। ३ दिनोंमें वह बिलकुल ठीक हो गयी।

## आमाशयके विकार ( Gastric Derangements )

( कै से तुलना करें )

**फैरम फॉस :** आमाशय ज्वरकी शीतावस्था। तरुण आमाशय प्रदाह जिसमें दर्द अधिक हो, सूजन और कामला हो, विशेषत. यदि खाये-पिएकी कै भी हो। मन्दाग्नि जिसके साथ चेहरा तमतमाया हुआ और गरम हो तथा आमाशय स्पर्शकातर हो। अजीर्ण जिसके साथ कूटने जैसा या तपकनके साथ दर्द हो, गर्मी लगे, चेहरा लाल या तमतमाया हुआ हो या अनपचकी कै हो और जीभ बिलकुल साफ हो। आमाशयकी रक्त नाड़ियोंकी दीवारोंकी शिथिलताके कारण आयी मन्दाग्नि जिसके साथ आमाशयमें जलन हो, कोमलता हो, चेहरा लाल हो और खाना खानेके बाद आमाशयमें शूल हो।

अफारा, जिसके साथ खाये पियेके स्वादकी डकार आएँ। बच्चोंका आमाशय शूल जो सर्दी लगनेसे आया हो, विशेषत. जबकि दवाव पड़नेसे

दर्द बढ़ता हो। आमाशय शूल जो सर्दी लगनेसे आया हो और जिसके साथ पतले पाखाने आएँ, क्योंकि अँतड़ियाँ तरलका पूरा-पूरा शोषण नहीं करतीं, अँतड़ियोंकी शिथिलतावश पतले पाखाने आएँ। अरुचि, दूधसे घृणा; खाना खानेके बाद मिचली और कै हो जाए। कै में जो चीज निकले वह अत्यन्त खट्टी हो। अम्ल चीजें न खा सके। मछली, मांस, कॉफी या केक आदि न खा सके। जलपान करनेसे पहले ही, सुबह सवेरे कै हो जाए। सर दर्द आए जैसे सरपर हथौड़े बरस रहे हों, विशेषतः पेशानी और कनपटियोंमें, अतएव रोगी डरता है कि कहीं मृगीका दौरा न पड़ जाए। हर सप्ताह अतिरज हो जिसके साथ पेट और त्रिक भागमें दर्द भी आए। अशान्त निद्रा, भयावह स्वप्न। सुबह भी आराम न मिले। तंग कपड़े बर्दाश्त न हों। ठण्डे पानीकी प्यास। ब्राण्डी या शराब जैसी उत्तेजक वस्तुओंकी इच्छा। चिकने-चिकने डकार आएँ।

**काली म्योर :** आमाशय या पित्तके विकार जिसके साथ जीभपर भूरी, सफेद मैल आए या इसे नक्शे जैसी आड़ी तिरछी लकीरें बने। मन्दाग्नि, दायीं ओर कंधेके नीचे दर्द या भारीपनकी अनुभूति, विशेषत. जबकि पकवान न पचते हों। या आँखें बड़ी और बाहर निकली नजर आए। अफारा, जिसके साथ जिगरकी सुस्ती हो और जीभपर भूरी या सफेद मैलकी तह आए। आमाशय प्रदाह जो अधिक गर्म पेय पीनेसे आया हो। ऐसी हालतमें यह दवा फौरन दे दें। आमाशय प्रदाहका दूसरा दर्जा। अजीर्ण जिसमें जीभ सफेद हो और यह विकार पकवान खानेसे आया हो। स्वाद कड़वा, घी या मक्खन आदि खाकर जब तबीयत बिगड़ जाए। अपारदर्शी मवादकी कै हो। कब्जके साथ आमाशय शूल।

**काली फॉस :** खाना खानेके तत्काल बाद ही अत्यधिक भूखका बोध, या मिचली हो। स्नायविक विकार, खिन्नता या दुर्बलता, ऐसा जान पड़े जैसे अभी जान निकल जाएगी। अफारा जिसके साथ हृदयमें कष्टकी अनुभूति हो या आमाशयके बाएँ भागमें कष्ट आए; बायें भागमें थकान लाने वाला दर्द आए और हृदयमें दुर्बलता आए। आमाशय प्रदाह यदि वह इलाजके दौरान बहुत देरसे आए। इसके साथ दौर्बल्य। अजीर्ण जिसके साथ स्नायविक अवसाद भी आएँ। आमाशय शूल जो डर या जोशके कारण आए। आमाशय का घाव या कैंसर। अधिक प्यास। आमाशयमें ऐसा जान पड़े जैसे कोई दाँतोंसे काट रहा है; यह कष्ट खानेसे घटे। हवाके डकार आएँ जिनका स्वाद कड़वा या खट्टा हो। पेटके आधे ऊपरी भागमें किसी थोड़ी-सी जगह निरन्तर वेदना हो।

डा० लेपर्डका मत है कि "**काली फॉस**का रोगी **अनाकार्डियम**की अपेक्षा कही अधिक स्नायविक होता है। **अनाकार्डियम**में खान-पान और आहार व्यवहार सम्बन्धी भूलोंके कारण रोग बार-बार पलटकर आता है। और **काली फॉस**में जोश या चिन्ताके परिणामस्वरूप रोगके उपद्रव बार-बार रोग पलट कर आता है।"

**काली सल्फ :** पुराना अतिसार, जबकि जीभपर गहरे पीले रंगकी मैल हो। अजीर्ण जबकि जीभका विशिष्ट लक्षण भी हो। मदाग्नि **जिसमें यह अनुभूति पायी जाए कि आमाशयमे बोझ रखा है या आमाशय भरा हुआ है और इसके साथ जीभपर गहरे पीले रंगकी मैल।** अजीर्ण जिसके साथ दर्द हो और मुहमें लार भर-भर आए। (**नेटरम म्योर** और **काली म्योर**के बाद) और आमाशयशूल जो कूल्हेकी हड्डीके चन्द्राकार भागसे नाभि की सीधमें चले और गहराईमें हों। आमाशयशूल जब **मैग्नेशिया फॉस** कोई काम न दे सका हो।

**मैग्नेशिया फॉस :** आमाशयशूल, ऐंठनके साथ दर्द, जिसके साथ छोटे-छोटे डकार आएँ और उनसे कोई आराम न मिले, जीभ साफ। पेटमें मरोड़के साथ दर्द जैसे वहाँ कोई रस्सी बाँधी जा रही है या शरीरके इर्द-गिर्द रस्सी बाँधी जा रही है। अफारा जिसमें दर्द भी हो और डकार आनेसे कोई लाभ न हो अजीर्ण जिसमें आक्षेप और मरोड़के साथ दर्द हो और जीभ साफ हो। आमाशयकी पेशियोंमें वेदनापूर्ण सुकड़ाव या घुटन। आक्षेप-युक्त हिचकियाँ। खाना खानेके तत्काल बाद कै हो जानेका झुकाव।

डा० डफफील्डने लिखा है : जब बाकी सभी दवाएँ बेकाम रही हों तो आमाशयशूलको रोकनेके लिए यह दवा काम करती है। और आमतौरपर आमाशयके मरोड़ को भी इसी प्रकार रोकती है।

रोगी चीनी खानेके लिये लालायित रहे।

**नेटरम म्योर :** अजीर्ण जिसमें पेट दर्द भी हो और मुहमें लार अधिक आए, इसके साथ साफ, झागदार पानीकी कै हो, या रेशेदार लार आए। आमाशयशूल जिसके साथ मुहमें लार अधिक आए। लार गलामें लार अधिक आए। यह लार अम्ल नहीं होती और इसके साथ प्रायः कब्ज भी होती है। साँस दुर्गन्धित होता है। बहुत लालची बनकर और अधीर होकर, मरभुक्खे की तरह खाए। बीड़ी-सिगरेट तथा रोटीसे अरुचि, प्यासकी अधिकता। मुँहका स्वाद खट्टा। आमाशयमें भारी दुर्बलताका बोध हो जैसे अभी प्राण निकल जाएगे। आमाशयपर लाल दाग पडे।

**नेटरम फॉस :** अम्लता, खट्टे डकार आएँ, लैक्टिक ऐसिडकी अधिकता। भूख मिट जाती है। हल्का-सा अजीर्ण मालूम दे। सुबह जगानेपर जीभपर पतली-सी गीली मैलकी तह नजर आए। जीभके पिछले भाग पर क्रीम जैसे रंगकी मैल आए। अफारा जिनमें खट्टे डकार आएँ। **आमाशयके विकार जिसमें अम्लता लक्षणके हों।** आमाशयके घाव, दर्द और अजीर्ण, मुँहका स्वाद खट्टा। खाना खानेके बाद अजीर्ण और सख्त दर्द आए, या परिणामशूल अर्थात खाना खानेके २ घण्टे बाद दर्द आए जिसके साथ अम्ल डकार भी आएँ। आमाशयशूल जब कृमि भी हों और अम्ल डकार आएँ। आमाशयका घाव, खाना खानेके बाद एक जगह दर्द आए और, कभी-कभी खट्टे डकार भी आएँ, भूख मिट जाए, चेहरा लाल हो जाए और उसपर चकत्ते पड़ जाएँ, तब भी ज्वर न हो। कलेजेमें जलन हो और अम्ल पित्त जिसमें काफ़े जैसे गहरे रंगकी कै हो। लार आए। पकवान या गरिष्ठ चीजें खानेके बाद जब आमाशयकी खराबियाँ आएँ। याद रखिये कि **नेटरम फॉस** स्नेह ( घी मक्खन आदि चिकनी चीजो ) को तेलकी तरह तरल बना देती है।

**नेटरम सल्फ :** पित्तज विकार, पित्तकी अधिकता, सुबह सवेरे मुँहका स्वाद कड़वा हो, कड़वे तरलकी कै हो, जीभको रंगत हरी-सी भूरी या हरी-सी मैली ; या हरे-से रंगके पतले दस्त आएँ , पित्तातिसार जिसके साथ सरदर्द, चक्कर आना और सुस्ती-थकान भी शामिल हो। आमाशय विकार जिसमें सुबह मुँहका स्वाद कड़वा हो। खट्टे डकार आएँ कलेजा जले और पेटमें हवा अधिक बने और कष्ट मैदेकी बनी चीजें खानेसे बढ़े। अपान वायु गुदाचक्र और चढ़ती आँतमें आकर रुक जाती है या जिसके कारण सख्त मरोड़ आता है। जैसे आटा गूँधते (सानते) हैं उस तरह पेटको दबानेसे आराम आए, गड़गड़ाहट हो और जिसमें सूई चुभने जैसा दर्द आए। —डा० लेपर्ड, **नार्थ अमेरिकन जर्नल आफ होमियोपैथी**, फरवरी १८८८। कमरपर तंग कपड़े सहन न हों।

**कल्केरिया फॉस :** जब आमाशयकी किसी खराबीसे ज्वर आया हो, तो यह औषध अन्तरकालीन औषधके तौरपर इस्तेमाल करायी जाती है। कमसे कम मात्रामें खाना खानेसे भी आमाशयमें दर्द आ जाता है। कलेजेमें जलन होती है, दबावमे आमाशयमें सन्तापपूर्ण दुखन होती है, **सूअरका मास, रानका मास, नमकीन मास और गुना मास खानेकी इच्छा।** सुबह मुँहका स्वाद कड़वा और उसके साथ-साथ दर्द आए। मन्दाग्नि

जिसमें भूख हो, पेटमें अफारा और दर्द, जो खाना खानेसे और डकार आनेसे अस्थायी रूपसे घट जाए।

डा० फोस्टरका मत है : "पेटमें हवा अधिक आनेके लिए यह अमोघ और सिद्धौपध है।"

खाना खानेके १ घण्टा वाद **कल्केरिया फॉस** १x थोडेसे पानीमें मिलाकर देनेसे समीकरण ठीक-ठीक हो जाता है। मन्दाग्नि जिसमें भारी कष्ट आए और वह खाना खानेसे अस्थायी रूपसे घटे।

**कल्केरिया फ्लोर** : अनपच खाद्यकी कै, खखारका यत्न करनेसे हिचकी आने लगे, दिनमें इसके कारण वार-वार कमजोरी आए।

**कल्केरिया सल्फ** : फल खाने, चाय, शराव, तथा हरी खट्टी सब्जियाँ खानेकी इच्छा। प्यास और भूख अधिक लगे। मिचली हो और सरमें चक्कर आए। खाना खाते समय मुँहकी छतमें सन्तापपूर्ण कष्ट आए और आमाशयमें जलन हो।

**साईलीसिया** : आमाशयके निम्न छिद्र पर सख्ती आए। पुरानी मन्दाग्नि, जिसमें अम्ल डकार आए, कलेजा जले और सर्दी लगे। मास और गर्म भोजनसे घृणा। अत्यधिक भूख। शराव जैसी उत्तेजक वस्तुएँ असह्य हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

श्रीमती व, आयु ५८, रक्तकी कमी, वात प्रकृति। उसे गत १० वर्षोंसे आमाशयशूलके दौरे पडते थे। ये दौरे ४ से १० घण्टे तक जारी रहते। एक दिनमें कई दौरे आते जो ५ से १० मिनट तक जारी रहते। ये दौरे आरामके समान अनुपातसे आते।

वह असह्य कष्टसे पीडित थी। जब मैंने जाकर उसे देखा तवतक उसे मार्फियाके इंजेक्शनके सिवा और कुछ दिया नही गया था।

जब मैने उसे पहली वार जाकर देखा तो वह एक घण्टेसे पीडित थी। मैने उसे देख-भाल कर **मैग्नेशिया फॉस** ३x थोरेसे गर्म पानीमें मिलाकर दिया और १५-१५ मिनट वाद दवा देनेकी व्यवस्थाकी। तीसरी मात्राके वाद, दर्द घट गया। अब दौरेपर हमने विजय प्राप्त कर ली थी। अव मैने १० ग्रेन यही दवा खाना खानेके वाद दिये जानेको कहा। हल्के-हल्केसे तीन दौरे पडे और उसके वाद ३ साल तक उसे कोई कष्ट न आया।

—वी० ए० सोण्डर्स एम० डी० विण्टरसेट, ओहाईओ।

२ डा० राउने **'रिव्यु आफ होमियोपैथिक लिटरेचर'** १८७६ में लिखते हैं आमाशयशूलके भयानक दौरे पडते थे और उसका कोई समय नही था। सोते

सोते भी दौरा पड जाता था और आमतौरपर दौरा आध घण्टेमे १ घण्टे तक जारी रहता था। भूख बहुत खराब थी।

**फैरम फॉस**ने उसे ठीक कर दिया और भूख बहुत बढ़ गयी।

३ **काली सल्फ आमाशयके नजले मे :** श्री अ, आयु ३८ वर्ष; उसे कई दिनसे पेटकी तकलीफ थी। जीभपर गहरे पीले रगकी मैल थी और पेटमें भारी दबावकी अनुभूति थी और ऐसा जान पडता था जैसे पेट भरा हुआ है। उसे यह याद नही था कि थोडा बहुत दर्द कब न हुआ था। गर्म पेयसे उसका कष्ट बढ जाता था। उसे प्यास कभी नहीं आती थी। आमतौरपर उसकी चमडी सूखी और गर्म थी। पर छूनेसे ठण्डा मालूम पडता था। उसकी साँसकी नालीमें भी कुछ क्षोभ था यदि उसे सर्दी लग जाती तो उसके पेटमें ऐंठनके साथ दर्द आ जाता और यह दर्द पॅंतडियो तक पहुँच जाता।

कभी-कभी पेटमें अफारा भी आ जाता। **काली सल्फ** ३x दिया गया और रहन-सहनके बारेमें उसे कुछ आदेश दिये गये। कुछ ही सप्ताहमें वह ठीक हो गया। रोगी को दवाके असरका यह चमत्कार देखकर बडा आश्चर्य हुआ। —डा० ओ० ए० पामर, एम० डी०।

४. एक अफसर को पेट दर्दकी बडी पुरानी शिकायत थी। उसके पेटमें अफारा, दबावकी अनुभूति और कब्ज था। जीभपर गहरे पीले रगकी चिकनी मैल थी। एक ऐलोपैथ ३ सप्ताहसे उसकी चिकित्सा कर रहा था, परन्तु रोगीको कोई आराम नही था। कब्जकी यह हालत थी कि उसे बहुत कडा जुलाब देनेसे ही पाखाना आता था और वह भी बहुत थोडा-सा।

उसे **काली सल्फ** ६x दो-दो घण्टे बाद पानीमें दिया गया। परिणाम आश्चर्यजनक था। अगले दिन सुबह उसे पाखाना कुदरती तौरपर हो गया और पेटकी तकलीफ लगभग खत्म हो गयी थी। दो सप्ताहमें उसे कुल २ पुडिया दी गई और वह बिलकुल ठीक हो गया।

—Pop zeit, दिसम्बर १८८५।

५. एक नौजवानको पुरानी मन्दाग्नि थी। कई दवाएँ देकर भी निराशा ही पल्ले पड़ा। तब एक दिन मैंने उसकी जीभपर क्रीम जैसे पीले रगकी मैलकी पतली-सी तह देखी। इस आधारपर मैंने उसे **नेटरम फॉस** दिया और वह शीघ्र ही ठीक हो गया। —सी० हेरिंग।

६ एक स्त्रीको ५ सालसे मन्दाग्नि थी। खाना खाते ही उसे मिचली होती और सब खाया पीया कै हो जाता। कै बहुत अधिक खट्टी हो जाती थी। वह खट्टी चीजें खाना सहन नही कर सकती थी। कै सुबहके समय

होती या खाना खानेके बाद और उसके साथ सर दर्द भी आता। पेशानी और कनपटियोंमें दर्द आता जैसे वहाँ हथौड़े बरस रहे हैं और उसे डर लगता कि कहीं उसे मृगी न होने लगे। मासिक मात्रामें अधिक होता था और हर तीसरे सप्ताह हो जाता था। नींद अशान्त थी और व्याकुल बनाने वाले स्वप्न आते थे। सुबह सोकर उठती तो थकी-थकी-सी रहती। उसे अपने कपड़े ढीले करने पड़ते।

**फैरम फॉस** ६ दिनमें तीन बार दिया गया और इससे वह ठीक हो गयी। उसके अधिकांश लक्षण **नेटरम फॉस**का संकेत करते थे। परन्तु सामूहिक लक्षण **फैरम फॉस**के थे।

७. पेडर वॉर्नके एक चिकित्सकने (सन् १८८२ ए० एल० जेडने उद्धृत) डा० शुसलर को लिखा कि जैसा केस ऊपर दिया गया है वह उसे ५ सप्ताह तक **नेटरम फॉस** देते रहे और उससे कोई लाभ न हुआ। तब **फैरम फॉस** १० देनेसे वह १० दिनोंमें ही ठीक हो गया।

८ एक नवजवानने असाधारण भूखकी शिकायतकी। उसे प्रायः हर घण्टे बाद खाना पड़ता था, फिर भी वह मुरझाता जा रहा था और थका-थका-सा रहता। कोई गौण लक्षण नहीं था। जीभ साफ थी, पेशाब भी अधिक नही था और पाखाना भी स्वाभाविक रूपसे ही होता था।

**काली फॉस** ने उसे दो ही दिनमें ठीक कर दिया।—शुसलरसे उद्धृत।

९ किसान 'अ', को एक विचित्र शिकायत थी। वह जब भी कोई खट्टी चीज खाता उसे जबर्दस्त सर्दी आती। उसने बताया कि, १—मुँहका स्वाद हर समय कड़वा रहता है। २—जीभपर कड़ी मैल आती है। ३—दिनमें, विशेषतः खाना खानेके बाद हवाके डकार आते हैं जो कड़वे या स्वादहीन होते हैं। ४—त्वचा पीली पड़ गयी है। ५—भूख घट गयी और प्यास है नही। ६—मुझे बीयर पीनेका बहुत शौक था, अब वह भी अच्छी नहीं लगती। ७—सर्दी लगती रहती है और ऐसा डर लगता है कि मूर्च्छा आ जाएगी। ८—सरपर कोई असर नही; परन्तु एक आँखपर निरन्तर दबाव रहता है। ९—पाखाना स्वाभाविक है, परन्तु आता कम है, क्योंकि खाता भी कम हूँ। इस सबसे जान पड़ता है कि यह पित्तका उपद्रव है।

यह रोगीकी राम कहानी थी। रोगीने मेरे आदेशपर **नक्स वा** और **पल्स** खाया। एक और चिकित्साके आदेशपर उसने पिछली गर्मीमें एक झरनेका पानी भी पिया।

अब मैंने उसे **नेटरम फॉस** दिया और दिनमें तीन बार खानेका आदेश दिया।

६-७ दिन बाद वह मेरा इन आश्चर्यजनक औषधके लिये धन्यवाद देने आया। उसने कहा "वस्तुतः यह जादूकी पुड़िया थी। उसने मेरे सारे कष्ट मिटा दिए और मैं अब बिलकुल चङ्गा हूँ।" —शुसलरसे उद्धृत

११. बामबर्ग निवासी डा० मोस्ला लिखते हैं. गत वर्ष मुझे एक पत्र मिला जिसमें रोगीका हाल यों लिखा गया था और दवा भेजनेकी प्रार्थनाकी थी :

"मेरा लड़का, उम्र ७ वर्ष अबतक हृष्ट-पुष्ट था। अब उसे कई सप्ताहसे पेट दर्दकी शिकायत है। अब उसे कै भी होती है। कभी-कभी तो खाना खानेके तत्काल बाद ही कै हो जाता है और कभी-कभी रात होते-होते। बच्चा अब बहुत सूख गया है। गत सप्ताह उसे ज्वर भी आता रहा। हमारे डाक्टरने उसे कुछ दवा दी थी, उसके बादसे उसे ज्वर नहीं आया, वह थकानकी बहुत शिकायत करता है।"

इतनी-सी जानकारी पर रोगीका वैज्ञानिक निदान करना तो असभव था और मेरे लिए यह भी संभव नहीं था कि मैं व्यक्तिक रूपसे रोगीकी जाँच करता। इसलिए इसी जानकारीके आधार पर दवा देनी थी।

पेट दर्दके सहारे मैंने यह समझा कि तिल्ली और जिगरपर सूजन आयी है और वे बढ़ गए हैं। बार-बार ज्वर आना, जो शायद कुनीनसे दबा दिया गया होगा और कै भी मेरे अनुमानका समर्थन करती है।

बहुत झिझकने बाद मैंने उसे **फैरम फॉसकी** १२ पुड़िया भेज दीं और हिदायत कर दी कि सुबह शाम एक-एक मात्रा खायी जाय।

कुछ दिन बाद जो रिपोर्ट आयी, वह उत्साह वर्द्धक थी। ज्वर चला गया था। पेट दर्द और कै भी बन्द हो गए थे। बच्चा ठीक हो गया और फिर स्कूल जाने लगा। —शुसलरसे उद्धृत।

१२ डब्ल्यू वॉटमन आयु ४० वर्ष। आमाशयका घाव था। जो कुछ भी खाता था, कै हो जाती थी और कै में जो कुछ निकलता, वह कॉफी जैसा होता था। उसे कै और अनपचकी यह शिकायत पिछले १४ वर्षोंसे थी। वह बहुत चिकित्सकोंके पास गया और बहुत दवाएँ खाकर थक गया था।

मैंने उसे **फैरम फॉस** ६ और **नेटरम फॉस** ६ दिया। दोनों दवाएँ अदल-बदलकर, २-२ घण्टे बाद, एक बड़ा चम्मच, १५ दिन तक दी गयीं। और १० दिन बाद उसे कोई शिकायत न रही। मैंने उसे पूछा—अब तुम्हें

क्या शिकायत है ? उसने उत्तर देते हुए कहा—मैं कभी-कभी यह सोचकर परेशान होता हूं कि अब जो कुछ खाया है, वह तकलीफ देगा—परन्तु कोई तकलीफ आती नही।"

वह अब दो सालसे विलकुल ठीक-ठीक है। —शुसलरसे उद्धृत।

१३ रोगीको खाना खानेके वाद आमाशयमें वडा कष्टकर जलन आती थी और वह अगली वार शामको भोजन करने तक जारी रहती और फिर रातभर जारी रहती और उसे सोने न देती। खाना खानेके १ या दो घण्टे वाद दर्द भी आता। जीभपर गन्दी-सी मैल आती। और कोई शिकायत नही थी।

**नेट्रम फॉस** उसे ठीक कर दिया। —'मेडिकल ईरा' से उद्धृत।

१४ एक वालकको टायफायड होनेके वाद अनपच हो गया। वह जो कुछ भी खाता, वह सव खटासमें वदल जाता। साँससे भी खटासकी गन्ध आती, फटा-फटा दूध कै की राह निकलता, पसीने और पेशाव आदि से भी खट्टी गन्ध आती। पाखानेकी रगत हरी थी। कब्ज भी अदल-वदल कर आती। इसके साथ पेट दर्द आता, जीभपर सफेद मैल थी। मुँहके आस-पास भी सफेदी-सी थी। वह वहुत चिडचिडा और व्याकुल था।

**नेटरम फॉसने** उसे ठीक कर दिया। —'मैडिकल ईरा' से उद्धृत।

१५ एक ६० वर्षीय वृद्ध मेरे पास आया। दुवला-पतला, मुरझाया हुआ, पीला, भूख नदारद थी, वहुत व्याकुल था, अँतडियाँ शिथिल थो। कभी पाखाना हल्के-से रगका आता और कभी कब्ज हो जाती। जीभपर भूरेसे पीले रगकी मैलकी मोटी तह थी, स्वाद कडवा था, आँखके सफेद पर्देकी रंगत नीली-सी सफेद थी। शरीर पर झुरियाँ पडी हुई थी। पेट धँसा हुआ था। खाना खानेके वाद पेटमें जलनके साथ दर्द भी आता था। आम हालत देखनेके वाद मालूम हुआ कि समीकरण वहुत दूषित है।

वह किसी ऐलोपैथसे **आर्जेण्टम** खा रहा था। एक साल तक वह यह दवा खाता रहा और उसे कोई लाभ न हुआ, हाँ, उल्टे सूखता चला गया।

सारी स्थितिपर विचार करनेके वाद मैने उसे **नेटरम सल्फ** ६x दिन में ३ वार खाना खानेसे पहले दिया। स्नायु जालको वल देनेके लिए **काली फॉस** ६x भी दिया।

इन दोनों दवाओंकी सहायतासे वह ३ सप्ताहमें ठीक हो गया।

—ए० पी० डेविस, एम० डी।

**स्नायविक मन्दाग्नि :** खाना खानेके कुछ ही देर वाद मिचली होने लगती थी। इसके साथ वहुत जोरकी ऊघ भी आती। डकार सडे हुए

आते। मुँहका स्वाद और गंध भी गन्दा था। डकार आनेसे मिचली घट जाती। दोपहर बाद पेट दर्द आता जैसे कोई दाँतोंसे कुतर रहा हो और इसके साथ अफारा आता।

ये सब काली फॉसके लक्षण थे। —डा० रायल।

## ग्रन्थियोंके विकार ( Glandular Affections )

**काली म्योर :**—यह हर तरहके ग्रन्थिक विकारोंके लिए मुख्य औषध है। गलेकी ग्रन्थियोंके आस-पास पीव या मवाद आ जाय। गर्दनकी ग्रन्थियाँ भी फूल जाती हैं ( बाहर भी लगाना चाहिए )। कंठमालाके कारण ग्रन्थियोंका बढ़ जाना। पेटकी ग्रन्थियाँ भी बढ जाती हैं और कभी-कभी इसके साथ पतले पाखाने भी आते हैं।

**नेटरम म्योर :** लार बनाने वाली ग्रन्थियोंका पुराना प्रदाह और तत्सम्बन्धी लक्षण जैसे लारकी अधिकता आदि। लसिका ग्रन्थियोंकी पुरानी सूजन। वनास्रावी ग्रन्थियोंकी सूजन।

**नेटरम सल्फ :** प्रमेह विषके कारण ग्रन्थियोंकी सूजन।

**मैग्नेशिया फॉस :** गिल्हड।

**साईलीसिया :** जब ग्रन्थियोंमें पीव आ गयी हो तो यह उसका नियंत्रण करती है। कंठमालाके लिए भी हितकर है। ग्रन्थियोंकी सख्ती और सूजन, चाहे प्रदाह हो या न हो।

**कल्केरिया फॉस :** ग्रन्थियोंकी पुरानी वृद्धिमें अन्तरकालीन, औषध के तौरपर काम आती है। कंठमाला ; गिल्हड, गल ग्रन्थिप्रदाह। ॲतड़ियों का प्रारम्भिक टी० बी० और उसके साथ दुर्गन्धित पाखाने आएँ।

**कल्केरिया सल्फ :** लसिका ग्रन्थियोंसे पीव आए। ( नासूरसे तुलना करें ) ग्रन्थियोंका घाव।

**कल्केरिया फ्लोर :** ग्रन्थियोंकी सख्त, पत्थर जैसी सख्त सूजन। पुराना ग्रन्थिप्रदाह ; जोड़ोंकी बंधनियोंकी सख्ती। स्तनोंकी सख्ती और गाँठ। उनमें स्नायविक शूल हो और पतला मवाद आए। कण्डराओंकी सख्ती। लिम्फ ग्रन्थियोंकी सख्ती।

**फेरम फॉस :** ग्रन्थिप्रदाहका पहला दर्जा। डा० वी० श्मिट्सने तेन्दुआके एक रोगीको **फेरम फॉस** १ का इस्तेमाल कराकर ठीक किया था। वह किसी और दवासे ठीक नहीं हुआ था।

**नेटरम सल्फ :** गिल्हड। ग्रन्थियोंकी तरहकी सूजनमें हितकर है।

# चिकित्साकालीन अनुभव

**नेटरम म्योर गिल्हड़ :** जिसमें आँखें उभर आएँ ; रोगिणीकी आयु ३७ वर्ष , आँखो, हृदय और गलग्रन्थिकी हालत वैसी ही थी जैसी इस रोग में होती है । सर्वाधिक कष्टकर और दुराग्रही लक्षण था । श्लैष्मिक झिल्लियो की खुश्की और प्यास । पेशाव पर कोई नियन्त्रण नही था और कामवासना लगभग नष्ट हो चुकी थी ।

उसे एक साल तक निरन्तर **नेटरम म्योर** खिलाया गया । परिणाम हुआ कि आँखें अपने गढोमें चली गयी और स्वाभाविक दशामें आ गयी । हृदयकी चाल मन्द हो गयी । वढी हुई गलग्रंथि वैठ गयी और स्नायविकता घट गयी । पेशाव पर नियन्त्रण हो गया । कामवासना जाग गयी और उसका वजन १३४ पौण्डसे १६७ पौण्ड हो गया ।

—जार्ज एस० ओगडेन, एम० डी० ।

२ एक व्यापारी इङ्गलैण्डसे वहुत निराशाके साथ लौटा । वह केपमें कारवार करता था । उसके मित्रोंको यह विश्वास हो गया था कि अव उससे दुवारा भेंट न होगी । वह कई एलोपैथिक विशेपज्ञोंसे चिकित्सा कराके निराश हो गया तव मेरे पास आया । वह **नेटरम म्योर** २०० की सहायतासे ६ मासमें ठीक हो गया । उसे इसके सिवा और कोई दवा न दी गयी । हाँ, वादमें उसे कभी-कभी काली फॉस ६x अदल-वदल कर दिया गया । वह अव भी जीवित है और उसके मित्र आश्चर्यचकित हैं ।

उसकी आँखें वुरी तरह वाहर निकल आयी थीं । हृदयकी चाल वहुत तेज थी और स्नायविक थकान थी । —डा० सी० एस० सॉडर्स ।

३ मैने गिल्हड़के १३ रोगियोंको **नेटरम फॉस** ३x दिनमें ३ वार दिया गया । इससे उनकी आँखोंपर दवाव घट गया । यह परिणाम ३ से ५ दिनके भीतर मिला । इसका व्यवहार ४ से ६ सप्ताह तक जारी रहना चाहिए । —जे० एस० स्कील्स, एम० डी० **हैनिमैनियन मन्थली, १८८०**

४ एक व्यक्तिको ठुड्डीके नीचे कवूतरके अण्डे जितनी वडी सूजन थी । वह **काली म्योर**के व्यवहारसे काफी कम हो गयी । परन्तु सख्ती फिर भी रही और उसका स्तर ऊँचा-नीचा था । **कल्केरिया फ्लोर** कुछ दिन खिलाया गया । उसने उसे गायव कर दिया । इसके कुछ दिन वाद उसकी आँखके सफेद पर्देपर हल्की-सी सूजन आयी जिसे काली म्योरने ठीक कर दिया ।

शुसलरसे उद्धृत ।

५. डा० ग्रॉफोगलने अपनी रचना **'टैक्स्ट बुक'** में गर्दनकी ग्रथियोंकी सूजनका एक केस दिया है जो ६ सप्ताह **काली सल्फ** खानेसे ठीक हो गया। सारी गाँठें बिलकुल गायब हो गयीं। मेरे पास आनेसे पहले उसने कई युनिवर्सिटियोंमें चिकित्सा कराई थी और कोई लाभ नही हुआ था।

उसे **नेट्रम सल्फ** ३x हर दो-दो घण्टे बाद दिया गया। इससे उसे बहुत तेजीसे आराम आया और आम हालत भी सुधर गयी।

६. ग्रन्थि प्रदाहके लिये **कल्केरिया फॉस :** डा० जी० एच० मार्टिनने केलीफोर्निया स्टेट होमियोपैथिक मैडिकल सोसायटीके सामने १२ वर्षीय एक बालकका केस पेश किया था। उसकी गलग्रथियाँ फूल गयी थी परिणामस्वरूप उसे नाक बहने लगी और एक कान बहरा हो गया। घडीकी टिक टिक वह कानके पास घडी रख देनेसे भी न सुन सकता था।

उसे ४ मास तक **कल्केरिया फॉस** दिया और वह ६ फुटकी दूरीसे घडीकी टिक-टिक सुन पाने लगा। नजला भी प्रायः चला गया।

—'पैसीफिक कास्ट जर्नल ऑफ होमियोपैथी'

**७ गर्दनकी लसिका ग्रन्थियोंकी पुरानी सूजनके लिये कल्केरिया फ्लोर :** डा० सीवेलने इस रोगमें **कल्केरिया फ्लोर**की बहुत प्रशसाकी है। विशेषतः जबकि ग्रन्थियाँ बहुत अधिक सख्त हों। उनका मत है कि हवाकी नालियो और अँतरियोंकी ग्रथियोंके लिये भी यह दवा इसी प्रकार गुणकारी हो सकती है।

यहाँ इस तरहके कुछ केस दिये जा रहे हैं जिन्हें इस औषधके व्यवहारसे लाभ हुआ।

(क) एक २५ वर्षीया अविवाहित युवतीकी गर्दनपर कई सालसे कुछ गाँठें उभरी हुई थी। ये प्रायः दाएँ जबडेके नीचे थी। इन्होंने उसे कुरूप बना दिया था। एक गाँठको छोडकर जिसमें पीब आती नजर आ रही थी; बाकी सभी गाँठें बहुत सख्त थी—और दबानेसे उनमें पीडा नही होती थी। उनपर प्रदाह आनेका भी कोई लक्षण नही था।

वह छोटी गाँठ **हीपर** और **साईलीसिया** खिलानेसे साफ हो गयी। परन्तु अन्य गाँठें पूर्ववत रहीं।

उसे आखिर **कल्केरिया फ्लोर** ५x दिनमें एक बार दिया गया। ६ से ८ सप्ताहमें सारी गाँठें बैठ गयी, उनका समूह टूट गया और अन्तमें सुपारी जितनी गाँठ रह गयी। आगे रोगिणीने दवा खानेकी आवश्यकता न समझी और विवाह कर लिया।

इतने कम समयमें ऐसा रोग चला जाय यह वर्णनीय बात है।

(ख) एक २० वर्षीय नौजवानके दाएँ जवडेके नीचे हड्डीके पास कुछ लसिकाएँ फूल गयी और उन्होंने उसका चेहरा कुरूप वना दिया। उनमेंसे एक गाँठ सुपारी जितनी वडी थी और उसमें पीव आती नजर आ रही थी। वाकी गाँठें वहुत सख्त और वेदनाहीन थी। वे उसे वचपनसे ही थी। परन्तु उनमें सूजन अभी ४-५ वर्षसे आयी थी।

**साईलीसिया** और **काली फ्लोर**ने पीवका नियन्त्रण कर लिया। वादमें उसे **कल्केरिया फ्लोर** दिया गया और उसके साथ वदलकर **क्लोरेट ऑफ पोटाश** दिया गया। दोनोंकी उसे १-१ पुडिया दी जाती थी। गाँठें दिनों-दिन छोटी होती गई और १६ मासमें विलकुल ठीक हो गयी।

(ग) एक ५० वर्षीया अविवाहित स्त्रीकी दाई ओर जवडेके नीचे सूजन आयी जो मुर्गीके अण्डेकी वरावर थी। वे न तो लाल थी और न उनमें दर्द था। उसने उनपर अनेक औषधियाँ लगायी और विफल रही।

उसे **कल्केरिया फ्लोर** ५x सुवह शाम दिया गया और आगे जाकर दिनमें केवल एक मात्रा दी गयी। ६ सप्ताहमें सूजन गायव हो गयी। यह सूजन उसे ८ वर्षसे थी। इस मुद्दतके मुकावले वह इस दवाके असरमें वहुत कम अर्सेमें ठीक हो गयी।

(घ) एक ५ वर्षके वालकको जवडेके नीचेकी ग्रथियाँ २ वर्षसे फूली हुई थी। वे **कल्केरिया फ्लोर** ५x खिलानेसे कुछ सप्ताहमें ठीक हो गयी।

—Berliner Zeitschrift

## सुजाक ( Gonorrhœa )

**नेटरम फॉस :** शुसलरके अन्तिम (२५वें संस्करण) मतके अनुसार इस रोगकी मुख्य औषध है।

**फेरम फॉस :** प्रदाहका दर्जा।

( नोट, पीव निकालनेके लिये मूत्रपथ पर दवाव न डालें यह तरीका हानिकारक है और इससे रोग मिटनेमें वाधा पडती है )।

चलना-फिरना, सीढियाँ चढना आदि भी वन्द कर देना चाहिये क्योंकि इससे भी रोग मिटनेमें वाधा पडता है।

**काली म्योर :** यह इस रोगकी प्रधान औषध है। वस्तुतः यह उन हालतोंके लिये सिद्धौषध है जहाँ सूजन हो, फिर मवाद चाहे त्वचाके नीचे या आभ्यान्तरिक। पुरानी पीव और एग्जिमा, गुप्त या प्रकट, या ग्रन्थि प्रदाहकी प्रवणता। आतशक सुजाकके कारण आया मस्सा।

**काली फॉस :** सुजाक जिसमें खून आता हो। सुपारी ( लिंगमुण्ड ) प्रदाह और घूँघटका प्रदाह।

**साईलीसिया :** पुराना सुजाक जिसमें गाढ़ी, बदबूदार पीव आये। हर समय सर्दी लगे यहाँ तककी व्यायाम करते समय भी सर्दी लगे। सुपारीप्रदाह।

स्वर्गीय डा० हॉइनने इस दवाके बारेमें लिखा है :

पुराने रोगोकी चिकित्सा करनेमें होमियोपैथिक चिकित्सक इस दवाकी प्राय निन्दा करते हैं या कम-से-कम वे इसे कोई महत्व नही देते। मैंने इसे अनेक जगह लाभदायक पाया है और उन्हे जानना दिलचस्पीसे खाली नहीं है।

श्री अ—आयु ४८ वर्ष, पेशाकार ड्राईवर, उसके बालोंकी रगत बालू जैसी थी, दाढी रखी हुई थी और मँझले कदका था। उसे १० सालसे पुराना सुजाक था। इस अर्सेमें उसने बहुत इलाज कराये और किसीसे लाभ न हुआ। बहुत तरहके इन्जेक्शन लिये और उनसे क्षणिक लाभ हुआ। मूत्रपथमें सुकडाव आता, परन्तु कुछ दिनके लिए।

आखिर उसने निराश होकर २-३ साल कोई दवा न खायी।

उसने मुझे निम्न लक्षण बताए :

"हर रोज सुबह मूत्र-पथसे पानी जैसा पतला मवाद आता है। मलत्यागके समय प्रोस्टेट रस भी गिरता है। अण्डकोषपर खुजली होती है और वहाँ कुछ गीले दाग भी हैं। हर रोज कब्ज रहता है। बहुत सख्त मुद्दे आते हैं और उन्हें निकालनेके लिये जोर लगाना पडता है। पतला पाखाना शायद ही कभी आता है। पाखाना होनेके बाद मलद्वारमें जलन भी आती है। पहले वह बहुत खुश-दिल था, परन्तु अब जरा-सी बातपर चिढ जाता था और प्राय. निराश रहता था। कामवासना बहुत दुर्बल है और स्त्री ससर्गके बाद ऐसी तकलीफ आती है जैसे सारा शरीर कुचला गया हो। उसे सर्दी आसानीसे लग जाती है। फिर उसे रातको खाँसी भी आती है।"

इन लक्षणोंके आधारपर उसे **साईलीसिया** २०० दिया गया। फिर वह दुबारा मेरे पास नही आया।

कई मास बाद उसीका एक साथी मेरे पास आया और वही दवा माँगी जिससे उसे आराम हुआ।

श्री ख—एक जिन्दा दिल कर्ल्क है, आयु ३० वर्ष। उसे सुजाक हुआ था जिसका इलाज सही न हुआ और अब पीव आती थी। वह कई एलोपैथो और होमियोपैथोंसे चिकित्सा करा चुका था। उसने बताया कि कई बार इन्जेक्शन लेनेसे मवाद दब गया। पिछली बार उसे अण्डप्रदाह भी हो चुका था।

मवाद पतला और दुर्गन्धित था, मात्रा बहुत कम थी उसे बार-बार स्वप्न-दोष भी हो जाता था जिसमें कभी-कभी रक्त भी आ जाता था। पेशाब गदला था और उसमें पीले रंगका रेत जमता था। वह पहलेकी तरह पेशाबको रोक नहीं सकता था और रातको भी २-३ बार पेशाब करने उठता था। उसके पैरोंपर ठण्डा और दुर्गन्धित पसीना आता था और प्रायः हर रोज सवेरे उसके सारे शरीरपर पसीना आता था। उसने बताया कि वह हर समय थका-माँदा रहता है और कोई काम काज करना नहीं चाहता। जहाँ तक बन पड़ता है काम करनेसे जी चुराता है। वह भी पहले रोगीकी तरह सर्दी सहन नहीं कर सकता था और आसानीसे सर्दीका शिकार बन जाता था। नींद भी अच्छी नहीं आती थी और डरावने स्वप्न आते थे। सुबह सोकर उठनेपर उसे हल्का-सा चक्कर भी आता था।

उसे **साईलीसिया** २०० दिया गया। एक सप्ताह बाद उसने बताया कि पहले हालत बिगड़ी। स्राव बढ़ा और पेशाब पहलेसे अधिक बार होने लगा। तबसे २ सप्ताह तक **सखारिन लैक्टिस** दिया गया। परन्तु हालत न सुधरी।

तब **साईलीसिया** १० लाख दिया गया। इस बार लक्षणोंमें बिगाड़ आया। ३ सप्ताह तक **सखारिन लैक्टिस** दिया गया—परन्तु कोई सुधार न आया।

अब **साईलीसिया** १२ दिया गया। कुछ दिन बाद उसकी हालत सुधर गयी और फिर कोई कष्ट बाकी न रहा।

**काली सल्फ :** हल्के-पीले या हरिताभयुक्त स्राव। पुराना स्राव। पुराना सुजाक।

**नेटरम म्योर :** पुराना सुजाक जिसमें पारदर्शी, पानी-सा पतला, लसदार स्राव आए। इसके साथ **कल्केरिया फॉस** भी बदलकर दिया जाना चाहिये। **सुजाक जिसमे जलता-जलता गर्म मवाद आए** यह इस औषधका विशिष्ट लक्षण है। पुराना सुजाक जिसमें पेशाबकी अन्तिम बूँद खारिज न हो। मूत्रपथ स्पर्श या दबाव सहन न कर सके। सिलवर-नाईटरेटके इन्जेक्शन लेनेके बाद इस दवाका व्यवहार होना चाहिये।

**कल्केरिया फॉस :** पुराना सुजाक जिसमें खूनकी कमी भी हों हाईडरोसील।

**कल्केरिया सल्फ :** पुराना सुजाक जिसमें पानी-सी पतली पीव आए।

**नेटरम सल्फ :** पुराना सुजाक जिसमें पीला-सा हरा-सा मवाद आए। यह स्राव गाढ़ा हो जाता है। दर्द बहुत कम होता है। सुजाकमें

३x १-१ या २-२ घण्टे बाद, चार बूंद थोड़ेसे पानीमें दें। (ग्रॉफोगल)। प्रोस्टेटका बढ़ जाना। आतशक या सुजाकके मस्से जो लिंग या योनिपर बने।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. नए सुजाकमें **काली म्योर** और **काली सल्फ**के बाद **फैरम फॉस** का इस्तेमाल करानेकी सिफारिशकी गयी है।

२ एक ७० वर्षीय वृद्धको ३ सालसे मवाद आता था। मवाद मात्रामें कम था, साफ था; तेज जलनके साथ दर्द था। **काली सल्फ, काली म्योर** और **नेटरम म्योर**से उसे कोई लाभ न हुआ, **मैग्नेशिया फास**का व्यवहार करानेसे वह ४ सप्ताहमें ठीक हो गया। दवा दर्दके लक्षण को आधार मानकर चुनी गयी। —शुसलर।

३. रोगीकी आयु ३२ वर्ष थी। उसे ५ वर्षसे मवाद आता था जो गाढ़ा और पीले रंगका था। दर्द बहुत कम था, या था ही नहीं।

वह **नेटरम सल्फ**से ठीक हो गया। —जे० ए० हैरीसन, एम० डी०।

## रक्तस्राव ( Heamorrhage )

**फैरम फॉस :** घावसे अन्दर और बाहरका रक्तस्राव। नक्सीर जिसमें चमकदार, लाल रंगका खून आए, चाहे चोट लगी हो या न। आमतौरपर यह अकेला ही काफी है। विशेषकर बच्चोंके लिए। चमकदार लाल रंगका खून गिरे जो जमे नहीं। चमकदार, लाल रंगके खूनकी कै जो बच्चे बड़ी तेजीसे बढ़ रहे हैं—उनकी नक्सीरकी प्रवणता।

**काली म्योर :** जब खूनकी रंगत गहरी, काली छिछड़ेदार हो, सख्त हो। खूनकी कै जिसमें गहरे रंगका, जमा हुआ, गाढ़ा खून आए। दोपहर बाद नक्सीर आए।

**कल्केरिया सल्फ :** मृगी। नाकसे जो मवाद गिरे उसमें रक्तकी धारी आए।

**काली फॉस :** कमजोर और नाजुक मिजाज वालोंकी नक्सीर जो दुर्बलता, या बुढ़ापेके कारण आए। मसूढ़ों और नाकसे खून गिरनेकी प्रवणता। खून गिरे जो गहरे रंगका, काला-सा, पतला और कुचली हुई कॉफी जैसे, जबकि वह जमे नहीं। खून गन्दा, बदबूदार, जिससे सड़ावका अनुमान हो। पूर्व दोषसे होनेवाला रक्तस्राव।

**नेटरम म्योर :** रक्तस्राव, खून पीला, पतला पानी जैसा न जमने वाला। थूके तो नक्सीर आए और खाँसनेसे अंगोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट।

**कल्केरिया फ्लोर :** खून थूके, चमकदार, लाल खून। अधिक परिश्रम करनेसे थोड़ी सूखी खाँसी आए।

**नेटरम सल्फ :** मेरा अनुभव है कि जब यह दवा गलत दी गयी तो इसने सख्त किस्मकी नक्सीर पैदा की। एक रोगीको तो २०० देनेसे भी नक्सीर आयी, हर बार खुराक देनेसे कै और दस्त भी आए।

—ई० एच० एच०

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ बारह वर्ष पहलेकी बात है, एक चार वर्षकी लडकी मेरी पास लायी गयी। उसे बार-बार नक्सीर आती थी। बादमें उसकी जीभ और मसूढोंसे भी खून गिरने लगा। नक्सीर भी खतरनाक बन चली। वह तभी बन्द होती जब नथनोंमें रुई भर दी जाती। मैंने रक्तस्राव रोकनेका भरसक यत्न किया। लक्षणोंके अनुसार **हमामेलिस, बैल, निट ऐसिड** और **इपीकाक** आदि कितनी ही दवाएँ दी गयी—परन्तु किसीसे कुछ न बना। मुझे यह चिन्ता सताया करती कि यह बालिग कैसे होगी? तब ऋतुमती कैसे होगी? आदि।

आखिर मैंने उसे फैरम फॉस ३x, ३-३ ग्रेनकी दिनमें ३ मात्राएँ दी अब इससे उसका रक्तस्राव रुक गया।

आखिर वह बालिग भी हुई और उसे ऋतु स्वाभाविक रूपसे होने लगा। उनके एक दाँत उखडवाया और आश्चर्यकी बात कि कोई रक्तस्राव न हुआ।

२ दिसम्बर १८९५ की बात है। श्रीमती—आयु ६५ वर्ष। उसकी टाँगों और जघाओं पर बैगनी रंगके दाग पड गए। शिरायें फैल गयीं और हाथ-पाँव पर शोथ आ गयी।

उसे **फैरम फॉस** ३x दिनमें ३ बार दिया गया। वह २ सप्ताहमें एकदम ठीक हो गयी और फिर कोई उपद्रव न हुआ।

३ बालक—आयु २ वर्ष। ५ सप्ताह समुद्र तटपर रहकर वापस आया। वहाँ उसे शोष हो गया जिसके कारण उसकी हालत निराशापूर्ण हो गयी। उसके लक्षण निम्नलिखित थे।

अत्यधिक शोष और थकान; खूनकी कमी, सर पर पसीना आता था, पाँव और टागों पर शोथ आ गया। टाँगों पर नीले दाग पड गए थे; मसूढोंसे खून गिरता था। दुर्गन्धित पाखाने आते जिनमें कभी-कभी खून भी आता। हाथ-पाँव और टाँगोंकी सूजनपर दबानेसे गढ़ा नही पडता था। जरा-सा हिलना-डुलना भी सहन नही था, क्योंकि इससे उसे दर्द हो जाता और वह चीख मार उठता। सलग्न अस्थियाँ बढी हुयी न थी, इस आधार पर मैंने यह निष्कर्ष लगाया कि सूजन और दर्दका कारण गहरे तन्तुओंमें खून आ जानेसे होता है। मेरी समझमें यह शीताद था।

उसे **फैरम फॉस** ३x और **साईलीसिया** दिया गया। इनसे उसकी हालतमें तात्कालिक सुधार आया।

४. कुमारी अ-आ—अध्यापिका, उसे नकसीर आती थी। जरायुसे भी खून आता था। उसकी जघाओं और टाँगों पर नीले दाग पड गये थे। **फैरम फॉस** ३x की तीसरी मात्रा देनेसे रक्तस्राव बन्द हो गया। उसे इस प्रकारके आक्रमण हर साल होते थे। मैंने उसे एक मात्रा रोज लेने का परामर्श दिया। और वह आज तक इसकी एक मात्रा रोज ले रही है। उसके खान-पानमें कोई परिवर्तन नही किया गया था।

—सी० ई० गोहरम, एम० डी० अल्वानी।

५ खून थूकनेकी शिकायत बहुत दिनसे थी और बहुत दवाएँ हो चुकी थीं। वह **कल्केरिया फ्लोर**से ठीक हो गयी। —एम० जे० ब्लीम

६ डा० ई० बी० रेनक्किनने **सदर्न जर्नल ऑफ होमियोपैथीमें** रक्त-स्रावका एक केस दिया है। रक्त काले रगका था और मात्रामें अधिक आता था। **काली म्योर** ६x से ठीक हो गया।

७ श्रीमती—आयु ७२ वर्ष, शरीर भारी भरकम, बाल और आँखें नीली। उसे दिमागमें रक्त अधिक सचित होनेके कारण मृगी जैसे दौरे आते थे। उसे ऐसा ही दौरा पडा हाथ-पाँव ठण्डे थे, माथे और चेहरे पर लसदार पसीना आया, सर गर्म और नीला था। बेहोश थी, साँस खर्राटेसे आता था।

**फैरम फॉस** ६x, आध-आध घण्टे बाद चायका एक चम्मच दिया गया। २ घण्टे बाद होश आ गया। अगले दिन वह चारपाईसे उठ गयी। बादके दौरेमें भी इसी दवाका इस्तेमाल कराया गया और यही परिणाम हुआ।

रोगिणी कहा करती थी कि पहले कभी किसी दवासे इतना और इतनी जल्दी फायदा नही हुआ था।

—एफ० ए० रॉकविद, एम० डी० **"अमेरिकन जर्नल ऑफ होमियोपैथिक मैटीरिया मेडिका"**, १८७५।

८ श्री—आयु १२ वर्ष, उसे गत कई वर्षसे नकसीर चलती थी। परिणाम स्वरूप उसके शरीरमें खूनकी कमी पड गयी। उसके पारिवारिक चिकित्सकने उसे अनेक दवाएँ खिलाई और उसे उनसे कोई लाभ न हुआ।

मैंने उसे आरम्भमें **चाईना** १x पानीमें दिया। बादमें **फैरम फॉस** ६ घोल बनाकर कुछ सप्ताह तक दिया। इससे उसका कष्ट स्थायी रूपसे ठीक हो गया। —सी० टी० एम०

६. डा० ई० जी० जोन्सने सख्त किस्मकी नकसीरका एक केस दिया है जो मासिकके दिनोंमें सहसा सर्दी लग जानेसे आने लगी थी।

**फेरम फॉस** ३x ने जादू कर दिखाया।

## रक्तार्श ( Haemorrhoids )

**सूचना :** खूनी बवासीर चिकित्सा करते समय जिगर और आमाशय आदिकी खराबी पर ध्यान देना चाहिए। आमतौर पर ये उपद्रव स्वरूप मौजूद रहते हैं और इनका खूनी बवासीरसे गहरा सम्बन्ध है। जबतक ये उपद्रव शान्त न हों, रोगका उन्मूलन सम्भव नहीं है।

**फेरम फॉस :** मस्से फूले हुए, खूनी बवासीर, खून चमकदार, लाल, तरल, उसमें गाढा होनेकी प्रवणता पायी जाती है। सख्ती आनेसे पहले इस दवाके व्यवहारसे लाभ होता है।

**कालो म्यौर :** खूनी बवासीर जबकि खूनकी रंगत गहरी हो और खून भी गाढा हो, छिछडेदार।

**काली फॉस :** खूनी बवासीर, मस्सोंमें भारी पीडा और खुजली हो।

**कल्केरिया फ्लोर .** वातार्श जिसमें आमतौरसे कमर दर्द भी होता है और दर्द त्रिक भाग तक आए। जीभकी रंगत पर भी ध्यान दें। उससे सहायक औषधका निर्वाचन करनेमें सहायता मिलेगी। बादी बवासीर जिसमें सरकी ओर खूनका दौरा अधिक हो। बादी बवासीर और उसके साथ कब्ज, खूनी बवासीर, रक्तकी रंगत देखकर सहायक औषधका निर्वाचन करें। मस्से, पेशियाँ ढीली, खूनकी रंगत चमकदार, लाल और इसके बाद थोडी-थोडी सूखी कष्टकर खाँसी आए या अधिक परिश्रमके कारण बार-बार खाँसना पडे और गला साफ करना पडे।

**काली सल्फ :** खूनी और बादी दोनों तरहकी बवासीरमें हितकर है। अन्दर और बाहर की बवासीर जिसमें सहायक औषधके रूपमें इसके साथ, **कल्केरिया फ्लोर**की जरूरत पड सकती है। जब जीभकी रंगत पीली चिकनी हो या जब स्रावके विशिष्ट लक्षण मिलते हों, तो यह इस रोगकी मुख्य औषध है।

**कल्केरिया फॉस :** खूनकी कमी वालों या दुर्बलकाय व्यक्तियोका खूनी बवासीर। **कल्केरिया फ्लोर**के साथ, अदल-बदल कर दी जाती है।

**मैग्नेशिया फॉस :** कटनेके साथ, भाला गडने जैसा दर्द जो बिजलीकी सी तेजीसे आए। बाहरी बवासीरमें गुनगुने पानीमें मिलाकर सेंक दें और मस्सोंको धोवें।

**नेटरम म्योर :** मलान्त्र बाहर निकल आए। उसमें सहसा डङ्क लगने जैसा दर्द आए, मलद्वारमें जलन हो, मलद्वारके आस-पासकी दाद, गुद्दे आएँ, जो मुश्किलसे निकले और चूर-चूर होकर गिरे। पेशाब करनेके बाद मलान्त्र और मूत्र-पथमें सुई गड़ने जैसा दर्द।

**साईलीसिया :** अत्यधिक वेदनापूर्ण बवासीर, मस्से बाहर आ जाएँ। मस्से उलझ जाएँ और उनमें पीब आ जाए। खुजली चले और दर्द हो जो मलान्त्र और अण्डकोष तक जाएँ। भगन्दर। **कल्केरिया फॉस।**

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ नौजवान, आयु २८ वर्ष, उसे कई वर्षसे खूनी बवासीर और पुराना कब्ज थी। मलत्यागके लिए भारी जोर लगना पड़ता था। गर्मी की लपटें आतीं थीं। जीभपर नक्शेकी तरह आड़ी-तिरछी लकीरें थीं, या भूरी-सी सफेद मैल थी।

**कल्केरिया फ्लोर** ३x और **काली म्योरने** उसे बिल्कुल ठीक कर दिया।

## मौसमी इन्फ्लुएँजा ( Hay Fever )

**मैग्नेशिया फॉस :** डा० टी० सी० फेनिंगकी राय है कि मौसमी इफ्लुएँझाके सम्भावित आक्रमणको रोकने, और उसके आ जाने पर, उसका जोर तोड़नेके लिए सर्वोत्तम सिद्धौषध है। यदि मौसम बहुत हुआ हो और दिनमें नाक बन्द हो जाय, साँस लेनेमें कष्ट हो, तो रातको आक्षेप आराम बशर्ते कि यह दवा देकर उसकी रोकथाम न की गयी हो। यह दवा दिनमें १-१ घण्टे बाद गर्म पानीसे देनी चाहिए।

**नेटरम म्योर :** शरीरका ज्वर दवा दिए जानेके बाद जब मौसमी इन्फ्लुएँजाका दौरा पड़े, नमक खानेकी प्रबल इच्छा हो, जरा-सी धूप लगते ही जबर्दस्त जुकाम आए और उसके साथ नाक और आँखमें खुजली हो तो दवा अच्छा काम करती है।

**साईलीसिया :** कान और कानमें खुजली चले और सरसराहट हो, छींकें बहुत जोरसे आएँ और नाकसे त्वचाको खरोंच देने वाला स्राव आए। स्वर भंग, गलेमें खुरदरापन और सूखापन, इसके साथ गुदगुदाहट होकर खाँसी आए जो ठण्डा पानी पीनेसे बोलनेसे और रातको लेटनेसे बढ़े।

## सरदर्द ( Headache )

**फैरम फॉस :** सर्दी लगने, या धूप लगनेसे आया सरदर्द। कुचले जाने की तरह, दबाव पड़ने जैसा या सूई गड़ने जैसा दर्द होता है। झुकनेसे और

हरकत करनेसे दर्द बढ जाता हैं। सन्धिवातकी प्रवणतासे आया सरदर्द। **नेटरम सल्फ**से अदल-बदलकर दें। सरदर्द जिसमें अनपच खायेकी कै हों। सरमें रक्त अधिक सञ्चित हो जानेसे आया सरदर्द, जिसमें गडन या दबावके साथ दर्द हो और स्पर्शकातरता भी हो। दर्दवाली जगह ठण्डक पहुँचानेसे दर्द कम हो जाए। यदि जीभ गन्दी हो, तो यह इस औषधके व्यवहारके लिए अतिरिक्त लक्षण है। बच्चोंके सरदर्दके लिये भी यह बहुत लाभदायक हैं। तपकन की अनुभूतिके साथ दर्द जिसका दायी ओर जोर हो। सरदर्द जिसमें चेहरा और आँखें लाल हों। पुराना सरदर्द जिसमें दिखायी देना बन्द हो जाए। और खाया-पिया कातू कै हो जाए। दायीं ओरका दर्द जो कँदियासे दायी आँखके ऊपर तक पहुँचे। सरकी ओर रक्तका सचार अधिक हो। सरको हिलानेसे, झुकनेसे और शरीरकी किसी प्रकारकी हरकतसे सरदर्द बढ जाता है। सरमें रक्त अधिक सञ्चित हो जानेसे आया सरदर्द विशेषतः ऋतुके दिनोंमें। चँदिपर ठण्डी हवा सहन न कर सके। आवाज, झटका और बालोंका स्पर्श भी सरदर्दको बढा देता है। सरपर चोट आनेके बाद आया सरदर्द, जबकि **आर्निका** कोई काम न कर सका हो।

**काली म्योर :** सरदर्द जिसके साथ कै हो और कै में दूध-सा सफेद मवाद आए। पुराना सरदर्द जिसमें जीभपर सफेद मैल जमे। या सफेद कफकी कै हो। ऐसी कै जिगरकी सुस्तीके कारण आया करती है। भूखकी कमी।

**काली फॉस :** स्नायविक सरदर्द, आवाज सहन न हो, चिडचिडापन, मतिभ्रम, चहल कदमीसे आराम मिले। छात्रों या जीर्णशीर्ण व्यक्तियोंका सरदर्द जबकि आमाशयकी खराबीका कोई लक्षण न हो। कभी-कभी जीभपर भूरे-से पीले रंगकी, सरसों जैसी मैल आए; इसके साथ प्रायः साँससे भी दुर्गन्ध आए। सरके पिछले भाग पर और आँखके आरपार दबाव और दर्द। **खाते समय** यह दर्द घट जाता है, इसके साथ थकान, जम्हाइयाँ और अगडाइयाँ आएँ। हिस्टीरियाका सरदर्द जिसके साथ आमाशयमें भारी दुर्बलता जैसे अभी प्राण पखेरु उड़ जायेंगे। ऐसा दर्द जो पित्तज वमनका पूर्व रूप हो। स्नायविक सरदर्द और कानोंमें भिनभिनाहट हो, खडा या बैठा न रह सके; अवसाद, नींद आने पर कान गूंजे। मासिक धर्मके दिनोंका सरदर्द जिसमें भूख भी हो। बाएँ स्तनाकार प्रवर्द्धनमें सख्त किस्मका दर्द हो हरकत करनेसे और खुली हवामें बढे।

**काली सल्फ :** सरदर्द जो गर्म घरमें और शामके समय बढे। और खुली हवामें घटे।

**मैग्नेशिया फॉस :** कुचले जानेकी तरहका सरदर्द जिसमें आक्षेपयुक्त लक्षण आनेकी प्रवणता हो। स्नायविक या गठियाबताके सरदर्द, गोली लगनेकी तरह; काँटा गडनेकी तरह, जगह बदलने वाला, रुक-रुककर आनेवाला या दौरोंके रूपमें आनेवाला सरदर्द। दृष्टिनाडीकी खराबीसे आया सरदर्द, विशेषतः जब कि रोगी हारा-थका और वात प्रकृतिवाला हो। वातज सरदर्द जिसमें आँखोंके आगे चिनगारियाँ झडे, एकके दो दिखाई दें। सरदर्द जिसका सरके पिछले भागमें अधिक जोर हो; स्कूलमें पढते-पढाते समय और दिमागी काम करनेके बाद दर्द बढ जाए।

**नेटरम म्योर :** मन्द-मन्द, भारी सरदर्द जिसके साथ आँखोंमें आँसू अधिक आएँ और तन्द्राका जोर हो। सोकर ताजगी नसीब न हो। सरदर्द जिसके साथ अँतडियोंकी श्लैष्मिक झिल्लियोंके किसी एक भागकी शिथिलता या खुश्कीके कारण आयी कब्ज भी हो और जीभ साफ हो या उसपर साफ, पानी-सी पतली कफ आए, किनारोंपर झाग आए और मुँहमें लार अधिक आए। पेशानीके गर्तोंपर प्रदाह आए। सरदर्द जिसमें पारदर्शी बलगमकी कै हो या, पानी जैसी पतली, रेशेदार कफ थूकमें निकले।

डा० किंग लिखते हैं: "यह उन व्यक्तियोंके लिये हितकर है जिसकी धातु दुषित हो या जिसके शरीरसे रक्तादि धातुओंका अधिक मात्रामें क्षीण हुआ है। यह पुराने सरदर्दोंके लिये भी हितकर है। ऐसा सरदर्द जो ऋतुकालसे पहले, उन दिनोंमें और उसके बाद आए। उन छात्राओंका सरदर्द जो पढ़ने-लिखनेमें अधिक परिश्रम करती है। आधी सीसीका दर्द। नजले जुकामके कारण आया सरदर्द।"

सूर्यावर्त्त ( आधी सीसी ) जिसके साथ बेहोशी आए अंगोंमें खिंचाव या झटके आएँ। डा० फॉनडर गॉलरसका मत है कि यह दवा आतशकके कारण आए सरदर्दमें बहुत लाभदायक है। उनका कहना है कि उन्हें इस दवाका व्यवहार कराकर बहुतसे रोगियोंको ठीक करनेमें सफलता मिली है।

**नेटरम सल्फ :** पुराना सरदर्द जिसके साथ पित्तातिसार भी हो, या पित्तकी कै हो और मुँहका स्वाद कडवा। आन्त्रशूल जिसमें सरमें चक्कर भी आए और जीभ पर हरी-सी भूरी मैल आए। सरदर्दका आक्रमण मासिकके दिनोंमें होता है। नियत समय पर आनेवाला सरदर्द, हर वसन्तमें आनेवाला सरदर्द। ऐसे सरदर्द जो सहसा बडी तेजीसे आएँ। विशिष्ट लक्षण ये हैं।

सरमें रक्त अधिक सञ्चित हो जाता है। ऐसी अनुभूति, जैसे सेर भरा पडा है। चँदियापर गर्मी लगे; सरमें और सरके आर-पार दबावकी

अनुभूति , मानसिक खिन्नता। सरमें चक्कर आए और मन्दापन ; कै। हिलने-डुलने और पढनेसे कष्ट बढता है। शांतिके साथ लेटनेसे घटता है। सरके पिछले भागमें दर्द ; दिमागकी जडमें असह्य दर्द जैसे सर शिकंजेमें कस दिया गया है , या जैसे वहाँ कोई चीज दाँतोंसे कुतर रही है। चलते समय दोनो कनपट्टियोंमें दर्द होता है। चंदियापर अवर्णणीय दर्द जैसे खोपडी फट जायगी। तपकनके साथ सरदर्द। सूरजके साथ बढने घटने वाला सरदर्द ( आधी सीसी ) आवाज सहन न हो। रोगी अंधेरे कमरेमें सोना पसन्द करे। मिचली और कै।

डा० ए० एम० डफ्फील्डने उपर्युक्त लक्षणोंके आधारपर, २०० शक्ति देकर पुराने सरदर्दके बहुतसे रोगियोको ठीक किया।

**साईलीसिया :** सरदर्द जिसके साथ खोपडीपर मटर जैसी गाँठें भी निकलें। सरमें रक्त अधिक सञ्चित होने, आमाशयकी खराबी स्नायविक कारणो या गठियावातके कारण आनेवाला सरदर्द। अधिक दिमागी मेहनत करने, अधिक गर्मी पहुँचने या स्नायविक थकानसे आया सरदर्द। कंठमालाकी प्रवणता, शोष , खूनकी कमी , हड्डीके नासूर ; ऐसे व्यक्तियों का सरदर्द जिनकी प्रकृति वातज है, स्वभावसे चिडचिडे हैं, त्वचा खुश्क है, मुँहमें लार अधिक आती है, पतले दस्त आते हैं और रातको पसीना अधिक आता है। दुर्बलकाय व्यक्तियोका सरदर्द , ऐसे व्यक्तियोका सरदर्द जिसकी चमडी बडी साफ सुथरी है, चेहरा पीला है, रग गेहवा है और पुट्ठे। ढीले हैं , जो अधिक नाजुक मिजाज हें जिनका पोषण दूपित है और जिन्हें यह विकार दूपित-समीकरणके कारण आया हो।

**नेटरम फॉस :** सरदर्द जो सुबह सवेरे जागते ही आ जाए। तालुपर क्रीम जैसे रगकी मैल आए , जीभ पीली, गीली। सख्त सरदर्द और ऐसा जान पडे जैसे खोपडी भरी हुई है। पेशानी या सरके पिछले भागमें दर्द जिसमें मिचली हो और खट्टे लसदार मवादकी कै आए। बहुत सख्त किस्म का सरदर्द जिसमें चंदियापर भारी दबाव पडे और गर्मी लगे जैसे खोपडी फट पडेगी—ऐसी अनुभूति , ( यह दवा तब दी जाती है जब **फैरम फॉस** काम न कर सका हो )। पुराना सरदर्द मुँहमें खट्टी झाग आए। शराब या दूध पीनेके बाद सरदर्द आए।

**कल्केरिया फॉस :** सरदर्द जिसमें सरके भीतर ठण्डककी अनुभूति भी हो और छूनेसे सर ठण्डा मालूम पडे, ( **फैरम फॉस** ) ऐसा सरदर्द जो गर्मी या सर्दी लगनेसे बढे। उन **छोटे बच्चो और छात्राओंका सरदर्द** जो वात प्रकृतवाले और चञ्चल हो।

डा० किंग लिखते हैं : यह दवा आमाशयकी खराबीसे या गठियावात के कारण आए सरदर्दमें हितकर है। इसके चुनावके लिए विशिष्ट लक्षण हैं : चलते समय या हरकत करनेपर सर चकराये। सर जैसे भरा हुआ है; और दवावकी अनुभूति, यह कष्ट पगडी या टोपीके दवावसे वढे। उन वच्चोंके सरदर्दमें लाभदायक हैं जिनका स्वभाव चिडचिडा है और जो क्रोधी हैं और जिनका ब्रह्मरध्र देर तक खुला रहे। उन व्यक्तियोंका सरदर्द जिनके लिए दिमागी काम करना कठिन हो। वदमिजाज और कुछ कामधाम करना न चाहे। भुलक्कड : सरदर्दके साथ जडता।

**कल्केरिका सल्फ :** सरदर्द जिसके साथ सर चकराये और कै हो और ऐसा जान पडे जैसे आँखें धँसी जा रही है। *सारे सरमें विशेषतः पेशानीमें सरदर्द।*

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ ऐसे रोगियोंको जिन्हें अन्य लक्षणोंके साथ-साथ, निगाह सम्बन्धी विकार भी हों, सरदर्द वढनेपर जव निगाहके दोष आएँ, भय लगे, विशेषतः रातको और जव खुजलीके साथ टखनेपर दाना निकला हो, तो मैं **नेटरम फॉस** ६x देता हूँ और इससे सारे कष्ट दूर हो जाते हैं।

—डा० चसे मोहर, एम० डी०।

२ एक वहुत दिलचस्प केस मेरे पास आया : रोगिणीकी आयु ५५ वर्ष थी। उसे ऐसा भयानक सरदर्द आता था कि वह आशिक रूपसे पागल हो जाती। वह कहती थी कि मेरा *दिमाग फट गया है* और आँखोंकी राह वाहर निकला आ रहा है। उसकी आँखोंमें गहरे पीले रगका कीचड आता था।

मैंने उसे **काली फॉस** ३x दिया और उसने जादू जैसा काम किया। दो घण्टे वाद दूसरी मात्रा दी गयी और वह विलकुल ठीक हो गयी।

प्रायः ४ सप्ताह वाद उसे सरदर्दका दौरा फिर पडा, परन्तु यह दौरा पहले दौरोंकी तरह सख्त न था। इस वार मैंने उसे **काली फॉस** ६x दिया। दो घण्टे वाद रोगिणीने आकर शिकायतकी कि इस वार आपने वही दवा नही दी जो पिछली वार दी थी। इसके असरका तो पता ही नही चला तव मैंने उसे फिर ३x की मात्रा दी और रोगिणीके कथनानुसार उसने वही काम किया जो पहली वार हुआ था।

चूँकि मै ऊँची शक्तियोंके व्यवहारके पक्षमें हूँ, परन्तु इस वार अनुभव हुआ कि शक्तियोंमें भी अन्तर है और यह ठोस सच्चाई है। यदि यही सच है तो फिर यह भी याद रखना चाहिए कि ३x की मात्रा ६x के १।१००० के वरावर है। —(उद्धृत)

३. (क) सख्त किस्मका सरदर्द जिसमें चाँदपर आम दुखन थी, खोपडी पर सन्ताप था, वालघु आ जाना सहन नही कर सकते थे और रातको भारी घवराहट होती ;—**फैरम फॉस** ६x देनेसे तत्काल लाभ हुआ।

(ख) पेशानीमें दर्द होता था और वह नकसीर चलनेसे घट जाता था। रोगीको **फैरम फॉस** ६x से ठीक हो गया।

(ग) रोगी सरदर्द आनेपर देख नही सकता था। उसे ऐसा जान पडता था जैसे सारा रक्त आँखोंमें आकर जमा हो गया है। **फैरम फॉस** ६x से ठीक हो गया।

(घ) मासिकके दिनोंमें चन्दियापर मन्द-मन्द दर्द आता था। **फैरम फॉस** की चन्द ही खुराकोंने जादू कर दिखाया।

—राऊ, 'रिव्यू ऑफ होमियोपैथिक लिटरेचर', १८७५।

४. सरदर्द हर रोज रातको १० बजे आता था और सर्दी देकर आता था। रक्ताधिक्यके लक्षण भी थे। **मैग्नेशिया फॉस**के १०x घोलसे ठीक हो गया था।

५. एक नवयुवतीको मासिकके दूसरे दिन सख्त किस्मकी वातज सर पीडा आयी, वह आवाजसे बुरी तरह घवराती थी। **काली फॉस** १२ ने तत्काल गुण किया। दवा लेनेके वाद मासिकका वहाव वढ गया और सरदर्द एकाएक वन्द हो गया।

—डब्ल्यू० पी० वैस्सलहेफ्ट, एम० डी०।

६ रोगी आयु १६ वर्ष ; उसे नियत समयपर सरदर्दके दौरे पडते। दर्द का जोर दाईं कनपटीपर होता और दर्द ऐसे आता जैसे छेद हो रहा है। या जैसे कोई पेंच कसा जा रहा है। दर्द आनेसे पहले आमाशयमें जलन होती थी, मुँहका कडवा हो जाना और सुस्ती आती। ये लक्षण प्रायः रातको ही आते। कभी-कभी सवेरे भी आ जाते। जव दर्द आता तो रोगी कोई काम न कर सकता। आमतौरपर पित्तकी कै होती और फिर सुधार आ जाता।

**नेटरम सल्फ** पानीमें घोलकर दिया गया और उसने सारे उपद्रवको दूर कर दिया।

—शुसलरसे उद्धृत।

७ नवयुवती १६ वर्ष, उसे कई सालसे सरदर्द था। दायी कनपटी में छेद होनेकी तरह दर्द आता, दर्द आनेसे पहले आमाशयमें जलन होती और मुँह कडवा हो जाता। दर्द रातको या सुवह आता। उसके वाद पित्तकी कै होती है और फिर दर्द घट जाता।

**नेटरम सल्फ** ६x से स्थायी लाभ हुआ।

## हृद् रोग ( Heart, Affections of )

**फैरम फॉस :** हृदयके हर प्रकारके प्रदाहका पहला दर्जा। हृदयावरणों का प्रदाह, हृदप्रदाह, हृत्पेशी प्रदाह, दिल या शिराओंका फैलाव (मुख्य औषध **कल्केरिया फ्लोर**के साथ अदल-वदल कर दें)। धड़कन।

**कल्केरिया फॉस :** अण्डाकार छिद्रका वन्द न होना, धड़कन जिसके साथ व्याकुलता हो और वादमें अगोंमें कम्प तथा दुर्वलता आए। दिलकी चाल सुस्त। साँस लेते समय दिलके आसपास तेज दर्द।

**काली म्योर :** जव खूनका गोला वन जाता हो, यह उन हालतोंमें हितकर है। हृत्कपाट प्रदाहमें यह दूसरे दर्जेकी दवा है और यह रोगको विलकुल ठीक कर देती है। जव दिल वढ या फैल गया हो और हृदयकी ओर रक्तका सचार अधिक हो और इसके कारण धड़कन हो।

**काली फॉस :** हृदयके स्वाभाविक कार्य सम्वन्धी विकार, रुक-रुककर धड़कन हो; गठियावातके वाद आया थकान। हृदयकी चालका रुक-रुककर आना, और उसके साथ भयानक स्नायविक विकार जैसे कोमल ग्राह्यता, भावनाओंका अतिरेक, दुःख, शोक और चिन्ताके दुष्परिणाम, दिलकी कमजोरी, जोशके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप आयी धड़कन, सीढियाँ चढ़नेसे धड़कन आना और साँस फूलना आदि। धड़कन जिसके साथ स्नायविकता, व्यग्रता, खिन्नता, अनिद्रा और व्याकुलता भी हो। डर और थकानसे मूर्च्छा आए; दिलकी कमजोर चालके कारण मूर्च्छा आ जाए।

**काली सल्फ :** नाडी तेज मन्दे, तपकनके साथ और छेद होनेकी तरह का दर्द, वोलना न चाहे, चेहरा पीला। हृद्रोगके कारण आया शोक (**काली म्योर**)। गर्मीके कारण आयी धड़कन।

**मैग्नेशिया फॉस :** धड़कन सहसा हो जवकि विकार नितात आक्षेपिक हो। दिलमें गोली या भाला लगनेकी तरहका दर्द।

**नेटरम म्योर :** खूनकी कमीके कारण आयी धड़कन, खून पानी जैसा पतला, शोथ आदि व्याकुलता या दुःखके कारण धड़कन हो। नाडीकी चाल तेज और रुक-रुककर हो, इसके साथ प्रात.कालीन सरदर्द। रक्त पानी-सा पतला; शीताद, दिलमें फड़फड़ाहट हो, घुटनकी अनुभूति।

**कल्केरिया फ्लोर :** शिराओंका फैल या वढ जाना। लचकदार तन्तुओंमें सुकड़ाव लानेके लिए मुख्य औषध है। दिलका फैल जाना, वढ जाना; दिल कमजोर।

# हिचकी ( Hiccough )

**मैग्नेशिया फॉस :** जब मार्फीन या अन्य दवाएँ प्रतिक्रिया न ला सकी हों, कष्टसाध्य हिचकी जिसके बाद देर तक सन्तापपूर्ण कष्ट हो।

**नेटरम म्योर :** कूनीनके दुर्व्यवहार और उसके दुष्परिणाम स्वरूप आयी हिचकी।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ डा० बर्नेटने अपनी पुस्तक—**'नेटरम म्योर'** में हिचकीके एक केस का हाल दिया है। रोगीको यह शिकायत १० वर्षसे थी और कूनीनके अतिव्यवहारसे हुई थी।

उसे **'नेटरम म्योर'** देनेसे स्थायी लाभ हुआ।

२ टायफॉयड ज्वरके एक रोगीको बडी सख्त क़िस्मकी हिचकी आयी। उसे ३ दिन इसके कारण बहुत अधिक परेशानी हुई। कई दवाइयाँ दी गयी और सभी नाकाम रही। आखिर **मैग्नेशिया फॉस** दिया गया। परिणाम शानदार रहा। एक ही घण्टेमें तकलीफका जोर टूट गया। अगले दिन तक हालत काफी सुधर गयी और कुछ दिन खानेसे वह बिलकुल ठीक हो गया।

—डा० जॉन फर्न, एम० डी० 'केलीफोर्निया मैडिकल जर्नल अगस्त १८८७।

# कूल्हेकी बीमारियाँ ( Hip Disease )

**कल्केरिया फॉस :** यह दवा रोगके तीसरे दर्जेमें हितकर है और हड्डी को अधिक खराब होनेसे बचाती है। पीव बनना रोकती है और नवनिर्माण लाती है।

**कल्केरिया सल्फ :** जब पीव आती हो।

**फेरम फॉस :** दर्द ; तपकन , गर्मी और नर्म स्थानका प्रदाह।

**काली म्योर :** रोगका दूसरा दर्जा जब घावपर सूजन आनी शुरू हो गयी हो।

**नेटरम सल्फ :** प्रमेह रोगियोंके बाएँ कूल्हेकी शिकायतें जबकि रोगी कफ प्रकृतिवाला हो और नमीमें उसका कष्ट बढ़ता हो।

**साईलीसिया :** पीवको रोकने या उसका नियन्त्रण करनेके लिए और घावको भरनेके लिए हितकर है। डा० आरण्डने लिखा है :

"तीसरे दर्जेमें हड्डीमें आयी पीवको रोकने और हड्डीको अधिक विनाश रोकनेके लिये तथा आक्रान्त स्थानका नवनिर्माण करनेके लिये हितकर है। आक्रान्त स्थानपर डक लगने जैसा दर्द, खुजली और जलनके साथ आता है, कूल्हेके जोडमें सन्तापपूर्ण वेदना आती है, विशेषत. शोष और कठमालाके रोगी वालकोंके लिये हितकर है।"

**नेटरम फॉस :** कठमालाके रोगियोंकी कूल्हेकी बीमारियाँ।

## स्वरभंग ( Hoarseness )

**फैरम फॉस :** गानेवालो ओर वक्ताओंका वेदनापूर्ण स्वरभग जो आवाजका अधिक इस्तेमाल करने, ठण्डी हवाका झोंका लगने, सर्दी लगने और नमीसे आए। स्वरभग जो शामके समय आए।

**काली म्योर :** सर्दीके कारण आया स्वरभग। दुराग्राही स्वरभगमें। **कल्केरिया सल्फ**के साथ अदल-बदल कर दें।

**काली फॉस :** स्वरभग और अधिक थकान जो स्वर नाडियोंपर अधिक जोर पडनेके कारण आए, इसके साथ स्नायविक अवसाद, या जब रोग गठियावातके कारण आया हो।

**काली सल्फ :** सर्दी या अधिक बोलनेसे आया स्वरभग।

**साईलीलिया :** स्वरभग जिसके साथ क्षोभजनक खाँसी भी हो।

**कल्केरिया सल्फ :** कष्टसाध्य स्वरभंग।

## हाईडरोसील ( Hydrocele )

**कल्केरिया फ्लोर :** अण्डों और अण्डकोषकी सख्ती और शोथ।

**कल्केरिया फॉस :** हाईडरोसीलमें अन्तरकालीन औषधके रूपमें काम आती है।

**साईलीसिया :** नये और पुराने रोगमें हितकर है।

### चिकित्साकालीन अनुभव

१. हाईडरोसीलके दो रोगी **साईलीसिया** २०० से ठीक हुए। उनमेंसे एक चार दिनका शिशु था और दूसरा चार वर्षका बच्चा था। —डा० गैरसी।

२. एक आदमीको दाद थी और उसे **साईलीसिया** दिया गया। दाद के साथ ही साथ उसका हाईडरोसील भी जो कई वर्षोंसे था, बहुत कम हो गया।

—**'अमेरिकन जर्नल ऑफ होमियोपैथिक मेटिरिया मेडिका'**

खण्ड २, पृष्ठ २०५।

# दिमागके पर्दोंमें पानी आ जाना (Hydrocephalus)

('दिमागके पर्दोंका शोथ' Meningitis भी देखिये)।

**कल्केरिया फॉस :** इस रोगमें सबसे पहले इसी दवापर ध्यान देना चाहिए ब्रह्मरन्ध्र विशेषतः खोपडीके पिछले भागका जोड खुला रहता है। दिमागके पर्दोंमें पानी आनेकी पुरानी शिकायत; सर बहुत बडा हो। खोपडीकी हड्डी बडी पतली और नर्म होती है। बालक चीख मारता है और हाथोंसे सरको थाम लेता है। सर डगमगाए। आँखके गोले बाहर निकल आए। कान और नाक ठण्डी।

# हिस्टीरिया; वायगोला; योषोपस्मार (Hysteria)

**काली फॉस :** स्त्रियोंका हिस्टीरिया जो घबराहट और भावुकताके कारण आए। या अत्यधिक स्नायविक और जो शीली तबीयतोंमें सयम करनेसे आए। ऐसा जान पडे जैसे गलेमें कोई गोला आकर अटक गया है। हँसने और चिल्लानेके दौडे पडें। जम्हाइयाँ आएँ। कमेडे आएँ जिनमें बेहोशी आए और प्रलाप भी करें।

**नेटरम म्योर :** जब रोग मासिक देरसे या कम आनेसे आए। सोते-सोते उठकर चल दे। भारी शोकाकुल, भयभीत, पेशाबमें कफ अधिक आए। जब पसीना आते ही सभी उपद्रव घट जाएँ तो यह दवा विशेष गुण करती है। (लीलीथल)। कमेडे और दुर्बलता आए।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ कुमारी अ, आयु १६, जब १३ सालकी थी तो एक बार मासिक हुआ था। तबसे उसे मासिक नही हुआ था। वैसे वह बहुत स्वस्थ थी। ३ मास पहले वह क्षीण होने लगी। तब मुझसे परामर्श किया गया। वह सूख चली थी; रंग पीला पड गया था। दुर्बल और क्षीण हो गयी थी। उसके आमाशयमें भी भारी खराबी थी। जब मैंने उसे देखा वह खाये पीयेकी कै कर देती थी। उसने शिकायतकी कि उसे खाना खाते ही, फौरन पेटदर्द आ जाता है (परिणाम शूल)। खाना चाहे कितना ही हल्का हो, कै हो जाती थी। कभी-कभी इस दर्दके कारण हिस्टीरियाका दौरा भी पड जाता था। जीभपर सफेद-सी मैलकी तह थी। कब्ज भी था, अफारा था और पेट बहुत ही स्पर्शकातर था। ज्वर नही

था ; हाँ, प्यास अधिक थी। खानेकी तरह पानी भी फौरन कै की राह लौट आता।

आरम्भमें मुझे ख्याल आया कि यह स्नायविक मन्दाग्निका केस है। परन्तु वादमें स्थिर हुआ कि यह हिस्टीरियाका सच्चा रोगी है। क्योंकि वह अत्यधिक स्नायविक थी और जरा-सी वातपर आँसू वहाने लगती थी। मैंने यह भी देखा कि जव भी उसके विचारमें विघ्न पडता है उसे दौरा आ जाता है।

**फैरम फॉस** १२x देनेसे एक सप्ताहमें उसके पेटकी खरावी दूर हो गयी। वाकी लक्षण **काली फॉस** २x देनेसे लगभग २ सप्ताहमें ठीक हो गए। २ मास वाद उसे स्वाभाविक रूपसे ऋतु होने लगा और वह विलकुल ठीक हो गयी।

—डा० जार्ज एच० मार्टीन, एम० डी० एस० एफ०।

२ कुमारी व , आयु ५० वर्ष , कद लम्बा, नाजुक वदन, रंगत सावली। उसे कई सालसे स्नायविकता थी और जरा-सा जोश मिलते ही दौरा पड जाता था। उसकी वडी तकलीफ यह थी कि उसका पेशाव रुक जाता था। और कई वार कैथेटरसे पेशाव उतारना पडता था। एक दिन उसने मुझे वताया कि कैथेटर भीतर टूट गया और उसका एक भाग अभी भीतर है। मैंने उगलीसे मूत्रपथको फैलाया और कैथेटरका टूटा हुआ टुकडा वाहर निकाल दिया। उस समय भी मसान पेशावसे भरा हुआ था।

इसके ६ घण्टे वाद, उसी दिन उसने मुझे फिर वुलाया। मैंने जाकर देखा वह वहुत घवरायी हुई थी और उसके मूत्राशय तथा पेटमें सख्त दर्द था। पेशाव का वेग भी अधिक था। पेटमें अफारा था और वहुत स्पर्शकातर था। ज्वर नही था।

मैंने उसे **वेलाडोना** ३x दिया। इससे हालत और विगडी। ज्वर अव नहीं था। मैंने रवर कैथेटरसे उसका पेशाव उतारना चाहा परन्तु मूत्रपथमें ऐसा भयानक आक्षेप था कि कैथेटर अन्दर न जा सका।

मुझे जरायु विकारका सन्देह हुआ। हल्का-सा क्लोरोफार्म देकर मैंने जरायुकी परीक्षा की। वहाँ कोई असाधारण वात न मिली। तव मैंने मसानेकी परीक्षा की। वहाँ भी कोई असाधारण वात न मिली। अव मैंने निश्चय किया कि यह हिस्टीरियाका केस है।

मैने उसे **मैग्नेशिया फॉस** १२x दिया। इससे शीघ्र ही पेशावकी तकलीफ मिट गयी। तव उसे काली फॉस १२x दिया गया और वह १० दिनमें ठीक हो गयी। इसके वाद उसे कोई तकलीफ न रही और हिस्टीरिया भी वड़ा हद तक दूर हो गया। —जार्ज एच० मार्टिन, एम० डी० एम० एफ०

## साधारण प्रदाह ( Inflammations in General )

**फेरम फॉस :** जब खून किसी जगह सञ्चित हो गया हो यह सोचनेकी जरूरत नही कि रोग किस अंगपर और किस कारणसे आया है। जबतक सूजनवाली जगह मवाद न आया हो, तभी तक यह दवा काम देती है।

**काली म्योर :** दूसरे दर्जेमें हितकर है जबकि स्राव अपारदर्शी और सफेद हो।

**काली सल्फ :** जब स्रावकी रंगत अधिक गहरी और वसामय हो।

**कल्केरिया सल्फ :** तीसरा दर्जा ; जब पीव आ चली हो और पीव जैसा स्राव अधिक मात्रामें आता हो।

**साईलीसिया :** जब प्रदाह अधिक न हो और स्नायुजालमें क्षोभ और भी कम हो। —जे० सी० मार्गन।

## इन्फ्लुएंजा ( Influenza )

**नेटरम सल्फ :** जब तन्तुओंमें पानीकी अधिकताके कारण रोग आया हो, तो यह खूब अच्छा काम करती है। जब रोग अन्य दवाओंके व्यवहारसे ठीक न हुआ हो, तो यह काम देती है। इस दवासे कितने ही रोगियोंके ठीक होने की सूचना मिली है।

**काली फॉस :** जब इन्फ्लुएजाके बाद स्नायविक दुर्बलता रही हो सुबह थकान मालूम पडे ; विविध पेशियोंमें खिंचाव आए और स्नायुशूल भी हो।

**मैग्नेशिया फॉस :** इन्फ्लुएजाके बाद आया स्नायुशूल जो आक्षेपके रूपमें हो और गर्मीसे कम हो जाए।

## विषमज्वर ( Intermittent Fever )

**नेटरम सल्फ :** विषमज्वरकी हर हालतमें इस दवाकी मुख्यरूपसे जरूरत पडती है ( ३x विचूर्ण )। कफप्रकृति। तर मौसममें कष्ट बढ़े। तिजारी।

**नेटरम सल्फ**के व्यवहारके लिए निम्न शारीरिक रासायनिक विश्लेषण ध्यान दें : मलेरिया ज्वरके रोगीके रक्तकणों और रक्ताधारमें पानीकी

मात्रा बढ जाती है। परिणाम स्वरूप वहाँ प्राणवायु का अश घट जाता है। **नेटरम सल्फ** शरीरसे पानी इस अधिक मात्राको बाहर निकाल देता है। जब रक्तकणोंमें आए अधिक पानीका अनुपात **नेटरम सल्फ**के व्यवहारसे स्वभाविक दशामें आ जाता है तो रक्तकण प्राणवायुका अधिक शोषण करने लगते हैं और तन्तु तक उसका उचित-वितरण करते हैं। इस तरह जब तन्तु विकार मुक्त होकर अपना कार्य स्वभाविक रूपमें करने लगते हैं तो, ज्वर आने का कारण मिट जाता है, फिर चाहे वह दलदलके पास रहनेसे आया विष हो या कीटाणुओंका उपद्रव हो।

पहाडको सूखी हवा, जिसमें प्राणवायु अधिक मात्रामें होती है, मलेरिया को तत्काल भगा देती है, क्योंकि शरीरका प्राणवायु अधिक मात्रामें मिल जाता है और पानी भाप बनकर उड जाता है। मलेरियाके रोगियोंको दूध या सपरेटर दूध नहीं पीना चाहिए। अण्डे, मक्खन और मछली आदि नहीं खानी चाहिए।

डा० डफफील्डने लिखा है : "विषमज्वर, पित्तज्वर, रक्तातिसार, जीभ पर हो या भूरेसे रगकी मैल आना और आँखके सफेद पर्देका पीला पड जाना सुनिश्चित लक्षण है।"

**नेटरम फॉस :** विषमज्वर जिसमें अम्ल पदार्थकी कै हो।

**मैग्नेशिया फॉस :** विषमज्वर, जिसमें पिण्डलियोंमें ऐंठन आए। शाम के सात बजे सर्दी आए जो पीठपर ऊपर-नीचे चले। सुबह ६ बजे सख्त सर्दी आए। भारी थकान। मलेरिया जिसमें सख्त किस्मकी ऐंठन आए और हाथ-पाँव नीले पड जाएँ।

**काली म्योर :** विषमज्वर जिसमें जीभके पिछले भागपर भूरी-सी या सफेद रगकी मैल आए। **नेटरम सल्फ**के साथ अदल बदल कर दें।

**काली फॉस :** विषमज्वर जिसमें कमजोरी पैदा करने वाला पसीना अधिक आए। चातुर्थिक ज्वर।

**फैरम फॉस :** विषमज्वर जिसमें खाए-पीयेकी कै हो जाए।

**कल्केरिया फॉस :** बच्चोंका पुराना विषमज्वर, अन्तरकालीन औषध के रूपमें हितकर है।

**नेटरम म्योर :** सुबह १०-११ बजे शीत आए। गर्मी-सर्दी आदि हर एक दर्जेमें प्यासका जोर हो। भयानक सरदर्द जो पसीना आनेसे घटे। ज्वर चला जानेके बाद होठोंके आसपास दाने निकलें। विषमज्वर जिसमें पानी भरी फून्सियाँ आरम्भमें ही या बादमें निकलें, कूनीनका अपव्यवहार

होनेके वाद। स्तन पान करनेवाले वच्चोंके होठोंपर पानीवाली फुन्सियाँ निकलें और वादमें वहाँ घाव वन जाएँ और ज्वरका दौरा जव दोपहर वाद हो, तो ये सव इस दवाके विशिष्ट लक्षण है। (एच० सी० ऐलन)। ऐसे विषमज्वर जो चेहरे और सरके स्नायुशूलके साथ आएँ।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. श्री ल—को ३ मासमे सर्दी देकर ज्वर आता था। उसने कूनीन और अन्य दवाएँ खायी। ज्वर हर रोज सुवह ११ वजे आता था। उस समय अगोंमें सख्त दर्द आता। कमरके निचले भागमें भी दर्द होता। सर्दी प्रायः घण्टे तक जारी रहती। सर्दीके समय प्यास नही आती थी। ज्वर दोपहरसे शामतक रहता। सख्त सरदर्द आता जैसे सर फट पडेगा। और ठण्डा पानी अधिक मात्रामें पीनेकी जोरदार प्यास होती। पसीना कम या विलकुल ही न आता। खाता खूव और सोता भी खूव। अगले दिन अपने कामपर चला जाता।

**नेटरम म्योर :** ३०, चार-चार घण्टे वाद दिया गया जवकि ज्वर नही हो तथा इससे वह ठीक हो गया। —एच० सी० ऐलन।

२ डा० शरविनी डग्लस (टेक्सस) ने मलेरियाके २ रोगियोंका हाल लिखा है जो **मैग्नेशिया फॉस** १२x से ठीक हुये। लक्षण निम्न थे :

सर्दी आनेसे पहले, गर्दनमें दर्द और अकडन आती। रीढमें दर्द आता। सर्दीके समय अगोंमें ऐंठन आती। यदि पैरोंको कोई थामले या उन्हें फैलाने से आराम आता था। (ऐसा करनेसे पैरोंकी हर तरहकी ऐंठन यों ही ठीक हो जाती है—सम्पादक)। सर्दी आनेसे पहले और उसके दौरानमें प्यास लगती थी। सर्दीके समय ऐंठन और कै होती थी। —एस० जे० एच०।

## वृक्करोग (kidney, Affections of)

**फेरम फॉस :** जव पेशावमें अलव्यूमन आती हो और ज्वर भी हो। वृक्कप्रदाहका पहला दर्जा। यह दवा हर तरहके प्रदाह पूर्ण दर्दों को मिटा देती है। डा० आरण्डने लिखा है : पेशावमें कफ जैसी तलछट अधिक आती थी। अलव्यूमन आनेकी पुरानी शिकायतमें जव रक्ताधिक्यके दौरे पडे। ऐसी दशामें यह **एकोनाइटसे** वढकर काम देती है। रक्ताधिक्य नकली होता है। गुर्दोंकी स्वाभाविक क्रिया विगड जानेसे रक्तमें विषैलामादा आ जाता है और उसके कारण जव कै आए।

**नेटरम म्योर :** गुर्दामें तनाव और गर्मी। ईंटके चूर जैसी तलछट; पेशावमें खून आए। डा० मेन्निजरका दावा है कि यह दवा अलब्यूमनकी मात्रा घटा देती है, यूरिया वढा देती है और क्लोराईडका निस्सरण वढाती है। पेशावमें अलब्यूमन आनेकी शिकायतके लिये सभी अन्य चिकित्साओंसे श्रेष्ठ है।

**काली म्योर :** वृक्कप्रदाह, सूजन, क्रूप खाँसीके साथ आया साधारण वृक्कप्रदाह। हृद् विकारजनित दमा जिसमें यह वोध हो कि हृदय और फेफडे सुकड गये हैं। गुर्दोंकी आभ्यान्तरिक शोथ जव अलब्यूमन अधिक आता हो। गन्दा, पीला तलछट।

**काली फॉस :** जव गुर्दोंकी वीमारीके साथ-साथ स्नायुजालकी स्वाभाविक क्रियामें भारी विकार आया हो, **कल्केरिया फॉस**के साथ अदल वदल कर दें। ये दोनों मिलकर अलब्यूमनको रोकती है। फेफड़ोंमें पानी आ जाना। दिलकी एक चालका गुप्त हो जाना।

**कल्केरिया फॉस :** अलब्यूमनको रोकनेके लिये **काली फॉस**के साथ वदल कर दी जाती है।

**कल्केरिया सल्फ :** डा० ज्विन जनवर्गने आरक्त ज्वरमें आए वृक्कशोथके एक रोगीको इस दवासे ठीक किया था।

**काली सल्फ :** आरक्त ज्वरके वाद आयी गुर्देकी वीमारी। अलब्यूमन आए।

**नेटरम फॉस :** पेशावमें रेत आए।

**नेटरम सल्फ :** पेशावकी मात्रा वढाकर रेतको वाहर कर देती है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. मेरे पास दो ऐसे रोगी आए जिन्हे आरक्त ज्वरके वाद पेशावमें अलब्यूमन आने लगी थी। पेशावमें कास्ट भी थे। सर्वाङ्ग शोथ भी था। दिल कमजोर था। अलब्यूमनके साथ चक्षुपटल प्रदाह भी था। ऐसा दिखायी देता था कि तन्तुओंका भारी विनाश हुआ है। उन्हे पसीना भी अधिक आता था।

वे दोनो **कल्केरिया सल्फ** ६x से विलकुल ठीक हो गया।

—सी० ई० फिशर, एम० डी०।

२ रोगी ७७ वर्पका वृद्ध था। पेशाव कम आता था। उसमें अलब्यूमन अधिक थी। आरम्भमें रोगीकी हालत निराशाजनक नजर आती थी। वह अपस्मारसे पीडित तथा और वहुत घवडाया हुआ था।

मैंने उसे **कल्केरिया फॉस** ६x दो-दो घण्टे बाद दिया। इसके साथ **काली सल्फ** भी दिया। ६ सप्ताह बाद पेशाब साफ हो गया। अपस्मारमें भी काफी कमी आयी। अब ६ माससे उसे कोई तकलीफ नहीं है।

भोजनमें मैंने हरा अजमोद अधिक मात्रामें खानेकी सलाह दी थी।

—इ० ए० डे केलहल, एम० डी०।

## प्रसव, गर्भ आदि ( Labor, pregnancy, Etc. )

**फैरम फॉस :** डा डब्ल्यू. प्रैट, एम. डी. लिखते हैं "मुझे यह आदत-सी हो गयी है कि प्रसवके बाद, ददाको रोकनेके लिए और स्तनपानके समय आ जानेवाले ज्वरको रोकनेके लिये, मैं इस दवाका आम व्यवहार करता हूँ।"

"नार्थ अमेरिकन जर्नल ऑफ होमियोपंथी", मई १८८३।

स्तन प्रदाह और जरायु प्रदाहका पहला दर्जा; गर्भकालीन के जिसमें अनपचकी कै हो। जरायुकी गर्दनकी सख्ती; जबकि चेहरा लाल हो, रोगिणी व्याकुल घबरायी और अधीर हो।

**काली फॉस :** प्रसव वेदना कमजोर और विफल; नकली प्रसव वेदना, शारीरिक गठनकी दृष्टिसे दुर्बलता जनित कष्टका प्रसव, यह दवा बल देती है और प्रसवको सरल बनाती है। प्रसववेदना दुर्बल और अनियमित। जरायु की गर्दनकी सख्ती जबकि रोगिणीके होंठ मोटे हों और वह अस्थिर, रोनी-सूरत और घबड़ायी हुई हो।

डा० रोज़स Pop Zeit, अप्रैल, १८८७ में लिखते हैं :

प्रसव वेदना बढानेके लिये मैं ३ सालसे काली फॉस ४ मटरके दाने बराबर देता हूँ। १०-१५ मिनटके बाद ही दवाका असर हो जाता है और प्रसव कार्य आगे बढ जाता है। इसका व्यवहार कराके मुझे कभी निराशा नहीं हुई। और मजेकी बात यह है कि कभी तीसरी मात्रा देनेकी नौबत नहीं आयी। ६ सालमें मैंने यह दवा ६० केसोंमें दी। ऐंठन और कमेडे आनेकी हालतमें मुझे **मैग्नेशिया फॉस**से भारी सफलता मिली है। आमतौरपर मैं जन्म के बाद **फैरम फॉस**की एक मात्रा रोज देता हूँ, ताकि प्रदाह न आए।"

प्रसवोत्तर वेदनाके लिये भी यह सर्वोत्तम दवा है। यदि प्रसव होनेसे कई सप्ताह पहले इसका नियम पूर्वक व्यवहार कराया जाय तो फिर प्रसव बहुत सरल हो जाता है।

**काली म्योर :** प्रसूत ज्वरमें मुख्य औषध है। स्तन प्रदाह जबकि मवाद न आया हो। यह मवाद आने नहीं देती। सफेद बलगमकी कै।

**मैग्नेशिया फॉस :** आक्षेपयुक्त प्रसववेदना जबकि टाँगोंमें ऐंठन भी आए। जरायु बच्चेको बाहर निकालनेके लिए अधिक प्रयत्न करे। प्रसूत के दिनोंके कमेडे। जरायु सख्त, होंठ पतले। प्रसववेदना दुर्बल और अल्पकालीन।

**कल्केरिया फॉस :** जलनके साथ दर्द, स्तन सख्त और वेदनापूर्ण, जैसे बढ गए हों। माँका दूध बिगडा हुआ; स्वाद खारा और रगत नीली-सी। बच्चा दूध न पिए। प्रसवोत्तरकालीन क्षीणता, या गर्भकालीन दुर्बलता। दुर्बलकाय स्त्रियोंका जरायु भ्रंश; विशेषतः गठिया वातके रोगियोंके लिए हितकर है। स्तनपान करानेके दिनोंमें मासिक होने लगे। चिक भागकी सन्तापपूर्ण दुखन। गर्भकालमें अगोंमें भारी थकान आए।

**कल्केरिया सल्फ :** स्तनप्रदाह, जब देर तक स्तनपान करानेके बाद मवाद आ गया हो। **साईलीसिया**।

**कल्केरिया फ्लोर :** प्रसवोत्तर वेदना बहुत दुर्बल; सुकडाव कमजोर। छातियोंमें कडी गाँठें पड जाएँ। रक्तस्राव। यह औषध गर्भिणीकी जरायु को बल देती है और प्रसव साल बनाती है। —एस० जे० होगन एम० डी०।

**नेटरम म्योर :** गर्भकालीन मिचली कै जिसमें झागदार, पानी-सी बलगम या दूध-सा पानी-सा और नीला-सा मवाद आए।

**नेटरम फॉस :** गर्भकालीन कै जिसमें खट्टा पदार्थ आए। यदि यह दवा स्तन प्रदाहके आरम्भमें ही दी जए तो फिर पीब नही आने पाती।

**नेटरम सल्फ :** यह दवा छातियोंमें दूध कम करती है।

**साईलीसिया :** छातियोंका पुराना प्रदाह; नासूर। छातियोकी कडी गाँठें। बच्चा दूध न ले या तत्काल बाद कै कर दे। छातियाँ कटी फटी और घाववाली।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. "मुझे इस चिकित्सा पद्धतिका जितना अधिक ज्ञान होता जाता है मैं उतना ही प्रसन्न होता हूँ। जब प्रसव वेदना बहुत कमजोर और अनियमित हो, तो फिर **काली फॉस**से बढकर असर करनेवाली कोई दवा नही है। आक्षेपिक दर्दों के लिए **मैग्नेशिया फॉस** रत्न है। प्रसवके बादमें **फैरम फॉस** देता हूँ। इसके साथ **एकोनाईट** या **एक्टिया मोसा** या और कोई ऐसी दवा देता हूँ जिसके लक्षण हों। मैं भग और पेट धुलवानेके लिए ३x के घोलका व्यवहार करता है सुबह शाम इसी घोलसे योनिमें पिचकारी भी कराता हूँ। इस चिकित्सा क्रमसे रोगिणी बहुत शीघ्र स्वस्थ्य हो जाती है।

—डा० ई० एच० हालब्रुक, एम० डी०—**हक्लैटिक मैडिकल जर्नल में**।"

२. वह तीन स्वस्थ बच्चोंकी माँ थी। चौथी बार गर्भ रहते ही उसकी तबीयत बिगडी। पूरा समय होनेसे प्रायः ६ सप्ताह पहले गर्भपातकी आशंका हुयी। पानी और खून आने लगा। सख्त किस्मकी प्रसव वेदना आयी और वह सही दिशामें थी। गर्दन फैला रही थी। मैंने उसे काफी फॉस ६x दिया। मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि दर्द बन्द हो गया। और दो दिनोंके बाद बच्चा पैदा हुआ। परन्तु वह ३ दिन बाद मर गया।

—टी० सी० विग्गिन्स, एम० डी०।

## प्रदर, लकोरिया ( Leucorrhœa )

( 'स्त्रीरोग' प्रकरण भी देखिये )

**काली म्योर :** दूधिया रंगका सफेद, कोमल स्राव जो मात्रामें अधिक हो। पुराने रोगमें विशेषतः लाभदायक है।

**काली फॉस :** स्राव जलता-जलता गर्म और तीक्ष्ण, छाले डाल देनेवाला रंगत गहरी पीली सतरे जैसी।

**काली सल्फ :** स्रावकी रंगत पीली-सी, हरी-सी, चिकना ; पानी जैसा।

**नेटरम म्योर :** स्राव पानी जैसा, जलता-जलता गर्म और क्षोभजनक ; मासिकके बाद या दूसरे मासिकसे पहले सहसा डक लगने जैसा दर्द। चलने के बाद, सुबह सवेरे नीलेसे रंगका स्राव आए और उसके साथ सरदर्द, अन्त्रशूल और भगमें खुजली हो। नीचेके रुख दबाव पडे। सिलवर नाईटरेट का व्यवहार होनेके बाद यह दवा हितकर है।

**नेटरम फॉस :** स्रावकी रंगत क्रीम जैसी या मधु जैसा, या अम्ल या पानी जैसा। जरायुसे जो स्राव हो वह खट्टी गन्धवाला और तीक्ष्ण होता है।

**नेटरम सल्फ :** स्राव तीक्ष्ण, त्वचा छीलनेवाला, अंग प्रदाहित।

**कल्केरिया फॉस :** यह औषध शरीरको बल देती है और अन्तरकालीन औषधके तौरपर इस्तेमालकी जाती है। इसका विशिष्ट लक्षण है : अण्डेकी सफेदी जैसा स्राव आता। लकोरियाका कष्ट मासिक धर्मके बाद बढता है। और अण्डेकी सफेदी जैसा स्राव आता है। कामागोंमें दुर्बलता आती है। मलमूत्रका त्याग करनेके बाद कष्ट बढ़ता है। अगोंमें तपकन होती है और कामवासना जगाती है। रोगिणीको सर्दी जुकाम आसानीसे पकड लेता है।

**साईलीसिया :** मासिककी जगह प्रदरका स्राव आए। इससे पहले अम्लशूल हो। बादमें सख्त किस्मकी कब्ज आए। स्वाभाविक गर्मीका

अभाव। विशेप रूपसे कोमल स्वभाव वाली और क्षीणकाम स्त्रियोंके लिए हितकर है जिनका समीकरण दूपित हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ श्रीमती अ—आयु १७ वर्प। प्रदर, स्राव तीक्ष्ण। मैने उसे कई दवाएँ दी। परन्तु किसीका भी असर न आया। मुझे रोगिणीकी सहन शीलता देखकर आश्चर्य होता था। मुझे इस वार भी शुसलरने दुविधासे वच निकलनेका रास्ता दिखाया।

**काली म्योर**से उसे स्थायी रूपसे ठीक हो गयी।

—डा० एस० 'शुसलर' से उद्धृत।

## यकृद्विकार ( Liver, Affections of )

( आमाशयकी खरावियाँ भी देखिए )

**फैरम फॉस :** यकृत प्रदाहका पहला दर्जा।

**काली म्योर :** पीलिया, जव कि रोगी सर्दी लगनेसे आया हो, और सर्दी के परिणाम वारह ऊगल आँतकान जला आया हो। जीभपर सफेद रगकी मैल जमे, पाखाना हल्के रंगका; जिगर सुस्त, कभी-कभी दाई ओर दर्द भी हो जाता है। पाखानेकी रगत हल्की होनेका अर्थ है कि पित्तका अभाव है। इसके साथ ही जीभपर सफेद-सी मैल आए और कब्ज हो।

**काली फॉस :** जव स्नायविक दुर्वलता प्रधान रूपसे मौजूद हो।

**नेटरम फॉस :** जिगरकी सख्ती और जिगरकी खरावीसे आया मधुमेहमें निम्नतम शक्तियाँ हितकर है। विशेपत. जवकि **क्रमशः फोड़े निकलते हों।**

**नेटरम सलफ :** जिगर क्षुब्ध, पित्तके आक्रमण, पित्तकी अधिकता, जब रोग अधिक पढने लिखने या दिमागी काम करनेसे आया हो। (**काली फॉस** भी हितकर है।) पित्तकी कै, चिडसे आया पीलिया जिसके साथ पित्तके, हस्से पाखाने आएँ और जीभपर हरी-सी भूरी मैल आए, या चमडीकी रगत मैली हो। आँखें पीली जिगरमें रक्तकी अधिकता, इसके साथ सन्ताप-पूर्ण दुखन और वहुत तेज, भाला गडने जैसा दर्द। इससे रोगके लिए मुख्य औषध है। पित्तकोपमें दर्द जैसे वह जगह फुट पडेगी, दर्दके मारे रोगी दोहरा हो जाए, मुँहका स्वाद कडवा और अधिक चिकनी कफ आए।

**नेटरम म्योर :** पीलिया जिसमें तन्द्राका जोर हो और जव इस रोगका कोई वारिष्ट लक्षण उपस्थित हो। जिगरमें दर्द हो।

**कलकेरिया सल्फ :** जिगरमें दर्द । पेड़ुके दाएं भागमें दर्द जिसके वाद दुर्वलता, मिचली और पेट दर्द हो ।

**काली सल्फ :** दस्तोंके साथ पीलिया दस्त आए ।

**साईलीसिया :** जिगरका घाव, जिगरमें तपकनके साथ दर्द जैसे वहाँ घाव हो गया है ।

## चिकित्साकालीन अनुभव

पिछली गर्मीमें मेरी दूसरी लड़की न्यू जर्सीसे घूमकर जव वापस आयी तो उसके माथेपर एक वड़ा-सा मस्सा था । कुछ ही दिन वाद वह वीमार हो गयी और उसे ज्वर आ गया । ज्वर पित्तज था । मैंने उसे **नेटरम सल्फ** दिया । यह दवा खाते-खाते वह पीली पड़ गयी और उसकी हालत ज्यादा खराव हो गयी । तव उसे **काली म्योर** दिया गया । और इस वार वड़ी फुर्तीसे सुधार आया । पीलिया चला गया और विलकुल ठीक हो गयी ।

—ई० एच० एच० ।

## शोष, सूखा, मसान ( Marasmus )

( देखिये क्षीणता )

## यान्त्रिक चोटचपेट ( Mechanical Injuries )

**फैरम फॉस :** कुचले जाने और हड्डी टूट जानेके लिए यह पहली औषध है। जवकि चोट नर्म जगह ( मर्मस्थानों ) पर आयी हो । कट जाने, गिर पड़ने या कोई चीज गिरनेसे आया चोट, और ताजे घावमें यह पहली दवा है । यह दवा ऐसी हालतोंमें दर्द, रक्तके सञ्चित होने, सूजन या ज्वरको रोकती है । वाहर भी लगायी जा सकती है । धमनियों या मोटी रगोंपर जोर पड़ना ।

चारलोट (मिशीगन) निवासी डा० सारा जे० ऐलनने लिखा है कि उपर्युक्त लक्षणोंके आधारपर जव भी फैरम फॉसका व्यवहार हुआ, इससे शानदार परिणाम प्राप्त हुए ।

**काली म्योर :** चोट आयी जगहपर सूजनका आ जाना, जव चमड़ी कट जाए और वहाँ सूजन आ जाएँ । मोंच, दानो और घावमें आए गन्दे माँसके लिए यह दूसरे दर्जेकी दवा है । चोट चपेटके वाद जव नीले दाग रह गए हों, तो उन्हें दूर करनेके लिए अत्यन्त लाभदायक है विशेषत. जव कि कोई आ माखनके साथ दिया गया ।

**कल्केरिया फॉस :** रगड, कट जाना, घाव आदि। जब इनकी उपेक्षाकी गयी हो और वहाँ पीव आ गयी हो। घावसे पीव बहने लगे।

**कल्केरिया फ्लोर :** हड्डियोंकी रगड, खराश आदि।

**साईलीसिया.** चोट चपेटकी जब उपेक्षाकी गयी हो और उसमें पीव आनेका खतरा पैदा हो गया हो। ऐसे घाव जिनसे गाढी, पीली पीव या मवाद आए। गहरीमें आयी हुई पीव। यह दवा देकर बादमें **कल्केरिया सल्फ** देना चाहिए।

**नेटरम सल्फ :** खोपडीपर आयी चोट और उसके दुष्परिणाम। जैसे दिमागी खराबियाँ आदि।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. आग बुझानेके विभागमें काम करनेवाले एक नौजवान को ट्रकसे गिरकर सरपर चोट आयी थी। इसके ५-६ मास बाद उसे दौरे आने लगे। उसका स्वभाव बहुत ही चिडचिडा हो गया और वह मरना चाहता था। दौरे मृगीकी तरह आते थे। और उनको कोई समय नही था। इससे वह बेहद निराश हो गया। उसके सरमें निरन्तर वेदना होती थी और आँखोंमें चमक बहुत लगती थी। उसे **नेटरम सल्फ** दिया गया और पहली खुराकने ही उसे चमत्कार दिखा दिया। इससे उसके सरका दर्द चला गया। कोई दिमागी खराबी न रही और फिर कभी दौरा न पड़ा।

—प्रो० जे० टी० कैण्ट, **'मेडिकल एडवास'**, सितम्बर १८८३।

२. एक स्त्रीको दरान्ती तेज करते समय बाएँ हाथके अँगूठेमें चोट आयी जिसके कारण सारा हाथ फूल गया, उसकी रगत पीली-सी लाल हो गयी। दर्दके मारे छूना भी सहन न होता प्रदाह अधिक था। नाखूनके ऊपर, प्रसारक पेशीके पास एक छोटा-सा घाव था। दबानेसे सफेद-सा पीला मवाद आया जिसमें सफेद रेशे भी मिले हुए थे। दो-दो पोर आसानीसे उखाडे जा सकते थे और उससे एक खास तरहकी चटखकी आवाज आती थी।

इस चटखके आधारपर मैंने उसे **कल्केरिया फ्लोर** दिया और इससे वह बिलकुल ठीक हो गयी, हलाकि मायेके चिकित्सकने अंगूठा कटवा देनेका परामर्श दिया था। —शुसलरसे उद्धृत।

**सन्तापपूर्ण कष्ट और कोमलता, फैरम फॉस :** यदि बायोकैमिस्टरीने केवल इसी दवाका आविष्कार किया होता तो यह मानवपर भारी उपकार था। मैं अन्य औषधियोंकी अपेक्षा सदा इसका अधिक व्यवहार करता हूँ और सदा ही शानदार परिणाम प्राप्त हुआ।

निम्न केसमें इसके व्यवहारसे बहुत ही सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त हुआ :

३ श्रीमती अ--आयु ४२ वर्ष, कभी हृष्टपुष्ट न थी। सदा ही 'शक्तिदाता' औषधोंकी तलासमें रही थी। उसे सर्दी बारबार लगती और गले और छातीमें सन्तापपूर्ण कष्ट आता। सरदर्द भी प्रायः बना ही रहता। इस दर्दका जोर कनपट्टियोंपर अधिक रहता। यह दर्द तय करनेके साथ आता। सर अत्यधिक स्पर्शकातर था। आँखोंमें भी थोडा बहुत दर्द रहता ही था। आँखोंका यह दर्द हरकतसे बढ जाता। आँखें बहुत नाजुक (कोमल) हो गयी थी। चेहरा लाल था और उसमें जलन होती थी। जीभ साफ और लाल थी। उसे वर्षोंसे मन्दाग्नि भी थी और इसके साथ ही आमाशय बहुत नर्म और स्पर्शकातर था। उसके कामाग भी नाजुक थे।

विविध अगोंकी कोमलता और सन्तापपूर्ण कष्टने मेरा ध्यान इस औषध की ओर आकृष्ट किया। मैंने उसे खानपान, स्नान और व्यायाम आदिके बारेमें आम हिदायतें दी।

**फैरम फॉस** ३x चन्द्रिकाएँ, २-२ घण्टे बाद दी गयी और इन्होंने शानदार काम किया। चार मास बाद उसे कोई कष्ट न रहा और उसका स्वास्थ्य पहलेसे अच्छा हो गया।

जिन केसोंमें नजाकल (कोमलता) क्षोभ, रक्ताधिक्य, ज्वर या किसी अगकी प्रदाहमें वहाँ सदा ही मै इस दवापर ध्यान देता हूँ। कोमल अगों की चोटमें भी मै सदा इसका व्यवहार करता हूँ। चीर फाडके बाद भी मैंने अनेक केसोंमें इसे उपयोगी पाया है। —डा० ओ० ए० पामर, एम० डी०।

४ **उपेक्षित घावके लिए साईलीसिया :** श्री के—आयु ४० वर्ष; १८ वर्ष पूर्व उन्हे घुटनोंके नीचे चोट आयी थी। परिणाम स्वरूप वहाँ प्रदाह आया और २-३ जगह पीव आ गयी। उसका कष्ठ रातके समय बढ़ता विशेषतः जब कमरा अधिक ठडा होता। दागमें गोली लगनेकी तरह दर्द आता। सेंक देनेसे आराम आता।

घावसे पीली, गाढी पीव अधिक आती थी। उसे बडी मुद्दत से १ या दो नासूर थे और उन नासूरोंपर गहरे, नीलेसे रंगका घेरा बना हुआ था। उसकी आम सेहत बहुत बिगड गयी थी। उसे पुरानी मन्दाग्नि थी और अम्ल डकार आते थे। कभी-कभी कलेजेमें जलन होती और सर्दी भी लगती।

**साईलीसियाने** उसे तत्काल लाभ पहुँचाया। उसकी आम हालतमें सुधार आया। डा० ओ० ए० पामर, एम० डी०।

५. कुमारी ख—आयु २४ वर्ष। एक सूखे नालेमें चलते समय एक बडे पत्थरसे गिरकर उसकी चिकास्थिपर चोट आयी थी। मई २२, १८६३ को

उसके सरके पिछले भागमें सख्त दर्द आया। रीढमें भी दर्द आया जिसके साथ वहुत अधिक थकान थी। घरमें चलने फिरनेसे ही थकान आती और यह कष्ट वढ जाता। यदि वह सर आगे झुकाती तो उसे जान पड़ता कि उसे मृच्छा आ जाएगी।

उसे १६ जून तक **काली फॉस** दिया गया। तव उसे **पुलसा** भी दिया गया, क्योंकि मासिक रुक गया था। यह असाधारण वात थी। तव मुझे ध्यान आया कि यह काली फॉसके कारण ही तो नही आया। अध्ययन करनेपर मालूम हुआ कि, "मासिकमें वाधा पडती है या देर हो जाती है।"

मासिक हो जानेके वाद, मैंने उसे फिर **काली फॉस** दिया। इस वार केवल २ मात्राएँ दी जवकि पहले चार मात्राएँ दी जाती थी।

३ सप्ताह वाद वह अपने कामपर चली गयी। वहाँ जाकर कुछ दिनों वाद उसे पुराने लक्षण फिर सताने लगे। वह फिर मेरे पास आयी। इस वार भी मैंने उसे **काली फॉस** दिया। वह फिर ठीक हो गयी।

मैं यह कहना नहीं चाहता कि चिकास्थिकी चोटपर **काली फॉस** का ऐसा गहरा असर है। वरन् यह वताना चाहता हूँ कि जव चोटके कारण स्नायु मण्डलमें ऐसा गहरा विकार आया हो तो फिर **काली फॉस** ऐसा काम करता है। —डा० टी० सी० विग्गिन्स, एम० डी०।

# चेचक ( Measles )

**फैरम फॉस :** चेचकके हर एक दर्जेमें हितकर है विशेषतः आरम्भमें और जव सम्प्राप्ति हो अर्थात् रोग शरीरमें आ गया हो और अभी गुप्त हो। छाती, आँख, नाक या कानके प्रदाहात्मक लक्षणोंका प्रारम्भिक दर्जा।

**काली म्योर :** स्वरभंगवाली खाँसीके लिए। हर तरहकी ग्रन्थियोंकी सूजनके लिए जवकि जीभपर सफेद या खाकीसे रंगकी मैल आए। तव यह दूसरी ( गौण ) दवा है। चेचकके वादके उपद्रवोंके लिए भी हितकर है। अतिसार ; जिसमें सफेदसे या हल्केसे रंगके पतले पाखाने आएँ ; जीभ सफेद। गलेकी सूजनके कारण आया वहरापन।

**काली सल्फ :** जव दाने दव गए हों , जव दाने सहसा दव जाएँ और त्वचा खुरदरी और खुश्क हो जाए , यह दवा दानोंको वहाल कर देती है।

**नेटरम म्योर :** चेचककी ऐसी हालत जव आँसू या लार अधिक आए। अन्तरकालीन औषधके रूपमें हितकर है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ म्युनिख निवासी डा० कॉखने रिपोर्ट दी है : मेरे पास चेचकके जो ३५ केस आए उनमेंसे अधिकांशको छुकाम और तर खाँसी थी। सफेद पर्देपर प्रदाह था और चमक लगती थी। कुछ दिन वाद दाने निकल आए जो ५,६ दिन रहे और फिर मिट गए। दानोंके समय या उनके दव जाने पर एक या दोनों कोनोंके नीचेकी ग्रन्थियाँ फूल गयी। वच्चोंको फिर ज्वर आ गया। वे फिर दिन रात चिल्लाने और आहें भरने लगे।

ऐसी हालतोंमें मैं सवको **फैरम फॉस** देता हूँ। ज्वरकी कमी वेशीके लिहाजसे १ या २ घण्टे वाद पानीमें मिलाकर दिलाता हूँ। ग्रन्थियोंकी सूजन, वाहरी लाली और दर्दके लिए भी मैं यही दवा देता हूँ। और इससे मेरे सभी केस ठीक हो जाते हैं।

—शुसलरसे उद्धृत।

# दिमागके पर्दोंका प्रदाह ; सरसाम ( Meningitis )

**फैरम फॉस :** प्रदाहका पहला दर्जा ; तेज ज्वर ; नाडी तेज और प्रलाप।

**काली म्योर :** गौण औषध है ; जवकि पानी आया हो।

**कल्केरिया फॉस :** दिमागके पर्दोंमें पानी आ जानेकी नयी और पुरानी शिकायतके लिए मुख्य औषध है। दिमागके पर्दोंमें पानी आ जाना, व्रह्मरध्र ( तालु ) खुला, चौड़ा, दवा हुआ। जिन परिवारोंमें इस रोगकी प्रवणता पायी जाती हो, वहाँ यह प्रतिषेधक है। ऐसी दशामें दूसरी शक्तिका चूर्ण सुवह शाम देना चाहिए। और जव पानी आ चुका हो तो **आर्जेण्टम निट** ६ के साथ अदल वदल कर दें।

—ग्रॉफोगल।

**नेटरम सल्फ :** सख्त सरदर्द विशेषतः दिमागकी जड और गुद्दीमें (गर्दनका पिछला भाग )। दर्द ऐसे होता है कि जैसे दिमागको शिकजेमें कसकर कुचला जा रहा है। या जैसे वहाँ कोई चीज़ दाँतोंसे कुतर रही है। सरपर चोट आनेके वाद।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ श्री अ—दिमाग़के पर्दा पर प्रदाह आया था। एक ऐलोपैथ ने रोगको असाध्य वताकर दवा देनेसे इन्कार कर दिया था। रोगीको हालत जरूर सगीन थी क्योंकि उसके परिवारमें दिमाग़की वीमारियाँ पैतृक थी। उसका एक निकटतम सम्वन्धी इसी रोगसे मरा था।

जब मैं उसे देखने गया, तब वह दो दिनसे प्रलाप कर रहा था। प्रलाप भी पागलपनकी हदतक पहुँच चुका था। चेतना कष्ट हो चुकी थी।

मैंने उसे **काली फॉस** ६ और **फैरम फॉस** दिया। एक सप्ताह बाद ज्वर चला गया। वह अभी दुर्बल था। अन्य बाह्य लक्षण मिट गये थे। मैंने उसे शीघ्र बहाल होनेके लिए **कल्केरिया फॉस** दिया। और वह आठ दिन बाद अपने काम पर चला गया। —डा० क्वसि।

# दिमागी हालतें ( Mental States )

**फैरम फॉस :** क्रोधके दुष्परिणाम, सामान्य बातोंसे उदासीन, हतोत्साह; निराश, छोटी-छोटी बातोंपर चिढ़ जाए।

**काली फॉस :** अधिक दिमागी काम करनेके कारण आयी दिमागी कमजोरी, जिसमें भूख मिट गयी हो, तन्द्रा आयी हो, निरुत्साह आया हो, चिड़चिड़ापन भी हो, नामर्दी, स्मरणशक्तिका ह्रास या अनिद्रा भी हो। बच्चोंको चिड़चिड़ापन। स्नायविक विकारोंसे आयी तुनक मिजाजी। बच्चा डरे, चिल्लाए, चीख मारे। सोते-सोते उठकर चल दे, अत्यधिक घबराहट, जरा-सी आवाजपर चौंक उठे। सोते-सोते बड़बड़ाए, जब जागे तो चाहे कि उसे गोद उठाकर घुमाया जाए। जागते समय बेतुकी बातें करे, कारबार और रुपये-पैसे के बारेमें निराश, दूसरोंसे मिलना-जुलना पसन्द न करे। निरुत्साह, जैसे अभी मूर्च्छा आ जाएगी। आवाजसे डरे, आवाज सहन न हो, जड़ता, अशक्ति; डरपोक, भ्रम, घर जाना चाहे, अतीतकी घटनाएँ याद आएँ और सताएँ **बहम खिन्न**, स्नायविक दुर्बलतासे आयी बदमिजाजी। मानसिक भ्रम ( दिमागके धूसर वर्णीय पदार्थकी असाधारण स्थिति )। शिथिलता, अवसाद, दुर्बलता, पागलपन। जब रोगी युक्तियुक्त बात न करे तो इस दवाकी जरूरत पड़ती है। विविध प्रकारका उन्माद। खिन्नता जिसके साथ रस रक्तादि धातुओंका ह्रास भी हो और उसका रीढ़के स्नायुजालपर प्रभाव पड़े। **अपस्मार;** अधिक दिमागी मेहनत करनेसे आयी खिन्नता **आंशिक लकवेमें** असाध्य रोगियोंको भी एक बार लाभ करता है। बच्चा रातको डरे, चीख मारकर जागे, व्याकुल और चिड़चिड़ा। अत्यधिक कोमलग्राही। आहें भरे और निरुत्साहित, सदा ही बुरा सोचे। सोते-सोते आहें भरे और कराहे। लज्जाशील। अत्यधिक भावुक। शिराओंके स्नायुजालपर नियन्त्रण नहीं रहता। छूने या सहसा आवाजपर चौंक पड़ता है। जरा-सा कष्ट भी सहन न हो। दुःख और

शोकके दुष्परिणाम। हर तरहकी दिमागी बीमारी चले जानेके बाद स्वस्थ्य बनानेके लिए बहुत गुणकारी औषध है।

वेस्टर्न असाईलम (पागलखाने) के अध्यक्ष डा० डब्ल्यू० ई० टेलरने लिखा है :

"जब हस्तमैथुनके कारण पागलपन आया हो, रोगी मूढ न हो, वह अधिक व्याकुल और दुखी हो, कभी-कभी झगडालू भी हो—परन्तु उसका यह झगडालूपन अधिक देर न चले, तो हमारा अनुभव है कि और औषधोंकी अपेक्षा **काली फॉस** अधिक गुणकारी है।"

**नेटरम सल्फ :** आत्मघातकी प्रवृत्ति, भारी सयमसे काम लेना पडे। **सर पर चोट आनेके परिणाम स्वरूप आए दिमागी विकार।** सगीत असह्य होता है।

**मैग्नेशिया फॉस :** ज्ञानेन्द्रियोंका भ्रम, भारी भुलक्कड जड। सोच-विचारका काम न कर सके। किसी भी प्रकारका दिमागी विकार आनेका झुकाव।

**नेटरम म्योर :** भारी शोकाकुल, भविष्यके बारेमें सशक, हर समय अप्रिय बातोंपर विचार करते रहना चाहे। सान्त्वना मिलनेसे अधिक दुःखी हो जाता है। वह भी, इसके साथ श्लैष्मिक झिल्लियोंकी खुश्की और क्षोभ; क़ब्ज जिसमें सख्त सुद्दे आए। शोकातुर और धडकन, दूसरोंके साथ मिल बैठना पसन्द न करे। बडी आसानीसे चिढ जाए।

**नेटरम फॉस :** घबराया हुआ, क्षुब्ध, जरा-सी बातपर चिढ जाये, अधीर और सशक। फर्नीचर कोई आदमी समझे। साथ वाले घरमें किसी कदमोंकी आहट सुने।

**साईलीसिया :** रोगी समझता है कि मै एक समय दो जगह हूँ। सूइयोका भय और उन्माद। घर और सम्बन्धियोके पास जानेके लिए लालायित। हठी, दुराग्रही; स्नायविक दुर्बलता, अधीरता, भारी स्वप्न। सभी कष्ट पूर्णिमाके आसपास, मौसम बदलनेपर तूफान आनेपर बढे।

**कल्केरिया फ्लोर :** भारी खिन्नता, अवसाद, इसके साथ आर्थिक सर्वनाशकी निराधार आशका। दुविधा।

## चिकित्साकालीन अनुभव

**जड़ात :** जनवरी १९६१ में, एक वृद्धा अपने सबसे छोटे बच्चे—के बारेमें सलाह करने आयी। बच्चेकी आयु २६ वर्ष थी कद ५ फुट ८ इंच था। शरीरकी गठन अच्छी थी। भूख भी अच्छी थी। वह एकदम मूर्ख था।

हाँ, या न के सिवा वह किसी वातके उत्तरमें कुछ भी न कह सकता था। ये उत्तर भी प्राय; मूर्खतापूर्ण ही होते थे। उसकी आकृति और गतिविधि छोटे वच्चे जैसी थी। उसके सारे दाँत गिर चुके थे। सरका दायाँ भाग वाएँ भाग की अपेक्षा छोटा था। वह ५ मिनट भी शांतिसे वैठ नहीं सकता था। जव उसे घवराहटका दौरा पडता था, तो वह अपने कपडे फाडकर कमरेमें इधर-उधर फैला देता था। यहाँ तक कि वह विलकुल नंगा हो जाता। वह अपनी माँ से कुछ डरता था और उसका आदर भी करता था। और वही उसे संभालती भी थी। उसे हस्तमैथुनकी आदत भी नही थी। वस्तुतः उसे किसी वातमें दिलचस्पी थी ही नहीं।

वरसों तक उसे ऐलोपैथिक तरीकेसे इलाज हुआ, परन्तु निष्फल रहा। वह अपने माँ-वापका ७वाँ वच्चा और सव तथा माँ-वाप स्वस्थ थे। मेरे पूछनेपर वृद्धाने वताया कि जव वह गर्भमें था तो वह विलकुल सुखी और स्वस्थ थी।

मैंने उसे **मैग फॉस** ३x और **क्लकेरिया फॉस** : ३x, ५-५ ग्रेनकी मात्रा, अदल वदलकर १-१ घण्टे वाद दी।

एक मास वाद माँने वताया कि अव उसे दौरे नही पडते और वह कपडे नही फाडता। पहलेसे अधिक शांत है और घरके कामकाजमें थोडा-वहुत दिलचस्पी भी लेता है।

और २ मास वाद उसे कुछ समझ-वूझ आयी। वह घर और वरतन धोनेमें माँका हाथ वटाने लगा। वरतन तोडता नही था। अव वह अपने भाई-वहनों की तस्वीरें भी पहचानने लगा।

चार मास वाद मैंने उसकी माँ को सलाह दी कि इसे दूसरे भाईयोंके साथ जो वढईका काम करते थे, कामपर जाने दो। वह वहाँ जाकर उनका हाथ वटाने लगा और काममें दिलचस्पी लेने लगा।

आठ मास तक यही दो दवाएँ जारी रही और अव वह ८ घण्टे तक डटकर वढईगिरी करने लगा। कोई थकान या सुस्ती उसे न आती और वह ७-८ रु० रोज कमाने लगा।

—डा० ई० ए० डे कैलहल, लॉस ऐंजल, कैलीफोर्निया।

२ **मानसिक विकार** : रोगिणीकी आयु २६ वर्ष थी। वह पागल थी परन्तु हिंसक नहीं थी। घरेलू कारणोसे वह खिन्न थी। दिमाग कमजोर था, निरुत्साहित, वदमिजाज, भुलक्कड ; जीवनके अन्धकारपूर्ण पहलूपर ही विचार करती, भ्रम होता था कि कुछ सुन रही है। क्षीणकाय, रातको नींद न

आती थी और दिनमें उदास रहती। अधिकतर चिल्लाती रहती। बहुत समझाने बुझाने और कहनेसे खाना खाती।

उसे काली फॉससे लाभ हुआ। अब वह खाने बजाने और गाने लगी। मानसिक और शारीरिक दृष्टिसे पूरा सुधार आया।

—डा० डब्ल्यू० ई० टेलर, निरीक्षक, पागलखाना।

३ रोगिणी आयु ८६ वर्ष थी। वह बहुत ज्यादा खिन्न और जीवनसे उकताया हुआ था। परन्तु मरनेसे डरता भी था; अभिमानी; उसका दिल टूटा हुआ था। दुखी, निराश। साधारण होमियोपैथिक दवाओंको विफलताके बाद उसे **काली फॉस** ६ दिया गया और उससे वह ठीक हो गया।

४ डा० आनबर्गने एक केस दिया है जिसमें पूजापाठ और प्रार्थना करते रहनेका उन्माद था। वह **काली फॉस** ६ खाकर एक सप्ताहमें ठीक हो गयी थी। उसका ब्यौरा निम्न है:

कुमारी अ—कई सालसे पागल थी। अब पागलपनके दौरे अधिक पड़ने लगे। उसके भाईने उसे पागलखानेके डाक्टरको दिखानेका निश्चय किया। उसका एक मित्र मेरे पास आया और सारा हाल सुनाकर पूछा कि क्या ऐसे निराश रोगीको भी ठीक किया जा सकता है?

मैंने उसे विश्वास दिलाया कि **काली फॉस**के व्यवहारसे वह ठीक हो जाएगी।

इस दवाका व्यवहार शुरू होनेके बाद उसे पागलपनका कोई दौरा न पड़ा। वह घरके कामकाज करने लगी।

पागलपनके और भी कितने ही केस **काली फॉस**से ठीक हुए। उनमेंसे दो प्रसूतोन्मादके केस था।

—शुसलरसे उद्धृत।

५. रोगिणीकी आयु ४४ वर्ष थी। उसे पूजापाठ करते रहनेका उन्माद था। विचित्र बात यह थी कि ये दौरे पड़नेसे पहले उसे धर्मकर्मसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह दिनभर पश्चात्ताप करती, चिल्लाती रहती, हाथ मलती रहती और कपड़े फाड़ देती। उसके पास काग़ज रखे जाते ताकि वह अपने कपड़े न फाड़े। वह उन काग़जोंको भी फाड़ देती। वह अपने आसपास वालोंको न पहचानती और सो भी न सकती। उसकी आँखें पथरा रहतीं। उसे दो आदमी पकड़ते तो पर काबू आती। उसकी नाक पकड़ी जाती और जबरदस्ती दवा या खाना दिया जाता।

मैंने उसे **काली फॉस** दिया। डा० शुसलरने अपनी पुस्तकमें इस लवणके बारेमें लिखा है: इस लवणके परमाणुओंकी प्रक्रियामें जब गड़बड़ पड़ती है।

तो दिमाग़ी कमजोरी आती है। और वह चिडचिडेपन, भय, रोने और घबराहटके रूपमें प्रकट होती है। इसके साथ ही दिमाग नर्म पड जाता है।

**काली फॉस**ने उसे ठीक कर दिया। इसका चुनाव मैने पिछले अनुभवके आधारपर किया था।

वह रोगी ८० वर्षका था। उसका दिमाग़ खराव हो गया था। वहम और खिलता वडे लक्षण थे। वह जीवनसे उकताया हुआ था परन्तु मरनेसे डरता था।

उसे **नक्स, औरम, ब्रोमाईड ऑफ पोटास** आदि ऐलोपैथिक मात्रामें दिए गए और इनसे कोई लाभ न हुआ। **काली फॉस**ने तत्काल फायदा किया। दवा देनेके ८ घण्टे वाद ही रोगी शान्त हो गया और उस रात वहुत अच्छी तरह सोया। इस तरह वह विलकुल ठीक हो गया। —शुसलरसे उद्धृत।

डा० एलिस आई० रॉस्सने भी एक पगलाका हाल वताया है। उसकी आयु ५० से ऊपर थी। वह कई रातोसे नही सोया था। वह अपनेको मित्रहीन और धनहीन समझता था।

**काली फॉस**से वह कुछ दिनोंमें एकदम ठीक हो गया।

—**आईओवा होमियोपैथिक जर्नल**, अक्टूबर १८७३।

## मासिक (Menstruation)

( कष्टरज और स्त्रीरोग भी देखिए )

**फैरम फॉस :** ऋतुकालमें दर्द आए, चेहरा लाल हो जाए। और नाडी की चाल वढ़ जाए, *अनपच खायकी कै हो*, जिसका स्वाद कभी-कभी अम्ल हो, रक्तका अधिक संचय, रक्त चमकदार लाल।

यदि ये लक्षण वार-वार आते हो तो फिर मासिक होनेसे पहले यह दवा देनी चाहिए। जव हर ३ सप्ताह वाद मासिक हो जाता हो और पेट तथा कमरके निम्न भागपर दवाव पडता हो और चँदियापर दर्द आता हो। नीचेके रुख दवावकी अनुभूति और डिम्बाशयमें मन्द-मन्द दर्द निरन्तर होता रहे।

**काली म्योर :** मासिकका वहुत देरसे होना या विलकुल ही न होना जवकि जीभ सफेद हो। मासिक समयसे वहुत पहले आए, अधिक आए;

रंगत गहरी छिछडेदार , तारकोल जैसी काली । जब मासिक अधिक समय तक जारी रहे और जल्दी-जल्दी आए ।

**काली फॉस :** मासिक रुक जाए या देरसे आए, इसके साथ उत्साह-हीनता, शिथिलता और साधारण स्नायविक दुर्बलता। कष्टरज, पीली, शोकातुर, चिडचिडे और कोमल स्वभाववाली स्त्रियोंकी मासिक दर्दसे आए, या बहुत देर से आए। ऐसी ही हालतोंमें कम आए , अधिक आए खूनका रग गहरा लाल, काला-सा लाल, पतला न जमनेवाला; कभी-कभी तेज गधवाला । मासिक बहुत देरसे और कम आए, अनियमित आए, दुर्गन्धित, इसके साथ देह पर बोझ और अफारेकी अनुभूति, जीभपर पीली मैल। वात प्रकृतिवाली स्त्रियों की मासिक समयसे पहले और मात्रामें अधिक आए। मासिकके साथ मन्द-मन्द सरदर्द, गहरी थकान और नीद, कमर दर्द और मासिकके बाद कामोन्माद ।

**मैग्नेशिया फॉसः** कष्टरजके लिए आमहालतोंमें मुख्यौषध है। कष्टरज, या रज आनेसे पहले दर्द हो। योनिका आक्षेप। बाह्यांग फूले हुए, दर्द बहुत तेज, रुक-रुककर आए ; दायी ओर कष्ट अधिक आए। **गर्मीसे आराम आए , मासिक समयसे बहुत पहले आए रक्तकी रंगत गहरी छिछड़ेदार, रेशेदार।** ४०-५० वर्षकी आयुके आसपास रज सम्बन्धी कष्ट। गर्मीकी तमतमाहट और सर चकराये ।

**नेटरम म्योर :** स्राव पतला , पानी-सा पतला या पीला , पतला पानी-सा खून , डा० सूलजरने लिखा है "जवान लडकियोंको यदि मासिक न आए, या बहुत ही कम-कम आए, और बडे अन्तरसे आए , आमाशयमें दर्द हो, मिचली और कै हो, दुर्बलता हो और ऐसा जान पडे जैसे अभी बेहोशी आ जाएगी, खट्टी चीजें खानेकी इच्छा हो, मास, रोटी और पके हुए भोजनसे अरुचि हो, तो इस दवाकी १२ और ३० शक्ति अधिक लाभ करती है।"

मासिकके दिनोंमें निराशा घेर लेती है। इसके साथ हर रोज सुबह सरदर्द आता है , मासिक मात्रामें अधिक और समयसे बहुत पहले आता है। नींद ठीक नही आती , डाकुओं और लुटेरोंके स्वप्न आएँ। खडा हो तो सर और कमरके निचले भागमें दर्द आ जाता है , और किसी सख्त चीजपर लेट जानेसे घट जाता है ।

**कल्केरिया फॉस :** नवयुवतियोको मासिक समयसे बहुत पहले आती है। बडी आयुवालियोको अधिक देरसे आता है। स्तन-पान करानेके दिनोंमें मासिक आने लगता है। मासिक होनेसे पहले काम वासना बहुत बढ जाती है और मासिक होनेके बाद भारी दुर्बलता आती है। रोगिणी हर समय बैठे

रहना चाहती है। उठने और टहलने फिरनेसे जी चुराये। गठियावातके दर्द। निराशके बाद, मौसममें ठण्डक आनेपर और जोड़ोंमें दर्द आनेपर कष्ट बढ़ता है। यह औषध उन स्त्रियोंके लिये हितकर है जिनका शरीर ढीलाढाला है, मुरझाया हुआ और क्षीण है।

**नेटरम सल्फ :** मासिकका स्राव बड़ा तीक्ष्ण, त्वचा छीलनेवाला होता। वह यदि जंघाओंपर लगता है तो वहाँ सन्तापपूर्ण कष्ट आता है। इससे पहले तेज नकसीर आए जिसमें खून रुक-रुककर गिरे। इसके साथ पेटदर्द आए, जैसे कोई पेटमें चुटकी काट रहा है और तालुमें जलन हो, जैसे वह कच्ची और सन्तापपूर्ण है। कामागोंका प्रदाह, सन्तप्त, फूले हुए और छालोंसे भरे हुए। चलते समय मासिकका स्राव बढ़ जाता है।

**साईलीसिया :** मासिकके रक्तसे दुर्गन्ध आए; मासिकके दिनोंमें सारा शरीर बर्फकी तरह ठण्डा रहे और क़ब्ज भी रहे। पाखाना आए और फिर भीतर चला जाए। कमर दर्द जैसे लक़वा मार गया है। स्तनपानके दिनोंमें मासिक देर तक जारी रहे। मासिक समयसे पहले और कम आए, मात्रामें अधिक तो प्रायः ही कभी आता है।

**कल्केरिया फ्लोर :** मासिक अधिक आए और नीचेके रुख दबावके साथ दर्द। अतिरज।

**नेटरम फॉस :** मासिक समयसे बहुत पहले आए, खूनकी रंगत पीली। इसके साथ ही दोपहर बाद आँखोंका ऊपर दर्द आए, आँहें भरनेका झुकाव, घुटनोंमें दर्द जैसे रंगे छोटी हो गयी है। कलाईयोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट, सर्दी लगे और नींद ठीक न आए।

**काली सल्फ :** मासिक बहुत देरसे और कम आए; इसके साथ पेटमें अफारा और बोझकी अनुभूति, सरदर्द और जीभपर गहरे पीले रंगकी मैल आए। बच्चेदानीसे खून आए।

**कल्केरिया सल्फ :** मासिक बहुत देरसे आए, अधिक देर जारी रहे। इसके साथ सरदर्द, अगोंमें खिंचाव आए और भारी दुर्बलताका बोध हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. एक मोटी-ताजी और हृष्टपुष्ट धोबिनको १॥ माससे बच्चेदानीसे खून आ रहा था। उसने बताया कि कष्टका कारण यह है कि वह ठण्डे पानीमें खड़ी रहकर काम करती है।

**साईलीसियाने** रक्तस्राव तत्काल रोक दिया। उसने कोई और दवा न ली। वह एक सप्ताहमें ही ठीक हो गयी। —डा० ए० टेस्ट।

२. कुमारी ब—आयु २२, कद नाटा, मोटी ताजी गोलमटोल, चुस्त दिमाग वाली, मेधावी। उसे आरम्भसे ही कष्टरजकी तकलीफ थी। मासिक होनेसे कुछ घण्टे पहले और पहले दिन बच्चेदानी और निम्नागोंमें सख्त दर्द आता। उसे ऐसा भय लगता कि हिस्टीरिया हो जाएगा। मैं जब उसे देखने गया वह बिस्तरामें लेटी हुयी थी। उसने अपने पाँव गर्म पानीमें रखे हुए थे। पेटपर गर्म पानीमें भीगा हुआ कपड़ा कई घण्टोंसे रखा था। परन्तु तो भी दर्दमें कमी नहीं आयी थी। मैंने उसे मैग्नेशिया फॉस ६x बड़ी मात्रामें दिया। आध घण्टेके अन्दर दर्द घट गया। दूसरी मात्रा फिर दी गयी। कुछ ही देरमें वह सम्भल गयी। मासिक स्राव खुलकर होने लगा। और स्वभाविक हुआ।

अगले मासके लिए मैंने उसे परामर्श दिया कि वह मासिक आनेसे पहले दिन ३ मात्राएँ ले और जिस दिन मासिक हो उस दिन २-२ घण्टे बाद लेती रहे। उसने ऐसा ही किया और उस बार कोई कष्ट न हुआ। तीसरे महीनेमें भी यही हुआ और उसके बाद उसे कोई कष्ट न आया।

—'मैडिकल एडवासरसे', दिसम्बर १८८६।

३. कष्टरज : मासिकके दिनोंमें एक इंचसे दो इन्च तक लम्बाईके छिछड़े आया करते थे। मासिक होनेके बाद पेटमें नीचे तक असह्य दर्द आता था। जिसके मारे दोहरा होना पड़ता था और पेटपर गर्म पानीकी थैली रखनी पड़ती थी। ये दर्द एक या दो दिन जारी रहते और तब झिल्ली निकल जाती। इसके अतिरिक्त उसका स्वास्थ्य अच्छा था।

मैंने उसे **मैग्नेशिया फॉस** १० लाख, पानीमें मिलाकर, सुबह शाम २ दिन दिया। अगले मासिक प्रायः वेदनाहीन था। उसके बाद भी उसे दर्द न आया। परन्तु छिछड़ा फिर भी निकलता रहा।

इसके ६-७ मास बाद उसके पाँव पानीमें भीग गए और दर्द फिर आ गया उसे फिर **मैग्नेशिया फॉस** १० लाख दिया गया। वह फिर ठीक हो गयी।

—डा० एस० ए० किम्बौल।

४ विवाहिता थी वह; और एक बच्चेकी माँ भी थी। उसे अतिरज था। दो बार तो मासिक ऐसा आया कि यह डर पैदा हो गया कि वह मर जाएगी। परीक्षा करनेपर मालूम हुआ कि बच्चेदानी नीचे आ गयी है और फूली हुई है। बड़ा सख्ती भी थी। मुँहका छेद कोमल, लाल और लगभग १।२ इञ्च फैला हुआ था। भीतरी भाग भरा हुआ था और बाहरी भागमें रक्ताधिक्य था।

मैंने उसे **मैग्नेशिया फॉस** ६x दिनमें ३-४ बार दिया।

अगले मास अतिरज न हुआ। ३ मासमें जरायु अपनी असली हालतमें आ गयी।

—'मैडिकल एडवास', दिसम्बर १८८६।

# मार्फियाकी आदत (Morphine Habit)

**नेटरम फॉस :** एम० जे० लुईगने एक चिकित्सकको वताया है कि वह हर रोज सात ग्रेन मार्फिन खानेका अभ्यस्त था। उसे ग्लेसरीन और पानीमें मिलाकर **मैग्नेशिया फॉस**का इजेक्शन दिया गया। जैसे-जैसे वह मात्रा वढा दी गयी, मार्फिन खानेकी मात्रा घटती गयी। २ मासमें रोगी मार्फिन खाना विलकुल छोड गया। दवाकी मात्रा भी धीरे-धीरे घटा दी गयी और अन्तमें २ सप्ताह वाद विलकुल वन्द कर दी गयी। अव उसे मार्फिन खानेकी इच्छा ही नहीं होती।

**काली फॉस :** एक २० वर्षीया युवतीको मार्फिन खानेकी आदत पड गयी। वह वडी सुन्दरी और वुद्धिमती थी और वडे-वडे लोगोंसे मिलती थी। दो वडे प्रसिद्ध चिकित्सक उसकी आदत छुडानेका यत्न करके विफल हो चुके थे। वादमें मुझे मालूम हुआ कि उनकी विफलताका कारण यह था कि रोगिणी का स्नायुजाल आयत थका हुआ था, और वह एकदम निढाल होनेके समीप थी।

मैंने डरते-डरते और काँपते-काँपते इलाज शुरू किया। मेरा चिकित्सा कम नहीं था, जिसे हमारे वहुत सफल और प्रसिद्ध चिकित्सक अपनाते हैं। परन्तु इतनेपर भी रोगिणी मौतके समीप पहुँच गयी। मैंने उसे एक-एक करके वे सभी 'स्नायु शक्तिदाता' औषधें दी जो किसी भी चिकित्सा पद्धतिमें वरती जाती है। मैं हार गया और निरुत्साहित हो गया।

एक दिन मैं उसे देखनेके लिये उसके घर जा रहा था और सोच रहा था कि मुझे उसका इलाज छोड़ देना चाहिये तव सहसा मुझे काली फॉसका ध्यान आया। मैंने उसे यही दवा दी और १५-१५ मिनट वाद खानेकी हिदायत की। वाकी सभी हृद्य और 'शक्तिदाता' औषधें वन्द कर दी। इससे आश्चर्यजनक परिवर्तन आया। तेज सरदर्द, अनिद्रा, पथराई हुई आखें भूरी, सूखी जीभ और भयानक दुर्वलता वड़ी तेजीसे मिट गए। कुछ दिन वाद वह विलकुल ठीक हो गयी। अव वह खुद कहती है कि उसे मार्फिनसे नफरत हो गयी है।

यह सव **काली फॉस**की करामत थी (मैंने ३x शक्ति दी थी)। यदि यह कोष लवण न होता तो मैं उसे ठीक न कर पाता।

—डा० वी० ए० सांडर्स, एम० डी, विंटरसेट, ओहाईओ।

## मुँहके रोग ( Mouth, Diseases of )

**फेरम फॉस :** मसूढे वेदनापूर्ण, लाल, गर्म प्रदाहित ; मुँहकी श्लैष्मिक झिल्लियोकी लाली, खुश्की और गर्मी ।

**काली म्योर :** मुँह आ जाता है , छोटे बच्चों या स्तनपान करानेवाली स्त्रियोंके मुँहमें सफेद-सफेद दाने बनते हैं। मसूढे फूल जाते हैं , नर्म पड जाते हैं। मवाद आनेसे पहले पहले यह दवा उपयोगी है। मुँह छिल जाता है। मुँहसे दुर्गन्ध आए। मुँह लाल फूला हुआ , गाढी, पानी-सी लार आए। मसूढे फूले हुए, रगत सफेद या पीली। मसूढोंसे खून आए। मसूढोंके आतशकी घाव। मुँहका सडाव।

**काली फॉस :** मुँहके गले-सडे घाव, जिन्होने गालोंको भी आक्रान्त किया हो। घावकी रंगत मटियाली। मुँसे दुर्गन्ध आए। मुँह आ जाए। मसूढोंसे खून आए जबकि उनके किनारोंपर लाल लकीर या मैल जमी हुई। सडाववाला घाव , पानीवाला घाव ; होठोंपर सन्तापपूर्ण दाने और छाले निकलें। मसूढे नर्म और फूल जाएँ। गाढी और नमकीन लार अधिक आए ; जीभका प्रदाह, जिसके साथ बहुत अधिक खुश्की या दुर्बलता आए। जीभके सिरे सन्तापपूर्ण और लाल।

**नेटरम म्योर :** मुँह आ जाए और लार अधिक आए। मुँहके आस-पास मोतियों जैसे दाने निकलें। होंठे फूले हुए। ठुड्डीपर दाने निकले। मसूढ़े फूल जाएँ और उनमें तपकन तथा छेद होने जैसा दर्द आए।

**कल्केरिया फॉस :** दाँत निकलनेके दिनोंमें बच्चोंके मसूढ़े वेदनापूर्ण और प्रदाहित , मसूढ़ोंकी रगत पीली पड जाए। यह खूनकी कमीका निशाना है। ऊपरका होंठ फूला हुआ और वेदनापूर्ण।

**कल्केरिया फ्लोर :** मसूढे फूले हुए। जबडों या मसूढो गर सख्त सूजन आए। सख्ती। मुँहके कोनोंपर ठण्डे फोडे बनें।

**नेटरम फॉस :** मुँहकी श्लैष्मिक झिल्लियोके छालोके लिये दूसरी कोई दवा इसकी समता नहीं कर सकती। होठों और गालोंका कैंसर। इस दवासे ठीक हो जाता है। ३x या ६x का व्यवहार करना चाहिये जबकि **बोरेक्स, बप्टीशिया, काली फ्लोर** आदि कुछ न कर सकी।

—साऊथ जर्नल ऑफ होमियोपैथी।

**कल्केरिया सल्फ :** होठोंके भीतर और होठोंके ऊपरके घाव। दातन या ब्रश करनेसे मसूढोंसे खून गिरने लगे।

## चिकित्साकालीन अनुभव

शॉफहोसेनके चिकित्सकोंकी गोष्ठीमें प्राध्यापक डा० रैप ने कहा था : डा० शुसलरको चिकित्सा पद्धतियोंमें, मेरी रायमें, **काली फॉस** और **मैग्नेशिया फॉस** सर्वश्रेष्ठ औषधियाँ हैं। मुँहके साधारण छालोंमें जब मसूढ़े फूले हुए हों; दाँतोंपर मैल जमी हो और मुँहसे बदबू आता हो तो **काली फॉस** बड़ा शानदार काम करता है।

# श्लैष्मिक झिल्लियाँ ( Mucous Membranes )

( नैजले जुकामके विकार भी देखें )

दवाका चुनाव स्रावके रंग और घनत्वके आधारपर होना चाहिए।

जब **स्राव** अण्डेकी सफेदी जैसा हो : **कल्केरिया फॉस।**

सब सन्तापपूर्ण कष्ट और गंदगी हो—**नेटरम म्योर, नेटरम फॉस।**

स्राव पारदर्शी : **नेटरम म्योर।**

,, वसामय : काली म्योर, मैग्नेशिया फॉस।

,, सुनहरी रंगका : नेटरम फॉस।

,, हरा : काली सल्फ।

,, दुर्गन्धित : काली फॉस

,, पीव जैसा : **कल्केरिया सल्फ, साईलीसिया।**

,, चिकना लसदार : काली सल्फ।

,, पीला गासदार : कल्केरिया फ्लोर।

# कर्णमूल प्रदाह कनपेड़ ( Mumps )

**फैरम फॉस :** पहला दर्जा, जब ज्वर भी हो।

**काली म्योर :** कर्णमूल ग्रन्थिकी सूजन और निगलने पर दर्द हो। यदि ज्वर न हो, तो यही अकेला अधिकांश रोगियोंको ठीक कर देता है।

**नेटरम म्योर :** जब लार अधिक आती हो, या कर्णमूल प्रदाह अपनी जगह छोड़कर अण्डकोषपर चला गया हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. डा० एस० पावल बर्डिक, एम० डी० लिखते हैं : गतवर्ष मैंने कर्णमूल प्रदाहके लगभग १ दर्जन रोगियोंकी चिकित्साकी। उनमें जितनी सफलता

वायोकैमिक औषधोंसे मिली, उतनी किसी और औषधसे न मिली। एक रोगीको तेज ज्वर, यहाँ तक कि वह ज्वरकी तेजीके कारण वडवडाने लगा था, सूजन और दर्द भी अधिक था। ज्वर ५-६ घण्टेमें विलकुल चला गया और ३-४ दिनमें शेष लक्षण भी चले गए।

मै इन रोगियोंको **फैरम फॉस** और **काली म्योर** अदल-वदल कर दिया करता था। एकके परिवारके २ रोगियोंको जिन्हें यही लक्षण थे, इन्हीं दो दवाओंसे आया।

## स्नायुशूल ( Neuralgia )

**काली म्योर :** भाला गड़नेकी तरहका दर्द जो रातको वढे और त्रिक भागसे शुरू होकर पैरों तक जाए। यह दर्द विस्तरकी गर्मीसे वढ़े। आराम पानेके लिए रोगीको विस्तर छोड देना पडता है।

**फैरम फॉस :** रक्ताधिक्य या प्रदाहसे, या सर्दी लगनेसे आए स्नायुशूल; ऐसा जान पडे जैसे कोई कील ठोका जा रहा है। आधे सरका दर्द जिममें दिखायी देना वन्द हो जाए; दर्दका जोर कनपटियों या आँखोंके ऊपर या जवडेकी हड्डीपर ही। यदि इस दवासे लाभ न हो, तो इसके साथ **कल्केरिया सल्फ** दें और जीभकी हालत पर ध्यान दें। स्नायुशूल जिसके साथ चेहरा लाल हो जाए। जलन हो या गर्मी लगे, वोझ और दवावकी अनुभूति। चेहरेका स्नायुशूल और ज्वर। आँखके गोलेके भीतरी भाग और नाकका स्नायुशूल। स्तन ग्रन्थियोंकी स्नायविक वेदना। दायीं ओरके दर्द और सुवहके समय वढना वरिष्ठ लक्षण है।

**काली फॉस :** शरीरके किसी अगका स्नायुशूल जिसके साथ अवसाद, अशक्ति, खडा होनेमें असमर्थता भी हो; खड़ा होनेपर दर्द घट जाए। चहल कदमीसे भी दर्द घट जाता है। स्नायुशूल जिसके साथ वदमिजाजी प्रकाश और आवाजके प्रति असहन शीलता हो और किसी सुखद उत्तेजनाके समय घटे या विलकुल न रहे। यह औषध दिमागके धूसर वर्णीय पदार्थको वल देती है। स्नायुजालका दर्द जिसमें पक्षाघात आनेकी आशंका हो और सुन्नापन की अनुभूति हो। चहल क़दमीसे दर्द घट जाते हैं और खडा होनेसे वढ जाते हैं। जव शांतिसे वैठा हो या अकेला हो तो दर्द वहुत अधिक वढ जाता है। स्नायुशूल और कानोंमें भिनभिनाहट हो, दुर्वलता आए। स्नायुशूलका दौरा पडनेके वाद रोगी निढाल हो जाए। गृध्रसी। ( गृध्रसी देखिए )। शरीदके दाएँ भागका स्नायुशूल जो ठण्डक पहुँचानेसे घटे। ऊपरके दाँतोसे कानतक काँटा गडने जैसा दर्द।

**मैग्नेशिया फॉस :** पसलियोंके दरम्यान खिंचाव या सुकड़ावके साथ दर्द आए। सर्दी लगनेसे ऐंठन आए जबकि ज्वर न हो। सरका स्नायुशूल, भाला गड़नेकी तरहका असह्य दर्द। शरीरके किसी अंगका स्नायुशूल जब चेतनाएँ प्रवृद्ध हों। दर्द नियत समय पर आए, जो बहुत ही तेज हो, स्नायुजालके साथ-साथ गोली या भाला लगनेकी तरहका दर्द। ठण्डी हवा लगनेके बाद आया स्नायुशूल। ऐंठनके साथ आनेवाले दर्द। स्नायु-शूल जो रातको बढ़े और दिनमें ठीक रहे। इस औषधका एक विपरीत लक्षण यह है कि दर्द सर्दीसे घटते हैं। **सेंक देनेसे आराम मिलता है विशेषतः खुश्क गर्मीसे।** यह औषध शरीरके दाएँ भागपर असर करती है।

**नेटरम म्यौर :** किसी विशेष समयपर आनेवाले स्नायुशूल जिनमें मुँहमें लार और आँखोंमें आँसू अधिक आए। वातनाड़ियोंके साथ-साथ भाला गड़नेकी तरहके दर्द और अन्य उपद्रव। आँखोंका स्नायुशूल जिसमें आँसू अधिक आएँ। पाँचवे स्नायुगुच्छका क्षोभ। चेहरेका स्नायुशूल जिसमें कब्ज भी हो, यह दर्द सुबह समय पढ़ने-लिखनेसे और बोलनेसे बढ़े विशेषतः छात्राओंमें।

**नेटरम फॉस :** चेहरेका स्नायुशूल जिसमें गोली लगने या काँटा गड़ने जैसा दर्द आए। निचले जबड़ेमें सन्तापपूर्ण कष्ट आए।

**नेटरम सल्फ :** नमदार जगह रहने या काम करनेसे आए स्नायुशूल। जीभपर मोटी, पीली या भूरे रंगकी मैल आए।

**कल्केरिया फॉस :** स्नायुशूल जो हड्डियोंकी गहराईमें हो। बिजलीकी तरह झटके आएँ। रातको और नियत समयपर आनेवाली स्नायविक वेदना। दर्द बिस्तरमें और बुरे मौसममें बढ़ें। मलद्वारका स्नायुशूल जो पाखाना जानेके बाद आए और बहुत देर तक जारी रहे। दर्द जिसमें **रेंगने, ठण्डक और सुन्नापनकी अनुभूति पाई जाए।**

**कल्केरिया सल्फ** इस दवाका स्थान **मैग्नेशिया फॉस**के असह्य तरुण दर्दों और **काली फॉस**के अपंग बनानेवाले दर्दोंके दरम्यान है। (विशेषतः बूढ़ोंमें और वह भी उस हालतमें जब स्नायुजालको बल पहुँचानेकी जरूरत हो)।

**साईलीसिया :** दर्द अधिकतर दाँतोंमें होता है। कमर और पेटका स्नायुशूल, गर्म कपड़ा ओढ़नेसे आराम मिले। कड़ा परिश्रम करने और बन्द घरोंमें रहनेसे आया कष्टसाध्य स्नायुशूल।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ डा० पेरेंटीने सोसायटी फ्रासदे होमियोपैथीमें निम्नलिखित निबंध पढा था :

१८८७ में इसी गोष्ठीके सामने डा० निमियरने हमें यह विश्वास दिलाया था कि दायी आँखके ऊपरी भागमें आनेवाले स्नायुशूलके लिए जो सबेरेके समय बढे, **फैरम फॉस** सर्वोत्तम औषध है।

उन दिनो मेरे पास एक १५ वर्षीया रोगिणी थी। उसके शरीरमें खूनकी कमी थी ; मासिक खुलकर नहीं होता था। उसे यह कष्ट ३ मासले था। मैं उसकी ओरसे निराश हो गया था।

मैने उसे **फैरम फॉस** ६x देनेका निश्चय किया। मुझे हैरानी भी हुई और सन्तोष भी, कि पहली मात्रा देनेके ठीक २ दिन बाद उसकी हालतमें सुधार आया। स्वाभाविक था कि यही दवा जारी रखी जाय। ८ दिन बाद लडकीने अपने आपको बिलकुल ठीक समझा। फिर भी मैंने उसे और एक सप्ताह तक दवा खाने और फिर रिपोर्ट देनेका परामर्श दिया। वह उसके बाद २ मास तक न आयी। तो भी वह बिलकुल ठीक थी और कोई कष्ट दुबारा लौटकर न आया।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि जब भी आँखके ऊपरी भागके स्नायुशूल रोगी मेरे पास आता है ; मैं उसे तत्काल यही दवा दे देता हूँ। परन्तु मैंने कई बार इसे ऐसी हालतमें विफल होते भी देखा है। तब मैं यह सोचने लगता हूँ कि शायद पहले केसमें कोई उलझन न थी। परन्तु पिछले दिनों मुझे फिर दो केसोंमें क्रमशः उसी तरह सफलता मिली, तब मुझे विश्वास हो गया कि डा० निमीयर ने जो कुछ कहा था, वह सही था।

दूसरा केस एक २७ वर्षीया युवतीका था। उसे कई माससे दाईं आँखके ऊपर स्नायुशूल होता था जो सुबह बढता था, या मासिकके दिनोंमें आता और उसके मासिक भी अनियमित थे। बच्चेदानीसे खून आता था।

**नक्स वोमिका, कैमोमिला बैला, कॉलोसिंथ** और **इग्नेशिया** आदि दिए गए और इन्होंने कोई काम न किया। तब अन्तमें मैंने **फैरम फॉस** दिया।

पहले केसकी तरह, ३ दिन बाद, रोगिणी लौटी तो बहुत प्रसन्न चित्त थी। उसे ६x दिया गया था, यह दवा ८ दिन तक जारी रही। इसके बाद १२x और १८x दिए गए। ३ सप्ताह बाद वह बिलकुल ठीक हो गयी।

तीसरा केस भी पहले दोनों केसकी तरह था और जो कुछ डा० निमियरने कहा था मैं उसका समर्थन करता हूँ।

उन्होंने कहा था कि **फैरम फॉस** दाईं आँखके ऊपर आनेवाले स्नायुशूलमें हितकर है जबकि दर्द सुबह बढ़ता हो। मै इतना और बताना चाहता हूँ कि यह दवा स्त्रियों विशेषतः नवयुवतियोंके लिए अधिक लाभदायक है। इस औषधकी रोगिणी अनियमित रजसे पीड़ित रहती है और आमतौरपर वह जरायुके किसी विकारसे भी आक्रान्त रहती है—विशेषतः खून आनेकी प्रवणता से इन सब विकारोंके परिणाम स्वरूप सरदर्द और अनीमिया आता है। स्थितिके अनुसार ये दोनों या इन दोनोमेंसे कोई एक विकार, थोडा-बहुत प्रधान रूपसे आता है।

३ हुरन निवासी डा० सी० सी० हफने स्नायुशूलके बारेमें लिखा है :

"डा० शुसलरने लिखा है कि **मैग्नेशिया फॉस** पेशियों और स्नायुजाल का अगभूत पदार्थ है। डाल्टनने लिखा है कि पेशियोमें चूनेकी अपेक्षा मैग्नेशियम लवण कहीं अधिक मात्रामें पाया जाता है। यह बात यदि मान ली जाए, तो फिर **मैग्नेशिया फॉस** वातनाडियोंके लिए उपयोगी औषध है। जब मानव शरीरमें इस लवणके परमाणुओंकी कमी पड जाती है तो फिर ऐसा दर्द आता है जो इस औषधका वरिष्ठ लक्षण है। इन दर्दोंकी व्याख्या करते हुए बताया गया है कि वे गोलीकी तरह, बिजलीकी-सी तेजीसे, खिचावके साथ, चीरने फाडनेकी तरह, भ्रमणशील अर्थात् जगह बदलने वाले हैं और इनकी बडी विशेषता यह है कि ये दर्द नियत समयपर आते हैं। और उनमें कोई नियमितता नही पायी जाती। इस तरहके दर्द सर, पेशानी, कनपटियों, चेहरे, आमाशय, पेट, डिम्बाशय और विविध अंगोंमें पाए जाते हैं। आमाशयशूल आमतौरपर नाभिसे शुरू होकर चारों ओर फैलता है। यह दर्द दबावसे ( इस बारेमें यह **कालोसिंथ, अलोज कास्टिकम, नक्सवा, आईरिस** और **सलफर**से मिलता-जुलता है ) गर्मीसे, विशेषतः खुश्क गर्मीसे— जैसे सेंक देनेसे घटता है। इगलैण्डके किसान यह दवा अपने घोडोंको अफारा दूर करने लिए देते हैं—और यह तत्काल अपना गुण दिखाती है। इस दवाके बारेमें मेरा अनुभव निम्नलिखित है और यह १२x शक्तिसे प्राप्त हुए हैं।

(क) कुमारी अ-आयु २४ वर्ष ; रंगत साँवली, वात प्रकृति ; पेशा क्लर्क, वह २ सप्ताहसे मेरे इलाजमें थी। उसके चेहरेमें दर्द होता था और उसे मार्फिया दिया जा रहा था, परन्तु इससे उसे कोई लाभ नहीं था। एक दिन मैने उसे अधिक निढाल पाया। उसकी दाईं आँखके ऊपर कुछ सूजन भी थी। दर्द बडा सख्त, गोली लगने—भाला लगने और ऐंठनकी तरहका था।

आक्रान्त स्थान अधिक कोमल था। दर्द रुक-रुककर आते थे। अलग-अलग दिनोंमें दर्द, सिर और चेहरेको पीडित करता था।

**मैग्नेशिया फॉस**ने १२ घण्टेमें ठीक कर दिया।

(ख) कुमारी क—आयु २२ वर्ष; रंगत साँवली, वात प्रकृति, शरीर छरहरा, हवा लगनेसे उसे स्नायुशूल आया था। वह मेरे पास आनेसे पहले एलोपैथिक चिकित्सा ले रही थी और उसे **पोटाश ब्रोमाईड** तथा **क्लोरल हाईडरेट** बडी मात्रामें दिया गया था और उससे कोई लाभ न हुआ था। जब मैं उसे देखने गया वह विस्तरमें पडी थी, दर्दके मारे उसका बुरा हाल था। चेहरा तमतमाया हुआ था, आँखें धँसी हुई थीं और अत्यधिक चमक थी। दर्द बायी ओर था और जबडेके ऊपरका स्नायु गुच्छ आक्रान्त था। दर्द भाला लगनेकी तरह, गोली लगनेकी तरह और ऐंठनदार था। बार-बार चीख निकलती थी।

उसे **मैग्नेशिया फॉस**ने ठीक किया।

(ग) कुमारी ह—आयु २० वर्ष, कद लम्बा, इकहरा बदन, वात-पित्त प्रकृति, धधा नक्शा बनाना। उसे सहसा चेहरेके दाईं ओर दर्द आया। आँख का ऊपरी ओर निम्न भाग पीडित था। दर्द दौरोंके रूपमें आता था।

**मैग्नेशिया फॉस**ने तत्काल असर किया।

मुझे बच्चोंके पेट दर्दमें भी यह दवा बहुत उपयोगी नजर आयी जबकि **कैमोमिला, नक्सवा** और **कॉलोसिंथ** काम न दे सके।

चेहरेके स्नायुशूलका एक रोगी **मैग्नेशिया फॉस** १२x खाकर ३ सप्ताहमें ठीक हो गया। उसका दर्द चेहरेपर गर्म पानीमें भिगाई रूईसे सेंक देनेसे घटता था और ठण्डकसे बढता था।

४ ड० एच० सी० ऐलनने चेहरेके दायी ओरके स्नायुशूलका एक केस बताया है। दर्द बहुत तेज था, ऐंठनके साथ और बिजली जैसी तेजीसे आता था। पीडित स्थान स्पर्शकातर था। वह गर्मी और दबावसे घटता था। उसके साथ भारी थकान थी और रातको पसीना अधिक आता था।

जब अन्य औषधियाँ कुछ न कर सकी तो **मैग्नेशिया फॉस** २०० दिया गया और उसने स्थायी लाभ किया।

५ एक रोगीको इसी दवाने इसी पोटेंसीमें फायदा पहुँचाया। उसे दर्द रुक-रुककर आता था, दर्द भाला गडनेकी तरह, और बिजलीकी-सी तेजीसे सहसा आता था और उसी तरह सहसा चला भी जाता था। उसे गर्मी और दबावसे आराम आता था। उसे बहुत कष्टकर कब्ज भी थी। **मैग्नेशिया फॉस** २०० से ये सारे उपद्रव मिट गए।

डा० गालनने भी **मैग्नेशिया फॉस**की तारीफमें लिखा है : १३ अप्रैलको एक महिलाने मुझे लिखा कि वह ६ दिनसे दर्दके कारण विस्तरमें पडी है। और कोई दवा-दारु नही मिली। ठण्डी हवा लगनेके वाद, पहले उसके कानमें दर्द आया और फिर वायी ओर चेहरेमें सख्त दर्द आया। इस दर्दने निचले जवडे और पेशानीसे लेकर सरके पिछले भाग तक, सारे वाएँ सरको आक्रान्त किया। उसने एक दुकानसे **ब्राईओनिया** माँगा, परन्तु उसे **वैल** खानेका परामर्श दिया गया और उससे उसे कोई लाभ न हुआ। कानकी गहराईमें घाव भी हो गया था। उससे पीव वही और अव पानी वह रहा था। यह पानी वहुत क्षोभजनक और जहाँ-कही लगा, वहाँ उसने फुन्सियाँ पैदा कर दीं। कानमें अव भी दर्द था और चेहरेका स्नायुशूल भी पूर्ववत जारी था, दर्द पागल वनाए दे रहा था, तेज ज्वर भी था और उसके साथ ही अनिद्रा भी थी। वह रातको तो विलकुल ही न सो सकती थी। हाँ, दिनमें १-२ घण्टा नीद आ जाती थी। उसे पसीना खूव आता था और यह असाधारण वात थी। उसके लिए कलस्नान करनेके वाद उसके कूल्हेमें सख्त दर्द आया।

वह मुझसे दूर थी। मै उसे देख नही सकता था। मैंने सोचा उसे **साईलीसिया** दे दूँ। रातके समय कष्ट वढनेके लिए यह अच्छी दवा है, परन्तु कानमें घाव था और चेहरेमें दर्द था। **स्पाईजलिया** ? इसके भी लक्षण थे। क्योंकि मुझे पता था कि उसे हृदयरोगकी प्रवणता थी। उसे हाथकी हड्डियों, वाजुओ और पहलूमें दर्द आ चुका था जो हृदयमें सर्वाधिक कष्टकर था। इस दर्दका वर्णन करते हुए उसने कहा था कि ऐसा जान पडता कि दिल ऐंठा जा रहा है। ओर तपकन भी होती थी, जैसे कोई रस्सी खोल रहा हो। शायद यह गठियावात था और उसने चेहरेको केन्द्र वनाया था। इसके लिए भी **साईज** लाभदायक है। फिर **आर्निका** भी है। इसे भी इस रोगके लिए वहुत सराहा गया है। फिर मुझे **स्टेनम**पर भी भारी भरोसा था। मुझे स्नायुशूलके वहुतसे रोगियोंको इस दवासे ठीक करनेमें सफलता मिली हैं। जवकि कूनीन कोई काम न कर सकी थी, हालाकि यह भी स्नायुशूलके लिए अमोघ दवा मानी जाती है। असह्य दर्दोंके लिए **कैमोमिल्ला** भी दिया जा सकता है। फिर पसीनेके आधारपर **मर्करी** और अनिद्राके लिए **आर्सेनिक** रहा।

इन सवकी उपेक्षा करके मैने शूलकरका **मैग्नेशिया फॉस** चुना। छठे क्रम का थोड़ा-सा चूर्ण दिया और हिदायत कर दी कि इसे शराव पीनेके ग्लासमें आधा पानी भरकर एक-एक चम्मच ३-३ घण्टे वाद दें।

१७ अप्रैलको रोगिणीने लिखा, आपकी औषधने तत्काल आराम दिया। चेहरेका भयानक शूल मिट गया। कानमें अभी दर्द है और वह वह रहा है।

—Pop zeit f Hom , XVII 13 and 14.

७ चेहरेके दाएँ भागमें दर्द था। झटके तथा कटनके साथ दर्द आता था। दाँत बहुत कोमल थे। बिस्तरमें लेटनेसे कष्ट बढता था।

**मैग्नेशिया फॉसने** फौरन असर दिखाया और इसके बाद भी दो बार ऐसा ही हुआ। चेहरेके बाएँ भागके स्नायुशूलमें यह दवा जब एक रोगीको दी गयी तो कोई काम न दे सकी। हाँ, इससे पसीना खुलकर आया और रोगी कपडा ओढनेसे डरता था। —डा० डब्ल्यू पी० वेस्सलहेफ्ट, एम० डी०।

८. श्री अ—आयु ४८, दाएँ कन्धेके जोडमें १ या २ सप्ताहसे चीरने फाडने या दाँतोसे काटनेकी तरहका सख्त दर्द था। दर्द दाएँ बाजूके ऊपरी भागसे होता हुआ अंगूठे तक पहुँचता था। इसके साथ सुन्नपन भी था। विशेषतः अगूठेमें। परन्तु गतिहीनता नही थी। दर्द दौरोंकी शक्लमें आता था और जोरसे सहलाने और मुक्के मारनेसे घटता था। दर्द दिन रात समान रहता। वह कई दर्दनाशक औषधियाँ खा चुका था। विशेषतः रसय और बिजली भी लगवा चुका था परन्तु कोई लाभ नही हुआ था।

उसे **कल्केरिया फॉस** दिया गया। इससे दर्द और सुन्नपनमें काफी कमी आयी। २-३ सप्ताहमें इसने सारे उपद्रवको दूर कर दिया।

इसके बाद जब भी यह दर्द आया, इसी दवासे ठीक हुआ।

९ इसी तरहका दर्द एक और २० वर्षीया युवतीका, इसी दवासे, ठीक हुआ। हालाकि उसके हाथ पूरी तरह लकवेका मारा हुआ था।

—सी० टी० एम०।

१० **स्नायुशूल :** आँखके अण्डेके ऊपर नीचे दोनों जगह दर्द था। यह दर्द दायी ओरके अगले दाँतों तक जाता था, रुक-रुककर आता था। छुरी लगनेकी तरहका दर्द था और बिजलीकी तरह आता था। आक्रान्त स्थान अत्यन्त स्पर्शकातर था। दर्द गर्मी और दबावसे घटता था। सहसा आता और उसी तरह सहसा चला जाता था। उसके बाद रोगी निढाल हो जाता। रातको पसीना अधिक आता।

**मैग्नेशिया फॉस** २०० से उसे तत्काल लाभ हुआ।

—**मैडिकल एडवॉंस,** दिसम्बर १८८६।

११ एक युवती जो देखनेमें स्वस्थ नजर आती थी, कई सप्ताहसे उसे चेहरेमें दर्द था। यह दर्द जब आता तो आधे चेहरेमें होता और ५-६ घण्टे जारी रहता। सेंक देनेसे आराम आता था। ठण्डक लगनेसे कष्ट बढता था।

मैग्नेशिया फॉस १२ तीन-तीन घण्टे बाद दिया गया और इसने ३ दिनमें सारे कष्टको दूर कर दिया।

१२ एक ३० वर्षीया महिलाको कई सप्ताहसे दाईं ओर दाँतों और चेहरेमें दर्द था। दर्द जगह बदलता रहता था दर्द हर २-३ घण्टे बाद, बिजली की तरह आता था।

मैग्नेशिया फॉस १२ दिया गया। और २ दिनमें सब कष्ट जाता रहा।

१३. महिला ४२ वर्ष ; चेहरेसे टी० बी० की रोगिणी नजर आती थी, अल्प रज ; कभी आता ही नहीं था। गत २ वर्षसे दाईं आँखके ऊपर छेद होने की तरह दर्द होता था। दर्द शुरू होनेके कुछ ही मिनट बाद, सारे चेहरेमें होने लगता और निचले तक फैल जाता। विवश होकर बिस्तर छोड़ना पड़ता। कब्ज थी और भूख नहीं थी।

मैग्नेशिया फॉसने चार दिनमें सब कुछ ठीक कर दिया। मासिक भी ठीक आने लगा। ए० प्लेट, एम० डी०

१४. चेहरेके दाएँ भागका स्नायुशूल काली फॉस १२ से ठीक हो गया। यह दर्द खोखले दाँतसे शुरू होता था और ठण्डक पहुँचानेसे घटता था। आरम्भमें मैग्नेशिया फॉस दिया गया था, परन्तु उसने कोई काम न किया क्योंकि दर्द गर्मीसे नहीं घटता था।

यह विशेषता फॉस फोरसकलीके विपरीत थी और पुल्साके समान थी।

—डब्ल्यू० पी० वेस्सलहेफ्ट, एम० डी०।

१५ कुमारी मारगेरेटको स्नायुशूल था जो बात नाडीके साथ-साथ सर तक पहुँचता था। दर्द ऐसे आता था जैसे भाला लगता हो।

मैग्नेशिया फॉसकी २ मात्राओंसे दर्द दूर हो गया।

'शुसलर' से उद्धृत।

१६. सरमें सख्त स्नायुशूल था। दर्दके मारे उसे लेटना पड गया। मैग्नेशिया फॉस ६x ने सिर्फ एक घण्टेमें दर्दको दूर कर दिया। उसे यह दवा १०-१० मिनट बाद दी गयी थी।

१७. बालिका, ८ वर्ष, उसका एक मात्र लक्षण यह था कि उसे पाखाना जानेके बाद त्रिक भागमें सख्त दर्द आता था और फिर दिन भर जारी रहता था। रातको सो जानेसे दर्द घट जाता था। दर्दके मारे वह न चल सकती थी और न खडी हो सकती थी।

कल्केरिया फॉससे उसे तात्कालिक लाभ हुआ।

—आर० टी० कूपर, एम० डी०।

१८. **मैग्नेशिया फॉस**ने वायी आँखके स्नायुशूलको तत्काल दूर कर दिया। दर्द आँखसे शुरू होकर नीचे गर्दन तक पहुँचता था। दर्द विजली की-सी तेजीसे आता था। दर्द गर्मी और दवावसे घटता था। लक्षण **मेजेरियन**के थे अर्थात् ऐसा जान पडता था कि आँखसे ठण्डी हवाका झोका आ रहा है।

—जी० पी० हेल, एम० डी०।

१९ श्री—नाटा कद, रग सावला, वाला काले, आँखें वहुत गहरी काली, सख्त मेहनती, हीन पोषणसे पीडित, उसे दाई ओर वहुत सन्तापपूर्ण पीडा थी। उसने वताया कि छेद होनेकी तरह दर्द आता है। मेरे पास वैठे-वैठे भी उसे दर्दका दौरा हुआ और वह मुझे समझा न सका कि दर्द किस किस्मका है। उसने इतना ही कहा कि धक्का-सा पडता है।

**मैग्नेशिया फॉस** ३०x दिया गया। वह अगले दिन अपने कामपर चला गया।

२०. कुमारी—कद लम्वा, इकहरा शरीर, कोण वननेका झुकाव था। वाल भूरे और कुछ मैले। अविवाहिता; आयु ३५। उसे दाएँ जवडेके निचले भागमें सख्त किस्मका दर्द आया। चेहरा फूला हुआ और वहुत सख्त था। छूना और ठण्डी हवा सहन न होती थी। दर्द वडा तेज, भाला गड़नेकी तरह, भ्रमणशील, सेंक देनेसे आराम आता था।

उसे **मैग्नेशिया फॉस** ३०x दिया गया। अगले दिन तक सूजन चली गयी। दर्द हट गया और भारी सुधार आया। कुछ दिन वाद उसने दाँत दर्दकी शिकायतकी जिसे दवानेसे तपकन होती थी। उसे साईलीसिया १० लाख दिया गया जिससे सव कुछ ठीक हो गया।

२१. श्रीमती क-ख नाजुक वदन, वालोंकी रंगत गहरी; विवाहित; ४ माससे गर्भ था। इनफ्लुएजा हुआ था और उसके वाद दाईं ओर स्नायुशूल होने लगा। दर्दका केन्द्र आँख थी और वह ऊपर तक जाता था। जव दर्द अधिक तेज होता तो पपोटोंमें खिचाव आता और वे काँपते। तव वार-वार आँखमें विजलीकी तेजीसे झटके आते।

**मैग्नेशिया फॉस** ३०x ने उसे ठीक कर दिया।

—चेस० सोहफ, एम० डी०।

# मैग्नेशिया फॉस स्नायुशूल नाशक है : उदाहरण

केस नं० १—( २२ जनवरी १८२५ ) कुमारी अ आयु ४८ वर्ष ; बोर्डिंग हाऊसकी संचालक थी और वहुत चिन्तित रहा करती थी। उसे रीढमें दर्द होता था और यह दर्द २ वर्षसे जारी था। इन्फ्लुएजा होनेके बाद उसे कमरमें सख्त दर्द आया जो गृध्रसीकी तरहका था। दर्द ऊपर रीढ तक भी जाता। दवाव सहन नहीं होता था। आक्रान्त जगह सुन्न थी। दर्द अपनी जगह वदलता था। आरामसे घटता था और रातको वढता था। कभी-कभी दर्द दौरोंकी शक्लमें आता था। वह दर्दके वारेमें वहुत चिन्तित थी। नाडी और शारीरिक वल क्षीण था।

उसे रस टक्स, एक्टिया रेसमोसा, ब्राईओनिया और आर्सेनिक दिया गया और इनसे उसे कोई लाभ न हुआ। मैग्नेशिया फॉस ३x पाँच-पाँच ग्रेन सुवह-शाम दिया गया। जव भी दर्द वढे, तव ही दवा देनेकी हिदायत दी गयी। दर्द तत्काल घट गया। वह कुछ दिनोंमें अच्छी हो गयी।

केस २ : श्रीमती ख, आयु ५८, देखनेमें २ वर्ष पहले तक तन्दुरुस्त थी, उसे सारे शरीरमें स्नायुशूल हुआ जो धीरे-धीरे वढ गया और वहुत सख्त हो गया। इस दर्दके कारण वह वहुत क्षीण हो गयी। दर्द रातको वढता ; उसने कई स्नायु गुच्छोंको आक्रान्त किया था, विशेषतः कमरसे नीचे नाड़ियोंके दर्द अपनी जगह वदलते थे, आक्रान्त स्थानोंपर भारी कोमलता आयी। अन्तमें उसकी नींद हराम हो गयी। वह रोती रहती और रात भर इधर-उधर टहलती रहती। निराशासे हाथ मसलती रहती। पाँवकी उंगलियाँ सुन्न हो गयीं और ऐसा मालूम होता था जैसे रोगने रीढकी गहराईमें अपनी जगह वना ली है।

आर्सेनिक, कूनीन और फॉस्फोरस देनेसे आम हालतमें कुछ सुधार आया परन्तु दर्द कम न हुआ। आखिर मैग्नेशिया फॉसने दर्दको हटाया और अव वह रातको आरामसे सोने लगी।

केस ३ : कुमारी अ—आयु ३६ वर्ष ; पुराने वृक्क प्रदाहसे पीड़ित थी। इलाज करानेसे उसकी यह तकलीफ कुछ कम हो गयी। परन्तु अव दिमाग़पर असर आ गया। वायीं ओर चेहरेमें सख्त किस्मका स्नायुजाल आया। यह दर्द ऊपरके दाँतोंसे शुरू होता था और ये दाँत उसे पहले भी तकलीफ दे चुके थे। उनकी जड़ोंपर वार-वार प्रदाह आता था। दर्द गर्मीके दवावसे घटता था और वातचीत करनेसे वढ जाता था।

आरम्भमें **फॉस्फोरस**ने उसे लाभ पहुँचाया परन्तु कुछ ही देर बाद उसका असर मिट गया। तब **मैग्नेशिया फॉस** दिया गया और उससे लाभ हुआ। बादमें यह दर्द आता रहा और सदा ही **मैग्नेशिया फॉस**से लाभ होता रहा।

**केस** ४ श्रीमती ग—आयु ७४ वर्ष ; उसे एग्जिमाके साथ कब्ज और पेट दर्द था। इसका इलाज कराते उसे असह्य स्नायुशूल आया जिसने ऊपरके जबड़े और चेहरेको आक्रान्त किया। दर्द आँखके गोलेके निचले भागसे होकर दाईं ओरके ऊपर वाले दाँतों तक पहुँचता था। दर्द रातको बढ़ता था और गर्मीसे घटता था। जरा-सी ठण्डक लगते ही बढ़ जाता था। दर्द बहुत ही परेशान करने वाला था।

**मैग्नेशिया फॉस**ने तत्काल असर किया और कोई दूसरी दवा न देनी पड़ी।

**केस ५ :** श्रीमती आ—आयु ५० । दृष्टिनाडीका प्रदाह था जो उत्तरोत्तर बढ़ रहा। वह उसके कारण अब बिलकुल अँधी थी। वह २ साल तक इलाज कराती रही और न जाने कितनी दवाएँ खाईं। जब वह मोटे-मोटे अक्षर पढ़ने लगी। आगे कोई सुधार न हुआ। तब उसे दाईं ओर स्नायुशूल आया मैंने उसे जब देखा तो उसकी बाईं आँख बेकार हो चुकी थी। इस दर्दको **एक्टिया रेशमोसा**से लाभ हुआ। कभी-कभी कोई और शूलनाशक दवा भी दी जाती थी

एक दिन स्नायुशूल बहुत तेजीसे आया। उसे **मैग्नेशिया फॉस** ३x दिनमें ३-४ बार ५-५ ग्रेनकी मात्रामें दिया गया। इससे उसे तत्काल लाभ हुआ। २ सप्ताह बाद उसने बताया कि दर्द चला गया और इससे पहले कभी कोई और दवा इतनी फलदायक सिद्ध न हुई थी।

## फेफड़ोंमें पानी आ जाना ( Oedema of the lungs )

**काली फॉस :** फेफड़ोंका शोथ; उसके साथ आक्षेपके साथ खाँसी आए, दम घुटनेका डर लगे, साँस लेनेमें कष्ट हो और चेहरा पीला पड़ जाए। तरुण शोथ, खाँसीमें झागदार, पानी जैसे गोले आएँ।

**नेटरम म्योर :** *शोथ* ; फेफड़ों और हवाकी नालियोंमेंकी श्लैष्मिक झिल्लियोंमें पानी जैसा मवाद अधिक मात्रामें सञ्चित हो जाए। झागदार, पानी-सी पतली स्राव आए।

/

# अण्ड प्रदाह ( Orchitis )

**फेरम फॉस :** सुजाक दब जानेके बाद जब अण्ड प्रदाह आया हो।

**काली म्योर :** जब रोग सुजाक दब जानेके बाद आया हो, तो यह मुख्य औषध है।

**कल्केरिया फ्लोर :** अण्डोंकी सख्ती।

# लकवा : पक्षाघात ( Paralysis )

**कल्केरिया फॉस :** निम्नागोंकी ठण्डक, सुन्नपन और दुर्बलता; स्नायविक थकान; किसी निढाल बना देनेवाले रोगके बाद और नमदार जगह रहनेसे जब कमरमें कुचले जाने जैसी तकलीफ हो।

**काली फॉस :** चेहरेका लकवा; कुछ पेशियोंकी उत्तेजक शक्तिका नष्ट हो जाना। मुँह बिगड जाता है, अर्थात टेढा पड जाता है और उस ओर खिंच जाता है जिधर लकवा नही आया। रेंगकर बढनेवाला लकवा जिसके बढनेकी गति मन्द हो; क्षीणताकी प्रवणता और स्पर्श ज्ञानका न रहना आदि। उरु स्तंभ; गतिहीनता, चलने-फिरने या उत्तेजना ह्रास, स्वर नाडियोका लकवा, स्वर नाड़ीकी पेशियोंके ढीले पड जाने या उनपर लकवा गिरनेके कारण स्वर लोप हो जाना। क्षीणतावाला लकवा, जबकि शरीरका बल घट गया हो और पाखाना दुर्गन्धित आए। यह दवा हर प्रकारके लकवेमें हितकर, जैसे आंशिक लकवा, अर्द्धाङ्ग, निम्नागका पक्षाघात, चेहरेका लकवा या आँखोंकी पलकोंका लकवा आदि। ऐसा लकवा जो सहसा आया हो। बालको का लकवा।

**मैग्नेशिया फॉस : शिथिल और निढाल;** बैठ न सके, ठण्डे पानीमें खडे रहनेके बाद आया कष्ट। **कल्केरिया** ) कम्पवात, हाथो पाँवोका अपने आप काँपना, या सिरका काँपना, पेशियोंका काँपना। पेशियोका पक्षाघात जो विविध वातनाडियोके विकार या रोगके कारण आया हो वातनाडियों तथा श्वेत तन्तुओंका पक्षाघात।

**नेटरम फॉस :** घुटनोसे नीचेके अगोंकी दुर्बलता। जब चले तो टाँगें कम्पन, दें ( **फैरिंगटन पैंसलवेनिया होमियोपैथिक मैडिकल सोसायटी;** १८७४ )।

**साईलीसिया :** मोहरोंकी टी० बी० से आया लकवा। अंगोंका कम्प ; दुर्बलता, भ्रमणशील अर्थात् जगह बदलनेवाले दर्द। जोडोंका लकवा, पिछले दण्डकी बढती हुयी सख्ती।

## चिकित्साकालीन अनुभव

श्रीमती—, किसीसे प्रेम करती थी और उसमें विफल रहीं। उन्होंने आत्म हत्या करनेके लिए जहर खा लिया, उसके असरसे उनके हाथों और पैरोंपर लकवा गिर गया।

मैंने उसे **कल्केरिया फॉस** दिया। चार सप्ताह बाद उसने लिखा कि अब वह दीवार या अन्य चीजोंका सहारा लेकर चल सकती है। इन दिनोंमें उसे कुल ६ मात्राएँ दी गयी थी। वह और चार मात्राएँ खाकर ठीक हो गयी।

(Monatsblatter)

२ एक व्यक्तिको पानीमें खडे होकर काम करनेसे चेहरेका लकवा हो गया था वह **काली फॉससे** ठीक हो गया। बीच-बीचमें **कल्केरिया फॉस** भी दिया गया था।

# फेफड़ोंका टी० बी० ( उरक्षत )

## ( phthisis of Pulmonum )

**कल्केरिया फॉस :** खूनकी कमी जिन व्यक्तियोंके शरीरमें है, उनके फेफडोंकी टी० बी० का पहला दर्जा जबकि पसीना खुलकर आता हो, विशेषतः गर्दन और सरपर, क्षीणता, रोकनेके लिए क्रीम, काड लीवर ऑयलकी अल्प मात्रा और कार्बनवाले खाद्य भी दें। टी० बी० वालोंकी पुरानी खाँसी फेफडों की टी० बी० के रोगियोंको पसीना अधिक आना जबकि पाँव ठण्डे रहते हों, अतिसार, जब ज्वर पुराना हो गया हो और मन्द हो। स्वर भग, अपने आप आहें भरे, दम घोटने वाली खाँसीके दौरे। खाँसी जिसमें गलेमें सन्तापपूर्ण कष्ट और खुश्की आती हो ; छातीमें मन्द-मन्द निरन्तर वेदना। जब छातीकी टी० बी० और भगन्दर अदल-बदलकर या दोनों एक साथ आएँ।

**कल्केरिया सल्फ :** कफ पीबके रंगका पानी जैसा पतला ; खून मिला ; हरा-सा गहरे पीले रंगका, खाँसी घडघडाहट साथ हो।

**काली फॉस :** जरा-सा परिश्रम करते ही साँस फूल जाएँ। दुर्गन्धित वलगम आए।

**काली म्योर :** खाँसीमें कफ सफेद रंगकी और गाढी आए।

**नेटरम सल्फ :** कफ प्रकृतिवालोंका फेफडोंका टी० वी०। खाँसीमें पीव जैसी कफ आए। वाएँ फेफडेका निम्नाश जव पीडित हो तो यह दवा विशेष काम करती है। छातीमें भारी दुर्वलता जैसे प्राण निकल जायेंगे।

**नेटरम म्योर :** जरा-सी मेहनत करते ही सारे शरीरमें थकान और सुस्ती आए। दिनमें नीद आयी रहे और रात भर वहुत वेचैन रहे। आक्षेपके साथ आनेवाली, नियमित समयपर आनेवाली खाँसी, वलगम छातीमें घडघडाए और खूनकी धारीवाली कफ खाँसीमें आए। यह खाँसी लेट जानेके वाद वढे, सरमें रक्त अधिक संचित हो जाए और चेहरा लाल हो जाए, पुराना सर्दी-जुकाम जिसमें स्वाद और सूँघनेकी शक्ति विलकुल नष्ट हो जाए। रोगीको समुद्रतटपर जानेसे कष्ट सदा वढता है। सुवह कण्ठनालीमें पारदर्शी कफ अधिक मात्रामें जमा हो जाता है। खाली निगलनेसे खाँसी आए।

**साईलीसिया :** वदवूदार कफ अधिक मात्रामें निकले, रातको खाँसीके दौरे पडे, छातीके ऊपरी भागमें गुदगुदाहट होकर खाँसी आए। त्वचापर टी० वी० की गुटिकाएँ वने, और ऐसी नजर आएँ जैसे गाँठें वन गयी हैं। क्षीणता, रातको पसीना अधिक आएँ, पैरोंपर अत्यधिक दुर्गन्धित पसीना आए। भारी कब्ज, मलान्त्रमें मलको वाहर फेकनेकी क्षमता नही रहती, मल आशिक रूपमें वाहर आकर भीतर चाला जाता है। रोगीका सारा शरीर विशेषतः पाँव हर समय ठण्डे रहते हैं। भारी थकान, छातीमें कफ घडघडाए और पतली कफ निकले, खाँसीमें पीव अधिक मात्रामें, गाढी, पीले हरे-से रगकी आए।

यह दवा टी० वी० प्रवणताके सभी लक्षणोंको दूर करती है। अतएव जिन्हें जन्मसे ही या पैतृक रूपमें यह रोग मिलता है, यह उनके लिए वहुत गुणकारी है। डा० हालकोम्वको इस रोगके तीसरे दर्जेमें ६००० शक्तिके व्यवहारसे आश्चर्यजनक सफलता मिली है।

**फैरम फॉस :** दम फूलना, घुटनके साथ और जल्दी-जल्दी साँस आना; इसके साथ गर्मी लगे और हलका-सा ज्वर भी हो। आवाजपर जोर पडनेसे स्वरभग आए। खुली हवामें खाँसीका वढ जाना। खून थूकना, खून अधिक मात्रामें थूके, रगत चमकदार लाल, नकसीर आए। यह दवा उन कोमलांग व्यक्तियोंके लिए विशेषरूपसे हितकर है जवकि रक्तस्राव ही केवल मात्र

लक्षण हो। बहुत तेजीसे बढनेवाली टी० वी०। "जब रोगीको ठण्ड लगती हो, वह निढाल हो गया हो, खाँसीमें खूनवाली धारी आती हो, तो इस दवाकी ३०० शक्ति फेफड़ोंमें सञ्चित हुए रक्तको तत्काल हटा देती है।" (एफ०)

"स्वर नालीका टी० वी० ; उपास्थियाँ फूलकर नास्पातीकी तरह हो जाए, गुदगुदाहटके साथ आनेवाली सूखी खाँसी जो कठनाली और हवाकी नालीके क्षोभसे आए। इसके साथ कठनाली या हवाकी नालीसे मामूली या सख्त किस्मका रक्तस्राव भी होता हो।" —इविन्स।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. श्री अ—आयु ३०, हृष्ट-पुष्ट; पित्त प्रकृति, रंग साँवला, कद ५ फुट १० इञ्च, वजन तन्दुरुस्तीमें १६६ पौण्ड, वशमें टी० वी० की इतिहास था, दो वहनें और एक भाई इसी रोगसे मर चुके थे। एक और भाई था। उसका स्वास्थ्य सन्तोषजनक था।

उसे खेतोंमें काम करते हुए खून थूकनेके कई दौरे पड चुके थे। तबसे उसका स्वास्थ निरन्तर गिरता जा रहा था। जब मैंने उसे देखा वह बहुत क्षीण हो चुका था और मेरे पास आनेसे पहले कई चिकित्सकोंसे दवा दारु करा चुका था। उसे अन्तिम चिकित्सकने कह दिया था कि वह ६ सप्ताहसे अधिक जी नही सकता और मेरी भी यही राय थी। दाएँ फेफड़ेमें, दूसरी पसलीके दरम्यान बड़ा-सा गढा पड चुका था जिसका घेरा ३ इ च था। हवाकी बायीं नालीमें भारी घडघडाहट थी। इससे स्पष्ट था कि फेफडोंका भीतरी भाग नष्ट हो रहा है। कफ बहुत भारी और पीब जेसा था। उससे मुर्दार जैसी गध आती थी। भूख मिट चुकी थी। वह ५-७ मिनटसे अधिक वैठ नही सकता था। चमडी ठण्डी और लसदार थी; वह रातको पसीनेसे तर हो जाता था। शरीरमे स्वाभाविक गर्मीको कमी थी। रोगीकी अवस्था बिलकुल निराश पूर्ण थी। वह मेरे दवाखानेसे ४० मील दूर रहता था।

उसे साईलीसिया २०० की एक मात्रा हर रोज रातको दी गयी। कैफियत की जा पहली चिट्ठी आयी उसमें लिखा था दवाने जादूकी तरह काम किया। वही दवा और भेज दीजिए। अब मैंने उसे दवा सप्ताहमें २ बार लेनेकी हिदायत की। कुछ दिन बाद रोगी खुद मेरे पास आया। मैने देखा कि बाँया फेफडा लगभग साफ हो चुका है। अब रातको पसीना नही आता था; भूख अच्छी थी और वजन बढ रहा था। परन्तु दाएँ फेफडेमें

अभी रोगके लक्षण थे। घाव वहुत छोटा हो गया था। अव मवाद भी घट गया था।

इसके वाद चार साल तकका मुझे पता है, वह एकदम स्वस्थ रहा। उसकी इस प्रगतिपर सवसे अधिक आश्चर्य खुद मुझे हुआ।

—जी० एन० वी० त्रिघम्स थाईसिससे उद्धृत।

२ इसी पुस्तकके पृष्ठ १६३ पर टी० वी० के एक और रोगीका हाल दिया गया है जो काली म्योरसे ठीक हुआ।

वह ६ माससे वीमार थी। उसे असाध्य वताकर चार डाक्टर त्याग चुके थे। उसके रोगका विवरण निम्नलिखित था

दोनों फेफडे आक्रान्त थे। दिल वहुत फैल चुका था। विशेषतः दायाँ कोष। फेफडोका कष्ट सर्दी-जुकामसे वढ़कर आया था। जव वह वायोकैमिक चिकित्सामें आयी तव उसे जलोदर भी था। वह रातमें सोफामें पडे-पडे ही काटती, क्योंकि सोफासे विस्तर तक जानेमें थकान आ जाती थी। उसे सख्त खाँसी थी; साँस वहुत फूला हुआ था और निरन्तर धडकन होती रहती थी उसे रातको नींद नही आती थी।

शुसलरकी दवाएँ धैर्यपूर्वक खाते रहनेसे उसके फेफडे और दिल ठीक हो गए। अव वह अच्छी खासी हालतमें है। हाँ! दाएँ फेफडेका अधिकांश भाग नष्ट हो चुका है। और दिल विलकुल ठीक हालतमें है।

—'शुसलर' से उद्धृत।

३. डा० स्नेडरने इस वात पर वहुत जोर दिया है कि साईलीसिया रात के पसीनेके लिये वहुत उपयोगी है। उन्होंने लिखा है कि ६२ रोगियोंमें ४३ का पसीना इससे विलकुल रुक गया और १३ का कम हो गया। उन्होंने इस कामके लिये ३ से ३० तक शक्तिका व्यवहार किया। उनका मत है कि उच्चतर शक्तियाँ अधिक लाभदायक हैं।

## पसलियोंका दर्द; उरस्तोय, प्लूरिसो (Pleurisy)

**फेरम फॉस :** ज्वर, दर्द, पसलियोंमें सूई गडनेकी तरहका दर्द, साँस रुककर आना, और थोडी-थोडी खाँसकर आना। साँस कम गहरा; घुटन हो और जल्दी-जल्दी आए।

**काली म्योर :** इस रोगके लिये दूसरे दर्जेकी दवा है। जबकि गाढा मवाद आया हो। यह रोगको हर तरहसे दूर कर देती है।

**नेटरम म्योर :** जब रोगके समय, या उसके बाद, पानी जैसा मवाद आया हो।

**कल्केरिया सल्फ :** फेफडों या उनके पर्दोंमें पीवका आ जाना। डा० ओ० एम० हेन्सने लिखा है कि यह दवा फेफडों या उनके पर्दोंमें पीव आनेके लिए विशेष उपयोगी है विशेषतः जबकि रोग वक्षसे पीव निकालनेके बाद आया हो।

—'होमियोपैथिक मन्थली', १९०१

**कल्केरिया फॉस :** पुराना प्लूरिसी, सन्तापपूर्ण वेदना, हर साँसके साथ कष्ट हो; खाँसी रातको बढे; ज्वर मन्द हो या बिलकुल ही न हो। दर्द भी अधिक तेज न हो। रोग मौसममें सहसा परिवर्तन आनेसे बढ जाए।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१. पाँच सालका लडका था, दायी पसलीमें दर्द आया जो खाँसने और गहरा साँस लेनेपर बढता था। दाएँ कन्धेके जोडमें गठियावातका दर्द भी आता था। शरीरमें आम गर्मी थी; प्यास बहुत कम थी।

**ब्राईओनिया** कुछ न कर पाया। **फैरम फॉस** १२ दो-दो घण्टे बाद दिया गया और उसने दूसरे ही दिन सारे उपद्रव मिटा दिये। जिस दिन उसे **फैरम फॉस** दिया, उससे अगले दिन मुझे बच्चेमें असाधारण जोश नजर आया। वह बिस्तर छोडकर भागना चाहता था; परन्तु अधिक दुर्बलताके कारण गिर पडा। बकवाद बहुत करता था।

मैंने इसी तरहका जोश ७ वर्षके एक और लडकेमें देखा था। उसे **काली म्योर** दिया गया था। उसे आमाशयकी खराबीसे ज्वर आया था और उसे इस दवासे भारी लाभ हुआ था।

—डब्ल्यू० पी० वेस्सलहेफट, एम० डी०

२. कुमारी क—२०, मैंने जब उसे जाकर देखा तो मुझे प्लूरिसीके आम लक्षण नजर आए। बायीं पसलियोंमें सख्त दर्द था और ज्वर बडा तेज था।

मैंने उसे **ब्राईओनिया** ३ पानीमें दिया। अगले दिन जाकर देखा तो ज्वर काफी कम था, परन्तु दर्दमें कोई कमी नहीं थी। **ब्राईओनिया** जारी रहा।

शामके ४ वजे तक दर्द जारी रहा। तव **फैरम फॉस** दिया गया और दर्द घट गया। सुवह ज्वर विलकुल न रहा और दर्द भी न के वरावर था। कुछ दिनमें वह विलकुल ठीक हो गयी। —( टी० सी० एम० )

# निमोनिया ( Pneumonia )

**फैरम फॉस :** फेफड़ोंका प्रदाह यह **पहले दर्जेके लिए मुख्य औषध है।** तेज वुखार, गहरा साँस न ले सके, साँस घुटा हुआ और जल्दी-जल्दी आए। रोगी निस्तेज और वेपरवाह। कभी-कभी तन्द्राग्रस्त भी हो जाता है। यह दवा आरम्भमें ही देनी चाहिए और जवतक खुलकर पसीना न आ जाए तथा रोगी स्वस्थ न हो जाए, जारी रहनी चाहिए। जव मवाद आ गया हो, तो यह दवा कोई लाभ नहीं करती है और न ही वलवान रोगियोको लाभ करती है। यह दवा विशेषरूपसे वूढोंके निमोनियामें हितकर है। वह निमोनिया जिसमें फेफडोंमें रक्त संचित हो गया हो। थूकमें साफ खून आता हो।

डा० जे० सी० गैरन्सीका मत है कि इस औषधका व्यवहार करनेके लिए यह विश्वस्त लक्षण है। निमोनियाके वाद जव फेफडोंमें रक्त सचित हो गया हो। जव स्वस्थ फेफडेमें सहसा ही रक्त सचित हो गया हो। स्थानीय रक्ताधिक और कफका सख्त हो जाना जवकि ये दोनों विकार ऊपरी भागमें आएँ हों। चलने-फिरनेपर कोई विशेष अशाति या दर्द नही आता। इसका स्थान **एकोन** और **जेलस**के दरम्यान है। यह दवा वच्चोंके लिए विशेष हितकर है। छातीमें वलगमकी घडघडाहट। कफ ऐसा आए जैसे मोरचा खाया हुआ लोहा होता है।

डा० जी० डब्ल्यू० लॉरेंस, एम० डी० लिखते हैं : मैंने निमोनियाके इलाजमें जितनी दवाएँ वरती उनमें **फैरम फॉस** और **वराटरम** ही सर्वाधिक गुणकारी और सन्तोषजनक नजर आयी।

**काली म्योर :** फेफडोंमें वसामय मवादका आ जाना। जीभ आमतौरपर सफेद होती है, कफ भी सफेद और दुर्गन्धित होती है। यह इस रोगके दूसरे दर्जेमें हितकर है जवकि नजलेने नाक, कानों और गलेको आक्रान्त किया हो और यह विकार उपद्रव स्वरूप आया हो। हृद्रोग और जलोदर भी उपद्रव स्वरूप आए हों, तो भी, यह दवा अधिक अच्छा काम करती है। जलोदर चला जाता है ; कफ ढीला होकर निकल जाता है।

**मैग्नेशिया फॉस :** जव आक्षेपिक खाँसीके दौरे पडते हों। और खाँसीमें

कफ बिलकुल न निकलता हो। छातीमें घुटन आए। खाँसी रातको, लेट जाने के बाद बढ़े।

**नेटरम म्योर :** फेफड़ोंका प्रदाह जबकि बलगम तर हो और छातीमें घड़घड़ाहट भी होती हो, कफ साफ, पानी-सा पतला और झागदार हो और उसे खाँसकर निकालना कठिन हो। कष्ट सवेरे बढ़े। खाँसी और उसके साथ सरदर्द, पेशाब अपने आप निकल जाए और आँसू आएँ। शराबियोंका निमोनिया। जबकि जीभ साफ, खुश्क और चमकदार हो।

**नेटरम फॉस :** जब निमोनियामें पित्तके लक्षण हों। गाढ़ी, रेशेदार, हरी, पीब जैसी कफ आए। छाती दुखे और यह दुखन दबानेसे घटे। खाँसते समय रोगी छाती थाम ले। तर मौसममें सभी लक्षण बढ़ जाते हैं।

**काली सल्फ :** फेफड़ोंका प्रदाह जिसमें शब्द हो और पीली, पतली कफ खाँसीमें आएँ। **छातीमें घड़घड़ाहट हो,** विशेषतः बालकोंको पानी-सी पतली कफ आए। ऐसा जान पड़े जैसे दम घुटेगा। ठण्डी हवाकी इच्छा। शामसे आधी रात तक ज्वर आए; फिर घट जाए। घड़घड़ाहट और खाँसनेसे कुछ भी न निकले।

**काली फॉस :** टायफायड-निमोनिया, स्नायविक थकान, अनिद्रा। दुर्बलता, साँस उथला, खाँसीमें बदबूदार कफ आए, स्वरभंग। हवाकी नालीके क्षोभसे खाँसी आए। कफ गाढ़ा, पीला, नमकीन और बदबूदार, आक्षेपिक खाँसी जिसमें झागदार, पानी जैसा पतला कफ मात्रामें अधिक आए और दम घुटनेका खतरा हो।

**साईलीसिया :** पुराना निमोनिया जिसकी उपेक्षाकी गयी हो और जिसमें अब पीब आ गयी हो। चित्त लेटनेसे साँस लेनेमें कठिनाई पड़े। फेफड़ोंकी गहराईमें दर्द, खाँसीमें कफ पतली आए और घड़घड़ाहट हो। कफ मात्रामें अधिक, चिकनी, बदबूदार, गाढ़ी, पीली या हरी आए। यक्ष्मा ज्वर, रातको पसीना अधिक आए और दुर्बलता भी आए।

**कल्केरिया फॉस :** विशेषतः बच्चोंका निमोनिया जिसमें पीला कफ आए, जो सवेरे बढ़े। छातीमें सूई गड़ने जैसा दर्द और सर्दीसे सन्तापपूर्ण कष्ट आएँ।

**कल्केरिया सल्फ :** निमोनियाका तीसरा दर्जा जिसमें पीब जैसा, पानी-सा पतला कफ आए। बच्चोंकी सख्त किस्मकी खाँसी जिसके साथ थकान भी आए।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ उने दाएँ फेफड़ेके ऊपरी भागमें निमोनिया आया। हवाकी नालियोंमें कर्कशकी आवाज सुनाई देती थी और झागदार गुलाबी रंगकी कफ तथा गहरे पीले रंगका पानी-सा पतला दस्त आता था, कैमें हरा मवाद आता था। **लाईको, लैकेसिस** और **फास्फोरस** दिए गए और वे कुछ न कर सके। तब **फैरम फॉस** २-२ घण्टे बाद दिया गया और उसने तात्कालिक कार्य किया। हम समझते थे कि रोगिणी दम तोड़नेवाली है, क्योंकि वह टी० बी० से पीड़ित थी। अतिसार और कै पर इस दवाका कोई असर नहीं आया।

डब्ल्यू० सी० गुडनों, एम० डी०

२. डा० ए० एल० फिसरने एक बालकके शिखरदेशीय निमोनियाको **फैरम फॉस** और **काली सल्फ** देकर ठीक कर दिया था। बालकको ज्वर बहुत तेज था। खाँसीमें गाढ़ा, पीला-सा कफ आता था। रोगी बहुत जल्दी ठीक हो गया। 'होमियोपैथिक जर्नल ऑफ स्टेट्रिक्स'

३. आर्किबाल्ड हरवर्टको पुराना ब्रांकाईटिस था। इसी बीचमें उसे निमोनिया भी हो गया। उसका धन्धा था लोहा ढालना; इस तरह वह हर समय आगके सामने रहता था। उसे सहसा सर्दी लगी और दाएँ फेफड़ेपर प्रदाह आ गया। रोगी दुस्साध्य था क्योंकि फेफड़ेपर अब दो विकार आ गए थे। ज्वर तेज था, खाँसी बहुत कष्टकर थी। दर्द दाएँ भागमें बड़ी गहरायी तक होता था, खाँसीमें जो कफ निकल रहा था वह लसदार और मोरचा खाए लोहेके रंग जैसा था।

उसे **फैरम फॉस** और **काली म्योर** आध-आध घण्टेके अन्तरसे अदल-बदलकर दिए गए। २४ घण्टे बाद अन्तर बढ़ाकर एक घण्टा कर दिया गया। उसे थकान और अनिद्रा भी थी। इनके लिए उसे कभी-कभी **काली फॉस** भी दिया गया। २ दिनमें ही भारी सुधार आया। कफकी रंगत बदलकर गहरी-पीली हो गयी। अब **काली म्योर**की जगह **काली सल्फ** दिया गया। जब हालत कुछ और सुधरी तो उसे **नेटरम म्योर** और **कल्केरिया फॉस** भी दिया गया। १० दिनमें वह बिलकुल ठीक हो गया। निमोनिया तो गया ही, साथ ही उसका ब्रांकाईटिस भी ठीक हो गया। —शुसलरसे उद्धृत

४. निमोनियाके एक रोगीको निम्नलिखित लक्षण थे: मवाद बहुत अधिक आया था और वह ठोस था। दर्द बहुत तेज था, थकान लानेवाली, सूखी खाँसी थी, नींद बिलकुल ही नहीं; या थोड़ी आती थी। उसे **एकोन**

ब्राईओ और फासफोरस आदि दिए गए और ये कोई काम न कर पाए। उसे तब **फैरम फॉस** और **काली म्योर** अदल-बदलकर दिया गया। २४ घण्टेके अन्दर-अन्दर आश्चर्यजनक सुधार आया और कुछ दिनमें ठीक हो गया। यह सगीन केस था, क्योंकि ३ माससे उसका बाजू टूटा हुआ था और वह बहुत क्षीण हो चुका था कि उसे निमोनिया हो गया।

एम० पाल वर्डिक, एम० डी०।

# प्रसूत ज्वर ( Puerperal Fever )

**काली म्योर :** इस रोगमें यही दवा अकेली काफी है। जरूरत पडनेपर, कफ आदि मवादके लिए, **फैरम फॉस** भी दिया जा सकता है।

**काली फॉस :** प्रसूत उन्मादपर ज्वर जब भ्रम हो, रोगी हास्यास्पद करकतें करे या तीव्र उन्माद आ गया हो। इस हालतके लिए सिद्धौपध है।

**नेटरम म्योर :** प्रसूत कालीन कमेडोंके लिए अन्तरकालीन औषधके तौरपर वरती जाती है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ शीतके बाद ज्वर आ गया। स्तन दब गया। दूध भी न उतरा और पेशाब भी रुक गया। प्रलाप आया, पसीना चिन्ताजनक हो चला। प्यासका अभाव था। जीभ मैली थी, कब्ज और अफारा भी था।

**फैरम फॉस :** एक-एक घण्टे बाद दिया गया। १० घण्टेके अन्दर ही सारे लक्षण बदल गए। रोगिणी प्रसन्नचित्त हो गयी। पेशाब खुलकर आने लगा, स्राव भी शुरू हो गया और, छातियोंमें दूध भी उतर आया।

—डा० एफ० ए० रॉकविद एम० डी० **अमेरिकन होमियोपैथिक मैटीरिया मेडिका ; १८७५।**

## Reynaud's disease

**फैरम फॉस :** शिकागो निवासी डा० एच० बी० हाल्वर्टने एक केस दिया है जिसमें पहले हाथ-पाँवकी उगलियोंका काटा जाना निश्चित नजर आता था। परन्तु **फैरम फॉस** ६x देनेसे सारा संकट टल गया।

# गठिया-वात ( Phumatism )

**फैरम फॉस :** यदि यही दवा आरम्भसे निरन्तर ली जाएँ तो यह अकेली ही गठियावात ज्वरके लिए काफी है। हड्डियोंके जोडोंका तरुण गठियावात, जिसमें वेदना अधिक हो, प्रदाहवाला ज्वर हो। यह दवा उसके पहले दर्जेमें उपकारी है। तरुण गठियावात जिसमें किसी तरहकी गतिविधि दर्दको वढा दे ; या वृद्धि आनेकी आशका। गठियावात विशेषत. कधेके जोडका। दर्द छातीके ऊपरी भाग तक जाए , एकके वाद एक जोड पीडित हो। गठियावात चाहे जिस तरहका हो पेशियोका या नया उसके पहले दर्जेमें काम आती है। दर्द हरकत करनेसे वढता है और गर्मीसे कम हो जाता है। शरीरके मुख्य अगमें सतापपूर्ण कष्ट , विशेषतः जोडोंमें , यह कष्ट हरकत करनेसे वढ़े। कमर दर्द, कमरमें सख्ती आदि। गर्दन सर्दीसे अकड जाती है।

डा० आरण्डका मत है कि "जिस गठियावातके दर्द विशेषकर रातको वढ़े और सोने न दें , हरकतसे या हरकतके विचार मात्रसे ही दर्द वढ जाए ; हाथ फूले हुए और वेदनापूर्ण हो , उस हालतमें यह दवा खासतौरसे हितकर है।"

**काली म्योर :** गठियावात ज्वरका दूसरा दर्जा, जव जोडोंके आस-पास मवाद आ गया हो। यह दवा मल निस्सारक और शोषक अगोके कार्य न करनेवाले कोषोंका शोपण करके सूजनको हटाती है। और उन्हें अपने स्वाभाविक कार्यमें रत करती है। वडे या छोटे जोडोंका गठिया जिसमें हिलने डुलनेसे कष्ट वढ़े और जीभपर सफेद या भूरे-से रगकी मैल आयी हो। दर्द केवल हरकत करते समय ही मालूम दें या वढ जाएँ। और जव **फैरम फॉस** उसे दूर न कर पाया हो। पुराना गठियावात जिसमें सूजन भी हो और जव हर तरहकी हरकतसे दर्द आए। जीभ या स्रावोंकी रंगत सफेद।

**काली फॉस :** नया और पुराना गठियावात जवकि इधर-उधर टहलनेसे दर्द मिट जाए। दर्द सवेरे, आराम करनेके वाद और वैठकर उठनेपर वढ़े। अत्यधिक वेदनापूर्ण गठियावात , खड़ा होकर पहली वार चलनेकी चेष्टा करने पर अकडनका वोध हो। और यह अकडन निरन्तर चलते रहनेसे धीरे-धीरे घट जाए ; परन्तु हर तरहके परिश्रमसे या थकान आ जानेसे वढ जाए। अकडन , लक़वा आनेकी प्रवणता। लँगड़ा वना देनेवाले दर्द जो सामान्य परिश्रमसे घटे।

**नेट्रम फॉस :** डा० शुसलरने डा० गॉलनको इस औषधके बारेमें एक बार लिखा था कि यह प्रदाहपूर्ण गठियावातके लिए उपयोगी है। मैंने इसे कई रोगियोंपर आजमाया और उन्हें इससे लाभ पहुँचा। जबकि **फेरम फॉस** गठियावातके सीधे सादे केसोंमें हितकर है, तो **नेटरम फॉस**के बारेमें यह सन्देह नहीं किया जा सकता कि यह उन हालतोंमें सिद्धौषध है। जबकि जीभ पर **गहरे पीले रंगकी मैल** आयी हो, अम्लताके लक्षण हों या जहाँ पहलेसे कठमाला विद्यमान हो। छोटे जोडोंकी नयी या पुरानी वेदना, बड़े जोडों का पुराना गठिया। जब यूरिक ऐसिड आता हो तो यह उसे निर्विकार बनाती है।

डा० जे० डब्ल्यू वार्ड, एम० डी० ने लिखा है. "जोडोंमें भारी अकड़न आती है और कडकडाहट होती है। कष्ट शामके समय बढता है।"

**काली सल्फ :** गठियावात ज्वर जबकि जोडोंकी वेदना भ्रमणशील हो या सरदर्दके दौरे पडते हों। जोडोंका नया या पुराना दर्द जो अपनी जगह बदले। **दर्द शामको और गर्म हवामें बढ़े** और ठण्डी-ठण्डी हवामें घट जाए। दर्द कमर, गर्दन या अंगोंमें आए।

डा० श्लेगनमैनने लिखा है : भ्रमणशील दर्दोंमें मैंने **काली सल्फ**को अनेक बार अजमाया और उसे सिद्धफलदाता पाया।

गठियावात या स्नायविक शूल जिसमें तडके ३ बजे सन्तापपूर्ण कष्ट आए और विस्तर छोडने तक जारी रहे।

**मैग्नेशिया फॉस :** नया गठियावात जिसमें जोडोंमें असह्य वेदना हो। यह दवा अन्तरकालमें दी जाती है। गठियावात ज्वरके समय कुचलनेका आक्षेपकी तरह दर्द आए।

डा० पुहलमैनने लिखा है : "दर्द जरा-सा छूनेसे बढ जाता है और हरासत या सख्त दबावसे घट जाता है।"

**नेटरम म्योर :** जब दूसरे दर्जेकी दवा (**काली म्योर**) कोई काम न दे सकी हो और यदि लक्षण मिलते-जुलते हों। जोड़ोंका पुराना गठियावात। जोडोंमें कड़कड़ाहटकी आवाज हो।

**नेटरम सल्फ :** गठियावातका दर्द, गर्दनके पिछले भाग और कमरमें दर्द हो और अकडन आए, जोडो विशेषत. हाथ-पाँवकी उगलियों और कलाइयोके जोडोंमें। कूल्हेके जोडका दर्द **बैठकर खड़ा होनेपर या बिस्तरमे पहलू बदलनेपर बढता है।** (पर्किन्स)

**कल्केरिया फॉस :** गठियावात, दर्द रातको बढे, गर्मी या ठण्डकसे, खराब मौसममें (**फेरम फॉस भी**), और मौसम बदलनेपर कष्ट बढे। **जोड़ों**

का दर्द जिसमे जोड़ ठण्डे या सुन्न मालूम दें, पीडित अगपर जैसे चीटी रेंग रही है, ऐसा जान पडे। सुन्नपन; लगडापन, जब भी सर्दी लगे जोड़ोंमे दर्द आ जाए। खोपडीके जोडोंका दर्द। नमीके कारण गर्दनमें अकडन आए, अगोमें दर्द और सन्तापपूर्ण कष्ट हो। त्रिकशूल जो मौसममें हर तरहका परिवर्तन आनेसे वढ़े।

## चिकित्साकालीन अनुभव

श्रीमती—आयु २२, को वरसोंसे अनपच और कमजोरीकी शिकायत थी। उसे सर्दी-जुकाम और जोडोंमें दर्द वार-वार आता था। दर्द अपनी जगह वदलते थे। उसका कष्ट आमतौरपर शामके समय और गर्म घरमें वढ़ता था। खुली ठण्डी हवामें आराम मिलता था। उसे चेहरेके स्नायुशूलका कष्ट भी अधिक था। यह दर्द भी भ्रमणशील, ठण्डी हवामें घट जाता था। जीभपर पीले रंगकी मैल थी। उसे फोडे भी निकलते थे और ये फोडे गठियाका दौरा पडनेके वाद ही निकला करते थे।

**काली सल्फ**ने उसे ठीक कर दिया। अव वह इस दवाको हर समय अपने घरमें रखती है। —डा० ओ० ए० पामर, एम० डी०।

**काली म्योर:** यह इस औषधके लिये महौषध है और इसके लक्षणोंको याद रखना चाहिये। निम्न केसके इस औषधिकी क्षमता प्रकट हो जाएगी:

श्री अ—७८, ४-५ वर्षसे वीमार थे, सवसे वडा कष्ट था पाचन क्रिया सम्वन्धी। उन्हें भूख नहीं लगती और अधिकाशतः जीभ सफेद रहती थी। आँखें वडी-वडी थीं और वाहर निकली हुई थीं। पकवान खानेसे उन्हें कष्ट होता था। अफारा और आमाशयशूल भी था। कब्ज और अतिसार भी था, और ये दोनों शिकायतें हर ३-४ सप्ताह वाद अदल-वदल कर आ जाती थी।

उन्हें जोडोंके दर्दकी शिकायत वरसोंसे थी। उनके वहुत-से जोड थोडे-वहुत फूले हुए थे और हरकतसे दर्द वढ जाता था। उन्हें हर २-४ दिन वाद के आती और उससे कुछ समयके लिये आराम आ जाता। जवानीमें वह हृष्ट-पुष्ट थे, और अव जीर्ण-शीर्ण थे।

उन्हें खान-पान और स्नान आदिके सम्वन्धमें हिदायत देकर **काली म्योर** दिया गया। इससे ६ सप्ताहमें उनके सारे कष्ट मिट गये। उन्होंने मुझे वताया कि यही पहली दवा है जिसने मुझे लाभ पहुँचाया।

—डा० पामर, एम० डी०।

हेंगरी देशके अल्सी लेण्डरा निवासी डा० फोखमैनने गठियावातके १५ केसोंकी रिपोर्ट दी है जो **फैरम फॉस**से ठीक हुए।

—( Allg Hom. Zeit. )

डा० श्लेगमैनने केस बताए हैं :

क—रोगी हृष्ट-पुष्ट और धनी था ; आयु २६ वर्ष ; उसे पसीना आनेपर सर्दी लगी और जोंडोमें दर्द हुआ ( गठियावात ज्वर )। आरम्भमें दर्द दाएँ कंधेमें आया , उसके साथ तेज ज्वर आया। **ब्राईओ**के लक्षण निश्चित रूपसे स्पष्ट थे। परन्तु वह कुछ न कर पाया। हाँ ; दर्दने अपनी जगह बदल ली और बाएँ घुटनेमें चला गया। दर्द इसी तरह कई दिन तक चलता रहा और कभी कोई और कभी कोई जोड पीडित होता रहा। इस तरह रोगीकी हालत बिगडती रही।

आखिर उसे **काली सल्फ** दिया गया। परिणाम बहुत ही अनुकूल रहा। दर्दने अपनी जगह बदलनी छोड दी और वह दाएँ कन्धेमें सीमित हो गया। मगर उसमें पहले जैसी तेजी नही थी। इस औषधका व्यवहार निरन्तर जारी रहा और उसने ज्वर, दर्दको दूर कर दिया। भूख और नीद आयी। उसके बाद उसे कोई कष्ट न आया। —शुसलरसे उद्धृत।

डा० श्लेगमैनने लिखा है : जनवरी, १८७६ : मुझे नवम्बरके अतमें गठियावात हो गया। मै रेलमें यात्रा कर रहा था और खिडकीके पास बैठा था, बाहर ठण्डी हवा चल रही थी। दर्द दाएँ भागमें आया। दर्द बहुत तेजीसे आता और हर तरहकी हरकतसे बढता था।

**ब्राईओ**से आशिक और अस्थायी लाभ हुआ। मैं आधी रातको घर पहुँचा और रात बहुत कष्टसे कटी। **ब्राईओ** कुछ न कर पाया। अगले दिन बिजली ली , परन्तु इससे भी कुछ न बना। तब **फैरम फॉस** एक चुटकी खायी और उसने जादू कर दिखाया। —शुसलरसे उद्धृत।

१८७५ में डा० श्लैगलनने रेजेत बर्गसे सूचना दी।

श्रीमती—आयु २० ; बाल्यकालमें कठमालासे पीडित, शीतकालमें उन्हें सख्त कमर दर्द आया जो सर्दी लगनेका परिणाम था। तीसरी, चौथी और पाँचवी पसली बहुत स्पर्शकातर थी, जैसे ही वह बाजू या हाथ हिलाने का यत्न करती, उसका दायाँ हाथ और दायाँ पाँव एक साथ हरकतमें आ जाते। इस तरह कोई काम करना असभव बन गया था। इससे वह बहुत चिन्तित हुई क्योंकि उसे रोजी कमानेके लिये लिखनेका काम अधिक करना पडता था।

मैंने उसे **पुल्सा, पुसटा, वैल, नक्स वा,** और **प्लाटिनो** आदि कई दवाएँ दी ; परन्तु उसकी हालतमें सुधार न आया। नई औषधोंसे भी कोई लाभ न हुआ।

वह चार सप्ताह तक दवा लेने न आयी। मैंने समझा शायद ठीक हो गयी होगी। आखिर वह एक दिन आयी, तो पहलेसे अधिक काँप रही थी मेरे पूछनेपर बताया कि वह इस बीचमें एक जडी बूटीसे चिकित्सा करने वालेके पास चिकित्सा करा रही थी किन्तु कोई लाभ न हुआ।

इस बार मैंने उसे **मैग्नेशिया फॉस** १० ग्रेनकी एक मात्रा और दिनमें ऐसी ३ मात्राएँ दी। १० दिनमें कम्प एकदम जाता रहा। वह मुझे बार-बार लिखती रही फिर कम्प कभी न आया। वह अब सीने-पिरोने और लिखनेका काम भी करती हैं और एकदम ठीक है। —शुसलरसे उद्धृत।

डा० ब्रिस्किनने लिखा है : गठियावातसे पीडित एक रोगीने १८ दिन बाद मुझे बुलाया। उसके सारे जोड फूल गए थे। इन दिनोंमें वह एक रात भी सो न सका था।

मैंने उसे **काली म्योर** सुबहके समय दिया और रातको वह आरामसे सोया। १२ दिनमें वह बिलकुल ठीक हो गया। —शुसलरसे उद्धृत।

श्री—आयु ७० ; कुहनी और अधेके जोडेमें दर्द आया। उन्होंने सींगी लगवाई और उससे कष्ट अधिक हो गया। उन्होंने जोडोंमें टरपिण्टाईन बुल भी लगाई और उससे भी कोई लाभ न हुआ। वह २ दिनसे बिस्तरमें लेट न सका था क्योंकि इससे उसका दर्द बढ जाता था। तीसरे दिन वह डा० ब्रिस्केन के पास दवा लेने आया।

उन्होंने **फैरम फॉस** दिया और उसने कुछ दिनमें ज्वर उतार दिया। तब उसे **काली म्योर** दिया गया। इससे वह कुछ दिनोंमें ठीक हो गया। —शुसलरसे उद्धृत।

डा० ब्रिस्केनने गठियावात ज्वरके तीन केसोंका हवाला दिया है। एक केस का धन्धा दफ्तरी—जिल्दसाजी था ; अर्द्धवयस्क। वह ३ वर्ष पहले भी इसी रोगसे पीडित होकर उनसे इलाज करा चुका था। उस बार वह ८-१० सप्ताहमें ठीक हुआ था। इस बार हाथों और घुटनोंके जोडोंमें दर्द आया। उसे १-१ घण्टे बाद **फैरम फॉस** दिया गया। इससे ज्वर हट गया। तब इसी तरह उसे **काली म्योर** दिया गया, पाँचवें दिन वह अपने कामपर चला गया। —शुसलरसे उद्धृत।

एडवर्ड बी, आयु १२ ; बडे-बडे सारे जोड़ों, विशेषतः कुहनियों और कलाईयोंके जोड़ोंमें दर्द आया। जोडोंपर लाली और सूजन थी ; ज्वर भी था

हिलने-डुलनेसे दर्द असह्य हो जाता था। दर्दसे बचनेके लिए उसे चुप-चाप बैठना पडता था।

उसे **फैरम फॉस** ६ और **काली म्योर** पानीमें घोलकर अलग-अलग दिए गए और २-२ घण्टेके अन्तरसे लेनेका आदेश दिया गया। जब ज्वर चला गया, तब **काली म्योर** दिया गया। इससे वह कुछ दिनोंमें ठीक हो गया।

अगले साल उसे फिर दौरा पडा तब भी उसे इन्हीं दवाओंसे लाभ हुआ।

—सी० टी० एम०।

रावर्ट डी ; ३४ , वह एक झीलके पास रहता था और प्रायः पानीमें रहना पडता था। मछली पकडते और शिकार खेलते समय उसे भीग जाना पडता। जब वह मेरे पास दवा कराने आया, तब उसे १ या २ सालसे दर्द होता था। दर्द कभी किसी जोडमें आता और कभी किसी जोडमें। दर्द बहुत कष्टकर था। वह उसके कारण काम-काज न कर सकता था।

मैंने उसे **काली सल्फ** ६ पानीमें घोलकर दिया। कुछ सप्ताहमें वह बिलकुल ठीक हो गया।

—सी० टी० एम०।

मई १८७६ , रोगी ६६ वर्षका वृद्ध था। उसे कई सप्ताहसे अगोंमें दर्द था जो अब दायी टाँगमें आकर टिक गया था। दर्द कूल्हेसे टखने तक आता; परन्तु जोडोंमें अधिक होता और भ्रमणशील था, रुक-रुककर आता। दर्द प्रायः गोली या भाला लगनेकी तरह और बिजलीकी-सी तेजीसे आता। रोगी को बार-बार करवटें बदलनी पडती। गर्मीसे उसे राहत मिलती। वह बिस्तरसे न उठ सकता। वह एकदम निराश था, और समझता था कि अब मर जाऊँगा।

उसे **मैग्नेशिया फॉस** ३-३ घण्टे बाद दिया गया। इससे बहुत आराम आया। परन्तु जब वह इसका व्यवहार छोड देता, तो दर्द फिर आ जाता। आखिर वह इसके निरन्तर व्यवहारसे बिलकुल ठीक हो गया।

—शूसलरसे उद्धृत।

डा० श्लेगलमैन लिखते हैं : मुझे एक १२ वर्षीया बालिकाको देखनेके लिए बुलाया गया। उसे कुछ समय पहले गठियावात हुआ था। उसके दोनों घुटनों पर सूजन और सुर्खी थी और उनमें दर्द होता था। गर्दनके मोहरे भी आक्रांत हुए थे। जरा-सी हरकतसे गर्दन और कमरमें सख्त दर्द आता था।

मैंने उसे **फैरम फॉस** और **काली म्योर** अदल-बदल कर ३-३ घण्टे बाद दिया। अगले दिन उसके घरवाले यह देखकर हैरान रह गए कि ज्वर और दर्द घट गया है। घुटनोंमें दर्द बिलकुल नहीं था।

अब मैंने खाली **काली म्योर** दिया ताकि सूजन चली जाए। परन्तु अगले दिन जब जाकर रोगीको देखा तो उसकी हालत पहलेसे खराब थी। **फैरम फॉस** फिर दिया गया और उससे सुधार बड़ी जल्दी आया। जैसे दर्द और सूजन कम हुई, वैसे ही पेट दर्द आ गया था अब **मैग्नेशिया फॉस** पानीमें घोल कर दिया गया और २४ घण्टेके अन्दर-अन्दर सारे लक्षण मिट गए।

डा० स्टेंम जूनियरने डॉर्ट मण्डमें मैडिकल कांग्रेसके सामने २६ जुलाई १८७६ को निम्न रिपोर्ट पढी। मै गठियावातके एक रोगीका हाल बताना चाहता हूँ जो बहुत थोडे समयमें, **फैरम फॉस**से ठीक हुई। इससे पहले वह बहुत-सी दवाएँ खा चुकी थी जो इस रोगके लिए प्रसिद्ध थीं और जिनके लक्षण नजर आए थे। रोगिणीकी आयु ४२ वर्ष थी, मासिक ठीक था, हलाकि कम जरूर था। उसकी पाचनक्रिया खराब थी। उसे कभी-कभी सरदर्दके सख्त दौरे पडते थे। एक दिन सुबह उसके दाँएँ कन्धे और दाएँ अग्रबाहुमें सख्त दर्द आयी जो चीडने-फाडनेकी तरहका था। वह पिछली शाम एक नमदार मैदानमें चली थी और उसके पाँव भीगे थे। बाजूको जोरसे हिलानेसे दर्द बढ़ता था और धीरे-धीरे हिलानेसे घटता था। इसलिए वह निरन्तर हाथको हिला रही थी। छूनेसे दर्द वाली जगह दर्द बढता था। कई-कई रात पसीना अधिक आता रहा और अब वह आधी रातके बाद २ से ३ बजे के दरम्यान आता था। उस समय दर्द अधिक बढ जाता। उसे दाएँ हाथमें भी दर्द आता था और वह निशक्त हो गयी थी। वह उस हाथसे कोई भारी चीज उठा न सकती। उसे प्रायः थकान भी आती और तब वह लेट जाती। मैंने लक्षणोंके आधारपर उसे पाँच दवाएँ दी और वे कुछ न कर सकीं। उसे अनीमिया भी था। तब मुझे शुसलरकी पद्धतिसे लोहेके व्यवहारका ध्यान आया। मैंने उसे **फैरम फॉस** दिया। परिणाम यह हुआ कि ६ दिन बाद ज्वर और अन्य लक्षण चले गए और वह ठीक हो गयी। हालांकि बादमें नमदार मौसम भी आया और जैसा पहले हो जाता था उसे कोई कष्ठ न हुआ।

—शुसलरसे उद्धृत।

कुमारी ए० डब्ल्यू, आयु १०॥ वर्ष, जनवरी १८८४ को उसे सर्दी लगी। अगले दिन उसे तेज ज्वर हो गया और नाड़ी १२०, कमर और अगोंमें दर्द आया। मिचली और कै भी हुई। सभी छोटे या बडे जोडोंमें प्रदाह आया। हाथों, पैरों और अन्य अगोंपर शोथ भी आया। वह स्पर्श या हिलना-डुलना सहन नहीं करती थी। सारा शरीर अत्यधिक कोमलग्राही था। दर्द रातको अधिक हो जाता था जिसके कारण उसकी चीखे निकल जाती थीं और चारों ओरके पड़ोसी उसे चीख मारते सुनते। वह हर समय ठण्डे पानीकी माँग

करती। खाये-पीयेकी तत्काल कै हो जाती। जीभ पीली थी। स्वाद वहुत कडवा। थकान भी वहुत थी। छोटे वडे जोडोंके दर्द और सर्वाङ्गशोथकी पैतृक प्रवणता थी। वह कुछ दिनोंसे वहुत अधीर होकर खाती थी; विशेषतः मीठी चीजें।

एक सप्ताह तक कई दवाएँ देकर मै थक गया और तव मैंने शुसलरकी दवाएँ देनेका निश्चय किया। मैंने ज्वर, मिचली कै और प्रदाहके लिए **फैरम फॉस** ६x दिया। रातको दर्द वढ गया। तव छोटे वडे जोडोंके दर्द, सूजन, शोथ, जलोदर, मुँहकी कडवाहट आदिके लिए **नेटरम सल्फ** ३x दिया गया और इसके साथ **फैरम फॉस** और **कल्केरिया फॉस** भी दिए गए। इससे सुधार आया। चौदहवें दिन वह वैठ सकी। वीमार होनेसे पहले वह वहुत मोटी थी। अव उसका वह मौटापा हट गया।

ई—एच० हालव्रूक, एम० डो० **ईक्लेक्टिक मेडिकल जर्नल**में।

वर्लिन निवासी डा० सूलजरने एक केसकी रिपोर्ट दी है जिसे दाएँ कंधेके जोडमें तेज दर्द था, वुखार और नाडी भी तेज थी, प्यास और भूख नदारद थी। कन्धा लाल, फूला हुआ और स्पर्शकातर था। यहाँ तक कि तकियेका दवाव भी सहन नहीं होता था।

उसे **फैरम फॉस** ६x ने ठीक कर दिया।

**Allg. Hom. Zeit.**

## वालशोष, मेरुदण्ड प्रदाह ( Rickets )

**कल्केरिया फॉस** : नाजुक वच्चोंके लिए; जव चूनेके अभावमें हड्डियाँ नर्म पड गयी हो। खोपडी नर्म और पतली; दवानेसे कडकडाहटकी आवाज हो व्रह्मरन्ध्र (तालु) वहुत देरमें वन्द हो। त्वचाकी रंगत मटयाली; चेहरा फुन्सियों या कीलोंसे भरा हुआ हो; दाँत देरसे निकलें; शरीर मुरझाया हुआ, झुका हुआ, दोनों पैरोंकी हड्डियोंके उभरे हुए मेरुदण्डका जन्मजात रोग, टूटी हुई हड्डियोंका न जुडना, रक्त दोष; रीढ़का नासूर, झुर्रियां पडी हुई; खोपडीपर सख्त गाँठें निकलें, दाँत निकलनेके दिनोंका अतिसार जिसमें हवा अधिक निकले, झटके आए; वालक सर सीधा न कर सके। इस दवाका विशिष्ट लक्षण है। व्रह्मरन्ध्रका देर तक वन्द न होना; पतले पाखाना आना और सूख जाना।

**काली फॉस :** हड्डियोंकी क्षीणता और उसके साथ दुर्गन्धित पाखाने आना, अनपच और स्नायविक दुर्बलता।

**नेटरम म्योर :** जब जघाऍ सूखी हो तो यह दवा विशेष रूपसे लाभ करती है। विशेषत. जबकि यह रोग प्रारम्भिक अवस्थामें हो। इसके साथ हड्डियाँ नर्म। (गिलक्रिस्ट)।

**साईलीसिया :** ब्रह्मरध्र खुला, सर बहुत बडा और शेष शरीर मुरझाया हुआ; चेहरा पीला, पेट फूला हुआ, गर्म, टखने कमजोर, शरीरपर पसीना अधिक आए और बाकी शरीर खुश्क, गर्म कपडेमें लिपटे रहना चाहे, पाखाना बदबूदार, अनपच खाद्य पाखानेमें निकले, इसके साथ भारी थकान परन्तु वेदनाका अभाव, ग्रन्थियों और हड्डियोंका प्रदाह, सूजन और पीव आ जाना, घाव बन जाना या उनके मुर्दारपन, कोषोंका प्रदाह, फोडो, घाव, कोई रोग आ जाए या यही विकार तो जल्दी ठीक न हो और बादमें सख्ती आ जाए।

**नेटरम फॉस :** उन बच्चोंके लिए जो हीन पोषणके कारण पीडित हों, इस दवाको विशेष उपयोगी बताया गया है, विशेषतः जबकि शोष आनेका खतरा हो और निरन्तर मटयाले रगके पाखाने आते हों। मात्रा १० ग्रेन दिनमें ४ बार। शेष जिसमें अम्लपित्त प्रधान हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

मेगडेबर्ग सेडा नण्पल रिपोर्ट देते हैं (Alleag Home Zeit १८८२, ४)। जिन माताओंको शोषरोगसे पीडित बच्चे पैदा होते थे, उन्हें गर्भकालके अन्तिम दिनमें **कल्केरिया फॉस** ३ दिया गया और उन्हें हर तरहसे स्वस्थ बच्चे पैदा हुए।

दो वर्षके एक बालककी दायी जाघ, कूल्हेसे घुटने तक, फूलकर स्वाभाविक अवस्थासे ३ गुना बडी हो गयी थी। यह सूजन पत्थरकी तरह सख्त थी और ६ सप्ताहसे थी।

**कल्केरिया फ्लोर :** तात्कालिक प्रभाव दिखाया। इस रोगीको सामान्य स्पर्श भी सहन न था और वह बादमें देरतक चिल्लाता रहता था।

—डा० जे० डब्ल्यू० वार्ड, एम० डी०।

# आरक्त ज्वर ( Scarlatina )

**फेरम फॉस :** आरक्त ज्वरके सीधे साद केस। ( **काली म्योर**के साथ अदल-बदल कर दें )।

**काली म्योर :** आमतौरपर नर्म केसोंमें **फेरम फॉस**के साथ काफी रहता है, दाने निकाल देता है और पीछे कोई दुष्परिणाम नहीं रहता। डा० पी० डी० पेल्टिरका विश्वास है कि **फैरम फॉस** और यह दवा, दोनों, **बैलाडोना**की उपेक्षा अधिक गुणकारी और रोगनाशक हैं। ये दोनों अधिक बलशाली प्रतिषेधक भी हैं। लसिका ग्रन्थियोंका बढ़ जाना आदि।

**काली सल्फ :** खाल उतरना ; यह खाल उतरनेमें और नयी, स्वस्थ खाल लानेमें सहायता करता है। यह दवा दानोंको निकालती है। स्राव दुर्गन्धित।

**काली फॉस :** आरक्त ज्वरके बाद आया शोथ।

**नेटरम म्योर :** तन्द्रा , अंगोंमें खिंचाव आएँ या फड़कन हो और पानी-सी पतला कै हो।

**साईलीसिया :** कंठमाला , ग्रन्थियोंकी सूजन और उनमें पीब आनेका खतरा। फोड़े , घाव ; स्वास्थ्य सुधारनेमें विघ्न पड़नेसे ग्रन्थियोंका सख्त हो जाना।

**नेटरम सल्फ :** दाने खुरदरे और कील , गलेमें कफ आए।

# चिकित्साकालीन अनुभव

१ डाक विभागके एक कर्मचारीके बालकको आरक्त ज्वर हुआ। दाने उभरे और मुश्किलसे २४ घण्टे दिखायी दिए और तब दब गए। फिर गला बिगड़ा। आरम्भमें यह कष्ट बड़ा तेज नजर आया। परन्तु ३-४ दिनमें मिट गया। सातवें दिन पेशाब लगभग रुक गया , २४ घण्टेमें बहुत थोड़ा पेशाब उतरा। हालांकि बच्चेने पानी काफी दिया था। पेशाबमें कुछ अलब्यूमन भी था। पैरोंपर कुछ सूजन भी आ गयी थी। पेट भी फूल गया था। बच्चेका ज्वर तेज था और वह रातको बड़बड़ाता भी था। आठवें दिन मैंने माता-पितासे कह दिया कि वे किसी और चिकित्सकको दिखा लें। दूसरे चिकित्सकको बुलाया गया। मैंने उसे सारी कैफियत सुनायी और बताया कि मैं **बैला, कैंथारिस** और **आर्सेनिकम** दे चुका हूँ। और उन्होने कुछ नही किया।

तब हमने सलाह करके **काली म्योर** २-२ घण्टे बाद दिया। शामतक कुछ सुधार आया। पेशाब अधिक आया , उसमें अलब्यूमन नहीं थी। अब नाड़ी

अधिक मजबूत थी और चमडी गीली थी। अगली रात बची कई घण्टे तक आरामसे सोयी। सुबह ज्वर नही था। **काली म्योर** जारी रहा और कुछ दिन मे वह ठीक हो गयी। —शुसलरसे उद्धृत।

२ डा० हालब्रुकने आरक्त ज्वरका एक केस (सदर्न जनल ऑफ होमियो- पैथीमें) दिया है जो **काली म्योर** २०० से ठीक हुआ। यही दवा परिवारके अन्य बच्चोंको भी दी गयी और वे सब इस रोगकी सक्रामकतासे बचे रहे।

३ एक पादरीने लिखा है: 'कुछ दिन पहले मेरे दो बच्चोंको आरक्त ज्वर हो गया उनमेंसे एकको डिफ्थेरिया भी था। ऐलोपैथिक चिकित्सकोंने उसके बारेमें कह दिया कि वह ठीक नही होगा। मुझे सबसे अधिक डर इस बातसे लगा कि उसे दिन-रातमें किसी समय नीद नही आती थी। कमेडो और टाइफायड ज्वरपर किसी भी दवाका असर न हुआ। आखिर कार डा० शुसलरकी एक पुस्तक पढनेसे ध्यान आया कि **नेटरम म्योर** देना चाहिए। मैंने दवा तो तत्काल ही दे दी, परन्तु मुझे उसकी क्षमतापर विश्वास नहीं था। परन्तु परिणाम बहुत आश्चर्यजनक था पहली खुराक लेते ही बच्चा आराम से सो गया। और फिर रातभर सोता रहा। दवा जारी रही। और जिस बच्चेके बारेमें यह कह दिया था कि वह बचेगा नही, वह कुछ दिनोमें बिलकुल ठीक हो गया।

( Jour Pop-de Hom )

आरक्त ज्वरके कुछ रोगियोंको आम दवाओसे कोई लाभ न हुआ। तब उन्हें **नेटरम सल्फ** दिया गया। दाने चिकने न होकर खुरदरे और नोकदार थे और कुछ रोगियोंके गलेमें कफ भी आता। (ई० एच० एच०)

# गृध्रसी , रीधन बाय, लंगड़ीका दर्द ( Sciatica )

**काली फॉस :** गृध्रसीकी पीडा जो जाँघके पीछे-पीछे चलकर घुटने तक पहुँचे; खिचावके साथ दर्द, शिथिलता, अकडन, भारी व्याकुलता, दर्द, स्नायविक थकान, गतिहीनता, चहलकदमीसे क्षणिक आराम आए। स्नायु दौर्बल्य।

**नेटरम सल्फ :** जब सधिवात और शारीरिक गठनके लक्षण मिलते हो। कूल्हेके जोडमें दर्द; बैठकर खडा होनेपर या बिस्तरमें पहलू बदलनेपर दर्द बढ़े।

**मैग्नेशिया फॉस :** कुचले जानेकी तरह या आक्षेपके साथ दर्द जो गर्मीसे घटे।

**नेटरम म्योर :** दाएँ कूल्हे और घुटनेमें खिंचावके साथ दर्द जो रुक-रुककर आए। **मन्दिर शिरामें खिंचावके साथ दर्द ;** पीड़ित अंग मुरझाया हुआ और छूनेसे दर्द हो। झुकनेसे दर्द फिर आ जाय या वढ जाए, दिनमें भी विशेषतः दोपहरके समय। दर्द गर्मीसे घटे। कूनीनके वाद पुराने केस।

**साईलीसिया :** पुरानी गृध्रसी जो हरकत करनेसे वढ़े। कूल्होंमें दर्द, चलनेपर पिण्डलियाँ छोटी मालूम दें।

**कल्केरिया फॉस :** दर्दके साथ ऐसी अनुभूति जैसे चीटी रेंग रही है और सरसराहट हो। दर्दके दौरे सर्दीमें आए। कूल्हेकी हड्डीमें चीरने-फाडने और गोली लगनेकी तरहके दर्द।

## चिकित्साकालीन अनुभव

१ श्री—को गत ७ माससे वायी टागमें गृध्रसीका दर्द था। दर्द वहुत तेज था और वह वडी तेजीसे उनके स्वास्थ्यको नष्ट कर रहा था। इस दौरानमें एक वहुत प्रसिद्ध चिकित्सकने उनकी दवा दारुकी और इस रोगके जितनी दवाएँ हैं उन्होंने एक-एक करके सभी आजमाईं। आखिर उन्होने रोगीको स्पष्ट कह दिया कि वह सव और कुछ नहीं कर सकते। तव मुझे वुलाया गया। रोगीको वायीं टाँगमें पिछली नाडीके साथ-साथ ऊपरसे लेकर नीचे तक दर्द होता था। दर्द जरा-सी हरकतसे वढ़ जाता था।

मैंने **काली फॉस** ६x का घोल तैयार किया और १०-१० मिनट वाद एक-एक चम्मच पिलाया। एक घण्टे तक यही क्रम जारी रहा। इस वीचमें दर्द काफी घट गया। रोगीको नीद आ गयी और वह सवेरे तक सोता रहा।

अगली रातको दर्द फिर आ गया कुछ दवा दी गयी, परन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। तव काली फॉस १२ दिया गया और उसने तत्काल गुण दिखाया यह दवा २-२ घण्टे वाद दी गयी और एक सप्ताह तक जारी रही। इसके वाद दवा दिनमें चार वार कर दी गयी और एक मास तक ऐसा चलता रहा। इस वीचमें केवल एक वार हल्का-सा दौरा आया और वह **काली फॉस** पानीमें घोलकर देनेसे चला गया अव एक सालसे उसे कोई कष्ट नहीं है।

—जी० एच० मार्टिन एम० डी०

एक महिलाको गृध्रसीकी वेदना हुई। साथ ही ज्वर भी आया और

भारी स्पर्शकातरता थी। गतिविधि भी कष्टकर वन गयी। जरा-सा हिलते ही ऐसा दर्द आता कि चीख निकल जाती। जीभपर हरी-सी पीली मैल थी।

उसे **फेरम फॉस** २०० और **नेटरम सल्फ** २०० पानीमें घोलकर अदल-बदलकर दिए गए। अगले दिनसे वह निरापद रूपसे करवट वदलने लगी। तीसरे दिन वह वैठनेमें समर्थ हो गया और उसके वाद शीघ्र ही ठीक हो गयी।

—ई० एच० एच०।

गृध्रसी वेदना **मैग्नेशिया फॉस**से ठीक हुयी। एक आदमीको भेडको स्नान कराते समय यह दर्द आया। उसके लिए लेटना असम्भव हो गया। दर्दवाली जगह सेंक देनेसे आराम आता था।

**मैग्नेशिया फॉस** ३०x ने उसे ठीक कर दिया। —एच० पी० होम्स

# कण्ठमाला और टी० बी०

## ( Scrofula and Tuberculosis )

( निम्नलिखित सामग्री शुसलरकी पुस्तकके २४वें सस्करणसे ली गयी है जो १८९७ में छपा था )।

**मैग्नेशिया फॉस फोरिका और नेटरम फॉस फोरिका** चूँकि श्वेत कणोंमें वसा और अलव्यूमन पायी जाती है, अतएव यह सम्भावना है कि वे पनीरके रूपमें परिणत हो जाते हो। श्वेतकणोका जो समूह अभी तक पनीरके रूपमें परिणत नही हुआ, वह कठमालाका रूप धारण कर लेता है। इसमें अपकर्ष आ जाए तो वह स्थिति टी० वी० कहलाती है। इस प्रकार यों कहना चाहिए कि पहले कंठमाला वनती है और वादमें टी० वी०। फॉस्फेटोंके व्यवहारसे कठमालाके हर दर्जेमें और कठमाला जैसे हर रोगमें वहुत कुछ किया जा सकता है। रोगीके लक्षणोंका विचार करते हुए फॉस्फेटका निर्वाचन होना चाहिए।

जहाँ तक टी० वी० का सम्बन्ध है **मैग्नेशिया फॉस**पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जो नए परीक्षण और अनुभव हुए हैं, उनसे यह वात सिद्ध है कि **मैग्नेशिया फॉस** चेहरेकी टी० वी० के लिए सिद्धौषध है जव तक पनीर जैसा अपकर्षण आए, **नेटरम फॉस** पीडित कोषोंको वन्धन मुक्त करा सकता है।

जव श्वेतकणोका समूह पनीर जैसे अपकर्षमें ग्रस्त हो जाता है तो वह कृमियोंके पनपनेके लिए अनुकूल भूमि तैयार कर देता है। इस पीड़ित कोष समूहको, कोषोकी स्वाभाविक क्रिया द्वारा, विजातीय द्रव्य मानकर, शरीरसे निकाल देना चाहिए। प्रत्येक स्वस्थ कोषमें विजातीय द्रव्यको पहचानने और उसे दूर करनेकी क्षमता है। पूर्णत. स्वस्थ कोष टी० वी० की गाँठके आस-पास नहीं पाये जाते। ऐसे स्वस्थ कोषोंका निर्माण, रोगीके लक्षणोंके अनुसार,

किसी फॉस्फेटका निर्वाचन करनेसे सम्भव है। वह वहाँ नव कोषोंका निर्माण करेगा और उनमें प्रवेश कर जाएगा।

कॉख द्वारा अविष्कृत **ट्यूबरक्यूलिनम** यह काम नहीं कर सकती; कारण यह है कि यह दवा भी कोषोंके लिये विजातीय है—अतएव उन द्वारा बाहर के फेंक दी जाती है।

जब कोषोंकी स्वाभाविक क्रिया द्वारा टी० बी० विषको शरीरसे बाहर निकाल दिया जाता है तो यह प्रकृतिका निरोग बनानेका प्रयत्न समझा जायेगा। इस तरहका स्वाभाविक सुधार आना हर समझदार व्यक्तिके समीप सम्भव है।

इसी पुस्तकके २० वें संस्करणमें कठमाला और टी० बी० के बारेमें जो कुछ दिया गया है, हम यहाँ उसका साराश उद्धृत करते हैं :

जिस ट्यूबरक्यूलिनसे पिछले दिनों टी० बी० लसिका तैयार की गयी, उसे अभी अनेक परिवर्तनोंमेंसे गुजरता है और जिन्होंने इसे तैयार किया है। उन्हें मालूम हो जाएगा कि वे भूलपर थे।

अभी तक ऐसी चिकित्सक हैं जो अभी तक कीटाणुवादकी झकमें उलझे हुये हैं और इस भ्रममें हैं कि टी० बी० को उसके विष ट्यूबरक्यूलिनसे दूर किया जा सकता है।

वे अपनी सफलताओंकी बात करते हैं, परन्तु वे भूलपर आश्रित हैं। वे अपनी अनेक विफलताओंके होते हुए भी, उनपर सन्देह करना नही चाहते।

संभव है कि जो व्यक्ति सादा तर खाँसीसे पीडित है, उसकी कफमें कीटाणु हों और वे बिलकुल स्वस्थ भी हो जो अभी साँसके साथ अन्दर गए थे और शायद वे उस गाढे कफमें मौजूद भी हों।

शायद कॉखका कोई अनुयायी जिसे कीटाणुवादका उन्माद हो कफमें कीटाणुओंके आविष्कारपर शायद उछल पडे, और यह निर्णय कर ले कि फेफडे के तन्तुओंमें टी० बी० विष मौजूद है, और इस भ्रमपूर्ण परिणामपर पहुँचनेके बाद, तत्काल ही ट्यूबरक्यूलिन मैदानमें ले आए।

जब बाहरी दशाओंकी अनुकूलताके कारण, तर खाँसी अपने-आप ठीक हो जाए, तो वह रोगी, जिसने यह समझ लिया हो कि वह टी० बी० से पीड़ित था इन कृमिनाशक औषधके दाम सहर्ष चुका देता है।

जो कीटाणु स्वस्थ कोषोंपर पाए जाते हैं, वे बाहर फेंक दिये जाते हैं। हवाकी नालियोंसे जो कफ बाहर आया है, उसमें जो कीटाणु पाये जाते हैं, वे उपर्युक्त ढगसे ही बाहर निकाले गये हैं। जो कीटाणु श्वेतकणोंके समूहमें पनीर जैसे विकारमें पाये गये हैं, वे वहाँ रह जाते हैं और पनपते रहते हैं। कारण यह है कि यह कोष-समूह अक्रिय है और अपने-आपको शरीरसे बाहर नहीं निकाल

सकता। यह वहाँ उनके लिये पालन-पोषणका क्षेत्र* बन जाता है। उस दशामें ये कीटाणु रोगका कारण बन जाते हैं। यदि विवेकपूर्ण साधनों द्वारा, इस पालन-पोषण क्षेत्रको मिटा दिया जाए, तो वहाँ पालनेवाले कृमि भी उसी प्रकार बाहर निकाल दिये जायेंगे जैसा कि ऊपर बताया गया है। या फिर इनका भी वही हाल होगा जो पच जानेके बाद पनीरका होता है।

यदि कीटाणुओंको पनपनेके लिए श्वेतकोषोंके इस विकृत समूहकी आवश्यकता न हो, और वे स्वस्थ स्थानोंमें पनप सकते, तो फिर वे शीघ्र ही सारे शरीरको आक्रान्त कर लिया करते, और फिर उस दशामें टी० बी० को पुराना होनेका अवसर ही न मिलता, और कीटाणुओं द्वारा दोनों फेफड़ोंको खराब कर देनेसे पहले ही रोगी मर जाया करता।

चेचक, मसूरिका, टायफस और छोटी चेचक आदि तरुण संक्रामक रोग लानेवाले कीटाणुओंकी बात जुदा है। इन कीटाणुओंको शरीरमें ऐसी अनुकूल जगह नहीं मिलती जहाँ वे पनप सकें। यही कारण है वे अपेक्षतः गन्दी ही बाहर फेंक दिये जाते हैं और यह कार्य स्वस्थ कोष करते हैं।

शायद कोई लाल बुझक्कड़ चेचक या मसूरिकाके कीटाणूओंसे भी ऐसी ही बेकार या शायद वैसी ही हानिकर दवा तैयार कर ले जैसी ट्यूबरक्युलिन है, या फ्रासके पास्टरकी मृगीनाशक दवा है जिसके बारेमें यह दावा किया जाता है कि यह दवा न केवल जलातंकको ही वरन् मृगीको भी दूर करती है।†

संभव है कुछ नयी या पुरानी हालतोंमें, ट्यूबरक्यूलिन, अच्छा परिवर्तन ला दे परन्तु वह रोगका उन्मूलन नहीं कर सकती। इसके विपरीत उसने बहुतसे रोगियोंका कष्ट बढ़ाया है और उनका जीवन घटाया है।

पिछले दिनो डा० हेनाखने वर्लिन मैडिकल सोसाइटीके सामने बाल चिकित्सा सम्बन्धी अपने अनुभव बताए थे। उन्होंने आकड़ोंकी मान्यताका

---

* चूंकि कोई भी व्यक्ति निश्चयपूर्वक यह बात नहीं कह सकता कि उसके शरीरमें निदान सम्बन्धी यह स्थिति मौजूद है या नहीं, इसलिए बुद्धिमता यह है कि उन हालतों की अवहेलनाकी जाए जो ऐसी स्थिति ला दें।

† पास्टर अनुभवी कैमिस्ट तो था, परन्तु वह चिकित्सक नहीं था, वह निदान और चिकित्सक दोनोंसे ही अपरिचित था। वह लूई चौदहवेंके उस दर्जीके समान था जिसने लूईको घरमें मितव्ययितासे रहनेके लिए उपदेश दिया था।

चिकित्साके विवेकपूर्ण साधनोंकी खोजके लिए शरीर ज्ञान, शारीरिक और निदान सम्बन्धी रसायनतत्त्वों और शरीर रचनाका सही ज्ञान न हो। केवल रसायन शास्त्रका ज्ञान ही काफी नहीं है।

खण्डन करते हुए कहा था कि उनके वार्डमें कॉंग्सकी लिम्फमे २२ बच्चोंकी चिकित्सा हुई उनमें बहुत सावधानी रखी गयी। इनमेंसे एक भी रोगी ऐसा नही था जिसके ठीक हो जानेमें सन्देह हो। परन्तु इसके विपरीत बहुतसे रोगी बच्चोंका कष्ट बढ़ भी गया। और उनमें नये-नये उपद्रव आए।

सुधार या प्रकटता सुधारकी व्याख्या बडी आसानीसे की जा सकती है। ट्यूबरक्यूलिन अन्य औषधोंकी तरह कफका निस्सरण बढाती है और शायद कुछ कीटाणु भी अपने पोषण स्थलसे जुदा हो जाते हों। और ऐसी दशामें यह स्वाभाविक है कि आगे चलकर पुतलियोंके रूपमें कफ निकलना घट जाए। यदि यह प्रतिक्रिया कुछ समय तक जारी रहे तो फिर रोगीके साधारण स्वास्थ्यमें सुधार आ जाता है। और यदि मुनासिब देखभाल रहे तो वजन भी बढ जायेगा।

यह सुखद स्थिति तभी तक जारी रहेगा जब तक प्रतिक्रिया चलेगी और जब तक कि कीटाणु अपने लिये नयी अनुकूल जगह ढूँढ न लें।

और यह बात जल्द जाहिर होगी, क्योंकि ट्यूबरक्युलिन उन कीटाणुओंको नयी अनुकूल भूमि ढूँढ लेनेमे रोक नही सकती।

## पूयविष ; पीवकी संक्रमकता ( Septicaemia )

**काली फॉस :** पीवकी सक्रामकताके कारण सडे हुए रक्तका स्राव होना इस दवाने पॉंवका खून गन्दा हो जानेका एक केस ठीक किया था। पॉंवसे दुर्गन्ध आती थी।

## चमरोग ( Skin Diseases of )

**फेरम फॉस :** त्वचा प्रदाह जबकि ज्वर, गर्मी, दर्द तपकन या लाली हो कील, गर्मी और त्वचामें रक्ताधिक्य।

**काली म्योर : जवानीके कील**, जिनमें सफेद रंगका मवाद भरा हुआ हो, जबकि यह खराबी ग्रन्थियोंके विकारसे आयी हुई हो। ये कील सख्त रहें और उनका सम्बन्ध आमाशय या कामागोंकी दुर्बलतासे हो। आमतौरपर यह दवा पीब आने नहीं देती।

**एग्जिमा :** खोपडीकी तरदाद : छोटे बच्चोंकी खोपडी और चेहरेका परतदार फुन्सियाँ। इन रोगोंमें यह मुख्य औषध है और **फरम फॉस**के साथ

अदल-बदलकर दी जाती है, विशेषतः जबकि ये उपद्रव चेचकका गन्दा टीका लगानेसे आए हों। एग्जिमा जो जरायुके विकारसे आया हो, जीभका वरिष्ठ लक्षण मौजूद हो और चमडीसे रूसी झडती हो। चमडीसे अण्डेकी सफेदी जैसी स्राव आए और जीभ सफेद हो। छालोंवाला एग्जिमा जिसमें अण्डेकी सफेदी जैसा स्राव हो, या उसमें ऐसा मवाद भरा हो। यह दवा आमतौरपर पुराने एग्जिमामें जादूकी तरह काम करती है।

**फुन्सियाँ, कील :** छाले, पीववाले आदि जिनका सम्बन्ध आमाशयकी खराबीसे हो; जीभ सफेद हो और मासिकका विकार भी साथ हो और अण्डेकी सफेदी जैसा स्राव हो।

**लाल दाग : फेरम फॉसके** बाद दें जबकि सूजन या छाले मौजूद हों।

**दाद :** छाजन, छाले जिन्होंने पेटकी तरह आधे शरीरको घेर लिया हो और जीभ सफेद हो।

**चमड़ेकी चमड़ीका टी० बी० :** जब आमाशय और अंतड़ियोंकी खराबीके लक्षण भी हों और रोग कष्टसाध्य हो।

**मर्स्स :** जो हाथोंपर निकले हों। उनपर लगानेके काम भी आती है।

**प्रमेह विष :** इसके लिए यह मुख्य औषध है। पहले छाले और पीछे रूसी झडे और जबकि ग्रन्थियाँ भी आक्रान्त हो।

**पैरके अगूठेकी सूजन :** बवाइयाँ और चेहरेका चमड़ीका टी० बी०, मुख्य औषध है।

**काली फॉस : एग्जिमा :** जबकि स्नायविक क्षोभ, या कोमल ग्राह्यता भी साथ हो। चिकने दाने जिनसे दुर्गन्ध आएँ, त्वचासे क्षोभजनक स्राव हों जिससे पीडित अगोंमें अर्थात् जहाँ वह स्राव लगे, वहाँ सन्तापपूर्ण कष्ट आए, खुजली हो, चीटी रेंगती-सी जान पडे, सहलाना अच्छा मालूम पडे, जोरसे रगड़नेसे कष्ट आए, त्वचा लग जाए, खून-सा, पानी-सा स्राव हो। हाथोंकी पीठपर सन्तापपूर्ण कष्ट जैसे वाल नीचे गए हों। गजके दाग कारबकल।

**बवाई ;** पाँवकी उंगलियों, हाथों और कानोंकी बवाई, जिसमें सरसराहट और खुजलीके साथ दर्द हो। ऐसी बवाई जो ताजा हो और उसमें पीव न आयी हो। वात प्रकृतिवाले रोगी।

**घातक छाले,** ऐसे छाले जो सारे शरीरपर निकलें, उनमें पानी भरा हुआ हो, चमडी सुकडी हुई और झुरियोंवाली। स्नायविक लक्षण और दर्दोंमें अतिशयोक्ति हो।

**काली सल्फ :** कोई चर्मरोग दब जानेके बाद चमडीका खुश्क हो जाना, गर्म पेपसे डरे।

**एग्जिमा :** स्राव गहरे पीले रंगका। जब एग्जिमा सहसा दब गया हो और इस औषधके विशिष्ट लक्षण भी मौजूद हों।

**फुन्सियाँ :** सहसा सर्दी लग जानेपर या किसी कारणसे जब दाने दब गए हों। नाखूनोकी बीमारियाँ ; विकृत विकास ; चेपदारतल और रूसी झड़े फोड़े जिनके आंशिक भागमें गहरे-पीले रंगका, पानी-सा मवाद भरा हुआ और चमड़ी उतरे या उघड़े।

**विचर्चिका खाज ;** सुना है कि इस दवासे इस रोगके कुछ रोगी ठीक किए गए हैं। इसके व्यवहारका मार्गदर्शक, विशिष्ठ लक्षण है : खालका उघड़ना।

**रूसी :** खोपड़ीसे गहरे-पीले या सफेद रंगकी रूसी झड़े ( बाल धोनेके लिए भी काममें लायी जाती है )। बालोंका झड़ना। निचला होंठ खुश्क और पपड़ीदार।

डा० ए० पी० डेविसने लिखा है कि सरकी दर्द चाहे किसी तरहकी है ४-४ घण्टे बाद **काली सल्फ**की एक मात्रा लेनेसे निश्चित ही चली जाती है। मुझे इस दवापर पूरा-पूरा भरोसा है। मैं इसके साथ सर धोने या लगानेके लिये कोई मलहम आदि नहीं देता।

ईवी विषका प्रभाव। छाले जिनमें जलन और खुजली हो। शीत पित्त।

**मैग्नेशिया फॉस :** खुजली जो प्रमेह विषजनित उपद्रव हो, दाद जिस पर सफेद पपड़ी आए, खोपड़ीके छाले या कील। दाने जैसे मधुमक्खी या भिड़ आदिने काटा हो। ऐसे दानो घुटनो, टखनों और कुहनियोंपर अधिक निकलें।

**नेटरम म्योर : फुन्सियाँ** जिनमें साफ पानी जैसा मवाद भरा हुआ हो। छोटे-छोटे छाले जिनमें वर्णहीन पानी जैसा मवाद हो ; उनपर पतला खुरण्ड आए जो उतर जाए तो तत्काल ही नया खुरण्ड आ जाए। पेशानीपर छालेदार फुन्सियाँ निकलें। हाथों विशेषतः नाखूनोंके आसपासकी चमड़ी खुश्क और कटी-फटी।

**एग्जिमा :** जिसपर सफेद खुरण्ड आए और जिसमें पानी भरा हुआ हो और यह विकार अधिक नमक खानेसे आया हो।

**रगड़ ; खराश :** बच्चोंकी त्वचामें सन्तापपूर्ण कष्ट और मुँहमें लार आँखोंमें आँसू अधिक आएँ या पानीसे पतले पाखाने आएँ और सिरसे सफेद रूसी झड़े। जघाओंसे और अण्डकोषके दरम्यान रगड़ आए जिससे तीक्ष्ण स्राव आए और चमड़ी छिल जाए।

**छाला :** जिसमें पानी जैसा मवाद भरा हो।

**आतशकके दाने :** सादा छाले जिनमें पीव न हो।

**प्रमेह :** जबकि लार या आँसूकी अधिकता हो या पानी जैसे पतले दस्त।

**रूसी :** खोपडीसे सफेद-सी परत झडे पोषणके अभावमें बाल गिरें।

**मस्से :** हथेलियोंके मस्से ; छोटे-छोटे स्पर्शकातर मस्से।

**शीत-पित्त :** विशेषतः जबकि जोड़ोंपर हो।

**दाद :** दूसरे दर्जेकी दवा है। दाद जैसे दाने जो चाहे जिस बीमारीमें आये हों। कीडे-मकौडेके काटनेका परिणाम ( ऊपर भी लगाएँ ); शीतपित्त और बाजरे जैसे दाने।

**नेटरम फॉस :** बच्चोंकी त्वचाका लग या फट जाना और उसमें जब सन्तापपूर्ण कष्ट आया हो। वसा ग्रन्थियोंकी सूजन, चेचकका टीका लगवानेसे यदि दाने निकले। गिल्हड।

**एग्जिमा :** जब अम्लपित्तके लक्षण मार्गदर्शक हों और स्राव शहद जैसे या क्रीम जैसे रंगके हों। सुनहरी-पीले रंगके खुरण्ड। छोटे-बच्चेके कानोंके आस-पासकी तर दाद।

**चेहरेकी चमड़ीकी टी० बी०** लगाने और खिलाने दोनोंमें काम आती है।

**लाल दाग :** गुलाबी दाग या फुन्सियाँ ( फेरम फॉसके साथ अदल-बदल कर दें ); त्वचापर सन्तापपूर्ण चकत्ते जिनसे गहरे पीले रंगका या क्रीम जैसे रंगका स्राव आए। शीत-पित्त। सारे शरीरमें खुजली हो, जैसे कोई कीड़ा-मकौडा काटा गया हो।

**नेटरम सल्फ :** बच्चोंकी त्वचाका लग जाना जबकि पित्तके लक्षण प्रधान हों। गहरे पीले रंगके खुरण्ड।

**छाले :** सारे शरीरपर पानी भरे मवाद वाले या सादा छाले निकलें। विशेषतः जब रोगी क्षीणकाय हो।

**दाग :** जैसे कोडे पडनेसे आते हैं। यह दवा मस्सोंके तलसे पानी जैसे मवादको निकाल देती है और उनमें सुकडाव लाती है। ऐसे मस्से जो देर तक नमीका प्रभाव पड़ते रहनेसे बने हों।

**साईलीसिया :** खुजली वाले दाने, छोटे-छोटे छाले जिनमें वसा जैसा मवाद भरा हुआ हो और ये जल्द ही खुश्क हो जाते हों। छोटे-छोटे घाव जिन से मवाद खूब अधिक आए। नासूर, कारबकल। त्वचामें पीव आ जाना। कील जिनमें दिन-रात जलन जारी रहे। दाद, दरार, फटाव, गुलाबी रंगके दाग या चकत्ते ; विसर्प जिसमें पीव आ गयी हो। फोडे जो क्रमशः निकलते ही रहें। घातर छाले। हाथकी उंगलियोंकी बीमारियाँ। नाखूनका भुर-भुरापन आदि।

**कल्केरिया फॉस :** चमडी लगी हुई , छिली हुई ; खुजली ।

**एग्जिमा :** दाने जिनपर गहरे-पीले रगका मफेद खुरण्ड आएँ ; छाले जिनमें अण्डेकी सफेदी जैसा मवाद भरा हुआ हो । खूनकी कमी , एग्जिमा की प्रवणता जो मौसममें परिवर्तन आनेसे वढ़े ।

**भूरे रंगका दाग :** यह दवा उसे दूर करती है ।

**दाद :** नयी हो या पुरानी , अन्तरकालीन औषधके रूपमें व्यवहारकी जाती है ।

**चेहरेकी चमड़ीका टी० वी० :** जवकि कठमालाका आंशिक प्रकाश हो ।

**नयी या पुरानी खुजली :** जो वहुत कष्टकर हो ; प्रायः वूढोके लिये अधिक लाभदायक है । ( ४x विचूर्ण ) , काली फॉसके साथ वदल कर दें ।

**कील :** नौजवानोंके चेहरेके कील और मुँहासे जवकि दिमागी मेहनत करनेसे दर्द आ जाता हो ।

**पसीना आना :** जव वार-वार या अधिक पसीना आए, विशेषतः जवकि सरपर आता हो । ऐसे छाले जिनमें अण्डेकी सफेदी जैसा मवाद आया हो । चमडाका टी० वी० ।

**कल्केरिया सल्फ :** वच्चोंके सरका गज जिससे पीव जैसा या मवाद आए या पीले रगकी पीवका खुरण्ड जमे । पीव आए । छाले जिनपर उनका मवाद सूख जानेसे खुण्ड आए । गाँठें । त्वचामें पीव आना । ऐसे फोडे जिनसे पीव या पानी जैसा मवाद आए । दादके दाने । तलवोंकी खुजली ।

**ववाई पीव आए ।**

**कल्केरिया फ्लोर :** त्वचा फट या छिल जाए । वेजलीनमें मिलाकर ऊपर भी लगाएँ । हथेलियोके दरार , मलद्वारका नासूर , कीलदार त्वचा ; पीव आए और किनारे सख्त कारवंकल । हाथकी उगलियोंके नाखूनोंका खस्तपान । दाँत भी चूर-चूर होकर गिरें ।

**एग्जिमा :** जो रक्त दोषसे आए, तर मौसममें वढ़े और रातको घटे । कीलदार एग्जिमा जवकि चमडी मोटी हो और फटी हुई हो । खूनी ववासीरके कारण वना हुआ मलद्वारका एग्जिमा ।

**हाथ-पाँवकी खाज :** जो साधारण रूपसे रक्त दोषसे आयी हो और रंगत गहरी लाल हों ।

## चिकित्साकालीन अनुभव

एक वच्चेकी गालों, ठुड्डी और कानोंके पीछे एग्जिमा हुआ , त्वचा फूल गयी, प्रदाहित हो गयी और तल भाग सख्त हो गया ।

**काली म्योर :** ६x चार-चार घण्टे वाद दिया गया और उसने ठीक कर दिया। —डी० वी० व्हिट्टियर, एम० डी०।

डा० गॉलिनने "Pop Zeit fur Hom" अप्रैल १८८५ में लिखा है कि **कल्केरिया सल्फ** ६ ने प्रमेह विष दूर कर दिया। पीले रगके पीव जैसे स्रावके आधारपर यह दवा दी गयी थी।

डा० एस० लिखते हैं : श्रीमती २४ वर्ष ; को कई सालसे लाल रगके दाने निकलते थे। उसने उनपर कई प्रसिद्ध दवाएँ लगाईं परन्तु कोई लाभ न हुआ मैने उसे दवा दी और वह ठीक हो गयी। परन्तु कुछ मास वाद वे दाने पहलेसे भी वुरी तरह आए। तव उस पहली दवाने कोई काम न दिया। आखिर उसे सुवह-शाम **कल्केरिया सल्फ** दिया गया और वह दो सप्ताहमें ठीक हो गयी। —शुसलरसे उद्धृत।

यहाँ कुछ केस दिए हैं जिनसे मालूम होता है कि छालोंके लिए **कल्केरिया सल्फ** कितना लाभदायक है। Allg Hom Zeit, 1882.

जुलिया सी, आयु ३ ; उसके सारे चेहरे और हाथोंपर फुन्सियाँ निकली। उन्हें रोककर रखा जाता था ताकि वह खुजला न सके। उसे सर्वोत्तम ऐलोपैथिक चिकित्सा मिली और उससे उसे कोई लाभ न हुआ।

उसे **काली म्योर** ६ का घोल दिया गया और उससे उसे कोई लाभ न हुआ। तव **कल्केरिया सल्फ** ६ का घोल दिया गया। इससे सुधार आया और २ मासमें विलकुल ठीक हो गयी। अगली गर्मीमें दाने फिर उभरे और इसी दवासे ठीक हो गए। —सी० टी० एम०।

वर्षों पुराना चर्म रोग या वार-वार लाल रगके दाने निकलते थे। जव विकार अधिक वढता तो दाने सट जाते, ऊपरी स्तर फूली हुई और लाल नजर आती, खारा तरल अधिक मात्रामें निकलता और इसके वाद प्रदाह घट जाता, तव वाहरी त्वचा साफ निकल आती। दानोंमें खुजली होती और उसमें तेज डक लगने जैसा दर्द होता। पहले त्वचाका क्षोभ ठण्डकसे घटता था और इस वार गर्मीसे घटने लगा। उसने चेहरा छोडकर सारे शरीरपर **ऐसेटिक ऐसिड** लगाया था। इससे सिर्फ खारिश और लाली कम हुआ वर्फ गिरनेके दिनोंमें और वसन्तमें दौरे अधिक तेजीसे आते। दाने अधिकतर चेहरे, वाजुओं और छातीपर निकलते थे। कब्ज भी था।

**काली सल्फ :** कुछ दिन खानेसे वहुतसे फोडे निकले। फिर त्वचा साफ हो गयीं। कब्ज भी चली गयी।

दायी टाग और कुहनीपर खाज थी, सफेद-सी परत उतरती थी, खुजलानेसे जलन और खुजली होती थी। **आर्सेनिकम** और **आर्सेन आयोडे**

दिए गए और उन्होंने कुछ काम न किया। तब **काली सल्फ** ३x दिनमें ३ वार दिया गया। चार मासमें रोगी एकदम ठीक हो गया। निर्देशक लक्षण था; खालका उतरना। —ओस्कर हेनसन, कोपेनहेगन, १८९८।

एक और व्यक्तिको २५ वर्षसे चर्मरोग था। उसे दाने निकलते थे जिनसे परत उतरती ; ये दाने अधिक तर वाजुओंपर थे और उन्हें गर्म पानीसे आराम मिलता था। वे विलकुल मिट जाते और सालभर वाद फिर उभर आये।

उसे पहले **कल्केरिया सल्फ** ३० और वादमें २०० दिया गया।

—सी० हैरिंग।

**काली म्योर** १२ पुराने सुजाकमें दिया गया। स्रावकी रंगत दुधियाकी स्रावपर तो उसका कोई असर दिखायी न दिया, हाँ, सरसे रूसी खूब झड़ने लगी और खारिश होने लगी। डब्ल्यू० पी० वेस्सलहेफ्ट, एम० डी०।

कुमारी....२०, गौर वर्ण, लाल दागोंके वारेमें मेरे पास परामर्श लेने आयी उसके गाल फूले हुए और अंगारेकी तरह लाल थे। उनमें जलन होती थी जैसे दहकता अंगारा वहाँ रखा है। खुजली या खुरदरापन नहीं था।

**फैरम फॉस** १० लाख (स्वान) दिया गया। ३० मिनटके भीतर जलन और लाली चली गयी और ये दोनों शिकायतें फिर लौटकर न आयी।

—वोर्डमैन, 'लन्दन होमियोपैथिक वर्ल्ड', १८८३

वह गत ८ माससे **रस टक्स** विषसे पीडित था। पहले वहुत तरहके मलहम लगाये गए और हर वार छोटे-छोटे, दाद जैसे सख्त दाने निकल आते। उनपर पतला खुरण्ड आया, उनमें खुजली चलती और फिर जगह कुछ गीली हो जाती। ये छाले वगलमें, गर्दनके आस-पास और दोनों हाथोंकी पीठपर निकलते। उसे आमाशयमें भारी दुर्बलताका वोध होता था जैसे वस अभी मूर्च्छा आ जायगी। वुद्धि जड थी और डरती थी कि मेरा तर्क माना न जायगा। वडे स्पष्ट स्वप्न आते थे।

**सल्फर रसटॉ** और **सीपिया** दिए गए, परन्तु उनसे कोई लाभ न हुआ। तव **काली सल्फ** १२ सुवह शाम दिया गया। इससे सुधार आया और वह ४ मासमें ठीक हो गया। —डब्ल्यू० पी० वास्सहेफ्ट, एम० डी०।

उस रोगीको निम्नलिखित लक्षण थे : सरके बाएँ भागपर पैसे वरावर गंजके दाग थे। कंघा करते समय वाल अधिक टूटते। दाढीके वाल भी गिरते थे। यह कष्ट उसे १ साल से था जवकि उसे सुजाक हुआ था। शायद उसने पोटाश अधिक खाया था। **लाईको** और **नेटरम म्योर** दिए गए और उनसे कोई लाभ न हुआ। तव काली सल्फ १२ की एक मात्रा हर तीसरे दिन ३

सप्ताह तक दिया गया। बाल झड़ने बन्द हो गए और गज भी मिट गया। वह बाल उग आए। —डब्ल्यू० पी० वास्सलहेफ्ट, एम० डी०।

स्त्री—आयु……१५ ; पेशानी, चेहरे और दोनों हाथोंपर छाले निकले। उनकी रंगत लाल थी। **उनमें केवल दिनके समय खुजली और जलन होती** थी। पेशानीके छालोंमें टोपी उतारने पर कष्ट अधिक होता था।

साईलीसिया २०० ने सारा उपद्रव शांत कर दिया।

—आर० ए० कूपर।

## नींदके विकार : ( Sleep ; Disturbances of )

**मैग्नेशिया फॉस :** दिमागमें थकान आने या उसका उचित परिपोषण होनेके कारण जब नींद न आती हो। —जे० सी० मार्गन।

स्नायविकता और भावप्रवणताके कारण आयी अनिद्रा।

**फैरम फॉस :** रक्ताधिक्यके कारण आयी अनिद्रा। बहुत प्रभावशाली निद्राकर है, परन्तु जिन्हें नींद अच्छी आती है, उन्हें यह जगाए रखती है। रातको व्याकुलता भरे स्वप्न आएँ दोपहर बाद तन्द्रा आए।

**काली म्योर :** जरा-सा आवाज होते ही चौंक पड़े। अनिद्रा। अशांत नींद।

**काली फॉस :** चिन्ता, जोश, कारबारी झमेलों और आमतौरपर स्नायविक कारणोंसे नींदका न आना। अधिक परिश्रमके कारण नींद न आना। प्रायः अनिद्राके साथ क्षोभ, भारी निराशा और पेशाबका बार-बार आना भी पाया जाता है। यह औषध दिमागके धूसर वर्णीय पदार्थमें बल लाने और उसकी स्वाभाविक शक्ति बहाल करनेके लिए असली दवा है, यह रक्त नाड़ियोंमें सुकड़ाव लाती है और दिमागकी ओर जानेवाले रक्तको कम करती है। इस तरह स्वाभाविक नींद लाती है। कभी-कभी इस दवाकी भी जरूरत पड़ती है। जो बच्चे सोते-सोते उठकर चल देते हैं, उसे कुछ दिन निरंतर खिलानी चाहिए। जम्हाइयाँ अगडाइयाँ और थकान आए। आग, डाकुओं, ऊपरसे गिड़ने या भूतोंके स्वप्न निरन्तर आएँ। बच्चा रातको सोते-सोते डरे, गहरी नींदसे जाग उठे और डरकर चीख मारे। कामवासनाके स्वप्न ; नींद आते ही पेशियोंमें झटके आएँ।

**नेटरम फॉस :** तन्द्राकी अनुभूति, फिर भी सो न सके।

**काली सल्फ :** बहुत स्पष्ट सजीव स्वप्न आएँ।

**नेटरम म्योर :** दिमागमें तरीके कारण नींद अधिक आए। अनिद्रा ;

६-७ घण्टे सोकर भी ताजगी न मिले। अधिक और निरन्तर सोते रहना चाहे। तन्द्रा ; सोते-सोते मुँहसे लार वह निकले। अनिद्रा जिसके साथ भारी स्नायविक क्षोभ हो और टाँगें ठण्डी हो। अशात नींद, देरसे नींद आए ; सोते-सोते वार वार चौंके।

**नेटरम सल्फ :** ऐसी अनिद्रा जो आमतौरपर पाण्डुकापूर्ण रूप होती हैं और जवकि जीभ मैली या भूरे-से रंगकी हो और पित्तके अन्य लक्षण भी हों। दमेके कारण नीद न आए।

**कल्केरिया फ्लोर :** स्पष्ट, सजीव स्वप्न, ऐसे स्वप्न जो सुखन हों। भावी खतरे, मौत या नए दृश्यों या नए स्थानोंके स्वप्न आए।

**कल्केरिया फॉस :** वृद्धोंकी तन्द्रा, जवकि विचारोंपर निराशा छायी हुई हो, सुवह विस्तर छोडना मुश्किल हो जाए, हर समय जम्हाइयाँ और अगडाइयाँ आती रहें। वच्चा रातको चीख मारे।

## चिकित्साकालीन अनुभव

**काली फॉस अनिद्रामे :** श्री—५१, ५ सप्ताहसे वीमार थे। डाक्टरों ने उनकी वीमारीका नाम रखा था टायफायड। दो सप्ताहमे क्षीण होते आ रहे थे। वह अव निःशक्त हो चुके थे। शरीरपर माँस नही रहा था और नीद भी नही आती थी। वह अनेक ऐलोपैथिक दवाएँ खा चुके थे। जव मैंने उन्हें देखा तो उस समय वह वहुत सशक और घवराये हुए थे। वीमारीके दिनोंमें उन्हें सरदर्द वहुत आता रहा और वह निरुत्साहित हो गए थे। जीभपर गहरे भूरे रंगकी मैल थी और साँस अत्यधिक वदवूदार था। उन्हें यह भी शिकायत थी कि उनके आमाशयमें भारी दुर्वलता थी। पाखाना दुर्गन्धित था और अफारा भी था।

ज्वर अधिक नही था। सुवहसे शामतक उसमें दो अशका अन्तर पडता था।

मैंने उन्हें घवराहट और अनिद्राके लिए **काली फॉस** दिया और ज्वरके लिए **फैरम फॉस** दिया। पहली खुराक खाते ही उन्हें नींद आ गयीं। मैंने यह भी परीक्षण किया कि जिस दिन उन्हें **काली फॉस** न दिया गया, उस दिन वह सो न सके। उनकी यही दवा थी। —ओ० ए० पामर, एम० डी०।

श्रीमती—को गर्दनके पिछले हिस्से और कमरमें सख्त दर्द जिसके कारण वहुत घवरायी हुई थीं। वह किसीसे वोलती नही थी वह शातिसे वैठ या सो भी नही सकती थी।

**काली फॉस**की एक मात्राने कुछ मिनटमें उसका कष्ट कम कर दिया उसे नींद ऐसे आयी जैसे मार्फिया लिया हो और सारा दिन तथा सारी रात सोयी

रही। डा० जे० सी० नौटिंगएमका ख्याल था कि रोगिणीका विकार अधिक मैथुनसे आया था। —मैडिकल एडव्रास।

एक व्यक्तिको अनिद्रा, खिन्नता, अवसादकी भारी शिकायत थी। वह कभी-कभी आत्महत्याकी बात भी सोचता था। उसने मुझे लिखा .

मुझे समझ नही आता कि आपने मुझे जो दवा दी थी उसके लिए आपका धन्यवाद कैसे करूँ। उससे मुझे बहुत लाभ हुआ।

मैंने **काली फॉस** और कभी-कभी **काली म्योर,** बहुत नियमपूर्वक खाया और आगे भी इनका व्यवहार जारी रखूँ, क्योंकि मुझे इनसे लाभ हुआ है।

—शुसलरसे उद्धृत।

श्रीमती अ—६० ; गत ३ माससे भारी अनिद्रा, स्नायविक क्षोभ और हाथ पाँवकी ठण्डकसे पीडित था। वह इन्हें किसी तरह भी काफी गर्म न रख सकती थी। ठण्डक भीतर थी, बाहरसे नहीं।

**नेटरम म्योर** ६ से उसकी अनिद्रा मिट गयी, उसकी क्षुब्ध वातनाडियोंका शमन हुआ और अन्य कष्ट मिट गया। —जे० सी० बर्नेट, एम० डी०

मैंने अनिद्राके बहुत ऐसे रोगियोंका **मैग फॉस** ३x दिया जबकि मुझे यह सन्देह था कि रोग का कारण स्नायविक था। आमतौरपर मैं इस दवा की काफी बडी मात्रा पानीमें घोल देता हूँ और चार या पाँच मिनट बाद एक छोटा चम्मच पिलाता रहता हूँ। ऐसी ५-६ मात्रा देनेके बाद उपद्रव शान्त हो जाता है। ई० ए० डे० केलहल, एम० डी०।

## छोटी चेचक ( Smallpox )

**काली म्योर :** इस रोगके लिए यह मुख्य औषध है। यह छालोंका नियन्त्रण करती है। लन्दन निवासी डा० सॉडर्सका मत है कि यह दवा प्रतिषेधक है। जब रोग आनेसे पहले, या रोग आ जानेपर जब भी ३x शक्तिमें तो कभी चेचकका टीका लगवानेकी जरूरत नही पडी। जब चेचक महामारीके रूपमें फैली तो मेरे वे सभी रोगी सुरक्षित रहे जिन्होंने **काली म्योर** की मात्रा खायी।

**फेरम फॉस :** जब ज्वर अधिक तेज हों तो **काली म्योर**के साथ अदल बदल कर दें।

**काली फॉस :** सडावकी हालतें ; दुर्गन्ध आए , थकान और तन्द्राका जोर हो। अशक्तिके ऐसे लक्षण जिनसे खूनके सडावका अनुमान हो।

**कल्केरिया सल्फ :** मवादवाले छाले।

**नेटरम म्योर** : लार अधिक आए ; सटे दाने, ऊंघ ।

**काली सल्फ** : यह औषध स्वस्थ त्वचा लाती है और खुरण्ड उतारती है ।

**नेटरम फॉस** : जब दानों या छालोंमें पीव आ जाय ।

## गलक्षत ( Sore Throat )

**फैरम फॉस** : गला सूखा, लाल, प्रदाहित, अत्यधिक दर्द (मात्रा बार-बार दें)। यह सञ्चित हुए रक्त, ज्वर, गर्मी दर्द और गलक्षतके घावोंकी तपकनको कम करती है। दर्दके साथ गलेकी जलन ; गानेवालों या उन व्यक्तियोंका जो नित्य अपनी आवाजका अधिक व्यवहार करते हैं। सध्याकलीन स्वरभग की प्रवणता ।

**काली म्योर** : जब ग्रन्थियों या टासिलोंपर सूजन आ चली हो, तब यह दवा **फैरम फॉस**के साथ अदल-बदल कर दें। गलेके घाव जिनकी रंगत सफेद-सी हो और जीभ भी सफेद रगकी हो जो कि इस दवाका मार्गदर्शक लक्षण है। आतशकजनित गलक्षत । निगलनेपर दर्द हो । खाँसनेपर पनीर जैसे, दुर्गन्धित कफके गोले आएँ ।

वीएनाके प्रा० वर्थीमने सिफारिशकी है कि मुँह आ जानेपर या गले में घाव हो जानेपर इस दवासे गरारे कराये और यही खानेको दें। **दानों वाला गलकोष प्रदाह** , ग्रन्थियोंका उभार , सफेद और कड़ी बलगम आए । हलकमें भी ऐसा ही कफ गिरे। गलकोषके आस-पासकी जगहका प्रदाह जबकि सख्त, लसदार लार आए, खाँसी आए और असख्त, लसदार कफ को बडी मुश्किलसे थूक सकनेके बाद क्षणिक आराम मिले। गलेमें खुश्की निगले तो दर्द हो ।

डा० एच० सी० फ्रैंच, एम० डी० लिखते हैं : हमने इस दवाको **काली-बाईक्रोम**से बढकर लाभदायक पाया है ।

**काली फॉस** : सडाव (ग्रेंग्रीन) वाला गलक्षत । गला बहुत खुश्क , हर समय निगलते ही रहना चाहे । गलेमें नमकीन लार आए ।

**नेटरम म्योर** : गलेका बढ़ जाना । गिल्हड जब मुँहमें लार या आँसू या पानीसे पतले पाखाने अधिक आते हों । गलेकी श्लैष्मिक झिल्लियोंका प्रदाह वहाँ पारदर्शक कफ आए । कौवा लटक जाए । पुराना गलक्षत जिसमें यह बोध हो कि गलेमें कोई गोला अटका हुआ है । और गलेमें भारी खुश्की । गलेमें सुकड़ाव आए और काँटा गड़ने जैसा दर्द हो । गलकोषके आसपास

की जगहका प्रदाह विशेषतः धूम्रपान करनेवालोंका और जबकि पहले सिलवर नाईट्रेटका व्यवहार हो चुका हो।

**नेटरम फॉस :** टॉसिलोंपर क्रीम जैसे पीले रंगका मवाद आए; कच्चेपनकी अनुभूति; सवेरे जीभपर तर मैल आएं; जीभ पीली नजर आए। गलेसे गाँठदार थूक आए; पानी जैसी पतली चीजें निगलनेपर दर्द हो।

**कल्केरिया फॉस :** बोलनेवालोंका गलक्षत। अन्तरकालीन औषधके रूपमें।

**कल्केरिया सल्फ :** वह गलक्षत जिसमें पीब आ गयी हो। (देखिये टॉसिल प्रदाह)। गलेमें घाव पड़ जाएँ, पीला मवाद आए; अन्तिम दर्जा।

**मैग्नेशिया फॉस :** पुराना गलकोष प्रदाह जिसमें जल्दी खानेका यत्न करनेसे गला घुटने लगे।

**नेटरम सल्फ :** गलक्षत जिसमें निगलते समय ऐसा जान पड़े जैसे गलेमें गोला रखा है। घाववाला गलक्षत; डिफ्थेरिया जिसमें कफकी कै हो। मासिकके दिनोंमें तालुमें जलन हो।

**कल्केरिया फ्लोर :** कौवा लटका हुआ; कंठनालीमें गुदगुदाहट हो और उसके कारण खाँसी आए। सवेरे गलेमें कफ आए और खाँसकर थूकना पड़े। गलेकी जलन गर्मीसे घटे। गलेके आस-पास घाव बनें और टॉसिलोंपर निरन्तर ही कफके छोटे-छोटे गोले आते रहें।

## चिकित्साकालीन अनुभव

श्री—फिल्म ऐक्टर; गलेमें क्षोभ था और उसके कारण बोलनेमें बाधा पड़ती थी। साँस भी अत्यधिक दुर्गन्धित था। उसकी परेशानीका बड़ा कारण यही था: क्योंकि ३ दिन बाद उसे कोई अभिनय करना था और उसमें अन्य सहयोगियोंका सामीप्य अनिवार्य था। जाँच करनेके बाद मैं इस परिणामपर पहुँचा कि यह **काली फॉस**का अभाव है।

दूसरे दिन शामको उसने बताया कि वह अब बिलकुल ठीक है। अब साँसमें दुर्गन्धका निशान भी न रहा था। उसने यह भी बताया कि उसे दूसरी मात्रा लेनेके बादसे ही सुधार आनेका बोध हो गया था।

# आक्षेप , ऐंठन ; कमेड़ा

## ( Spasms, Convulsions, etc. )

**फैरम फॉस :** ऐंठन जो बुखारके साथ आए विशेषतः दाँत निकलनेके दिनों बच्चोंमें।

**काली फॉस :** डरके कारण बच्चेको ऐंठन आए जबकि चेहरा पीला या सीसे जैसा हो जाए। हिस्टीरियाका दौरा जिसमें बेहोशी और प्रलाप आए।

**मैग्नेशिया फॉस :** टाँगो, गले या कठनाली आदि शरीरके किसी अंगका आक्षेप। लिखनेवालेके हाथकी ऐंठन। पेशियोंमें खिंचाव, फड़कन या ऐंठन आए। ऐंठन जिसमें मुँहके कोने सख्त हो जाएँ। कुछ निगलनेकी चेष्टा करते ही ऐंठन आ जाए। आक्षेपके साथ तुतलाहट। धनुपवातकी अकड़न, सख्त खिंचाव और पेशियोंकी अकड़न जो थोड़ी या अधिक देरके बाद आए। दान्दन ; दाँत बन्द हो जाना ( यह दवा ऐसी हालतमें मसूढ़ोंपर रगड़ दें )। जब धनुपवातमें बेला कुछ न कर सका हो, तो यह दवा दें।

—जे० सी० मार्गन।

**कल्केरिया फॉस :** दाँत निकलनेके दिनोकी ऐंठन जिसमें ज्वर न हो—और जब **मैग फॉस** कोई काम न कर सका हो। बाल्यकाल, यौवन या वार्द्धक्यकी ऐंठन, जबकि चूना-लवणोका अभाव हो। खूनकी कमीवाले, कैंसर और कठमालाके रोगी। हर तरहकी ऐंठनके लिये उपयोगी है जबकि **मैग फॉस** विफल सिद्ध हुआ हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

ऐंठन थी, उंगलियोंमें मुकड़ाव आता था, आँखें खुली थी और बीच-बीचमें खाँसी आती थी। **मैग फॉस** ६x से वह ठीक हो गया।

—राऊका **रिकार्ड होमियोपैथिक लिटरेचर।**

श्रीमती—१८, अपनी माँ के साथ एक जल चिकित्सालयमें जाती थी। वहाँ स्नान लेती रही और स्नान लेना मासिकके दिनोंमें भी जारी रहा। इसके तत्काल बाद उसे सख्त ऐंठन आयी और यह ऐंठन नित्य आने लगी। एकके बाद एक, ऐलोपैथिक चिकित्सकोंने उसे मार्फियाके इन्जेक्शन दिए और उनसे कुछ न बना, बरन् हालत और बिगड़ी। आखिर चिकित्सकोंने निराश होकर कह दिया कि वसन्त ऋतुमें इसे फिर स्नान कराये जाएँ। माँ-बापको यह जँचा कि वसन्त आने तक लड़की बचेगी नही तब तार देकर मुझे बुलाया गया।

६ सितम्बरको मैंने पहली बार उसे जाकर देखा। मैंने उसे पहले भी देखा था। तब बहुत स्वस्थ थी। आज वह मुरझायी हुई और पीली थी। मैं उसे पहचान न सका। मेरे सामने उसे दौरा पड़ा। उसका चेहरा बिगड़ गया। आँखें ऊपर चढ़ गयी; मुँहमें झाग आ गयी। इसके बाद वह बड़ी बुरी तरह हाथ-पाँव पटकने लगी। ऐसा केस मैंने पहले कभी देखा नहीं था। सहसा घरमें खिचाव आया, सर तकियेमें गड़ गया। छाती और पेट उभर गये जैसे धनुष हो। ये अंग कम-से-कम आधा गज ऊपर उठ गये। यह हालत कई सेकेण्ड तक रही। सहसा फिर झटका आया। वह फिर और ऊपर उठी और फिर कई सेकेण्ड तक तड़पती रही और रीढ खिंची रही।

यह दौरा कई मिनट तक जारी रहा। और वह इस बीचमें बेहोश रही। चुटकी काटने और थप्पड़ मारनेसे कोई नतीजा न निकला। चेहरेपर ठण्डे पानीके छींटे भी दिए गए। जले हुए पख भी सुघाये गये। परन्तु कोई असर न हुआ। पुतलियोंपर प्रकाशकी कोई प्रतिक्रिया न हुई।

इग्नेशिया कुछ न कर पाया। **क्युपरम मैटासे** कुछ लाभ हुआ, परन्तु केवल क्षणिक। **वैल, इपिकाक और पुल्सा** भी दिये गये और उनसे कुछ न बना। दौरेमें न कमी आई न बेशी हुआ। उसके घरवालोंके आग्रहपर मार्फिया के इन्जेक्शन भी दिये गये।

४ अक्टूबरको दौरा इतने जोरसे पड़ा कि खाट टूट गयी। तब मैंने शुसलर लिखित चिकित्सा पढी और **मैग फॉस** दिया। यह दवा देनेके बाद १० अक्टूबरको मासिक हो गया। परन्तु और कोई परिवर्तन न आया। दौरे पड़ते रहे। तब शुसलरकी यह हिदायत याद आयी कि **मैग फॉस**के साथ **कल्केरिया फॉस** भी देना चाहिये। १६ अक्टूबरको २-२ घण्टेके अन्तरसे दोनो दवाएँ दी गयी। दौरोंमें तत्काल कमी पड़ गयी। छठे दिन थोड़ी देरके लिए मामूली-सा दौरा पड़ा। तबसे ६ नवम्बर तक चैन रही। उस दिन मासिक हुआ और हल्का-सा दौरा आया।

दिसम्बरके आरम्भसे उसके सारे कष्ट दूर हो गये और वह पहलेकी तरह प्रफुल्लित हो गयी।

—डा० शुसलरसे उद्धृत।

डा० फ्रैक्टमैन लिखते हैं : एक बहुत दिलचस्प केस मेरे पास आया जिस पर चिकित्सकोंको ध्यान देना चाहिए। एक अर्द्धवयस्काको पाँच सप्ताहसे ऐंठनके दौरे पड़ रहे थे। पिछले २४ घण्टेमें उसे ३० दौरे आ चुके थे। जब दौरा पड़ता तो सारा शरीर झनझना उठता था जैसे बिजलीका झटका

आया है। तब वह जमीनपर गिर पडती। दौरा कुछ ही मिनट तक जारी रहता। उसके बाद वह सम्भल जाती ; परन्तु निढाल हो जाती।

मैंने उसे देखकर शुसलरके लक्षण आजमानेकी सोची। मैंने उसे **कल्केरिया फॉस** दिया। अगले दिन जब मैं उसे देखने गया तो वह अपने कमरेमें टहल रही थी। उसने हँसते हुए कहा : डाक्टर साहब। मेरा आक्षेप ठीक हो गया। इसके बाद उसे कोई दौरा न हुआ। —शुसलरसे उद्धृत।

ओसलो ( हंगरी ) से डा०—ने रिपोर्ट दी है : मुझे देहातमें एक रोगी देखनेके लिए बुलाया गया। उसे ३ दिनसे ऐंठन आ रही थी। मार्फियाके टीके, क्लोरोफार्म रगड़ना और राईके पलस्तर आदि सब आजमाये जा चुके थे और वे कुछ काम न दे सके थे।

मैंने उसे **मैग्नेशिया फॉस** दिया। दूसरी खुराक पिलानेके बाद सुबकियाँ भरना बन्द हो गया और यह परिणाम देखकर सभी हैरान रह गये।

—शुसलरसे उद्धृत।

इस पुस्तकका पहला संस्करण छपनेसे पहले इस आशयकी बहुत सूचनाएँ मिलीं कि लिखनेवालोंके हाथकी ऐंठन **मैग फॉस**से ठीक हो गयी।

## वीर्य-स्राव ; स्वप्नदोष ( Spermatorrhœa )

**नेटरम फॉस :** हर रात स्वप्नदोष हो ; कामवासना लगभग खत्म ; वीर्य पतला, पानी जैसा पतला , उससे दुर्गन्ध आए। जिनलोगोंने यह दवा खा कर परीक्षण किये, उन्हें हर रात स्वप्नदोष होता रहा। आरम्भमें काम सम्बन्धी स्वप्नोंके साथ काम वासनाका जोर मालूम हुआ ; परन्तु बादमें हर रात १ या २ बार स्वप्नदोष हुआ। और उसका पता भी न लगा। इसके बाद कमरमें कमजोरी आयी और घुटने काँपने लगे जैसे अब चला न जायगा।

—फैरिंगटन

**काली फॉस** अधिक कामोत्तेजनाके बाद घबराहट बढ़े , चाहे उस वासनाको पूरा किया गया हो, या दमन किया गया हो। ऐसे स्नायविक लक्षणोंके साथ नामर्दी और स्वप्नदोष ( नोर्टिघम )। कामोन्माद। वेदनापूर्ण स्वप्नदोष। मैथुनके बाद शारीरिक दुर्बलता और निगाहकी कमजोरी आए।

**नेटरम म्योर :** प्रोस्टेट ग्रंथिका रस गिरे। स्वप्नदोष, उसके बाद सर्दी लगे और थकान आये और कामवासना बढ़ जाए। नामर्दी।

**साईलीसिया :** कामवासनाका जोश, और उसके साथ लकवा। हर समय कामवासना छायी रहे। और रातको आमतौरपर स्वप्नदोष हो।

**कल्केरिया फ्लोर :** हर समय वीज और प्रोस्टेट रस टकपता रहे इसके साथ अण्डोंका सुकड़ना।

## मेरुदण्डके रोग ( Spine, Diseases of )

**काली म्योर :** रीढका टी० बी०, अपकर्ष, क्षय।

**काली फॉस :** मेरुदण्डका नर्म पड़ जाना और स्नायुजालका मुर्दा हो जाना। डा० आरण्डने लिखा है : डिफ्थेरिया या निम्नांगोंके पक्षाघात जैसे क्षयकर रोगोंके वाद मेरुदण्डमें खूनकी कमी हो जाना, और लंगड़ा वना देनेवाले दर्द जो आराम से वढ़ें। जव चलना आरम्भ कर दे तो दर्द और भी अधिक हो जाता है।

**नेटरम फॉस :** रीढमें खूनकी कमी। डा० आरण्डने लिखा है : निम्नागों की कमजोरी जैसे लकवा मार गया हो, इसके साथ आमथकान, भारीपन और सुस्तीकी अनुभूति ; टाँगें काम न दें। थोड़ा ही चलने या चन्द सीढियाँ चढने के वाद ही ; फिर आगे न चल सके।

**कल्केरिया फॉस :** मेरुदण्डका अनीमिया, मेरुदण्डका झुक जाना ; रीढकी दुर्वलता, डा० आरण्ड लिखते हैं. गर्दनमें ऐंठनके साथ दर्द, कंधोंके दरम्यान निरन्तर वेदना। कमर दर्द। कमरके घाव, रीढका टी० वी० ; वालशोप ; ब्रह्मरध्र खुला ; ढीले-ढाले, मुरझाये हुये वालक, घाव वननेकी प्रवणता, चिड़चिडे और तुनुक मिजाज वच्चे। शारीरिक परिश्रमसे और खुली हवामें कष्ट वढे। प्रदाह जो रीढकी हड्डियोंके किसी रोगके परिणाम स्वरूप आया हो।

**कल्केरिया फ्लोर :** रीढके घाव, रीढका अनीमिया।

**साईलीसिया :** जव रीढकी हड्डियाँ आक्रान्त हुई हों ; मेरुदण्ड प्रदाह ; त्रिकशूल, कशेरुका प्रदाह। रीढके पिछले भागकी सख्ती।

## चिकित्साकालीन अनुभव

डा० थास० टी० मैकनीस, एम० डी० (ऐलेघनी, पा०) १५ अक्टूवर १८९७ के **'अमेरिकन होमियोपैथिस्ट'** में लिखा था. २ साल पहले एक ६० वर्षीय किसानने जिसका शरीर छरहरा और वात प्रकृति थी, मन्दाग्निकी शिकायतके वारेमें मुझसे परामर्श किया। उसे यह तकलीफ ३ सालसे थी। मैंने उसे सीपिया ३० दिया और वह ठीक हो गया।

वादमें उसने वताया कि उसे एक और वहुत पुरानी शिकायत भी हैं जिसे वह असाध्य समझता था। परन्तु अव मन्दाग्नि दूर हो जानेसे उत्साहित होकर मै आपसे उसकी चर्चा भी करना चाहता हूँ। १८ वर्ष पहले कूआँ खोदते समय कमरपर जोर पड़ा। वह ठीक हो गया और मैंने समझा कि संकट टल गया। एक दिन सहसा कमरके निचले और ऊपरी हिस्सेमें ऐंठन आयी जो वहुत ही वेदनापूर्ण थी और वादमें इस तरहके कई दौरे पडे। कुछ सप्ताह वाद फिर उसी तरहका दौरा आया। दौरोके आनेका समय घटता रहा और यह नौवत आयी कि हर रोज एक या दो दौरा पडने लगा। आम सेहतपर उन दौरोंका कोई विशेष प्रभाव न पडा।

मैंने वहुतसे ऐलोपैथिक चिकित्सकोंसे इलाज कराया। परन्तु सामान्य लाभ न हुआ। तव सप्ताहमें १-२ वार विजली लगवायी गयी। यह क्रम चार साल तक जारी रहा। इस अन्तरमें दौरोंका वार वार आना घट गया—परन्तु उनकी तेजीमें कोई अन्तर न आया। अव दौर सप्ताहमें और कभी-कभी २ सप्ताहमें आने लगा। मैं यह कहना भूल गया कि वह दौरेके समय दायी ओर झुक जाता था। कमरका पहला मोहरा कुछ कोमल था।

मैंने उसे **मैग फॉस** ७X दिनमें चार वार दिया और एक मास तक जारी रहा। इससे उसे आश्चर्यजनक लाभ हुआ। अव १८ माससे उसे कोई दौरा नहीं पडा।

## मेरुदण्डका क्षोभ ( Spinal Irritation )

**नेटरम म्योर :** आसानीसे थकान आए, जरा-सा परिश्रम करते ही कमजोरी आ जाती है। अगोंमें व्याकुलता और कमरमें दर्द आता है तथा मेरुदण्ड कोमलग्राही हो जाता है। अनिद्रा, कमजोरी और व्याकुलता आती है। चलनेपर सरदर्द आता है। मुँहका स्वाद खारा होता है और भोजनसे अरुचि आती है। कुछ पढनेके वाद निगाह धुँधली पड जाती है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी चीजका केवल आधा भाग ही दिखायी देता है।

**नेट्रम म्योर**का सवसे पहला काम यह है कि यह स्नायुजालको वल देता है। पेशियोमें खिचाव ऐसे आता है जैसे चुम्वकसे आता है। यह रक्तके लालकणोमें भी वृद्धि करती है। ग्रन्थियोका स्राव और पाचन क्रिया को वढाती है। इसी उत्तेजक गुणके कारण यह खार इतना गुणकारी है। जवकि इसे दुर्वल पेशियोंपर लगाया जाता है। परन्तु वादमें यह स्नायुजालमें अवसाद लाता है। ग्रन्थियोंको शिथिल वनाता है। तव यह क्षीणता

और रक्तकी कमीके साथ-साथ शोष लाता है। त्वचा खुश्क, मैली और कड़ी पड़ जाती है। श्लैष्मिक झिल्लियोंमें भी सख्ती आती है। वे फट जाती है, चिकनी हो जाती हैं। उनमें सहसा डक लगने जैसा दर्द और कच्चापन आता है। या मात्रामें अल्प परन्तु त्वचाको छीलनेवाला स्राव आता है। रोगी मुँहमें भारी खुश्की आनेकी शिकायत करता है। परन्तु असल कष्टकर शिकायत यह होती है कि मुँहमें बहुत ही सख्त लार आती है। वह लार आम तौरपर तरल नहीं होती। इस लवणकी कमीके कारण हम रीढ़के स्नायुजाल में दुर्बलता आता देखते हैं। कमरके निम्न भागोंमें ऐसा कष्ट आता है जैसे उसे लकवा मार गया हो, विशेषकर सवेरे, खड़ा होनेपर। ऐसा जान पड़े जैसे कमर टूट गयी है। टांगें कमजोर, काँपें, सवेरे कष्ट बढ़े। पैर भारी जैसे उनमें सीसा भरा हुआ है। जब यह सारा उपद्रव आता है, तो इसके साथ ही मसाना भी कमजोर पड़ जाता है। स्वाभाविक रूपसे पाखाना हो जानेके बाद भी पेशाब बड़े कष्टके साथ और बूँद-बूँद टपकता रहता है। और हम यह मान सकते हैं कि मूत्राशयका यह लक्षण रीढकी दुर्बलताके साथ उपद्रव स्वरूप आया है। फिर चाहे परीक्षक इस तरहका संयोग न भी बता सके हों। कारण यह है कि यह संयोग इस औषधके लक्षणोंके अनुरूप ही है। हम यह मान सकते हैं कि मेरुदण्ड और मूत्राशय दोनोंकी दुर्बलता इस औषध के इस गुणके कारण आती है कि यह आमतौरपर दुर्बलता पैदा करती है। अतएव यह लकवेका लक्षण नहीं है, साधारण स्नायुदौर्बल्य है।

**साईलीसिया :** रीढका क्षोभ और पाँवपर दुर्गन्धित पसीना अदल-बदल कर आए। चनूनों ( कृमि ) के कारण बच्चोंकी रीढका क्षोभ (**नेटरम फॉस**), यह कष्ट शुक्लपक्षमें विशेष रूपसे बढ़े। रीढका क्षोभ और उसके साथ गर्दनके पिछले भागमें अकड़न आए और सरदर्द हो। कमर कमजोर और पैरोंमें भारी दुर्बलता जैसे उन्हें लकवा मार गया हो। कमरमें जलन और कमरके माध्यममें निरन्तर जलन हो। त्रिक भागमें दर्द हो। रोगी जरा-सा आवाज भी सहन न कर सके। हाथकी उंगलियोंके नाखून खुरदरे और पीले रंगके। पाँव बिस्तरमें भी बर्फकी तरह ठण्डे रहें। त्वचा गन्दी, अस्वस्थ, जरा-सी चोट भी लग जाए तो उसमें पीब आ जाए। आमतौरपर गर्मीसे कष्ट घट जाता है।

**काली फॉस :** स्नायविक दुर्बलता, विशेषतः जबकि यह विकार अधिक रमणसे आया हो और उसके परिणाम स्वरूप रीढमें क्षोभ अधिक हो।

**कल्केरिया फ्लोर :** कमर दर्द जो रीढके क्षोभसे आया हो, इसके साथ नीचेके रुख दबावके साथ दर्द। कब्ज।

## मेरुमज्जा प्रदाह ( Spinal Meningitis )

**नेटरम सल्फ :** गर्दन और सरके पिछले भागमें सख्त दर्द। गर्दन पीछे झुक आये और कमरमें आक्षेप आए, इसके साथ मानसिक क्षोभ और बड़बड़ाहट।

डा० जे० टी० केण्टने लिखा है : मेरुमज्जा प्रदाहके लिए हमारे निघण्टु ( मैटीरिया मेडिका ) में जितनी भी दवाएँ हैं, यदि मुझसे वे सब छीन ली जाएँ और मुझे यह कहा जाए कि एक दवासे काम चलाओ तो मैं उस एक दवाके नामपर **नेटरम सल्फ**का चुनाव करूँगा : क्योंकि यह दवा दौरेको हल्का बना देती है और अधिकांश हालतोंमें रोगीकी जान बचा देती है। जब सही तौरपर इस दवाके लक्षण हों, तो यह आश्चर्यजनक ढंगसे रोगकी गति और अवधिको घटा देती है। सरकी और रक्तका प्रबल सञ्चार जो इस रोगमें पाया जाता है, तत्काल घट जाता है।

## लू लगना ( Sunstroke )

**नेटरम म्योर :** जब दिमागके तल भागके तन्तुओंमें नमीकी सहसा कमी पड़ जाती है, तो इस विकारके उपद्रव आते हैं। ऐसी हालतमें **नेटरम म्योर** प्रधान औषध है। शिराओंमें रक्त सञ्चित हो जाता है और उसके बह निकलने की प्रवणता पायी जाती है। दिमागमें अस्थायी रूपसे रक्तका सञ्चित होना।

## आतशक ( Syphilis )

**फेरम फॉस :** बाघी जिसके साथ गर्मी, तपकन और कोमलता हो।

**काली म्योर :** मादा आतशक , इस रोगकी हर हालतमें यह (३x विचूर्ण) औषध मुख्य औषध है। इसका घोल बनाकर धोनेके काम आता है। पुराना आतशक। बाघीकी नर्म सूजनके लिए। मसूढ़ों और श्लैष्मिक झिल्लियोंके आतशक जनित घाव।

लन्दन निवासी डा० सी० एस० साडर्सने लिखा है कि **काली म्योर** आतशकके लिए पोरकी तरह ही सिद्धौषध है। मैने इलाजमें उसे अनेक बार आजमाया है'।

**काली फॉस :** आतशकके गले-सडे जख्म। वाघी।

**काली सल्फ :** आतशक जवकि इस दवाके विशिष्ट लक्षण मौजूद हों। कष्ट शामको वढता हो। पुराना आतशक।

**नेटरम म्योर :** शुसलरकी पुस्तकके अन्तिम सस्करणमें इस औषधको इस रोगके लिए प्रथम औषध तो नही माना गया, परन्तु विशेष महत्व दिया गया है। पुराना आतशक, पानी-सा पतला स्राव।

**नेटरम सल्फ :** मलद्वारका मस्सा जो मूलतः आतशकजनित हो। खिलाने और वाहरके व्यवहारके लिए।

**साईलीसिया :** पुराना आतशक जिसमें पीव या सख्ती आ गयी हो। जहाँ आतशकमें पारेका अधिक व्यवहार हुआ हो और उसके परिणाम स्वरूप घाव आए हों या चर्मरोग वने हों। आतशकके तीसरे दर्जेकी गाँठें। हड्डीके नासूर या मुरदापन और जवकि वदवूदार स्राव भी आता हो।

**कल्केरिया सल्फ :** वाघीमें पीव वनना रोकती है। (**साईलीसिया** के साथ दें)। जव पीव देरसे आयी हो।

**कल्केरिया फ्लोर :** नर आतशक और सख्ती।

## चिकित्साकालीन अनुभव

आतशक जैसे घाव जिसके चारों ओर रक्त संचित था और मटियाले रंगका स्राव आता था। गहरा घाव था जिसका तलभाग चौडा था, पेशाव दर्दके साथ आता था। उसे **काली म्योर** ३-३ घण्टे वाद दिया गया। सुधार शीघ्र आया; पेशावमें दर्द घट गया। और घाव जल्दी ही भर गया।

—डा० एक० रॉविद।

## अण्डरोग ( Testicles, Diseases of )

**फैरम फॉस :** अण्ड प्रदाहका पहला दर्जा प्रदाहवाली हालत और दर्द आदि।

**काली म्योर :** यदि रोग सुजाक दव जानेके वाद आया हो तो फिर यह मुख्य औषध है। छोटे वच्चोंका हाईडरोसील।

**कल्केरिया फॉस :** अण्ड प्रदाह, हाईडरोसील; प्राय **नेटरम म्योर** के वाद अच्छा काम करता है।

**कल्केरिया फ्लोर :** अण्डोंमें पानी आ जाना, अण्डोंकी सख्ती।

**नेटरम म्योर :** अण्डकोष और सुपारीमें पानी आ जाना (**नेटरम सल्फ** भी) वीर्यरज्जुओं और अण्डोंमें। वेदना। अण्डशूल। अण्डकोषकी खुजली। विटप भागसे वाल गिरें।

# जीभ ( Tongue )

**कल्केरिया सल्फ :** जडकी ओर जीभपर गहरे पीले रंगकी मैल आए। मटयाले रंगकी मैल। ढीली-ढाली। स्वाद खट्टा, साबुन जैसा ; तीक्ष्ण। जीभका प्रदाह जबकि पीव आ गयी हो।

**फैरम फॉस :** जीभका प्रदाह, जिसमें जीभपर गहरे लाल रंगकी सूजन आयी हो। जीभका कैंसर।

**काली म्योर :** जीभकी सूजन। जीभपर सफेद मैल, खुश्क, मैली-सी सफेद, चिकनी।

**काली फॉस :** जीभका प्रदाह जब जीभपर खुश्की या थकान अत्यधिक हो। गन्दी मैले, भूरी-सी, तरल राई जैसी, सुबह अत्यधिक खुश्क और ऐसा जान पडे जैसे यह मुँहकी छतसे जा सटेगी। **भूरी जीभ**, किनारे लाल और सन्तापपूर्ण।

**काली सल्फ :** गहरे पीले रंगका मैल आएँ, चिकनी, कभी-कभी किनारे सफेद हों, गन्दी। नीरस स्वाद।

**कल्केरिया फॉस :** फूली हुई, सख्त, सुन्न, सफेद तह आए, नोकदार ; कैंसर।

**नेटरम म्योर :** चिकनी मैल आए ; साफ या पानी वाली ; विशेषतः जबकि नोक और किनारोंपर लारके छोटे-छोटे बुलबुले उठ रहे हों। बेस्वाद ; नकशेदार, अर्थात् उसपर आड़ी-तिरछी लकीरें नजर आएँ। साफ गीली ; सुन्न, कडी, ऐसे बच्चे जो चलना देर तक न सीखें। ऐसा जान पडे जैसे जीभ पर बाल रखा है। जीभ और मुँह खुश्क, खुश्कीका बोध ही अधिक होता है।

**नेटरम फॉस :** जडपर नमीदार मैल ; क्रीम जैसे रंगकी मैल या सुनहरी पीली मैल। छाले, ऐसा जान पडे जैसे जीभपर बाल रखा है। कैंसर।

**नेटरम सल्फ :** गन्दी मैल, भूरेसे हरे रंगकी मैल आए। स्वाद कडवा, खट्टा। चिकनी जीभ ; नोकपर जलनदार छाले। लाल जीभ।

**साईलीसिया :** जीभकी सख्ती, प्रदाह जिसमें पीव आ जाए।

**कल्केरिया फ्लोर :** जीभ कटी-फटी नजर आए, जिसमें दर्द हो या न हो जीभकी सख्ती, जो प्रदाहके बाद आए।

**मेग्नेशिया फॉस :** जीभ पीली, चमकदार, विशेषतः जबकि पेट दर्द हो और आमाशय में दबाव हो।

**नोट :** तन्तुओंके सभी विकारोंमें जीभपर आयी मैल ही औषधके

निर्वाचनका एक मात्र आधार नहीं है। यदि किसीको पुराना आमाशय प्रदाह हो और अब उसे तरुण रोग भी आ जाएँ, तो जीभकी मैलसे सम्भव है उस तरुण रोगका निदान हो सके और वह सही औषधका परिचायक भी न हो। जब कोई पुरानी बीमार निश्चित और मार्गदर्शक लक्षण लिए बिना ही आयी हो तो, फिर अधिकांशतः जीभकी रंगत और मैल उचित औषधके निर्वाचनके लिए रास्ता दिखाती है। —शुसलर।

# टाँसिल प्रदाह ; ( गलसुरा Tonsillitis )

**फेरम फॉस :** टाँसिल लाल और प्रदाहित, निगलनेपर दर्द हो। आरम्भ में यही दवा अकेली देनी चाहिए।

**काली म्योर :** यह दूसरे दर्जेकी ( गौण ) दवा है। जबतक गलेमें सूजन रहे यह काम करती रहती है। गलेमें सफेद या मैले-से सफेद दाग नजर आएँ। टाँसिलोंका नया या पुराना प्रदाह जिसमें सूजन अधिक हो।

**काली फॉस :** टाँसिल लम्बे और सन्तापपूर्ण और उनपर सफेद रगकी ठोस मैल आए। जैसे डिफ्थेरियाकी झिल्ली आती है।

**नेटरम फॉस :** जब टाँसिलोंसे सुनहरी पीले रंगका स्राव आता हो। और यह विकार अम्लपित्तकी प्रतिक्रिया हो। टाँसिलोंकी पुरानी सूजन।

**कल्केरिया फॉस :** टाँसिलोंका पुरानी सूजन जिससे मुँह खोलनेमें कष्ट हो, बहरापन आ जाए और निगलते समय कठिनायी पडे। अन्तरकालीन औषध के रूपमें दी जाती है। आवाज बिगड़ी हुई।

डा० एच० सी० फँच, एम० डी० लिखते हैं : अब बच्चोंके टाँसिल बढ़ गए हों और नर्म हो तो २x विचूर्णका व्यवहार अनुभूत है। यह आश्चर्यजनक रूपसे उन्हें छोटा बना देता है। परन्तु अधिकांश हालतोंमें देर तक व्यवहार करना पडता है।

**कल्केरिया सल्फ :** टाँसिल प्रदाहका अन्तिम दर्जा जबकि स्राव आता हो या घाव बन गया हो।

**नेटरम म्योर :** कन्वेका प्रदाह जबकि श्लैष्मिक झिल्लियाँ ही रोगका केन्द्र हों अतएव **काली म्योर** नहीं **नेटरम म्योर** ही दवा है। इस दवाकी ३० शक्ति टाँसिलकी पुरानी वृद्धिमें विशेष लाभदायक है।

**मैग्नेशिया फॉस :** दाईं ओर टाँसिल प्रदाह, गला बहुत लाल और फूला हुआ। रोगी सर्दीसे काँपता रहता है और थका-थका रहता है, सर दर्द होता है और चेहरा तमतमा जाता है।

## चिकित्साकालीन अनुभव

मुँहमें अधिक लार आनेके कष्टसाध्य रोगियोंमें मैंने अनेक बार **नेटरम म्योर**का व्यवहार किया है और इससे शानदार नतीजा मिला है। एक केस तो आश्चर्यजनक रूपसे शीघ्र ठीक हुआ। एक २० वर्षीया युवतीको टाँसिल प्रदाह था जिसके कारण पानी या दूध तक न निगल सकती थी। मैंने उसे पारेकी एक दवा दी। इससे टाँसिल प्रदाह बडी तेजीसे घटा। परन्तु एक और बला जाग गयी। अर्थात् मुँह आ गया। मसूढ़े फूल गये, दाँतोंसे अलग हो गए और उनसे खून आने लगा। दाँत काले पड गए। मैंने सोचा इस कष्टके लिए भी पारा देना चाहिए, क्योंकि पहले अनेक बार मैंने ऐसी तकलीफमें पारेका इस्तेमाल करके सफलता पायी थी। परन्तु इस बार पारेने तकलीफ और बढा दी।

मेरे पूछनेपर रोगिणीने बताया कि गत वर्ष भी ऐसा कष्ट आया था और एक चिकित्सिकने उसे **कैलोमल** खिलाया था जिससे उसके मुँहमें भयानक लार आयी।

अब मैंने पारा बन्द कर दिया और दो-दो घण्टे बाद **नेटरम म्योर** दिया। परिणाम आशातीत था। २४ घण्टेमें सूजनमें भारी कमी आयी और ३ दिनमें वह बिलकुल ठीक हो गयी। —शुसलरसे उद्धृत।

टाँसिल बढे हुए थे और आंशिक रूपसे बहरापन भी था। रोगीकी आयु ५ वर्ष थी। वह बहुत दुबला-पतला और कोमलांग था। आयुके लिहाजसे कद अधिक लम्बा था। आंशिक बहरेपनकी तकलीफ उसे २ सालसे थी। उसने दर्दकी अधिकताके कारण आरम्भमें मुझे गलेकी जाँच करने न दी। परन्तु बाहरी सूजन और इतिहाससे पता लग गया कि उपद्रव कहाँ है। उसकी माँने बताया कि दो साल पहले उसे चेचकका टीका लगा था। उसके बाद उसके शरीरमें भारी विकार आया। दाने जब जानेके बाद टाँसिल प्रदाह रह गया। खुली हवासे लौटनेपर नमदार मौसममें कष्ट बढता है।

**कल्केरिया फॉस** ने तत्काल लाभ किया। ३ दिनके बाद मै उसके गलेकी जाँच कर सका। दोनों टाँसिल फूले हुए थे, लाल थे और वे गले और मुँहके दरम्यान बाँधकी तरह खडे थे। ३ सप्ताहमें वह बिलकुल ठीक हो गया।

—**मंथली होमियोपैथिक रिव्यू**; सितम्बर १८६७।

डा०" को टाँसिल प्रदाहका सख्त दौरा पडा। दोनों टाँसिल फूल गए, बहुत बढ गए जिससे निगलनेमें दर्द होने लगा। तापमान १०२ था। नाड़ी १३०; रोगी बहुत घबराया हुआ था।

उसे **फैरम फॉस** ६x और **काली फॉस** ६x अदल-बदलकर १५-१५ मिनट बाद दिए गए। ६ घण्टे वाद देखा गया तो रोगीकी हालत अधिक खराव थी। तव **काली फॉस**की जगह **काली म्योर** ६x दिया गया। **फैरम फॉस** जारी रहा। रात बडी तकलीफसे कटी। तब **फेरम फॉस** १२x और **काली म्योर** भी १२x दिया गया। ६ घण्टे बाद काफी सुधार आया। तापमान १०० और नाडी १०० रह गयी। २ दिनमें वह ठीक हो गया। पीव न आई। यह सामान्य गलक्षत था जिसमें आमतौरपर पीव आ जाया करती है और तब ठीक होनेमें ७ दिन लग जाते हैं।

६x ने रोग वढा दिया और १२x से सुधार आया।

—जी० एच० मार्टिन, एम० डी०।

एक शाम एक सज्जन अपने ८-१० वर्षके वालकको लेकर मेरे पास आए। जव वह मेरे सामने खडा था तो मैंने देखा कि उसे साँस लेने में वडा कष्ट हो रहा है और उसकी छाती मुर्गकी तरह वाहर निकली हुई थी। मैंने उसका गला देखा। दोनो टाँसिल बुरी तरह प्रदाहित थे। वे दोनों वहुत वढे हुए थे। हल्का-सा ज्वर भी था और जीभ सफेद थी।

मैंने उसे काली म्योर २०० की कुछ पुडियाँ दी और ३ घण्टे तक आध-आध घण्टे वाद देनेका आदेश दिया। और समझा दिया कि रात को १-१ घण्टे वाद दें। अगले दिन सुबह जव मैंने आकर बच्चेको देखा तो वैठा था और मुझे इसपर भारी आश्चर्य हुआ। वह प्रसन्नचित्त था और स्वाभाविक रूपसे साँस ले रहा था। छाती स्वाभाविक दशामें आ गयी थी। टाँसिल भी काफी सुकडे थे। वही दवा जारी रही और इतने समय में वह काफी संभल गया। —ई० एच० एच०।

# दाँतदर्द ( Toothache )

**फैरम फॉस :** दन्तशूल, गालें गर्म, मसूढ़े या दाँतोंकी जडे प्रदाहित। गर्म पेयसे कष्ट वढ़े और ठण्डे पेयसे आराम आए। मसूढे सन्तापपूर्ण लाल और प्रदाहित। दाँतोंमें भारी सन्ताप और ऐसा जान पडे कि वे वढे हो गए हैं। दन्तशूल।

**काली म्योर :** दन्तशूल जिसके साथ मसूढ़े और गालें फूली हुई हों। यह दवा अलब्यूमन जैसे मवादको साफ कर देती है।

**काली फॉस :** अत्यधिक घवडाये हुए, नाजुक या पीले, चिडचिडे

और भावुक व्यक्तियोंका दन्तशूल। दन्तशूल जिसमें मसूढ़ेसे जरा-सा दबाव पड़ते ही खून आने लगे। मसूढ़ेपर चमकदार लाल रंगको मैल या लकीर आए। दाँतोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट; दाँत पीले, खोखले या भरे हुए दाँतमें सख्त दर्द।

**काली सल्फ :** दाँत दर्द गर्म घरमें और शामके समय बढ़ जाता और खुली, ठण्डी हवामें घट जाता है।

**मैग्नेशिया फॉस :** दाँत दर्द जो गर्म पेयसे घटे। (ठण्डे पेयसे घटे तो **फैरम फॉस**)। दाँतोंका स्नायविक या गठियावातजनित शूल; बहुत तेज और गोली लगनेकी तरहका दर्द जो गर्मीसे घटे। दर्द दबावसे घटता है, परन्तु जरा-सी हरकतसे बढ जाता है सोनेके बाद, ठण्डे पानीसे हाथ-मुंह धोनेसे और ठण्डी चीजोंसे आमतौरपर बढ जाता है। भरे हुए दाँतका दर्द। आयुदाहात्मक दन्तशूल।

**नेटरम म्योर :** दाँत दर्द जिसमें आँसू या लार अधिक आए।

**साईलीसिया :** दाँत दर्द जो रातको अधिक हो; गर्मी या सर्दीसे उसमें कोई आराम न आए; जब दर्द पाँव भीगनेसे आया हो। जब दर्द दाँतोंकी जोड़ोंमें हो और घाव बन गया हो। दाँत दर्द जो सहसा पाँव भीग जानेसे आए जबकि पसीना आया हुआ हो। दाँत ढीले।

**कल्केरिया फॉस :** दाँतोंका बहुत जल्दी गिरना, कठमालाकी हालत। गर्भकालीन दन्तशूल। दन्तशूल रातको बढ़े।

**कल्केरिया फ्लोर :** खाद्य छूते ही दाँत दर्द आ जाए। दन्तशूल जबकि दाँत हीले भी हों। दाँतोकी सफेदी दूषित और खुरदरी, दाँतोंका अस्वाभाविक ढीलापन। डा० आर० एस० कोपलैण्ड लिखते हैं : मैंने देखा है कि जब **कल्केरिया फ्लोर**का व्यवहार देरतक जारी रहा, तो दाँत खराब हो गए। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि दाँतोंके घावके लिये हितकर है, विशेषतः बच्चोंके लिये।

## चिकित्साकालीन अनुभव

**फैरम फॉस :** ६x के व्यवहारसे दाँत दर्दके तीन केसोंको कुछ ही घण्टोंमें आराम आया। लक्षण थे : दाँतोंका बढ जाना, दबा सहन न होना, निरन्तर दर्द, सो न सकना, चेहरे या मसूढ़ोंकी सूजन, दर्दका गर्मी या सर्दीसे कम न होना। —एन० ए० जे० १८६३ पृष्ठ ५४।

# गाठें, रसौलियाँ, ( Tumors )

**काली म्योर :** छातियोंका हलका कैंसर जबकि **कोमलता** मुख्य लक्षण हों। ६x दें ( ई० जे० जोन्स )।

**काली फॉस :** कैंसर ; दर्द, दुर्गन्धित स्राव और त्वचाका बदरंग हो जाना। उस हालतमें हितकर है जब कैंसरको निकाल दिया गया हो और घाव भर रहा हो।

**काली सल्फ :** कैंसर ; श्लैष्मिक झिल्लियोंके पास त्वचाका कैंसर जिससे पतला, पीला, पानी जैसा, पीव जैसा स्राव आए। डा० एच० एम० फिलिप्स ( टील्डो, ओहाईओ ) ने कैंसरके एक रोगीको ठीक किया था जिसे नाकके बाएँ भागपर कैंसर था, उसपर कीलदार खुरण्ड था। उसपर गहरे रंगकी सूजनने चक्कर लगा रखा था। यह ६ माससे था। इस दवासे कैंसर ठीक होनेके और भी कई केस रिकार्डपर हैं।

**नेटरम म्योर :** तेन्दवा।

**फैरम फॉस :** कैंसरके तेज दर्दके लिए शानदार दवा है जो बदलकर दी जाती है। जीभका कैंसर, तिल।

**कलकेरिया फॉस :** कठमालाके रोगियोंका कैंसर। नयी या पुरानी रसौलियोंके लिए इस दवाकी जरूरत पड़ती है। गलगण्ड रसौली, गिल्हड़ फूलन। घुटनेकी चौड़ी हड्डीका प्रदाह।

**कलकेरिया सल्फ :** पानी वाली सूजन, रसौली ; दानोंकी अधिकता, और पीव न आना।

**कल्केरिया फ्लोर :** नवजात शिशुओंके सिरके फोड़े जिनमें रक्त भरा हुआ हो। स्तनोंकी गांठे, स्तन ग्रन्थियोंकी सख्ती। अजनहारी, आँखकी ग्रन्थियोंका बढ जाना। जबड़ेकी हड्डियोंपर सूजन आना जो सख्त किस्मकी हो। कण्डराओंकी रसौली। रसौलीके इर्द-गिर्द-सूजन आए जैसाकि हाथकी पीठके लचकदार तन्तुओंपर जोर पड़नेसे हुआ करता है। सख्त सूजन जिसका केन्द्र वधनियाँ या कण्डराएँ हों। अधी आती थी कड़ी गाठें। हड्डीके पर्दोंमें मवाद आ जाना।

**साईलीसिया :** ग्रन्थियाँ बढी हुई। लसिका ग्रथियोंकी पुरानी वृद्धि। सूजन, गांठ, गाठदार फोड़ा जो बहुत सख्त हो और जिसमें पीव आनेका डर हो, ऊपरके होठ और चेहरेकी सख्ती। जरायुका कैंसर। शरीरका बर्फकी तरह ठण्डापर जाना, और लकोरिया जिसमें दुर्गन्धित, भूरे-से रंगका, पीव जैसा पानी जैसा पतला स्राव आए।

**नेटरम फॉस :** जीभके कैंसरके लिए लाभदायक सिद्ध हुआ है। गिलहड जो अम्लपित्तके कारण बना हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

**कल्केरिया फ्लोरिका :** १३ अक्टूबर १८८३ को एक ६० वर्षीय वृद्धा मेरे पास आयी और शिकायतकी कि गत १८ माससे मेरी तर्जनी ( पहली उंगली ) पर एक चमकदार सूजन आयी हुई है। गाठ सख्त और वेदनापूर्ण थी। वह आधे अखरोटके बराबर थी, किन्तु कुछ चौडी थी। रोगिणी घबरायी हुई और निरुत्साहित थी। इस दवासे तत्काल सुधार आया और वह २॥ मासमें बिलकुल ठीक हो गयी। —जे० काम्पटन बर्नेट।

**कल्केरिया फॉस्फोरिका :** एक बच्चा जो कि सिर्फ १४ दिनका था। मेरे पास लाया गया। जन्मके तत्काल बाद उसके सरपर एक सूजन देखी गयी जो निरन्तर बढती गयी। खोपडीके बाएँ भागपर गुम्मड बना हुआ था। इसका घेरा ७ सीराम था और ऊँचाई २ सीराम। वह दबता नहीं था; ध्यानसे देखनेपर पता चला कि नीचेकी हड्डी भी दूषित है। गुम्मड वहीसे उठा था। उसका राजी होना सदिग्ध था। दिमागपर दबावका कोई लक्षण नही था। उसे दोनों जघाओंमें हर्निया भी था। इन दो शिकायतोंको छोडकर वह स्वस्थ था।

मैंने **कल्केरिया फॉस** ६x दिनमें ३ बार दिया। ३ दिन बाद गुम्मड कुछ छोटा नजर आया और १० दिनमें गायब हो गया। वह जगह भी धीरे-धीरे ३॥ सप्ताहमें बिलकुल भर गई।

—फ्रोहलिंग, ए० एच० जेड, १३२, ६५।

सरके पिछले भागकी हड्डीपर दायी ओर सख्त रसौली थी। खोपडीका पिछला जोर खुला था। कल्केरिया फॉस २०० से आराम हो गया।

—राऊ, रिकार्ड होमियोपैथिक लिटरेचर, १८७३।

**कल्केरिया फ्लोरिका :** घुटनेकी खोखली जगहमें रसौली बनी थी जो आपरेशन करके निकाल दी गयी। वह फिर आ गयी और मुट्ठी जितनी बडी हो गयी। टागमें खिचाव आ गया और ४५° बन गया। घुटनेमें गति न रही। रोगीके लक्षणों और रसौलीकी सख्ती आधारपर यह दवा दी गयी। रसौली धीरे-धीरे सुकडती चली गयी और कुछ दिनोंमें अग स्वाभाविक दशामें आया। —डा० जे० टी० कैण्ट।

दाएँ नथने का गुम्मड **कल्केरिया फॉस**से ठीक हुआ।

—वीव, ट्रॉस० अमेरिकन, इन्सटीच्युट, १८८६।

डा० ग्रोथने लिखा है : ७० वर्षीया वृद्धाको दायी गालपर कैंसर था। यह आँखके निम्न पपोटेमे नाककी ओर बढ रहा था। यह वृत्ताकार था और पैसे जितना बडा था। यह कैंसर कई मालसे था और अब फटनेवाला था। उसका तल सख्त था। और किनारे भी कडे थे।

उसे हर रोज शामको **काली सल्फ** दिया गया और इसी दवाके घोलसे पट्टीकी गयी और यही पट्टी बार-बार बदली गयी। एक मास बाद फोडा काफी फट गया। और ३ सप्ताह बाद वह और छोटा हो गया। कुछ दिन बाद वह घर चली गयी और बादमें कोई समाचार न मिला।

—शुसलरसे उद्धृत।

लुवेक निवासी डा० स्पाईटहॉफने लिखा है : रोगीको ऊपरके जबडेकी हड्डीपर कैंसरका बडा-सा फोडा निकला जो मेंढककी तरह ऊभरा हुआ था ऐलोपैथिक चिकित्सक ८ मास तक उसे पकानेका यत्न करते रहे; परन्तु सफल न हुए। हाँ; उसके कई मुँह बन गए जैसे नासूरमें होते हैं और उनसे लगभग साफ, दुर्गन्धित मवाद आने लगा।

पीव आनेकी अधिक आशा किए बगैर उसे **साईली** ६ दिया गया। २ सप्ताह तक कोई विशेष परिवर्तन न आया। तब **कल्केरिया फ्लोर** दिया गया। अगले ही दिन उसमें पीव आ गयी।

दोनो दवाओंकी तात्कालिक क्रिया आश्चर्यजनक थी।

सान्तारोजा निवासी डॉ०सी० एच० थामसनने लिखा है कि एक महिला के स्तनमें बड़ी सख्त गाँठें आयी थी। उसमें स्नायुशूल भी होता था। उसे **कल्केरिया फ्लोर**ने तात्काल लाभ पहुँचाया,

एक मजदूरकी नाकके दाएँ ओर, आँखके ठीक नीचे कैंसर था इसके कारण आँख भी आक्रान्त थी। परिणामस्वरूप श्वेत पटल प्रदाह आया और कनीनिका धुँधली पड गयी। नाकके पास चार वर्षसे घाव था आरम्भमें वहाँ जरा-सा लाल दाग था जो थोडा उभरा और फूला हुआ था। बाद में उसपर कीलदार खुरण्ड आया जो कुछ दिनों बाद उतर गया और वहाँ फोडा रह गया। यह धीरे-धीरे बढता रहा। उसने कई जगह दवा दारू कराई। एक चक्षु विशेषज्ञसे भी दवा कराई क्योंकि आँख भी पीड़ित थी। परन्तु किसी के लिए—धरे कुछ न बना।

मैंने उसे सुबह शाम **काली सल्फ** दिया। उसपर **काली सल्फ**का घोल

लगाया गया। कुछ ही दिनोंमें प्रदाह चला गया। घाव भी भरने लगा। कुछ ही दिनोंमें वह ठीक हो गया। —शुसलरसे उद्धृत।

ठुड्डीके नीचे कबूतरके अण्डेके बराबर सूजन आयी जो **कल्केरिया फ्लोर**के व्यवहारसे ४ सप्ताहमें बिलकुल ठीक हो गयी। ऐलोपैथिक और होमियोपैथिक चिकित्सासे उसे कोई लाभ न हुआ था। —शुसलरसे उद्धृत।

रेजन्सबर्गसे डा० फखने लिखा है: अगस्त १८७५ में मैंने एक ४० वर्षीया महिलाकी चिकित्साकी उसके घुटनेके जोड़में पानी आया था। डा० शुसलरके लिखे मुताबिक उसे सुबह शाम **कल्केरिया फॉस** दिया गया। कुल १२ मात्राएँ देनेसे सूजन चली गयी। —शुसलरसे उद्धृत।

**नासार्श :** श्रीमती''' के दोनों नथनोंमें गुम्मड थे। उनसे खून भी आता था। उसे एक सप्ताह तक **कल्केरिया फॉस** ३० की एक एक मात्रा दी गयी। ३ सप्ताहमें दोनों गुम्मड मिट गए। —जे० जी० गिल्क्रिस्ट।

**भरे हुए घावके निशानपर कई नए दाने निकल आए :** पहले एक अस्पतालमें फोडेका आपरेशन हुआ था। अब उसे सुबह-शाम **साईली** ३ दिया गया। दाने धीरे-धीरे मिटते गए। मेरे लिए यह चमत्कार था।

—जान एच० क्लार्क, होमियोपैथिक वर्ल्ड, अगस्त १८८५।

लन्दन होमियोपैथिक अस्पतालमें एक चार वर्षीय बालककी चिकित्सा हुयी। २ वर्ष पहले उसकी पहली उंगलीपर चोट आयी थी। प्रारम्भमें हड्डीकी झिल्लीका प्रदाह आया और घाव बना। परन्तु हड्डीके मुरदारपनका कोई लक्षण न आया। ६ मासमें सूजन और बढ़ी और हड्डी गोल बन गयी। इस दौरानमें **साईलीसिया** देनेसे सूजन में भारी कमी आयी। और ६ मास बाद वहाँ फिर घाव बना जिसे खोला गया। **साईलीसिया** और **हीपर** दिए गए। वह फिर ठीक हो गया।

डा० बायर्स म्योर और ईप्पसने भी इसी रोगके दो केस **साईलीसिया, कल्केरिया और कल्केरिया फ्लोर**से ठीक हुए।

डा० ओ० ए० पामर लिखते हैं: स्तनोंकी सख्त गाँठोंके लिए **कल्केरिया फ्लोर** अमोघ औषध है।

**केस १ :** श्रीमती ५२ वर्ष; वह जब मेरे पास आयी तो बहुत परेशान थी; क्योंकि एक बडे सर्जनने उसे कह दिया था कि कैंसर है और उसका आपरेशन करना पडेगा। देखभाल और सारा हाल सुननेके बाद मैंने उसे विश्वास दिलाया कि वह दवा खानेसे ठीक हो जाएगी। वह मान गयी।

मैं ४ औंस पानीमें ३x शक्ति कुछ टिकियाँ डाल दी और उसे कहा कि वह इस पानीसे फोडेको तर रखे और यही दवा खानेके लिए भी दी।

एक सप्ताहमें गाँठ एक चौथाई रह गयी। और ३ सप्ताहमें वह बिलकुल ठीक हो गयी।

**केस :** उसीकी एक स्त्री आयु ४२ वर्ष मेरे पास आयी। उसकी दाईं छातीमें ३-४ वर्षसे सख्त गाँठ थी। वह वेदनापूर्ण थी। हाथके हिलने-डुलनेसे ही कष्ट बढ जाता था। वह सो भी न सकती थी। उसे मन्दाग्नि भी थी। पहले उसकी मन्दाग्नि ठीककी गयी। तब उसे भी वही दवा दी गयी और वह ३ मासमें बिलकुल ठीक हो गयी।

दाँत दर्द या चोटके कारण जबडेपर जब सूजन आ जाती है, उसमें मुझे इस दवाकी व्यवहारसे कभी निराशाका मुँह नहीं देखना पडा। होठों के कटाव-फटावके लिए भी यह लाभदायक है। मैंने एक बार यह दवा गिरते दाँतमें भी दी थी उसका सफेदी उतर चुकी थी। परिणाम बहुत अच्छा रहा।

डा० मोसरने बर्लिनकी पत्रिका Zeitschrift में एक बहुत मजेदार केस दिया है जिसमें **साईलीसियाने** रसौली ठीककी थी। एक बढईकी दायी कुहनीके मोडपर एक सालसे एक गाँठ थी। यह नर्म थी और अब कुछ दिनसे उसमें दर्द आया था।

**साईली** ३० सुबह-शाम दिया गया। ३ दिनमें ही दर्द बन्द हो गया। परन्तु अब दाएँ हाथकी पीठपर एक लसिका ग्रन्थि उभर आयी जो सुपारी के बराबर थी। १० दिन और यही दवा दी गयी और दोनों रसौलियाँ चली गयीं।

## टायफायड ज्वर ( Typhoid Fever )

**फैरम फॉस :** टायफायड या आमाशय ज्वर : आरम्भ होते ही दे देनी चाहिए। शीतावस्थाका प्रारम्भिक दर्जा। जब रोगीका चेहरा होंठ और श्लैष्मिक झिल्लियाँ लाल हों। नाडीकी चाल बहुत तेज हो, परन्तु वह बलवत्तर और काली फॉसकी अपेक्षा कम अनियमित हो।

**काली म्योर :** टायफायड या आमाशय ज्वर जब जीभ सफेद या मैली सी हो और पतले पाखाने भी आते हों। पाखानोंकी रंगत हल्की-पीली या संतरेके रंग जैसी हो या झागदार हो। पेट कोमल और फूला हुआ हो।

**काली फॉस :** टायफायड या जब लक्षण घातक हों दिमाग भी आक्रान्त हो और तन्द्रा आए, या जब रक्तके दूषित होनेके लक्षण आए हों। शारीरिक दुर्बलता, हृदय कमजोर, अनिद्रा, साँस दुर्गन्धित, पाखाने भी बदबूदार और मूर्च्छा आए। दाँतोंपर मैल आए। जब खून अधिक गन्दा हो गया हो, तो

यह बहुत शानदार काम करती है। जब यह दिखायी देता हो कि शरीर टायफायड विषसे भरा हुआ है और रोगने किसी एक केन्द्रमें अपना केन्द्र न बनाया हो। शरीरके सभी मलोंका दुर्गन्धित होना विशेष लक्षण है। व्याकुलता, हल्की-सी बडबडाहट, जीभपर पतली सफेद सी पीली मैल जमना, चेहरा पीला, मुरझाया हुआ और व्यग्रता झलके। आरम्भके कुछ दिनोंमें शरीरके विविध अंगोंमें तेज कटनके साथ दर्द। विशिष्ट लक्षण है: कमजोर, तेज, अनियमित नाडी और आपेक्षतः कम ज्वर।

डा० हाल्बर्टका मत है कि **काली फॉस** इस जगह अधिक अच्छा काम करता है जब रोगी शारीरिक परिश्रम करनेवाला न होकर दिमागी मेहनत करनेवाला हो, जहाँ ज्वरके साथ स्नायविक दुर्बलता भी हो और अन्तिम दर्जेमें जब सम्भलनेकी शक्ति क्षीण हो गयी हो।

**काली सल्फ:** टायफायड या आमाशय ज्वर जबकि ज्वर रातको बढता हो और सुबह घट जाता हो।

**नेटरम म्योर:** टायफायड या किसी भी ज्वरके दौरान जब घातक लक्षण प्रकट हो चले हों। जैसे अंगोंमें खिंचाव आना, भारी तन्द्रा, पानी जैसी कै, मूर्च्छा और जीभ अत्यन्त खुश्क आदि।

**कल्केरिया फॉस:** जब टायफायडका जोर टूट चुका हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

एक नौजवानको जिसका दिमाग बहुत चुस्त था। टायफायड हो गया। मोटा लक्षण था, वह जब भी घबरा जाता तो चीखने चिल्लाने लगता और बच्चोंकी तरह सुबकियाँ भरने लगता।

उसे **इग्नेशिया, हायोसिया, स्ट्रेमो,** और **कॉफी** आदि दिए गए और इनसे कुछ न बना। आखिर **काली फॉस**ने उसे राहत दी और उसे इसके साथ और कोई दवा न देनी पडी। यह दवा बलवर्द्धक भी नजर आयी।

(मनरो)।

डल्लस (टेक्सस) निवासी डा० ए० पी० डेविसने **सदर्न जर्नल ऑफ होमियोपैथिक**में लिखा है:

'सर्वाधिक विवेकपूर्ण मार्ग है **कमी पूरा करना** और जो अधिकता है उसे कम करनेमें प्रकृतिकी सहायता करना। सभी टायफायड ज्वरोंमें दुर्बलता और श्रान्ति आती है। और चूँकि यह दुर्बलता कुछ परमाणुओंके परिवर्त्तनसे आती है, इसलिए कुछ तत्त्वोंके परमाणुओंपर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए। विचारणीय प्रश्न यह है कि यह परमाणु परिवर्त्तन

वप्टी, रसटॉ, बाईओ, फॉस, एसिड, चाईना सिमिसीफ्यूगा, फेरम फॉस, **नेटरम म्योर या नेट फॉस** आदि किस दवासे आता है। कुछ चिकित्सकोने वप्टीशियासे, कुछने रसटसे सफलता पानेकी बात लिखी है।

यह मानी हुई बात है कि जब अँतडियोकी ग्रन्थियोंपर सूजन आती है तो ज्वर आता है और जिस किसी तरीकेसे भी इस प्रदाहको हटाया जा सके उससे रोग घट जाएगा। मैंने अनुभवसे यह देखा है कि जब **फैरम फॉस और काली म्योर** ज्वरके समय अदल-बदलकर दिए जाते हैं, तो वे निश्चित रूपसे सफल होते हैं बशर्तेकि जब जीभ सफेद हो। **फैरम** सर्वोत्तम ज्वरनाशक है और **काली म्योर** ऐसी हालतमें सर्वोत्तम दोषघ्न है। यदि जीभकी रंगत भूरी हो जाए, फिर **काली फॉस** देना चाहिये, विशेषतः उन हालतमें जबकि रोगी प्रलाप करता हो या घबराया हुआ हो और अधिक घातक लक्षण आ गए हो।

यदि जीभपर पीले रगकी चमकदार मैल आए, तो फिर **मैग फॉस** देना चाहिए विशेषतः जबकि पेट दर्द हो और आमाशयमें दबावकी अनुभूति भी हो।

यदि जीभपर सुनहरे-पीले रंगकी या, क्रीम जैसे पीले रंगकी, तर मैल हो, तो **नेट फॉस** देना चाहिए। यदि जीभ गन्दी, भूरेसे-हरे रगकी हो, तो फिर **नेट सल्फ** देना चाहिए। ये औषधियाँ जीभके इन लक्षणोंपर ही चुनी जाती हैं।

और जब रोगी स्वास्थ्यकी ओर जा रहा हो तो **कल्केरिया फॉस** दें। मैंने जहाँ कही इन औषधोंका व्यवहार किया है, मुझे भारी सफलता मिली है। यदि उपर्युक्त लक्षणोंके आधारपर दी जायेगी तो ये निश्चय ही रोग दूर करेंगी। ये उन निर्जीव तत्त्वोंकी पूर्ति करती हैं जो बीमारीकी हालतमें घट गए हैं। और यदि चिकित्सक इनका निर्वाचन पुरी-पूरी सावधानीसे करे तो फिर हर एक साध्य रोग दूर किया जा सकता है।

मै आमतौरपर ४x से ६x तकका व्यवहार करता हूँ। यद्यपि मैं होमियोपैथिक औषधोंका व्यवहार भी करता हूँ। परन्तु जहाँ लक्षण स्पष्ट हो वहाँ टिशु रेमिडीजका व्यवहार भी करता है।

कुमारी नेट्टी—२३। जब मुझे उसे देखनेके लिए बताया गया तो रोग अन्तिम दर्जेमें था। चूँकि पहले और दवाओंकी आजमाइश हो चुकी थी और वह मरणासन्न थी, मेने **काली फॉस** ६ दिया। वह आखिरकार ठीक हो गयी।

इसी तरहके एक और केसमें यही दवा दी गयी, क्योंकि और दवाएँ बेकार साबित हो चुकी थी। परिणाम वैसा ही रहा और रोगिणी कुछ ही घण्टोंमें सम्भल गयी और आगे चलकर ठीक हो गयी।—( सी० टी० एम० )

## टायफस ज्वर ( Typhus Fever )

**फैरम फॉस :** पहले दर्जेमें **काली म्योर**के साथ अदल-बदलकर दें।

**काली म्योर :** कब्जके लिए। जब पाखाना हल्के रंगका हो।

**काली फॉस :** घातक ज्वर, सड़ा हुआ ज्वर। कैम्प ज्वर। वातज्वर दिमाग ज्वर, फार्म ( खेत ) ज्वर। यदि जीभ भूरी हो, शरीरपर दाने हो, अनिद्रा हो, दिमाग असाधारण रूपसे सक्रिय हो, मूर्च्छा और प्रलाप भी हो; तो वह प्रधान औषध है।

**नेटरम म्योर :** टायफस ज्वर जब मूर्च्छा और अनिद्रा प्रधान लक्षण हो।

**नेटरम फॉस :** जीभ सुनहरी पीली; क्रीम जैसी और तर।

## अन्धी आँतका प्रदाह ( Typhlitis )

( उपान्त्रप्रदाह—अपेण्डेसाईटिस भी देखें )

**फैरम फॉस :** ज्वर, प्रदाह, तेज बुखार। दर्दके लिए भी हितकर है।

**काली म्योर :** सूजन और मवाद आना, सख्ती।

**काली फॉस :** यह दवा हर तरहके मवादका शोषण करती है और पेटमें प्रदाह आनेकी प्रवृत्तिको घटाती है। अधिक स्रावके कारण आया आन्त्रशूल जो बाहर निकले और उपान्त्रके आस-पास जमा होते रहें।

—( एफ० डी० बी० )

**साईलीसिया :** जब पीब आ गयी हो या घाव बन गए हों।

**कल्केरिया सल्फ :** पेडूके दाएँ भगान्तके दर्दको यह दवा दूर करती है यदि अँतड़ियोंमें घाव बन गया हो तो उन्हे दूर करती है और उन तन्तुओ को बिखरनेसे रोकती है, दुर्बलताको हटाती है और अफारेको दूर करती है ( एफ० डी० बी० )। घाव जिससे पीला, पानी-सा स्राव आए।

**नेटरम सल्फ :** हवाके कारण आन्त्रशूल जो दाएँ जंघा से शुरू हो, यह इस दवाका मार्गदर्शक लक्षण है। कोमलता, अफारा और छेद होनेकी प्रवृत्ति। अँतड़ियाँ सुस्त, पित्त विकार। —एफ डी० बिट्टगर, एम० डी०।

डा० जे० डब्ल्यू वार्ड एम० डी० ने लिखा है, "छोटी आँतके अन्तमें मन्द-मन्द दर्द। हवा जो जगह बदले। दबाव सहन न हो और जीभपर मैल आए"। निरन्तर कै होती रहे।

## चिकित्साकालीन अनुभव

ओकलैण्ड (केलीफोर्निया) निवासी डा० आइ० ईनिकलसनने निम्नलिखित केस दिया था। इसका टिशु रेमिडीजकी कार्य-क्षमताका बडा ही सुन्दर वर्णन है :

"१४ अप्रैल १८८७ को मुझे एक २२ वर्षीय नौजवानको देखने के लिए बुलाया गया। उसे छातीके टी० बी० थी पैतृक प्रवणता थी। उस दिन उसे दाईं ओर छोटी आँतमें सख्त दर्द हुआ था जब मैं उसे देखने गया तो उससे पहले वह कई बार कै कर चुका था। जाँच करनेपर मुझे पता लगा कि उसकी छोटी आँतमें दाईं ओर एक फोडा है। यह जगह इतनी स्पर्श-कातर थी कि वह बिस्तरके कपडोंका भार भी सहन नही कर सकता था। कुछ ही घण्टोंमें उसे दो पाखाने हो चुके थे। मुझे मालूम हुआ कि एक दिन पहले उसने खिचडी खायी थी। आज एक बार जब पाखाना हुआ तो उसके दाने उसमें निकले। निदानके बारेमें कोई सन्देह नहीं था। वह अँधी आँत का प्रदाह था और ये दाने ही उसका कारण बना था। उसका तापमान १०२ था। और नाडी १२०। फोडेके आसपासकी जगह कई इचके घेरेमें पत्थर की तरह सख्त था और इससे जान पडता था कि वहाँ विजातीय द्रव्य सचित हुआ था।

मैंने उसे **फैरम फॉस** ३x और **काली म्योर** ६x विचूर्ण अदल-बदल कर सुबह शाम दिया। दर्द कम करनेके लिए मैंने दर्दवाली जगह गर्म पुल्टिस लगवायी। ३६ घण्टे बाद तापमान १०० और नाड़ी ६० हो गयी। दवा जारी रही। प्रदाहके लक्षण जाते रहे और फोड़ेका आकार धीरे-धीरे घट गया। एक सप्ताह बाद ताप चला गया। नाडी भी स्वाभाविक हो गयी। फोड़ा बिलकुल घट गया। पेट नर्म हो गया और कोमलताका केवल निशान ही शेष रह गया। उसने कोई और दवा न ली। इस केसका परिणाम रहस्यमय है क्योंकि आमतौरपर ऐसी हालतोंमें रोगी अच्छे नही होते। यहाँ सुधार लानेका श्रेय **लोहे** और **पोटाश**को प्राप्त है। एकने प्रदाह हटाया और दूसरेने मवादका शोषण किया।

लाक्षणिक या निदान सम्बन्धी चिकित्साकी दृष्टिसे हमारे पास ज्वरके लिए

फेरम फॉसके और मवादका शोषण करनेके लिए काली म्योरसे बेहतर दवा नहीं है"।

**कल्केरिया फ्लोर** ३x ने एक कड़े और कोमल फोड़ेको जो छाती ओर से जिगरके निम्न छोरकी ओर बढ़ गया था, बड़ी जल्दी दूर कर दिया था।

## व्रण ; घाव ; नासूर ( Ulcers & Ulcerations )

**फेरम फॉस :** ग्रन्थियोंके घाव, तपकनवाले दर्द, दुखन, लाली, गर्मी और रक्ताधिक्यको दूर करनेके लिए श्रेष्ठतम दवा है। ऐसे घाव जिनके साथ ज्वर या गर्मी या लाली और रक्ताधिक्य भी हो।

**काली म्योर :** ऐसा घाव जिससे बसामय स्राव हो। जरायुकी गर्दन और मुँहके घाव जिनसे गाढ़ा, सफेद और कोयल स्राव आए। ऐसे नर्मी घाव जिनपर सूजन हो, या जीभ गन्दी सफेद हो या त्वचाकी ऊपरी स्तर परतदार हो और वहाँसे आटे जैसी चीज झड़ती हो, या बसामय स्राव हो। गन्दा मांस उभरे हुए दाने, कनीनिकाका घाव (आँखके रोग देखिए)।

**काली सल्फ :** टी० बी०के घाव जिनसे पीले-से रंगकी पीब और लसिका निरन्तर आए।

**नेटरम फॉस :** आमाशय या अँतड़ियोंके घाव ; आतशकके घाव जिन पर पीला खुरण्ड या आधी सूखी क्रीम जैसा खुरण्ड नजर आए।

**साईलीसिया :** निम्नांगोंके घाव जो बहुत गहरे हों और जब हड्डीकी झिल्ली आक्रान्त हुई हो। इस औषधके घाव नर्म होते हैं, उनपर जरा-सा दबाव पड़ते ही खून आने लगता है, उसके किनारे सख्त और सुस्त होते हैं। नासूर ; पतला, गन्दा, पानी-सा पतला और गहरे पीले रंगका स्राव आए। देरमें भरें, ऐसे घाव, ऐसे लोगोंके घाव जो परिश्रम अधिक करते हैं और जिन्हें खाने को अच्छा नहीं मिलता। टांगकी लम्बी हड्डीपर रगड़ आनेके बाद आया घाव, यही दवा घावपर भी लगायी जाती है। जब पीब आ जाए। कंठलाल में और ग्रन्थियोंकी सूजनमें जब पीब आ गयी हो तो यह दवा बार-बार और बड़ी मात्रामें देनी चाहिए।

**कल्केरिया फॉस :** हड्डियोंके घावमें अन्तरकालीन या सहायक औषधके रूपमें काम आती है।

**कल्केरिया सल्फ :** ग्रन्थियोंके घाव, खुले घाव, रगड़, छाले, घाव, आग या गर्म पानीसे जले और बने खुले घाव, निम्नागोंके घाव जिनसे गहरे पीले रंगका और पानी जैसा पतला स्राव आए।

**कल्केरिया फ्लोर :** हड्डियोंके घाव, शिराओंके घाव; ऐसे घाव जिनके किनारे बहुत उभरे हुये हों और जिनसे गहरे बैंगनी रंगका मवाद आता हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

एक लड़कीके दोनों टाँगोंपर घाव थे। उससे पतला पानी जैसा स्राव आता था। घाव बहुत लाल और वेदनापूर्ण था। ये घाव चार सालसे उसको परेशान कर रहे थे। उनपर खुरण्ड आता था। और फिर फट जाता था। नींद भी ठीक न आती थी। चलने और हरकतसे सख्त दर्द आता था। वास्तवमें घाव बहुत खराब किस्मके थे।

उसे **साईलीसिया** ६x और **कल्केरिया फॉस** ६x दिनमें ३-३ बार दिया गया। घावोंपर पट्टी बाँध दी गयी। चार सप्ताहमें दोनों घाव भर गए और वह ठीक हो गयी। —ए० पी० डेविस, एम० डी०

श्री १६ वर्ष दाईं टाँगके निम्न भागपर ३ सालसे घाव था। जो लाल और बहुत अधिक फूला हुआ था। उसके ३ मुँह थे और उनसे गाढ़ी, पीली पीव आयी थी और उसके साथ हड्डीके अनेक टुकड़े निकल चुके थे। दर्द विशेष रूपसे रातको आता था। शरीर सूख चला था, भूख न थी। सुबहके समय बार-बार खाँसी आती थी जिसमें गहरी, पीली कफ आती थी और सवेरे कमजोरी भी काफी आती थी फेफड़े ठीक थे।

उसे **कल्केरिया फॉस** ६x सुबह-शाम दिया गया। बीच-बीचमें चार दिन दवा न दी जाती थी। वह ५ मासमें ठीक हो गयी। घावपर केवल गलेसरीन लगायी जाती थी। ६ मास बाद अगपर कोई प्रवर्द्धन नजर न आया। —डा० हेनसन Allg Med Zeit.

आतशकके पुराने घावका इलाज करते हुए, मैंने देखा कि घावके आस-पास पीले रंगका ऐसा मवाद जमा है जैसे आधी सूखी क्रीम हो।

**नेटरम फॉस** देनेसे चार दिनमें वह मैल गायब हो गयी और रोगीकी हालतमें भी काफी अच्छा सुधार आया। —सी० हेरिंग।

# पेशाबकी बीमारियाँ ( Urinary Disorders )

**फैरम फॉस :** पेशाबका अपने आप, अनिच्छापूर्वक निकल जाना जबकि संकोचक पेशियाँ दुर्बल हों। रातको सोते-सोते पेशाब निकल जाना, विशेषतः बच्चोंका। पेशियोंकी दुर्बलतासे पेशाबका अपने आप अनजानेमें

निकल जाना विशेषतः औरतोंका, हर बार खाँसीके साथ पेशाब निकल जाता है। मूत्राशय प्रदाह; पहला दर्जा; जबकि दर्द, या ज्वर भी हो पेशाबका रुक जाना और उसके साथ गर्मी। पेशाब अधिक आए, बहुमूत्र।

डा० एम० डेखरे, एम० डी० लिखते हैं: दिनमें मूत्रका असह्य वेग जो खड़ा होनेसे बढ़े और उसके साथ मूत्रपथ और मसानेकी गर्दनमें दर्द भी आये। छोटे बच्चोंका पेशाब रुक जाए और इसके साथ ज्वर भी हो और खाँसते-खाँसते पेशाब अपने आप निकल जाए।

यह दवा सुबह-शाम देनी चाहिए। मसानेकी गर्दन और मूत्रेन्द्रियके अन्तिम मार्गके क्षोभके कारण पेशाब हर रोज ही अपने-आप निकल जाए।

**काली म्योर :** मूत्राशय प्रदाह, दूसरा दर्जा जबकि सूजन भी आयी हो (भीतर मवाद आ गया हो) इसके साथ जब गाढ़ा, सफेद कफ भी पेशाबमें आता हो। डा० पेल्टियरने लिखा है कि इस रोगमें खिलानेके लिये, इससे अच्छी और कोई दवा नहीं है। पुराने मूत्राशय प्रदाहमें भी मुख्य औषध है। पेशाबकी रंग गहरी, युरिकत एसिड तलछटमें जमे, जब इस रोगके साथ-साथ जिगरकी निष्क्रियता और शिथिलता भी हो।

**काली फॉस :** दुर्बलताकी अवस्थामें, भारी थकानके साथ मूत्राशय प्रदाह, पेशाब बार-बार आए, या पेशाब अधिक मात्रामें आए। बार-बार जलता-जलता पेशाब आए, स्नायविक दुर्बलता, स्नायविक दुर्बलताके कारण पेशाब अनैच्छिक रूपसे अपने-आप निकल जाए। मूत्र मार्गसे खून आए। लकवा जिसने सकोचक पेशियोंको आक्रान्त किया हो। और उसके कारण पेशाब न रुकता हो। **बड़ी आयुके** बच्चोंका अनजानमें अपने आप पेशाब निकल जाना। पेशाबकी रंगत गहरी पीली मूत्र-मार्गकी खुजली। मूत्राशय और मूत्रमार्गमें कटनके साथ दर्द।

**काली सल्फ :** डा० मिचलका कहना है कि पेरिसके डा० हेरमैनने ऑक्सलेटके लिए इस दवाका व्यवहार किया था और स्व० डा० टी० एफ० ऐलनने इसका अनुमोदन किया है।

**मैगनेशिया फॉस : जब भी खड़ा हो या चलते समय निरन्तर ही पेशाब** का वेग हो। पेशाबका आक्षेपयुक्त रुक जाना। रेत आना (शर्कराश्मरी) कैथेटरके व्यवहारके बाद दर्द आए, और ऐसा जान पड़े जैसे पेशियोंमें सुकड़ाव नहीं आया। बच्चोंका बहुमूत्र।

**नेटरम फॉस :** बालकोंका पेशाब अनैच्छिक रूपसे अपने आप निकल जाए और इसके साथ अम्ल पित्त, बहुमूत्र, पेशाबकी रंगत गहरी लाल और

इसके साथ सन्धि प्रदाह। पेशाबका बार-बार होना। मधुमेह। मूत्राशयकी कमजोरी। रेत आना (शर्कराश्मरी)।

शुसलरने अपनी पुस्तकके अन्तिम संस्करणमें लिखा है कि बहुमूत्रकी श्लैष्मिक झिल्लियोंके प्रदाहके लिए यह मुख्य औषध है।

**नेटरम सल्फ :** पेशाबमें रेत आये। लिथिक एसिड आए। पेशाबमें ईंटके जैसी तलछट आए और उसके साथ छोटे जोड़ोंका दर्द भी हो। बहुमूत्र, मधुमेह ; रातको सोते-सोते पेशाब निकल जाए या पेशाब रुक जाए।

**साईलीसिया :** पेशाबमें पीब और कफ आए, यूरिक एसिड आए ; कृमियोंके कारण और पेशियोंके कम्प या खिंचावमें पेशाब अपने आप निकल जाए। रातको पेशाब करनेके लिए उठना पड़े।

**कल्केरिया सल्फ :** मूत्राशयका प्रदाह, पुरानी हालतमें अधिक लाभदायक है। पस बने। यक्ष्मा ज्वरमें पेशाब लाल आए। आरक्त ज्वरके बाद आया वृक्क प्रदाह ( एस० लीलियेन्थल )।

**कल्केरिया फॉस :** पेशाब अधिक आए, छोटे बच्चों और बूढ़ोंका पेशाब रातको निकल जाए। **नेटरम सल्फ**के बाद काम आती है। रेत, पथरी या फास्फेट आएँ, यह दवा मूत्राशयमें नए सिरेसे पथरीका बनना रोकती है। इसके साथ सपटा या खट्टा दूध पिलाना चाहिए। पेशाब झागदार तलछट आए।

**नेटरम म्योर :** बहुमूत्र, उसके साथ शोष, शीतादके बाद पेशाबमें खून आए। पेशाब कर **चुकनेके बाद** कटनकी तरहका दर्द आए। मूत्राशय प्रदाह, चलते या खाँसते समय पेशाबका अपने-आप निकल जाना।

**कल्केरिया फ्लोर :** मूत्रत्यागका वेग बार-बार हो और मात्रामें अधिक हो। पेशाब कम और गहरे रंगका आए। उससे तेज गन्ध आए।

## चिकित्साकालीन अनुभव

डा० एम० बी, डिक्करमैनने रिपोर्ट दी है कि उन्होंने अनैच्छिक रूपसे पेशाब होनेके रोगीको **फैरम फॉस** २०० से ठीक किया। यह कष्ट उसे दिनमें होता था। रातको बिस्तरमें पेशाब कभी-कभी कम होता था। मार्गदर्शक लक्षण थे : **दिनके समय पेशाब निकल जाना।**

सकोचक पेशियोंकी दुर्बलताके कारण अपने आप पेशाब निकल जानेकी तकलीफ **फैरम फॉस**से ठीक हुई। **अमेरिकन इन्स्टीच्यूटको कारवाई।** १८८२ पृ० १८१।

डा० शुसलरने डा० जिप्परिक्तिको एक निजी पत्रमें लिखा कि उन्होंने एक

लड़केको अपने आप अनजानेमें पेशाब निकलनेकी तकलीफके लिए **फैरम फॉस** दिया था और उससे कोई लाभ न हुआ। आखिर उसके मुँहके कोनोंके पास एक दाना निकला। उसके लिए उसे **नेटरम म्योर** दिया गया और इसने दोनों शिकायतें दूर कर दी।

ओल्डन वर्गनिवासी कार्नेलिपसने पेशाव रुक जानेके एक केसकी सूचना दी है। कैथेटर डालनेसे भी पेशाव न निकला। **मैग फॉस** दिया गया जिससे उसे कुछ आराम आया। कुछ पेशाव उतरा। यह दवा पाँच दिन तक जारी रही और कोई लाभ न हुआ। तव शुसलरके आदेशानुसार **कल्केरिया फॉस** दिया गया। उसने एक ही दिनमें ठीक कर दिया।

लगभग २ मास वाद उसे दूसरा आक्रमण फिर हुआ। इस वार भी **कल्केरिया फॉस**ने तत्काल लाभ पहुँचाया।

—All Hom Zeit 1885, P 70.

डा० क्रूवैलने अनजानेमें पेशाव निकलनेके एक केसकी रिपोर्ट दी है। उन्होंने लिखा है कि जबसे मैंने डा० शुसलरकी पुस्तक पढ़ा है मै **काली फॉस** आजमानेके लिए वहुत अधीर था। क्योंकि उन्होने इसे लकवेके लिए हितकर वताया है। जिन्होंने मनोविज्ञानका अध्ययन किया है। वे जानते हैं कि लकवेका सन्देह हर जगह किया जा सकता है। मैंने अनजानेमें पेशाव निकल जानेके पाँच रोगियोंको यह दवा दी। उनमेंसे २ को कोई लाभ नही हुआ। वाकीको आश्चर्यजनक तेजीसे लाभ हुआ। मैं यह दवा पानीमें घोलकर ३ वार देता हूँ। मैने यह दवा एक ७ वर्षकी वच्ची पर आजमाई। उसे अनजानेमें अपने आप पेशाव निकल जाता था। जवतक यह दवा उसे दी जाती, पेशाव ठीक होता और जव वन्द करा दी जाती तो पेशाव अपने-आप अनजानेमें होने लगता।

मुझे एक ६० वर्षीय वृद्धके इलाजमें वडी शानदार सफलता मिली। उसे संकोचक पेशियोंका लकवा था। इलाज करानेके कुछ मास वाद वह मेरे पास आया और वोलाकि अव वह विलकुल ठीक है। परन्तु सावधानीके तौरपर वही दवा कुछ दिन और खाना चाहता है। —शुसलरसे उद्धृत

एक १० वर्षके वच्चेको पेशाव अपने आप अनजानेमें निकल जानेकी तकलीफ थी। उसे कई होमियोपैथिक दवाएँ दी गई और उनसे उसे कोई लाभ न हुआ। उसका पेशाव पीला, पानी जैसा और मात्रामें अधिक था।

**फैरम फॉस :** ६x गर्म पानीमें ३ वार दिया गया और इससे वह विल्कुल ठीक हो गया। —सी० डब्ल्यू० क्षार्कस, एम० डी०।

**अनजानेमे पेशाब अपने आप होना :** श्रीमती''' '' ३५। ३ सालसे इस रोगसे पीड़ित थी। वह उसका कोई कारण न बता सकी। वह रातको पेशाव रोक सकती थी, और दिनमें रोक न सकती थी। दिनमें अधिक मात्रामें पेशाव अपने-आप निकल जाता था। साधारणतः स्वास्थ्य अच्छा था।

उसे **फैरम फॉस** ३x दिनमें ३ बार दिया गया। एक सप्ताह बाद उसने बताया कि अब वह दिनमें बेहतर तौरपर पेशाव रोक सकती है। दवा और ३ सप्ताह तक जारी रही। तब उसने बताया कि अब मसानेपर उसका नियन्त्रण है।

लगभग ३ साल बाद उसे यह कष्ट फिर हुआ। तब भी उसे इसी दवासे लाभ हुआ। —वाइल्ड।

**पुराना वृक्क प्रदाह :** अलब्यूमन भी आता था, गुरुत्व भार १०१६ था, भारी दुर्बलता थी। धडकन और सर दर्द भी था।

**नेटरम म्योर** ६ ने बडी जल्दी असर किया। वजन भी बटा और कल्केरिया फॉसकी मददसे उसका स्वास्थ्य बहाल हो गया।

## चेचकका टीका ( Vaccination )

यदि चेचकका टीका लगानेके बाद कोई कष्ट आए तो अकेले **काली म्योर** ही काफी है। और यह सारे उपद्रव दूर कर देगा ( शुसलर ) यदि आवश्यकता हो तो इसके बाद **साईली** दिया जा सकता है।

## शिराओंके रोग ( Veins, Diseases of )

**कल्केरिया फ्लोर :** शिरा प्रसारण ; शिरा व्रण ( घोल बनाकर भी लगाएँ )। भाला गडने जैसा तेज दर्द। रोगी दर्द सहन न कर सके। शिरा प्रसारणके लिए यह प्रधान औषध है। डा० पोर्टरने लिखा है कि भग तथा डिम्वाशयकी शिराओंके फैल जानेके लिए यह प्रधान औषध है। **साईलीसिया** और **कल्केरिया फ्लोर**का अन्तर बताते हुए उन्होने लिखा है कि पिछली दवाका पेशियोंसे अधिक आकर्षण है और ठण्डकसे आराम आता है जबकि **साईली**में ठण्डकसे तकलीफ बढती है। उन्होंने फैरिंगटनके हवाले से कुछ लक्षणोंकी चर्चाकी है और बताया है कि **कल्केरिया फ्लोर** निम्नस्थ

तन्तुओंके लिए हितकर है। भरे हुए घावके पुराने निशानके आस-पास छोटे-छोटे छाले निकलते हैं। जरायुकी गर्दनपर खराश आना।

**फेरम फॉस :** अण्डकोषका शिरार्वुद जिसके साथ अण्डोंमें दर्द भी हो ; यह शिराओंके लिए प्रभावशाली दवा है। हलांकि धमनिया भी इसका प्रधान कार्य क्षेत्र है। इसने छोटे शिरार्वुदको ठीक किया है और जहाँ इसके प्रयोगका मुख्य लक्षण है : **तपकन** नवयुवकोंका शिरार्वुद।

## चिकित्साकालीन अनुभव

श्री ' १८ वर्ष, बाएँ अण्डमें हर रोज दर्द होनेकी शिकायत थी। इस दर्दके कारण वह कामसे रह गया। जाँच करनेपर अण्डकोषकी शिरार्वुद नजर आयी जो शायद निरन्तर भारी बोझ उठानेसे आयी थी।

उसे **फेरम फॉस**की हर रोज एक मात्रा दी गई और वह ५ सप्ताहमें ठीक हो गया। —डा० मेयर, स्टटगार्ट।

बोगोटाके एक चिकित्सकने टांगों और बाजुओंके शिरा प्रसारण और शिरार्वुदके एक केसकी रिपोर्ट दी है। उसे सुबह-शाम **कलकेरिया फ्लोर** ६x दिया गया और वह १५ दिनमें ठीक हो गया।

## सर चकराना ( Vertigo )

**फेरम फॉस :** सरकी ओर रक्तका अधिक सचार होनेसे सरका चकराना और चेहरेका लाल हो जाना। तपकन पर या दबावके साथ सरदर्द।

**काली फॉस :** दिमागकी खराबी या वातनाडियोंके दोषके कारण सरका चकराना और दुर्बलता। जब रोग आमाशयकी खराबीसे न हो खूनकी कमीसे चक्कर आना। खड़ा होने और ऊपरकी ओर देखनेसे चक्कर आए।

**काली सल्फ :** खड़ा होने और ऊपर देखनेसे चक्कर आए।

**नेटरम सल्फ '** जीभ पर पीली मैलके साथ सरका चकराना या मुँहका स्वाद कड़वा हो। आमाशयकी खराबी, पित्तकी अधिकता, सरका चकराना और दाईं ओर गिरनेकी प्रवणता।

**नेटरम फॉस :** आमाशयकी खराबीसे चक्कर आना, अम्लपित्त और अरुचि, जीभ पर सुनहरी रंगकी मैल आए।

**मैग फॉस :** निगाहकी खराबीसे चक्कर आना।

## चिकित्साकालीन अनुभव

वाशिंगटन निवासी डा० ई० वी० रेन्किनने 'सदर्न जर्नल आफ होमियोपैथिक अप्रेल १८८६ में एक केस प्रकाशित कराया। रोगीको कई सप्ताहसे सरमें चक्कर आता था और इसके साथ अम्ल पदार्थकी कै भी आती थी। वह **नेटरम फॉस**से एक सप्ताहमें ठीक हो गया।

उन्होंने लिखा है कि मैंने डा० शुसलरके **काली फॉस**का अधिक व्यवहार नही किया परन्तु जहाँ कही दिया, परिणाम बहुत दिलचस्प रहा।

एक ३४ वर्षीया महिलाका कई सालसे सरमें सख्त चक्कर आता था और खड़ा होने और ऊपरकी ओर देखनेसे बढता था। उसे निरन्तर यह डर सताता कि वह गिड़ पडेगी और इस डरके मारे वह अपने कमरेसे बाहर निकलनेका साहस नही करती थी। वह अनेक चिकित्साएँ कराके विफल और निराश हो चुकी थी। मैंने भी उसे कोई दवाएँ दी और किसीसे उसे लाभ न हुआ। आखिर मई १७७५ में मैंने उसे डा० शुसलर द्वारा आविष्कृत **काली फॉस**की दो मात्राएँ दीं। इससे आश्चर्यजनक लाभ हुआ। वह निर्भय होकर बाहर आने जाने लगी और घरका कामकाज करने लगी।

—शुसलरसे उद्धृत

# कै आना ( Vomiting )

**साईलीसिया :** जैसे ही बच्चा स्तन-पान करता है कै कर देता है। सुबह सर्दी लगे और कै हो जाए।

**फैरम फॉस :** खूनकी कै, चमकदार लाल खूनकी कै जो सरेसकी जम जाए। खट्टे तरलके साथ खाये-पियेकी कै। अनपच खाद्यकी कै जो खानेके बाद जल्दी या देरसे हो जाए।

**काली म्योर :** गहरे रंगके, जमे हुए खूनकी कै। गाढे, सफेद बलगमकी कै।

**काली फॉस :** मिचली, खट्टे, कड़वे खाद्य और खूनकी कै।

**नेटरम म्योर :** अम्ल पदार्थकी कै, जिसमें खाद्य न निकले। खट्टे पानी और दही जैसे जमे पदार्थकी कै। पीसी हुई कहवे जैसे गहरे रंगकी कै।

**नेटरम फॉस :** खट्टे पानीकी कै, दही जैसी कै और जीभपर पीली क्रीम जैसी पीली मैल आए।

**नेटरम सल्फ :** हरे-से मवादकी कै।

कालीन कै और मुँहका स्वाद कड़वा। ही रहे।

**कल्केरिया फ्लोर :** अनपचकी के जबकि **फेरम फॉस** दूर न कर सका हो। दाँत निकलनेके दिनोंकी के।

**कल्केरिया फॉस :** ठण्डा पानी और आइसक्रीम खानेके बाद के आना। बच्चा बार-बार के और हर समय स्तन पान करता है। दाँत निकलनेके दिनोंकी के।

## चिकित्साकालीन अनुभव

डा० डब्ल्यू० जे० मार्टिन एम० डी० ने **पन्सलवेनिया होमियोपैथिक मेडिकल सोसायटी** ( १८८६ ) के सामने दुस्साध्य केका एक केस पेस किया था। पेटमें भी दर्द होता था। वह मेग फॉस १२ से ठीक हुआ। जबकि आम होमियोपैथिक दवाएँ काम न कर सकी थीं।

एक १८ वर्षीया युवतीको वेदनाहीन केकी शिकायत थी। वह जब भी खाती, उसे के हो जाती। उसके चेहरे और श्लैष्मिक झिल्लियोंका रग पीला पड गया था। मासिक कम और देरसे होता था कोई और महत्वका लक्षण नही था। गर्भ नही था।

उसे **फेरम फॉस** ६x दिया गया। उसने जिस दिनसे यह दवा खानी आरम्भकी, उसकी के उसी दिनसे बन्द हो गयी।

(Monatsblatter.)

१ श्री आयु ५०, की ८ माससे आमाशयमें खाना खानेके एक घण्टा बाद बोझ मालूम पडता, मिचली होती, कभी-कभी के भी हो जाती और पेटमें हवा बहुत आती। **पुल्साटिल्ला, नेटरम और नक्स वा** दिए गए और इनसे कोई लाभ न हुआ। उसकी हालत और बिगडी और अब हर बार खाना खाते ही के होने लगी और कभी-कभी ३-४ घण्टे बाद के हो जाती।

उसे **फेरम फॉस**से तत्काल लाभ हुआ।

२ श्री आयु ११, दुर्बलकाय, इकहरा शरीर, बडी देरसे के की शिकायत थी। इसके साथ ही पसलियोंमें दर्द था और धडकन होती थी। ध्यानसे देखनेपर पता लगाकि उसका जिगर और गुर्दे ठीक है।

**फेरम फॉस**ने उसे ४ दिनमें ठीक कर दिया।

३ श्री...२४, मझला कद, पीला रग, हीन पोषणसे पीडित, उसे कई सप्ताहसे खाना खाते ही के हो जाती थी। वह दुर्बलकाय था और दिनमें भी सो जाता था।

**फेरम फॉस**ने उसे कुछ ही दिनमें ठीक कर दिया।

श्री ४१, रोगीकाय, नाजुक मिजाज चार साल पहलेसे आमाशय प्रदाह हुआ था और होमियोपैथिक दवासे ठीक हो गया था। तब उसे हाजमें और कमजोरीकी शिकायत थी। ६ सप्ताह पहले उसकी कष्ट वढ गयी। पेटके ऊपरी भागमें अफारा आने लगा, डकार आने लगे, कै होने लगी। सरकी ओर रक्तका सचार वढ गया और ठण्डे रहने लगे। जाँच करनेपर पता चलाकि आमाशय फूला हुआ है और स्पर्शकातर है। जिगर, गुर्दे और दिल ठीक थे।

उसे फैरम फॉस ३x तीन-तीन घण्टे वाद दिया गया और वह दिनमें ठीक हो गया।

५. श्री .३५, उसका आमाशय कई सप्ताहसे खराव था। खाना खानेके तत्काल वाद कै हो जाती थी। चेहरा भी प्रायः लाल रहता।

**फैरम फॉस** देनेके १२ घण्टे वाद उसकी कै वन्द हो गई और फिर उसे यह शिकायत कभी न हुई।

६ श्री .३०, वौना कद, खूनकी कमी, सालोंसे आमाशयकी शिकायतसे पीडित था। गत ८ सप्ताहसे उसकी यह शिकायत वहुत वढ गयी थी। कै के वाद उसे भारी दुर्वलता आती थी।

उसे **फैरम फॉस** दिया गया और वह उससे विलकुल ठीक हो गया।

७. श्री· को एक सप्ताहसे खाना खानके फौरन वाद कै हो जानेके शिकायत थी। फैरम फॉसने उसे २४ घण्टेमें ही ठीक कर दिया।

## लिखनेवालोंके हाथकी ऐंठन ( Writer's Cramp )

**नेटरम फॉस :** लिखते समय हाथ कापें ऐंठनके साथ दर्द हो। उगलियोंके जोडोंमें गठियावातका दर्द, कलाईयोंमें निरन्तर दर्द।

**काली म्योर :** लिखते समय हाथ कडे हो जाते हैं।

**क्लकेरिया फॉस :** उगलियों और कलाईयोंमें ऐंठन आए।

## काली खाँसी ( Whooping Cough )

**फैरम फॉस :** काली खाँसी जिसमें खूनकी कै हो। प्रदाहका दर्जा।

**काली म्योर :** जव जीभ पर सफेद मैल आए और खाँसीमें गाढी, सफेद कफ आए। आक्षेपके साथ थोडी-थोडी खाँसी आए।

**नेटरम म्योर :** जब खाँसीमें झागदार, साफ और रेशेदार कफ आए।

**काली फॉस :** घबडाये हुये, शर्मीले और नाजुक मिजाज बच्चोंकी काली खाँसीमें अन्तरकालीन औषधके रूपमें काम आती है। विशेषतः ऐसी काली खाँसी, जिसमें थकान आए।

**काली सल्फ :** काली खाँसी, जब कफ गहरे पीले रंगका हो।

**मैग फॉस :** काली खाँसी जब रोगका आरम्भ सर्दी-जुकामके रूपमें हुआ हो ऐंठनके साथ दौरे पडे। यह दवा निरन्तर देनी चाहिये।

**कल्केरिया फॉस :** दुर्बलकाय बच्चोंकी काली खाँसी, दाँत निकलनेके दिनोंकी काली खाँसी। दुसाध्य काली खाँसी जब शोष भी हो।

## चिकित्साकालीन अनुभव

डा० बा० एफ० बीन (इल्डेरेडो०, ओहाईओ) ने लिखते हैं : काली खाँसीकी चिकित्साके बारेमें मुझे अधिक अनुभव नहीं है। परन्तु जितना है उससे मैं सन्तुष्ट हूँ ; विशेषकर जबसे मैने शुसलरकी बायोकेमिक दवाओंसे इस रोग की चिकित्सा आरम्भकी है इन दवाओंसे खाँसी नर्म पड जाती है, दौरोंकी सख्ती टूट जाती है और उनके आनेका समय बढ जाता है। रोगीकी मुद्दत बहुत बड़े हद तक कम हो जाती है।

चिकित्साका क्रम यों है : रोगके आरम्भमें ज्वरके लिये **फैरम फॉस** और बसामय कफके लिये **काली म्योर** देता हूँ। यदि रोग आगे बढ जाय और आक्षेपिक खाँसी शुरू हो जाय तो फिर **मैग फॉस** शानदार दवा है। चूँकि जब तक चिकित्सकको बुलाया जाता है, यह दर्जा आ जाता है, इसलिए १० में ६ रोगी इसी दवासे ठीक हो जाते हैं। मै यह दवा ४-४ घण्टे बाद देता हूँ और जब दौरा पडे तो समय और भी कम कर दिया जाता है। जब रोग और कडा हो तो, लक्षणोंके अनुसार अन्य औषधियाँ भी दी जाती हैं। ऐसी हालतमें कफकी रंगत दवाका चुनाव करनेमें सहायता करती है। आमतौर पर अन्तमें **कल्केरिया फॉस** दिया जाता है क्योंकि यह बलवर्द्धक है या जब चूने लवणोंका अभाव हो तब भी यह दवा काम करती है।

**मैग्नेशिया फॉस**की मात्रा मटर जितनी और गर्म पानीमें देनी चाहिए।

क्लीवलैण्ड (ओहाईओ) निवासी डा० जे० टी० फ्रॉली लिखते हैं कि एकको काली खाँसीके समय बहुत तेज ज्वर आया और निमोनियाके लक्षण हो गए।

**काली म्योर** ३x गर्म पानीमें दिया गया और उससे तात्कालिक लाभ हुआ।

डा० सी० वी० नेर, एम० डी० लिखते हैं : १८ मासके एक बालकको काली खाँसी आखिरी दर्जेमें पहुँच गयी। होठोंपर और मुँहमें छाले पडे हुए थे। दिनमें ५ वार काले, पतले और बदबूदार पाखाने होते थे। पेटमें सख्त अफारा था। वह सूखकर काँटा हो गया था। मोवाय और चिकित्सकोंने आशा छोड़ दी थी। वह **काली सल्फ**से विलकुल ठीक हो गया।

डा० डब्ल्यू० पी० वेस्सलहेफ्ट, एम० डी० ने लिखा है : एक वालकको काली खाँसीमें **काली सल्फ**से तत्काल लाभ हुआ। मगर अगले ही दिन वायाँ कधा ऊँचा हो गया। सरको इधर-उधर हिलानेसे भारी वेदना होती थी, आगेकी ओर सर झुकानेसे कोई कष्ट नहीं होता था। यही दवा सात दिन जारी रही।

**काली खाँसीमें मैग फॉस :** १८८१ के वसन्तमें यहाँ बच्चोंमें काली खाँसीकी वीमारी फैली। १० मासके एक बच्चेको परिवारके चिकित्सक ने असाध्य वताकर दवा देनेसे इन्कार कर दिया। उसके पिताने बताया कि दिनोंमें कमसे कम १० वार खाँसीका दौरा पडता है और जब भी दौरा पडता है चेहरा सीसेकी तरह नीला पड़ जाता है और फूल जाता है।

उसे **मैग फॉस** दिया गया। पहले ही मात्राने दौरेकी तेजी तोड दी। अव दौरे वहुत नर्म पड गए। बादमें मैंने उसे **काली फॉस** और **कल्केरिया सल्फ** दिया, परन्तु इनसे हालत और अधिक विगड़ गयी। तव फिर **मैग फॉस** दिया और बच्चा फिर ठीक हो गया।

## स्त्रीरोग ( Women ; Diseases of )

### (प्रदर, लकोरिया), कष्टरज और मासिक विकार भी देखिए)

**फेरम फॉस :** कष्टरज, मासिक दर्दके साथ आए, चेहरा तमतमा जाए और नाडीकी चाल तेज हो जाए, इसके साथ अनपचकी कै जो कभी-कभी खट्टी स्वादवाली हो।

**मासिक :** रक्ताधिक्य, रक्त चमकदार लाल, यह दवा प्रतिषेधक रूपमें, मासिक होनेसे पहले ही लेनी चाहिए जबकि ये लक्षण वार-वार आते हों।

**गर्भकालीन कै :** खाये-पीयेकी जैसीकी तैसी कै मुँहका स्वाद खट्टा हो या न हो। खाद्य अनपच ही उत्थ्य निकल आता है।

**जरायु-प्रदाह :** पहला दर्जा; ज्वर, दर्द और रक्ताधिक्यको हटाने के लिये।

**योनिप्रदाह :** योनिका प्रदाह, योनिका आक्षेप, मैथुनसे योनिमें शूल हो। योनिमें अत्यधिक खुश्की, कोमलता और ऐंठन पड़े।

**काली स्योर :** मासिक बहुत देरसे आए या बिलकुल ही न आए। दब जाए, जीभ सफेद; बहुत जल्दी आए; रज अधिक आए; रक्तकी रंगत गहरी; जमा हुआ, सख्त, काला, तारकोल जैसा। मासिक बार-बार हो और अधिक दिनों तक जारी रहे।

**गर्भकालीन कै :** सफेद रंगके मवादकी कै आए।

**जरायु :** मुँह और गर्दनके घाव जब कि स्राव भी गाढ़ा सफेद और कोमल हो और ग्रन्थियों या श्लैष्मिक झिल्लियोंसे खारा स्राव हो। जरायुमें रक्त अधिक सञ्चित हो जाए। पुराना फैलाव, दूसरा दर्जा।

**प्रदह (ल्कोरिया) :** दूधिया सफेद स्राव आए, कोमल स्राव, प्रसूत ज्वरके लिए मुख्य औषध है।

**काली फॉस : अल्प : नष्टरज :** मासिक रज रुक जाए; या देरसे आए, इसके साथ उत्साहहीनता, सुस्ती और साधारण स्नायविक दुर्बलता।

**ल्कोरिया :** जलता-जलता और तीक्ष्ण स्राव आए। पीले-से रंगका, छाले डालनेवाला और संतरेके-से रंगका स्राव।

**मासिक :** कष्टरज, पीले रंगवाली, रोनी सूरतवाली, चिड़चिड़े और नर्म स्वभाववाली स्त्रियोंको मासिकका कष्टसे आना; अधिक देरसे आना; या कम आना, या मात्रामें अधिक आना, रंगत गहरी लाल या काली-सी लाल, पतला, न जमनेवाला रक्त; कभी-कभी दुर्गन्धित स्राव या रक्त आए। जरायुसे रक्त आए। बायी ओर डिम्बशूल, त्रिकभागके आरपार सख्त दर्द।

**गर्भस्राव :** वात प्रकृतिवाली स्त्रियोंमें गर्भस्रावका आशंका।

**प्रसव :** प्रसव वेदना कमजोर। प्रसूतोन्माद, प्रसूतज्वर।

**काली फॉस : ल्कोरिया :** स्राव पीला-सा, हरा-सा, चिकना, लसदार या पानी जैसा।

**मासिक धर्म :** बहुत देरसे या बहुत कम आए, इसके साथ पेटमें भारीपन की अनुभूति और अफारा, जीभपर गहरे पीले रंगकी मैल आए।

**साईलीसिया :** यह औषध विशेषतः दुर्बलकाय, कोमलग्राही, गौरवर्ण वाली, ढीली पेशियोवाली और कंठमालाकी रोगिणियोंके लिए हितकर है। वात प्रकृति, चिड़चिड़े स्वभाववाली और जिनकी त्वचा खुश्क हो। रातको पसीना अधिक आए। दूषित और अपूर्ण समीकरणवाली।

**मासिक :** तीक्ष्ण, चरपरा, तेज गन्धवाला, त्वचाको छीलनेवाला और मात्रामें अधिक। मासिक धर्मकी जगह प्रदरका स्राव आए। शरीर वर्फकी तरह ठण्डा, विशेषतः पाँव मासिकके दिनोंमें। सगमके समय मिचली हो। कामोन्माद। कमर दर्द और ऐसा जान पड़े जैसे अगोंको लकवा मार गया है। पैरोंपर दुर्गन्धित पसीना आए। सभी लक्षण गर्मीसे घट जाते हैं।

**लकोरिया :** मासिककी जगह लकोरिया (प्रदर) हो, स्तन-पान करानेके दिनोंमें वेदनापूर्ण स्राव जिसमें सहसा डक लगने जैसा दर्द भी हो। सफेदरू पानीका प्रचुर स्राव और अगोंकी खुजली। कब्ज जिसमें पाखाना फिर भीतर लौट जाए।

**प्रसव :** स्तनोंमें पीव आ जाए, पुराना नासूर, स्तनोंकी कड़ी गाँठें। बालक स्तन न ले; या स्तन-पान करते ही कै कर दे। स्तन फटे हुए और जख्मी।

**मैग्नेशिया फॉस, कष्टरज :** आम हालतोंमें प्रधान औषध है। कष्टरज या मासिक आनेसे पहले दर्द हो। योनि आक्षेप, दर्द रीढसे शुरू होकर चारो ओर फैले और गर्म कपडे पहनने या दवावसे घटे, ठण्डकसे चढे। **कष्टरज जिसमें छिछड़े निकलें**, यह दवा सुकड़े हुए गर्भाशयको ढीला करता है। इस गुणके लिये १५ ग्रेन दवा गर्म पानीमें देनी चाहिये और फिर ५ मिनटमें ढीलापन आ जाता है। और इस तरह रुकी हुयी आंवला-नाल वाहर आ जाती है।

**नेटरम म्योर ; लकोरिया :** पानी-सा जलता-जलता गर्म और क्षोभ-कारक स्राव हो। मासिक होनेके वाद या दो मासिकोके वाद दरम्यान सहसा डक चुभने जैसा दर्द आए। स्राव चिकना, लसदार और तीक्ष्ण, खालको छीलनेवाला।

**मासिक स्राव :** पतला, पानी जैसा, पीला पतला, पानी जैसा खून, मात्रामें अधिक और समयसे वहुत पहले आए जिसमें ऐसा सरदर्द आए जैसे सर फट जाएगा, भारी शोकाकुल, मुँहमें मीठी लार आए। जव स्थानीय तौरपर सिलवर नाईटरेटका व्यवहार हुआ हो।

डा० शुसलरका मत है : यह औषध उन नवयुवतियोंके लिये हितकर है जिन्हें रज न आता हो या रज वहुत कम और लम्वे अन्तमें आता हो। आमाशय शूल, मिचली, खाद्यकी कै, भारी दुर्वलता जैसे वस अभी जान निकल जायेगी, खट्टी चीजें खानेकी इच्छा, मांस, रोटी और पकाए भोजनसे अरुचि। १२ और ३० सर्वाधिक उपयोगी शक्तियाँ है।

सुवहका मांगोंकी ओर दवाव पडे।

**गर्भकालीन मिचली :** पानी जैसी, झागदार कफकी कै।

**नेटरम फॉस, ल्कोरिया :** क्रीम या दूध जैसे रंगका स्राव, तीक्ष्ण और पानी जैसा स्राव, गर्भाशयसे खट्टी गन्धवाला स्राव आए।

**गर्भकालीन मिचली :** खट्टे स्वादका ढेरका ढेर मवाद कैकी राह आ गिरे, बाझपन जिसमें तीक्ष्ण स्राव हो।

**गर्भाशय भ्रंश :** भारी दुर्बलता जैसे अभी जान निकल जाएगी; पाखाना होनेके बाद यह दुर्बलता अधिक आए।

**गर्भाशयः** में भारी दुर्बलता और सन्तापका बोध।

**गर्भाशयच्युति :** जब गठियावातका दर्द भी साथ हो।

**कल्केरिया फॉस; ल्कोरिया :** यह शरीरको बल देती है और सहायक औषधके रूपमें काम आती है। अण्डेकी सफेदी जैसा स्राव।

डा० मोसाने (Alleg Hom Zeit, 1883) में लिखा है: जब मासिक धर्म समयसे बहुत पहले आता हो, अधिक दिनों तक जारी रहता हो और मात्रामें अधिक आता हो, जो अतिरजके समान हो; विशेषतः नाजुक तबियतवाली स्त्रियोंके लिये हितकर है।

नवयुवतियोंको जब मासिक समयसे बहुत पहले, बालिग स्त्रियोंको अधिक देरसे, विशेषत. जब रोगिणीको गठियावातकी शिकायत भी हो, तो यह दवा अधिक लाभ करती। कामांगोंमें तपकन और कामवासना की अनुभूति।

**कष्टरज :** मासिक होनेसे पहले और दौरानमें प्रसव वेदना जैसी वेदना हो। मल-मूत्र त्यागके बाद गर्भाशयमें आक्षेप आए।

**कामोन्माद :** जिसमें चन्दियापर गर्मी लगे और ऐसा जान पडे जैसे वहाँ बोझ रखा है। मासिकके दिनोंमें यह कष्ट बढे। मासिक बहुत जल्दी आए, हर २ सप्ताह बाद रज आ जाए और इसके साथ कामवासना जागे।

**कल्केरिया फ्लोर : प्रसवोत्तर वेदना :** जब सुकडाव बहुत कमजोर हो।

**गर्भस्राव :** शिराओंके ढीलेपनके कारण।

**मासिक :** अतिरज, इसके साथ दर्द जिसका रुख नीचेकी हो और मासिक अधिक आए।

**जरायुभ्रंश :** जरायु और जंघाओंमें खिंचावके साथ दर्द जिसमें भारी मानसिक अशांति हो। पुराना जरायु प्रदाह।

**कल्केरिया सल्फ :** मासिक बहुत देरसे आए, अधिक दिनो तक जारी

रहे और सरदर्द भी साथ हो, अगोंमें खिचाव, फडकन और भारी दुर्बलता। गर्भ, कडवे स्वादकी कै। डा० वी० एफ० वेटसका कथन है कि जव पेडूके तन्तुओंमें पीव आ गयी हो, वह किसी पीब वनानेवाली झिल्ली तक सीमित न हो या जब नासूरकी दीवार फट गयी हो और पीव को वाहर निकालनेका रास्ता न मिला हो, तो **कल्केरिया सल्फ** ६ सर्वोत्तम दवा है।

**नेटरम सल्फ :** रज जो दर्द और सर्दीके साथ आए, तीक्ष्ण रजः मात्रामें अधिक और छालोंवाला योनि प्रदाह। रज आनेसे पहले नकसीर आए।

## चिकित्साकालीन अनुभव

लेनसिग (मिचीगन) निवासी डा० वी० डब्ल्यू० कोन्नर लिखते हैं : एक स्त्री पेडूके कोष प्रदाहसे ६ वर्षसे पीड़ित थी। वह **काली म्योर** ३x से ठीक हो गया और उसका वजन ३५ पौण्ड वढ गया।

डा० ई० एस० वेली, एम० डी० ने अतिरजके एक केसकी रिपोर्ट दी है जो **फैरम फॉस** ३xसे ठीक हुआ। उसे अतिरज था, दर्द या स्थानीय कोमलता नहीं थी। कोई मार्गदर्शक लक्षण नही था। खूनकी कमी ही इस रोगका कारण जान पडता था। —'क्लिनिक', 1886, P 374

कष्टरज : मासिक वहुत कम और देरसे आता था। **काली सल्फ** ४-४ घण्टे वाद दिया गया और इससे स्थायी आराम आया। (डब्ल्यू० एम० प्रेट, एम० डी०। —'**नार्थ अमेरिकन जर्नल आफ होमियोपैथी**' १८८६)

डा० फिलिप पोर्टरने लिखा है कि जरायुकी गर्दनकी घावका एक केस **कल्केरिया फॉस** ६x से ठीक हुआ। स्थानीय लक्षणोंके अतिरिक्त गर्दन की ग्रन्थियाँ भी फूली हुई थी, शरीर क्षीण हो गया था और कमजोरी थी। उसे यह दवा शरीर रचना सम्बन्धी परिवर्त्तनके आधार पर दी गयी थी; क्योंकि जरायुकी गर्दनपर नासूर जैसा घाव था, प्रदरका स्राव अधिक था और रंगत पीली थी —'**हैनिमैनियन मन्थली**'।

एक स्त्रीको कष्टरजके साथ-साथ स्नायुविकार भी थे। मासिकके दिनों में मासिक वहुत दर्दसे आता और सरदर्द भी होता था। इस विकारके लिए जितनी होमियोपैथिक दवाएँ हैं, वह सब खा चुकी थी और किसीसे भी उसे आराम नहीं आया था। **काली फॉस** ६x से लाभ हुआ। डी० वी० ह्विट्टियर, एम० डी० Trans Mass State Hom Med Society; १८८६)।

एक महिलाने मुझे परामर्शके लिये बुलाया। उसे हर वार ऐसा अतिरज होता था कि मौत दिखायी देने लगती थी। जाँच करनेपर पता चला कि वच्चेदानी सख्त है। और वहुत फैल गयी है। यहाँ तक कि उसने सारी योनिको घेर लिया है। उसे यह कष्ट ६ सालसे था। जव कि उसे एक वच्चा पैदा हुआ था, उसने वताया कि वच्चेदानीमें तभीसे भारीपन आ रहा है। उसे ४-४ घण्टे वाद **कल्केरिया फ्लोर** दिया गया। इससे सख्ती घट गयी। और वच्चेदानी असली हालतमें आ गयी। —ए० पी० डेविस, एम० डी०।

श्रीमती....२ को सप्ताहका गर्भ था। जो कुछ खाती तत्काल कै हो जाती। उसे **फेरम फॉस** १२x चार-चार घण्टे वाद दिया गया। उसके चार वच्चे थे और हर वार जिस समयसे गर्भ रहता उसे इसी तरहकी कै होती। और सारे गर्भकालमें जारी रहती। उसे गर्भके पिछले ४-५ मास खटियामें ही काटने पड़ते थे। इस वार भी वैसा ही हुआ। **फेरम फॉस** ने वडी हद तक कैका नियन्त्रण कर लिया और १ मास वाद एकदम वन्द हो गयी। —जी० एच० मार्टिन, एम० डी०।

श्रीमती. ..३८ कोक ६ सालसे अन्त्रावरण प्रदाह और डिम्वाशय प्रदाह की शिकायत थी। उसे इस रोगके दौरे पडते ही रहते थे जो कई-कई मास तक जारी रहते थे। एक दौरा अभी खत्म होने नही पाता था कि नया दौरा आ जाता था। जरा-सा परिश्रम करते ही या ठण्डक लगते ही दौरा पड जाता था। वह वहुत घवराई हुई और खिन्न थी।

एक दिन शामके समय वच्चेदानी और वाएँ डिम्वमें सख्त दर्द आये, जो सारे पेटभर फैल गया और सारा अग स्पर्शकातर हो गया। नाडी १२०, तापमान १०४। उसे १५-१५ मिनट वाद **फेरम फॉस** १२x और **काली फॉस** १२x दिया गया। २ घण्टे वाद दर्द कुछ घट गया। तव दवा १-१ घण्टे वाद दी गयी और यह क्रम कई दिन तक चला। आखिर दर्द और कोमलता चली गयी। इसके वाद वह कई साल तक विलकुल ठीक-ठीक रही। —जी० एच० मार्टिन, एम० डी०

कुमारी ...२० वर्ष, २ वर्षसे मासिक आनेके समय डिम्वशूलसे पीड़ित थी। वह कई जगह इलाज करा चुकी थी और **मार्फिया**के सिवा उसे कही मे कुछ न मिला और इससे जो कुछ आराम मिलता वह स्थायी सिद्ध होता।

मैंने जव उसे देखा तो वडा मन्द-मन्द खिंचावके साथ, रुक-रुककर दर्द आता था। वह वहुत जोशीली थी और हिस्टीरियाकी वीमारी भी थी।

उसे **काली फॉस** ६x पानीमें घोलकर १०-१० मिनट वाद आध

घण्टे तक दिया गया। रोगिणी सो गया और सुबह तक सोती रही। जब वह जागी तो दर्द नही था। उसे एक मास तक यही दवा दी गयी। अगला मासिक और भी कष्टके साथ आया। तब उसे **काली फॉस** १२x दिनमें एक बार एक मास तक दिया गया। इससे वह बिलकुल ठीक हो गयी।

—जी० एच० मार्टिन, एम० डी०।

श्रीमती'' '४० ; जरायु भ्रंश और स्नायुविकारसे पीड़ित थी। वह अपने स्वास्थ्यके बारेमें बहुत चिन्तित थी ; क्षीणकाय थी। जरा-सी परिश्रम सहन नहीं कर सकती थी। स्वभाव बहुत चिडचिडा था। और उसके लिए यह बात अस्वाभाविक थी। वह चिडसे बहुत कष्ट पा चुकी थी। दिमागमें रक्ताधिक्य था और स्पर्श ज्ञानकी कमी थी। इससे उनका कष्ट कई गुणा बढ गया था।

**काली फॉसने** उसे बिलकुल ही ठीक कर दिया।

—सारा एन० स्मिथ, न्यूयार्क।

## चनूने ; कृमि ( Worms )

**फेरम फॉस :** अँतरियोंके कृमि, अनपच पाखानेकी राह निकलनेकी प्रवृत्ति।

**काली म्योर :** सफेद रंगके छोटे-छोटे कृमि जो मलद्वारमें खुजली पैदा करें। जीभ सफेद। इसके साथ **नेटरम फॉस** बदल कर दें।

**कल्केरिया फ्लोर :** अँतरियोंके कृमि, गोल लम्बे कृमि या धागे जैसे लम्बे कृमि जब अम्लपित्त भी हों, या बच्चा बार-बार नाक नोचे और कभी-कभी मैंगापन आए। पेटदर्द, नींद, अशांत। मलद्वारमें खुजली ; विशेषतः रातको सोते समय, चेहरा और मुँह या नाकके आसपासकी जगह सफेद। बच्चा सोते-सोते दाँत पीसे। बहुत महीन कृमि। यह औषध सम्भवत. लैक्टिक ऐसिडको नष्ट करती है, जो कि इन कृमियोके पनपनेके लिए आवश्यक है।

### चिकित्साकालीन अनुभव

**नेटरम फॉस कृमिनाशक है :** डा० शुसलरने लिखा है कि यह औषध महान कृमिनाशक है। वार्टेविल्ले स्टेशनके निवासी डा० ए० सी० किम्बाल ने लिखा है : रोगी ५ सालका था। उसे आक्षेप पडते थे, कई चिकित्सक उसकी चिकित्सा करके निराश हो चुके थे।

उसे **नेटरम फॉस** ३ दिया गया और ३ सप्ताह तक जारी रहा। उसके पेटसे ४ फुट इंच लम्बे कोड़े निकले और सभी देखकर हैरान रह गए।

## पीला ज्वर ( Yellow Fever )

**नेटरम सल्फ :** सविराम पित्त ज्वर जबकि पित्ताधिक्य भी हो। हरे-से पीले भूरे या काले रंगके मवादकी कै।

**फेरम फॉस :** पहली दवाके साथ ज्वरके लिए अदल-बदल कर दें।

**काली फॉस :** मरणापन्नावस्था और जब शक्ति क्षीण होती जा रही हो जब गहरे रंगकी या नीले-से खूनकी कै हो।

---

चौथा भाग

# लक्षणावली ( रिपोर्टरी : Reportory )

## मानसिक स्थितियाँ और रोग

### ( Mental States and Affections )

मानसिक विकार : काली फॉस

वादके परिणाम , प्रतिक्रिया :

निराशा : कल्केरिया फॉस

दुःख ; शोक : कल्केरिया फॉस, काली फॉम

चिड : ,,

भय : काली फॉस

भय , किसी जगह या भीमें जानेका : काली फॉस

आराम आए सोनेके वाद फैरम फॉस

लालसाहीन : नेटरम फॉस

क्रोध क्षुब्ध : नेटरम म्योर

व्यग्रता : कल्केरिया फॉस, काली फॉस, नेटरम फॉम

सशंकता : नेटरम फॉस, काली फॉस, नेटरम म्योर

एकाग्रता कठिन : साईलीसिया

भावना जनित : काली फॉस

दिमागी कमजोरी जो अधिक परिश्रमसे आई हो : काली फॉस, साईली, नेटरम म्योर

चीजोंकी निरन्तर जगह वदलता रहे : मैग फॉस

सान्त्वनासे कष्ट वढ़े : नेटरम म्योर

वच्चोंका चिडचिडापन . काली फॉस

स्वभाव या मन वदलता रहे . कल्केरिया सल्फ, काली फॉस

मस्तिष्कका अपूर्ण विकास : कल्केरिया फॉस

चिल्लाना चाहे : काली फॉस

निराश, कुढन ,,

निरुत्साह : नेटरम म्योर

प्रलाप, आम : फैरम फॉस, काली फॉस, नेटरम म्योर

मदात्य ( शराबीक ) बकवास : फैरम फॉस, काली, फॉस, नेटरम म्योर

बड़बड़ाहट : काली फॉस

बेतुकी बड़बड़ाहट : नेटरम म्योर

वाचाल ; जागता रहे : ,, फैरम फॉस

खिन्नचित्त : कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया सल्फ, काली फॉस, नेटम्योर

मानसिक विक्षेप : काली फॉस

स्वस्थ होनेसे निराश : नेटरम सल्फ

कारबार सम्बन्धी निराशा . काली फॉस

विचार करनेमें कठिनाई : साईली

निराशाके बाद : कल्केरिया फॉस

जीवनसे उकताया हुआ साईलीसिया

हतोत्साहित , नेटरम सल्फ

बातचीत न करना चहे : काली फॉस

दूसरोंसे मिलना न चाहे : ,,

भयातुर ; घबराया हुआ : ,,

आवाजसे घबराये : ,, साईली

मन्दता, जाड्यया . मैग फॉस, नेट फॉस

निराशाके दुष्परिणाम : कल्केरिया फॉस

भयके ,, : काली फॉस

दुःखके ,, . कल्केरिया फॉस, काली फॉस

चिढके ,, : ,,

आकस्मिक भाव प्रवणतासे हिस्टीरियाका दौडा पडे : काली फॉस

लज्जासे चेहरा लाल हो जाना : ,,

अशक्ति : ,,

अत्यधिक लजालु : ,,

उत्तेजना , घबराया हुआ : ,,

भ्रान्त धारणाएँ : ,, नेटरम फॉस

तांग, भावना, कल्पना : ,,

गिरनेका भय : काली सल्फ ,,

भय : ,,

धन नाशका भय : कल्केरिया फ्लोर

भुलक्कड़ : कल्केरिया फॉस, मैग फॉस
चिड़चिड़ापन : ,, काली फॉस
भयका असर : काली फॉस
उपद्रवी ; खिलाड़ी : नेटरम म्योर
निराश : ,, काली फॉस
कल्पित चीजोंको पकड़नेके लिए हाथ बढाए : काली फॉस
शोक दुःखकी प्रतिक्रिया : कल्केरिया फॉस, ,,
भारी अधीर : काली फॉस
चित्तभ्रम : ,, नेट फॉस
अतीतकी स्मृतियाँ सताए : काली फॉस
रातको किसीके पाँवकी आहट सुने : नेट फॉस
घर वालोंका याद सताए : काली फॉस
भविष्यके बारेमें निराश : नेट फॉस, फैरम फॉस
वहमी : ,, काली फॉस
हिस्टीरिया : जो सहसा भावप्रवणतासे आए : ,,
चिड़चिड़े बालक : कल्केरिया फॉस ,,
ज्ञानेन्द्रियोंका भ्रम : काली फॉस
चेतना ,, मैग फॉस
फर्नीचरको व्यक्ति समझे : नेट फॉस
समझेकि मुझे भूखो मरना पड़ेगा . काली म्योर
कल्पित चीजोंको पकड़नेका यत्न : काली फॉस
विकृति स्मृति : कल्केरिया फॉस
अधीरता : काली फॉस
नाचनेकी इच्छा : नेट म्योर
हर चीजसे उदासीन : फैरम फॉस
दुविधामें : कल्केरिया फ्लोर, काली फॉस
उन्माद : फैरम फॉस, काली फॉस, साईली
क्षोभ : काली फॉस, नेटरम सल्फ, नेट फॉस, साईली
पश्चात्ताप करे : मैग फॉस
हसी : काली फॉस
अतीतको याद करना चाहे : मैग फॉस
हर चीजके काले पहलू देखे : ,,
सहसा मूर्च्छा आए : कल्केरिया सल्फ

स्मरण शक्तिका ह्रास : काली फॉस
सहसा ,, : कल्केरिया सल्फ
पागलपन : फैरम फॉस, काली फॉम
प्रसूत सम्बन्धी पागलपन : काली फॉस
पागलपनकी भावना : फैरम फॉस
खिन्नता : काली, फॉस, नेटरम सल्फ
यौवनकालीन खिन्नता : नेटरम म्योर
अन्यमनस्कता : साईलीसिया
दिमागी खराबी : काली फॉस
दिमागी जो सरपर चोट लगनेके बाद आयी हो : नेट सल्फ
अपस्मार : काली, कल्केरिया फॉस, मैग फॉस
अधिक सधा हुआ मन : काली फॉस, साईली
मन बदलता रहे : कल्केरिया सल्फ
चिल्लाए : काली फॉस
खिन्न, उदास . ,, नेट म्योर
पश्चाताप करे : **मैग फॉस**
उन्माद : **फैरम फॉस**
वहमी : : **काली फॉस, नेट म्योर**
हिस्टीरिया जैसा : **काली फॉस**
सगीतसे कष्ट बढे : **नेट सल्फ**
संयमकी आवश्यकता : ,,
घबराया हुआ, डरा हुआ . **काली फॉस**
बच्चा रातको डरे : ,,
आवाज सहन न हो : ,, **साईली,** काली म्योर
कल्पित चीजोंको पकड़नेके लिए हाथ बढाए : काली फॉस
लिखते समय अक्षर या शब्द छोड जाए : ,,
अधिक मानसिक परिश्रमसे आयी दिमागी कमजोरी : ,,
पुरानी स्मृतियाँ परेशान करें : ,,
वासना भडक उठे . नेटरम म्योर
बच्चोंका चिडचिडापन . कल्केरिया फॉस
पिनों और सूइयोंसे खेलना : साईली
बेतुकी , असम्बन्ध बातें करे : काली फॉस, नेट म्योर
दुखी और घडकन : नेट म्योर

चीख मारना : काली फॉम
ज्ञानेन्द्रियोंका भ्रम : काली फॉस, मैग फॉस
चेतनाधिक्य : काली फॉस, साईली
अत्यधिक शर्मीला : काली फॉस
आहें भरे : काली फॉस, नेट म्योर
वाद देरमें समझे : कल्केरिया फॉस
सुबकियाँ ले . मैग फॉम
सोते-सोते उठकर चल दे : काली फॉम
तरुण रोगोंमें तन्द्रा : नेट म्योर
एकान्त चाहे : कल्केरिया फॉस
चौंके ; घबराया हुआ : काली फॉस, काली म्योर
मूर्ख ; जड : कल्केरिया फॉस
तन्द्रा : काली फॉस
हिस्टीरिया जो सहसा भावप्रवणतासे आए . काली फॉस
आत्मघात करना चाहे . नेट फॉस
सशक : काली फॉस
अपने आपसे निरन्तर बातें करती रहे : मैग फॉम
बेतुकी बातें करे : काली फॉस
सोते समय „ „
वाचाल . फेरम फॉस, नेट म्योर
शरमीलापन . काली फॉस
जरा-सा काम पहाड नजर आए : फेरम फॉस
जरा-सी बातपर चीढ जाए . नेट फॉस
लिखते या बोलते समय गलत शब्दोंका व्यवहार करे . काली फॉस
गोदमें घूमना चाहे . „
रोना चाहे : „
कराहे . „
ऊगलीपन . नेट सल्फ

## सर, मस्तिष्क और खोपड़ी

### ( Head, Sensorium and Scalp )

दिमागमें खूनकी कमी काली फॉस
गेजके दाग ( इन्द्र लुप्त ) . काली सल्फ, कल्के फॉस

जब प्रसन्नचित्त हो तो शान्त से रहे : काली फॉस
सरकी ओर रक्तका अधिक संचार : फेरम फॉस, नेट सल्फ
खोपड़ीकी गाँठ : कल्केरिया फ्लोर
-दिमागपर चोट आना : काली फॉस
दिमाग जैसे ढीला है : नेट सल्फ
,, के प्रदाहका पहला दर्जा : फेरम फॉस
,, का नर्म पड़ जाना : काली फॉस
,, के कष्ट ; बालकोंके : मैग फॉस
,, की जड़में तेज दर्द : नेट सल्फ
,, में पानी आना : काली फॉस
-दिमागी कमजोरी : कल्केरिया फॉस, काली फॉस, नेट म्योर, साईली
सरदर्द जैसे कुचला गया है : फेरम फॉस
चांदपर जलन : नेट सल्फ
खोपड़ीका गुम्मड़ : कल्के फ्लोर, साईली
दिमागकी खराबीसे आयी मृगी : साईली
सरमें ठण्डकका बोध : कल्केरिया फॉस
दिमागपर चोट आना : काली फॉस
,, ,, की प्रतिक्रिया : नेट सल्फ
रक्ताधिक्यके कारण सरदर्द : फेरम फॉस, नेट सल्फ, साईली, नेट म्योर
खोपड़ीका टी० बी० : कल्केरिया फॉस , कल्के सल्फ
शीर्षशूल : नेट फॉस, नेट सल्फ
खोपड़ीपर पीले खुरण्ड : कल्के सल्फ
सरकी तर दाद : काली म्योर
रूसी : काली सल्फ, मैग फॉस, नेट म्योर, काली म्योर
सरके दायें भागमें मन्द-मन्द दर्द : फेरम फॉस
सरपर आयी चोट या गिर पड़नेका कुप्रभाव: नेट सल्फ
खोपड़ीपर खुजलीवाले दाने : नेट म्योर
सरके पिछले भागपर दुर्गन्धित दाने : साईली
गर्दनके पिछले भागके बालोंकी जड़ोंमें : नेट म्योर
-खोपड़ीपर उभार , फोड़े फुन्सियाँ : कल्के फ्लोर
सरमें कुचले जाने जैसा दर्द : मैग फॉस
-बाल झारना : काली सल्फ, नेट म्योर, साईली
कंघी करनेसे दर्द हो : नेट सल्फ, नेट म्योर, साईली

ब्रह्मरन्ध्र ( तालु ) खुला रहे : कल्के फॉस, साईली

सर जैसे भरा हुआ है : कल्के फॉस

दिमागकी जडमें दाँतोंसे कुतरने जैसा दर्द : नेट सल्फ

सरके पिछले भागमें सन्तापपूर्ण दुखन : काली फॉस

छूनेसे ठण्डा लगे : कल्के फॉस

बडी हड्डी अलग रहे : ,,

अपने आप आगे झुकाए ( हिले ) : नेट म्योर

दबाव : कल्के फॉस

चाँदपर दबाव और गर्मी : नेट फॉस

बच्चोंके सरपर पसीना आए : कल्के फॉस, साईली

सरदर्द जिसके साथ खोपडीपर गाठें निकलें : साईली

चक्कर आए जैसे गिर पडेगा : नेट सल्फ

मासिकके बाद और पहले : नेट म्योर

चलते समय : ,,

पित्तातिसार : नेट सल्फ

सुबह मुँह कडवा रहे : ,,

पित्तकी वमन : ,,

पेट दर्द : ,,

कब्ज : नेट म्योर

सरमें ठण्डक लगे : कल्के फॉस, साईली

निराशा : काली फॉस

तन्द्रा : नेट म्योर

जडता : कल्के फॉस

जैसे आमाशय खाली है . काली फॉस

कुचले जाने जैसा दर्द : मैग फॉस

थकान : काली फॉस

जैसे मूर्च्छा आयगी और मिचली होगी : कल्केरिया फ्लोर

अफारा . कल्केरिया फॉस

भुलक्कड : ,,

सर जैसे भरा हुआ है : कल्के फॉस

जीभ गन्दी : फेरम फॉस

सफेद कफ थूके : काली म्योर

पानी-सी कफ थूके : नेट म्योर

चिड़चिड़ापन : काली फॉस
लारकी अधिकता : नेट म्योर
मिचली : कल्केरिया सल्फ, नेटरम फॉस
और सर्दी लगे : मैग फॉस
निगाहके दोष : ,,
आँसूकी अधिकता : नेट म्योर
चाँदपर तपकन : नेट सल्फ
थकानकी अनुभूति : काली फॉस
आँखें और चेहरा लाल : फैरम फॉस
भ्रमणशील दर्द : काली सल्फ, मैग फॉस
गोली लगनेकी तरह दर्द : मैग फॉस
अनिद्रा : फैरम फॉस, काली फॉस
छूनेसे कष्ट हो : फैरम फॉस
आँखके आगे अगारे टूटे : मैग फॉस
डक लगनेकी तरह दर्द : ,,
अगड़ाइयाँ आएँ : काली फॉस
आक्षेपयुक्त लक्षणोंका झुकाव : मैग फॉस
तपकनकी अनुभूति . फैरम फॉस, साईली
चक्कर आए : फैरम फॉस, नेट सल्फ, साईली
कै : काली म्योर
पित्तकी . नेट सल्फ
थिकनी : नेट फॉस
खट्टी : ,,
पारदर्शी कफ : कल्केरिया फॉस, नेट म्योर
अनपच खाद्य : फैरम फॉस
थकान आए . काली फॉस
सफेद कफकी : काली म्योर
जम्हाइयाँ . काली फॉस
मासिक धर्मके वाद : नेट म्योर
चलनेके वाद : ,,
मौसममें परिवर्त्तन आनेसे कष्ट वढ़े : कल्केरिया फॉस
सर दर्द वढे सर्दी लगनेसे . ,,
परिश्रम ,, : साईली

शामको बढे : काली सल्फ
गर्मीसे ,, : कल्के फॉस
प्रकाशसे ,, : साईली
मानसिक परिश्रमसे बढ़े : कल्के फॉस, मैग फॉस, माईली
हरकतसे ,, . नेट सल्फ, फैरम फॉस
सरको इधर उधर हिलानेसे या पीछे झुकानेमे : काली सल्फ
आवाजसे : साईली
टोपीके दबावसे : कल्के फॉस
पढनेसे : नेट सल्फ
सरके हिलानेसे : फैरम फॉस
झुकनेसे : ,,
गर्म घरमें : काली सल्फ

**सरदर्द** सुखद उत्तेजना से घटे : काली फॉस
ठण्डक ,, . फैरम फॉस
खुली, ठण्डी हवामें ,, : काली सल्फ
खानेसे : काली फॉस
बाहरी गर्मसे : मैग फॉस, साईली
चहलकदमीसे . काली फॉस
नकसीर आनेसे फैरम फॉस
खामोशीसे : नेट सल्फ
सरको गर्म कपड़ोंसे लपेटनेसे : साईली
जैसे आँखोंमें कील ठोका जा रहा है : फैरम फॉस

**सरदर्द** जो शामको शुरू हो : काली सल्फ
,, सुबह ,, . नेट म्योर
,, मासिकसे पहले और बादमें आए : ,,
,, जिसमें दिखाई देना बन्द हो जाए : फैरम फॉस
,, जो नजलेसे हो : नेट म्योर
पुराना सरदर्द : कल्के फॉस, नेट म्योर, साईली
ठण्डकसे बढे : कल्केरिया फॉस
,, घटे : कल्केरिया फॉस

**सरदर्द** सुबह बढ़े : नेट म्योर, नेट सल्फ, नेट फॉस
,, रक्ताधिक्यके कारण : फैरम फॉस, साईली
,, खुली, ठण्डी हवामें घटे : काली सल्फ

सरदर्द जो मन्द-मन्द : नेट म्योर
,, भारी ; चन्दिया पर : फैरम फॉस
,, दाँत निकलनेके दिनो : कल्के फॉस
,, खाते समय : काली फॉस
,, मासिकके दिनोंमें हो : नेट म्योर, नेट सल्फ
,, शामको बढ़े : काली सल्फ
,, जो पेटके क्षोभसे आए : साईली
,, जो ऊपरसे नीचे को आए : कल्के फॉस
,, गठियावातकी प्रवणता : फैरम फॉस, नेट सल्फ
,, भूखसे : साईली
,, सरपर चोट आनेसे : नेट सल्फ
,, रक्तादि धातुओंके क्षयसे : कल्केरिया फॉस, नेट म्योर
,, दिमागी मेहनतसे : मेग फॉस, साईली
,, वातनाडियोंकी थकानसे : साईली
,, गर्मी अधिक लगनेसे : ,,
,, सूरजकी गर्मीसे : फैरम फॉस
,, पेशानीमें : नेट फॉस
,, आमाशयकी खराबीसे : कल्केरिया फॉस, नेट सल्फ, साईली
,, जैसे सरपर हथौड़े बरस रहे हैं : नेट म्योर ; फैरम फॉस
,, भारीपनके साथ : नेट म्योर ।
,, रुक-रुक कर आए : मैग फॉस
,, दोपहर तक रहे : नेट म्योर
,, मासिकके दिनों और भूखके साथ : काली फॉस
,, पुराना : नेट म्योर, साईली
,, गर्दनकी जड़ और चाँदपर : साईली, मैग फॉस
,, वातज : का फॉस, मैग फॉस
,, स्नायविक : ,,
,, सरके पिछले भागका : का फॉस ; मैग फॉस , साईली
नेट सल्फ
,, जो रीढ़ तक जाए . मैग फॉस
,, दूषित धातुवालोंका : नेट म्योर, साईली
,, बच्चोंका : कल्के फॉस, फैरम फॉस

सरदर्द जो पीले शरीर और कोमल स्वभाव वालोंका : काली फॉस
„ कंठमालाके रोगियोंका : साईली
„ छात्राओंका : कल्के फॉस ; नेट म्योर
„ छात्रोंका : काली फॉस, मैग फॉस
चन्दिया पर : मैग फॉस ; नेट म्योर
अतिरजके दिनोंका : फैरम फॉस
सुबह जागने पर : नेट फॉस
दौरोंकी शक्लमें : मैग फॉस
गठियावात : कल्के फॉस, काली सल्फ, मैग फॉस, साईली
सरदर्द दाईं ओरका : फैरम फॉस
रोज आनेवाला पुराना सरदर्द : कल्के फॉस, फैर फॉस, काली म्योर, नेट फॉस, नेट सल्फ, कल्के सल्फ, काली फॉस

सरदर्द जो सहसा आ जाए : नेट सल्फ
„ जो खोपडीके पास अधिक हो : कल्के फॉस
„ पर गर्मी लगे : नेट सल्फ ; नेट फॉस
आधी सीसी : नेट म्योर
दिमागमें पानी आना : कल्के फॉस , काली फॉस ; नेट म्योर
खोपडी पर खुजली वाले दाने : नेटरम म्योर
„ गाठें निकले : साईली
दिमागके पर्दोंका प्रदाह : फैरम फॉस , काली म्योर
मुँहमें लार अधिक आए : नेट म्योर
पानी-सा कफ थूके : „
आवाज सहन न हो : काली फॉस ; साईली ; काली म्योर
सरमें आवाजें हो : काली फॉस

सरदर्द नकसीरसे घटे : फैरम फॉस
ब्रह्मरंध्र खुला : कल्के फॉस , साईली
जो आँखके पार हो जाए : काली फॉस
„ गर्मीसे बढ़े : कल्के फॉस
„ ठण्डकसे „
„ सर हिलाने और झुकनेसे : फैरम फॉस
„ जैसे खोपड़ी भरी हुई है : नेटरम फॉस
दर्द जो सरके चारो ओर विशेषतः पेशानीमें हो : कल्के सल्फ
कुचले जानेकी तरह : फैरम फॉस

सरदर्द जो नियत समय पर आए : नेट म्योर

„ जिसमें गडन हो : कल्के फॉस , फैरम फॉम

„ जागह बदलनेवाला, गोली लगनेकी तरह, डक लगने जैसा : मैग फॉम

सूई गडने जैसा : फैरम फॉम

सरकी ओर रक्तका अधिक प्रवाह . फैरम फॉम

सरके लक्षणोंके साथ मुँहमें लार अधिक आए : नेट म्योर

बच्चोंके सरकी दाद जिससे पीला स्राव आए : कल्के सल्फ, काली सल्फ, काली म्योर

खोपड़ीसे परत झडे : काली सल्फ

„ रुसी झडे : मैग फॉस ; नेट म्योर, काली म्योर, काली सल्फ

„ दाने निकलें : फैरम फॉम

„ खुरदरापन : मैग फॉम

„ खुजली हो : कल्के फॉस, काली फॉस

बालोंकी जड़ोंमें खारिश वाले दाने : नेट म्योर

खारिश वाले छाले : साईली

तर दाने : काली सल्फ

स्पर्शकातर : नेट सल्फ

ठण्डक और स्पर्श सहन न हो : फैरम फॉस

सन्तापपूर्ण दुखन : कल्के फॉम

लसदार दाने : काली सल्फ

पीववाले दाने : कल्के सल्फ, साईली

तर दाद : काली सल्फ, साईली

घाव : कल्के फॉस

सख्त किनारोंवाले घाव : कल्केरिया फ्लोर

परतवाले घाव : काली सल्फ, नेट म्योर

खोपडीके कठमाला जैसे घाव : कल्के फॉम

„ जैसे फट पडेगी : नेट म्योर

सरमें जेसे दवाव पड रहा है : नेट सल्फ

तपकन : फैरम फॉम

छूनेसे सन्तापपूर्ण कष्ट हो : नेट सल्फ

आक्षेपयुक्त लक्षण : मैग फॉस

काँटा गडने जैसा दर्द : फैरम फॉस

धूप लगनेका दुष्परिणाम : „

लू लगना : नेटरम म्योर
खोपड़ीकी खालमें पीव आ जाना : कल्के फॉस, साईली
बच्चोंके सरपर पसीना आ जाना „ „
खोपड़ीकी हड्डियोंमें चीरने-फाड़नेकी तरह का दर्द : कल्के फॉस
आक्षेपयुक्त लक्षणोंका झुकाव : मैग फॉस
चंदिया सर्द हवा सहन न करे : फैरम फॉस
पारदर्शी बलगमकी कै : नेट म्योर, फैरम फॉस
सोकर ताजगी न आए और उसके साथ सरदर्द : काली फॉस, नेट म्योर
चक्कर आना : कल्के फॉस, फैरम फॉस, काली फॉस, नेट सल्फ, साईली
चक्कर आए स्नायविक थकानसे . काली फॉस
„ अनीमिया „ . „
„ बुढापे . „ कल्के फॉस
„ कानकी खराबीसे . साईली
हरकतसे और चलते समय : कल्के फॉस
ऊपर देखनेसे : काली सल्फ, काली फॉस
खड़ा होनेसे : „ „
आमाशयकी खराबीसे . नेट फॉस
सरकी ओर अधिक रक्त जानेसे : फैरम फॉस
बाईं ओर गिरनेका झुकाव : साईली
मुँहमें खट्टी झाग आए : नेट फॉस
पारदर्शी चिकनी „ : फैरम फॉस
अनपच खाद्यकी कै हो : नेट म्योर
सरके पिछले भागपर बोझकी अनुभूति : काली फॉस
खोपड़ीपर पीली खुरण्ड आए : कल्केरिया सल्फ

## आँख ( Eye )

कनीनिकाका घाव . कल्के सल्फ , साईली, काली म्योर , काली सल्फ
पपोटोंके आक्षेपयुक्त विकार . कल्के फॉस, मैग फॉस
आँखपर चोट आनेके बाद . कल्केरिया सल्फ
पपोटोंका सट जाना : नेट फॉस साईली
हीन दृष्टि , अधापन . कल्के फॉस
पाँवका पसीना दब जानेके बाद धुँध . साईली
„ डिफ्थेरिया : काली फॉस

भीतरी पर्देमें पीव आना : कल्केरिया सल्फ, काली म्योर ; साईली
टकटकी लगाकर देखना : काली फॉस
पेशियोंकी दुर्बलतासे आयी हीन दृष्टि : नेट म्योर, काली फॉस, मैग फॉस
आँखके आगे काले धब्बे आयें : काली फॉस
पलकोंकी सूजन . नेटरम म्योर ; साईली
कनीनिकाका छाला : नेट म्योर
छाले जैसे हुए करे : नेट फॉस , नेट सल्फ
खूनकी तरह लाल आँखों : नेट फॉस ; फैरम फॉस , नेट म्योर
आँखें अयकना : काली फॉस, साईली
पपोटोंके आस पास फोडे : साईली
पपोटोंके सिरेकी जलन : नेट सल्फ
आँखोंमें जलनकी अनुभूति : फेरम फॉस
गैसकी रोशनीमें आखें काम न दें : कल्के फॉस
कोये (कोने) का प्रदाह : कल्के सल्फ
मोतिया : कल्केरिया फ्लोर, कल्के फॉस , काली सल्फ , काली म्योर
„ पाँवका पसीना दब जानेके बाद साईली
दृष्टिदोष जिसमें हर चीज रंगीन दिखायी दे : मैग फॉस
पलकोंका स्नायुशूल : नेट म्योर
बायी आँख „ : साईली
**सफेद पर्दा** लाल या पीला : नेट म्योर , नेट सल्फ
„ का प्रदाह : कल्के फ्लोर , फैरम फॉस ; काली सल्फ
नेट म्योर, नेट फॉस
„ पुराना प्रदाह : नेट सल्फ
कुकर : नेट फॉस
सफेद कीचड आए : नेट म्योर
हरा „ : नेट सल्फ
पीला, क्रीम जैसा . नेट फॉस
छाला : कल्के सल्फ
पुतलियाँ सुकडी हुई : मैग फॉस
**कनीनिका का घाव** : कल्के सल्फ , साईली ; काली सल्फ, काली म्योर
पहला दर्जा : फैरम फॉस
छाला : नेट म्योर, काली म्योर
अपारदर्शी : कल्के फॉस, साईली

दागदार : कल्के फ्लोर : नेट सल्फ

सफेद : नेट म्योर

गहरा घाव : कल्के सल्फ, कल्के फॉस, साईली

कंठमाला जैसा घाव : कल्के फॉस, नेट म्योर

चौड़ा ; कम गहरा : काली म्योर

धुंधला : कल्के सल्फ

पपोटोंपर पीला खुरण्ड जमे : काली सल्फ

,, के आसपास रसौलियाँ : साईली

आँखके आगे काले धब्बे आएँ : मैग फॉस, काली म्योर

चक्षुतालका धुंधलापन : काली सल्फ

धुंधली नजर : नेट म्योर ; नेट फॉस , मैग फॉस

डिफ्थेरिया जनित भैंगापन : काली फॉस

एकके दो दिखायी दें : मैग फॉस, काली फॉस

कीचड़ ( गीड ) गाढ़ा पीला : कल्के सल्फ

साफ : नेट म्योर

सफेद : काली म्योर

हरी पीव : नेट सल्फ

सुनहरी पीला ; क्रीम जैसा : नेट फॉस

पीला-हरा-सा : काली सल्फ ; काली म्योर

कोई स्राव न हो : फैरम फॉस

सूखी : कल्के फॉस

आँसूकी नाड़ीकी बीमारियाँ : साईली

पलकोंका झूल जाना : मैग फॉस, काली फॉस

शून्य दृष्टि : ,, ,, नेट फॉस

आँखोंके इर्द-गिर्द छोटे छोटे दाने : नेट म्योर

आँखें उत्तेजित, पथराई हुई दिखायी दें : काली फॉस

आँखके कोनोंके विकार साईली

आँखोमें जैसे रेत पड़ा है : काली म्योर ; काली फॉस , फैरम फॉस

भुनगे उड़ते दिखायी दें : कल्के फ्लोर

धुंध, जाला : नेट म्योर

आँखका प्रदाह ; दर्द : फैरम फॉस

आँखके ऊपर दर्द : नेट फॉस, नेट म्योर, मैग फॉस

लाल : फैरम फॉस
अगारे दिखायी दें : कल्के फ्लोर : मैग फॉस
जैसे आँखमें कोई विजातीय द्रव्य आ गया है : कल्के सल्फ
प्रकाश सहन न हो : मैग फॉस
खिचाव आए : काली फॉस
आँखके गोलेका दर्द ; उन्हें घुमानेसे बढ़े : फैरम फॉस
,, हरकत करनेसे बढ़े : ,,
,, सन्ताप : काली फॉस
आँखके गोलेमें निरन्तर वेदना : कल्केरिया फ्लोर
आँखोंमें खुजली : मैग फॉस
,, सहसा डक लगने जैसा दर्द : नेट म्योर
,, सन्तापपूर्ण कष्ट : काली फॉस
अंजनहारी : साईली
धुंध : नेट म्योर
आधी चीज दिखायी दे : कल्केरिया सल्फ
उपतारा प्रदाह : काली म्योर , नेटरम म्योर
आभ्यान्तरिक कनीनिका प्रदाह . कल्के फॉस ; काली म्योर
,, छालेदार : कल्के सल्फ, साईली
**आँसू** आएँ : मैग फॉस , नेट म्योर , नेट सल्फ
,, तीक्ष्ण : नेट म्योर
,, जलते-जलते : नेट सल्फ नेट फॉस
,, छोटे-छोटे छालों समेत : नेट म्योर
,, स्नायुशूल सहित : नेट म्योर
,, सिल्वरनाईटरेटके व्यवहारके बाद : नेट म्योर
आँसूकी नाडीका सुकड़ाव : नेट म्योर
चक्षुतालका धुंधलापन : काली सल्फ
पढ़ते समय अक्षर सट जाएँ : नेट म्योर
कानके बाद निगाहकी कमजोरी : काली फॉस
डिफ्थेरिया ,, ,, : ,,
आँखका स्नायुशूल जो गर्मीसे घटे : मैग फॉस
आँखके गोलेके ऊपरका स्नायुशूल : मैग फॉस, फैरम फॉस
चक्षुगोलककी स्थिरता : मैग फॉस
आँसूकी नाडीमें रुकावट पढ़ना : नेट म्योर

अपारदर्शी कनीनिका : कल्के फॉस , साईली

**आँख आना ( अभिष्यन्द )** ; क्रीम जैसा कीचड आए : नेट फॉस

गाढा पीला ,, : कल्के सल्फ

,, नवजात शिशुओंका : काली सल्फ

,, कंठमाला : नेट फॉस

**चक्षुगोलक**का नासूर : साईली

,, में दबाव और सन्ताप : ,,

,, में दर्द, जैसे परखच्चो, अँटकी हुई है : कल्के सल्फ

आँखमें दर्द : फैरम फॉस

,, जो हरकत करनेसे बढे : फैरम फॉस

,, स्नायुशूल : मैग फॉस, नेट म्योर

,, चमक लगे : कल्के सल्फ ; काली म्योर, मैग फॉस

,, चटाख या कडकडाहटके साथ दर्द : कल्के फॉस

ऊपरी पपोटोंका लकवा : काली फॉस , मैग फॉस

पुतलियाँ सुकडी हुई . मैग फॉस

आँखसे पीव जैसा कीचड़ (स्राव) आए : कल्के सल्फ : काली सल्फ

आँख लाल : फैरम फॉस ; काली म्योर

चक्षुपटल प्रदाह : कल्के सल्फ ; फैरम फॉस ; काली म्योर

आँखके आसपास जलन हो : नेट म्योर

कंठमालीय अभिष्यन्द : नेटरम फॉस

आँखमें जैसे छडी रखी है : काली फॉस

निगाह धुँधली : नेट फॉस

**कनीनिका** पर दाग : कल्के फ्लोर

,, सफेद दाग : नेट म्योर

,, काला दाग : मैग फॉस

आक्षेपयुक्त भैंगापन : मैग फॉस

अँतड़ियोंके क्षोभसे आया भैंगापन : नेट फॉस

कुकरे : काली म्योर

निगाहकी कमजोरी : काली फॉस

सफेद पर्दा पीला : नेट सल्फ

आँखसे स्राव आए कल्के सल्फ ; काली म्योर, काली सल्फ

# कान ( Ears )

कानके आसपासकी हड्डियोमें दर्द : कल्केरिया फॉस
खूनकी कमीसे पीडित व्यक्तियोंके कानके रोग : फैरम फॉस
क्षीणताके कारण आये कर्णरोग : काली फॉस
कानकी खुजली : ,,
सुननेकी नाडी फूली हुई : साईली, काली म्योर
नाक साफ करते वक्त कानमें कडकड आवाज हो : काली म्योर
कानोंमें जलन : नेटरम फॉस , नेट म्योर
,, भिनभिनाहट : काली फॉस , मैग फॉस
,, के छेदपर चूने जैसा जमाव : कल्केरिया फ्लोर
कानकी मध्यनालीका नजला : काली सल्फ ; नेट म्योर ; काली म्योर
कानके ढोल ,, : ,, ,,
कानके मध्यभागका पुराना नजला : ,, ,,
कानके बाहरी भागपर ठण्डक लगे . कल्केरिया फॉस
कानकी गठियाबातकी शिकायत : ,,
,, गड़बडी : काली फॉस
कर्णप्रदाह : पहला दर्जा : फैरम फॉस
निगलते समय कडकड आवाज हो : काली म्योर
चबाते ,, ,, : नेटरम म्योर
कानमें कटनेके साथ दर्द : फैरम फॉस
कानके नीचे दर्द : काली सल्फ
तर मौसममें कानका दर्द बढे . नेट सल्फ
भीतरी भागमें गहरी लाली ' फैरम फॉस
**बहरापन** , प्रदाहके कारण आया हो : फैरम फॉम
स्नायविक विकार ,, : मैग फॉस
मध्यनालीकी सूजन ,, : काली म्योर, काली सल्फ, साईली
बाहरी भागकी खराबीसे : काली म्योर
आसपासकी ग्रंथियोंमें खराबीसे . ,,
भीतरी भागकी ,, : काली सल्फ
गलेकी ,, : ,,
कर्ण छिद्र ,, : नेट म्योर, साईली

पीव खराबीसे : कल्के सल्फ ; फेरम फॉस, साईली
काली म्योर ; काली फॉस

गर्म घरमें बढे : काली सल्फ

फैला हुआ प्रदाह : फैरम फॉस

**कर्णस्राव** ; चमकदार पीला : काली फॉस

पीलेसे रंगका . ,,

गन्दा : ,,

दुर्गन्धित : काली फॉस

जिससे दर्द में कमी न हो फैरम फॉस

कफ—पीव जैसा . फैरम फॉस

पीव जैसा : कल्के फॉस, काली सल्फ ; नेट म्योर

खून मिला : कल्के सल्फ , काली फॉस

गाढा, पीव जैसा : कल्के सल्फ

पानी जैसा . काली सल्फ

ऊँचा सुदायी दे : फैरम फॉस ; काली फॉस , साईली

,, स्नायविक विकारसे : मैग फॉस

**कान दर्द** ; जलनके साथ : फैरम फॉस

तपकनके साथ : फैरम फॉस

जैसे कोई चीज बाहर आ रही है : नेट सल्फ

तेज सूई चुभने जैसा : फैरम फॉस

ग्रन्थियोंकी सूजनसे : काली म्योर, कल्के फॉस

झनझनाहटके साथ : फैरम फॉस

सफेद जीभ : काली म्योर

तर मौसममें : नेट सल्फ

खूनकी कमी वालोंके कर्णरोग . फैरम फॉस

गठियावात ,, . कल्के फॉस

कठमालावाले बच्चे : कल्के फॉस

**कर्णरोग** , जलनके साथ : नेट फॉस, नेट म्योर

भिनभिनाहट ,, . काली फॉस

कानकी ओर अधिक रक्त सचार : फैरम फॉस

बाहरी त्वचा सूखी . काली म्योर

दीवारोंमें क्षीणता आनेकी प्रवणता . ,,

सूजन . फैरम फॉस

गर्मी लगे : फैरम फॉस
नहानेके वाद प्रदाह आए : साईली
खुजली : नेट फॉस
भीतर खुजली हो : नेट म्योर
एक कान गर्म, लाल और जले : नेट फॉस
जोरकी आवाज होकर खुले : साईली
आसपास फुन्सियाँ निकलें : कल्के सल्फ
जैसे घण्टियाँ वजती हो : नेट सल्फ
गर्ज हो : नेट म्योर
कानके नीचे तेज करनेके साथ दर्द : काली सल्फ
वाहर सन्तापपूर्ण कष्ट : काली म्योर
सूई गडने जैसा दर्द : नेट म्योर ; फैरम फॉस, नेट सल्फ
जैसे कान बन्द हो गया है : काली म्योर
खिचाव और तपकन : फैरम म्योर
कानके भीतर दाने : काली म्योर
कानके भीतर मस्से जिसने छेद रोक लिया हो : काली सल्फ
ढोलकी त्वचाका उघडना तर : काली म्योर
छेदका वाहरी भाग फूला हुआ : साईली, का म्योर
गलकोषके प्रदाहके कारण आयी खरावी : का म्योर
सुननेकी शक्ति वढ जाय : काली फॉस
सुननेकी नाडीमें खुजली हो : का फॉस नेट म्योर
घाव : काली फॉस

**स्तनाकार प्रवर्द्धनके नासूर** : साइली
,, रोग : ,,
नीचे दर्द : का सल्फ
झिल्लीके विकार : कल्के फ्लोर
सूजन : फैरम फॉस

**कानकी झिल्लियाँ लाल** : फैरम फॉस
दानेदार : काली म्योर
तर : ,,
सुकड़ी हुई : ,,
मोटी : फैरम फॉस
घायल : काली फॉस

नाक और गलकोषकी रुकावट , काली म्योर
स्नायविक कर्णशूल : मैग फॉस
कानमें आवाजें आएँ, : फैरम फॉस, काली म्योर, काली फॉस
„ नाक साफ करनेपर : काली म्योर
नींद आ जानेपर : काली फॉस
दुर्गन्धित कर्णस्राव : काली सल्फ, साईली, काली फॉस, कल्के फॉस
कानके बाहर पतला मवाद जमे : नेट फॉस
आवाज सहन न हो : साईली, फैरम फॉस, काली फॉस
कान दर्द एक जगहसे फैले दौरोंके रूपमें हो और तेज : फैरम फॉस
कानमें तेज दर्द : फैरम फॉस, मैग फॉस
कानके नीचे दर्द : काली सल्फ
सुई गढनेकी दर्द : फैरम फॉस, नेट म्योर
रक्तस्रावकी प्रवणता : फैरम फॉस
कानमें तनाव : „
तपकन : „
जब गलेमें सूजन हो : काली सल्फ, काली म्योर
कर्णनाद : फैरम फॉस, काली फॉस, काली म्योर, काली सल्फ, नेट म्योर
कोष सूखे : काली फॉस
कोष परतदार बनजाए : काली सल्फ, काली म्योर, नेट म्योर, कल्के फॉस
कानके ढोलके घाव : काली फॉस
„ सफेद स्राव : काली म्योर

## नाक ( Nose )

तीक्ष्ण स्राव : साईली
गलकोषमें लसदार, चिपकनेवाले खुरण्ड : काली म्योर
अण्डेकी सफेदी जैसा स्राव : कल्के फॉस
खूनकी कमीवालोंका सर्दी जुकाम : „
नाककी हड्डीका नासूर : साईली
„ के रोग : कल्के फ्लोर
नाकमें जलन : नेट सल्फ
**नजला** : फैरम फॉस, काली म्योर
„ पुराना : नेट म्योर, साईली
„ खुश्क : काली सल्फ

नजला जो गलेमें गिरे : नेट फॉस
„ जिसमें गन्ध न आए : नेट म्योर
„ सरसराहटकी अनुभूति : फैरम फॉस
„ जो सुबह बढ़े : नेट म्योर
सर्दी जुकाम जिसमें छालेदार दाने निकले : नेट म्योर
„ जिसका असर सरपर हो : फैरम फॉस, काली सल्फ, नेट म्योर
„ का झुकाव : फैरम फॉस, कल्के फॉस
„ जो न बहे : कल्के फ्लोर, काली म्योर, नेट सल्फ, काली सल्फ
नाककी नोक सर्द : कल्के फॉस
श्लैष्मिक झिल्लियोंमें रक्ताधिक्य : फैरम फॉस
पुराना जुकाम : साईली
„ पानी जैसा स्राव : नेट म्योर
खुश्क : कल्के फ्लोर, काली म्योर, नेट म्योर
कभी खुश्क और कभी बहे : मैग फॉस, नेट म्योर
पीला, चिकना स्राव : काली सल्फ
खाँसनेसे नकसीर आ जाए : नेट म्योर
नाकमें छिछड़े जमें : नेट म्योर, साईली
„ दुर्गन्धित, पीले : काली फॉस
स्राव : तीक्ष्ण : साईली
अण्डेकी सफेदी जैसा : कल्के फॉस
साफ : नेट म्योर
त्वचाको छीलने वाला : साईली
दुर्गन्धित : का फॉस, साईली, कल्केरिया फ्लोर
हरा-सा : कल्के फ्लोर ; काली सल्फ
जोरसे आए : मैग फॉस
गाँठदार : कल्के फ्लोर
अपारदर्शी : काली म्योर
एक नथनेसे : कल्के सल्फ
पीव जैसा : „ साईली
चिकना : काली सल्फ
नमकीन · नेट म्योर
गाढ़ा : कल्के फ्लोर, कल्के सल्फ, काली म्योर, काली सल्फ, काली फॉस

खून मिला, धारीदार : कल्के सल्फ
सडा हुआ : काली सल्फ
पानी जैसा : काली सल्फ, नेट म्योर
सफेद : काली म्योर
गहरा पीला : कल्के फ्लो, कल्के सल्फ, काली सल्फ, नेट फॉस, काली सल्फ
श्लैष्मिक झिल्लियोंकी खुश्की : नेट सल्फ, साईली
हल्ककी " : नेट म्योर
मासिक धर्मके दिनोंमें नकसीर आए : नेट सल्फ
नथनोंके सिरे सन्तापपूर्ण : कल्के सल्फ
नकसीर : कल्के सल्फ, फैरम फॉस, काली फॉस, काली सल्फ, नेट फॉस, नेट सल्फ, नेट म्योर, काली म्योर, कल्के फॉस
" रक्तकी रंगत गहरी चमकदार : फैरम फॉस
" खाँसनेसे : नेट म्योर
" झुकनेसे : "
" बच्चोंकी : फैरम फॉस
" प्रवणता : काली फॉस
" दोपहर बाद : काली म्योर
सर्दीके साथ छालेदार दाने निकलें : नेट म्योर
नाकके आसपास दादके दाने : साईली
नाकके भीतरकी त्वचा छिल जाए : "
सर्दी जुकामका पहला दर्जा : फैरम फॉस
हड्डीका बढना : कल्केरिया फ्लोर
गला साफ करे तो गलेसे कफ आए : काली फॉस
मौसमी इन्फ्लूएंजा : नेट म्योर
छींकनेकी असफल चेष्टा : कल्के फ्लोर
इन्फ्लूएंजा नेट म्योर, नेट सल्फ
नाककी नोक खुजलाए , साईली, नेट फॉस
नथनोंमें खुजली हो : नेट सल्फ
घ्राणशक्तिका ह्रास . मैग फॉस, नेट म्योर, साईली
श्लैष्मिक झिल्लियोंकी सूजन : साईली
नाककी हड्डीसे गाढा स्राव आए : कल्के फ्लोर
नमकीन कफ थूके . नेट सल्फ

नासार्श ( नवासी ) : कल्के फॉस
नोक सर्द : ”
नाकमें पपड़ी जमे : नेट म्योर, साईली
” खुश्की और जलन : नेट सल्फ
उपाड : साईली
एक ओर सुन्नपन : नेट म्योर
किसी एक जगह खुजली हो : साईली, नेट फॉम
नथनोंमें ” : नेट सल्फ
” वन्द : काली सल्फ, नेट सल्फ, कलकेरिया फ्लोर, काली म्योर
नाक नोचना : नेट फॉस
नाक लाल और फुन्सियाँ : नेट म्योर
नाक फूली हुई और भीतर पपड़ी जमे : नेट म्योर
कंठमालाके रोगियोंकी नाक घायल : कल्के फॉस
नाकसे दुर्गन्ध आए : कल्के फ्लोर ; काली फॉस, नेट फॉस
पीनस : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस, काली फॉस, साईली, काली सल्फ
” आतशक जनित : नेट सल्फ
सूघनेकी शक्ति पलट या घट जाय : मैग फॉस, काली सल्फ, नेट म्योर, साईली
सर्दी-जुकामकी प्रवणता : फैरम फॉस, साईली
नकसीर जुकाम : काली फॉस
नथनोमें काटा गडने जैसा दर्द : नेट फॉस
नाक लाल : नेट म्योर
” की नोक लाल : साईली
वहुत जुकाम : नेट म्योर
नाकमें पपडी जमे : ” काली फॉस
कंठमालासे पीडित वच्चोंकी नाककी वीमारियाँ : कल्के फॉस
नाकमें सहसा डक लगने जैसा दर्द : मैग फॉस
दाएँ नथनेमें ” : फैरम फॉस
छींक आएँ : साईली, फैरम, कल्के फॉस
” जरा-सी ठण्ड लगते ही : काली फॉस
छींकना चाहे, पर न आए . कल्के फ्लोर
कंठमालाके रोगी वच्चोंकी नाक फूली हुई . कल्के फॉस
नाकके असाध्य घाव . साईली, फॉस

# चेहरा ( Face )

जवानीके कील : कल्के सल्फ, काली म्योर, साईली, काली सल्फ
कुनीनके बाद स्नायुशूल : नेट म्योर
चेहरेके लक्षण रातको बढे : कल्के फॉस
खूनकी कमी वाला चेहरा : ,,
धब्बेदार ,, : नेट फॉस
नीला-सा ,, : ,,
निचले जबडेका नासूर : साईली
गालें फूली हुई : कल्के सल्फ, काली म्योर
सख्त सूजन : कल्केरिया फ्लोर
गरम और सन्तापपूर्ण सूजन : फेरम फॉस
ठुड्डीपर दाने निकलें : नेट म्योर
हरे पाण्डुका चेहरा : कल्के फॉस, फेरम फॉस
होठोंपर छोटा ठण्डा फोडा : कल्के फ्लो, नेट म्योर
ठण्डकसे आराम आए : फेरम फॉस
चेहरेकी पेशियोंकी दुर्बलतासे चेहरा विगडे : काली फॉस
वनावटीपन नजर आए : काली फॉस
चेहरेकी चमडी फट जाए : साईली
चेहरेमें कटनके साथ दर्द : मैग फॉस
,, गन्दा दिखायी दे : कल्के फॉस
,, मटियाला : ,, साईली, फेरम फॉस
,, कैंसर : काली सल्फ
दादके दाने : कल्के सल्फ
प्रमेह ,, : नेटरम म्योर, साईली
आँखें धँसी हुई : काली फॉस
चेहरेमें जलन हो : ,,
,, छालोंसे भरा हुआ : नेट म्योर, नेट सल्फ
,, तमतमाया हुआ : फेरम फॉस
,, कीलोंसे भरा हुआ : कल्के फॉस, साईली, नेट सल्फ, काली फॉस
,, यदि पीव आ जाए : कल्केरिया सल्फ
,, चिकना : कल्के फॉस, नेट म्योर

चेहरेमें हरा-सा सफेद : कल्के फॉस
,, खुजलाए : नेट म्योर, काली फॉस
,, पीलिये जैसा : नेट सल्फ
,, सीसे जैसा : नेट म्योर
,, घूसर, मैला : काली फॉस
,, पीला : काली फॉस ; साईली, नेट सल्फ, नेट म्योर, नेट फॉस
,, कल्के फॉस, काली सल्फ, फैरम फॉस
,, मुहासे : काली फॉस, कल्के सल्फ
,, मुख्य भाग सर्द : कल्के फॉस
,, छाले निकले : कल्के सल्फ, काली फॉस
,, पेशानीपर : नेट म्योर
चेहरा लाल : नेट म्योर, काली फॉस, फैरम फॉस
विगड़ा हुआ : काली सल्फ
मैला : काली फॉस, नेट म्योर, नेट सल्फ, कल्के फॉस, फैरम फॉस
बीमारों जैसा : काली फॉस
खाते समय पसीना आए : ,, नेट म्योर
ठण्डा : कल्के फॉस
फूला हुआ : काली म्योर
छालोंवाला : नेट सल्फ
मोम जैसा : कल्के फॉस
पीला-सा : ,, नेट सल्फ, काली फॉस
चेहरेमें दर्द ; जब शरीर ठण्डा हो तो बढ़ जाए : मैग फॉस
दाईं ओर : मैग फॉस
सोनेके बाद : ,,
गर्म घरमें : काली सल्फ
शामको : ,,
हिलनेसे : फैरम फॉस
खुली, ठण्डी हवामें घटे : काली सल्फ
ठण्डक पहुँचानेसे घटे : काली फॉस, फैरम फॉस
गर्मी ,, : मैग फॉस, साईली
चेहरेमें दर्द आए, सूजनसे : काली म्योर
ऊपरके जबड़ेमें : कल्के फॉस

नीचेके जबड़ेमें : नेट फॉस
स्नायुशूल : काली म्योर, काली फॉस, नेट फॉस
गालकी हड्डीमें दर्द : नेट सल्फ
कब्जेके साथ : फेरम फॉस
भारी थकानके साथ : काली फॉस
चेहरा तमतमाया हुआ : फेरम फॉस
चेहरेपर गाँठें निकलें : साईली
मूँछें झड़े : नेट म्योर
हरा-सा दिखायी दे : कल्के फॉस
चेहरेके गोल तन्तुओंकी सख्ती : साईली
प्रदाहात्मक स्नायुशूल : फेरम फॉस
चेहरेकी खुजली : नेट म्योर, काली फॉस
चेहरेकी हड्डीका मुर्दारपन : साईली
चेहरेमें झटकोंके साथ दर्द आए : मैग फॉस
स्नायुशूलके साथ आँसू आएँ : नेट म्योर
होठोंपर पानीवाले छाले : काली फॉस, नेट म्योर
निचला होंठ फूला हुआ : काली सल्फ
त्वचा उघड़े : काली फॉस „
रसौली : साईली
ऊपरका होंठ फूला हुआ और वेदनापूर्ण : कल्के फॉस
सफेद : काली सल्फ
चेहरेकी पेशियोंकी अशक्ति : काली फॉस
„ की चमड़ीका टी० बी० : साईली, कल्के फॉस
जबड़ेकी हड्डीका मुर्दारपन : साईली
चेहरेमें बिजली जैसी तेजीसे दर्द आए : मैग फॉस
„ पीला : काली फॉस, काली सल्फ, नेट फॉस, साईली, नेट म्योर, नेट सल्फ, कल्के सल्फ
चेहरेका दर्द : मैग फॉस, नेट फॉस
„ का गठियावात : कल्केरिया फॉस
„ रोगियों जैसा : काली फॉस, „
„ आक्षेपयुक्त स्नायुशूल : मैग फॉस
„ गालोंमें पीब आनेकी आशंका : कल्के सल्फ
ठण्डा पसीना आए : कल्के फॉस

गालोंकी सूजन : काली म्योर
,, ,, सख्त : कल्केरिया फ्लोर
जबड़ेकी हड्डी ,, : ,,
कर्णमूल ग्रन्थिकी सूजन : कल्केरिया फॉस
निचले जबड़े ,, : ,,
ऊपरके होंठ ,, : ,,

## मुँह ( Mouth )

अम्लस्वाद : नेट फॉस, नेट म्योर, साईली
छाले : काली म्योर
,, जो बोरकके व्यवहारसे आए हों : नेट सल्फ
,, लारकी अधिकता : नेट म्योर
मुँहमें खाकी रंगके छाले : काली फॉस
कड़वास्वाद : नेट सल्फ, काली म्योर
मुँहके कोनोंपर मोती जैसे दाने : नेट म्योर
दुर्गन्धित साँस : काली फॉस, नेट म्योर
होंठोंमें जलन और फटे हुए : नेट म्योर
गर्मी : काली सल्फ
गले सड़े घाव : काली फॉस, काली म्योर, नेट म्योर
सड़ाव ( गेंगरीन ) : काली फॉस, साईली
पानी : काली फॉस
बच्चोंके मुँहमें सफेद घाव : काली म्योर
मुँहकी छतपर क्रीम जैसी पीली मैल : नेट फॉस
मुँहके कोनोंपर ठण्डे फोड़े : कल्के फ्लोर
,, पर खिचाव आए : मैग फॉस
फटे फटे : नेट म्योर
तरफोड़े : ,,
घायल : साईली
होंठ उघड़े : काली सल्फ
अप्रिय स्वाद : कल्के उल्फ
लार आए : नेट म्योर
होंठ सूखे : काली सल्फ

कैंसर : काली सल्फ
लार ग्रन्थियोंमें पीव आये : साईली
मसूढे फूले : कल्केरिया फ्लोर, साईली, काली म्योर, नेट म्योर
मसूढ़ोंपर छाले बने : नेट सल्फ
गर्म प्रदाहित : फेरम फॉस
नर्म : काली फॉस
सफेद : काली सल्फ
फूले हुए : फेरम फॉस
होंठ भीतरसे दुखे : कल्के सल्फ
,, फटे हुए : नेट म्योर
जलन और वेदनापूर्ण : ,,
दाँत पड जाएँ : मैग फॉस
मुहमें लार भर आए : नेट सल्फ
गर्मी लगे : काली सल्फ
आस-पास वेदनापूर्ण पाडी : काली फॉस
कच्चापन और लाली : काली म्योर
कफ आये : नेट सल्फ
खाते आए : काली म्योर
श्लैष्मिक झिल्लियाँ लाल : फेरम फॉस, काली म्योर
घाववाले छाले (क्षत) : काली फॉस
स्तनपान कराने वालियोंके मुँहके छाले : काली म्योर
होठोंके वेदनापूर्ण फटाव : नेट म्योर
तालुके गहरे घाव : साईली
तन्दुआ : नेट म्योर
मुँहका कच्चापन : काली म्योर
लार : नेट म्योर, काली फॉस
मुँह आना ( दाने पडना ) : काली फॉस
,, काली म्योर, नेट म्योर
हनुस्तंभ : मैग फॉस
कोनोंमें खिचाव आए : मैग फॉस
,, घाव : साईली
गहरे ,, : ,,
सफेद दाने : काली म्योर

कौवा लटक जाए : नेट म्योर
कौवेका प्रदाह : ,,

## जीभ और स्वाद ( Tongue and Taste )

स्वाद अम्ल : नेट फॉस
,, तीक्ष्ण : कल्के सल्फ
,, कड़वा : नेट सल्फ, काली म्योर
सुबह : कल्के फॉस
कसैला : नेट फॉस

जीभकी नोकपर छाले : नेट फॉस, नेट सल्फ, नेट म्योर
,, भूरी-सी काली फॉस, नेट सल्फ
,, चमकदार लाल और कच्ची : मैग फॉस
,, मटयाली : कल्के सल्फ
,, साफ : फेरम फॉस, मैग फॉस, नेट म्योर
,, साफ और खुश्क : मैग फॉस
,, साफ और गीली : नेट फॉम
,, क्रीम जैसी पीली : ,,
,, कटी-फटी : कल्के फ्लोर
,, गन्दी : नेट सल्फ, काली फॉस, काली सल्फ
,, झागदार : नेट म्योर
,, सुनहरी-पीली : नेट फॉस
,, मटयाली-हरी : नेट सल्फ
,, धूसर : काली म्योर
,, हरी : नेट सल्फ
,, तर : नेट सल्फ, नेट फॉस
,, चिकनी : काली सल्फ, नेट म्योर, नेट सल्फ, काली फॉस, काली म्योर
,, सफेद-गन्दी : कल्के फॉस, काली फॉम
,, किनारोंपर : काली सल्फ
,, गहरी-पीली : ,, नेट फॉस
,, जड़पर : कल्के सल्फ
,, कटी-फटी : कल्केरिया फ्लोर
,, गहरे लाल रंगकी सूजन : फेरम फॉम

जीभ गन्दी : काली म्योर ; काली फॉस, नेट म्योर
,, किनारोंपर झाग : नेट म्योर
,, लाल और सन्तापपूर्ण : काली फॉस
,, सफेद : काली सल्फ
,, थुलथुली : कल्के सल्फ
झागदार लार आए : नेट म्योर
जीभका प्रदाह : फैरम फॉस
,, खुश्कीके साथ : काली फॉस
पीव आ जाए : कल्के सल्फ
सूजन आए : काली म्योर
ऐसी अनुभूति जैसे जीभपर बाल रखा है : साईली, नेट म्योर,
,, की नोकपर ,, : नेट फॉस
सख्ती : कल्केरिया फ्लोर, साईली
गन्दा, सड़ा हुआ स्वाद : काली सल्फ
बेस्वाद : नेट म्योर
जीभपर नक्शे जैसी आड़ी तिरछी लकीरें : नेट म्योर, काली म्योर
क्रीम जैसी पीली और तर : नेट फॉस
सुन्न : कल्के फॉस, नेट म्योर
चापरा स्वाद : कल्के सल्फ
बुलबुलेवाली लार : नेट म्योर
ऐसा जान पड़े कि जीभ मुँहकी छतसे चिपक जाएगी : काली फॉस
साबुन जैसा स्वाद : कल्के सल्फ
खट्टा स्वाद ,,
बोलना कठिन : नेट फॉस
जीभ सख्त : कल्के फॉस ; नेट म्योर
बोलना सीखनेकी चाल धीमी : नेट म्योर
जीभ प्रदाहिक और खुश्क : काली फॉस
ऐसा जान पड़े कि गर्म पानीसे जल गयी है : मैग फॉस

## दाँत और मसूढ़े ( Teeth and Gums )

गर्म खाना खानेके बाद दाँत दर्द : फैरम फॉस
धीरे बोले : काली फॉस
मसूढ़ोंसे खून गिरे : काली फॉस, नेट म्योर

दाँतोंपर भूरे रंगकी मैल आए : काली फॉस
दाँत बजे ; स्नायविक : „
दाँत निकलनेके दिनोंके कष्ट : कल्के फॉस
„ बमेडे : फैरम फॉस, मैग फॉस, कल्के फॉस
खुली, ठण्डी हवामें दाँत दर्द घटे : काली सल्फ
खोखले या कीडा खाये दाँतमें दर्द : काली फॉस
दाँत मुश्किलसे निकले : साईली
देर : „
लार भी गिरे : नेट म्योर
ज्वर : फैरम फॉस
दाँतका नासूर : साईली
लार गिरे : नेट म्योर
मसूढ़ोंसे आसानीसे खून गिरे : नेट म्योर, काली फॉस
सफेद दूषित : कल्के फ्लोर
खुरदरी : „
दाँत पीसना : नेट फॉस, काली फॉस
मसूढ़ोंके छाले : नेट सल्फ
जलन : „
प्रदाहित : कल्के सल्फ
वेदनापूर्ण : कल्के फॉस, काली सल्फ
खून गिरनेकी प्रवणता : काली फॉस
लाल लकीर : „
कोमलग्राही : नेट म्योर, साईली
छूना, ठण्डक या पानी सहन न हो : मैग फॉस
स्फंज जैसे नर्म और दाँतसे अलग : काली फॉस
कापल : नेट म्योर
सफेद : काली सल्फ
मसूढेकी फूलना, पीव आनेसे पहले : काली म्योर, नेट म्योर
सख्त सूजन : कल्के फ्लोर
पीव : कल्के सल्फ, साईली
अस्पष्ट भाषण : काली फॉस
मसूढ़े प्रदाहित : कल्के फॉस
दाँत ढीले : कल्के फ्लोर, नेट म्योर, साईली

दाँतका दूषित पोषण : कल्के फ्लोर
वेदनापूर्ण मसूढे : कल्के फॉस
पीले मसूढ़े : ,,
तेन्दवा : नेट म्योर
गठियावातका दन्तशूल : नेट म्योर
लाला ग्रन्थियाँ प्रदाहित : ,,
दाँतोंका सन्तापपूर्ण कष्ट : काली फॉस
धीरे और अस्पष्ट बोले : ,,
तम्बाकू पीनेसे दाँत दर्द घटे : नेट सल्फ
गर्भकालीन दन्तविकार : कल्के फॉस
दाँत जल्दी गिरे : ,,
धीरे निकले : ,,
सन्तापकी अनुभूति : ,, फेरम फॉस
सोते-सोते दाँत पीसे : नेट फॉस, काली फॉस
ढीले : कल्के फ्लोर, नेट म्योर, साईली
जैसे बहुत लम्बे हो गए हैं : फैरम फॉस
दाँत दर्द बढे ; रातको : कल्के फॉस, साईली
,, ठण्डी चीजसे : मैग फॉस
,, खुराकसे : कल्के फ्लोर
,, शामको : काली सल्फ
,, गर्मीसे : ,,
,, बिस्तरमें लेट जानेपर : मैग फॉस
,, पेशानीके दर्दसे अदल-बदलकर आए : काली फॉस
,, घटे : ठण्डकसे : फेरम फॉस
,, ठण्डी हवासे : काली सल्फ, नेट सल्फ
,, गर्म तरलसे : मैग फॉस
,, तम्बाकूके धूएँसे : नेट सल्फ
,, पानीसे : फैरम फॉस, नेट सल्फ
,, छेद होनेकी तरहका दर्द कल्के फॉस
,, पाँव ठण्डे होनेसे : साईली
,, जगह जल्दीसे बदलनेसे : मैग फॉस, फैरम फॉस
,, रक्ताधिक्यसे : ,, ,,
प्रदाहात्मक : मैग फॉस, फैरम फॉस
स्नायविक : मैग फॉस

सरसराहटके साथ : कल्के फॉस
जगह बदले : मैग फॉस
दाँत दर्दके साथ लार आए : नेट म्योर
गोली लगनेकी तरहका दर्द : मैग फॉस
दाँतके नासूरके साथ : साईली
अपने आप आसूँ आएँ : नेट म्योर
गालें फूली हुई : काली म्योर, कल्के सल्फ
,, गर्म : फैरम फॉस

## गला ( Throat )

टॉंसिलका घाव : कल्के सल्फ, साईली
गलकोष ,, : फैरम फॉस
,, में लसदार पपड़ी आए : काली म्योर
गलेमें जलन : फैरम फॉस, कल्के फॉस
गला जैसे घुट जायेगा : मैग फॉस
पुराना गलक्षत : नेट म्योर
गला खुश्क : ,,
वक्ताओंका गलक्षत : कल्के फॉस
गलेमें रक्ताधिक्य : फैरम फॉस
गलेमें आक्षेपयुक्त सुकड़ाव : मैग फॉस
धूप : फैरम फॉस, काली म्योर, कल्के फ्लोर, कल्के फॉस, काली फॉस
टॉंसिल प्रदाहके कारण बहरापन : कल्के फॉस
निगलना कठिन : ,, फैरम फॉस
,, पड़े : मैग फॉस
निरन्तर निगलते रहना चाहे : काली फॉस
डिफ्थेरिया ; दुष्परिणाम : ,, साईली
,, नकली : नेट फॉस
,, पहला दर्जा : फैरम फॉस
,, नर्म तालुका : कल्के सल्फ
,, मुख्यौषध : काली म्योर
,, जब हवाकी नाली पीड़ित हो : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस
,, ऊँघके साथ : नेट म्योर

डिफ्थेरिया : हरी कै : नेट सल्फ
,, पीला हुआ चेहरा : नेट सल्फ
,, पानी जैसे पतले दस्त : नेट म्योर
गलेमें नजलात्मके : मैग फॉस
,, बढ़ जाए : नेट म्योर
गलगह्वर प्रदाहित : फैरम फॉस
,, वेदनापूर्ण : ,,
,, लाल : नेट म्योर
,, फूले हुए : कल्के सल्फ
निगलते समय ऐसा जान पड़े कि गलेमें गाँठ रखी है : नेट सल्फ, नेट फॉस, नेट म्योर
तालमूल प्रदाह : काली म्योर, नेट म्योर
गला सड़ा गलक्षत : काली फॉस
ग्रन्थियाँ फूली हुई : फैरम फॉस, नेट म्योर, काली म्योर, नेट फॉस, काली सल्फ
,, वाहरसे वेदनापूर्ण : कल्केरिया फॉस
,, जबड़ेके नीचेकी फूली हुई : नेट म्योर
पीवदार कल्के सल्फ, साईली
जीभका आक्षेप : मैग फॉस
गिल्हड : कल्के फॉस , कल्के फ्लोर , साईली ; नेट फॉस
,, पानी जैसे स्रावके साथ : नेट म्योर
गलेमें गर्मी लगे : फैरम फॉस
दुर्गन्धित पनीर जैसा गाँठें खाँसनेसे निकलें : काली म्योर
नमकीन कफ : काली फॉस, नेट म्योर
गलेकी घातक अवस्थाएँ : काली फॉस
गलेमें झिल्लियाँ बनें : काली म्योर
,, सख्त कफ आए : काली सल्फ
कनपेड़ और नमकीन कफ आए : नेट म्योर
स्राव : ,,
कर्णमूल प्रदाह : काली म्योर
तरल निगलनेपर घुटन आए : मैग फॉस
वेदना हो : कल्के फॉस, फैरम फॉस, काली म्योर
निगले तो वेदना हो : कल्के फॉस, फैरम फॉस, काली म्योर

तालुमें : फैरम फॉस
गलेमें : फैरम फॉस
तालु प्रदाह : ,,
,, स्पर्शकातर : नेट सल्फ
,, पीली मैल : नेट फॉस
डिफ्थेरियाके बाद आया लकवा : नेट म्योर
स्वरनाड़ियों ,, : काली फॉस
,, : साईली
पुराना : साईली
गलकोषके घाव : फैरम फॉस
सामान्य गलक्षत, जिससे पीव निकले : कल्के सल्फ
समय-समयपर : साईली
गलगह्वर लाल : फैरम फॉस
कौवा लटका हुआ : कल्के फॉस, कल्केरिया फ्लोर
,, जिससे खाँसी आए : कल्केरिया फ्लोर
नाकमें बोले : काली फॉस
आतशककी गलक्षत : काली म्योर
गलेमें पारदर्शी कफ आए : नेट म्योर
सख्त कफ ,, : काली सल्फ
खुश्क : फैरम फॉस, नेट फॉस, नेट सल्फ, काली फॉस
वायगोला दोपोपस्मार, हिस्टीरिया : ,,
गानेवालोंका गलक्षत : कल्के फॉस, फैरम फॉस
गलग्रन्थियाँ फूली हुई : साईली, कल्के फॉस, कल्के फ्लोर, नेट म्योर
मुँह खोले तो दर्द हो : कल्के फॉस
टॉसिलमें पीव आए : कल्के सल्फ, साईली
कौवा बैठा हुआ : कल्केरिया फ्लोर, नेट म्योर
कौवा प्रदाह : ,,
स्वरलोप : काली फॉस
,, सहसा और चिख निकले : मैग फॉस
गले (हलक) में कफ टपके : नेट फॉस

## आमाशयके लक्षण ( Gastric Symptoms )

अम्लकी कोमल ग्राह्यता : मैग फॉस
अम्लपित्त : नेट फॉस
खाते ही उल्टी हो जाए : मैग फॉस
भूख बढ़ जाए : कल्के फॉस, कल्के सल्फ, काली फॉस, नेट म्योर, साईली,
„ नष्ट हो जाए : फेरम फॉस, काली म्योर, नेट सल्फ, नेट म्योर,
नेट फॉस, काली सल्फ

अरुचि अम्लसे : फेरम फॉस
शराब : साईली
रोटी : नेट म्योर
काफे : फेरम फॉस, मैग फॉस
पकवानसे : नेट फॉस, काली म्योर
मछलीसे : फेरम फॉस
गर्मपेयसे : काली सल्फ
मांससे : फेरम फॉस, साईली
दूधसे : „
अरुचि : दूधसे : फेरम फॉस
खट्टी खुराकसे : „
मिठाईसे : काली फॉस
गरम खाद्यसे : साईली ; फेरम फॉस
जैसे कमरपर कुछ बँधा हुआ है : मैग फॉस
पित्तज विकार : नेट सल्फ
„ जिनमें जीभ मैली भूरी हो : काली म्योर
पित्तशूल : नेट सल्फ
सांस दुर्गन्धित : काली फॉस ; नेट म्योर
आमाशयमें जलनके साथ गर्मी : काली सल्फ ; कल्के सल्फ
प्यास : „
तंग कपडे सहन न हों : फेरम फॉस ; नेट सल्फ
आन्त्रशूल : काली सल्फ

डकार ; कड़वे : काली फॉस
खट्टे : नेट फॉम, नेट सल्फ, साईनी, काली फॉस
जलन और विरमता : मैग फॉस
गर्म पेयसे : काली म्योर
हवाके : काली फॉम
चरबीको : फैरम फॉम
अधिक भूख : काली फॉम, साईली, कल्के फॉस, नेट म्योर
मूर्च्छा आने जैसी कमजोरी : काली सल्फ
पकवान खानेसे अनपच हो जाए : काली म्योर
अफारा जिसमें खाए पिण्डके डकार आए : फैरम फॉस
हवा अधिक आए : कल्के फॉस
„ हृदय कष्टके साथ : काली फॉस
अफारा और कब्ज : मैग फॉस
पेट दर्द जिसमें डकार आनेसे शांति न हो : मैग फॉस
जिगर सुस्त : काली म्योर, नेट सल्फ
जैसे पेट भरा हुआ है : काली सल्फ
आमाशय प्रदाह : फैरम फॉम, काली म्योर
„ पुराना : काली सल्फ
„ अधिक गर्म पेयसे : काली म्योर
आमाशयशूल जो गर्मीसे और दोहरा होनेसे घटे : मैग फॉस
„ विकार : नेट फॉस
„ ज्वर : फैरम फॉस
„ घाव : नेट फॉम, काली फॉस
„ रक्त-स्राव : काली म्योर, फैरम फॉस
„ जलन हो खानेके बाद : नेट म्योर, नेट सल्फ, साईली, मैग फॉस
„ और अफारा . कल्के फॉस
„ गर्मी : काली सल्फ
„ हिचकियाँ आए : मैग फॉस, कल्के फ्लोर, नेट म्योर
„ आमाशय छिद्रकी सख्ती : साईली
„ अजीर्ण : मन्दाग्नि देखें
„ शिशु स्तन पान करते ही कै कर दे : साईली
„ हर समय स्तन पान करते रहना चाहे : कल्के फॉस
„ उत्तेजक चीजें सहन न हो : साईली

आमाशय प्रदाहके बाद पीलिया : काली सल्फ
पीलिया जो चिढ़से आए : नेट सल्फ
मुँहका स्वाद कड़ुआ और कब्ज : काली म्योर
ऊघके साथ : नेट म्योर
,, तम्बाकू पीनेकी इच्छा : नेट म्योर
मिचली : काली सल्फ, नेट फॉस, नेट सल्फ
,, कै : मैग फॉस
,, खट्टे खाद्यकी या खूनकी : काली सल्फ
,, पकवान खानेके बाद : काली म्योर
,, चक्करके साथ : कल्के सल्फ
असमीकरण ( खाया पिया अंग न लगे ) : कल्के फॉस
उदर परिधिमें दर्द : नेट म्योर
दायीं ओर कंधेके नीचे : काली म्योर
खाना खानेके बाद : नेट फॉस, कल्केरिया फॉस ; फैरम फॉस ; नेट सल्फ
पेटके ऊपरी भागमें निरन्तर दर्द हो : काली फॉस
आमाशयमें दबाव : मैग फॉस
,, जैसे भार पड रही है : फैरम फॉस
,, जलन और गर्मी : काली सल्फ, कल्केरिया सल्फ
,, पुराना जला : काली सल्फ
,, आन्त्रशूल : काल सल्फ, मैग फॉस
,, ऐंठन : मैग फॉस
,, गहराईमें दर्द : काली सल्फ
,, अफारा : नेट सल्फ
,, दबाव और भरा हुआ : काली सल्फ
,, भारी : नेट सल्फ
लाल दाग : नेट म्योर
फूला हुआ : फैरम फॉस
कोमलाग्राही : ,,
मुँहमें कफ आए : नेट सल्फ
आमाशयशूल , दबावसे : फैरम फॉस
खानेसे : कल्के फॉस
कृमियोंसे : नेट फॉस
सर्दीसे : फैरम फॉस

घटे : खानेसे : काली फॉस
कब्जके साथ : काली म्योर
अफारा : मैग फॉस, नेट सल्फ
दर्द और लार : नेट म्योर
प्यास और जलन : काली फॉस, नेट म्योर, कल्के सल्फ
शामके समय : नेट सल्फ
ठण्डे पानीसे : फेरम फॉस, काली फॉस
तृषाहीनता : काली सल्फ
के : अम्ल . नेट म्योर
ठण्डा पानी पीनेके बाद . कल्के सल्फ
आईसक्रीमसे : „
जलपानसे पहले : फेरम फॉस, साईली
पित्तकी ; नेट सल्फ
कड़वे खट्टाकी : काली फॉस
चमकदार लाल खूनकी : फेरम फॉस
जमा हुआ खून : काली म्योर
कूटे हुए कहवे जैसी : नेट म्योर, नेट फॉस
दही जैसी : „
काले खूनकी : काली म्योर
हरे-से पानीकी : नेट सल्फ, काली फॉस
स्तन पानके तत्काल बाद : साईली
के ; शिशुओंकी : कल्के फॉस
गर्भकालीन : साईली
खट्टी : फेरम फॉस, नेट म्योर, काली फॉस, नेट सल्फ
रेशेदार कफकी : नेट म्योर
गाढ़ी सफेद कफकी : काली म्योर
नमकीन, हरे-से पानीकी : नेट सल्फ
पतली कफकी : नेट म्योर
लार : नेट फॉस, नेट म्योर, काली फॉस

# पेट और पाखाना ( Abdomen and Stool )

पेट दर्द : मैग फॉस
ऐंठन : मैग फॉस
छूनेसे ठण्डा लगे : काली फॉस
ढीला ढालाढाला : कल्के फॉस
अफारा : नेट सल्फ
सख्त : मैग फॉस
बड़ा, बच्चोंका : साइली
झूलता हुआ : कल्के फ्लोर
फूला हुआ : काली फॉस, काली म्योर, मैग फॉस
धँसा हुआ : कल्के फॉस
कोमल : काली म्योर
सख्त और अफारा हुआ : काली सल्फ
मलत्यागके बाद खून आए और डंक लगने जैसा दर्द : नेट म्योर
टीका लगानेके बाद दस्त आए : साईली, काली म्योर
मलद्वारका फटाव ( नासूर ) : साईली, कल्के फॉस, नेट म्योर कल्के फ्लोर
„ भगन्दर : साईली, कल्के सल्फ, कल्के फॉस
„ के आसपास दाद : नेट म्योर
मलद्वारकी खारिश : नेट फॉस, कल्के फॉस, कल्के फ्लोर, नेट सल्फ
„ स्नायुशूल : कल्के फॉस
„ के आसपास वेदनापूर्ण घाव : कल्के सल्फ
कॉच निकले : कल्के सल्फ, काली फॉस, नेट म्योर
„ प्रवणता : फेरम फॉस
„ कच्चापन : नेट फॉस
सन्तापपूर्ण कष्ट : नेट फॉस, नेट म्योर
मस्से जैसे दाने : नेट सल्फ
अँतड़ियोंकी सुस्ती : नेट म्योर
„ श्लैष्मिक झिल्लियोंकी सुस्ती : काली फॉस
वृद्धाओंका अतिसार : नेट सल्फ
अँतड़ियोंका दर्द : नेट फॉस

डकारें अधिक तेजी गंध आए : काली सल्फ
मलान्त्रमें जलनके साथ दर्द : नेट म्योर
पेटदर्दके कारण बच्चा टाँगे समेट ले . मेग फॉस
बच्चोंका पेट फूला हुआ . साईली
हैजा : फेरम फॉस ; काली फॉस, काली सल्फ
बच्चोंका हैजा . कल्के फॉस, फेरम फॉस
पेडेकी ऐंठन : मेग फॉस
पेट दर्द जिसमें डकार आए : मैग फॉस
" गर्मी और रगड़नेसे घटे · मैग फॉस
" दोपहर होनेसे घटे . काली फॉस
" हर बार खानेका यत्न करते ही : कल्के फॉस
" दाईं जंघासे शुरू हो : नेट फॉस
" ऐंठनके साथ : मैग फॉस
" अफारेसे . नेट फॉस, मेग फॉस, काली सल्फ, नेट सल्फ
पेट दर्द के मारे दोहरा होना पड़े : मैग फॉस
" निचले भागमें : काली फॉस
" नीसक विषके कारण : नेट सल्फ
" बच्चोंका . कल्के फॉस, मैग फॉस, नेट फॉस
" जो नाभिसे चारों ओर फैले : मैग फॉस
" रुक-रुककर आए . "
जिगरमें रक्ताधिक्य : नेट फॉस
कब्ज अतिसारसे अदल बदलकर आए : नेट म्योर, नेट फॉस
" नमीके अभावसे : नेट म्योर
" मेरुदण्डके विकारसे . साईली
" अँतड़ियोंकी सुस्तीसे : नेट म्योर
" जीभ गदी . काली म्योर
" पुराना : काली सल्फ
" खूनी बवासीरके साथ . नेट म्योर
" मल निकलनेकी असमर्थता . कल्के फ्लोर
" बच्चोंकी : मैग फॉस
" बूढोंकी सुदे आएँ : फैरम फॉस
" टी० बी० ज्वर : कल्के सल्फ
" दुराग्रही : काली सल्फ, नेट फॉस

कब्ज जो भगन्दर पैदा कर दे : नेट म्योर
" हल्के रंगका पाखाना : काली म्योर
" गहरा भूरा दाग : काली फॉस
" अँतड़ियोंकी कमजोरीसे : नेट म्योर

ऐंठन : मैग फॉस, काली सल्फ

अतिसार, चीनी खानेके बाद : कल्के सल्फ
" पकवान खानेके बाद : काली म्योर
" तर मौसम : नेट सल्फ, कल्के फॉस
चेचकका टीका लगानेके बाद : साईली, कली म्योर
" फल खानेसे बढ़े : कल्के फॉस
" कब्जसे अदल बदलकर : नेट म्योर
पत्तज : नेट सल्फ
सर्दीसे : फैरम फॉस
अम्लकी अधिकतासे : नेट फॉस
मौसम बदलनेपर : कल्के सल्फ, कल्के फॉस
डरसे : काली फॉस
अँतड़ियोंकी सुस्तीसे : फैरम फॉस
तीक्ष्णमल : नेट म्योर
दुर्गन्धित हवा : कल्के फॉस, काली फॉस
झागदार : नेट म्योर
बदरंग, दुर्गन्धित : काली फॉस, साईली
हरे रगका पाखाना : नेट फॉस, कल्के फॉस, नेट सल्फ
बालातिसार : साईली, कल्के फॉस, नेट फॉस
तात्कालिक वेग, पानी-सा मल : काली फॉस
मल अपने-आप निकल जाय : नेट म्योर
वेदनाहीन : काली फॉस
पीव-सा मल . कल्के सल्फ
माड जैसा : काली फॉस
चिकना मल : कल्के फॉस, काली म्योर, नेट म्योर, काली सल्फ, कल्के सल्फ
खट्टी गधवाला मल : नेट सल्फ
अनपच : फैरम फॉस, कल्के फॉस

अतिसार ; पानी-सा मल : नेट म्योर, फैरम फॉस, नेट सल्फ, कल्के सल्फ, मैग फॉस, काली सल्फ, कल्के फॉस, काली फॉस

„ पिण्डलियोंमें ऐंठनके साथ : मेग फॉस

„ सफेद मल : नेट फॉस, काली म्योर

कमजोरीके साथ : काली फॉस

निढाल बना दे : „ कल्के फॉस

पीलिया : नेट फॉस

मल पीला, चिकना, पानी जैसा पतला, पीव जैसा : काली सल्फ

बारह एंगल अन्तका नजला : काली म्योर

पेचिश : ज्वर : फैरम फॉस

मल पीव जैसा : कल्के सल्फ

खालिस खून आए : काली सल्फ

पानी-सा मल : कल्के सल्फ

चिकना : काली म्योर

अधिक वेदनापूर्ण : मैग फॉस

दस्तके साथ : काली म्योर

पेशाब रुक जाए : मैग फॉस

आन्त्रज्वर : फैरम फॉस, काली म्योर, कल्के फॉस, काली सल्फ

आन्त्रप्रदाह : फैरम फॉस, काली फॉस

मलद्वारके चीर (नासूर) : साईली, कल्के फॉस, नेट म्योर, कल्के फ्लोर

पेट फूला हुआ : काली म्योर

पेट कटनेके साथ दर्द : नेट सल्फ

हृदय कष्ट : काली फॉस

भगन्दर और अफारा : मैग फॉस

गंधक जैसी गंध : काली सल्फ

हवा बदबूदार और आवाजसे आए : काली फॉस, कल्के फॉस

हवामें पेट घूमे : साईलीसिया

पाखाना बहुत जोरसे निकले : मैग फॉस

पित्तपथरीका बनना रोकनेके लिए : कल्के फॉस

ऐंठन, आक्षेपसे : मैग फॉस

जंघासेकी ग्रंथियाँ बढ जाए : साईली

निचली अँतड़ियोंमें गर्मी : नेट सल्फ

खूनी बवासीर : जैसे मार पड़ रही हो : नेट म्योर

खून आए : काली म्योर, फेरम फॉस, कल्के फ्लोर
वादी ववासीर : काली सल्फ, कल्के फ्लोर
पुरानी : कल्के फॉस
कटनके साथ दर्द जैसे विजली आती है : मेग फॉस
वाहरी : काली सल्फ
प्रदाहित : फैरम फॉस
अत्यन्त वेदनापूर्ण : काली सल्फ, कल्के फ्लोर
खुजलाए : काली फॉस
टपके : कल्के फॉस
सहसा डंक लगने जैसा दर्द : नेट म्योर
वृद्धाओंका पैतृक अतिसार : नेट सल्फ
हर्निया : नाभि : कल्के फॉस
अटकी हुई, प्रदाहित : फैरम फॉस
मलत्यागका अधूरा वेग : कल्के सल्फ
मलद्वारकी खारिश जो रात को वढे : नेट फॉस

**पीलिया** : चिडके वाद : नेट सल्फ
सर्दी लगनेके वाद : काली म्योर
आमाशयका नजला : काली सल्फ
आमाशय और पाकाशयके नजलेसे आया : काली म्योर, नेट म्योर
अतिसारके साथ : नेट फॉस
जिगर : सुस्त : काली म्योर
रक्ताधिक्य : नेट सल्फ
विक्षुब्ध : ,,
वेदनापूर्ण : कल्के सल्फ
सख्त : नेट फॉस
सूई गडने जैसा दर्द : नेट सल्फ
स्पर्शकातर . ,,

दाँत निकलते बच्चोंका शोष : कल्के फॉस
मध्यान्त्र ग्रथियाँ वढ जाएँ : कल्के फॉस
नाभि जैसे खाली है : ,,
मलद्वारका स्नायुशूल : ,,
,, के वेदनापूर्ण घाव : कल्के सल्फ

जिगरके आसपास दर्द : कल्के सल्फ
नाभिके आसपास दर्द, चीरा मारे : कल्के फॉस, मैग फॉस
„ त्रिक भागमें : „
जिगर और तिल्लीमें : नेट म्योर, काली फॉस
अंतड़ियोंमें : मैग फॉस, नेट फॉस
दाएँ जघासमें : नेट फॉस
मलान्त्रका आंशिक लकवा : काली फॉस
अन्त्रवरण प्रदाह : फैरम फॉस, काली म्योर, काली सल्फ
काँच निकले कल्के सल्फ, काली फॉस, नेट म्योर, फैरम फास
„ प्रदाह : फैरम फॉस
मलान्त्रमें जलन . नेट फॉस
मलान्त्रमें हर बार मलत्यागके बाद दर्द हो : मैग फॉस, नेट म्योर
„ „ काँच निकले : कल्के सल्फ, काली फॉस, नेट म्योर
सूई गड़ने जैसा दर्द : नेट म्योर
मलत्यागके बाद त्रिक भागमें दर्द हो : कल्के फॉस
पेटके ऊपरी भाग और नाभिमें भारी दुर्बलता आए : कल्के फॉस
तिल्लीके रोग : काली फॉस
„ में दर्द : नेट म्योर, काली फॉस
मल , पित्तका : नेट सल्फ
काला : काली सल्फ
खून मिला . काली म्योर, कल्के सल्फ, काली फॉस, फैरम फॉस
मुर्दार जैसी गंध : साईली
मटयाले रंगका : काली म्योर
जमी हुई केसीन जैसा : नेट फॉस
मात्रामें अधिक आए : फैरम फॉस, कल्केरिया फॉस
क्रीम जैसा : नेट फॉस
चूर-चूर होकर आए : नेट म्योर
काला : नेट सल्फ, काली फॉस
निकालना कठिन हो जाए : नेट म्योर, नेट सल्फ (नर्म)
रोकना „ : नेट फॉस
सूखा : नेट म्योर
जोर लगाना पड़े : मैग फॉस
गुफ्फेदार : काली म्योर

दुर्गन्धित : काली फॉस
बार-बार आए : नेट फॉस
झागदार, रेशेदार : नेट म्योर
हरा : नेट फॉस, नेट सल्फ, कल्के फॉस
सख्त : नेट म्योर, नेट सल्फ, कल्के फॉस
नर्म फड़फड़ाहटके साथ आए : कल्के फॉस
अपने-आप निकल जाए : नेट म्योर
जैली जैसा ठोस : नेट फॉस
गाँठदार : नेट सल्फ
हल्के रंगका : काली म्योर
सुबह पतला आए : नेट म्योर, नेट सल्फ
आवाजसे : कल्के फॉस
बदबूदार : काली फॉस, कल्के फॉस, साईली, काली सल्फ
वेदनापूर्ण : फैरम फॉस
पीला : काली म्योर
अधिक : कल्के फॉस
पीव-सा : कल्के सल्फ
आंशिक रूपमें फिर बाहर आकर लौट जाए : साईली
माड जैसा : काली सल्फ
कम आए : नेट फॉस
चिकना : काली म्योर, नेट म्योर, काली सल्फ, कल्केरिया सल्फ, कल्केरिया फॉस
खट्टी गंधवाला : नेट फॉस
खूनकी धारीके साथ : नेट सल्फ, कल्के सल्फ
सहसा : फैरम फॉस, नेट फॉस
अनपच खाद्यका : फैरम फॉस, कल्के फॉस
पानी-सा पतला : फैरम फॉस, नेट म्योर, नेट सल्फ, कल्केरिया सल्फ, मैग फॉस, काली सल्फ
दाँत निकालने वाले बच्चोंकी गर्मीके मौसमकी तकलीफ : कल्केरिया सल्फ

अंतड़ियोंका क्षय : कल्केरिया फॉस
ऐंठन : काली फॉस
टायफस और कब्ज : काली म्योर

सन्धी आँतका प्रदाह : फेरम फॉस, काली म्योर, नेट सल्फ
अँतड़ियोंके घाव : कल्केरिया सल्फ
" कृमि : नेट फॉस, फेरम फॉस, कल्के फॉस
लम्बे कृमि : नेट फॉस
सूतकी तरह कृमि : नेट फॉस, काली म्योर, फेरम फॉस

## पेशावके लक्षण ( Urinary Symptoms )

अलब्यूमन आना : काली म्योर, काली फॉस, काली सल्फ, कल्के फॉस
" ज्वरके लिए : फेरम फॉस
मूत्राशयकी दुर्बलता : नेट फॉस, फेरम फॉस
" नजला : नेट म्योर, काली म्योर, कल्के सल्फ
" गर्दनमें कटनके साथ दर्द : कल्के फॉस, काली फॉस, फेरम फॉस
लकवा : काली फॉस, नेट सल्फ
पथरी : कल्के फॉस
आक्षेप : मैग फॉस
मूत्रपथसे रक्त आए : काली फॉस
पेशाव कर चुकनेके वाद जलन : नेट म्योर
" करते समय : नेट सल्फ
" में फॉसफेट आए : कल्के फॉस
वादमें मूत्रपथ और मसानेकी गर्दनमें कटन : नेट म्योर
मूत्राशय प्रदाह, तरुण : फेरम फॉस, काली म्योर
पुराना : काली म्योर
पीववाला : कल्के सल्फ
क्षीणताके साथ : काली फॉस, काली सल्फ
मधुमेह : कल्के फॉस, फेरम फॉस, काली म्योर, नेट फॉस, नेट सल्फ, काली फॉस
दिनके समय पेशाव अपने आप हो जाए : फेरम फॉस
वच्चोंको : साईली, कल्के फॉस
रातको : मैग फॉस, काली फॉस
मियोंके कारण पेशाव अपने-आप हो जाय : नेट फॉस

पेशावमें अलब्यूमन आए : काली सल्फ, काली म्योर
ईंटके चूर जैसा तलछट आए : नेट म्योर, साईली
रक्त आए : नेट म्योर, काली फॉस
पत्थरवाला फॉसफेट : कल्के फास
मात्रामें अधिक : कल्केरिया फ्लोर, नेट म्योर
गहरे रंगका : काली म्योर, नेट म्योर
तेज गंधवाला : कल्के फ्लोर
झागदार तलछट : कल्के फॉस
रेत आए : कल्के फॉस, मैग फॉस, नेट सल्फ, साईली
अनजानेमें हो : नेट म्योर, काली सल्फ
अपने-आप : फैरम फॉस, नेट म्योर
पित्त आए : नेट सल्फ
कफ और पीव : साईली
लिथियम : नेट सल्फ
फॉस्फेट आए : कल्के फॉस
लाल : कल्के सल्फ
कम आए : कल्के फ्लोर
खाँसते समय निकल जाये : फैरम फॉस, नेट म्योर
चीनी : नेट सल्फ
यूरेट आए : कल्के सल्फ साईली
यूरिक एसिड अधिक आए : काली म्योर, साईली
केसर जैसा पीला : काली फॉस
पीला-सा हरा : सेट सल्फ
जलता-जलता : काली फॉस, नेट सल्फ
जोर लगाना पडे . नेट फॉस
वेदनापूर्ण वेग : मैग फॉस
मसानेका दर्द ' ”

## पुरुष जननेन्द्रिय

### ( Male Sexula Organs )

लिंगमुण्ड प्रदाह : काली सल्फ, काली फॉस
बाघी : कल्के सल्फ, काली म्योर, फैरम फॉस, काली फॉस, साईली
आतशकी नासूर : साईली

आतशककी नर : कल्के फ्लोर

” मस्सा : नेट सल्फ

” दाने : काली फॉस

” मादा : काली म्योर

” पुराना : साईली, नेट म्योर, काली म्योर

सुजाकमें लिंगका कष्टकर उत्थान और नाकपन . मैग फॉस, नेट फॉस

मैथुनके बाद थकान आना : काली फॉस

मूत्रपथ और मसानेमें कटन : काली फॉस, नेट म्योर

कामवासनाका नाश : नेट फॉस

” बढ जाए : काली फॉस, मैग फॉस, नेट फॉस, नेट म्योर

प्रोस्टेटका रस बहे : नेट म्योर

अण्डों और शुक्ररज्जुमें खिचाव : नेट फॉस

स्वप्न दोष : नेट फॉस, काली फॉस, साईली

” सर्दीके साथ : नेट म्योर

” स्वप्न बगैर : नेट फॉस

मलत्यागके समय वीर्यस्राव : नेट म्योर

उत्थान, लिंग हर्ष : काली फॉस

उपत्वक प्रदाह : फैरम फॉस

कामोत्तेजना : साईली, नेट फॉस

कामागोंकी खारिश : नेट सल्फ

पुराना सुजाक : नेट म्योर, काली सल्फ, कल्के फॉस

” और एग्जिमा : काली म्योर

सुजाक, जबकि पहले सिल्वर नाईट्रेटके टीके दिये गए हों : नेट म्योर

प्रथम औषध : नेट फॉस

पुराना : नेट म्योर, नेट सल्फ, काली फॉस, कल्के फॉस, साईली

रक्त आए : काली फॉस, फैरम फॉस

क्रीम जैसे रंगका मवाद आए : नेट फॉस

हरा-सा : काली सल्फ, नेट सल्फ

पीव-सा पतला . कल्के सल्फ

चिकना : काली सल्फ, नेट म्योर

पारदर्शी : नेट म्योर

पीला : काली सल्फ

पानी जैसा : नेट म्योर

प्रदाहका दर्जा : फैरम फॉस
आभ्यन्तरिक मवाद : काली म्योर
जलता-जलता : नेट म्योर
सूजन : काली म्योर
अनीमियाके साथ : कल्के फॉस
खुजली " : "
कामाद्रिसे वाल गिरें : नेट म्योर
हाईडरोसील : साईली, कल्के फ्लोर, कल्के फॉस
नामर्दी : काली फॉस, नेट म्योर
अण्डोंकी सख्ती : कल्के फ्लोर
कोषकी खुजली . साईली, कल्के फॉस, नेट फॉस, नेट म्योर, नेट सल्फ
" पसीना आए : साईली
मूत्रपथमें " : काली फॉस
हस्तमैथुन : कल्के फॉस
आतशकका तीसरा दर्जा, गाँठें : साईली
लिंगमुण्ड शोथ : नेट सल्फ
कोष " : " नेट म्योर
अण्ड प्रदाह : कल्के फॉस, फैरम फॉस, काली म्योर
" सुजाक दव जानेके वाद : काली सल्फ
कामवासनाके विचार निरन्तर छाए रहें : साईली
वीर्य पतला, पानी-सा : नेट फॉस
प्रोस्टेट ग्रन्थिका घाव : कल्के सल्फ
" वढ जाना नेट सल्फ
" प्रदाह, पीव : साईली
शुक्ररज्जुओंकी वेदना : नेट म्योर
प्रमेह : नेट सल्फ
अण्डशूल : फैरम फॉस
कामागोंमें वासनाकी अनुभूति : कल्के फॉस
रमणके वाद निगाहकी कमजोरी काली फॉस

# स्त्री जननेन्द्रिय ( Female Organs )

गर्भस्राव : काली फॉस

नष्टरज : काली म्योर, काली फॉस, काली सल्फ, नेट म्योर, कल्के फॉस

" दिमागी चोटसे : काली फॉस

" मौसम बदलनेसे : साईली, कल्के फॉस

" रक्ताल्पतासे : नेट म्योर,,

कमर दर्द, जिसके साथ जरायुशूल भी हो : कल्के फॉस

दर्द जिसका रुख नीचेका हो . कल्के फ्लोर, फैरम फॉस, नेट म्योर

मासिक आनेसे पहले प्रसव वेदना जैसा दर्द . कल्के फॉस

" " नकसीर आए . नेट सल्फ

" " दर्द . मैग फॉस, फैरम फॉस

" " शोकातुर : नेट म्योर

स्तनोंमें कडी गाँठें निकले . कल्के फ्लोर

जरायुमें जलन : नेट म्योर

भगमे जलन पेशाव करनेके वाद : नेट म्योर

हरापाण्डु . कल्के फॉस, फैरम फॉस, नेट म्योर

जरायुमें रक्तसचय होनेकी पुरानी शिकायत : काली म्योर, कल्के फ्लोर

मासिकके समय अधिक रक्त सचित होना : फैरम फॉस

जरायुमें कटन : नेट म्योर

जरायुभ्रंश : कल्के फ्लोर

" गठियावातके साथ : कल्के फॉस

" में नीचेके रुख खिचाव कल्के फ्लोर

योनिकी खुश्की . नेट म्योर, फैरम फॉस

मासिकके दिनोंमें सरदर्द : नेट म्योर, काली फॉस

प्रसव जैसी वेदना : कल्के फॉस

कष्टरज ' कल्के फॉस, काली फॉस, मैग फॉस, नेट म्योर, फैरम फॉस

कष्टरजका प्रतिषेधक . फैरम फॉस

छिछडे आएँ : मैग फॉस

" और अनपची कै : फैरम फॉस

" वार-वार पेशावकी हाजत हो . फैरम फॉस

शरीर वर्फ-सा दर्द . साईली

दिलकी झिल्लियोंका प्रदाह : फैरम फॉस, काली म्योर
" पुराना : कल्के फॉस, कल्के सल्फ
वाह्यागोंमें सरसराहट : कल्के फॉस
फूले हुए : मेग फॉस
अतिरज : कल्के फ्लोर
कामाग प्रदाहित : नेट सल्फ
स्तनोंकी सख्ती : कल्के फॉस
जरायुका वढ जाना : काली म्योर
हिस्टीरिया : काली फॉस
मासिक आरम्भ होते ही शरीर ठण्डा पड जाए : साईली
योनिकी खुजली : नेट म्योर, साईली
योनिके होठोंका घाव : साईली
लकोरिया अम्ल सूखा : नेट फॉस
तीक्ष्ण : साईली, काली फॉस, नेट सल्फ
अण्डेकी सफेदी जैसा : कल्के फॉस
खराश पैदा करने वाला : नेट म्योर, नेट सल्फ
क्रीम जैसे रगका : नेट फॉस, कल्के फॉस
हरा-सा : काली सल्फ
मधु जैसे रगका : नेट फॉस
क्षोभजनक : नेट म्योर
खुजली : साईली, नेट म्योर
अण्डेकी सफेदी जैसा : कल्के फॉस
कोमल, रगत दुधिया काली म्योर
सतरे जैसा : काली फॉस
प्रचुर : साईली
क्षयकर : काली फॉस, नेट म्योर
चिकना : काली सल्फ
डक लगने जैसी वेदना : नेट म्योर
खट्टी गन्धवाला : नेट फॉस
गाढा काली म्योर
पानी-सा · नेट म्योर, नेट फॉस, काली सल्फ
सफेद . काली म्योर
पीला : काली सल्फ, काली फॉस

बच्चोंका हस्तमैथुन : कल्के फॉस

**मासिक स्राव** : तीक्ष्ण : नेट फॉस, नेट सल्फ

सरदर्दके बाद : नेट म्योर

कामोन्मादके साथ : काली फॉस

पहले, प्रसव वेदना जैसी वेदना : कल्के फॉस

नकसीर : नेट सल्फ

दर्द : मैग फॉस, फैरम फॉस, काली म्योर

शोकातुरता : नेट म्योर

काला : काली म्योर

काला-सा लाल : कल्के फॉस, फैरम फॉस

रुक जाए : काली म्योर

सर्दीके साथ : नेट सल्फ, साईली

छिछड़ेदार : काली म्योर

प्रचुर : नेट म्योर

गहरे रंगका : काली म्योर, कल्के फॉस, मैग फॉम

" लाल : काली फॉस, कल्के सल्फ, काली सल्फ

देरसे आए और सरदर्द : नेट म्योर

नीचेके रुख दबाव वाले दर्दके साथ : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस

पेट दर्दके साथ : मैग फॉस, काली फॉस, नेट सल्फ, फैरम फॉम

स्तन पानके दिनों : कल्के फॉस, साईली

हर २ सप्ताह बाद : कल्के फॉस

हर ३ " : फैरम फॉस

अतिरज : काली म्योर, कल्के फ्लोर, नेट सल्फ, फैरम फॉस

वसा जैसा : मैग फॉस

अनियमित : काली फॉस

प्रसव वेदना जैसे दर्दके साथ : कल्के फॉस

अधिक देर जारी रहे : काली म्योर, कल्के सल्फ

न जमे : काली फॉस

दुर्गन्धित : "

पीला : नेट फॉस, नेट म्योर

पहले कामोत्तेजना आए : कल्के फॉस

असमय : काली फॉस

रुक जाए : काली फॉस
रेशेदार : मैग फॉस
तेज गंधवाला : काली फॉस
दब जाए : काली म्योर, काली फॉस, काली सल्फ, नेट म्योर, कल्के फॉस
पतला : काली फॉस, नेट म्योर
बहुत पतले : काली म्योर, नेट फॉस, मैग फॉस, साईली, कल्के फॉस
बार-बार हो : काली म्योर
देरसे हो : „ काली फॉस, काली सल्फ, कल्के सल्फ, कल्के फॉस, नेट म्योर
कड़ा स्राव : काली म्योर
पानी-सा : नेट म्योर
शरीर ठण्डा पड़ जाए : साईली
आन्त्रशूलके साथ : मैग फॉस, नेट सल्फ
कब्ज : साईली, नेट सल्फ
पैरोंपर दुर्गन्धित पसीना आए : साईली
भारी दुर्बलताके साथ : कल्के सल्फ
सरदर्द „ : काली सल्फ, काली फॉस, कल्के सल्फ
उदासी „ : नेट म्योर
प्रातःकालीन अतिसार : नेट सल्फ
डिम्बशूलके साथ : फैरम फॉस
गठियावात „ : कल्के फॉस
घुटनेकी रगें छोटी हो जाएँ : नेट फॉस
भगोष्ठ फूल जाएँ : मैग फॉस
उत्तेजना और अनिद्रा : नेट फॉस
फड़कन : कल्के सल्फ, नेट म्योर
पेटमें अफारा : काली सल्फ
जरायुसे रक्तस्राव : साईली, काली सल्फ
„ प्रदाह : फैरम फॉस, काली म्योर
आलिंगनके समय और बादमें मिचली हो : साईली
कामोन्माद : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस „
डिम्बाशय प्रदाह : फैरम फॉस, मैग फॉस
„ पुराना : कल्के फॉस, काली फॉस
सुजाक : नेट फॉस, काली म्योर

डिम्बशूल पीडित पहलूपर लेटनेसे घटे : काली सल्फ, मेग फॉस, नेट सल्फ

त्रिकके आरपार तेज दर्द : काली फॉस
निरन्तर और मन्द-मन्द : फैरम फॉस
सवेरे कामागोंकी ओर दबाव पडे : नेट म्योर
जरायुभ्रंश : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस, काली फॉस
बैठनेसे आराम मिले : नेट म्योर
जैसे अभी जान निकल जायेगी : कल्के फॉस, नेट फॉस
गलेकी ओर गोला उठकर आता मालूम हो : काली फॉस
कोमलग्राही योनि : साईली, फैरम फॉस
योनिमें पानीवाला रसौली : साईली
बाझपन : साईली, नेट फॉस
कामागोंमें तपकन : कल्के फॉस
जरायुकी गर्दन और मुँहके घाव : काली म्योर, साईली
" दुर्बल : नेट फॉस
योनि खुश्क और गर्म : फैरम फॉस
" में पेशाब करनेके बाद जलन : नेट म्योर
भारी खुश्की : नेट म्योर
प्रदाह : फैरम फॉस
कोमल : फैरम फॉस, साईली
खारिश वृद्धाओंकी : काली फॉस
आक्षेप : फैरम फॉस, मैग फॉस
कामवासनाकी अनुभूति : कल्के फॉस
भगकी खुजली : नेट म्योर, साईली
छालोंवाला प्रदाह : नेट सल्फ

## गर्भकाल और प्रसव

### ( Pregnancy and Labor )

स्तनोंमें दूधका अभाव : कल्के फॉस, नेट म्योर
प्रसवोत्तर वेदना : काली फॉस, मैग फॉस
दुर्बल, सुकडावके कारण : कल्के फ्लोर, फैरम फॉस

स्तनोंमें जलन : कल्के फॉस
प्रसवकालीन आक्षेप : मैग फॉस
टाँगोंमें ऐंठन : मेग फॉस
क्षीणता प्रसवोत्तरकालीन : कल्के फॉस
” देरतक स्तन पान करानेसे : कल्के फॉस
” गर्भकालमें : ”
पैरोंमें सन्तापपूर्ण कष्ट और लगडाहट : साईली
प्रसूतज्वर : काली म्योर, काली फॉस
स्तनोंमें सख्त गाँठें : कल्के फ्लोर, साईली
प्रसव और स्तन पान करानेके दिनोंमें बाल गिरें : नेट म्योर
स्तन जैसे बढ़ गए हैं : कल्के फॉस
” में नासूर : साईली
प्रसूतके बाद उन्माद : काली फॉस
स्तन प्रदाह : साईली, कल्के सल्फ, काली म्योर, फैरम फॉस, कल्के फ्लोर
भूरा दुर्गन्धित स्राव आए : काली फॉस
गर्भस्रावका डर : मैग फॉस, काली फॉस
गर्भकालीन कै, अनपचकी : फैरम फॉस
झाग पानीकी : नेट म्योर
खट्टी : नेट फॉस
सफेद बलगम : काली म्योर
माँका दूध खारा, नीला-सा : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस
स्तनवृन्त कटे-फटे और आसानीसे घाव बन जाए : साईली
गर्भकालीन पैर दर्द : साईली
अधूरी प्रसव वेदना : काली फॉस
दुर्बल ” : ”
आक्षेपयुक्त : मैग फॉस
प्रसवोत्तर जघा प्रदाह : नेट सल्फ
प्रसवकालीन आक्षेप : मैग फॉस
ज्वर : फैरम फॉस
उन्माद : काली फॉस

स्तनोंकी सख्ती : साईली
स्तनोंका नासूर : ”
गर्भकालीन थकान : कल्के फॉस

## श्वास-प्रणाली ( Respiratory Organs )

फेफड़ोंका घाव : साईली
दमा : रातको दौरा पड़े : नेट सल्फ
” हवाकी नालीका : काली सल्फ, काली म्योर
” गर्म मौसममें बढ़े : ”
” जरा-सा खाते ही दौरा पड़े : काली फॉस
” इन्फ्लुएंजाके साथ : ”
” तर : नेट सल्फ
बच्चोंका : ”
वातज : मैग फॉस
जब अफारा कष्टकर हो : मैग फॉस
आमाशयकी खराबीके साथ : काली म्योर, नेट सल्फ
पीली, गाँठदार कफ आए : कल्के फ्लोर
टी० बी० ज्वर : कल्के सल्फ
आक्षेपयुक्त झटके : नेट म्योर
पानी जैसी पतली कफ अधिक आए : नेट म्योर
मौसम तर होनेपर दौरा पड़े : नेट सल्फ
जल्दी-जल्दी साँस ले : फैरम फॉस, कल्के फ्लोर
उथला साँस : फैरम फॉस, काली फॉस, कल्के फॉस, काली सल्फ, नेट म्योर
हवाकी नालीसे कफ आए : काली म्योर
ब्राकाईटिस : फैरम फॉस, कल्केरिया सल्फ, काली म्योर, नेट सल्फ
पुराना : नेट म्योर, साईली
पीली कफ : काली सल्फ
छातीमें जलन और सन्ताप : फैरम फॉस
साँसमें बाधा : ”
सर्दी आसानीसे हो जाए : नेट म्योर, फैरम फॉस

छाती : घुटन : मैग फॉस
सुकड़ाव : कल्केरिया फॉस
गहरा साँस लेनेसे दर्द हो : नेट फॉस
दबावसे : ”
गहराईमें दर्द हो : साईली
आरपार : कल्के सल्फ
भाला गड़ने जैसा : मैग फॉस, नेट सल्फ
कफ घड़घड़ाए : काली सल्फ, नेट सल्फ, नेट म्योर, काली म्योर
सन्ताप दबावसे घटे : नेट सल्फ
छूना सहन न हो : कल्के फॉस, काली फॉस
कमजोरीका बोध : साईली
कष्टके साथ पाँव ठण्डे : कल्के फॉस
फेफड़ोंमें रक्ताधिक्य : फैरम फॉस
खाँसी : नयी : काली म्योर, फैरम फॉस
शामको बढ़े : काली सल्फ
सुबह ” : नेट सल्फ
लेटनेसे घटे : कल्के फॉस
कुत्ता भौंकनेकी तरह आवाज हो : काली म्योर
सरदर्द हो जाए : नेट म्योर
टी० बी० की पुरानी : कल्के फॉस, साईली
आक्षेपयुक्त : मैग फॉस
क्रूप : काली म्योर
सूखी : फैरम फॉस, मैग फॉस, नेट म्योर
ठण्डे पेयसे : साईली
घड़घड़ाहट : ”
वक्षगह्वरके पीछे सरसराहट : नेट म्योर
गलकोषमें : कल्के फ्लोर
वायुपथमें : फैरम फॉस, काली फॉस, साईली
वक्षगह्वरके ऊपरी भागमें : साईली
गलेमें : कल्के फ्लोर
कष्टकर सूखी : ”
सख्त : फैरम फॉस, काली सल्फ
स्वरभंगके साथ : काली सल्फ

क्षोभजनक : साईली
जोरकी आवाज हो : काली म्योर
वातज : मैग फॉस
लेट जानेपर " कल्के फ्लोर, साईली
वेदनापूर्ण : फैरम फॉस
दौरे पडे · मैग फॉस
नियत समयपर : नेट म्योर
थोडी-थोडी : फैरम फॉस, काली म्योर, नेट म्योर
आक्षेपयुक्त : मैग फॉस, काली म्योर, काली फॉस, नेट म्योर, फैरम फॉस
दम घोटनेवाली, बच्चोंकी, लेटनेसे घटे : कल्के फॉस
कुत्ता खाँसी : फैरम फॉस, मैग फॉस, काली सल्फ, काली फॉस
जैसे सर फट पडेगा : नेट म्योर
रातको पसीना आए : साईली
पेशाव निकल जाए : फैरम फॉस, नेट म्योर
छातीमें कमजोरी आए नेट सल्फ

क्रूप खाँसी :
श्वासकृच्छ्रता : फैरम फॉस, नेट म्योर, काली सल्फ, कल्के फॉस, काली फॉस
तर मौसममें : नेट सल्फ
छातीकी टी० बी० में शोष : कल्के फॉस
फेफडोंमें पीव आए : कल्के सल्फ, साईली
कफ न आए : फैरम फॉस, मैग फॉस
साफ आए : नेट म्योर
अधिक आएँ : साईली, काली सल्फ
मुश्किलसे निकले : नेट म्योर, कल्के फॉस, काली म्योर
पारदर्शी : नेट म्योर
क्रीम जैसा : नेट फॉस
दुर्गन्धित : काली फॉस साईली
झागदार : नेट म्योर
दानेदार . साईली
मटियाला सफेद : काली म्योर
गांठदार : कल्के फ्लोर

कफ : हरा-सा : नेट सल्फ, काली सल्फ, साईली
सुनहरी-पीला : नेट फॉस
पतला : नेट म्योर, काली फॉस, साईली
दूधिया : काली म्योर
प्रचुर : काली सल्फ, साईली
पीव जैसा : नेट सल्फ, कल्के सल्फ, साईली
रेशेदार : नेट सल्फ
कम, खूनकी धारी : फैरम फॉस
नमकीन : काली फॉस
पानी-सा पतला : कल्के सल्फ
चिकना : काली सल्फ
फिर भीतर चला जाए : काली सल्फ
सख्त, थूक न सके : ”
गाढ़ा : नेट सल्फ, साईली, काली म्योर, काली फॉस
लसदार, सफेद : काली म्योर
पानी जैसा : नेट म्योर, काली सल्फ
सफेद : कल्के फॉस
पीला गाठदार, सख्त : कल्के फ्लोर
पीला-सा : कल्के फ्लोर, काली सल्फ, साईली, कल्के फॉस, काली फॉस

भगन्दर जिसके साथ छातीका कष्ट भी हो : कल्के फॉस, साईली
बार-बार गला साफ करना चाहे : कल्के फॉस
गिरने या सरपर चोट आनेके बाद रक्तस्राव : फैरम फॉस
इन्फ्लुएंजा : काली फॉस, नेट म्योर
टी० बी० ज्वर : कल्के सल्फ, साईली, कल्के फॉस
छातीमें गर्मी : फैरम फॉस
स्वरभंग : काली फॉस, नेट म्योर, कल्के सल्फ, साईली, कल्के फ्लोर, नेट फॉस, नेट सल्फ, कल्के फॉस
” सर्दी लगनेसे : काली सल्फ, काली म्योर, फैरम फॉस
खाँसते-खाँसते छाती थामनी पड़े : नेट सल्फ
गाना या भाषणके बाद आवाज बिगड़े : फैरम फॉस
मध्यवर्ती पेशियोंमें दुखन : नेट फॉस

स्वरयन्त्र प्रदाह : फेरम फॉस, काली म्योर, नेट म्योर
" क्षुब्ध : " कल्के फ्लोर
" वेदनापूर्ण : "
" सन्तापपूर्ण : "
रातको अधिक पसीना आए : साईली, कल्के फॉस
फेफड़ोंमें पानी आना : नेट म्योर, काली फॉस
दम घुटे : फैरम फॉस, कल्के फ्लोर
छातीका दर्द साँस लेनेसे बढ़े : नेट फॉस
दबावसे : "
बायी ओर छूरी लगनेकी तरह : नेट सल्फ
फेफड़ोंकी टी० बी० : कल्के सल्फ, साईली, फैरम फॉस, काली म्योर,
कल्के फॉस, नेट फॉस, नेट सल्फ
" तेजीसे बढ़नेवाला : नेट फॉस फैरम फॉस
प्लूरिसी : फैरम फॉस, नेट म्योर, काली म्योर
निमोनिया : " काली म्योर, कल्के सल्फ, काली सल्फ, साईली,
नेट म्योर
सीढ़ियाँ चढ़े तो दम फूले : काली फॉस
आहें भरनेका झुकाव : नेट फॉस, कल्के फॉस
वक्षगह्वरके ऊपर सन्तापपूर्ण कष्ट : कल्के फॉस
हवाकी नालीका आक्षेप : मैग फॉस
बोलनेसे थकान आए : काली सल्फ
पहलुओंमें सूइयाँ गड़ने जैसा दर्द : फैरम फॉस
रातको सर और गर्दनपर पसीना अधिक आए : कल्के फॉस, मैग फॉस
बच्चोंकी दम घोटनेवाली खाँसी : कल्के फॉस
वायुपथ प्रदाह : फैरम फॉस
स्वर लोप : " काली म्योर
" स्वर नाड़ियोंके लकवेसे : काली फॉस
सहसा चीख निकले : मैग फॉस
गलकोषमें थकानका बोध : काली सल्फ
सीटी बजे : काली म्योर

# रक्तसंचार (Circulatory Organs)

दिल रुक-रुककर धड़के : काली फॉस, नेट म्योर

हृद्रोग और रक्ताल्पता : काली फॉस

शिरार्बुद : फैरम फॉस, कल्के फ्लोर

स्नायविक हृच्छूल : मैग फॉस, फैरम फॉस, काली फॉस

धमनी प्रदाह : फैरम फॉस

शिराएँ बढ जाएँ : कल्के फ्लोर

हृद्प्रदाह : फैरम फॉस

पुराने हृद्रोग : साईली

रक्तसचार सुस्त : काली फॉस

शिराओंका फैलाव : कल्के फ्लोर

हृदय " : " फैरम फॉस

हृदयकी दुर्वलतासे सर चकराये : काली फॉस

समावरोधन (शिराओंमें रक्तकणोंका जम जाना) काली म्योर

हृदयावरण प्रदाह : फैरम फॉस

भय या थकानसे ग्रशी आना : काली फॉस

हाथ ठण्डे : नेट म्योर

हृदयके आसपास घुटन : नेट म्योर

फैलाव : फैरम फॉस, कल्के फ्लोर

फड़फड़ाहट : नेट म्योर, नेट फॉस

बढ जाए : नेट म्योर

तल भागमें दर्द : नेट फॉस

आसपास साँस लेते समय दर्द हो : नेट फॉस

रुक-रुककर धड़के : काली फॉस, नेट म्योर

आसपास कम्प : फैरम फॉस

लसिकाओंका प्रदाह : फैरम फॉस

तिल : " कल्केरिया फ्लोर

डिम्बाकार छिद्रका वन्द न होना . कल्के फॉस

गठिया वातज्वरके वाद धड़कन . काली फॉस

वहुत जोरकी धड़कन : साईली, फैरम फॉस

नाड़ी शरीरके विविध अंगोंमें मालूम दे : नेट फॉस

अधिक रक्त आनेके कारण : काली म्योर
भावना या सीढियाँ चढनेसे : काली फॉस
स्नायविक और आक्षेपिक : मैग फॉस
व्यग्रताके साथ : कल्के फॉस, नेट म्योर
अनिद्रा : काली फॉस
हृत्पेशी प्रदाह : फैरम फॉस, काली म्योर, कल्के सल्फ
शिरा प्रदाह : फैरम फॉस
नाडी सारे शरीरमें मालूम दे : नेट म्योर, नेट फॉस
भरी हुई, गोल, मगर रस्से जैसा नही : फैरम फॉम
रुक-रुककर : नेट म्योर, काली फॉस
अनियमित : काली फॉस
तेज : का ी सल्फ, फैरम फॉस, नेट म्योर, साईली
मालूम ही न दे : काली सल्फ
क्षुद्र शिराओंका फैलाव : फैरम फॉस
शिरार्बुद : ,, कल्केरिया फ्लोर
शिराघाव : फैरम फॉस

## कमर और हाथ-पाँव

### ( Back and Extremities )

अगोंमें निरन्तर वेदना : कल्के फॉस
कधोंमें ,, : ,,
कधोंके जोडोंके मध्य : काली फॉस
मेरुदण्डका अनीमिया : ,, नेट फॉस
घुटनेकी अकडन : साईली
,, जैसे उखड गया है : कल्के फॉस
वेदना : नेट म्योर, साईली, फैरम फॉस
दुर्बल : ,, नेट फॉस, साईली
बाजू जैसे भारी है : साईली
थके हुए हैं : नेट फॉस
जोडोंका दर्द : ,,
सूजन : नेट म्योर

कमरमें छेद होने जैसा तरुणशूल : मैग फॉस
सो गयी है : कल्के फॉस
कारबंकल : कल्के सल्फ, साईली
ठण्डी : नेट म्योर, कल्के फॉस, साईली
कड़क हो : फैरम फॉस, कल्के सल्फ
भाला लगने जैसा दर्द : मैग फॉस
स्नायविक : ” काली सल्फ
नीचेतक दर्द : कल्के फ्लोर
हरकतसे आराम आए : काली फॉस
गठियावातका दर्द : काली सल्फ
सन्तापपूर्ण दर्द : नेट सल्फ
आक्षेप आए : ”
दुर्बलता बोध : नेट फॉस
लगडाहट : नेट म्योर
शामको बढ जाए : काली सल्फ
हरकतसे बढ़े : साईली
गर्दनके पिछले भागतक जाए : साईली
सुबह कमर दर्द हो : कल्के फॉस
गर्म घरमें बढ़े : काली सल्फ
सख्त चीजपर लेटनेसे घटे : नेट म्योर
हरकतसे घटे : कल्के फ्लोर
खुली हवामें घटे : काली सल्फ
रीढके क्षोभसे दर्द आए : कल्के फ्लोर
बच्चोंकी टाँगे टेढी हो जाएँ : कल्के फॉस
सारे शरीरपर कुचले जानेका बोध : काली फॉस
कमर दर्द : नेट सल्फ
पाँवकी अगूठेकी सूजन : काली म्योर
तलवोंमें जलन : कल्के सल्फ, काली फॉस, नेट म्योर
नितम्ब सो जाए : कल्के फॉस
पिण्डलियोंमें ऐंठन : ” मैग फॉस
” दुर्बलता : नेट म्योर
पीठका कारबंकल : कल्के सल्फ, साईली
हाथ-पाँवकी हड्डियोंके नासूर : साईली

गर्दनकी ग्रथियोंका वढ जाना : काली म्योर
सख्त : कल्के फ्लोर
ववाई : काली म्योर, काली फॉस
टाँगोंकी पुरानी सूजन : काली म्योर
कमर और हाथ पाँवकी ठण्डक : नेट म्योर
अग ठण्डे : कल्के फॉस
प्रमारक पेशियोंमें खिचाव : नेट फॉस
घुडसवारीके वाद त्रिक वेदना : साईली
त्रिकशूल : नेट म्योर
जोडोंकी कडकडाहट : कल्के फ्लोर, नेट म्योर, नेट सल्फ
रगों " : काली म्योर, फैरम फॉस
लिखते समय हाथोमें ऐंठन आए : कल्के फॉस, नेट फॉस, मैग फॉस
हाथ पाँवमें ऐंठन आए : काली सल्फ
कमरमें कडक हो : फैरम फॉस, कल्के सल्फ
गर्दनमें " : नेट फॉस
" नीचेके रुख खिचाव : कल्के फ्लोर
कुहनीके जोडमें सूजन : कल्के फ्लोर
बच्चोंकी गर्दनका सूखना : नेट म्योर, कल्के फॉस
सलग्नास्थिकी सूजन : कल्के फॉस
जोडोंमें कुचले जानेकी तरह दर्द : मैग फॉस
उगलीकी हड्डियोके फोडे : कल्के फ्लोर
हाथ-पाँव सुन्न : नेट म्योर, कल्के फॉस, काली फॉस
पैरोंमें जलन : काली फॉस
दिनमें सर्द, रातको गर्म रहे : नेट फॉस
सो जाएँ : नेट म्योर
कोमल, थके हुए : साईली
अस्थिर : काली फॉस
सूजन : काली म्योर
तलवोंमें खुजली : कल्के सल्फ
शोथ : नेट सल्फ
ऐंठन आए : साईली
वदवूदार पसीना आए : साईली
नख व्रण : कल्के सल्फ, फैरम फॉस, साईली, नेट सल्फ

उंगलियोंके जोड़ बढ़ जाएँ : कल्के फ्लोर
प्रदाहित : नेट फॉम, फैरम फॉस
खुजलीवाले छाले : नेट म्योर
सख्त, अकड़े हुए : कल्के सल्फ, नेट सल्फ
नासूर : साईली
" पाँवके आसपास : कल्के फॉस
जोड़ोंका छत्राकार प्रदाह : काली सल्फ
कलाईकी पीठपर गाँठ : कल्के फ्लोर
चाल अस्थिर : नेट फॉम
गिल्हड़ : कल्के फ्लोर, नेट म्योर, कल्के फॉस, नेट फॉस
सन्धिवात तरुण : नेट सल्फ, फैरम फॉस, नेट फॉस
पुराना : " " "
जोड़ बढ़ जाएँ : कल्के फ्लोर
" वेदना : काली म्योर, नेट म्योर, कल्के फॉस
नियत समयपर दौरा : नेट म्योर
गठिया रातको बढ़े : कल्के फॉस
मन्दिर शिरामें सन्ताप : नेट फॉस
वेदनापूर्ण सुकड़ाव : नेट म्योर
हाथ सर्द : "
सो जाएँ : कल्के फॉस
लिखते समय सख्त हो जाएँ : कल्के फॉस, काली म्योर, नेट फॉस
अपने-आप काँपे : मैग फॉस
हथेलियाँ गर्म : फैरम फॉस
सख्त और सन्तापपूर्ण : नेट सल्फ
त्वचा खुश्क, कटी फटी : "
आक्षेप : साईली
फूली हुई और वेदनापूर्ण : फैरम फॉस
काँपें : नेट सल्फ
मस्से : काली म्योर, नेट म्योर, नेट सल्फ
नाखूनकी जड़में प्रदाह आना और खालका लटक जाना : नेट म्योर
कूल्हेके जोड़में दर्द : काली फॉस, नेट म्योर
बाएँ, सूई गड़ने जैसा : नेट सल्फ

कूल्हेके रोग : कल्के सल्फ, काली म्योर, फैरम फॉस, साईली, कल्के फॉस

घुटनेकी सूजन : कल्के फॉस, साईली
रीढ़का नर्म पड़ जाना : काली फॉस
जोड़ोंका प्रदाह : फैरम फॉस, काली सल्फ, मेग फॉस, नेट फॉस, काली म्योर
छत्राकार प्रदाह : काली सल्फ
घुटने " : कल्के फ्लोर
पाँवकी उंगलियोंके नाखून माँसमें गड़कर बढ़े : साईली, काली म्योर
सोते समय झटके लगाएँ : नेट म्योर
हाथ काँपें : मैग फॉस
रोगोंकी खुजली : काली म्योर, काली फॉस
जैसे कीड़ा डंक मार गया हो : नेट फॉस
हथेलीमें : काली फॉस
तलवोंमें : " कल्के सल्फ
पाँवकी उंगलियोंमें : नेट सल्फ
जोड़ोंका पुराना गठिया : नेट म्योर, कल्के फॉस
कड़कड़ाहट : कल्के फ्लोर, नेट म्योर, नेट सल्फ
संधिवातकी वृद्धि : कल्के फ्लोर
सन्तापपूर्ण वेदना : नेट फॉस
आसपास सूजन : काली म्योर
पुराना प्रदाह : साईली
जोड़की दाद : नेट म्योर
प्रदाह : कल्के फ्लोर
वेदना : नेट फॉस, फैरम फॉस, कल्के फॉस
दुर्बलता : नेट म्योर
सर्दीसे लगड़ाहट : फैरम फॉस
लकवा और गठिया : काली फॉस
चलते समय टाँगें जवाब दे जाएँ : नेट फॉस
अंग सो जाएँ : नेट म्योर
थके हुए से : साईली
खुजलाएँ : काली म्योर
झटके आए : नेट म्योर

स्नायविक वेदना : मैग फॉस, काली सल्फ
सुन्नपन और ठण्डक : कल्के फॉस
कापें : „
उरुस्तम्भ : नेट सल्फ, साईली
जोड़ पड़नेसे कमर दर्द : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस, फैरम फॉस
रीढ और दिमागके पर्दोंका प्रदाह : नेट सल्फ
हरकतसे दर्द बढ़े : काली म्योर, फैरम फॉस
„ घटे : काली सल्फ, काली फॉस
पेशी दुर्बलता : काली फॉस
नाखून खस्ता : साईली, काली सल्फ
जड़ोमें दर्द : कल्के फॉस
गर्दनमें खिंचाव आए : नेट सल्फ
दर्द : काली सल्फ, मैग फॉस
बच्चोंकी गर्दन सूख आए : कल्के फॉस, नेट म्योर
सर्दीसे अकड़न आए : फैरम फॉस, कल्के फॉस, नेट फॉस
अंगोंका स्नायुशूल : काली सल्फ, मैग फॉस
„ सुन्नपन : कल्के फॉस, काली फॉस
रीढकी कोमलता : नेट म्योर, साईली
कमर दर्द जो बिस्तरकी गर्मीसे बढे : काली म्योर
गर्म मौसमसे बढे : काली सल्फ
चहलकदमीसे घटे : काली फॉस
खुली हवासे „ : काली सल्फ
छेद होनेकी तरह : मैग फॉस
भाला गड़ने „ : „
टॉंगकी लम्बी हड्डीमें : कल्के फॉस, नेट फॉस
त्रिकमें : „ „
घुटनेमें : „ „
कूल्हे और त्रिकमें : „
नाखूनकी जड़में : „
तलवेमें : काली फॉस, नेट फॉस
कलाईमें : नेट फॉस
बिजलीकी तरह : काली म्योर, मैग फॉस
स्नायविक : काली सल्फ, मैग फॉस

नियत समय पर : काली सल्फ
वात वेदना ”
भ्रमणशील दर्द ” मैग फॉस, कल्के फॉस
कंधोंमें : साईली, फेरम फॉस
आक्षेपिक : मैग फॉस
दर्द सहसा दिलमें चला जाए : नेट फॉस
पैरोंके आरपार : साईली
हथेलियाँ गर्म : फेरम फॉस
खुजलाये . काली फॉस
कच्ची और सन्तापपूर्ण : नेट सल्फ
लकवे जैसी लगड़ाहट : काली फॉस, नेट फॉस
झुकाव : ”
कम्पवात : मैग फॉस
उंगलियोंके गाँठोंके जोड आसानीसे उखड जाएँ : कल्के फ्लोर
मेरुदण्डका नासूर : कल्के फॉस
गदा मास जो घावमें उमडता है : काली म्योर, साईली
जघा पेशीका घाव : साईली
गठियावात ज्वर : फेरम फॉस, काली म्योर
सन्धिवातका दर्द : काली म्योर, नेट फॉस
लगड़ाहट : काली फॉस
गर्दनकी अकडन : कल्के फॉस
गठियावात, तरुण . कल्के फॉस, कल्के सल्फ, फेरम फॉस, काली फॉस, काली म्योर
मौसम बदलनेसे बढे : कल्के फॉस
मेहनत ” : काली फॉस
थकान ” : ”
गर्मी या सर्दी ” : कल्के फॉस
हरकतसे : फेरम फॉस
रातको : कल्के फॉस
बिस्तरकी गर्मीसे : काली म्योर
सुबह : काली फॉस
सधि वेदना : फेरम फॉस, कल्के फॉस, नेट फॉस
चहलकदमीसे घटे : काली फॉस

गर्मीसे घटे : फैरम फॉस

पुराना : कल्के फॉस, काली म्योर, काली फॉस, नेट म्योर, नेट सल्फ, नेट फॉस, काली सल्फ, साईली, कल्के सल्फ

हरकत करते समय मालूम दे : फैरम फॉस, काली म्योर

जगह बदलनेवाला दर्द : कल्के फॉस, काली सल्फ

जोड़ोंमें सख्त दर्द : कल्के फॉस, काली सल्फ, मैग फॉस, नेट म्योर

पेशियोंका दर्द : फैरम फॉस

कुछ दिनोंका पुराना : ”

गृध्रनी : काली फॉस, मैग फॉस, नेट सल्फ, कल्के सल्फ, नेट म्योर, फैरम फॉस

जैसे चींटियाँ रेंग रही हों : कल्के फॉस

कीड़े-मकोड़े डंक मार रहे हो : नेट फॉस

कमरका भ्रमणशील दर्द : काली सल्फ, मैग फॉस

कुहनीमें गोली लगनेकी तरहका दर्द : कल्के फॉस

कन्धोंके दरम्यान सन्ताप : साईली

जंघाओंमें सन्ताप : कल्के फॉस

मेरुदण्डका जन्मजात रोग : कल्के फॉस, फैरम फॉस, कल्के फ्लोर, साईली

” नासूर : कल्के फ्लोर

” रक्ताल्पता : काली फॉस, नेट फॉस, नेट म्योर

” नर्म पड़ जाना : ”

” टेढ़ा ” : कल्के फॉस, साईली

” क्षोभ : ” ”

” और दिमागके पर्दोंका शोथ और रक्ताल्पता : नेट सल्फ

” कोमलग्राह्यता : नेट म्योर, साईली

” स्पर्शकातर : मैग फॉस, नेट म्योर

शरीरकी अकड़न : काली फॉस, नेट म्योर

आरामके बाद : ”

सर्दी ” फैरम फॉस

बन्धनियों या कण्डराओंपर जोर पड़ना : फैरम फॉस

चलते समय डगमगाए : काली फॉस

पाँव या बगलमें दुर्गन्धित पसीना आए : साईली

रोगोंकी पुरानी सूजन : काली म्योर

जघाओंमें भीतरकी ओर खिंचाव : नेट फॉस

पाँवकी उगलियोकी खारिश : नेट सल्फ
हाथों, पैरों या उनकी उगलियोंकी ऐंठन : साईली
हाथ-पाँवके घाव : काली म्योर
” जो न भरें : साईली, कल्के फॉस
” आतशकी : ” ”
जोडोंका शीतपित्त : नेट म्योर
आम कमजोरी : नेट म्योर, नेट फॉस
घावमें पीव आए : कल्के सल्फ, साईली
कलाईकी निरन्तर वेदना : नेट फॉस, फैरम फॉस, कल्के फॉस

## स्नायुजाल (Nervous Symptoms)

शारीरिक दुर्बलता : काली फॉस, नेट म्योर
शराबके विकार : मैग फॉस
रीढमें खूनकी कमी : काली फॉस, नेट फॉस, नेट म्योर
क्षीणतावश आया लकवा : ”
गलेमें जैसे गेंद रखी है : ”
मसानेका लकवा : ”
शरीरमें वेदना अधिक मालूम हो : काली फॉस
पेशीकम्प, खिंचाव आना : नेट म्योर, मैग फॉस, काली सल्फ
” कृमिजनित : साईली
” कब्जसे : नेट सल्फ
मुट्ठी बध जाना : मैग फॉस
रक्ताधिक्य जनित स्नायुशूल : फैरम फॉस
अगोंमें खिंचाव आना : मैग फॉस
ऐंठन, विकास कालीन : कल्के फॉस
” दाँत निकलनेके दिनोंमें : कल्के फॉस, फैरम फॉस
” अकडनके साथ : मैग फॉस
” सुबकियाँ भरे : ”
” लिखने या वायलन बजानेवालोंकी : मैग फॉस, कल्के फॉस
जैसे चीटियाँ रेंग रही हों : कल्के फॉस
लकवा जो ऊपर चढ़े : काली फॉस

तरुण रोगोंके बाद दुर्बलता आए : कल्के फॉस
हिस्टीरिया आए : नेट म्योर
स्नायविकता : काली फॉस
कमजोरी : ”
आसानीसे थकान आए : काली फॉस, नेट म्योर, फैरम फॉस
मृगी जो दाने दबनेके बाद आए : काली म्योर, कल्के फॉस
भयजनित : काली फॉस
बुरी आदतसे : मैग फॉस
रातको आए : साईली
सरकी ओर अधिक रक्त आनेसे : फैरम फॉस
स्नायविक थकान : काली फॉस, मैग फॉस
आन्त्रशूलके साथ : नेट सल्फ
जोश ” : साईली
चेहरेका लकवा : काली फॉस
आशक्ति आना : ”
सँधमारका डर : ”
अस्थिरता : ”
मुट्टी बंद हो जाय : मैग फॉस
लिखे तो हाथ कांपे : ” नेट सल्फ
अर्द्धांग : काली सल्फ
हिचकी : नेट म्योर, मैग फॉस
हिस्टीरिया, जो आकस्मिक भावप्रवणतासे आए : काली फॉस
” दुराग्रही : साईली
” दुर्बलताके साथ : नेट म्योर
बालकोंका लकवा . काली फॉस
प्रदाहात्मक स्नायुशूल : फैरम फॉस
अगोंका कम्पन : मैग फॉस
थकान : कल्के सल्फ, मैग फॉस, कल्के फॉस
बिजलीकी तरह आनेवाला दर्द : मैग फॉस
दाँत पड़ना (मूर्च्छा आना) : मैग फॉस
चलनेकी शक्तिका ह्रास : काली फॉस
स्पर्शज्ञानका ह्रास : ”
स्नायविक थकान : ” नेट फॉस

अधिक रमणसे : काली फॉस
रातको घबड़ाहट आए : फैरम फॉस
स्नायुशूल : रक्ताधिक्यसे : ”
प्रदाहात्मक : ”
पसलियोंके मध्य : मैग फॉस
बिजलीकी धक्केकी तरह : „ कल्के फॉस
रातको : ” ”
कष्टसाध्य : साईली
मलद्वारमें : कल्के फॉस
बार-बार आए : ” नेट म्योर
भ्रमणशील : काली फॉस, मैग फॉस
मौसम बदलनेसे : कल्के फॉस
बच्चे रातको डरे : काली फॉस
लकवा : वात कम्प : मैग फॉस
क्षीणता जनित : काली फॉस
सहसा आ जाए : ”
रेंगकर चले : ”
चेहरेका : ”
मोहरोंकी टी० बी० से : साईली
बच्चोंका : काली फॉस
उरुस्तभ : ”
किसी अगका : ” नेट म्योर
मसानेका : ”
गठियावातका : कल्के फॉस, फैरम फॉस, काली फॉस
आंशिक लकवा : काली फॉस
व्याकुल ; घूमना-फिरना चाहे : नेट सल्फ
सुन्नपनकी अनुभूति : नेट म्योर
कम्पकी ” : काली फॉस
आवाज और रोशनी सहन न हो : „ साईली
ठण्डी हवा सहन न हो : ”
वातनाड़ियोंके साथ-साथ गोली लगने जैसा दर्द : नेट म्योर, मैग फॉस
ऐंठन, आक्षेप : जरा-सी उत्तेजनासे : साईली
साँसकी नालीके मुँहका : कल्के फॉस, मैग फॉस

साँस जो सूर्य चक्रसे शुरू हो : साईली
धनुषवात : मैग फॉस, कल्के फॉस, नेट म्योर
सकोचक पेशियाँ बंद होना : साईली
भैंगापन, कृमिजनित : नेट फॉस
जरा-सी आवाजपर चौंक उठे : काली म्योर, काली फॉस
तुतलाना : मैग फॉस
अकड़न : " काली फॉस
मोहरोंका टी० बी० : काली म्योर, साईली
थकानकी अनुभूति : नेट सल्फ, नेट फॉस, मैग फॉस, काली फॉस, नेट म्योर
शरीर कांपे : नेट फॉस, नेट सल्फ, कल्के फॉस, काली फॉस
अंग " कल्के फॉस, साईली
खिंचाव आएँ : कल्के सल्फ, मैग फॉस, नेट म्योर
" हाथोंमें सोते समय : " नेट सल्फ
दुर्बलता : कल्के सल्फ, कल्के फ्लोर, काली फॉस, कल्के फॉस, फैरम फॉस
" की अनुभूति : नेट सल्फ, कल्के फॉस, काली फॉस, नेट म्योर, नेट फॉस, कल्के सल्फ, फैरम फॉस
लिखनेवालोंके हाथकी ऐंठन : मैग फॉस, कल्के फॉस, नेट फॉस

## नींद और स्वप्न ( Sleep and Dream )

चीख मारकर जागे : काली फॉस
अफारेके दर्दसे जागे : नेट सल्फ
बच्चा सोते-सोते चीख मारे : कल्के फॉस
निरन्तर अंगराइयाँ और जम्हाइयाँ आए : कल्के फॉस, काली फॉस
" सोते रहनेकी इच्छा : नेट म्योर
सुबह : काली फॉस
स्वप्न : व्यग्रतापूर्ण : नेट म्योर, फैरम फॉस, नेट सल्फ
भारी : नेट सल्फ
कामवासना : काली फॉस
डरसे ऐंठन आ जाए : कल्के सल्फ

गिरनेके : काली फॉस
आग : ”
भूत-प्रेत : ”
नए-नए दृश्य, स्थान : कल्केरिया फ्लोर
ठगो, डाकुओं : नेट म्योर, काली फॉस
कामुकता : नेट फॉस
खतरेकी भावना : कल्के फ्लोर, मैग फॉस
स्पष्ट सजीव : काली सल्फ
आनेवाले खतरेकी बाबत : कल्के फ्लोर

ऊघ : नेट सल्फ, नेट फॉस, मैग फॉस
दोपहर बाद : फैरम फॉस
वृद्धोंकी : कल्के फॉस

अधिक नींद आए : नेट म्योर
बैठे-बैठे सो जाए : नेट फॉस
सुबह थका मालूम हो : नेट म्योर
” जगा न सके : कल्के फॉस
अनिद्रा : नेट म्योर
” थकान : नेट म्योर
चिन्तासे : काली फॉस
उत्तेजक : ”
कारबारकी चिन्तासे : काली फॉस
अधिक रक्तसंचार : फैरम फॉस
खुजलीसे : नेट फॉस
खूनके जोशसे : साईली
स्नायविक क्षोभसे : नेट म्योर
सोकर ताजगी न आए : ”
सोते-सोते अगोंमें झटके आएँ : साईली, नेट म्योर, नेट सल्फ
अशांत नींद : नेट फॉस, फैरम फॉस, नेट सल्फ, काली फॉस
दिनमें नींद आए, रातको जगाता रहे : कल्के सल्फ
सोते-सोते उठकर चल दे : काली फॉस, नेट म्योर
आक्षेपयुक्त जम्हाइयाँ : मैग फॉस
सोते-सोते चौंके : नेट म्योर, नेट सल्फ
अगड़ाइयाँ ले : काली फॉस, कल्के फॉस

सोते ही पेशियोंमें झटके आएँ : नेट म्योर
रात भर जागता रहे : कल्के सल्फ
हिस्टीरियाकी अंगडाइयाँ : काली फॉस
आक्षेपयुक्त : मैग फॉस

## ज्वरके लक्षण ( Febrile Symptoms )

मलेरिया : नेट म्योर
पित्तज्वर : नेट फॉस, मैग फॉस, नेट सल्फ
होठोंपर ज्वरके दाने : नेट म्योर
दिमागका ज्वर : काली फॉस
कम्प ज्वर : "
नजले जुकामका ज्वर : फैरम फॉस, काली म्योर
सर्दी लगे : साईली, कल्के फॉस, काली म्योर
" खाना खानेके बाद : शामके ७ बजे , मैग फॉस
" सुबहसे दोपहर तक : नेट म्योर
" हर रोज दोपहर बाद १ बजे : फैरम फॉस
" कमरपर ऊपर नीचे चले : मैग फॉस
ठण्डा पसीना : काली सल्फ, कल्के फॉस
आन्त्रज्वर : काली सल्फ, काली म्योर, फैरम फॉस, काली फॉस, नेट म्योर
पाँव बर्फसे ठण्डे : नेट फॉस
रातको जलें : " साईली
रक्त गन्दा होनेसे ज्वर आए : काली सल्फ
इन्फ्लुएंजा : नेट म्योर, काली फॉस, साईली
टी० बी० ज्वर : साईली, कल्के फॉस
प्रदाह : फैरम फॉस
बारी : मैग फॉस, काली म्योर, नेट म्योर
ज्वर : नेट फॉस, फैरम फॉस, काली फॉस, नेट सल्फ, कल्के फॉस, काली सल्फ
घातक : काली फॉस
वातज : "

प्रसूत : काली म्योर
सविराम : नेट सल्फ
गठियावात : काली म्योर, नेट म्योर, फैरम फॉस
आरक्त : " ' " " काली सल्फ, काली फॉस
पीतज्वर : नेट सल्फ
पुराना : कल्के फॉस
कूनीनके वाद : नेट म्योर
अम्ल कै के साथ : नेट फॉस
ऐंठन " : मैग फॉस
कमजोरी लानेवाले पसीनेके साथ : काली फॉस
कै : फैरम फॉस
पीली, चिकनी जीभ : काली सल्फ
रातको पसीना अधिक आए : नेट म्योर, कल्के फॉस, साईली, नेट सल्फ, कल्के सल्फ, फ़ैरम फॉस
सरपर पसीना आए : साईली
ठण्डा : काली सल्फ
दुर्गन्धित : काली फॉस
अधिक : "
खट्टा : नेट फॉस
खाते समय : काली फॉस
प्यासके वगैर : नेट सल्फ
वैगनी रंगके दाने : काली फॉस
ज्वरजनित शीत : फैरम फॉस
आरक्त ज्वरका प्रतिवंधक : काली म्योर
शामको ज्वर चढ़े : काली सल्फ
टायफस ज्वर : कल्के सल्फ, काली म्योर, नेट म्योर, फैरम फॉस, काली फॉस
पीत ज्वर : नेट सल्फ, फैरम फॉस, काली फॉस

## त्वचा ( Skin )

घाव : काली म्योर, साईली, कल्के सल्फ, कल्के फ्लोर, फैरम फॉस, काली फॉस

नासूर : साईली, नेट सल्फ
कील : फैरम फॉस, साईली, काली म्योर
गुलाबी दाने : कल्के फॉस, साईली, नेट फॉस
गजके दाग : काली फॉस
„ „ बूढ़ोंके : साईली
खूनकी कमीके दाने : कल्के फॉस
प्रमेह जनित खुजली : ( दाढीकी दाद ) मेग फॉस
दाढी गिरे : नेट म्योर
छाले : नेट सल्फ, काली फॉस, नेट म्योर
फोड़े : मैग फॉस, कल्के सल्फ, साईली, फैरम फॉस, काली म्योर
„ झुकाव : साईली
पाँवके अगूठेकी सूजन : काली म्योर
आगसे जला : काली म्योर, कल्के सल्फ, नेट सल्फ
खाल लगना : कल्के फॉस, नेट सल्फ, नेट फॉस, काली सल्फ
रगड़नेसे : काली फॉस, नेट म्योर
कटाव-फटाव : कल्के फ्लोर
पाँवकी उगलियोंके दरम्यान : नेट म्योर
शीतला : फैरम फॉस, नेट सल्फ, काली म्योर, साईली
ददाई : काली फॉस, काली म्योर, कल्के सल्फ, साईली
चमड़ीके पुराने रोग : नेट म्योर
ताम्बेके रग जैसे : साईली
त्वचापर जैसे कुछ रेंग रहा है : काली फॉस
खोपड़ीकी तर दाद : नेट फॉस, काली म्योर, कल्के सल्फ, साईली
रूसी : नेट म्योर, काली सल्फ, काली म्योर
नई परत लानेके लिए . काली सल्फ
एग्जिमा, चेचकका टीका लगानेके बाद आए : काली म्योर
पलकोंसे आएँ : नेट म्योर
नमक अधिक खानेसे „
जाडेके मोड़पर : „
परतदार : साईली
सहसा दब जाए : काली सल्फ
महीन परतके साथ : नेट म्योर
अधिक चेतन : काली फॉस

अम्लके लक्षण : नेट फॉस
छाले सफेदसे : काली म्योर
पीला हरा स्राव : काली सल्फ
पानीवाले छाले : नेट सल्फ
सफेद परत : कल्के फॉस
ऊपरकी त्वचाका कैंसर : काली सल्फ
खूनकी कमी वालो और सधिवातसे पीडित व्यक्तियोंके दाने : कल्के फॉस
दाने : जलन और खुजलीवाले : काली सल्फ, काली फॉस
दादके : कल्के सल्फ
बाजरे जैसे : नेट म्योर
संकोचक पेशियोंके ऊपर : नेट म्योर
परतदार : काली सल्फ
कंठमाला : कल्के फॉस, साईली
सहसा दब जाए : काली सल्फ
आमाशय और मासिककी खराबीके साथ : काली म्योर
विसर्पके छाले : काली सल्फ, काली म्योर
गहरे : साईली
कभी-कभी आएँ : कल्के फ्लोर
हुम्बल ( जलनवाला फोड़ा ) : साईली
चिकने, लाल, चमकदार छाले : नेट सल्फ, फैरम फॉस
लाल दाग : नेट फॉस, काली म्योर
त्वचा लगना, उधड़ना : कल्के फॉस
प्रमेहके कील, दाने : नेट सल्फ
मलद्वारके फटाव : कल्के फ्लोर
त्वचा " : साईली
चकत्ते दाग : कल्के फॉस
मस्सा जिसमें रक्त भरा हो : नेट म्योर
दाद : नयी : कल्के फॉस, नेट म्योर, कल्के सल्फ
पुरानी : कल्के फॉस
चक्करदार : नेट म्योर
घुटनेके मोड़में : "
कुहनीपर : "

हथेलीपर : काली सल्फ
वर्त्तुलाकार विसर्पिका : नेट म्योर, काली म्योर, साईली
घुटनों और पैरोंपर : मैग फॉस
शीतपित्त : नेट फॉस, नेट सल्फ, फैरम फॉस, काली फॉस
त्वचाका प्रदाह : फैरम फॉस
" रगड़, खराश : नेट म्योर, काली सल्फ
क्षोभजनक स्राव : काली फॉस
खुजली : कल्के फॉस, काली सल्फ, काली फॉस, साईली
" तलवोंपर : कल्के सल्फ, काली फॉस
सख्त परिश्रमके वाद : नेट म्योर
सारे शरीरपर : नेट फॉस, मैग फॉस
हाथों पैरोंपर : काली फॉस
बूढ़ोंकी : कल्के फॉस
रेंगनेकी तरह : काली फॉस
कपड़े उताड़नेपर : नेट सल्फ
तेज : नेट म्योर
पीली चमड़ी : नेट सल्फ, काली म्योर
कोढ़ : साईली
चेहरेकी चमड़ीका टी० वी० : कल्के फॉस, काली म्योर
चेचक : फैरम फॉस, काली म्योर, काली सल्फ, साईली
चमड़ीके तर विकार : नेट सल्फ
नाखूनकी वीमारियाँ : काली सल्फ, साईली
विकास दूषित : "
गांठे : साईली
शोथयुक्त प्रदाह : नेट सल्फ
छाला : नेट म्योर, साईली, नेट सल्फ
घातक : काली फॉस
त्वचाके छाले : फैरम फॉस, काली म्योर, कल्के सल्फ, नेट सल्फ, कल्के फॉस
पुरानी खुजली : कल्के फॉस
सख्त " : " काली फॉस
योनि " : "

पीबवाले छाले : कल्के सल्फ, साईली
घातक : काली फॉस ”
दरार : कटाव-फटाव : कल्के फ्लोर, साईली
रगड़नेसे राहत आए : काली फॉस
आतशकी दाने : नेट म्योर
त्वचापर छाला : नेट सल्फ, काली फॉस, नेट म्योर
” खुजलानेसे खून आए : कल्के सल्फ
” जलन हो : साईली
” उपाड़ : कल्के फॉस, नेट फॉस, नेट सल्फ, काली सल्फ, काली फॉस, नेट म्योर, काली म्योर
” कटाव-फटाव : कल्केरिया फ्लोर
” गन्दी : नेट म्योर
” सूखी : काली सल्फ, कल्के फॉस
” सुस्त : नेट म्योर
” सुनहरी पीली पपड़ी आए : नेट फॉस
” चिकनी : नेट म्योर, काली फॉस
सख्त : काली सल्फ
मुश्किलसे राजी हो : साईली
प्रदाहित : फैरम फॉस
खुजलाए : कल्के फॉस, नेट सल्फ, काली फॉस, साईली
परत उतरे : काली सल्फ, कल्के फॉस, काली फॉस
स्पर्शकातर : साईली
सन्तापपूर्ण : नेट म्योर
टी० बी० की गांठें : कल्के फॉस
पानी भरे छाले : नेट म्योर
झुर्रियाँ : काली फॉस, कल्के फॉस
निशान : नेट सल्फ, नेट म्योर
चेचक : काली फॉस, फैरम फॉस, काली म्योर, कल्के सल्फ, काली सल्फ, साईली
दानोका दब जाना : काली सल्फ
त्वचाकी सूजन : नेट सल्फ
प्रमेह विष : नेट म्योर, काली म्योर
” कील : नेट सल्फ

त्वचामें सरसराहट : काली सल्फ
घाव : नासूर जैसे : कल्के फ्लोर, साईली
सुस्त ( न भरें ) : ”
प्रदाहित : फैरम फॉस
मांस उभरा हुआ : साईली, काली म्योर
पीबवाला : ” कल्के सल्फ
कंठमालीय : कल्के फॉस
शीतपित्त : नेट म्योर, नेट सल्फ, नेट फॉस
पानी जैसा स्राव : नेट सल्फ, नेट म्योर
पीले खुरण्ड : कल्के फॉस
छाला : ” नेट सल्फ

## तन्तुजाल ( Tissues )

मलद्वारके आस-पासके घाव : कल्के सल्फ
प्रदाहपूर्ण : फैरम फॉस
मसूढ़ोंके : कल्के फ्लोर, साईली, कल्के सल्फ
दुर्बल फोड़ा : नेट फॉस, साईली
पुराना घाव : कल्के फॉस, ”
मदात्यय : काली फॉस, नेट म्योर
” आमाशयके लक्षण : नेट फॉस
पीब बनना रोकनेके लिए : कल्के सल्फ ( उच्च शक्ति )
पीब लानेके लिए : साईली ( निम्न )
पेड़का घाव : कल्के फ्लोर
सूजन : काली म्योर
पीबको बहनेकी मुद्दत घटानेके लिए : कल्के सल्फ
नासूर : साईली
क्षीणता सम्बन्धी लक्षण : काली फॉस, नेट म्योर
वृक्क रोग : नेट म्योर, नेट सल्फ
खूनकी कमी ( अनीमिया ) : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस, फैरम फॉस, नेट म्योर, काली फॉस, काली म्योर
” बालकोंका : साईली

रीढका : नेट फॉस
सर्वाङ्ग शोथ : नेट म्योर
शिराओंकी कठिनता : नेट फॉस, साईली, नेट सल्फ
बालकोंका शीताद जिसमें हड्डियाँ टेढी हो जाए : काली फॉस, साईली
क्षीणता : कल्केरिया फॉस, काली फॉस
गलगण्ड ( गिल्हड़ जिसमें आँखें बाहर आ जाएँ ) : नेट म्योर
शैय्याक्षत : काली फॉस
चोटका प्रभाव : काली म्योर, फैरम फॉस
फोडा : साईली, कल्के सल्फ, काली म्योर, फैरम फॉस
" प्रवणता : साईली
हड्डी : जैसे कुचली गयी है : कल्के फ्लोर
पतली और भुरी-भुरी ( खस्ता ) : कल्के फॉस
खोपडीका फोडा : कल्के फ्लोर, साईली
हड्डीका फोडा : कल्के फॉस
टूटना : " फैरम फॉस
कोमल अगका प्रदाह : फैरम फॉस
मुरदारपन : साईली
सख्त गुम्मड : फैरम फॉस
टेढा पड जाना : कल्के फॉस
खुरदारपन : कल्के फ्लोर
पीव आना : " कल्के सल्फ, साईली
चूनेका संचय वढानेके लिए : कल्के फॉस, नेट फॉस
घाव : साईली, कल्के फ्लोर
स्तनोंकी गाँठें : कल्केरिया फ्लोर
नासूर : "
कण्ठमाला : कल्के फॉस
रगड : कल्के सल्फ, काली म्योर
आगसे जला : " "
मलेरिया ज्वर : और कूनीन विष : नेट म्योर
पथरी : मैग फॉस, कल्के फॉस, काली म्योर
कैंसर : काली फॉस, कल्के फॉस, काली सल्फ, कल्के फ्लोर, साईली
कारबंकल : साईली, कल्केरिया फ्लोर, काली म्योर, काली फॉस
नजला-जुकाम : नेट म्योर, काली सल्फ, काली म्योर

पीनस : मैग फॉस, नेट फॉस
क्षुद्र कोषोंमें पीव आना : साईली, कल्के सल्फ
हरा पाण्डु : नेट म्योर, कल्के फॉस
किसी जोडपर हड्डीको उभार और उसकी सूजन : कल्के फॉस
कूपका स्राव : काली म्योर
रसौली : कल्के फॉस, कल्के सल्फ
दुर्बलता : काली फॉस
प्रवणता : फासफेटकी : कल्के फॉस
कठमाला : „ साईली
जलोदर : साईली, नेट म्योर, कल्के फॉस
हृदरोगसे : कल्के फ्लोर, काली म्योर
रक्तक्षीणतासे : फैरम फॉस, कल्के फॉस
पित्तवहा नाड़ीकी बाधा : काली म्योर
हृद्रदौर्बल्य जनित : काली म्योर
सादा : नेट सल्फ
चोट आनेके बाद काले या नीले दाग : काली म्योर
लचीले तन्तु ढीले पड जाएँ : कल्के फ्लोर
शोथ : कल्के फॉस, काली फॉस
„ खूब अच्छा खाते रहनेपर भी : नेट म्योर
उपस्थित अर्बुद : साईली
रसौलीदार फोड़ा : कल्के फ्लोर
बच्चोंकी नकसीर : फैरम फॉस
कैंसर : काली सल्फ
थकान : काली फॉस
**स्राव** : अण्डेकी सफेदी जैसा कल्के फॉस
सन्ताप और उपाड लाए : नेट फॉस, नेट म्योर
क्रीम जैसा पीला : नेट फॉस
वसामय . काली म्योर
सख्त : कल्के फ्लोर
मधुके रंग जैसा : नेट फॉस
क्षोभजनक : काली फॉस
लसिका : काली म्योर
दुर्गन्धित : साईली, काली फॉस

पीव जैसा : काली सल्फ, कल्के सल्फ

पानी जैसा पतला : कल्के सल्फ

पतला : काली सल्फ, नेट म्योर, कल्के फॉस

पानीसा : " " नेट सल्फ

पीला : " नेट फॉस "

नखव्रण . कल्के सल्फ, फेरम फॉस, साईली, नेट सल्फ, कल्के फ्लोर, काली फॉस

नाडी अर्वद : कल्के फ्लोर, कल्के फॉस

सडाव (गेंगरीन) : काली फॉम

सधिवात : नेट म्योर, नेट फॉस, नेट सल्फ

गिलहड : कल्केरिया फॉस, नेट म्योर, कल्के फ्लोर, नेट फॉस

ग्रन्थियाँ : सख्त, कल्के फ्लोर

प्रदाहित : फेरम फॉस

कठमालीय दोषका प्रवेश : काली म्योर

आभ्यान्तरिक पीव : साईली

पत्थर जैसी सख्ती : कल्केरिया फ्लोर

पीव आना : कल्केरिया सल्फ, साईली

सूजन : काली म्योर, नेट फॉस, साईली

घाव : फेरम फॉस, कल्के सल्फ

दानोकी अधिकता : कल्के सल्फ

इन्फ्लुएँजा : मैग फॉस

रक्तस्राव : काला : काली म्योर

चमकदार लाल : फेरम फॉम

छिछडेदार " काली म्योर

काला : काली म्योर

न जमे : काली फॉस

गन्दा पतला : "

कफ प्रकृति : नेट सल्फ

सख्ती : कल्के फ्लोर

प्रदाह : पहला दर्जा : फेरम फॉस

दूसरा : काली म्योर

सडाव : साईली, काली फॉस

घातक : "

गदा : नेट फॉस
पानी-सी पतली पीव : काली सल्फ
पीव या स्रावका दर्जा : काली म्योर
चोट : यान्त्रिक : फैरम फॉस
उपेक्षित : कल्के सल्फ
स्तनोंकी गाठें : कल्के फ्लोर
पीलिया : नेट फॉस
श्वेत कुष्ठ : कल्के फॉस, नेट सल्फ, काली फॉस
वालशोष : कल्के फॉस, नेट फॉस, काली फॉस
मार्फिया खानेकी आदत : नेट फॉम
कुढन : काली फॉस
त्वक रोग : ”
हीन पोषण : कल्के फॉस
जलोदर : नेट सल्फ
दुर्गन्धित स्राव : साईली, काली फॉस
अस्थि प्रदाह : फैरम फॉस
पेशावमें आक्सलेट आएँ : काली सल्फ
क्लोमरोग : कल्के फॉस
नासार्श . ”
नर्म : काली सल्फ
गन्दी हालतें : काली फॉस
विषाक्त रक्त : काली फॉस, नेट सल्फ
गर्म पानीसे जला : कल्के सल्फ, काली म्योर
सीमक विष : नेट सल्फ २x
कंठमालीय विष : नेट फॉस, साईली, कल्के फॉस
शीताद : काली म्योर, काली फॉस
समुद्रयात्राकालीन विकार : काली फॉम, नेट फॉस
पीवजनित गन्दगी : काली फॉस
मोच आना : फैरम फॉस
कंठमालीय विकार : काली म्योर
पीव आना : मुख्य औषध : नेट फॉस
गन्दी : काली फॉस

हड्डीमें : कल्के फ्लोर
आम : कल्के सल्फ, साईली
सख्त किनारे : कल्के फ्लोर
प्रमेह : नेट सल्फ
आतशक : काली म्योर
क्षुद्र शिराओंका फैलाव : फैरम फॉस, कल्के फ्लोर
कोप अस्वस्थ : कल्के सल्फ
टी० बी० : नेट फॉस, साईली, कल्के फॉम
ग्रन्थियोंकी सूजन : काली म्योर, नेट फॉस
रातका पसीना : कल्के सल्फ, साईली
फोडा . सफेद : साईली, कल्के फॉम
खूनका . कल्के फ्लोर
रसौलीवाला . " कल्के सल्फ
छातीका : "
घाव : न भरनेवाला : कल्के फ्लोर
नासूर : कल्के फ्लोर
हड्डीका . साईली
पीव वाला "
गन्दे मासवाला : कल्के सल्फ, काली म्योर
पीव आना : कल्के सल्फ
चेचकके टीकेका बुरा प्रभाव : काली म्योर, साईली
युवाओंका शिरा प्रसारण . फैरम फॉस
क्षयकर रोग : काली फॉस, कल्के फॉस

## ह्रासवृद्धि ( Modalities )

वृद्धि : आरामके बाद : काली फॉस
कपडे धोना और पानीमें रहकर काम करना : कल्के सल्फ, नेट सल्फ
रातको : साईली
निरन्तर व्यायामसे : काली फॉस

परिश्रम : काली फॉस
हरकत : काली म्योर, फेरम फॉस, कल्के फॉस
आवाज : काली फॉस
बैठकर खड़ा होना : काली फॉस
सुबह : नेट म्योर, नेट सल्फ
शामको : काली फॉस
शुक्लपक्षमें : साईली
बादलको गर्जके समय : नेट फॉस
मौसम बदलनेसे : कल्के फॉस
ठण्डसे : साईली, कल्के फॉस, मैग फॉस
मौसम : काली म्योर, साईली
हवा : काली फॉस, मैग फॉस
पाँव ठण्डे होनेसे साईली
घीमें तली चीजें खानेसे काली म्योर
मछली : नेट सल्फ
फल ( अतिसार ) : कल्के फॉस
पकवान खानेसे : काली म्योर
नमक वनस्पितियाँ : नेट सल्फ
भींगना : कल्के फॉस
कीडे-मकौडे द्वारा काटना : नेट म्योर
बाईं करवट लेटना : नेट सल्फ
सिलवर नाईटरेट : नेट म्योर
पेस्टरीखाना : काली म्योर
हरकत : " फेरम फॉस
निरन्तर " काली फॉस
कुनीन : नेट म्योर
समुद्रतट . नेट म्योर
" स्नान : काली म्योर
पाँवका पसीना : साईली
स्पर्श : मैग फॉस
पानी : नेट सल्फ
दोपहर बाद : नेट म्योर, ( मासिक ) नेट फॉस
ठण्डा मौसम : "

तर : नेट म्योर, कल्के फ्लोर, नेट सल्फ
शाम : काली सल्फ, नेट फॉस
गर्म घर : नेट म्योर
सुबह . ”
खुली हवा : साईली
दर्द और खुजली : दोपहर २ बजेसे शाम ५ बजे तक काली फॉस
दाईं ओर : मैग फॉस
नियत समयपर : नेट सल्फ
जब अकेला हो : काली सल्फ, काली फॉस

ह्रास : दोहरा होनेसे : मैग फॉस
मौसम बदलनेसे : नेट सल्फ
ठण्डसे : फैरम फॉस, कल्के फ्लोर
मित्रोंमें जब बैठा हो : काली फॉस
खानेसे : ”
जोश : ”
सेंक : कल्के फ्लोर
दर्पण : सहलाना : मैग फॉस
चहलकदमी : काली फॉस
गर्मी : साईली, मैग फॉस
लेटना : कल्के फॉस
” सख्त चीजपर : नेट म्योर
तर गर्मी : साईली
दबाव : मैग फॉस
रगड़ना : कल्के फ्लोर
गर्मी : साईली, मैग फॉस
सर लपेटना : साईली
खुली ठण्डी हवामें : काली सल्फ
गर्म, खुश्क मौसममें : नेट सल्फ
गर्म घरमें : साईली

———